मानस-वर्णानुक्रमणिका



सम्पादक
स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

संकलन
मोहिनी श्रीवास्तव



पाणिनि कन्या महाविद्यालय
को स्मृति स्वरूप

सादर समर्पित

द्वारा



मानस-वर्णानुक्रमणिका





नीलाम्बुज श्यामल कोमलाङ्गम् सीता समारोपित वामभागम्।
पाणो महासायक चारु चापं, नमामि रामं रघुवंश नाथम्।।





मानस-वर्णानुक्रमणिका



संकलन

मोहिनी श्रीवास्तव

सम्पादक

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

प्रकाशक —

सत् साहित्य प्रकाशन संस्थान

दिव्य धाम आश्रम
दीनानाथ कालोनी,
पो.– नूरवाला, पानीपत–१३२१०३ (हरियाणा)
दूरभाष – (०१७४२) ६४६३०२

प्रथमावृत्ति – गुरुपूर्णिमा, सम्वत् २०५०
द्वितीयावृत्ति – गुरुपूर्णिमा, सम्वत् २०५८

भेंट – एक सौ रुपये मात्र

प्राप्ति स्थान –

१. व्यवस्थापक – दिव्य धाम आश्रम
दीनानाथ कालोनी, पो. नूरवाला, पानीपत – १३२१०३ (हरियाणा), फोन – (०१७४२) ६४६३०२
२. परमार्थ पुस्तक भंडार, हरिधाम आश्रम, पो. बिठूर–२०९२०१ कानपुर (उ.प्र.), फोन – (०५१२) ७१०३३३
३. राजेश कुमार गुप्ता, एफ–५८, राधापुरी, दिल्ली–११००५१, फोन–(०११) २२११९३५
४. योगेश कुमार गुप्ता, ५३ गली राजा केदारनाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली–११०००६, फोन – (०११) ३२६१२५४

मुद्रक– ग्राफिक वर्ल्ड, १६८६, दखिनीराय गली, दरियागंज, नई दिल्ली–११०००२, दूरभाष–३२७४३७४, ३२६५७७०





समर्पण

गुरु के रूप में धर्मग्रन्थ
धर्मग्रन्थ के रूप में भगवत्दर्शन के प्रेरक
भक्तों की अमर श्रद्धा के आसन पर
विराजमान
ब्रह्मलीन सद्गुरुदेव
श्री स्वामी प्रकाशानन्द सरस्वती जी महाराज
की
स्मृति वेदिका पर अर्पित
पूजा के पुष्पों की प्रतीक
यह
श्रीरामचरितमानस की
वर्णानुक्रमणिका

शुभाशंसा

श्री रामचरितमानस भारतीय धर्म संस्कृति का प्रतिनिधि ग्रन्थ है। इस गौरवशाली ग्रन्थ में भारत का ऋषि मानस और जन मानस साथ-साथ प्रतिबिम्बित हुए हैं। इसीलिये गोस्वामी तुलसीदास ने इसे लोक और वेद के उभय कूलों के मध्य प्रवाहित सरयू सरिता कहा है, जो भगवान राम के पावन निर्मल जल से भरपूर है।

चली सुभग कविता सरिता सो । राम बिमल जस जल भरिता सो॥
सरजू नाम सुमंगल मूला। लोक वेद मत मंजुल कूला॥ बा. 38/11–12

यह काव्य ग्रन्थ भी है और धर्मग्रन्थ भी। इस विशेषता के कारण यह विश्व वाङ्मय का शिरोमणि ग्रन्थ बन गया है।

इस ग्रन्थ की लोकप्रियता इसकी दिव्यता का प्रमाण है। इसका प्रचार, प्रसार, प्रवचन, पारायण और अनेकानेक विविध प्रकाशन भारतीय श्रद्धा के प्रतीक हैं। देशभर के श्रद्धालु घरों में प्रतिवर्ष नवरात्र के समय दो बार इसके नवाह्न पारायण और विशाल स्तर पर भव्य समारोहों में व्यवस्थित मंचों पर इसके प्रवचन श्रेष्ठ विद्वानों, प्रवीण कथावाचकों और वन्दनीय महात्माओं द्वारा उत्साही कर्मठ नागरिकों के सहयोग से आयोजित होते हैं।

अनुक्रमणिका की परम्परा हमारे देश में अत्यन्त प्राचीन है। आधुनिक वैज्ञानिक शब्दावली में इसे "कम्प्यूटर शैली" अथवा क्रम संयोजन कहा जा सकता है; परन्तु प्राचीन काल में यह कार्य विभिन्न पाठ विधियों द्वारा किया गया, जिनके प्रयोग से वेदत्रयी एवं ब्राह्मण ग्रन्थ चिरकाल तक ऋषि एवं व्यास परम्परा में मौखिक रूप से सुरक्षित रहे और कालान्तर में उन्हें लिपिबद्ध किया जा सका। आज श्रीरामचरितमानस की भी वही स्थिति है। अनेक भक्तों, विद्वानों और कथावाचकों को इस विशाल ग्रन्थ का अधिकांश कण्ठस्थ है।

मानस की यह वर्णानुक्रमणिका विविध वर्गों के पाठकों को अनेक रूपों में उपयोगी सिद्ध होगी। इसके द्वारा वे अपने मन में गूँजने वाली अथवा विस्मृत चौपाई को तत्काल खोज सकेंगे। विद्यालयों में आयोजित की जाने वाली अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता में भी यह विशेषतः सहायक होगी। यात्रा में भी यह एक सम्वादमय साथी का कार्य करेगी और इसकी एक-एक चौपाई सात्विक संगीत के रूप में श्रम परिहार एवं मनोरंजन प्रदान कर सकती है। अतः यह प्रयास स्तुत्य है।

यह वर्णानुक्रमणिका भक्तिमयी **मोहिनी श्रीवास्तव** की श्रद्धा एवं दीर्घकाल के स्वाध्याय तथा श्रम का ही प्रतिफल है। आपके इस कार्य से मानस प्रेमियों को मानस के स्वाध्याय में विशेष सहयोग मिलेगा, इसलिये आप धन्यवाद की पात्र हैं। इस ग्रन्थ का प्रकाशन हमारे कर्मठ सहयोगी प्रिय **स्वामी दिव्यानन्द जी** के सत्प्रयासों द्वारा संभव हुआ है। इनके अतिरिक्त भी जिन भक्तों का तन-मन-धन से सहयोग इसके प्रकाशन में प्राप्त हुआ है, वे सभी साधुवाद के अधिकारी हैं। उन सभी के प्रति हमारा मांगलिक शुभाशीष भी है और धर्म संस्थान की ओर से धन्यवाद भी। आशा है आगे भी इस सात्विक स्वाध्याय परम्परा का निर्वाह होता रहेगा।

परमार्थ निकेतन
स्वर्गाश्रम – २४६३०४
ऋषिकेश (हिमालय)

भावत्क:
महामण्डलेश्वर
स्वामी असङ्गानन्द सरस्वती
परमाध्यक्ष—श्री दैवी सम्पद महामण्डल



प्रस्तावना

भारतवर्ष एक धर्मप्राण देश के रूप में विख्यात है। धर्म की जितनी व्यापक, सार्वभौम और सनातन परिभाषा इस देश के ऋषियों, मनीषियों और कवियों द्वारा की गई है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। यहां धर्म को वस्तुतः जीवन के साथ इस प्रकार जोड़ा गया है, कि सम्पूर्ण दिनचर्या, व्यवसाय और कर्मकलाप धर्ममय ही प्रतीत होता है। यहां भगवान की आराधना के भी विविध विधान कल्पित एवं निर्धारित किये गये हैं, जिनका चयन भक्तगण एवं आराधक अपनी-अपनी रुचि, संस्कार एवं सुविधा के अनुसार कर लेते हैं। इन्हीं विधानों में से एक है 'स्वाध्याय' अर्थात धर्म ग्रन्थों का सतत्, नियमित और एकाग्रतापूर्वक अध्ययन। प्राचीन काल में और आज भी दीक्षान्त समारोहों में विद्यालय से विदा होते हुए वटुक को उपदेश दिया जाता है-*स्वाध्यायान्मा प्रमदः।* "स्वाध्याय में प्रमाद मत करना", क्योंकि स्वाध्याय जीवन की सतत् प्रक्रिया है। श्रीमद्‌भगवद्‌गीता में यह "वाङ्मय तप" का एक अंग है और रामचरितमानस में तो इसे संयम एवं सच्चरित्र का सतत् संरक्षक कहा गया है-

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते।। गीता, अ. १७/१५

सास्त्र सुचिंतित पुनि पुनि देखिअ । मानस, अरण्य- ३६/८ पूर्वार्द्ध

स्वाध्याय के लिये अनेक ग्रन्थों का चयन किया जा सकता है; परन्तु अवकाश के अभाव में एवं पूजा की भावना से कुछ विशिष्ट ग्रन्थों अथवा ग्रन्थ विशेष का चयन आवश्यक होता है। ऐसे ग्रन्थों में रामचरितमानस महामहनीय है। यह ग्रन्थ पूज्यता, मान्यता, प्रतिष्ठा, प्रचार-प्रसार और लोकप्रियता की दृष्टि से भारतीय वाङ्मय का शीर्षस्थ ग्रन्थ है। अतः इसे गोस्वामी तुलसीदासजी ने "निगमागम" का सार संकलन अथवा श्रुति-सार कहा है, जो कि अपनी व्यास समास शैलीं में एक महाकाव्य है और सूत्र शैली में सुभाषित-संग्रह एवं नाम जप का आधार भूत मन्त्र समुच्चय। इसकी प्रत्येक पंक्ति किसी-न-किसी विशिष्ट गुण से अभिमण्डित है-मन्त्र की महिमा से, दर्शन की गरिमा से, धर्म की नैतिकता से, काव्य की रसार्द्रता से अथवा चित्रांकन की अभिरामता से। यह अत्यन्त सामान्य उदाहरण चित्रात्मकता की दृष्टि से लिया जा सकता है-

आगें चले बहुरि रघुराया । रिष्यमूक पर्बत निअराया ।। मानस, किष्किन्धा-०/१

मानस के मर्मज्ञ एवं शीर्षस्थ कुछ आलोचकों ने इस पंक्ति को रस धारा के बीच एक नीरस प्रसंग कहा है; परन्तु यदि यात्री के मनोविज्ञान को दृष्टि में रखा जाये तो इसकी चित्रात्मकता उजागर हो उठती है। पद यात्री वन पथ अथवा तीर्थ स्थल की ओर अग्रसर होता हुआ जब वनराजि की सुषमा और आकाश की नीलिमा के बीच किसी पर्वत श्रृंग को उभरता हुआ देखता है तो उसका हृदय निसर्ग सौन्दर्य की अनुभूति से भर उठता है। "निअराया" शब्द

में यही अनुभूति ध्वनित है। आशय यह कि मानस की प्रत्येक पंक्ति में, यहां तक कि अनेक शब्दों में भी, एक छन्द है, प्रत्येक छन्द में एक संगीत है, संगीत में एक राग है, राग में अनुगूंज है और प्रत्येक अनुगूंज में एक सन्देश है-पवित्र जीवन का, श्रेष्ठ चरित का, सामाजिक मर्यादा का, अभंग शान्ति का और अक्षय आनन्द का। यह वर्णानुक्रमणिका उन्हीं सन्देशों को क्षण प्रतिक्षण घर और बाहर, एकान्त में एवं कार्यसंकुलता में ऐसे ही सन्देशों को श्रवण करते रहने का आमन्त्रण देती है। अतः इसे एक जेबी पुस्तिका (पॉकेट बुक), रोचक दैनिकी (डायरी) अथवा लघु ज्ञान कोष (विजडम डिक्शनरी) कहा जा सकता है। मानस के निष्ठावान नियमित पाठक ऐसे अनेक रूपों में इस अनुक्रमणिका का महत्व अनुभव कर सकते हैं।

मानस के पाठकों की भी अनेक श्रेणियां हैं। इनमें भावुक भक्त हैं, मर्मान्वेषी समीक्षक हैं, रसलिप्सु सहृदय नागरिक हैं, जिज्ञासु विद्यानुरागी हैं, इत्यादि। इन सबको विभिन्न अवसरों पर मानस की पंक्ति विशेष अथवा विशिष्ट शब्द की आवश्यकता उद्धरण के लिये, अर्थावगाहन के लिये, चिन्तन अथवा मनन के लिये पड़ा करती है। कभी-कभी एकान्त में कोई चौपाई मन में गूंज उठती है और मन उसे तत्काल पाने के लिये व्याकुल हो उठता है। कभी चिन्ता और विषाद के क्षणों में भगवान् की शरण का स्मरण हो आता है और न जाने किस चौपाई, दोहा, सोरठा, श्लोक अथवा स्तोत्र से वह अभिप्सित शरणागति प्राप्त हो जाती है। कभी-कभी आपदा में हम अधीर हो उठते हैं, तब रामशलाका जैसी तालिका अथवा मानस की कोई प्रसंगमयी पंक्ति हमारी शंका का समाधान, भय का निवारण, मनोद्वन्द का शमन करने में सहायक सिद्ध होती है। इस प्रकार मानस सहसा फलित ज्योतिष का सा ग्रन्थ प्रतीत होने लगता है। इस वर्णानुक्रमणिका की दैनिक उपयोगिता इस प्रकार इन विभिन्न रूपों में अनुभव की जा सकती है।

मानस का प्रचार और प्रसार विपुल जन-समुदाय, शिक्षालयों और सद्गृहस्थ की पूजा की चौकी तक विस्तीर्ण है। जन-समुदाय के बीच यह उत्सवों, पर्वों, नवाह्न पारायण (नवरात्र) आदि के अवसरों पर भगवान् राम के वाङ्मय वपु के रूप में अवतरित होता हुआ प्रतीत होता है। शिक्षालयों में इसके संकलित अंश प्रारम्भिक कक्षाओं से लेकर स्नातकोत्तर कक्षाओं तक हिन्दी के पाठ्यक्रम में निर्धारित किये जाते हैं। इसी प्रकार नियमित पूजा के रूप में दैनिक पाठ करने वाले भक्त भी कुछ पंक्तियों की बारम्बार आवृति में आनन्द का अनुभव करते हैं। इसकी कुछ चौपाईयां तो सम्पुट के रूप में बहु प्रचलित हैं हीं। यह वर्णानुक्रमणिका इन सभी पाठ-विधियों में सहयोगी सिद्ध हो सकती है।

किशोरवय छात्रों में उत्तम संस्कार संस्थापित करने की इच्छा प्रत्येक माता-पिता और शिक्षक के मन में होती है। यह कार्य केवल पाठ्यग्रन्थ अथवा पारायण के द्वारा सिद्ध नहीं होता वरन् इसे मनोरंजन के रूप में ढ़ाल देने पर यह सुगम हो जाता है। ऐसे ही मनोरंजन अथवा सात्विक क्रीड़ा का प्रयोग अन्त्याक्षरी में देखा जा सकता है। बालकों की वह सात्विक स्पृहा, स्पर्धा और उनकी सजग चेतना एक ओर स्मरण शक्ति को पैना करती है, दूसरी ओर उन्हें एकाग्र बना कर ध्यानावस्था का प्रशिक्षण भी प्रदान करती है और तीसरी ओर अनजाने ही उनमें

सद्वृत्तियों का बीजवपन भी करती है। कुशल शिक्षक एवं सजग माता-पिता इस निमित्त भी ऐसी वर्णानुक्रमणिकाओं का उपयोग कर सकते हैं। इस ओर उनकी रूचि को मोड़ देने पर टी. वी. एवं वीडियो गेम्स के व्यसन से उन्हें बचाया जा सकता है। इस प्रकार आबाल-वृद्ध सबके द्वारा इसका उपयोग परीक्ष्य है।

वर्णानुक्रमणिका का अर्थ है अकारादि क्रम से एक संकेत-सूची अथवा सन्दर्भ, और यह सूची ग्रन्थ विशेष के अन्त में उस ग्रन्थ में प्रयुक्त शब्दों के सन्दर्भ पृष्ठ सूचित करती है। इंडेक्स और अनुक्रमणिका दोनों ही कोश विज्ञान (लैक्सिकोग्राफी) का अनुसरण करते हैं; फिर भी शब्द कोश जहाँ शब्दों के अर्थ भी प्रदान करता है, वहाँ इंडेक्स और अनुक्रमणिका में केवल शब्द सूची अथवा पंक्ति - सूची का ही संयोजन अभीष्ट होता है। अनुक्रमणिका में किसी प्रकार का भी क्रम निर्धारित किया जा सकता है, परन्तु वर्णानुक्रमणिका अकारादि क्रम में बंधी हुई होती है।

मानस जैसे महनीय ग्रन्थ के अध्ययन, अनुसंधान और स्वाध्याय के लिये भक्तों, विद्वानों और समीक्षकों ने अनेक विधाओं का आविष्कार उद्देश्य एवं उपयोग की दृष्टि से किया है। कुछ विद्वानों ने केवल सुभाषितों अथवा सूक्तियों का चयन किया है। कुछ ने पुनः उनका वर्गीकरण ज्ञान, विज्ञान, विविध विधाओं एवं शास्त्रों की दृष्टि से किया है। इसकी भी उपयोगिता है; क्योंकि रामचरितमानस एक धर्मग्रन्थ भी है, काव्यग्रन्थ भी है, और ज्ञान-राशि के नाते विश्वकोश की गरिमा से भी मंड़ित है। अतः इसकी सूक्तियां नेताओं, वक्ताओं, विद्वानों, सन्तों, महात्माओं, कवियों आदि विभिन्न वर्गों के विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा न जाने कितने अवसरों पर उद्धृत की जाती हैं। अनेक निबन्ध और उत्तम लेख इस महाकाव्य की एक पंक्ति मात्र का शीर्षक चयन करके विरचित कर दिये गये हैं। इस प्रकार इसकी पंक्तियों ने वाग्मिता, सृजनशीलता और समीक्षा शास्त्र में योगदान किया है। अतः विविध प्रकार की अनुक्रमणिकाओं की रचना अभिनन्दनीय है।

आशा है यह प्रयोगशीलता एक सर्जनात्मक परम्परा का विधान करेगी और साथ ही मानस के स्वाध्याय, समीक्षा और पारायण की अनेक व्यास समास शैलियां सन्तों, विद्वानों के समर्पित सहयोग से विविध ग्रन्थों के रूप में प्रकाशित होंगी।

इस प्रस्तावना के लेखन का गौरव और मानस के समग्र साक्षात्कार का सुअवसर प्रदान करने के लिए मैं **आदरणीय श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती** का श्रद्धा सहित आभारी हूँ। इस वर्णानुक्रमणिका की संकलनकर्त्री भक्तिमयी **बहन मोहिनी श्रीवास्तव जी** की भक्ति-सरिता की सतत् प्रवाहशीलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनायें अर्पित हैं।

आपका-
डॉ. रामप्रकाश अग्रवाल
अध्यक्ष-हिन्दी विभाग (सेवानिवृत)
मेरठ कॉलिज, मेरठ

९७-परमार्थ निकेतन
स्वर्गाश्रम (ऋषिकेश)

दो शब्द

कुछ समय पूर्व प्रभु प्रेरणा से "श्रीरामचरितमानस की वर्णानुक्रमणिका" लिखी गई थी। जिसका प्रकाशन परमार्थ प्रकाशन, मुमुक्षु आश्रम, शाहजहाँपुर से हुआ था। अल्प समय में ही उसकी समस्त प्रतियाँ समाप्त हो गयीं। मानस-प्रेमियों ने उसे बड़ा आदर दिया और उसकी मांग निरन्तर बनी ही रही।

दूसरे संस्करण की कल्पना होते ही मानस प्रेमी अनेक भाई-बहनों ने यह सुझाव दिया कि पूर्व संस्करण में केवल चौपाई की अर्द्धाली ही ली गई थी, इस बार अगर पूरी चौपाई दे दी जाये तो अधिक सुन्दर रहेगा। अतः उनकी रुचि और परामर्श के अनुसार इस बार पूरी चौपाई दी गई है।

प्रभु की लीला अपरम्पार है। हर कार्य में उनकी अलौकिक कृपा का दर्शन प्राप्त होता है। कब किसको निमित्त बना कर वे क्या कार्य करा लेते हैं, ये तो वे ही जानें। इस ग्रन्थ का प्रकाशन श्रद्धेय श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी महाराज के सद्प्रयास के फलस्वरूप सम्पन्न हो रहा है, इसके लिये मैं उनकी अत्यन्त आभारी हूँ। मानस-प्रेमियों को मानस के स्वाध्याय में इससे अधिक सहयोग प्राप्त होगा। ऐसा मेरा विश्वास है।

हरिधाम आश्रम
बिठूर (कानपुर)

भवदीया –
मोहिनी श्रीवास्तव

भूमिका

श्रीरामचरितमानस एक ऐसा दिव्य ग्रन्थ है, जो केवल भारत के ही नहीं बल्कि विश्व के जन-जन की आस्था का केन्द्र है। भौतिकता की मृग-मरीचिका में भागते-भागते व्यक्ति थक जाता है, उसे कहीं विश्राम नहीं मिलता, वह जितना बाहर भागता है, जितना भौतिक वस्तु-व्यक्ति-परिस्थिति को पकड़ कर सुखी-शान्त होने का प्रयास करता है, तब उसका जीवन और अधिक दुःखमय तथा अशान्त होता चला जाता है। जिस प्रकार दलदल में फंसा कोई व्यक्ति जितना उससे निकलने का प्रयास करता है, उतना ही उसमें और अधिक फंसता चला जाता है। ठीक इसी प्रकार अपनी बुद्धि, बल, धन, पद, आदि भौतिक साधनों का आश्रय लेकर व्यक्ति जब संसार की दलदल से निकलना चाहता है, तब उतना ही और अधिक उसमें फंसता चला जाता है। ऐसी परिस्थिति में जीवन को एक सही दिशा देने वाला, सत्य का बोध कराने वाला, जीवन को सुख-शान्तिमय बनाने वाला अगर कोई एक आधार है, तो वह है श्रीरामचरितमानस।

जो हम जीवन जीते हैं, इसे जीवन जीना नहीं कहते। आहार, निद्रा, वंश वृद्धि—यह काम तो पशु भी करता है। अगर हमारा जीवन भी मात्र इन्हीं क्रियाओं तक सीमित है तो एक पशु और हममें अन्तर ही क्या रहा? मानव-जीवन जीना एक कला है और इस कला का बोध होता है श्रीरामचरितमानस के माध्यम से। श्रीरामचरितमानस एक खुली प्रयोगशाला है। एक भाई-भाई का, पिता-पुत्र का, पति-पत्नी का, मित्र-मित्र का, सास-बहु का यहां तक कि शत्रु-शत्रु का आपस में सम्बन्ध कैसा हो, अगर यह देखना है, समझना है और जीवन में उतारना है तो आओ श्रीरामचग्तिमानस का आश्रय लो। इतना ही नहीं, बल्कि एक पशु-पक्षी के साथ हमारा व्यवहार कैसा हो अगर इसकी भी प्रेरणा देने वाला कोई है, तो वह है श्रीरामचरितमानस।

अन्यान्य ग्रन्थों का जब हम अवलोकन करते हैं तो उसमें से अधिकांश केवल उपदेशात्मक शैली में दिखायी देते हैं। मानव-जीवन कैसा हो, उनमें मात्र इसका उपदेश दिया गया होता है; परन्तु श्रीरामचरितमानस तो वह दिव्य ग्रन्थ है, जिसमें विभिन्न प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने पारिवारिक, सामाजिक सम्बन्धों का बिना किसी उद्वेग एवं घृणा के सहजतापूर्वक निर्वाह करते हुए दिखाया गया है। यही है श्रीरामचरितमानस का महान आदर्श। इसीलिये सदियों पूर्व से ही मानव-जीवन का निर्माण करने वाले इस दिव्य ग्रन्थ को जन-मानस ने आदर और श्रद्धा के साथ स्वीकार किया, आज भी कर रहा है और आगे भी करता रहेगा। मानव-जीवन के चार पुरुषार्थ कहे गये हैं-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। जिसकी प्राप्ति के लिये अनेकानेक शास्त्रों, सन्तों और महापुरुषों ने विभिन्न प्रकार के साधनों, जैसे-निष्काम कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग, अष्टांग योग, आदि का संकेत किया है। परन्तु श्रीरामचरितमानस एक ऐसा ग्रन्थ है, जिसमें सभी साधनों का निरूपण बड़ी सुन्दरता के साथ किया गया है। यह तो वह दिव्य वाटिका है, जिसमें नाना प्रकार के सुन्दर, सुगन्धित, रसमय

फल-फूल लगे हुए हैं, अपनी रुचि व अधिकार के अनुसार व्यक्ति चाहें जिसका सेवन कर सकता है।

मानस की प्रत्येक पंक्ति स्वयं में एक मन्त्र है, बल्कि पंक्ति ही नहीं इसका तो प्रत्येक शब्द स्वयं में एक मन्त्र है, जिसका आश्रय लेकर न जाने कितने भावुक भक्तों ने लौकिक और पारलौकिक लाभ के साथ-साथ मानसिक विश्राम तथा आत्मिक आनन्द प्राप्त किया है। संसार का ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिसके जीवन में उतार-चढ़ाव न आते हों। आज सुख है तो कल दुःख, आज संयोग है तो कल वियोग, कभी अनुकूलता है तो कभी प्रतिकूलता। इसी का नाम तो जीवन है। जब तक जीवन में अनुकूलता रहती है, तब तक तो व्यक्ति भौतिकता में खोया रहता है, पर जब प्रतिकूलता आती है और उसमें संघर्ष कर जब वह स्वयं में टूट जाता है, थक जाता है और जगत् के सारे सहारे उसके लिये व्यर्थ केवल स्वार्थ प्रधान सिद्ध होते हैं, तब वह बाहर से ठोकर खाकर मुड़ता है अन्दर की ओर, विनाशी से हटकर चलता है अविनाशी की ओर, तलाशता है किसी ऐसे सन्त-ग्रन्थ या मन्त्र को, जिसका आश्रय लेकर वह विश्राम पा सके, जीवन को सुख और शांन्तिमय बना सके और ऐसी अवस्था में उसे सहज ही विश्राम प्रदान कराने वाला अगर कोई आधार दिखायी देता है, तो वह है श्रीरामचरितमानस।

जब व्यक्ति श्रीरामचरितमानस का आश्रय लेता है तो कभी अचानक किसी संस्कार वश कहीं सुनी या पढ़ी हुई मानस की कोई पंक्ति उसके अन्तर में गूंजने लगती है और वह तुरन्त उसे पाने के लिये छटपटाने लगता है। अथवा अन्य किसी सन्दर्भ विशेष में मानस की किसी पंक्ति विशेष का प्रसंग जानने की आवश्यकता पड़ जाती है और तब ऐसी अवस्था में समाधान मिलता है श्रीरामचरितमानस की वर्णानुक्रमणिका से। मेरे साथ कई बार ऐसा हुआ कि विभिन्न अवसरों पर मानस की किसी पंक्ति के प्रसंग को जानने की जिज्ञासा हुई; परन्तु सम्पूर्ण मानस में उसे कहां-कैसे तलाश किया जाय, कुछ समझ में नहीं आया और तब आवश्यकता हुई मानस-वर्णानुक्रमणिका की।

कई बार ऐसा भी देखा गया है कि कोई व्यक्ति अनभिज्ञता वश अथवा अपनी विद्वता का थोथा प्रदर्शन करता हुआ किसी ऐसी पंक्ति को जो मानस में नहीं है, पर उसे मानस की ही है ऐसा दूसरों से मनवाने का आग्रह करता है। तब ऐसी परिस्थिति में इस वर्णानुक्रमणिका के माध्यम से यह सहज में ही सिद्ध किया जा सकेगा कि वह पंक्ति मानस की है अथवा नहीं।

मानस-प्रेमियों की इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए आज प्रकाश में आ रहा है श्रीरामचरितमानस का यह दिव्य ग्रन्थ ''मानस-वर्णानुक्रमणिका'' के रूप में। कई वर्षों से इसके प्रकाशन की योजना बनती रही; परन्तु अर्थाभाव तथा कुछ अन्य कारणों से यह कार्य सम्पन्न नहीं हो सका। कई परिचितों से सम्पर्क किया, उनको वर्णानुक्रमणिका की पाण्डुलिपि दिखायी, चर्चा हुई और उन मानस-प्रेमियों ने इसकी उपयोगिता को समझा तथा इसके प्रकाशन में हर प्रकार का सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया। वैसे तो सब कुछ करने और कराने वाले सर्वान्तर्यामी प्रभु श्रीराम ही हैं; परन्तु किसी-न-किसी को तो वे निमित्त बनाते ही हैं। अतः इस प्रकार कुछ आदरणीय महानुभाव, जिनके नाम एक पेंज पर अलग से दिये

गये हैं, इसमें निमित्त बने और जिसके फलस्वरूप यह ग्रन्थ आपके कर-कमलों में सुशोभित है। उन सभी मानस-प्रेमी महानुभावों, जो इसके प्रकाशन में तन-मन-धन किसी भी रूप में सहयोगी बने, का मैं हृदय से आभारी हूँ।

इस वर्णानुक्रमणिका में गीताप्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित श्रीरामचरितमानस को आधार मानकर मानस की प्रत्येक चौपाई, दोहा, सोरठा, छन्द तथा श्लोक के प्रथम अक्षर को लेकर अकारादि क्रम से संजोया गया है। दोहा, सोरठा की दोनों पंक्तियों को अलग-अलग न लेकर उसके प्रथम अक्षर के आधार पर ही दोनों पंक्तियों को एक साथ लिया गया है। इसी प्रकार छन्द को भी उसके प्रथम अक्षर के आधार पर अकारादि क्रम में चारों पंक्तियों को एक साथ लिया गया है। जैसे-

पुरजन परिजन जातिजन जाचक मंत्री मीत।
मिले जथाबिधि सबहिं प्रभु परम कृपाल बिनीत।।

— मानस, बा॰ ३०८/०

इस दोहे के प्रथम अक्षर 'पु' को आधार मानकर इन दोनों पंक्तियों को एक साथ अकारादि क्रम में 'प' के अन्तर्गत लिया गया है। इसी प्रकार

आचारु करि गुर गौरि गनपति मुदित बिप्र पुजावहीं।
सुर प्रगटि पूजा लेहिं देहिं असीस अति सुखु पावहीं।।
मधुपर्क मंगल द्रब्य जो जेहि समय मुनि मन महुँ चहैं।
भरे कनक कोपर कलस सो तब लिएहिं परिचारक रहैं।।

— मानस, बा॰ ३२२/१ छं॰

इस छन्द में प्रथम अक्षर 'आ' को आधार मानकर इसकी चारों पंक्तियों को एक साथ अकारादि क्रम में 'आ' के अन्तर्गत लिया गया है।

श्लोक आदि का क्रम भी इसी प्रकार लिया गया है। इसमें चौपाई, दोहा, सोरठा, छन्द तथा श्लोक के आगे जो संकेत दिये गये हैं, उनमें पहला अक्षर काण्ड का संकेत करता है, जैसे-बा० से बालकाण्ड, अ०से अयोध्याकाण्ड, अर० से अरण्यकाण्ड, कि० से किष्किन्धाकाण्ड, सु० से सुन्दरकाण्ड, लं० से लंकाकाण्ड और उ० से उत्तरकाण्ड। इसके आगे की संख्या उस काण्ड के दोहे की संख्या है और उसके आगे की संख्या चौपाई के स्थान का संकेत करती है। जैसे-

पुनि मन बचन कर्म रघुनायक । चरन कमल बंदउँ सब लायक।।

बा॰ १७/६

अर्थात् यह चौपाई बा० से बालकाण्ड में १७वें दोहे के बाद ९वीं चौपाई है। इसी प्रकार अन्य सबका भी समझना चाहिये।

भक्तिमयी माता मोहिनी श्रीवास्तव जी ने जीवन की अवसान बेला में, जहां इन्द्रियाँ

निरन्तर शिथिलता की ओर अग्रसर हैं, तीर्थराज प्रयाग के गंगा-यमुना-सरस्वती के पावन संगम क्षेत्र में जिन परिस्थितियों में इसका संकलन किया, उसके लिये वे वस्तुतः श्रद्धा एवं धन्यवाद की पात्र हैं। प्रभु श्रीराम उन्हें दीर्घायु करें तथा शक्ति प्रदान करें,जिससे उनके द्वारा समाज को और अधिक लाभ प्राप्त हो।

मां भगवती सरस्वती की साधना में निरन्तर संलग्न सम्माननीय डॉ० राम प्रकाश जी अग्रवाल, अध्यक्ष-हिन्दी विभाग (सेवानिवृत), मेरठ कॉलेज, मेरठ ने इस ग्रन्थ के लिये प्रस्तावना लिख कर दी, इसके लिये मैं उनका बहुत-बहुत आभारी हूँ।

कोई भी शुभ कार्य किसी महापुरुष के आशीर्वाद के बिना सम्पन्न नहीं होता। महापुरुषों के आशीर्वाद की छत्र-छाया में जिस कार्य को प्रारम्भ किया जाता है, वह निश्चित ही पूर्णता को प्राप्त होता है। मैं शत्-शत् वन्दन करता हूँ - दैवी सम्पद् महामण्डल के परमाध्यक्ष प्रातःस्मरणीय अनन्त श्री विभूषित श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ महामण्डलेश्वर पूज्यपाद श्री १०८ श्री स्वामी असङ्गानन्द सरस्वती जी महाराज के परम पावन श्री चरणों में, जिन्होंने कृपा कर इस ग्रन्थ के लिए अपना शुभ-आशीष प्रदान किया।

यथासम्भव भरसक प्रयास किया गया है कि इसमें किसी प्रकार की अशुद्धि न रह जाए, इसके लिये अनेक बार प्रूफ पढ़ा गया, फिर भी मानव स्वभाव वश कहीं पर कोई भूल रह गयी हो, कोई पंक्ति छूट गयी हो, तो उसके लिये मैं स्वयं को उत्तरदायी मानते हुए सभी विद्वानों, आचार्यों, मानस-प्रेमियों तथा स्नेही पाठकों से क्षमा प्रार्थी हूँ। मानस के स्वाध्याय में इस वर्णानुक्रमणिका के माध्यम से मानस-प्रेमी साधकों को अधिकाधिक लाभ व सहयोग प्राप्त होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

परमार्थ निकेतन
स्वर्गाश्रम—२४९३०४
ऋषिकेश (हिमालय)

आप सबका अपना ही—
स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

नम्र निवेदन

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम का परम पावन चरित्र अनादिकाल से ही सर्वसाधारण के लिए प्रेरणा स्रोत रहा है। भगवान श्रीराम के पावन चरित्र से जन मानस अपने व्यावहारिक जीवन में विशेष रूप से सदैव मार्ग दर्शन प्राप्त करता रहा है। कालान्तर में सन्त शिरोमणि कविकुल चूड़ामणि श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज द्वारा प्रभु श्रीराम के इस पवित्र चरित्र को लोक भाषा में "श्रीरामचरितमानस" के रूप में उपलब्ध करा देने के बाद से तो विद्वत समाज के साथ-साथ सामान्य वर्ग के अपठित जनों के लिए भी मानों अमृत-कलश ही हाथ लग गया है। गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा विरचित "श्रीरामचरितमानस" विश्व का एक आदरणीय ग्रन्थ है। इसके आश्रय से अब तक अनगिनत व्यक्तियों ने अपने लोक-परलोक का निर्माण किया है।

कुछ वर्ष पूर्व इस ग्रन्थ की समस्त सामग्री जैसे-दोहा, चौपाई, छन्द, सोरठा, श्लोक आदि को अकारादि क्रम से संजोकर इसे "मानस वर्णानुक्रमणिका" के रूप में प्रकाशित कराया गया था। मानस प्रेमियों में इस ग्रन्थ का विशेष उत्साह के साथ स्वागत हुआ। इस ग्रन्थ की उपयोगिता एवं महत्ता के सन्दर्भ में अनेक महापुरुषों, विद्वानों, भक्तों के सन्देश प्राप्त हुए हैं। जिनमें से कुछ का प्रकाशन इस ग्रन्थ के अन्त में किया गया है।

प्रथम संस्करण के प्रकाशन के समय इसका द्वितीय संस्करण शीघ्र ही प्रकाशित कराना पड़ेगा, इसकी न तो संभावना ही थी और न ही मन में संकल्प। परन्तु 'मेरे मन कुछ और है कर्ता के कुछ और' की उक्ति अनुसार परमपिता परमात्मा को जिससे जैसा कार्य करवाना होता है, उसे वैसी शक्ति व सामर्थ्य प्रदान कर तद्नुकूल परिस्थिति स्वयं ही बना देते हैं। प्रथम संस्करण की प्रतियां समाप्त प्रायः होने पर लखनऊ निवासी हमारे परमात्मीय डॉ. एम.एन. सक्सेना (विशेष सचिव - स्वास्थ्य विभाग, उ.प्र. सरकार) ने इसके पुनः प्रकाशन का विशेष आग्रह किया और साथ ही इस कार्य की सम्पन्नता के लिए अपने इष्ट-मित्रों के माध्यम से विशेष आर्थिक सहयोग भी प्रदान कराया; जिसके फलस्वरूप यह द्वितीय संस्करण आपके कर कमलों में सुशोभित हो रहा है। इस संस्करण के प्रकाशन का विशेष श्रेय डॉ. सक्सेना जी को ही है।

व्यस्तता के कारण मैं स्वयं इस बार प्रुफ आदि देख पाने में कुछ असमर्थता अनुभव कर रहा था। इस समस्या का समाधान किया दिल्ली निवासी भक्तिमयी श्रीमती राजरानीं गुप्ता ने। उन्होंने प्रुफ देखने का कार्य बड़े मनोयोग पूर्वक विशेष समय लगाकर सम्पन्न किया। ग्राफिक वर्ल्ड के श्री मयंक जी अग्रवाल ने इस ग्रन्थ का मुद्रण अपना अन्य कार्य रोककर इसे प्राथमिकता के रूप में कराया।

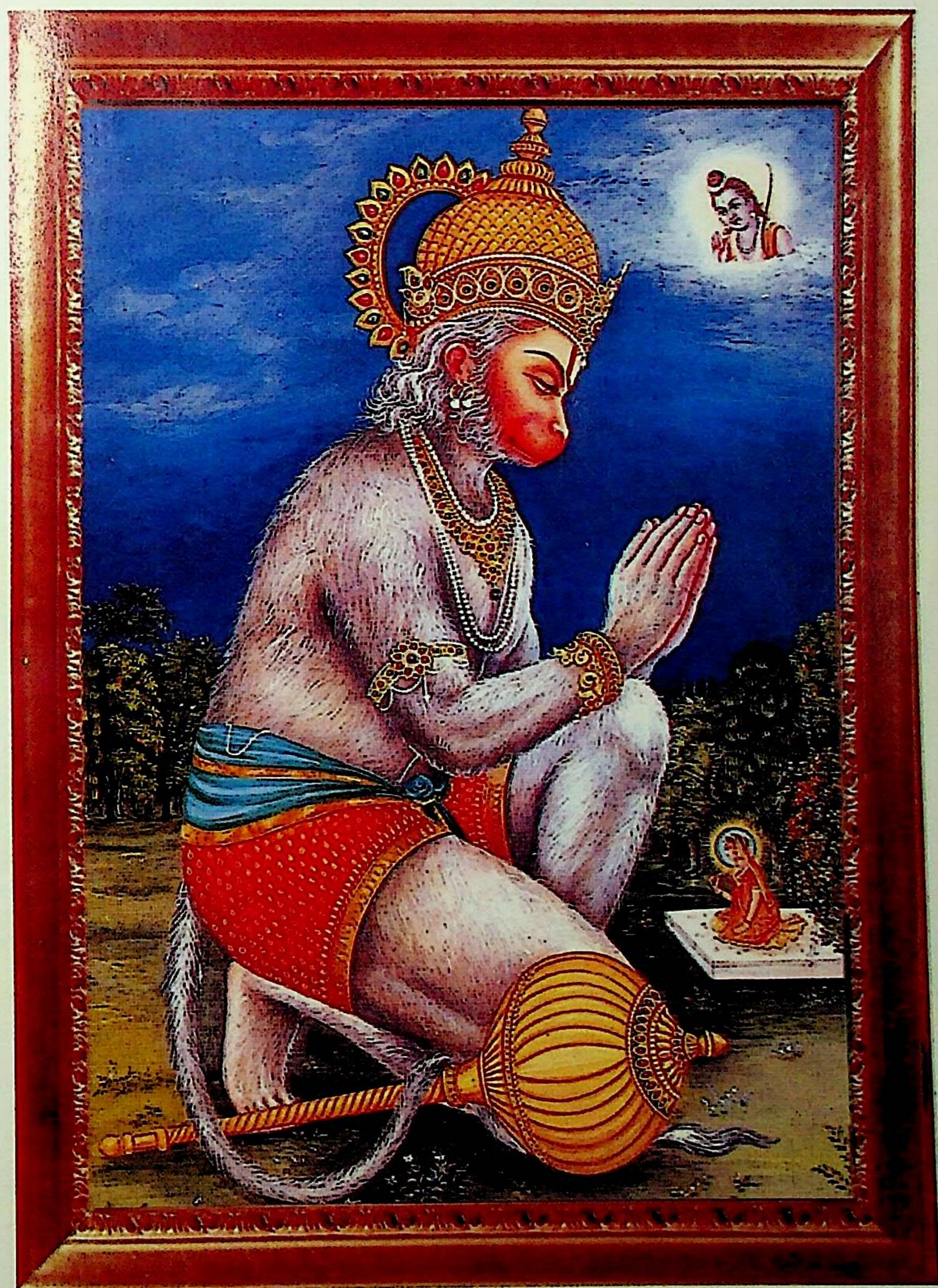
इस प्रकार इस द्वितीय संस्करण के प्रकाशन में सम्मानीय डॉ. एम.एन. सक्सेना, भक्तिमयी राजरानी गुप्ता, प्रियात्मन श्री मयंक जी, आर्थिक सहयोग प्रदान करने वाले सभी महानुभावों तथा अपना शुभ सन्देश प्रदान कर उत्साहवर्धन करने वाले सभी मनीषियों का मैं हृदय से आभारी हूँ। इन सबका जीवन मंगलमय तथा भगवत् भक्ति से परिपूर्ण हो; परमपिता परमात्मा से यह प्रार्थना एवं अपनी हार्दिक शुभकामना है।

सभी महापुरुष, विद्वान व मानस प्रेमी इस संस्करण का भी पूर्ववत् स्वागत करेंगे; ऐसी आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है।

संस्थापक - अध्यक्ष — दिव्य धाम आश्रम
दीनानाथ कालोनी, पो. नूरवाला
पानीपत- १३२१०३ (हरियाणा)

आप सबका अपना ही-
स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

अनुक्रम





मानस—वर्णानुक्रमणिका

अ

कांड दो० चौ०

अइसेउ एक तिन्हहि जे खाहीं । एकन्ह कें डर तेपि डेराहीं ॥ लं० ३/६
अकथ अलौकिक तीरथराऊ । देइ सद्य फल प्रगट प्रभाऊ ॥ बा० १/१३
अकल अगुन अज अनघ अनामय । अजित अमोघसक्ति करुनामय ॥ लं० १०९/६
अकल अनीह अनाम अरूपा । अनुभव गम्य अखंड अनूपा ॥ उ० ११०/४
अर्क जवास पात बिनु भयऊ । जस सुराज खल उद्यम गयऊ ॥ कि० १४/३
अखिल बिस्व यह मोर उपाया । सब पर मोहि बराबरि दाया ॥ उ० ८६/७
अग जग जीव नाग नर देवा । नाथ सकल जगु काल कलेवा ॥ उ० ९३/७
अग जगमय जग मम उपराजा । नहिं आचरज मोह खगराजा ॥ उ० ५९/५
अग जगमय सब रहित बिरागी । प्रेम तें प्रभु प्रगटइ जिमि आगी ॥ बा० १८४/७
अगनित रबि ससि सिव चतुरानन । बहु गिरि सरित सिंधु महि कानन ॥ बा० २०१/१
अगनित लोकपाल जम काला । अगनित भूधर भूमि बिसाला ॥ उ० ७९/६
अगम देखि नृप अति पछिताई । फिरेउ महाबन परेउ भुलाई ॥ बा० १५६/८
अगम पंथ बनभूमि पहारा । करि केहरि सर सरित अपारा ॥ अ० ९७/६
अगम सनेह भरत रघुबर को । जहँ न जाइ मनु बिधि हरि हर को ॥ अ० २४०/५
अगम सबहि बरनत बरबरनी । जिमि जलहीन मीन गमु धरनी ॥ अ० २८८/१
अगमु पंथु गिरि कानन भारी । तेहि महँ साथ नारि सुकुमारी ॥ अ० १११/६
अगर धूप बहु जनु अँधिआरी । उड़इ अबीर मनहुँ अरुनारी ॥ बा० १९४/५
अगवानन्ह जब दीखि बराता । उर आनंदु पुलक भर गाता ॥ बा० ३०४/७
अगुन अखंड अनंत अनादी । जेहि चिंतहिं परमारथबादी ॥ बा० १४३/४
अगुंन अदभ्र गिरा गोतीता । सबदरसी अनवद्य अजीता ॥ उ० ७१/५
अगुन अमान जानि तेहि दीन्ह पिता बनबास ।
सो दुख अरु जुबती बिरह पुनि निसि दिन मम त्रास ॥ लं० ३१/० (क)
अगुन अमान मातु पितु हीना । उदासीन सब संसय छीना ॥ बा० ६६/८
अगुन अरूप अलख अज जोई । भगत प्रेम बस सगुन सो होई ॥ बा० ११५/२
अगुन अलेप अमान एकरस । रामु सगुन भए भगत पेम बस ॥ अ० २१८/६
अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा । अकथ अगाध अनादि अनुपा ॥ बा० २२/१
अगुन सगुन गुन मंदिर सुंदर । भ्रम तम प्रबल प्रताप दिवाकर ॥ लं० ११४/३
अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी । उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी ॥ बा० २०/८

अग्य अकोबिद अंध अभागी । काई विषय मुकुर मन लागी ॥ बा० ११४/१
अग्य जानि रिस उर जनि धरहू । जेहि बिधि मोह मिटै सोइ करहू ॥ बा० १०८/२
अग्या पुनि पुनि भाइन्ह दीन्ही । निज निज सेज सयन तिन्ह कीन्ही ॥ बा० ३५५/६
अग्या सम न सुसाहिब सेवा । सो प्रसादु जन पावै देवा ॥ अ० ३००/४
अघ उलूक जहँ तहाँ लुकाने । काम क्रोध कैरव सकुचाने ॥ उ० ३०/४
अघ कि पिसुनता सम कछु आना । धर्म कि दया सरिस हरिजाना ॥ उ० १११/१०
अचल करौं तनु राखहु प्राना । बालि कहा सुनु कृपानिधाना ॥ कि० ९/२
अचल होउ अहिवातु तुम्हारा । जब लगि गंग जमुन जल धारा ॥ अ० ६८/८
अच्छत अंकुर लोचन लाजा । मंजुल मंजरि तुलसि बिराजा ॥ बा० ३४५/५
अज महेस नारद सनकादी । जे मुनिबर परमारथबादी ॥ लं० १०४/२
अजर अमर गुननिधि सुत होहू । करहुँ बहुत रघुनायक छोहू ॥ सुं० १६/३
अजर अमर सो जीति न जाई । हारे सुर करि बिबिध लराई ॥ बा० ८१/७
अज व्यापकमेकमनादि सदा । करुनाकर राम नमामि मुदा ॥ लं० ११०/७ छं०
अजसु होउ जग सुजसु नसाऊ । नरक परौं बरु सुरपुरु जाऊ ॥ अ० ४४/१
अजहुँ जासु उर सपनेहुँ काऊ । बसहुँ लखनु सिय रामु बटाऊ ॥ अ० १२३/१
अजहुँ न छाया मिटति तुम्हारी । तासु चरित सुनु भ्रम रुज हारी ॥ बा० १४०/५
अजहुँ बच्छ बलि धीरज धरहू । कुसमउ समुझि सोक परिहरहू ॥ अ० १६४/५
अजहुँ कछु संसउ मन मोरें । करहु कृपा बिनवउँ कर जोरें ॥ बा० १०८/५
अजहुँ तात त्यागि अभिमाना । भजहु राम होइहि कल्याना ॥ लं० ६२/२
अजहुँ मानहु कहा हमारा । हम तुम्ह कहुँ बरु नीक बिचारा ॥ बा० ७९/१
अजहुँ हृदउ जरत तेहि आँचा । रिस परिहास कि साँचेहुँ साँचा ॥ अ० ३१/५
अजा अनादि सक्ति अबिनासिनि । सदा संभु अरधंग निवासिनि ॥ बा० ९७/३
अजिन बसन फल असन महि सयन डासि कुस पात ।
बसि तरु तर नित सहत हिम आतप बरषा बात ॥ अ० २११/०
अति अकेल बन बिपुल कलेसू । तदपि न मृग मग तजइ नरेसू ॥ बा० १५६/६
अति अनुराग अंब उर लाए । नयन सनेह सलिल अन्हवाए ॥ अ० २४४/५
अति अनूप जहँ जनक निवासू । बिथकहिं बिबुध बिलोकि बिलासू ॥ बा० २१२/७
अति अपार जे सरित बर जौं नृप सेतु कराहिं ।
चढ़ि पिपीलिकउ परम लघु बिनु श्रम पारहि जाहिं ॥ बा० १३/०
अति आदर खगपति कर कीन्हा । स्वागत पूछि सुआसन दीन्हा ॥ उ० ६२/७
अति आदर दोउ तनय बोलाए । हृदयँ लाइ बहु भाँति सिखाए ॥ बा० २०७/९
अति आदर रघुनायक कीन्हा । पद पखारि पादोदक लीन्हा ॥ उ० ४७/२
अति आदर सब कपि पहुँचाए । भाइन्ह सहित भरत पुनि आए ॥ उ० १८/६
अति आदर समीप बैठारी । बोले बिहँसि कृपाल खरारी ॥ लं० ३७/४

अति आनंद उमगि अनुरागा। चरन सरोज पखारन लागा ॥ अ० १००/७
अति आरति पूछउँ सुरराया। रघुपति कथा कहहु करि दाया ॥ बा० १०९/३
अति आरति कहि कथा सुनाई। करहु कृपा करि होहु सहाई ॥ बा० १३१/५
अति आरति सब पूँछहिं रानी। उतरु न आव बिकल भइ बानी ॥ अ० १४७/१

अति उतंग गिरि पादप लीलहिं लेहिं उठाइ।
आनि देहिं नल नीलहि रचहिं ते सेतु बनाइ ॥ लं० १/०

अति उतंग जलनिधि चहु पासा। कनक कोट कर परम प्रकासा ॥ सुं० २/११
अति कटु बचन कहति कैकेई। मानहुँ लोन जरे पर देई ॥ अ० २९/८
अति कोमल रघुबीर सुभाऊ। जद्यपि अखिल लोक कर राऊ ॥ सुं० ५६/५

अति कृपाल रघुनायक सदा दीन पर नेह।
ता सन आइ कीन्ह छलु मूरख अवगुन गेह ॥ अ० १/०

अति खल जे बिषई बग कागा। एहिं सर निकट न जाहिं अभागा ॥ बा० ३७/३
अति गहगहे बाजने बाजे। सबहिं मनोहर मंगल साजे ॥ बा० २८५/१

अति गर्ब गनइ न सगुन असगुन स्रवहिं आयुध हाथ ते।
भट गिरत रथ ते बाजि गज चिक्करत भाजहिं साथ ते ॥
गोमाय गीध कराल खर रव स्वान बोलहिं अति घने।
जनु कालदूत उलूक बोलहिं बचन परम भयावने ॥ लं० ७७/१ छं०

अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं ॥ बा० २६९/५
अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के। कामद घन दारिद दवारि के ॥ बा० ३१/८
अति दयाल गुर स्वल्प न क्रोधा। पुनि पुनि मोहि सिखाव सुबोधा ॥ उ० १०५/८
अति दीन मलीन दुखी नितहीं। जिन्ह कें पद पंकज प्रीति नहीं ॥ उ० १३/११ छं०
अति दुर्लभ कैवल्य परम पद। संत पुरान निगम आगम बद ॥ उ० ११८/३
अति नागर भव सागर सेतुः। त्रातु सदा दिनकर कुल केतुः ॥ अर० १०/१४
अति परिताप सीय मन माहीं। लव निमेष जुग सय सम जाहीं ॥ बा० २५७/८
अति पुनीत गिरिजा कै करनी। बिस्तर सहित कृपानिधि बरनी ॥ बा० ७५/८
अति प्रचंड रघुपति कै माया। जेहि न मोह अस को जग जाया ॥ बा० १२७/८
अति प्रसन्न रघुनाथहि जानी। पुनि नारद बोले मृदु बानी ॥ अर० ४२/१
अति प्रिय बचन सुनत प्रिय केरे। भृंगिहि प्रेरि सकल गन टेरे ॥ बा० ९२/४
अति प्रिय मोहि इहाँ के बासी। मम धामदा पुरी सुख रासी ॥ उ० ३/७
अति बड़ि मोरि ढिठाई खोरी। सुनि अघ नरकहुँ नाक सकोरी ॥ बा० २८/१
अतिबल कुंभकरन अस भ्राता। जेहि कहुँ नहिं प्रतिभट जग जाता ॥ बा० १७९/३
अतिबल मधु कैटभ जेहिं मारे। महाबीर दितिसुत संघारे ॥ लं० ५/७
अति बिचित्र कछु बरनि न जाई। कनक देह मनि रचित बनाई ॥ अर० २६/२
अति बिचित्र तहँ लोक अनेका। रचना अधिक एक ते एका ॥ उ० ७९/४

अति बिचित्र रघुपति चरित जानहिं परम सुजान।
जे मतिमंद बिमोह बस हृदयँ धरहिं कछु आन ॥ बा० ४९/०
अति बिचित्र बाहिनी बिराजी। बीर बसंत सेन जनु साजी ॥ लं० ७८/५
अति बिनीत मृदु सीतल बानी। बोले रामु जोरि जुग पानी ॥ बा० २७८/१
अति बिषाद बस लोग लोगाईं। गए मातु पहिं रामु गोसाईं ॥ अ० ५०/७
अति बिस्तार चारु गच ढारी। बिमल बेदिका रुचिर सँवारी ॥ बा० २२३/२
अति बिसमय पुनि पुनि पछिताई। सादर मुनि मोहि लीन्ह बोलाई ॥ उ० ११२/५
अति बिसाल तरु एक उपारा। बिरथ कीन्ह लंकेस कुमारा ॥ सुं० १८/५
अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा ॥ बा० २६९/३
अति लघु बात लागि दुखु पावा। काहुँ न मोहि कहि प्रथम जनावा ॥ अ० ४४/७
अति लघु रूप धरेउ हनुमाना। पैठा नगर सुमिरि भगवाना ॥ सुं० ४/४
अति लालसा बसहिं मन माहीं। नाउँ गाउँ बूझत सकुचाहीं ॥ अ० १०९/३
अति सनेह बस सखीं सयानी। नारि धरम सिखवहिं मृदु बानी ॥ बा० ३३३/६
अति सप्रेम सिय पायँ परि बहुबिधि देहिं असीस।
सदा सोहागिनि होहु तुम्ह जब लगि महि अहि सीस ॥ अ० ११७/०
अति सभीत कह सुनु हनुमाना। पुरुष जुगल बल रूप निधाना ॥ कि० ०/३
अति सभीत नारद पहिं आए। गहि पद आरत बचन सुनाए ॥ बा० १३८/२
अतिसय प्रबल देव तव माया। छूटइ राम करहु जौं दाया ॥ कि० २०/२
अतिसय प्रीति देखि रघुबीरा। प्रगटे हृदयँ हरन भव भीरा ॥ अर० ९/१४
अतिसय प्रीति देखि रघुराई। लीन्हे सकल बिमान चढ़ाई ॥ लं० ११८/१
अतिसय देखि धर्म कै ग्लानी। परम सभीत धरा अकुलानी ॥ बा० १८३/४
अति सरोष माखे लखनु लखि सुनि सपथ प्रवान।
सभय लोक सब लोकपति चाहत भभरि भगान ॥ अ० २३०/०
अति सुकुमार जुगल मेरे बारे। निसिचर सुभट महाबल भारे ॥ उ० ६/८
अति सुकुमार न तन तप जोगू। पति पद सुमिरि तजेउ सबु भोगू ॥ बा० ७३/२
अति संघरषन जौं कर कोई। अनल प्रगट चंदन ते होई ॥ उ० ११०/१६
अति सुंदर दीन्हेउ जनवासा। जहँ सब कहुँ सब भाँति सुपासा ॥ बा० ३०५/६
अति सुंदर सुचि सुखद सुसीला। गावहिं बेद जासु जस लीला ॥ बा० ७९/२
अति हरष मन तन पुलक लोचन सजल कह पुनि पुनि रमा।
का देउँ तोहि त्रैलोक महुँ कपि किमपि नहिं बानी समा ॥
सुनु मातु मैं पायो अखिल जग राजु आजु न संसयं।
रन जीति रिपुदल बंधु जुत पस्यामि राममनामयं ॥ लं० १०६/१ छं०
अति हरषु राजसमाज दुहु दिसि दुंदुभीं बाजहिं घनी।
बरषहिं सुमन सुर हरषि कहि जय जयति जय रघुकुलमनी ॥

एहि भाँति जानि बरात आवत बाजने बहु बाजहीं।
रानी सुआसिनि बोलि परिछनि हेतु मंगल साजहीं ॥ बा० ३१६/१ छं०
अति हरि कृपा जाहि पर होई। पांउँ देइ एहिं मारग सोई ॥ उ० १२८/४
अतुलित बल अतुलित प्रभुताई। मैं मतिमंद जानि नहिं पाई ॥ अर० १/१२
अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥ सुं० श्लोक ३
अतुलित बल प्रताप द्वौ भ्राता। खल बध रत सुर मुनि सुखदाता ॥ अर० २१/७
अतुलित भुज प्रताप बल धामः। कलि मल विपुल विभंजन नामः ॥ अर० १०/१५
अँथयउ आजु भानुकुल भानू। धरम अवधि गुन रूप निधानू ॥ अ० १५५/६
अदभुत सलिल सुनत गुनकारी। आस पिआस मनोमल हारी ॥ बा० ४२/२
अर्ध भाग कौसल्यहि दीन्हा। उभय भाग आधे कर कीन्हा ॥ बा० १८९/२
अर्ध राति गइ कपि नहिं आयउ। राम उठाइ अनुज उर लायउ ॥ लं० ६०/२
अर्ध राति पुर द्वार पुकारा। बाली रिपु बल सहै न पारा ॥ कि० ५/३
अधम जाति मैं बिद्या पाएँ। भयउँ जथा अहि दूध पिआएँ ॥ उ० १०५/६
अधम ते अधम अधम अति नारी। तिन्ह महँ मैं मतिमंद अघारी ॥ अर० ३४/३
अधम निसाचर लीन्हें जाई। जिमि मलेछ बस कपिला गाई ॥ अर० २८/८
अधम सिरोमनि तव पद पावा। यह हमरें मन बिसमय आवा ॥ लं० १०९/१०
अधर अरुन रद सुंदर नासा। बिधु कर निकर बिनिंदक हासा ॥ बा० १४६/२
अधर लोभ जम दसन कराला। माया हास बाहु दिगपाला ॥ लं० १४/५
अधिक प्रीति मन भा संदेहा। बंदि चरन कह सहित सनेहा ॥ लं० ७९/२
अधिक सनेहँ गोद बैठारी। स्याम सरोज नयन भरे बारी ॥ बा० ९५/७
अधिक सनेहँ देह भै भोरी। सरद ससिहि जनु चितव चकोरी ॥ बा० २३१/६
अन्हवाए प्रभु तीनिउ भाई। भगत बछल कृपाल रघुराई ॥ उ० १०/५
अनमिल आखर अरथ न जापू। प्रगट प्रभाउ महेस प्रतापू ॥ बा० १४/६
अनरथु अवध अंरभेउ जब तें। कुसगुन होहिं भरत कहुँ तब तें ॥ अ० १५६/५
अनवद्य अखंड न गोचर गो। सबरूप सदा सब होइ न गो ॥ लं० ११०/१५
अन्न कनकभाजन भरि जाना। दाइज दीन्ह न जाइ बखाना ॥ बा० १००/८
अन्न सो जोइ जोइ भोजन करई। सोइ सोइ तव आयसु अनुसरई ॥ बा० १६७/६
अनहित तोर प्रिया केइँ कीन्हा। केहि दुइ सिर केहि जमु चह लीन्हा ॥ अ० २५/१
अनारंभ अनिकेत अमानी। अनघ अरोष दच्छ बिग्यानी ॥ उ० ४५/६
अनिप अकंपन अरु अतिकाया। बिचलत सेन कीन्हि इन्ह माया ॥ लं० ४५/१०
अनुचित आजु कहब अस मोरा। सोक सनेहँ सयानप थोरा ॥ अ० २८२/७
अनुचित उचित काजु किछु होऊ। समुझि करिअ भल कह सबु कोऊ ॥ अ० २३०/३
अनुचित उचित बिचारु तजि जे पालहिं पितु बैन।

ते भाजन सुख सुजस के बसहिं अमरपति ऐन ।। अ० १७४/०
अनुचित कहि सब लोग पुकारे। रघुपति सयनहिं लखनु नेवारे ।। बा० २७५/८
अनुचित नाथ न मानब मोरा। भरत हमहि उपचार न थोरा ।। अ० २२८/७
अनुचित बहुत कहेउँ अग्याता। छमहु छमामंदिर दोउ भ्राता ।। बा० २८४/६
अनुज उठाइ हृदयँ तेहि लायो। रघुपति भक्त जानि मन भायो ।। लं० ६३/४
अनुज क्रिया करि सागर तीरा। कहि निज कथा सुनहु कपि बीरा ।। कि० २७/१
अनुज जानकी सहित निरंतर। बसहु राम नृप मम उर अंतर ।। लं० ११४/८ छं०
अनुज जानकी सहित प्रभु कुसल कोसलाधीस।
सोभा देखि हरषि मन अस्तुति कर सुर ईस ।। लं० ११२/०
अनुज जानकी सहित प्रभु चाप बान धर राम।
मम हिय गगन इंदु इव बसहु सदा निहकाम ।। अर० ११/०
अनुजन्ह संजुत भोजन करहीं। देखि सकल जननीं सुख भरहीं ।। उ० २५/३
अनुज बधू भगिनी सुत नारी। सुनु सठ कन्या सम ए चारी ।। कि० ८/७
अनुज राज संपति बैदेही। देह गेह परिवार सनेही ।। उ० १५/६
अनुज सखा सँग भोजन करहीं। मातु पिता अग्या अनुसरहीं ।। बा० २०४/४
अनुज समेत गए प्रभु तहवाँ। गोदावरि तट आश्रम जहवाँ ।। अर० २९/५
अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना। दीन बंधु प्रनतारति हरना ।। सुं० ३०/३
अनुज समेत देहु रघुनाथा। निसिचर बध मैं होब सनाथा ।। बा० २०६/१०
अनुज सहित प्रभु बंदन कीन्हा। आसिरबाद पिताँ तब दीन्हा ।। लं० १११/२
अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी। बोले बचन भगत भयहारी ।। सुं० ४५/३
अनुज सहित सिर जटा बनाए। देखि सुमंत्र नयन जल छाए ।। अ० ९३/४
अनुपम बालक देखेन्हि जाई। रूप रासि गुन कहि न सिराई ।। बा० १९२/८
अनुसुइया के पद गहि सीता। मिली बहोरि सुसील बिनीता ।। अर० ४/१
अनुरूप बर दुलहिनि परस्पर लखि सकुच हियँ हरषहीं।
सब मुदित सुंदरता सराहहिं सुमन सुर गन बरषहीं ।।
सुंदरीं सुंदर बरन्ह सह सब एक मंडप राजहीं।
जनु जीव उर चारिउ अवस्था बिभुन सहित बिराजहीं ।। बा० ३२४/४ छं०
अनूप रूप भूपतिं। नतोऽहमुर्विजा पतिं ।। अर० ३/२१ छं०
अटनु राम गिरि बन तापस थल। असनु अमिअ सम कंद मूल फल ।। अ० २७९/७
अढुकि परहिं फिरि हेरहिं पीछें। राम बियोग बिकल दुख तीछें ।। अ० १४२/६
अपडर डरेउँ न सोच समूलें। रबिहि न दोसु देव दिसि भूलें ।। अ० २६६/३
अपतु अजामिलु गजु गनिकाऊ। भए मुकुत हरि नाम प्रभाऊ ।। बा० २५/७
अपनें चलत न आजु लगि अनभल काहुक कीन्ह।
केहिं अघ एकहि बार मोहि दैअँ दुसह दुखु दीन्ह ।। अ० २०/०

अपने मुँह तुम्ह आपनि करनी। बार अनेक भाँति बहु बरनी॥ बा० २७३/६
अपभयँ कुटिल महीप डेराने। जहँ तहँ कायर गवँहिं पराने॥ बा० २८४/८
अपर देउ अस कोउ न आही। यह छबि सखी पटतरिअ जाही॥ बा० २१९/८
अपर महोदर आदिक बीरा। परे समर महि सब रनधीरा॥ लं० ६१/१२
अपर सुतहि अरिमर्दन नामा। भुजबल अतुल अचल संग्रामा॥ बा० १५२/६
अपर हेतु सुनु सैलकुमारी। कहउँ बिचित्र कथा बिस्तारी॥ बा० १४०/१
अब अति कीन्हेहु भरत भल तुम्हहि उचित मत एहु।
सकल सुमंगल मूल जग रघुबर चरन सनेहु॥ अ० २०७/०
अब अपलोकु सोकु सुत तोरा। सहिहि निठुर कठोर उर मोरा॥ लं० ६०/१३
अब अभिलाषु एकु मन मोरें। पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरें॥ अ० २/७
अब आनिअ ब्यवहरिआ बोली। तुरत देउँ मैं थैली खोली॥ बा० २७५/४
अब उर धरहु ब्रह्म बर बानी। सत्य सदा संतत सुचि जानी॥ बा० ७४/२
अब कुछ नाथ न चाहिअ मोरें। दीनदयाल अनुग्रह तोरें॥ अ० १०१/७
अब करि कृपा देहु बर एहू। निज पद सरसिज सहज सनेहू॥ अ० १०६/८
अब करि कृपा बिलोकि मोहि आयसु देहु कृपाल।
काह करौं सुनि प्रिय बचन बोले दीनदयाल॥ लं० ११३/०
अब करुनाकर कीजिअ सोई। जन हित प्रभु चित छोभु न होई॥ अ० २६७/२
अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी। अनुज सहित सुख भवन खरारी॥ सुं० १३/३
अब कहु कुसल बालि कहँ अहई। बिहँसि बचन तब अंगद कहई॥ लं० २०/७
अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता। आसिष तव अमोघ बिख्याता॥ सुं० १६/६
अब कृपाल जस आयसु होई। करौं सीस धरि सादर सोई॥ अ० ३०६/७
अब कृपाल निज भगति पावनी। देहु सदा सिव मन भावनी॥ सुं० ४८/७
अब कृपाल मोहि सो मत भावा। सकुच स्वामि मन जाइँ न पावा॥ अ० २६८/७
अब गोसाइँ मोहि देउ रजाई। सेवौं अवध अवधि भरि जाई॥ अ० ३१२/८
अब गृह जाहु सखा सब भजेहु मोहि दृढ़ नेम।
सदा सर्बगत सर्बहित जानि करेहु अति प्रेम॥ उ० १६/०
अब जन गृह पुनीत प्रभु कीजे। मज्जनु करिअ समर श्रम छीजे॥ लं० ११५/५
अब जनि करहि बिप्र अपमाना। जानेसु संत अनंत समाना॥ उ० १०८/१२
अब जहँ राउर आयसु होई। मुनि उदबेगु न पावै कोई॥ अ० १२५/२
अब जनि कोउ माखै भट मानी। बीर बिहीन मही मैं जानी॥ बा० २५१/३
अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू। कटुबादी बालकु बधजोगू॥ बा० २७४/३
अब जनि बतबढ़ाव खल करही। सुनु मम बचन मान परिहरही॥ लं० २९/१
अब जनि राम खेलावहु एही। अतिसय दुखित होति बैदेही॥ लं० ८५/६
अब जाना मैं अवध प्रभावा। निगमागम पुरान अस गावा॥ उ० ९६/५

अब जानी मैं श्री चतुराई। भजी तुम्हहि सब देव बिहाई॥ अर० ५/७
अब जौं तात दुरावउँ तोही। दारुन दोष घटइ अति मोही॥ बा० १६१/४
अब जौं तुम्हहि सुता पर नेहू। तौ अस जाइ सिखावनु देहू॥ बा० ७१/१
अब तव सिर भुज जंबुक खाहीं। राम बिमुख यह अनुचित नाहीं॥ लं० १०३/१२
अब तहँ रहहिं सक्र के प्रेरे। रच्छक कोटि जच्छपति केरे॥ बा० १७८/२
अब तुम्ह बिनय मोरि सुनि लेहू। मोहि अनुहरत सिखावनु देहू॥ अ० १७६/७
अब तुम्ह मम अनुसासन मानी। बसहु जाइ सुरपति रजधानी॥ बा० १५०/८
अब तें रति तव नाथ कर होइहि नामु अनंगु।
बिनु बपु ब्यापिहि सबहि पुनि सुनु निज मिलन प्रसंगु॥ बा० ८७/०
अब तोहि नीक लाग करु सोई। लोचन ओट बैठु मुहु गोई॥ अ० ३५/६
अब दसरथ कहँ आयसु देहू। जद्यपि छाड़ि न सकहु सनेहू॥ बा० ३३१/७
अब दीनदयाल दया करिऐ। मति मोरि बिभेदकरी हरिऐ॥ लं० ११०/१९ छं०
अब धौं कहा करिहि करतारा। अति सभीत सब करहिं बिचारा॥ लं० १७/९
अब नाथ करि करुना बिलोकहु देहु जो बर मागऊँ।
जेहिं जोनि जन्मौं कर्म बस तहँ राम पद अनुरागऊँ॥
यह तनय मम सम बिनय बल कल्यानप्रद प्रभु लीजिऐ।
गहि बाहँ सुर नर नाह आपन दास अंगद कीजिऐ॥ कि० ९/२ छं०
अब पति मृषा गाल जनि मारहु। मोर कहा कछु हृदयँ बिचारहु॥ लं० ३५/७
अब पद देखि कुसल रघुराया। जौं तुम्ह कीन्हि जानि जन दाया॥ सुं० ४५/८
अब प्रभु चरित सुनहु अति पावन। करत जे बन सुर नर मुनि भावन॥ अर० ०/२
अब प्रभु कृपा करहु एहि भाँती। सब तजि भजनु करौं दिन राती॥ कि० ६/२१
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरें। सहित कोटि कुल मंगल मोरें॥ अ० १९४/८
अब प्रभु संग जाउँ गुर पाहीं। तुम्ह कहँ नाथ निहोरा नाहीं॥ अर० ११/३
अव प्रसन्न मैं संसय नाहीं। मागु जो भूप भाव मन माहीं॥ बा० १६३/५
अब्यक्तमूलमनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने।
षट कंध साखा पंच बीस अनेक पर्न सुमन घने॥
फल जुगल बिधि कटु मधुर बेलि अकेलि जेहि आश्रित रहे।
पल्लवत फूलत नवल नित संसार बिटप नमामहे॥ उ० १२/५ छं०
अब बिधि अस बुझिअ नहिं तोही। संकर बिमुख जिआवसि मोही॥ बा० ५८/४
अब बिनती मम सुनहु सिव जौं मो पर निज नेहु।
जाइ बिबाहहु सैलजहि यह मोहि मागें देहु॥ बा० ७६/०
अब बिलंबु केहि कारन कीजे। तुरत कपिन्ह कहुँ आयसु दीजे॥ सुं० ३३/७
अब भरि अंक भेंटु मोहि भाई। लोचन सुफल करौं मैं जाई॥ लं० ६२/७
अब मारुतसुत दूत समूहा। पठवहु जहँ तहँ बानर जूहा॥ कि० १८/४

अब मुनिबर बिलंब नहिं कीजै। महाराज कहँ तिलक करीजै ॥ उ० ९/८
अब मैं कुसल मिटे भय भारे। देखि राम पद कमल तुम्हारे ॥ सुं० ४६/५
अब मैं जन्मु संभु हित हारा। को गुन दूषन करै बिचारा ॥ बा० ८०/२
अब मोहि आपनि किंकरि जानी। जदपि सहज जड़ नारि अयानी ॥ बा० ११९/४
अब मोहि भा भरोस हनुमंता। बिनु हरिकृपा मिलहिं नहिं संता ॥ सुं० ६/४
अब रघुपति पद पंकरुह हियँ धरि पाइ प्रसाद।
कहउँ जुगल मुनिबर्ज कर मिलन सुभग संबाद ॥ बा० ४३/० (ख)
अब लगि मोहि न मिलेउ कोउ मैं न जनावउँ काहु।
लोकमान्यता अनल सम कर तप कानन दाहु ॥ बा० १६१/० (क)
अबला कच भूषन भूरि छुधा। धनहीन दुखी ममता बहुधा ॥ उ० १०१/१ छं०
अबला बालक बृद्ध जन कर मीजहिं पछिताहिं।
होहिं प्रेमबस लोग इमि रामु जहाँ जहँ जाहिं ॥ अ० १२१/०
अब सब बिप्र बोलाइ गोसाईं। देहु धेनु सब भाँति बनाई ॥ बा० ३२९/७
अब सबु आँखिन्ह देखेउँ आई। जिअत जीव जड़ सबइ सहाई ॥ अ० २६१/७
अब साधेउँ रिपु सुनहु नरेसा। जौं तुम्ह कीन्ह मोर उपदेसा ॥ बा० १७०/३
अब सुख सोवत सोचु नहिं भीख मागि भव खाहिं।
सहज एकाकिन्ह के भवन कबहुँ कि नारि खटाहिं ॥ बा० ७९/०
अब सुभ कहा सुनहु तुम्ह मोरा। सब अपराध छमिहि प्रभु तोरा ॥ लं० १९/६
अब सुनु परम बिमल मम बानी। सत्य सुगम निगमादि बखानी ॥ उ० ८५/१
अब सोइ जतन करहु तुम ताता। देखौं नयन स्याम मृदु गाता ॥ लं० १०७/१
अब सोइ जतनु करहु मन लाई। जेहि बिधि सीता कै सुधि पाई ॥ कि० २०/८
अब सो कथा सुनहु जेहि हेतू। गयउ काग पहिं खग कुल केतू ॥ उ० ५७/२
अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही। जेहि प्रकार मारौं मुनिद्रोही ॥ अर० १२/३
अब श्रीराम कथा अति पावनि। सदा सुखद दुख पुंज नसावनि ॥ उ० ६३/३
अब हम नाथ सनाथ सब भए देखि प्रभु पाय।
भाग हमारें आगमनु राउर कोसलराय ॥ अ० १३५/०
अबहिं मातु मैं जाउँ लवाई। प्रभु आयसु नहिं राम दोहाई ॥ सुं० १५/३
अबहीं ते उर संसय होई। बेनुमूल सुत भयहु घमोई ॥ लं० ९/३
अबिचल राजु बिभीषन पायो। सुनि कपि बचन हरष उर छायो ॥ लं० १०६/८
अबिनय बिनय जथारुचि बानी। छमिहि देउ अति आरति जानी ॥ अ० २९९/८
अबिरल प्रेम भगति मुनि पाई। प्रभु देखैं तरु ओट लुकाई ॥ अर० ९/१३
अबिरल भगति बिसुद्ध तव श्रुति पुरान जो गाव।
जेहि खोजत जोगीस मुनि प्रभु प्रसाद कोउ पाव ॥ उ० ८४/० (क)
अबिरल भगति बिरति बिग्याना। होहु सकल गुन ग्यान निधाना ॥ अर० १०/२६

अबिरल भगति बिरति सतसंगा। चरन सरोरुह प्रीति अभंगा॥ अर० १२/११
अबिरल भगति मागि बर गीध गयउ हरिधाम।
तेहि की क्रिया जथोचित निज कर कीन्ही राम॥ अर० ३२/०
अभिमत दानि देवतरु बर से। सेवत सुलभ सुखद हरि हर से॥ बा० ३१/११
अमर नाग किंनर दिसिपाला। चित्रकूट आए तेहि काला॥ अ० १३३/१
अमर नाग नर राम बाहुबल। सुख बसिहहिं अपनें अपनें थल॥ अ० २८४/७
अमल अचल मन त्रोन समाना। सम जम नियम सिलीमुख नाना॥ लं० ७९/९
अमलमखिलमनवद्यमपारं। नौमि राम भंजन महि भारं॥ अर० १०/१२
अमित दानि भर्ता बयदेही। अधम सो नारि जो सेव न तेही॥ अर० ४/६
अमित नाम भट कठिन कराला। अमित नाग बल बिपुल बिसाला॥ सुं० ५३/८
अमितबोध अनीह मितभोगी। सत्यसार कबि कोबिद जोगी॥ अर० ४४/८
अमित रूप प्रकटे तेहि काला। जथाजोग मिले सबहि कृपाला॥ उ० ५/५
अमिय मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भव रुज परिवारू॥ बा० ०/२
अरथ अनूप सुभाव सुभासा। सोइ पराग मकरंद सुबासा॥ बा० ३६/६
अरथ धरम कामादिक चारी। कहब ग्यान बिग्यान बिचारी॥ बा० ३६/९
अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहउँ निरबान।
जनम जनम रति राम पद यह बरदानु न आन॥ अ० २०४/०
अरि बस दैउ जिआवत जाही। मरनु नीक तेहि जीवन चाही॥ अ० २०/२
अरिहुक अनभल कीन्ह न रामा। मैं सिसु सेवक जद्यपि बामा॥ अ० १८२/६
अरुण नयन राजीव सुवेशं। सीता नयन चकोर निशेशं॥ अर० १०/७
अरुंधती अरु अगिनि समाऊ। रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराऊ॥ अ० १८६/५
अरुन चरन पंकज नख जोती। कमल दलन्हि बैठे जनु मोती॥ बा० १९८/२
अरुन नयन उर बाहु बिसाला। नील जलज तनु स्याम तमाला॥ बा० २०८/१
अरुन नयन भृकुटी कुटिल चितवत नृपन्ह सकोप।
मनहुँ मत्त गजगन निरखि सिंघकिसोरहि चोप॥ बा० २६७/०
अरुन नयन बारिद तनु स्यामा। अखिल लोक लोचनाभिरामा॥ लं० ८५/९
अरुन पराग जलजु भरि नीकें। ससिहि भूप अहि लोभ अमी कें॥ बा० ३२४/९
अरुन पानि नख करज मनोहर। बाहु बिसाल बिभूषन सुंदर॥ उ० ७६/१
अरुनोदयँ सकुचे कुमुद उडगन जोति मलीन।
जिमि तुम्हार आगमन सुनि भए नृपति बलहीन॥ बा० २३८/०
अलिगन गावत नाचत मोरा। जनु सुराज मंगल चहुँ ओरा॥ अ० २३५/७
अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा। सब सुंदर सब बिरुज सरीरा॥ उ०२०/५
अवगाहि सोक समुद्र सोचहिं नारि नर ब्याकुल महा।
दै दोष सकल सरोष बोलहिं बाम बिधि कीन्हो कहा॥

सुर सिद्ध तापस जोगिजन मुनि देखि दसा बिदेह की।
तुलसी न समरथु कोउ जो तरि सकै सरित सनेह की ॥ अ० २७५/१ छं०
अवगुन एक मोर मैं माना। बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना ॥ सुं० ३०/५
अवगुन तजि सब के गुन गहहीं। बिप्र धेनु हित संकट सहहीं ॥ अ० १३०/१
अवगुन मूल सूलप्रद प्रमदा सब दुख खानि।
ताते कीन्ह निवारन मुनि मैं यह जियँ जानि ॥ अर० ४४/०
अवगुन सिंधु मंदमति कामी। बेद बिदूषक परधन स्वामी ॥ उ० ३९/७
अवघट घाट बाट गिरि कंदर। माया बल कीन्हेसि सर पंजर ॥ लं० ७२/६
अवतार उदार अपार गुनं। महि भार बिभंजन ग्यानघनं ॥ लं० ११०/६ छं०
अवध उजारि कीन्हि कैकेईं। दीन्हिसि अचल बिपति कै नेईं ॥ अ० २८/९
अवध तहाँ जहँ राम निवासू। तहँइँ दिवसु जहँ भानु प्रकासू ॥ अ० ७३/३
अवधनाथु चाहत चलन भीतर करहु जनाउ।
भए प्रेमबस सचिव सुनि बिप्र सभासद राउ ॥ बा० ३३२/०
अवध नृपति दसरथ के जाए। पुरुष सिंघ बन खेलन आए ॥ अर० २१/३
अवधपुरी अति रुचिर बनाई। देवन्ह सुमन बृष्टि झरि लाई ॥ उ० १०/१
अवधपुरी प्रति भुवन निनारी। सरजू भिन्न भिन्न नर नारी ॥ उ० ८०/६
अवधपुरी प्रभु आवत जानी। भई सकल सोभा कै खानी ॥ उ० २/९
अवधपुरीं रघुकुलमनि राऊ। बेद बिदित तेहि दसरथ नाऊँ ॥ बा० १८७/७
अवधपुरी बासिन्ह कर सुख संपदा समाज।
सहस सेष नहिं कहि सकहिं जहँ नृप राम बिराज ॥ उ० २६/०
अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ। यह प्रसंग जानइ कोउ कोऊ ॥ उ० ३/४
अवधपुरी सोहइ एहि भाँती। प्रभुहि मिलन आई जनु राती ॥ बा० १९४/३
अवध प्रभाव जान तब प्रानी। जब उर बसहिं रामु धनुपानी ॥ उ० ९६/७
अवध प्रबेसु कीन्ह अँधियारें। पैठ भवन रथु राखि दुआरें ॥ अ० १४६/५
अवध राजु सुर राजु सिहाई। दसरथ धनु सुनि धनदु लजाई ॥ अ० ३२३/६
अवधि अंबु प्रिय परिजन मीना। तुम्ह करुनाकर धरम धुरीना ॥ अ० ५६/२
अवधि मेटि जो बिनु सुधि पाएँ। आवइ बनिहि सो मोहि मराएँ ॥ कि० २१/८
अवधेस सुरेस रमेस बिभो। सरनागत मागत पाहि प्रभो ॥ उ० १३/२ छं०
अवनि जमहि जाचति कैकेई। महि न बीचु बिधि मीचु न देई ॥ अ० २५१/६
अवनिप अकनि रामु पगु धारे। धरि धीरजु तब नयन उघारे ॥ अ० ४३/१
अवलंब भवंत कथा जिन्ह कें। प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह कें ॥ उ० १३/१२ छं०
अवलोकनि बोलनि मिलनि प्रीति परस्पर हास।
भायप भलि चहु बंधु की जल माधुरी सुबास ॥ बा० ४२/०
अवलोकि खरतर तीर। मुरि चले निसिचर बीर ॥ अर० १९/३ छं०

अवलोके रघुपति बहुतेरे । सीता सहित न बेष घनेरे ॥ बा० ५४/४
अवसर जानि बिभीषनु आवा । भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा ॥ सुं० ३७/२
अवसरु जानि सप्तरिषि आए । तुरतहिं बिधि गिरिभवन पठाए ॥ बा० ८८/७
अवसि अत्रि आयसु सिर धरहू । तात बिगतभय कानन चरहू ॥ अ० ३०७/५
अवसि काज मैं करिहउँ तोरा । मन तन बचन भगत तैं मोरा ॥ बा० १६७/३
अवसि चलिअ बन रामु जहँ भरत मंत्रु भल कीन्ह ।
सोक सिंधु बूड़त सबहि तुम्ह अवलंबनु दीन्ह ॥ अ० १८४/०
अवसि दूतु मैं पठइब प्राता । एहहिं बेगि सुनत दोउ भ्राता ॥ अ० ३०/७
अवसि नरेस बचन फुर करहू । पालहु प्रजा सोकु परिहरहु ॥ अ० १७४/१
अवसि फिरहिं गुर आयसु मानी । मुनि पुनि कहब राम रुचि जानी ॥ अ० २५२/३
अस अनंदु अचिरिजु प्रति ग्रामा । जनु मरुभूमि कलपतरु जामा ॥ अ० २२२/८
अस अनुमानि सोच परिहरहू । सहित समाज राज पुर करहू ॥ अ० १६०/४
अस अभिमान जाइ जनि भोरे । मैं सेवक रघुपति पति मोरे ॥ अर० १०/२१
अस अभिलाषु नगर सब काहू । कैकयसुता हृदयँ अति दाहू ॥ अ० २३/७
अस उपदेसु उमहि जिन्ह दीन्हा । बौरे बरहि लागि तपु कीन्हा ॥ बा० ९६/२
अस उर धरि महि बिचरहु जाई । अब न तुम्हहि माया निअराई ॥ बा० १३७/८
अस कपि एक न सेना माहीं । राम कुसल जेहि पूछी नाहीं ॥ कि० २१/३
अस कस कहहु मानि मन ऊना । सुखु सोहागु तुम्ह कहुँ दिन दूना ॥ अ० २०/४
अस कहि अंगद मारा लाता । चितव न सठ स्वारथ मन राता ॥ लं० ८४/८
अस कहि अट्टहास सठ कीन्हा । गृह बैठें अहार बिधि दीन्हा ॥ लं० ३९/४
अस कहि अति सकुचे रघुराऊ । मुनि पुलके लखि सीलु सुभाऊ ॥ अ० २८९/७
अस कहि कठिन बान संधाने । अतिसय क्रोध श्रवन लगि ताने ॥ लं० ४९/४
अस कहि लछिमन कहुँ कपि ल्यायो । देखि दसानन बिसमय पायो ॥ लं० ८३/५
अस कहि कपि सब चले तुरंता । अंगद कहइ सुनहु हनुमंता ॥ उ० १८/१०
अस कहि करत दंडवत देखा । तुरत उठे प्रभु हरष बिसेषा ॥ सुं० ४५/१
अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा । अनुज गहे पद बारहिं बारा ॥ सुं० ४०/६
अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी । मानहुँ रोष तरंगिनि बाढ़ी ॥ अ० ३३/१
अस कहि गई अपछरा जबहीं । निसिचर निकट गयउ कपि तबहीं ॥ लं० ५७/३
अस कहि गरुड़ गीध जब गयऊ । तिन्ह कें मन अति बिसमय भयऊ ॥ कि० २८/५
अस कहि गहे नरेस पद स्वामी होहु कृपाल ।
मोहि लागि दुख सहिअ प्रभु सज्जन दीनदयाल ॥ बा० १६७/०
अस कहि चरन परेउ प्रभु पाही । अब जनि नाथ कहहु गृह जाही ॥ उ० १७/८
अस कहि चला महा अभिमानी । तृन समान सुग्रीवहि जानी ॥ कि० ७/१
अस कहि चला बिभीषनु जबहीं । आयूहीन भए सब तबहीं ॥ सुं० ४१/१

अस कहि चला रचिसि मग माया। सर मंदिर बर बाग बनाया ॥ लं० ५६/१
अस कहि चलेउ सबहि सिरु नाई। सुमन धनुष कर सहित सहाई ॥ बा० ८३/३

अस कहि चलेउ बालिसुत फिरि आयउ हनुमंत।
तासु प्रीति प्रभु सन कही मगन भए भगवंत ॥ उ० १९/० (ख)

अस कहि चले देवरिषि करत राम गुन गान।
हरि माया बल बरनत पुनि पुनि परम सुजान ॥ उ० ५९/०

अस कहि छाड़ेसि बान प्रचंडा। लछिमन किए सकल सत खंडा ॥ लं० ८२/३
अस कहि जोग अगिनि तनु जारा। भयउ सकल मख हाहाकारा ॥ बा० ६३/८
अस कहि जोग अगिनि तनु जारा। राम कृपाँ बैकुंठ सिधारा ॥ अर० ८/१
अस कहि तरल त्रिसूल चलायो। जामवंत कर गहि सोइ धायो ॥ लं० ७३/६
अस कहि दोउ भागे भयँ भारी। बदन दीख मुनि बारि निहारी ॥ बा० १३४/७

अस कहि नयन नीर भरि गहि पद कंपित गात।
नाथ भजहु रघुनाथहि अचल होइ अहिवात ॥ लं० ७/०

अस कहि नारद सुमिरि हरि गिरिजहि दीन्हि असीस।
होइहि यह कल्यान अब संसय तजहु गिरीस ॥ बा० ७०/०

अस कहि पग परि प्रेम अति सिय हित बिनय सुनाइ।
सिय समेत सियमातु तब चली सुआयसु पाइ ॥ अ० २८५/०

अस कहि परी चरन धरि सीसा। बोले सहित सनेह गिरीसा ॥ बा० ७०/७
अस कहि परेउ चरन अकुलाई। निज तनु प्रगटि प्रीति उर छाई ॥ कि० २/५
अस कहि प्रभु बिलोकि मुनि धीरा। लोचन जल बह पुलक सरीरा ॥ अर० ५/१०
अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई। सिंधु समीप गए रघुराई ॥ सुं० ५०/६
अस कहि प्रभु सब कथा बखानी। जेहि जेहि भाँति दीन्ह बनु रानी ॥ अ० १२४/८
अस कहि प्रेम बिबस भए भारी। पुलक सरीर बिलोचन बारी ॥ अ० ३००/५
अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा। सिय मुख ससि भए नयन चकोरा ॥ बा० २२९/३
अस कहि बंधु समेत नहाने। पूजि पुरारि साधु सनमाने ॥ अ० २२५/८
अस कहि बहुत भाँति समुझाई। पुनि त्रिजटा निज भवन सिधाई ॥ लं० ९९/१
अस कहि बिहसि ताहि उर लाई। चलेउ सभाँ ममता अधिकाई ॥ सुं० ३६/५
अस कहि भले भूप अनुरागे। रूप अनूप बिलोकन लागे ॥ बा० २४५/७
अस कहि भेंट सँजोवन लागे। कंद मूल फल खग मृग मागे ॥ अ० १९२/२
अस कहि मरुत बेग रथ साजा। बाजे सकल जुझाऊ बाजा ॥ लं० ७७/७
अस कहि मातु भरतु हियँ लाए। थन पय स्रवहिं नयन जल छाए ॥ अ० १६८/५
अस कहि मुनि बसिष्ट गृह आए। कृपासिंधु के मन अति भाए ॥ उ० ४९/१
अस कहि मुरुछि परा महि राऊ। रामु लखनु सिय आनि देखाऊ ॥ अ० ८१/८
अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा। यह मत लछिमन के मन भावा ॥ सुं० ५७/५

अस कहि रचेउ रुचिर गृह नाना। जेहि बिलोकि बिलखाहिं बिमाना ॥ अ० २१३/४
अस कहि रथ रघुनाथ चलावा। बिप्र चरन पंकज सिरु नावा ॥ लं० ८९/१
अस कहि रही चरन गहि रानी। प्रेम पंक जनु गिरा समानी ॥ बा० ३३६/१
अस कहि राउ सहित सुत रानी। परेउ चरन मुख आव न बानी ॥ बा० ३५९/८
अस कहि राम गवनु तब कीन्हा। भूप सोक बस उतरु न दीन्हा ॥ अ० ४५/५
अस कहि राम तिलक तेहि सारा। सुमन बृष्टि नभ भई अपारा ॥ सुं० ४८/१०
अस कहि लखन ठाउँ देखरावा। थलु बिलोकि रघुबर सुखु पावा ॥ अ० १३२/५
अस कहि लगे जपन हरिनामा। गईं सती जहँ प्रभु सुखधामा ॥ बा० ५१/८
अस कहि लवन सिंधु तट जाई। बैठे कपि सब दर्भ डसाई ॥ कि० २५/१०
अस कहि सचिव बचन रहि गयऊ। हानि गलानि सोच बस भयऊ ॥ अ० १५२/४
अस कहि सब महिदेव सिधाए। समाचार पुरलोगन्ह पाए ॥ बा० १७४/१
अस कहि सारद गइ बिधि लोका। बिबुध बिकल निसि मानहुँ कोका ॥ अ० २९४/८
अस कहि सीय बिकल भइ भारी। बचन बियोगु न सकी सँभारी ॥ अ० ६७/१
अस को जीव जंतु जग माहीं। जेहि रघुनाथ प्रानप्रिय नाहीं ॥ अ० १६१/६
अस कौतुक करि राम सर प्रबिसेउ आइ निषंग।
रावन सभा ससंक सब देखि महा रसभंग ॥ लं० १३/० (ख)
अस कौतुक बिलोकि द्वौ भाई। बिहँसि चले कृपालु रघुराई ॥ लं० ४/१
असगुन अमित होहिं तेहि काला। गनइ न भुजबल गर्ब बिसाला ॥ लं० ७७/९
असगुन अमित होहिं भयकारी। गनहिं न मृत्यु बिबस सब झारी ॥ अर० १७/७
असगुन होहिं नगर पैठारा। रटहिं कुभाँति कुखेत करारा ॥ अ० १५७/४
अस जियँ जानि कहिअ सोइ ठाऊँ। सिय सौमित्रि सहित जहँ जाऊँ ॥ अ० १२५/५
अस जियँ जानि जानकी देखी। प्रभु पुलके लखि प्रीति बिसेषी ॥ बा० २६०/४
अस जियँ जानि तजहु कुटिलाई। करहु भरत पद प्रीति सुहाई ॥ अ० २१८/८
अस जियँ जानि दसानन संगा। चला राम पद प्रेम अभंगा ॥ अर० २५/७
अस जियँ जानि संग बन जाहू। लेहु तात जग जीवन लाहू ॥ अ० ७३/८
अस जियँ जानि सुजान सिरोमनि। लेइअ संग मोहि छाड़िअ जनि ॥ अ० ६५/७
अस जियँ जानि सुनहु सिख भाई। करहु मातु पितु पद सेवकाई ॥ अ० ७०/१
अस जियँ जानि सुजान सुदानी। सफल करहिं जग जाचक बानी ॥ अ० २०३/८
अस तपु काहुँ न कीन्ह भवानी। भए अनेक धीर मुनि ग्यानी ॥ बा० ७४/१
अस तव रूप बखानउँ जानउँ। फिरि फिरि सगुन ब्रह्म रति मानउँ ॥ अर० १२/१३
अस तीरथपति देखि सुहावा। सुख सागर रघुबर सुखु पावा ॥ अ० १०५/२
असन पान सुचि अमिअ अमी से। देखि लोग सकुचात जमी से ॥ अ० २१४/५
असन बसन बासन ब्रत नेमा। करत कठिन रिषिधरम सप्रेमा ॥ अ० ३२३/४
असन सयन बर बसन सुहाए। पावहिं सब निज निज मन भाए ॥ बा० ३०३/७

अस निज हृदयँ बिचारि तजु संसय भजु राम पद ।
सुनु गिरिराज कुमारि भ्रम तम रबि कर बचन मम ॥ बा० ११५/० सो०
अस पन तुम्ह बिनु करइ को आना । रामभगत समरथ भगवाना ॥ बा० ५६/५
अस प्रभु छाड़ि भजहिं जे आना । ते नर पसु बिनु पूँछ बिषाना ॥ सुं० ४९/१
अस प्रभु दीनबंधु हरि कारन रहित दयाल ।
तुलसिदास सठ तेहि भजु छाड़ि कपट जंजाल ॥ बा० २११/०
अस प्रभु सुनि न भजहिं भ्रम त्यागी । नर मतिमंद ते परम अभागी ॥ लं० ४४/६
अस प्रभु हृदयँ अछत अबिकारी । सकल जीव जग दीन दुखारी ॥ बा० २२/७
अस बरु तुम्हहि मिलाउब आनी । सुनत बिहसि कह बचन भवानी ॥ बा० ७९/४
अस बरु मागि चरन गहि रहेऊ । एवमस्तु करुनानिधि कहेऊ ॥ बा० १५०/७
अस बिचारि उर छाड़हु कोहू । सोक कलंक कोठि जनि होहू ॥ अ० ४९/१
अस बिचारि केहि देइअ दोसू । ब्यरथ काहि पर कीजिअ रोसू ॥ अ० १७१/१
अस बिचारि खल बधउँ न तोही । अब ज़नि रिस उपजावसि मोही ॥ लं० ३०/५
अस बिचारि गवनहु घर भाई । जसु प्रतापु बल तेजु गवाँई ॥ बा० २४४/४
अस बिचारि गुहँ ग्याति सन कहेउ सजग सब होहु ।
हथवाँसहु बोरहु तरनि कीजिअ घाटारोहु ॥ अ० १८९/०
अस बिचारि जस आयसु होई । मैं सिख देउँ जानकिहि सोई ॥ अ० ५९/६
अस बिचारि जियँ जागहु ताता । मिलइ न जगत सहोदर भ्राता ॥ लं० ६०/८
अस बिचारि जे तग्य बिरागी । रामहि भजहिं तर्क सब त्यागी ॥ लं० ७३/२
अस बिचारि जे परम सयाने । भजहिं मोहि संसृत दुख जाने ॥ उ० ४०/६
अस बिचारि जे मुनि बिग्यानी । जाचहिं भगति सकल सुख खानी ॥ उ० ११५/८
अस बिचारि जोइ कर सतसंगा । राम भगति तेहि सुलभ बिहंगा ॥ उ० ११९/१९
अस बिचारि तुम्ह तजहु असंका । सबहि भाँति संकरु अकलंका ॥ बा० ७१/४
अस बिचारि नहिं कीजिअ रोसू । काहुहि बादि न देइअ दोसू ॥ अ० ९२/१
अस बिचारि प्रगटउँ निज मोहू । हरहु नाथ करि जन पर छोहू ॥ बा० ४५/१
अस बिचारि मतिधीर तजि कुतर्क संसय सकल ।
भजहु राम रघुबीर करुनाकर सुंदर सुखद ॥ उ० ९०/० सो०
अस बिचारि सब सोच बिहाई । पालहु अवध अवधि भरि जाई ॥ अ० ३१४/६
अस बिचारि सुचि सेवक बोले । जे सपनेहुँ निज धरम न डोले ॥ अ० १८५/६
अस बिचारि सुनु प्रानपति प्रभु सन बयरु बिहाइ ।
प्रीति करहु रघुबीर पद मम अहिवात न जाइ ॥ लं० १५/० (ख)
अस बिचारि सोइ करहु उपाई । सबहि जिअत जेहिं भेंटहु आई ॥ अ० ५६/३
अस बिचारि सोइ करहु जो भावा । राम जननि सिख सुनि सुखु पावा ॥ अ० ७८/५
अस बिचारि सोचहि मति माता । सो न टरइ जो रचइ बिधाता ॥ बा० ९६/६

अस बिचारि संकरु मतिधीरा । चले भवन सुमिरत रघुबीरा ॥ बा० ५६/३
अस बिचारि हरि भगत सयाने । मुक्ति निरादर भगति लुभाने ॥ उ० ११८/७
अस बिबेक जब देइ बिधाता । तब तजि दोष गुनहिं मनु राता ॥ बा० ६/१
अस बिबेक राखेहु मन माहीं । तुम्ह कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥ उ० १०८/१५
अस मन आनि मुदित नर नारी । भयउ बहोरि रहब दिन चारी ॥ अ० २७२/२
अस मन गुनइ राउ नहिं बोला । पीपर पात सरिस मनु डोला ॥ अ० ४४/३
अस मन गुनत चले मग जाता । सकुच सनेहँ सिथिल सब गाता ॥ अ० २३३/४
अस मन समुझु कहति जानकी । खल सुधि नहिं रघुबीर बान की ॥ सुं० ८/८
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही । जौं जड़ दैव जिआवै मोही ॥ लं० ६०/१०
अस मानस मानस चख चाही । भइ कबि बुद्धि बिमल अवगाही ॥ बा० ३८/९
अस मैं अधम सखा सुनु मोहू पर रघुबीर ।
कीन्ही कृपा सुमिरि गुन भरे बिलोचन नीर ॥ सुं० ७/०
अस मैं अवगुन उदधि अगाधू । स्वामि सनेहँ सराहत साधू ॥ अ० २६८/६
अस मैं सुना श्रवन दसकंधर । पदुम अठारह जूथप बंदर ॥ सुं० ५६/३
अस मोहि सब बिधि भूरि भरोसो । किएँ बिचारु न सोचु खरो सो ॥ अ० ३१३/५
असमंजस बस अवध नेवासी । प्रमुदित मन तापस बनबासी ॥ अ० २६९/२
असरन सरन बिरदु संभारी । मोहि जनि तजहु भगत हितकारी ॥ उ० १७/३
अस सज्जन मम उर बस कैसें । लोभी हृदयँ बसत धनु जैसें ॥ सुं० ४७/७
अस समुझत मन संसय होई । कहा जो प्रभु प्रवान पुनि सोई ॥ बा० १४९/७
अस सुभाउ कहुँ सुनउँ न देखउँ । केहि खगेस रघुपति सम लेखउँ ॥ उ० १२३/४
अस संजोग ईस जब करई । तबहुँ कदाचित सो निरुअरई ॥ उ० ११६/८
अस संसय आनत उर माहीं । ग्यान बिराग सकल गुन जाहीं ॥ बा० ११८/६
अस संसय मन भयउ अपारा । होइ न हृदयँ प्रबोध प्रचारा ॥ बा० ५०/४
असि प्रतीति सब के मन माहीं । राम चाप तोरब सक नाहीं ॥ बा० २४४/२
असि रघुपति लीला उरगारी । दनुज बिमोहनि जन सुखकारी ॥ उ० ७२/१
असि रव पूरि रही नव खंडा । धावहिं जहँ तहँ रुंड प्रचंडा ॥ लं० ५२/७
असि रिस होति दसउ मुख तोरौं । लंका गहि समुद्र महँ बोरौं ॥ लं० ३३/२
असि सब भाँति अलौकिक करनी । महिमा जासु जाइ नहिं बरनी ॥ बा० ११७/८
असि सिख तुम्ह बिनु देइ न कोऊ । मातु पिता स्वारथ रत ओऊ ॥ उ० ४६/४
असि हरिभगति सुगम सुखदाई । को अस मूढ़ न जाहि सोहाई ॥ उ० ११८/१०
असुभ बेष भूषन धरें भच्छाभच्छ जे खाहिं ।
तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर पूज्य ते कलिजुग माहिं ॥ उ० ९८/० (क)
असुभ होन लागे तब नाना । रोवहिं खर सृकाल बहु स्वाना ॥ लं० १०१/७
असुर नाग खग नर मुनि देवा । आइ करहिं रघुनायक सेवा ॥ बा० ३३/७

असुर मारि थापहिं सुरन्ह राखहिं निज श्रुति सेतु।
जग बिस्तारहिं बिसद जस राम जन्म कर हेतु ॥ बा० १२१/०
असुर समूह सतावहिं मोही। मैं जाचन आयउँ नृप तोही ॥ बा० २०६/९
असुर सुरा बिष संकरहि आपु रमा मनि चारु।
स्वारथ साधक कुटिल तुम्ह सदा कपट ब्यवहारु ॥ बा० १३६/०
असुर सेन सम नरक निकंदिनि। साधु बिबुध कुल हित गिरिनंदिनि ॥ बा० ३०/९
अस्तुति करत देवतन्हि देखें। भयउँ एक मैं इन्ह के लेखें ॥ लं० ९६/५
अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा। बहुबिधि लावहिं निज निज सेवा ॥ बा० १९०/८
अस्तुति करहिं सकल मुनि बृंदा। जयति प्रनत हित करुना कंदा ॥ अर० ८/४
अस्तुति करि न जाइ भय माना। जगत पिता मैं सुत करि जाना ॥ बा० २०१/७
अस्तुति करि सुर सिद्ध सिधाए। लछिमन कृपासिंधु पहिं आए ॥ लं० ७६/५
अस्तुति सुरन्ह कीन्हि अति हेतू। प्रगटेउ बिषमबान झषकेतू ॥ बा० ८२/८
अस्थिमात्र होइ रहे सरीरा। तदपि मनाग मनहिं नहिं पीरा ॥ बा० १४४/४
अस्थि समूह देखि रघुराया। पूछी मुनिन्ह लागि अति दाया ॥ अर० ८/६
अस्त्र सस्त्र आयुध सब डारे। कौतुकहीं प्रभु काटि निवारे ॥ लं० ५०/६
अस्त्र सस्त्र सबु साजु बनाई। रथी सारथिन्ह लिए बोलाई ॥ बा० २९८/८
अहइ एक अति सुगम उपाई। तहाँ परंतु एक कठिनाई ॥ बा० १६६/२
अहनिसि बिधिहि मनावत रहहीं। श्रीरघुबीर चरन रति चहहीं ॥ उ० २४/५
अहह कंत कृत राम बिरोधा। काल बिबस मन उपज न बोधा ॥ लं० ३६/६
अहह तात दारुनि हठ ठानी। समुझत नहिं कछु लाभु न हानी ॥ बा० २५७/२
अहह दैव मैं कत जग जायउँ। प्रभु के एकहु काज न आयउँ ॥ लं० ५९/३
अहह धन्य लछिमन बड़भागी। राम पदारबिंदु अनुरागी ॥ उ० ०/३
अहह नाथ रघुनाथ सम कृपासिंधु नहिं आन।
जोगि बृंद दुर्लभ गति तोहि दीन्हि भगवान ॥ लं० १०४/०
अहह बंधु तैं कीन्हि खोटाई। प्रथमहिं मोहि न सुनाएहि आई ॥ लं० ६२/४
अहह मंद मनु अवसर चूका। अजहुँ न हृदयँ होत दुइ टूका ॥ अ० १४३/६
अहि अघ अवगुन नहिं मनि गहई। हरइ गरल दुख दारिद दहई ॥ अ० १८३/८
अहिप महिप जहँ लगि प्रभुताई। जोग सिद्धि निगमागम गाई ॥ अ० २५३/७
अहो धन्य तव जन्मु मुनीसा। तुम्हहि प्रान सम प्रिय गौरीसा ॥ बा० १०३/४
अहोभाग्य मम अमित अति राम कृपा सुख पुंज।
देखेउँ नयन बिरंचि सिव सेब्य जुगल पद कंज ॥ सुं० ४७/०
अहंकार अति दुखद डमरुआ। दंभ कपट मद मान नेहरुआ ॥ उ० १२०/३५
अहंकार सिव बुद्धि अज मन ससि चित्त महान।
मनुज बास सचराचर रूप राम भगवान ॥ लं० १५/० (क)

अत्रि आदि मुनिबर बहु बसहीं । करहिं जोग जप तप तनु कसहीं ॥ अ० १३१/७

अत्रि कहेउ तब भरत सन सैल समीप सुकूप ।
राखिअ तीरथ तोय तहँ पावन अमिअ अनूप ॥ अ० ३०९/०

अत्रि के आश्रम जब प्रभु गयऊ । सुनत महामुनि हरषित भयऊ ॥ अर० २/४

आ

आइ गए बगमेल धरहु धरहु धावत सुभट ।
जथा बिलोकि अकेल बाल रबिहि घेरत दनुज ॥ अर० १८/० सो०

आइ बना भल सकल समाजू । प्रगट करउँ रिस पाछिल आजू ॥ अ० २२९/५

आइ बिभीषन पुनि सिरु नायो । कृपासिंधु तब अनुज बोलायो ॥ लं० १०५/१

आइ राम पद नावहिं माथा । निरखि बदन सब होहिं सनाथा ॥ कि० २१/२

आइ सबन्हि नावा पद सीसा । मिलेउ सबन्हि अति प्रेम कपीसा ॥ सुं० २८/३

आए कपि सब जहँ रघुराई । बैदेही की कुसल सुनाई ॥ उ० ६६/६

आए कीस काल के प्रेरे । छुधावंत सब निसिचर मेरे ॥ लं० ३९/३

आए देव सदा स्वारथी । बचन कहहिं जनु परमारथी ॥ लं० १०९/२

आए निकट देखि अनुरागे । सादर मिलन परसपर लागे ॥ अ० २७४/६

आए ब्याहि रामु घर जब तें । बसइ अनंद अवध सब तब तें ॥ बा० ३६०/५

आए भरत संग सब लोगा । कृस तन श्रीरघुबीर बियोगा ॥ उ० ४/१

आए मिलन सिद्ध मुनि ग्यानी । धरम धुरंधर नृपरिषि जानी ॥ बा० १४२/६

आकर चारि जीव जग अहहीं । कासीं मरत परम पद लहहीं ॥ बा० ४५/४

आकर चारि लच्छ चौरासी । जोनि भ्रमत यह जिव अबिनासी ॥ उ० ४३/४

आकर चारि लाख चौरासी । जाति जीव जल थल नभ बासी ॥ बा० ७/१

आखर अरथ अलंकृति नाना । छंद प्रबंध अनेक बिधाना ॥ बा० ८/९

आखर मधुर मनोहर दोऊ । बरन बिलोचन जन जिय जोऊ ॥ बा० १९/१

आगम निगम पुरान अनेका । पढ़े सुने कर फल प्रभु एका ॥ उ० ४८/३

आगम निगम प्रसिद्ध पुराना । सेवाधरमु कठिन जगु जाना ॥ अ० २९२/७

आगम निगम प्रसिद्ध पुराना । षन्मुख जन्मु सकल जग जाना ॥ बा० १०२/८

आगिल काजु बिचारि बहोरी । करिहहिं चाह कुसल कबि मोरी ॥ अ० ११/७

आगिलि बात समुझि डरु मोही । देउ दैउ फिरि सो फलु ओही ॥ अ० १७/८

आगें कह मृदु बचन बनाई । पाछें अनहित मन कुटिलाई ॥ कि० ६/७

आगें कै हनुमंतहि लीन्हा । पैठ बिबर बिलंबु न कीन्हा ॥ कि० २३/८

आगें चले बहुरि रघुराया । रिष्यमूक पर्बत निअराया ॥ कि० ०/१

आगें दीखि जरत रिस भारी । मनहूँ रोष तरवारि उघारी ॥ अ० ३०/१

आगें देखि राम तन स्यामा । सीता अनुज सहित सुख धामा ॥ अर० ९/२०

आगें परा गीधपति देखा । सुमिरत राम चरन जिन्ह रेखा ॥ अर० २९/१८
आगें मुनिबर बाहन आछें । राजसमाज जाइ सबु घाछें ॥ अ० २२०/५
आगें राम अनुज पुनि पाछें । मुनि बर बेष बने अति काछें ॥ अर० ६/२
आगें रामु लखनु बने पाछें । तापस बेष बिराजत काछें ॥ अ० १२२/१
आगें होई जेहि सुरपति लेई । अरध सिंघासन आसनु देई ॥ अ० ९७/४
आचारु करि गुर गौरि गनपति मुदित बिप्र पुजावहीं ।
सुर प्रगटि पूजा लेहिं देहिं असीस अति सुखु पावहीं ॥
मधुपर्क मंगल द्रब्य जो जेहि समय मुनि मन महुँ चहैं ।
भरे कनक कोपर कलस सो तब लिएहिं परिचारक रहैं ॥ बा० ३२२/१ छं०
आजु करउँ खलु काल हवाले। परेहु कठिन रावन के पाले ॥ लं० ८९/८
आजु दया दुखु दुसह सहावा । सुनि सौमित्रि बिहसि सिरु नावा ॥ बा० २७९/३
आजु देउँ सब संसय नाहीं । मागु जो तोहि भाव मन माहीं ॥ उ० ८३/२
आजु धन्य मैं धन्य अति जद्यपि सब बिधि हीन ।
निज जन जानि राम मोहि संत समागम दीन ॥ उ० १२३/० (क)
आजु धन्य मैं सुनहु मुनीसा। तुम्हरें दरस जाहिं अघ खीसा ॥ उ० ३२/७
आजु बयरु सबु लेउँ निबाही । जौं रन भूप भाजि नहिं जाही ॥ लं० ८९/७
आजु राम सेवक जसु लेउँ। भरतहि समर सिखावन देऊँ ॥ अ० २२९/३
आजु लगें अरु जब तें भयऊँ। काहू के गृह ग्राम न गयऊँ ॥ बा० १६६/४
आजु सबहिं कहँ भच्छन करऊँ । दिन बहु चले अहार बिनु मरऊँ ॥ कि० २६/३
आजु सुफल जग जनमु हमारा । देखि तात बिधुबदन तुम्हारा ॥ बा० ३५६/७
आजु सुफल तपु तीरथ त्यागू। आजु सुफल जप जोग बिरागू ॥ अ० १०६/५
आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा । सुनत बचन कह पवनकुमारा ॥ सुं० १/३
आठवँ जथालाभ संतोषा । सपनेहुँ नहिं देखइ परदोषा ॥ अर० ३५/४
आतम अनुभव सुख सुप्रकासा । तब भव मूल भेद भ्रम नासा ॥ उ० ११७/२
आतुर बहोरि बिभंजि स्यंदन सूत हति ब्याकुल कियो ।
गिर्‌यो धरनि दसकंधर बिकलतर बान सत बेध्यो हियो ॥
सारथी दूसर घालि रथ तेहि तुरत लंका लै गयो ।
रघुबीर बंधु प्रताप पुंज बहोरि प्रभु चरनन्हि नयो ॥ लं० ८३/१ छं०
आतुर सभय गहेसि पद जाई। त्राहि त्राहि दयाल रघुराई ॥ अर० १/११
आदर दान प्रेम परिपोषे। देत असीस चले मन तोषे ॥ बा० ३५१/४
आदर दान बिनय बहुमाना। सब कर बिदा कीन्ह हिमवाना ॥ बा० १०२/२
आदि अंत कोउ जासु न पावा। मति अनुमानि निगम अस गावा ॥ बा० ११७/४
आदिदेव प्रभु दीनदयाला । जठर धरेउ जेहिं कपिल कृपाला ॥ बा० १४१/६
आदिसक्ति जेहिं जग उपजाया । सोउ अवतरिहि मोरि यह माया ॥ बा० १५१/४

आदिसृष्टि उपजी जबहिं तब उतपति भै मोरि ।
नाम एकतनु हेतु तेहि देह न धरी बहोरि ॥ बा० १६२/०
आदिहु तें सब आपनि करनी । कुटिल कठोर मुदित मन बरनी ॥ अ० १५९/८
आधा कटकु कपिन्ह संघारा । कहहु बेगि का करिअ बिचारा ॥ लं० ४७/४
आन उपाउ न देखिअ देवा । मानत रामु सुसेवक सेवा ॥ अ० २६४/७
आन उपाउ मोहि नहिं सूझा । को जिय कै रघुबर बिनु बूझा ॥ अ० १८२/१
आन उपायँ निधन तव नाहीं । जौं हरि हर कोपहिं मन माहीं ॥ बा० १६५/४
आनँद मगन राम महतारी । दिये दान बहु बिप्र हँकारी ॥ अ० ७/४
आन दंड कछु करिअ गोसाँई । सबहीं कहा मंत्र भल भाई ॥ सुं० २३/८
आनन अनल अंबुपति जीहा । उतपति पालन प्रलय समीहा ॥ लं० १४/६
आनन रहित सकल रस भोगी । बिनु बानी बकता बड़ जोगी ॥ बा० ११७/६
आन बीर बल सठ मम आगें । पुनि पुनि कहसि लाज पति त्यागें ॥ लं० २८/४
आनहु रामहि बेगि बोलाई । समाचार तब पूँछेहु आई ॥ अ० ३८/१
आनि काठ रचु चिता बनाई । मातु अनल पुनि देहि लगाई ॥ सुं० ११/३
आनि देखाई नारदहि भूपति राजकुमारि ।
कहहु नाथ गुन दोष सब एहि के हृदयँ बिचारि ॥ बा० १३०/०
आने फेरि कि बनहिं सिधाए । सुनत सचिव लोचन जल छाए ॥ अ० १४८/४
आपन चरित कहा हम गाई । कहहु बिप्र निज कथा बुझाई ॥ कि० १/४
आपन मोर नीक जौं चहहू । बचनु हमार मानि गृह रहहू ॥ अ० ६०/३
आपन रूप देहु प्रभु मोही । आन भाँति नहिं पावौं ओही ॥ बा० १३१/६
आपनि दारुन दीनता कहउँ सबहि सिरु नाइ ।
देखें बिनु रघुनाथ पद जिय कै जरनि न जाइ ॥ अ० १८२/०
आपु आश्रमहि धारिअ पाऊ । भयउ सनेह सिथिल मुनिराऊ ॥ अ० २९०/५
आपु गए अरु तिन्हहू घालहिं । जे कहुँ सत मारग प्रतिपालहिं ॥ उ० ९९/३
आपु छोटि महिमा बड़ि जानी । कबिकुल कानि मानि सकुचानी ॥ अ० ३०२/७
आपु बिरचि उपरोहित रूपा । परेउ जाइ तेहि सेज अनूपा ॥ बा० १७१/१
आपु लखन पहिं बैठेउ जाई । कटि भाथी सर चाप चढ़ाई ॥ अ० ८९/४
आपु सरिस खोजौं कहँ जाई । नृप तव तनय होब मैं आई ॥ बा० १४९/२
आपु सुरसरिहि कीन्ह प्रनामू । सुमिरे लखन सहित सिय रामू ॥ अ० २०२/३
आपुहि सुनि खद्योत सम रामहि भानु समान ।
परुष बचन सुनि काढ़ि असि बोला अति खिसिआन ॥ सुं० ९/०
आयसु करहिं सकल भयभीता । नवहिं आइ नित चरन बिनीता ॥ बा० १८१/१३
आयसु काह कहिअ किन मोही । सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही ॥ बा० २७०/२
आयसु देहि मुदित मन माता । जेहिं मुद मंगल कानन जाता ॥ अ० ५२/७

आयसु पाइ दूत बहु धाए । कपिकुंजरहि बोलि लै आए ॥ लं० १८/३
आयसु पाइ राखि उर रामहि । मुदित गए सब निज निज धामहि ॥ बा० ३५०/५
आयसु पालि जनम फलु पाई । ऐहउँ बेगिहिं होउ रजाई ॥ अ० ४५/३
आयसु मागि करहिं पुर काजा । देखि चरित हरषइ मन राजा ॥ बा० २०४/८
आयसु मागि चरन सिरु नाई । चले हरषि सुमिरत रघुराई ॥ बा० २२/८
आयसु मागि राम पहिं अंगदादि कपि साथ ।
लछिमन चले क्रुद्ध होइ बान सरासन हाथ ॥ लं० ५२/०
आयसु मोर सासु सेवकाई । सब बिधि भामिनि भवन भलाई ॥ अ० ६०/४
आयसु होइ त रहौं सनेमा । बोले मुनि तन पुलकि सपेमा ॥ अ० ३२२/७
आयसु होइ सो करौं गोसाईं । सेवकु लहइ स्वामि सेवकाईं ॥ अ० ८/८
आयधु अनेक प्रकार । सनमुख ते करहिं प्रहार ॥ अर० १९/६ छं०
आयधु सर्ब समर्पि कै प्रभु निज आश्रम आनि ।
कंद मूल फल भोजन दीन्ह भगति हित जानि ॥ बा० २०९/०
आरत कहहिं बिचारि न काऊ । सूझ जुआरिहि आपन दाऊ ॥ अ० २५७/१
आरत गिरा सुनी जब सीता । कह लछिमन सन परम सभीता ॥ अर० २७/२
आरत जननी जानि सब भरत सनेह सुजान ।
कहेउ बनावन पालकीं सजन सुखासन जान ॥ अ० १८६/०
आरत लोग राम सबु जाना । करुनाकर सुजान भगवाना ॥ अ० २४३/१
आरति करहिं मुदित पुर नारी । हरषहिं निरखि कुअँर बर चारी ॥ बा० ३४७/७
आरति बस सनमुख भइउँ बिलगु न मानब तात ।
आरजसुत पद कमल बिनु बादि जहाँ लगि नात ॥ अ० ९७/०
आरति बिनय दीनता मोरी । लघुता ललित सुबारि न थोरी ॥ बा० ४२/१
आरति मोर नाथ कर छोहू । दुहूँ मिलि कीन्ह ढीठु हठि मोहू ॥ अ० ३१३/६
आरति हरन सरन सुखदायक । हा रघुकुल सरोज दिननायक ॥ अर० २८/२
आवत एहिं सर अति कठिनाई । राम कृपा बिनु आई न जाई ॥ बा० ३७/६
आवत जनक चले एहि भाँती । सहित समाज प्रेम मति माती ॥ अ० २७४/५
आवत जानि बरात बर सुनि गहगहे निसान ।
सजि गज रथ पदचर तुरग लेन चले अगवान ॥ बा० ३०४/०
आवत जानि भानुकुल केतू । सरितन्हि जनक बँधाए सेतू ॥ बा० ३०३/५
आवत दीखि बरातिन्ह सीता । रूप रासि सब भाँति पुनीता ॥ बा० ३२२/२
आवत देखहिं बिषय बयारी । ते हठि देहिं कपाट उघारी ॥ उ० ११७/१२
आवत देखि अधिक रव बाजी । चलेउ बराह मरुत गति भाजी ॥ बा० १५६/१
आवत देखि कृतांत समाना । फिरि दसकंधर कर अनुमाना ॥ अर० २८/१२
आवत देखि क्रुद्ध जनु काला । लछिमन छाड़े बिसिख कराला ॥ लं० ७५/१०

आवत देखि गयउ नभ सोई । रथ सारथी तुरग सब खोइ ॥ लं० ५०/३
आवत देखि बिटप गहि तर्जा । ताहि निपाति महाधुनि गर्जा ॥ सुं० १७/८
आवत देखि मुदित मुनिबृंदा । कीन्ह दंडवत रघुकुल चंदा ॥ अ० १३३/६
आवत देखि लोग सब कृपासिंधु भगवान।
नगर निकट प्रभु प्रेरेउ उतरेउ भूमि बिमान ॥ उ० ४/० (क)
आवत देखि सकल खगराजा । हरषेउ बायस सहित समाजा ॥ उ० ६२/६
आवत देखि सक्ति अति घोरा । प्रनतारति भंजन पन मोरा ॥ लं० ९३/१
आवत देखि सैल प्रभु भारे । सरन्हि काटि रज सम करि डारे ॥ लं० ६८/४
आवत निकट हँसहिं प्रभु भाजत रुदन कराहिं।
जाउँ समीप गहन पद फिरि फिरि चितइ पराहिं ॥ उ० ७७/० (क)
आवत पंथ कबंध निपाता । तेहिं सब कही साप कै बाता ॥ अर० ३२/६
आवत मुकुट देखि कपि भागे । दिनहीं लूक परन बिधि लागे ॥ लं० ३१/७
आवत सुत सुनि कैकयनंदिनि । हरषी रबिकुल जलरुह चंदिनि ॥ अ० १५८/२
आवा परम क्रोध कर मारा । गर्ज घोर रव बारहिं बारा ॥ लं० ७५/५
आवा प्रथम नगरु जेहिं जारा । सुनत बचन कह बालिकुमारा ॥ लं० २२/६
आवै पिता बोलावन जबहीं । हठ परिहरि घर जाएहु तबहीं ॥ बा० ७४/३
आसन उचित दिए सब काहू । कहौं काह मुख एक उछाहू ॥ बा० ३२०/४
आसन उचित सबहि नृप दीन्हे । बोलि सूपकारी सब लीन्हे ॥ बा० ३२७/७
आसन दीन्ह अस्त रबि जानी । पुनि तापस बोलेउ मृदु बानी ॥ बा० १५८/२
आसन सयन बिभूषन हीना । परेउ भूमितल निपट मलीना ॥ अ० १४७/५
आसन सयन सुबसन बिताना । बन बाटिका बिहंग मृग नाना ॥ अ० २१४/३
आसनु दीन्ह नाइ सिरु बैठे । चहत सकुच गृहँ जनु भजि पैठे ॥ अ० २०५/६
आस त्रास इरिषादि निवारक । बिनय बिबेक बिरति बिस्तारक ॥ उ० ३४/५
आसा बसन ब्यसन यह तिन्हहीं । रघुपति चरित होइ तहँ सुनहीं ॥ उ० ३१/६
आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना । होहु तात बल सील निधाना ॥ सुं० १६/२
आसिष दीन्हि सखीं हरषानीं । निज समाज लै गईं सयानीं ॥ बा० २६८/५
आसुतोष तुम्ह अवढर दानी । आरति हरहु दीन जनु जानी ॥ अ० ४३/८
आश्रम उदधि मिली जब जाई । मनहुँ उठेउ अंबुधि अकुलाई ॥ अ० २७५/६
आश्रम एक दीख मग माहीं । खग मृग जीव जंतु तहँ नाहीं ॥ बा० २०९/११
आश्रम देखि जानकी हीना । भए बिकल जस प्राकृत दीना ॥ अर० २९/६
आश्रम परम पुनीत सुहावा । देखि देवरिषि मन अति भावा ॥ बा० १२४/२
आश्रम सागर सांत रस पूरन पावन पाथु।
सेन मनहुँ करुना सरित लिएँ जाहिं रघुनाथु ॥ अ० २७५/०
आह दइअ मैं काह नसावा । करत नीक फलु अनइस पावा ॥ अ० १६२/६

इ

इच्छामय नरबेष सँवारें। होइहउँ प्रगट निकेत तुम्हारें ॥ बा० १५१/१
इच्छित फल बिनु सिव अवराधें। लहिअ न कोटि जोग जप साधें॥ बा० ६९/८
इत उत झपटि दपटि कपि जोधा। मर्दै लाग भयउ अति क्रोधा॥ लं० ८१/५
इत कपि भालु काल सम बीरा। उत रजनीचर अति रनधीरा॥ लं० ७१/१०
इति बेद बदंति न दंतकथा। रबि आतप भिन्नमभिन्न जथा॥ लं० ११०/१६ छं०
इमि कुपंथ पग देत खगेसा। रह न तेज तन बुधि बल लेसा ॥ अर० २७/१०
इरिषा परुषाच्छर लोलुपता। भरि पूरि रही समता बिगता॥ उ० १०१/७
इष्टदेव मम बालक रामा। सोभा बपुष कोटि सत कामा ॥ उ० ७४/५
इष्टदेव सैं बल रथ पायउँ। सो बल तात न तोहि देखायउँ ॥ लं० ७१/८
इहाँ अर्धनिसि रावनु जागा। निज सारथि सन खीझन लागा॥ लं० ९९/७
इहाँ उहाँ दुइ बालक देखा। मतिभ्रम मोर कि आन बिसेषा ॥ बा० २००/७
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं॥ बा० २७२/३
इहाँ दसानन सुभट पठाए। नाना अस्त्र सस्त्र गहि धाए॥ लं० ५२/२
इहाँ देवतन्ह अस्तुति कीन्ही। दारुन बिपति हमहि एहिं दीन्ही॥ लं० ८५/५
इहाँ देवरिषि गरुड़ पठायो। राम समीप सपदि सो आयो ॥ लं० ७३/१०
इहाँ न पच्छपात कछु राखउँ। बेद पुरान संत मत भाषउँ॥ उ० ११५/१
इहाँ न सुधि सीता कै पाई। उहाँ गए मारिहि कपिराई॥ कि० २५/४
इहाँ निषाद सुना प्रभु आए। नाव नाव कहँ लोग बोलाए॥ लं० १२०/६
इहाँ पवनसुत हृदयँ बिचारा। राम काजु सुग्रीवँ बिसारा ॥ कि० १८/१
इहाँ प्रात जागे रघुराई। पूछा मत सब सचिव बोलाई॥ लं० १६/१
इहाँ बसत मोहि सुनु खग ईसा। बीते कलप सात अरु बीसा॥ उ० ११३/१०
इहाँ बिचारहिं कपि मन माहीं। बीती अवधि काजु कछु नाहीं॥ कि० २५/१
इहाँ बिभीषन मंत्र बिचारा। सुनहु नाथ बल अतुल उदारा ॥ लं० ७४/३
इहाँ बिभीषन सब सुधि पाई। सपदि जाइ रघुपतिहि सुनाई ॥ लं० ८४/१
इहाँ भएँ मैं देखउँ भाई। ग्यान दृष्टि बल मोहि अधिकाई ॥ लं० ५६/६
इहाँ भरतु सब सहित सहाए। मंदाकिनीं पुनीत नहाए ॥ अ० २३२/४
इहाँ भानुकुल कमल दिवाकर। कपिन्ह देखावत नगर मनोहर॥ उ० ३/१
इहाँ मोह कर कारन नाहीं। रबि सन्मुख तम कबहुँ कि जाहीं ॥ उ० ७१/८
इहाँ राम अंगदहि बोलावा। आइ चरन पंकज सिरु नावा॥ लं० ३७/३
इहाँ राम जसि जुगुति बनाई। सुनहु उमा सो कथा सुहाई॥ अर० २२/८
इहाँ साप बस आवत नाहीं। तदपि सभीत रहउँ मन माहीं॥ कि० ५/१३
इहाँ सुबेल सैल रघुबीरा। उतरे सेन सहित अति भीरा॥ लं० १०/१
इहाँ सेतु बाँध्यों अरु थापेउँ सिव सुख धाम।

सीता सहित कृपानिधि संभुहि कीन्ह प्रनाम ॥ लं० ११९/० (क)
इहाँ संभु अस मन अनुमाना । दच्छसुता कहुँ नहिं कल्याना ॥ बा० ५१/५
इहाँ हरी निसिचर बैदेही । बिप्र फिरहिं हम खोजत तेही ॥ कि० १/३
इहाँ हिमाचल रचेउ बिताना । अति बिचित्र नहिं जाइ बखाना ॥ बा० ९३/२
इंद्र कुलिस मम सूल बिसाला । कालदंड हरि चक्र कराला ॥ उ० १०८/१३
इंद्रजालि कहुँ कहिअ न बीरा । काटइ निज कर सकल सरीरा ॥ लं० २८/१०
इंद्रजीत आदिक बलवाना । हरषि उठे जहँ तहँ भट नाना ॥ लं० ३३/११
इंद्रजीत कर आपु बँधायो । तब नारद मुनि गरुड़ पठायो ॥ उ० ५७/४
इंद्रजीत सन जो कछु कहेऊ । सो सब जनु पहिलेहिं करि रहेऊ ॥ बा० १८२/१
इंद्रिन्ह सुरन्ह न ग्यान सोहाई । बिषय भोग पर प्रीति सदाई ॥ उ० ११७/१५
इंद्रीं द्वार झरोखा नाना । तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना ॥ उ० ११७/११
इंद्रीं सकल बिकल भइँ भारी । जनु सर सरसिज बनु बिनु बारी ॥ अ० १५३/२
इन्ह कै नाम अनेक अनूपा । मैं नृप कहब स्वमति अनुरूपा ॥ बा० १९६/४
इन्ह कै दसा न कहेउँ बखानी । सदा काम के चेरे जानी ॥ बा० ८४/७
इन्ह कै प्रीति परसपर पावनि । कहि न जाइ मन भाव सुहावनि ॥ बा० २१६/३
इन्ह सम काहुँ न सिव अवराधे । काहुँ न इन्ह समान फल लाधे ॥ बा० ३०९/२
इन्ह सम कोउ न भयउ जग माहीं । है नहिं कतहूँ होनेउ नाहीं ॥ बा० ३०९/३
इन्हहि कुदृष्टि बिलोकइ जोई । ताहि बधें कछु पाप न होई ॥ कि० ८/८
इन्हहि देखि बिधि मनु अनुरागा । पटतर जोग बनावै लागा ॥ अ० ११९/५
इन्हहि बिलोकत अति अनुरागा । बरबस ब्रह्मसुखहि मन त्यागा ॥ बा० २१५/५

ई

ईति भीति जनु प्रजा दुखारी । त्रिबिध ताप पीड़ित ग्रह मारी ॥ अ० २३४/३
ईस प्रसाद असीस तुम्हारी । सुत सुतबधू देवसरि बारी ॥ अ० २८२/१
ईस भजनु सारथी सुजाना । बिरति चर्म संतोष कृपाना ॥ लं० ७९/७
ईस रजाइ सीस सबही कें । उतपति थिति लय बिषहु अमी कें ॥ अ० २८१/५
ईस्वर अंस जीव अबिनासी । चेतन अमल सहज सुख रासी ॥ उ० ११६/२
ईस्वर जीव भेद प्रभु सकल कहौ समुझाइ ।
जातें होइ चरन रति सोक मोह भ्रम जाइ ॥ अर० १४/०
ईस्वर राखा धरम हमारा । जैहसि तैं समेत परिवारा ॥ बा० १७३/२

उ

उग्र बचन सुनि सकल डेराने । चले क्रोध करि सुभट लजाने ॥ लं० ४१/९
उग्र बिलोकनि प्रभुहि बिलोका । ग्रसन चहत मानहुँ त्रैलोका ॥ लं० ६९/१२
उघरहिं अंत न होइ निबाहु । कालनेमि जिमि रावन राहू ॥ बा० ६/६
उघरहिं बिमल बिलोचन ही के । मिटहिं दोष दुख भव रजनी के ॥ बा० ०/७

उचित कि अनुचित किएँ बिचारू। धरमु जाइ सिर पातक भारू॥ अ० १७६/४
उचित होइ सोइ कीजिअ नाथा। हित सबही कर रौरें हाथा॥ अ० २८९/६
उठइ धूरि मानहुँ जलधारा। बान बुंद भै बृष्टि अपारा॥ लं० ८६/६
उठहु बेगि सोइ करहु उपाई। जेहि बिधि सोकु कलंकु नसाई॥ अ० ४९/८
उठहु राम भंजहु भवचापा। मेटहु तात जनक परितापा॥ बा० २५३/६
उठा प्रबल पुनि मुरुछा जागी। छाड़िसि ब्रह्म दीन्हि जो साँगी॥ लं० ८२/८
उठि उठि पहिरि सनाह अभागे। जहँ तहँ गाल बजावन लागे॥ बा० २६५/२
उठि कर जोरि रजायसु मागा। मनहुँ बीर रस सोवत जागा॥ अ० २२९/१
उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया। जीति न जाइ प्रभंजन जाया॥ सुं० १८/९
उठि बहोरि मारुति जुबराजा। हतहिं कोपि तेहि घाउ न बाजा॥ लं० ७५/८
उठी रेनु रबि गयउ छपाई। मरुत थकित बसुधा अकुलाई॥ लं० ७८/७
उठे राम सुनि पेम अधीरा। कहुँ पट कहुँ निषंग धनु तीरा॥ अ० २३९/८
उठे लखनु निसि बिगत सुनि अरुनसिखा धुनि कान।
गुर तें पहिलेहिं जगतपति जागे रामु सुजान॥ बा० २२६/०
उठे लखनु प्रभु सोवत जानी। कहि सचिवहि सोवन मृदु बानी॥ अ० ८९/१
उठे सकल जब रघुपति आए। बिस्वामित्र निकट बैठाए॥ बा० २१४/६
उठे सभासद कपि कहुँ देखी। रावन उर भा क्रोध बिसेषी॥ लं० १८/८
उत पचार दसकंधर इत अंगद हनुमान।
लरत निसाचर भालु कपि करि निज निज प्रभु आन॥ लं० ८०/० (ग)
उतर देत छोड़उँ बिनु मारें। केवल कौसिक सील तुम्हारें॥ बा० २७४/७
उत रावन इत राम दोहाई। जयति जयति जय परी लराई॥ लं० ४०/७
उतरि कहेउ प्रभु पुष्पकहि तुम्ह कुबेर पहिं जाहु।
प्रेरित राम चलेउ सो हरषु बिरहु अति ताहु॥ उ० ४/० (ख)
उतिर ठाढ़ भये सुरसरि रेता। सीय रामु गुह लखन समेता॥ अ० १०१/१
उतरि तुरग तें कीन्ह प्रनामा। परम चतुर न कहेउ निज नामा॥ बा० १५७/८
उतरि देवसरि दूसर बासू। रामसखाँ सब कीन्ह सुपासू॥ अ० ३२१/४
उतरु काह दैहउँ तेहि जाई। उठि किन मोहि सिखावहु भाई॥ लं० ६०/१६
उतरु देइ सुनि स्वामि रजाई। सो सेवकु लखि लाज लजाई॥ अ० २६८/५
उतरु देउँ केहि बिधि केहि केही। कहहु सुखेन जथा रुचि जेही॥ अ० १८०/४
उतरु देत मोहि बधव अभागें। कस न मरौं रघुपति सर लागें॥ अर० २५/६
उतरु न आवत प्रेम बस गहे चरन अकुलाइ।
नाथ दासु मैं स्वामि तुम्ह तजहु त काह बसाइ॥ अ० ७१/०
उतरु न आव बिकल बैदेही। तजन चहत सुचि स्वामि सनेही॥ अ० ६३/२
उतरु न आव लोग भए भोरे। तब सिरु नाइ भरत कर जोरे॥ अ० २५४/४

उतरु न देइ दुसह रिस रूखी । मृगिन्ह चितव जनु बाघिनि भूखी ॥ अ० ५०/१
उतरु न देत दसानन जोधा । तबहिं गीध धावा करि क्रोधा ॥ अर० २८/१८
उतरे राम देवसरि देखी । कीन्ह दंडवत हरषु बिसेषी ॥ अ० ८६/२
उत्तम कुल पुलस्ति कर नाती । सिव बिरंचि पूजेहु बहु भाँती ॥ लं० १९/३
उत्तम के अस बस मन माहीं । सपनेहुँ आन पुरुष जग नाहीं ॥ अर० ४/१२

उत्तर दिसि सरजू बह निर्मल जल गंभीर ।
बाँधे घाट मनोहर स्वल्प पंक नहिं तीर ॥ उ० २८/०

उत्तर दिसि सुंदर गिरि नीला । तहँ रह काकभुसुंडि सुसीला ॥ उ० ६१/२
उत्तर प्रतिउत्तर मैं कीन्हा । मुनि तन भए क्रोध के चीन्हा ॥ उ० ११०/१४
उदउ करहु जनि रबि रघुकुल गुर । अवध बिलोकि सूल होइहि उर ॥ अ० ३६/३
उदय अस्त गिरि अरु कैलासू । मंदर मेरु सकल सुरबासू ॥ अ० १३७/६
उदय केत सम हित सबही के । कुंभकरन सम सोवत नीके ॥ बा० ३/६
उदर उदधि अधगो जातना । जगमय प्रभु का बहु कलपना ॥ लं० १४/८
उदर बिदारहिं भुजा उपारहिं । गहि पद अवनि पटकि भट डारहिं ॥ लं० ८०/६
उदर माझ सुनु अंडज राया । देखेउँ बहु ब्रह्मांड निकाया ॥ उ० ७९/३

उदासीन अरि मीत हित सुनत जरहिं खल रीति ।
जानि पानि जुग जोरि जन बिनती करइ सप्रीति ॥ बा० ४/०

उदासीन नित रहिअ गोसाईं । खल परिहरिअ स्वान की नाईं ॥ उ० १०५/१५
उदित अगस्ति पंथ जल सोषा । जिमि लोभहि सोषइ संतोषा ॥ कि० १५/३

उदित उदयगिरि मंच पर रघुबर बालपतंग ।
बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग ॥ बा० २५४/०

उदित सदा अथँइहि कबहूँ ना । घटिहि न जग नभ दिन दिन दूना ॥ अ० २०८/२
उदभव पालन प्रलय कहानी । कहेसि अमित आचरज बखानी ॥ बा० १६२/६

उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् ।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम् ॥ बा० श्लोक ५

उपजइ राम चरन बिस्वासा । भव निधि तर नर बिनहिं प्रयासा ॥ उ० ५४/९
उपजहिं एक संग जग माहीं । जलज जौंक जिमि गुन बिलगाहीं ॥ बा० ४/५
उपजा ग्यान चरन तब लागी । लीन्हेसि परम भगति बर मागी ॥ कि० १०/६
उपजा ग्यान बचन तब बोला । नाथ कृपाँ मन भयउ अलोला ॥ कि० ६/१५
उपजि परी ममता मन मोरें । कहउँ कथा निज पूछे तोरें ॥ बा० १६३/४
उपजेउ सिव पद कमल सनेहू । मिलन कठिन मन भा संदेहू ॥ बा० ६७/५

उपजे जदपि पुलस्त्यकुल पावन अमल अनूप ।
तदपि महीसुर श्राप बस भए सकल अघरूप ॥ बा० १७६/०

उपदेसु यहु जेहिं तात तुम्हरे राम सिय सुख पावहीं ।

पितु मातु प्रिय परिवार पुर सुख सुरति बन बिसरावहीं ।।
तुलसी प्रभुहि सिख देइ आयसु दीन्ह पुनि आसिष दई ।
रति होउ अबिरल अमल सिय रघुबीर पद नित नित नई ।। अ० ७४/१ छं०
उपबरहन बर बरनि न जाहीं । स्रग सुगंध मनिमंदिर माहीं ।। बा० ३५५/३
उपमा न कोउ कह दास तुलसी कतहुँ कबि कोबिद कहैं ।
बल बिनय बिद्या सील सोभा सिंधु इन्ह से एइ अहैं ।।
पुर नारि सकल पसारि अंचल बिधिहि बचन सुनावहीं ।
ब्याहिअहुँ चारिउ भाइ एहिं पुर हम सुमंगल गावहीं ।। बा० ३१०/१ छं०
उपमा बहुरि कहउँ जियँ जोही । जनु बुध बिधु बिच रोहिनि सोही ।। अ० १२२/४
उपमा सकल मोहि लघु लागीं । प्राकृत नारि अंग अनुरागीं ।। बा० २४६/२
उपरोहित जेवनार बनाई । छरस चारि बिधि जसि श्रुति गाई ।। बा० १७२/१
उपरोहित्य कर्म अति मंदा । बेद पुरान सुमृति कर निंदा ।। उ० ४७/६
उपरोहितहि कहेउ नरनाहा । अब बिलंब कर कारनु काहा ।। बा० ३१२/१
उपरोहितहि देख जब राजा । चकित बिलोक सुमिरि सोइ काजा ।। बा० १७१/६
उपरोहितहि भवन पहुँचाई । असुर तापसहि खबरि जनाई ।। बा० १७४/३
उभय अगम जुग सुगम नाम तें । कहेउँ नामु बड़ ब्रह्म राम तें ।। बा० २२/५
उभय घरी अस कौतुक भयऊ । जौ लगि कामु संभु पहिं गयऊ ।। बा० ८५/१
उभय घरी महँ मैं सब देखा । भयउँ भ्रमित मन मोह बिसेषा ।। उ० ८१/८
उभय बीच श्री सोहइ कैसी । ब्रह्म जीव बिच माया जैसी ।। अर० ६/३
उभय बीच सिय सोहति कैसें । ब्रह्म जीव बिच माया जैसें ।। अ० १२२/२
उभय भाँति तेहि आनहु हँसि कह कृपानिकेत ।
जय कृपाल कहि कपि चले अंगद हनू समेत ।। सुं० ४४/०
उभय भाँति देखा निज मरना । तब ताकिसि रघुनायक सरना ।। अर० २५/५
उमहि बिलोकि नयन भरे बारी । सहित सनेह गोद बैठारी ।। बा० ७१/६
उमा अवधबासी नर नारि कृतारथ रूप ।
ब्रह्म सच्चिदानंद घन रघुनायक जहँ भूप ।। उ० ४७/०
उमा एक अखंड रघुराई । नर गति भगत कृपाल देखाई ।। लं० ६०/१८
उमा करत रघुपति नरलीला । खेलत गरुड़ जिमि अहिगन मीला ।। लं० ६५/१
उमा कहउँ मैं अनुभव अपना । सत हरि भजनु जगत सब सपना ।। अर० ३८/५
उमा कहिउँ सब कथा सुहाई । जो भुसुंडि खगपतिहि सुनाई ।। उ० ५१/६
उमा काल मर जाकीं ईछा । सो प्रभु जन कर प्रीति परीछा ।। लं० १०१/३
उमा चरित सुंदर मैं गावा । सुनहु संभु कर चरित सुहावा ।। बा० ७४/६
उमा जे राम चरन रत बिगत काम मद क्रोध ।
निज प्रभुमय देखहिं जगत केहि सन करहिं बिरोध ।। उ० ११२/० (ख)

उमा जोग जप दान तप नाना मख ब्रत नेम ।
राम कृपा नहिं करहिं तसि जस निष्केवल प्रेम ॥ लं० ११७/० (ख)
उमा दारु जोषित की नाईं । सबहि नचावत रामु गोसाईं ॥ कि० १०/७
उमा न कछु कपि कै अधिकाई । प्रभु प्रताप जो कालहि खाई ॥ सुं० २/९
उमा प्रस्न तव सहज सुहाई । सुखद संतसंमत मोहि भाई ॥ बा० ११३/६
उमा बचन सुनि परम बिनीता । रामकथा पर प्रीति पुनीता ॥ बा० ११९/८
उमा बिभीषनु रावनहि सन्मुख चितव कि काउ ।
सो अब भिरत काल ज्यों श्रीरघुबीर प्रभाउ ॥ लं० ९४/०
उमा महेस बिबाह बराती । ते जलचर अगनित बहुभाँती ॥ बा० ३९/७
उमा रमा ब्रह्मादि बंदिता । जगदंबा संततमनिंदिता ॥ उ० २३/९
उमा राम की भृकुटि बिलासा । होइ बिस्व पुनि पावइ नासा ॥ लं० ३४/७
उमा राम गुन गूढ़ पंडित मुनि पावहिं बिरति ।
पावहिं मोह बिमूढ़ जे हरि बिमुख न धर्म रति ॥ अर० ०/० सो०
उमा राम बिषइक अस मोहा । नभ तम धूम धूरि जिमि सोहा ॥ बा० ११६/४
उमा राम मृदुचित करुनाकर । बयर भाव सुमिरत मोहि निसिचर ॥ लं० ४४/४
उमा राम सम हित जग माहीं । गुरु पितु मातु बंधु प्रभु नाहीं ॥ कि० ११/१
उमा राम सुभाउ जेहिं जाना । ताहि भजनु तजि भाव न आना ॥ सुं० ३३/३
उमा रावनहि अस अभिमाना । जिमि टिट्टिभ खग सूत उताना ॥ लं० ३९/६
उमा संत कइ इहइ बड़ाई । मंद करत जो करइ भलाई ॥ सुं० ४०/७
उयउ अरुन अवलोकहु ताता । पंकज कोक लोक सुखदाता ॥ बा० २३७/७
उयउ भानु बिनु श्रम तम नासा । दुरे नखत जग तेजु प्रकासा ॥ बा० २३८/४
उर अनुभवति न कहि सक सोऊ । कवन प्रकार कहै कबि कोऊ ॥ बा० २४१/७
उर अभिलाष निरंतर होई । देखिअ नयन परम प्रभु सोई ॥ बा० १४३/३
उर आनत तुम्ह पर कुटिलाई । जाइ लोकु परलोकु नसाई ॥ अ० २६२/७
उर आनहु रघुपति प्रभुताई । सुनि मम बचन तजहु कदराई ॥ सुं० १४/१०
उर उमगेउ अंबुधि अनुरागू । भयउ भूप मनु मनहुँ पयागू ॥ अ० २८५/५
उर कछु प्रथम बासना रही । प्रभु पद प्रीति सरित सो बही ॥ सुं० ४८/६
उर ताड़ना करहिं बिधि नाना । रोवत करहिं प्रताप बखाना ॥ लं० १०३/४
उर दहेउ कहेउ कि धरहु धाए बिकट भट रजनीचरा ।
सर चाप तोमर सक्ति सूल कृपान परिघ परसु धरा ॥
प्रभु कीन्हि धनुष टकोर प्रथम कठोर घोर भयावहा ।
भए बधिर ब्याकुल जातुधान न ग्यान तेहि अवसर रहा ॥ अर० १८/१ छं०
उर धरि उमा प्रानपति चरना । जाइ बिपिन लागीं तपु करना ॥ बा० ७३/१
उर धरि धीर कहइ गिरिराऊ । कहहु नाथ का करिअ उपाऊ ॥ बा० ६७/८

उर धरि धीरजु गयउ दुआरें । पूँछहिं सकल देखि मनु मारें ॥ अ० ३८/४
उर धरि धीर राम महतारी । बोली बचन समय अनुसारी ॥ अ० १५३/४
उर धरि रामहि सीय समेता । हरषि कीन्ह गुर गवनु निकेता ॥ बा० ३५२/३
उर मनि माल कंबु कल गीवा । काम कलभ कर भुज बलसींवा ॥ बा० २३२/७
उर मनिहार पदिक की सोभा । बिप्र चरन देखत मन लोभा ॥ बा० १९८/६
उर माझ गदा प्रहार घोर कठोर लागत महि पर्‍यो ।
दस बदन सोनित स्रवत पुनि संभारि धायो रिस भर्‍यो ॥
द्वौ भिरे अतिबल मल्लजुद्ध बिरुद्ध एकु एकहि हनै ।
रघुबीर बल दर्पित बिभीषनु घालि नहिं ता कहुँ गनै ॥ लं० ९३/१ छं०
उर लात घात प्रचंड लागत बिकल रथ ते महि परा ।
गहि भालु बीसहुँ कर मनहुँ कमलन्हि बसे निसि मधुकरा ॥
मुरुछित बिलोकि बहोरि पद हति भालुपति प्रभु पहिं गयो ।
निसि जानि स्यंदन घालि तेहि तब सूत जतनु करत भयो ॥ लं० ९७/१ छं०
उर सीस भुज कर चरन । जहँ तहँ लगे महि परन ॥ अर० १९/९ छं०
उर श्रीबत्स रुचिर बनमाला । पदिक हार भूषन मनिजाला ॥ बा० १४६/६
उलटा नामु जपत जगु जाना । बालमीकि भए ब्रह्म समाना ॥ अ० १९३/८
उलटा होइहि कह हनुमाना । मतिभ्रम तोर प्रगट मैं जाना ॥ सुं० २३/४
उलटि पुलटि लंका सब जारी । कूदि परा पुनि सिंधु मझारी ॥ सुं० २५/८
उहाँ दसानन जागि करि करै लाग कछु जग्य ।
राम बिरोध बिजय चह सठ हठ बस अति अग्य ॥ लं० ८४/०
उहाँ दसानन सचिव हँकारे । सब सन कहेसि सुभट जे मारे ॥ लं० ४७/३
उहाँ दूत एक मरमु जनावा । रावनु कालनेमि गृह आवा ॥ लं० ५५/२
उहाँ निसाचर रहहिं ससंका । जब तें जारि गयउ कपि लंका ॥ सुं० ३५/१
उहाँ रामु रजनी अवसेषा । जागे सीयँ सपन अस देखा ॥ अ० २२५/३
उहाँ राम लछिमनहि निहारी । बोले बचन मनुज अनुसारी ॥ लं० ६०/१
उहाँ सकोपि दसानन सब सन कहत रिसाइ ।
धरहु कपिहि धरि मारहु सुनि अंगद मुसुकाइ ॥ लं० ३२/० (ख)

ऊ

ऊतरु देइ न लेइ उसासू । नारि चरित करि ढारइ आँसू ॥ अ० १२/६
ऊतरु देउँ छमब अपराधू । दुखित दोष गुन गनहिं न साधू ॥ अ० १७६/८
ऊमरि तरु बिसाल तव माया । फल ब्रह्मांड अनेक निकाया ॥ अर० १२/६
ऊषर बरषइ तृन नहिं जामा । जिमि हरिजन हियँ उपज न कामा ॥ कि० १४/१०
ऊँच निवासु नीचि करतूती । देखि न सकहिं पराइ बिभूती ॥ अ० ११/६
ऊँच नीच कारजु भल पोचू । आयसु देब न करब सँकोचू ॥ अ० ३२२/४

ऊँच नीच मध्यम नर नारी । लहहिं दरसु निज निज अनुहारी ॥ अ० २७३/३

ए

एक अनीह अरूप अनामा । अज सच्चिदानंद पर धामा ॥ बा० १२/३
एक आइ अस कहा बहोरी । सेन संग चतुरंग न थोरी ॥ अ० २२६/२
एकइ उर बस दुसह दवारी । मोहि लगि भे सिय रामु दुखारी ॥ अ० १८१/६
एकइ धर्म एक ब्रत नेमा । कायँ बचन मन पति पद प्रेमा ॥ अर० ४/१०
एकइ जुगुति न मन ठहरानी । सोचत भरतहि रैनि बिहानी ॥ अ० २५२/७
एक एकन्ह कहँ बूझहिं भाई । तुम्ह देखे दयाल रघुराई ॥ उ० २/८
एक एक ब्रह्मांड महुँ रहउँ बरष सत एक ।
एहि बिधि देखत फिरउँ मैं अंड कटाह अनेक ॥ उ० ८०/० (ख)
एक एक सन भिरहिं पचारहिं । एकन्ह एक मर्दि महि पारहिं ॥ लं० ८०/४
एक एक सन मरमु न कहहीं । समुझि तासु बध चुप करि रहहीं ॥ लं० १७/७
एक एक सों मर्दहिं तोरि चलावहिं मुंड ।
रावन आगें परहिं ते जनु फूटहिं दधि कुंड ॥ लं० ४४/०
एक कलप एहि बिधि अवतारा । चरित पवित्र किए संसारा ॥ बा० १२२/४
एक कलप एहि हेतु प्रभु लीन्ह मनुज अवतार ।
सुर रंजन सज्जन सुखद हरि भंजन भुबि भार ॥ बा० १३९/०
एक कलप सुर देखि दुखारे । समर जलंधर सन सब हारे ॥ बा० १२२/५
एक कलस भरि आनहिं पानी । अँचइअ नाथ कहहिं मृदु बानी ॥ अ० ११४/१
एक कहइ नृपसुत तेइ आली । सुने जे मुनि सँग आए काली ॥ बा० २२८/४
एक कहत मोहि सकुच अति रहा बालि कीं काँख ।
इन्ह महुँ रावन तैं कवन सत्य बदहि तजि माख ॥ लं० २४/०
एक कहहिं ए सहज सुहाए । आपु प्रगट भए बिधि न बनाए ॥ अ० ११९/२
एक कहहिं ऐसिउ सौंघाई । सठहु तुम्हार दरिद्र न जाई ॥ लं० ८७/३
एक कहहिं भल भूपति कीन्हा । लोयन लाहु हमहि बिधि दीन्हा ॥ अ० ८८/३
एक कहहिं भल भूप न कीन्हा । बरु बिचारि नहिं कुमतिहि दीन्हा ॥ अ० ४७/२
एक कहहिं हम बहुत न जानहिं । आपुहि परम धन्य करि मानहिं ॥ अ० ११९/७
एक कहहिं रघुबीर बड़ाई । एक सराहत भरत भलाई ॥ अ० ३०८/८
एक कीन्हि नहिं भरत भलाई । निदरे रामु जानि असहाई ॥ अ० २२८/३
एक कुसल अति ओड़न खाँड़े । कूदहिं गगन मनहुँ छिति छाँड़े ॥ अ० १९०/६
एक जनम कर कारन एहा । जेहि लगि राम धरी नरदेहा ॥ बा० १२३/३
एकटक रहे जोरि कर आगे । सकहिं न कछु कहि अति अनुरागे ॥ उ० १६/२
एकटक रहे निमेष न लावहिं । प्रभु कर जोरें सीस नवावहिं ॥ उ० ३२/४
एकटक सब सोहहिं चहुँ ओरा । रामचंद्र मुख चंद चकोरा ॥ अ० ११४/५

एक दुष्ट अतिसय दुखरूपा । जा बस जीव परा भवकूपा ॥ अर० १४/५
एक देखि बट छाँह भलि डासि मृदुल तृन पात ।
कहहिं गवाँइअ छिनुकु श्रम गवनब अबहिं कि प्रात ॥ अ० ११४/०
एक धरम परमिति पहिचाने । नृपहि दोसु नहिं देहिं सयाने ॥ अ० ४७/४
एक नखन्हि रिपु बपुष बिदारी । भागि चलहिं एक लातन्ह मारी ॥ लं० ९७/५
एक नयन मग छबि उर आनी । होहिं सिथिल तन मन बर बानी ॥ अ० ११३/८
एकनारि ब्रत रत सब झारी । ते मन बच क्रम पति हितकारी ॥ उ० २१/८
एक निमेष बरष सब जाई । एहि बिधि भरत नगर निअराई ॥ अ० १५७/३
एकन्ह एक बोलि सिख देहीं । लोचन लाहु लेहु छन एहीं ॥ अ० ११३/६
एक पिता के बिपुल कुमारा । होहिं पृथक गुन सील अचारा ॥ उ० ८६/१
ए कपि सब सुग्रीव समाना । इन्ह सम कोटिन्ह गनइ को नाना ॥ सुं० ५४/१
एक बहोरि सहसभुज देखा । धाइ धरा जिमि जंतु बिसेषा ॥ लं० २३/१५
एक बात नहिं मोहि सोहानी । जदपि मोह बस कहेहु भवानी ॥ बा० ११३/७
एक बात प्रभु पूँछउँ तोही । कहहु बुझाइ कृपानिधि मोही ॥ उ० ११४/८
एक बान काटी सब माया । जिमि दिनकर हर तिमिर निकाया ॥ लं० ५१/७
एक बानि करुनानिधान की । सो प्रिय जाकें गति न आन की ॥ अर० ९/८
एक बार अतिसय सब चरित किए रघुबीर ।
सुमिरत प्रभु लीला सोइ पुलकित भयउ सरीर ॥ उ० ७५/० (ख)
एक बार आवत सिव संगा । देखेउ रघुकुल कमल पंतगा ॥ बा० ९७/७
एक बार करतल बर बीना । गावत हरि गुन गान प्रबीना ॥ बा० १२७/३
एक बार काल किन होऊ । सिय हित समर जितब हम सोऊ ॥ बा० २४४/७
एक बार कुबेर पर धावा । पुष्पक जान जीति लै आवा ॥ बा० १७८/८
एक बार कैसेहुँ सुधि जानौं । कालहु जीति निमिष महुँ आनौं ॥ कि० १७/२
एक बार गुर लीन्ह बोलाई । मोहि नीति बहु भाँति सिखाई ॥ उ० १०५/१
एक बार चुनि कुसुम सुहाए । निज कर भूषन राम बनाए ॥ अर० ०/३
एक बार जननीं अन्हवाए । करि सिंगार पलनाँ पौढ़ाए ॥ बा० २००/१
एक बार तिन्ह के हित लागी । धरेउ सरीर भगत अनुरागी ॥ बा० १२२/२
एक बार तेहि तर प्रभु गयऊ । तरु बिलोकि उर अति सुखु भयऊ ॥ बा० १०५/४
एक बार प्रभु सुख आसीना । लछिमन बचन कहे छलहीना ॥ अर० १३/५
एक बार बसिष्ट मुनि आए । जहाँ राम सुखधाम सुहाए ॥ उ० ४७/१
एक बार भरि मकर नहाए । सब मुनीस आश्रमन्ह सिधाए ॥ बा० ४४/३
एक बार भूपति मन माहीं । भै गलानि मोरें सुत नाहीं ॥ बा० १८८/१
एक बार रघुनाथ बोलाए । गुर द्विज पुरबासी सब आए ॥ उ० ४२/१
एक बार हर मंदिर जपत रहेउँ सिव नाम ।

गुर आयउ अभिमान तें उठि नहिं कीन्ह प्रनाम ॥ उ० १०६/० (क)
एक बार त्रेता जुग माहीं । संभु गए कुंभज रिषि पाहीं ॥ बा० ४७/१
एक बिधातहि दूषनु देहीं । सुधा देखाइ दीन्ह बिषु जेहीं ॥ अ० ४८/१
एक ब्याधि बस नर मरहिं ए असाधि बहु ब्याधि ।
पीड़हिं संतत जीव कहुँ सो किमि लहै समाधि ॥ उ० १२१/० (क)
एक भरत कर संमत कहहीं । एक उदास भायँ सुनि रहहीं ॥ अ० ४७/६
एक रचइ जग गुन बस जाकें । प्रभु प्रेरित नहिं निज बल ताकें ॥ अर० १४/६
एक राम अवधेस कुमारा । तिन्ह कर चरित बिदित संसारा ॥ बा० ४५/७
एकरूप तुम्ह भ्राता दोऊ । तेहि भ्रम तें नहिं मारेउँ सोऊ ॥ कि० ७/५
एक लालसा बड़ि उर माहीं । सुगम अगम कहि जाति सो नाहीं ॥ बा० १४८/३
एक सखी सिय संगु बिहाई । गई रही देखन फुलवाई ॥ बा० २२७/७
एक समय सब सहित समाजा । राजसभाँ रघुराजु बिराजा ॥ अ० १/१
एक सराहहिं भरत सनेहू । कोउ कह नृपति निबाहेउ नेहू ॥ अ० २०१/५
एक सूल मोहि बिसर न काऊ । गुर कर कोमल सील सुभाऊ ॥ उ० १०९/२
एकहिं आँक इहइ मन माहीं । प्रातकाल चलिहउँ प्रभु पाहीं ॥ अ० १८२/२
एकहि एक देहिं उपदेसू । तजे राम हम जानि कलेसू ॥ अ० ८५/४
एकहि एक सकइ नहिं जीती । निसिचर छल बल करइ अनीती ॥ लं० ५३/३
एकहिं डर डरपत मन मोरा । प्रभु महिदेव श्राप अति घोरा ॥ बा० १६५/८
एकहिं बात मोहि दुखु लागा । बर दूसर असमंजस मागा ॥ अ० ३१/४
एकहिं बान प्रान हरि लीन्हा । दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा ॥ बा० २०८/६
एकहिं बार आस सब पूजी । अब कछु कहब जीभ करि दूजी ॥ अ० १५/१
ए किरीट दसकंधर केरे । आवत बालितनय के प्रेरे ॥ लं० ३१/१०
एकु एकु निसिचर गहि पुनि कपि चले पराइ ।
ऊपर आपु हेठ भट गिरहिं धरनि पर आइ ॥ लं० ४१/०
एकु छत्र एकु मुकुटमनि सब बरननि पर जोउ ।
तुलसी रघुबर नाम के बरन बिराजत दोउ ॥ बा० २०/०
एकु दारुगत देखिअ एकू । पावक सम जुग ब्रह्म बिबेकू ॥ बा० २२/४
एकु मनोरथु बड़ मन माहीं । सभयँ सकोच जात कहि नाहीं ॥ अ० ३०७/१
एकु मैं मंद मोहबस कुटिल हृदय अग्यान ।
पुनि प्रभु मोहि बिसारेउ दीनबंधु भगवान ॥ कि० २/०
एतना कपिन्ह सुना जब काना । किलकिलाइ धाए बलवाना ॥ लं० ६४/३
एतना करहु तात तुम्ह जाई । सीतहि देखि कहहु सुधि आई ॥ कि० २९/११
एतना कहत छींक भइ बाँए । कहेउ सगुनिअन्ह खेत सुहाए ॥ अ० [illegible]
एतना कहत नीति रस भूला । रन रस बिटपु पुलक मिस फूला ॥ [illegible]

एतना मन आनत खगराया। रघुपति प्रेरित ब्यापी माया ॥ उ० ७७/१
एतनेइ कहेहु भरत सन जाई। गुर बोलाइ पठयउ दोउ भाई ॥ अ० १५६/३
ए तरु सरित समीप गोसाँई। रघुबर परनकुटी जहँ छाई ॥ अ० २३६/६
एतेहु पर करिहहिं जे असंका। मोहि ते अधिक ते जड़ मति रंका ॥ बा० ११/८
ए दारिका परिचारिका करि पालिबीं करुना नई।
अपराधु छमिबो बोलि पठए बहुत हौं ढीटयो कई॥
पुनि भानुकुलभूषन सकल सनमान निधि समधी किए।
कहि जात नहिं बिनती परस्पर प्रेम परिपूरन हिए ॥ बा० ३२५/३ छं०
ए प्रिय सबहि जहाँ लगि प्रानी। मन मुसुकाहिं रामु सुनि बानी ॥ बा० २१५/७
ए दोऊ दसरथ के ढोटा। बाल मरालन्हि के कल जोटा ॥ बा० २२०/३
ए महि परहिं डासि कुस पाता। सुभग सेज कत सृजत बिधाता ॥ अ० ११८/७
एवमस्तु करि रमानिवासा। हरषि चले कुंभज रिषि पासा ॥ अर० ११/१
एवमस्तु कहि कपटमुनि बोला कुटिल बहोरि।
मिलब हमार भुलाब निज कहहु त हमहि न खोरि ॥ बा० १६५/०
एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा। मागा तुरत सिंधु कर नीरा ॥ सुं० ४८/८
एवमस्तु कहि रघुकुलनायक। बोले बचन परम सुखदायक ॥ उ० ८४/१
एवमस्तु तव बच मुनि ग्यानी। यह मम भगत कर्म मन बानी ॥ उ० ११३/६
एवमस्तु तुम्ह बड़ तप कीन्हा। मैं ब्रह्माँ मिलि तेहि बर दीन्हा ॥ बा० १७६/५
एवमस्तु मुनि सन कहेउ कृपासिंधु रघुनाथ।
तब नारद मन हरष अति प्रभु पद नायउ माथ ॥ अर० ४२/० (ख)
ए बिचरहिं मग बिनु पदत्राना। रचे बादि बिधि बाहन नाना ॥ अ० ११८/६
ए सब राम भगति के बाधक। कहहिं संत तव पद अवराधक ॥ कि० ६/१७
ए सब सखा सुनहु मुनि मेरे। भए समर सागर कहँ बेरे ॥ उ० ७/७
ए सब लच्छन बसहिं जासु उर। जानेहु तात संत संतत फुर ॥ उ० ३७/७
एहि अवसर चाहिअ परम सोभा रूप बिसाल।
जो बिलोकि रीझै कुअँरि तब मेलै जयमाल ॥ बा० १३१/०
एहि अवसर मंगलु परम सुनि रहँसेउ रनिवासु।
सोभत लखि बिधु बढ़त जनु बारिधि बीचि बिलासु ॥ अ० ७/०
एहि अवसर लछिमन पुर आए। क्रोध देखि जहँ तहँ कपि धाए ॥ कि० १८/८
एहि कर नामु सुमिरि संसारा। त्रिय चढ़िहहिं पतिब्रत असिधारा ॥ बा० ६६/६
एहि कर फल पुनि बिषय बिरागा। तब मम धर्म उपज अनुरागा ॥ अर० १५/७
एहि कर होइ परम कल्याना। सोइ करहु अब कृपानिधाना ॥ उ० १०८/१
एहिं कलिकाल न साधन दूजा। जोग जग्य जप तप ब्रत पूजा ॥ उ० १२९/५
एहि कुरोग कर औषधु नाहीं। सोधेउँ सकल बिस्व मन माहीं ॥ अ० २११/२

एहि कें एक परम बल नारी । तेहि तें उबर सुभट सोइ भारी ॥ अर० ३७/१२
एहि कें कंठ कुठारु न दीन्हा । तौ मैं काह कोपु करि कीन्हा ॥ बा० २७८/८
एहि के हृदयँ बस जानकी जानकी उर मम बास है ।
मम उदर भुअन अनेक लागत बान सब कर नास है ॥
सुनि बचन हरष बिषाद मन अति देखि पुनि त्रिजटाँ कहा ।
अब मरिहि रिपु एहि बिधि सुनहि सुंदरि तजहि संसय महा ॥ लं० ९८/१ छं०
एहिं जग जामिनि जागहिं जोगी । परमारथी प्रपंच बियोगी ॥ अ० ९२/३
एहि तन कर फल बिषय न भाई । स्वर्गउ स्वल्प अंत दुखदाई ॥ उ० ४३/१
एहिं तन राम भगति मैं पाई । ताते मोहि ममता अधिकाई ॥ उ० ९४/७
एहिं तन सतिहि भेट मोहि नाहीं । सिव संकल्पु कीन्ह मन माहीं ॥ बा० ५६/२
एहि ते अधिक धरमु नहिं दूजा । सादर सासु ससुर पद पूजा ॥ अ० ६०/५
एहि तें कवन ब्यथा बलवाना । जो दुखु पाइ तजहिं तनु प्राना ॥ अ० ८०/७
एहि ते तव सेवक होत मुदा । मुनि त्यागत जोग भरोस सदा ॥ उ० १३/१४ छं०
एहि तें मोर काह अब नीका । तेहि पर देन कहहु तुम्ह टीका ॥ अ० १७९/६
एहिं थल जौं किछु कहिअ बनाई । एहि सम अधिक न अघ अधमाई ॥ अ० २१०/२
एहि दुख दाहँ दहइ दिन छाती । भूख न बासर नीद न राती ॥ अ० २११/१
एहि धनु पर ममता केहि हेतू । सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू ॥ बा० २७०/८
एहि पापिनिहि बूझि का परेऊ । छाइ भवन पर पावकु धरेऊ ॥ अ० ४६/२
एहि प्रकार गत बासर सोऊ । प्रात नहान लाग सबु कोऊ ॥ अ० २७२/३
एहि प्रकार बल मनहि देखाई । करिहउँ रघुपति कथा सुहाई ॥ बा० १३/१
एहि प्रकार भरि माघ नहाहीं । पुनि सब निज निज आश्रम जाहीं ॥ बा० ४४/१
एहिं प्रतिपालउँ सबु परिवारू । नहिं जानउँ कछु अउर कबारू ॥ अ० ९९/७
एहि बिधि अमिति जुगुति मन गुनउँ । मुनि उपदेस न सादर सुनऊँ ॥ उ० १११/११
एहि बिधि आइ बिलोकी बेनी । सुमिरत सकल सुमंगल देनी ॥ अ० १०५/५
एहि बिधि उपजै लच्छि जब सुंदरता सुख मूल ।
तदपि सकोच समेत कबि कहहिं सीय समतूल ॥ बा० २४७/०
एहि बिधि कथा कहहिं बहु भाँती । गिरि कंदराँ सुनी संपाती ॥ कि० २६/१
एहि बिधि करत पंथ पछितावा । तमसा तीर तुरत रथु आवा ॥ अ० १४६/१
एहि बिधि करत बिनोद बहु प्रात प्रगट दसकंध ।
सहज असंक लंकपति सभाँ गयउ मद अंध ॥ लं० १६/० (क)
एहि बिधि करत प्रलाप कलापा । आए अवध भरे परितापा ॥ अ० ८५/७
एहि बिधि करत सप्रेम बिचारा । आयउ सपदि सिंधु एहिं पारा ॥ सुं० ४२/१
एहि बिधि करेहु उपाय कदंबा । फिरइ त होइ प्रान अवलंबा ॥ अ० ८१/६
एहि बिधि कहत राम गुन ग्रामा । पावा अनिर्बाच्य बिश्रामा ॥ सुं० ७/२

एहि बिधि कहि कहि बचन प्रिय लेहिं नयन भरि नीर ।
किमि चलिहहिं मारग अगम सुठि सुकुमार सरीर ॥ अ० १२०/०
एहि बिधि कीन्ह बरात पयाना । हय गज गाजहिं ..हने निसाना ॥ बा० ३०३/४
एहि बिधि कृपा रूप गुन धाम रामु आसीन ।
धन्य ते नर एहिं ध्यान जे रहत सदा लयलीन ॥ लं० ११/० (क)
एहि बिधि खोजत बिलपत स्वामी । मनहुँ महा बिरही अति कामी ॥ अर० २९/१६
एहि बिधि गए कछुक दिन बीती । कहत बिराग ग्यान गुन नीती ॥ अर० १६/२
एहि बिधि गयउ काल बहु बीती । नित नै होइ राम पद प्रीती ॥ बा० ७५/३
एहि बिधि गर्भसहित सब नारी । भईं हृदयँ हरषित सुख भारी ॥ बा० १८९/५
एहि बिधि जग हरि आश्रित रहई । जदपि असत्य देत दुख अहई ॥ बा० ११७/१
एहि बिधि जनम करम हरि केरे । सुंदर सुखद बिचित्र घनेरे ॥ बा० १३९/१
एहि बिधि जल्पत भयउ बिहाना । चहुँ दुआर लागे कपि नाना ॥ लं० ७१/९
एहि बिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर ।
जहँ तहँ लागे खान फल भालु बिपुल कपि बीर ॥ सुं० ३५/०
एहि बिधि जीव चराचर जेते । त्रिजग देव नर असुर समेते ॥ उ० ८६/६
एहि बिधि दाह क्रिया सब कीन्ही । बिधिवत न्हाइ तिलांजुलि दीन्ही ॥ अ० १६९/५
एहि बिधि दुखित प्रजेसकुमारी । अकथनीय दारुन दुखु भारी ॥ बा० ५९/१
एहि बिधि नगर नारि नर करहिं राम गुन गान ।
सानुकूल सब पर रहहिं संतत कृपानिधान ॥ उ० ३०/०
एहि बिधि नाथ पयोधि बँधाइअ । जेहिं यह सुजसु लोक तिहुँ गाइअ ॥ सुं० ५९/४
एहि बिधि निज गुन दोष कहि सबहि बहुरि सिरु नाइ ।
बरनउँ रघुबर बिसद जसु सुनि कलि कलुष नसाइ ॥ बा० २९/० (ग)
एहि बिधि नित्यकरम करि पुरजन । रामहि करहिं प्रनाम पुलकि तन ॥ अ० २७३/२
एहि बिधि पूँछहि प्रेम बस पुलक गात जलु नैन ।
कृपासिंधु फेरहिं तिन्हहि कहि बिनीत मृदु बैन ॥ अ० ११२/०
एहि बिधि प्रभु बन बसहिं सुखारी । खग मृग सुर तापस हितकारी ॥ अ० १४१/३
एहि बिधि बासर बीते चारी । रामु निरखि नर नारि सुखारी ॥ अ० २७९/१
एहि बिधि बिलपत रैनि बिहानी । आए सकल महामुनि ग्यानी ॥ अ० १५५/८
एहि बिधि बिलपहिं पुर नर नारीं । देहिं कुचालिहि कोटिक गारीं ॥ अ० ५०/४
एहि बिधि बीते बरष षट सहस बारि आहार ।
संबत सप्त सहस्र पुनि रहे समीर अधार ॥ बा० १४४/०
एहि बिधि बूझत सबहि सुआनी । सुनत राम बनबास कहानी ॥ अ० २२३/८
एहि बिधि बेगि सुभट सब धावहु । खाहु भालु कपि जहँ जहँ पावहु ॥ लं० ३२/१
एहि बिधि भए सोचबस ईसा । तेही समय जाइ दससीसा ॥ बा० ४८/३

एहि बिधि भरत चले मग जाहीं । दसा देखि मुनि सिद्ध सिहाहीं ॥ अ० २१९/५
एहि बिधि भरतु फिरत बन माहीं । नेमु प्रेमु लखि मुनि सकुचाहीं ॥ अ० ३११/१
एहि बिधि भरत सेनु सबु संगा । दीखि जाइ जग पावनि गंगा ॥ अ० १९६/३
एहि बिधि भलेहिं सो रोग नसाहीं । नाहिं त जतन कोटि नहिं जाहीं ॥ उ० १२१/८
एहि बिधि भलेहिं देवहित होई । मत अति नीक कहइ सबु कोइ ॥ बा० ८२/७
एहि बिधि भूप कष्ट अति थोरे । होइहहिं सकल बिप्र बस तोरें ॥ बा० १६८/१
एहि बिधि मज्जनु भरतु करि गुर अनुसासन पाइ ।
मातु नहानीं जानि सब डेरा चले लवाइ ॥ अ० १९७/०
एहि बिधि मन बिचार कर राजा । आइ गए कपि सहित समाजा ॥ सुं० २८/२
एहि बिधि मुनिबर भवन देखाए । बचन सप्रेम राम मन भाए ॥ अ० १३१/१
एहि बिधि रघुकुल कमल रबि मग लोगन्ह सुख देत ।
जाहिं चले देखत बिपिन सिय सौमित्रि समेत ॥ अ० १२२/०
एहि बिधि रहा जाहि जस भाऊ । तेहिं तस देखेउ कोसलराऊ ॥ बा० २४१/८
एहि बिधि राउ मनहिं मन झाँखा । देखि कुभाँति कुमति मन माखा ॥ अ० २९/१
एहि बिधि राति लोगु सबु जागा । भा भिनुसार गुदारा लागा ॥ अ० २०१/७
एहि बिधि राम जगत पितु माता । कोसलपुर बासिन्ह सुखदाता ॥ बा० १९९/१
एहि बिधि रामु मंडपहिं आए । अरघु देइ आसन बैठाए ॥ बा० ३१८/८
एहि बिधि राम बिआह उछाहू । सकइ न बरनि सहस मुख जाहू ॥ बा० ३३०/८
एहि बिधि राम सबहि समुझावा । गुर पद पदुम हरषि सिरु नावा ॥ अ० ८०/१
एहि बिधि लेसै दीप तेज रासि बिग्यानमय ।
जातहिं जासु समीप जरहिं मदादिक सलभ सब ॥ उ० ११७/० (घ) सो०
एहि बिधि सकल कथा समुझाई । लिए दुऔ जन पीठि चढ़ाई ॥ कि० ३/५
एहि बिधि सकल जीव जग रोगी । सोक हरष भय प्रीति बियोगी ॥ उ० १२१/१
एहि बिधि सकल मनोरथ करहीं । आनँद उमगि उमगि उर भरहीं ॥ बा० ३११/१
एहि बिधि सकल मनोरथ करहीं । बचन सप्रेम सुनत मन हरहीं ॥ अ० २८०/१
एहि बिधि सब संसय करि दूरी । सिर धरि गुर पद पंकज-धूरी ॥ बा० ३३/१
एहि बिधि सबहि नयन फलु देता । गए कुअँर सब राज निकेता ॥ बा० ३३४/८
एहि बिधि सबहि सुखी करि रामा । आगें चले सील गुन धामा ॥ उ० ५/८
एहि बिधि सबहि अग्या दीन्ही । आपुनु चलेउ गदा कर लीन्ही ॥ बा० १८१/४
एहि बिधि सबहि देत सुखु आए राजदुआर ।
मुदित मातु परिछनि करहिं बधुन्ह समेत कुमार ॥ बा० ३४८/०
एहि बिधि सबहीं भोजनु कीन्हा । आदर सहित आचमनु दीन्हा ॥ बा० ३२८/८
एहि बिधि सर रचि मुनि सरभंगा । बैठे हृदयँ छाड़ि सब संगा ॥ अर० ७/८
एहि बिधि सिय समेत दोउ भाई । बसहिं बिपिन सुर मुनि सुखदाई ॥ अ० १३६/४

एहि बिधि सिसुबिनोद प्रभु कीन्हा। सकल नगरबासिन्ह सुख दीन्हा ॥ बा० १९९/७
एहि बिधि सीय मंडपहिं आई। प्रमुदित सांति पढ़हिं मुनिराई ॥ बा० ३२२/७
एहि बिधि सीतहि सो लै गयऊ। बन असोक महँ राखत भयऊ ॥ अर० २८/२६
एहि बिधि सोचत भरत मन धावन पहुँचे आइ।
गुर अनुसासन श्रवन सुनि चले गनेसु मनाइ ॥ अ० १५७/०
एहि बिधि सो दच्छिन दिसि जाई। लंका मनहुँ बिभीषन पाई ॥ सुं० १०/५
एहि बिधि संभु सुरन्ह समुझावा। पुनि आगें बर बसह चलावा ॥ बा० ३१४/३
एहि बिधि हित तुम्हार मैं ठयऊ। कहि अस अंतरहित प्रभु भयऊ ॥ बा० १३२/२
एहि बिधि होत बतकही आए बानर जूथ।
नाना बरन सकल दिसि देखिअ कीस बरूथ ॥ कि० २१/०
एहि महँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान श्रुति सारा ॥ बा० ९/१
एहि महँ रुचिर सप्त सोपाना। रघुपति भगति केर पंथाना ॥ उ० १२८/३
एहिं लालसाँ मगन सब लोगू। बरु साँवरो जानकी जोगू ॥ बा० २४८/६
एहि सन हठि करिहउँ पहिचानी। साधु ते होइ न कारज हानी ॥ सुं० ५/४
एहि सम निपट नीच कोउ नाहीं। बड़ बसिष्ठ सम को जग माहीं ॥ अ० २४२/८
एहिं समाज थल बूझब राउर। मौन मलिन मैं बोलब बाउर ॥ अ० २९२/५
एहिं सर मम उत्तर तट बासी। हतहु नाथ खल नर अघ रासी ॥ सुं० ५९/५
एहि सुख जोग न लोग सब कहहिं कहाँ अस भागु।
सहज सुभायँ समाज दुहु राम चरन अनुरागु ॥ अ० २८०/०
एहि सुख ते सत कोटि गुन पावहिं मातु अनंदु।
भाइन्ह सहित बिआहि घर आए रघुकुलचंदु ॥ बा० ३५०/० (क)
एहि सुख सुधाँ सींचि सब काहु। देव देहु जग जीवन लाहु ॥ अ० २७२/८
एहि संदेस सरिस जग माहीं। करि बिचार देखेउँ कछु नाहीं ॥ उ० १/१३
एहीं बीच निसाचर अनी। कसमसात आई अति घनी ॥ लं० ८६/१
एहूँ मिस देखौं पद जाइ। करि बिनती आनौं दोउ भाई ॥ बा० २०५/७

ऐ

ऐसिअ प्रस्न बिहंगपति कीन्हि काग सन जाइ।
सो सब सादर कहिहउँ सुनहु उमा मन लाइ ॥ उ० ५५/०
ऐसिउ पीर बिहसि तेहिं गोई। चोर नारि जिमि प्रगटि न रोई ॥ अ० २६/५
ऐसे अधम मनुज खल कृतजुग त्रेताँ नाहिं।
द्वापर कछुक बृंद बहु होइहहिं कलिजुग माहिं ॥ उ० ४०/०
ऐसेइ संसय कीन्ह भवानी। महादेव तब कहा बखानी ॥ बा० ४६/८
ऐसेउ प्रभु सेवक बस अहई। भगत हेतु लीलातनु गहई ॥ बा० १४३/७
ऐसेउ बचन कठोर सुनि जौं न हृदउ बिलगान।

तौ प्रभु बिषम बियोग दुख सहिहहिं पावँर प्रान ॥ अ० ६७/०
ऐसे प्रभुहि बिलोकउँ जाई । पुनि न बनिहि अस अवसरु आई ॥ अर० ४०/७
ऐसेहिं प्रभु सब भगत तुम्हारे । होइहहिं टूटें धनुष सुखारे ॥ बा० २३८/३
ऐसेहिं हरि बिनु भजन खगेसा । मिटइ न जीवन्ह केर कलेसा ॥ उ० ७८/१
ऐसेहुँ दुख जो राख मम प्राना । सोइ बिधि ताहि जिआव न आना ॥ लं० ९८/१०
ऐसेहु पति कर किएँ अपमाना । नारि पाव जमपुर दुख नाना ॥ अर० ४/९

ओ

ओर निबाहेहु भायप भाई । करि पितु मातु सुजन सेवकाई ॥ अ० १५१/५

औ

औरउ एक आसिषा मोरी । अप्रतिहत गति होइहि तोरी ॥ उ० १०८/१६
औरउ एक कहउँ निज चोरी । सुनु गिरिजा अति दृढ़ मति तोरी ॥ बा० १९५/३
औरउ एक गुपुत मत सबहि कहउँ कर जोरि ।
संकर भजन बिना नर भगति न पावइ मोरि ॥ उ० ४५/०
औरउ कथा अनेक प्रसंगा । तेइ सुक पिक बहुबरन बिहंगा ॥ बा० ३६/१५
औरउ ग्यान भगति कर भेद सुनहु सुप्रबीन ।
जो सुनि होइ राम पद प्रीति सदा अबिछीन ॥ उ० ११६/० (ख)
औरउ जे हरिभगत सुजाना । कहहि सुनहिं समुझहिं बिधि नाना ॥ बा० २९/८
औरउ राम रहस्य अनेका । कहहु नाथ अति बिमल बिबेका ॥ बा० ११०/३
औरउ सबहिं सीय समुझाई । कहि कहि बिपिन बिपति अधिकाई ॥ अ० ७७/६
और एक तोहि कहउँ लखाऊ । मैं एहिं बेष न आउब काऊ ॥ बा० १६८/३
औरु करिहि को भरत बड़ाई । सरसी सीप कि सिंधु समाई ॥ अ० २५६/४
औरु करै अपराधु कोउ और पाव फल भोगु ।
अति बिचित्र भगवंत गति को जग जानै जोगु ॥ अ० ७७/०
औषध मूल फूल फल पाना । कहे नाम गनि मंगल नाना ॥ अ० ५/२

अं

अंगद अरु हनुमंत प्रबेसा । कीन्ह दुर्ग अस कह अवधेसा ॥ लं० ४४/७
अंगद कहइ जाउँ मैं पारा । जियँ संसय कछु फिरती बारा ॥ कि० २९/१
अंगद तहीं बालि कर बालक । उपजेहु बंस अनल कुल घालक ॥ लं० २०/५
अंगद दीख दसानन बैसें । सहित प्रान कज्जलगिरि जैसें ॥ लं० १८/४
अंगद नाम बालि कर बेटा । तासों कबहुँ भई ही भेटा ॥ लं० २०/३
अंगद बचन बिनीत सुनि रघुपति करुना सींव ।
प्रभु उठाइ उर लायउ सजल नयन राजीव ॥ उ० १८/०(क)
अंगद बचन सुनत कपि बीरा । बोलि न सकहिं नयन बह नीरा ॥ कि० २५/७
अंगद बचन सुनत सकुचाना । रहा बालि बानर मैं जाना ॥ लं० २०/४
अंगद बैठ रहा नहिं डोला । प्रीति देखि प्रभु ताहि न बोला ॥ उ० १६/८

अंगद सहित करहु तुम्ह राजू । संतत हृदयँ धरेहु मम काजू ॥ कि० ११/९

अंगद सुना पवनसुत गढ़ पर गयउ अकेल ।
रन बाँकुरा बालिसुत तरकि चढ़ेउ कपि खेल ॥ लं० ४३/०

अंगद स्वामिभक्त तव जाती । प्रभु गुन कस न कहसि एहि भाँती ॥ लं० २३/३

अंगद हनुमत अनुचर जाके । रन बाँकुरे बीर अति बाँके ॥ लं० ३६/४

अंगद हृदयँ प्रेम नहिं थोरा । फिरि फिरि चितव राम कीं ओरा ॥ उ० १८/२

अंगदादि कपि मुरुछित करि समेत सुग्रीव ।
काँख दाबि कपिराज कहुँ चला अमित बल सींव ॥ लं० ६५/०

अँगरी पहिरि कूँड़ि सिर धरहीं । फरसा बाँस सेल सम करहीं ॥ अ० १९०/५

अँचइ पान सब काहूँ पाए । स्त्रग सुगंध भूषित छबि छाए ॥ बा० ३५४/२

अंड कटाह अमित लय कारी । कालु सदा दुरतिक्रम भारी ॥ उ० ९३/८

अंडकोस प्रति प्रति निज रूपा । देखेउँ जिनस अनेक अनूपा ॥ उ० ८०/५

अंतरजामी प्रभु सभ जाना । बूझत कहहु काह हनुमाना ॥ उ० ३५/४

अंतरजामी रामु सकुच सप्रेम कृपायतन ।
चलिअ करिअ बिश्रामु यह बिचारि दृढ़ आनि मन ॥ अ० २०१/० सो०

अंतरजामी रामु सिय तुम्ह सरबग्य सुजान ।
जौं फुर कहहु त नाथ निज कीजिअ बचनु प्रवान ॥ अ० २५६/०

अंतरधान भयउ छन एका । पुनि प्रगटे खल रूप अनेका ॥ लं० ९५/१

अंतरधान भए अस भाषी । संकर सोइ मूरति उर राखी ॥ बा० ७६/७

अंतर प्रेम तासु पहिचाना । मुनि दुर्लभ गति दीन्हि सुजाना ॥ अर० २६/१७

अंतरहित सुर आसिष देहीं । मुदित मातु अंचल भरि लेहीं ॥ बा० ३५०/३

अंतहुँ उचित नृपहि बनबासू । बय बिलोकि हियँ होइ हराँसू ॥ अ० ५५/४

अंतावरीं गहि उड़त गीध पिसाच कर गहि धावहीं ।
संग्राम पुर बासी मनहुँ बहु बाल गुड़ी उड़ावहीं ॥
मारे पछारे उर बिदारे बिपुल भट कहँरत परे ।
अवलोकि निज दल बिकल भट तिसिरादि खर दूषन फिरे ॥ अर० १९/३ छं०

अंधकारु बरु रबिहि नसावै । राम बिमुख न जीव सुख पावै ॥ उ० १२१/१८

अंब एक दुखु मोहि बिसेषी । निपट बिकल नरनायकु देखी ॥ अ० ४१/५

अंसन्ह सहित देह धरि ताता । करिहउँ चरित भगत सुखदाता ॥ बा० १५१/२

अंसन्ह सहित मनुज अवतारा । लेहउँ दिनकर बंस उदारा ॥ बा० १८६/२

आँ

आँब छाँह कर मानस पूजा । तजि हरि भजनु काजु नहिं दूजा ॥ उ० ५६/६

क

कछुक ऊँचि सब भाँति सुहाई । बैठहिं नगर लोक जहँ जाई ॥ बा० २२३/५

कछुक काज बिधि बीच बिगारेउ । भूपति सुरपति पुर पगु धारेउ ॥ अ० १५९/२
कछुक काल बीतें सब भाई । बड़े भए परिजन सुखदाई ॥ बा० २०२/२
कछुक दिवस जननी धरु धीरा । कपिन्ह सहित अइहहिं रघुबीरा ॥ सुं० १५/४
कछुक दिवस बीते एहि भाँती । जात न जानिअ दिन अरु राती ॥ बा० १९६/१
कछुक दूरि सजि बान सरासन । जागन लगे बैठि बीरासन ॥ अ० ८९/२
कछुक राम गुन कहेउँ बखानी । अब का कहौं सो कहहु भवानी ॥ उ० ५१/७
कछु तेहि ते पुनि मैं नहिं राखा । समुझइ खग खगही कै भाषा ॥ उ० ६१/९
कछु तेहिं लै निज सिरन्हि सँवारे । कछु अंगद प्रभु पास पबारे ॥ लं० ३१/६
कछु दिन भोजनु बारि बतासा । किए कठिन कछु दिन उपबासा ॥ बा० ७३/५
कछु न परीछा लीन्हि गोसाईं । कीन्ह प्रनामु तुम्हारिहि नाईं ॥ बा० ५५/२

कछु मारे कछु घायल कछु गढ़ चढ़े पराइ ।
गर्जहिं भालु बलीमुख रिपु दल बल बिचलाइ ॥ लं० ४७/०

कछु मारेसि कछु मर्देसि कछु मिलएसि धरि धूरि ।
कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मर्कट बल भूरि ॥ सुं० १८/०

कटकटहिं जंबुक भूत प्रेत पिसाच खर्पर संचहीं ।
बेताल बीर कपाल ताल बजाइ जोगिनि नंचहीं ॥
रघुबीर बान प्रचंड खंडहिं भटन्ह के उर भुज सिरा ।
जहँ तहँ परहिं उठि लरहिं धर धरु धरु करहिं भयकर गिरा ॥ अर० १९/१ छं०

कटकटान कपिकुंजर भारी । दुहु भुजदंड तमकि महि मारी ॥ लं० ३१/३
कटकटाहिं कोटिन्ह भट गर्जहिं । दसन ओठ काटहिं अति तर्जहिं ॥ लं० ४०/६
कटहिं चरन उर सिर भुजदंडा । बहुतक बीर होहि सत खंडा ॥ लं० ६७/५
कटि किंकिनी उदर त्रय रेखा । नाभि गभीर जान जेहिं देखा ॥ बा० १९८/४
कटितट परिकर कस्यो निषंगा । कर कोदंड कठिन सारंगा ॥ लं० ८५/१०
कटि तूनीर पीत पट बाँधें । कर सर धनुष बाम बर काँधें ॥ बा० २४३/१
कटि पट पीत कसें बर भाथा । रुचिर चाप सायक दुहुँ हाथा ॥ बा० २०८/२
कटि मुनिबसन तून दुइ बाँधें । धनु सर कर कुठारु कल काँधें ॥ बा० २६७/८
कटु जल्पसि जड़ कपि बल जाकें । बल प्रताप बुधि तेज न ताकें ॥ लं० ३०/८
कठिन करम गति जान बिधाता । जो सुभ असुभ सकल फल दाता ॥ अ० २८९/४

कठिन काल मल कोस धर्म न ग्यान न जोग जप ।
परिहरि सकल भरोस रामहि भजहिं ते चतुर नर ॥ अर० ६/०(ख) सो०

कठिन कुसंग कुपंथ कराला । तिन्ह के बचन बाघ हरि ब्याला ॥ बा० ३७/७
कठिन भूमि कोमल पद गामी । कवन हेतु बिचरहु बन स्वामी ॥ कि० ०/८
कत बिधि सृजीं नारि जग माहीं । पराधीन सपनेहुँ सुखु नाहीं ॥ बा० १०१/५
कत सिख देइ हमहि कोउ माई । गालु करब केहि कर बलु पाई ॥ अ० १३/१

कतहुँ निमज्जन कतहुँ प्रनामा । कतहुँ बिलोकत मन अभिरामा ॥ अ० ३११/५
कतहुँ बिरिद बंदी उच्चरहीं । कतहुँ बेद धुनि भूसुंर करहीं ॥ बा० २९६/६
कतहुँ बैठि मुनि आयसु पाई । सुमिरत सीय सहित दोउ भाई ॥ अ० ३११/६
कतहुँ मुनिन्ह उपदेसहिं ग्याना । कतहुँ राम गुन करहिं बखाना ॥ बा० ७५/१
कतहुँ रहउ जौं जीवति होई । तात जतन करि आनउँ सोई ॥ कि० १७/३
कतहुँ होइ निसिचर सैं भेटा । प्रान लेहिं एक एक चपेटा ॥ कि० २३/१
कथा अरंभ करै सोइ चाहा । तेही समय गयउ खगनाहा ॥ उ० ६२/५
कथा अलौकिक सुनहिं जे ग्यानी । नहिं आचरजु करहिं अस जानी ॥ बा० ३२/४
कथा कही सब तेहिं अभिमानी । जेहि प्रकार सीता हरि आनी ॥ लं० ६१/९
कथा जो सकल लोक हितकारी । सोइ पूछन चह सैलकुमारी ॥ बा० १०६/६
कथा सकल मैं तुम्हहि सुनाई । काग देह जेहिं कारन पाई ॥ उ० ११३/१५
कथा समस्त भुसुंड बखानी । जो मैं तुम्ह सन कही भवानी ॥ उ० ६७/७
कदलि ताल बर धुजा पताका । देखि न मोह धीर मन जाका ॥ अर० ३७/२

कद्रूँ बिनतहि दीन्ह दुखु तुम्हहि कौसिलाँ देब ।
भरतु बंदिगृह सेइहहिं लखनु राम के नेब ॥ अ० १९/०

कनकउ पुनि पषान तें होई । जारेहुँ सहजु न परिहर सोई ॥ बा० ७९/६
कनक कलस तोरन मनिजाला । हरद दूब दधि अच्छत माला ॥ बा० २९५/८
कनक कलस भरि कोपर थारा । भाजन ललित अनेक प्रकारा ॥ बा० ३०४/१
कनक कलस मनि कोपर रूरे । सुचि सुगंध मंगल जल पूरे ॥ बा० ३२३/५
कनक कलस मंगल भरि थारा । गावत पैठहिं भूप दुआरा ॥ बा० १९३/४
कनक कलित अहिबेलि बनाई । लखि नहिं परइ सपरन सुहाई ॥ बा० २८७/२
कनककसिपु अरु हाटकलोचन । जगत बिदित सुरपति मद मोचन ॥ बा० १२१/६

कनक कोट बिचित्र मनि कृत सुंदरायतना घना ।
चउहट्ट हट्ट सुबट्ट बीथीं चारु पुर बहु बिधि बना ॥
गज बाजि खच्चर निकर पदचर रथ बरूथन्हि को गनै ।
बहुरूप निसिचर जूथ अतिबल सेन बरनत नहिं बनै ॥ सुं० २/१ छं०

कनक थार आरती उतारहिं । बार बार प्रभु गात निहारहिं ॥ उ० ६/४

कनक थार भरि मंगलन्हि कमल करन्हि लिएँ मात ।
चलीं मुदित परिछनि करन पुलक पल्लवित गात ॥ बा० ३४६/०

कनक थार भरि मनि गन नाना । बिप्र रूप आयउ तजि माना ॥ सुं० ५७/८
कनक बरन तन तेज बिराजा । मानहुँ अपर गिरिन्ह कर राजा ॥ कि० २९/७
कनक बसन मनि भरि भरि जाना । महिषीं धेनु बस्तु बिधि नाना ॥ बा० ३३२/८
कनक बसन मनि हय गय स्यंदन । दिए बूझि रुचि रबिकुलनंदन ॥ बा० ३३०/६
कनक बिंदु दुइ चारिक देखे । राखे सीस सीय सम लेखे ॥ अ० १९८/३

कनक भूधराकार सरीरा । समर भयंकर अतिबल बीरा ॥ सुं० १५/८
कनक सिंघासन सीय समेता । बैठहिं रामु होइ चित चेता ॥ अ० १०/५
कनकहिं बान चढ़इ जिमि दाहें । तिमि प्रियतम पद नेम निबाहें ॥ अ० २०४/५
कपट कुचालि सीवँ सुरराजू । पर अकाज प्रिय आपन काजू ॥ अ० ३०१/१
कपट नारि बर बेष बनाई । मिलीं सकल रनिवासहिं जाई ॥ बा० ३१७/७
कपट बिप्र बर बेष बनाएँ । कौतुक देखहिं अति सचु पाएँ ॥ बा० ३२०/७
कपट बोरि बानी मृदुल बोलेउ जुगुति समेत ।
नाम हमार भिखारि अब निर्धन रहित निकेत ॥ बा० १६०/०
कपट सनेहु बढ़ाइ बहोरी । बोली बिहसि नयन मुहु मोरी ॥ अ० २६/८
कपटी कायर कुमति कुजाती । लोक बेद बाहेर सब भाँती ॥ अ० १९५/१
कपटी कुटिल कलहप्रिय क्रोधी । बेद बिदूषक बिस्व बिरोधी ॥ अ० १६७/२
कपटी कुटिल मोहि प्रभु चीन्हा । ताते नाथ संग नहिं लीन्हा ॥ उ० ०/४
कपि अकुलाने माया देखें । सब कर मरन बना एहि लेखें ॥ लं० ५१/५
कपि आकृति तुम्ह कीन्हि हमारी । करिहहिं कीस सहाय तुम्हारी ॥ बा० १३६/७
कपि उठाइ प्रभु हृदयँ लगावा । कर गहि परम निकट बैठावा ॥ सुं० ३२/४
कपि कर मन बिचार एहि रीती । करिहहिं बिधि मो सन ए प्रीती ॥ कि० ३/८
कपि करि हृदयँ बिचार दीन्हि मुद्रिका डारि तब ।
जनु असोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ ॥ सुं० १२/० सो०
कपि के बचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्वास ।
जाना मन क्रम बचन यह कृपासिंधु कर दास ॥ सुं० १३/०
कपि कें ममता पूँछ पर सबहि कहउँ समुझाइ ।
तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लगाइ ॥ सुं० २४/०
कपि तव दरस भइउँ निष्पापा । मिटा तात मुनिबर कर सापा ॥ लं० ५७/१
कपि तव दरस सकल दुख बीते । मिले आजु मोहि राम पिरीते ॥ उ० १/११
कपि देखा दारुन भट आवा । कटकटाइ गर्जा अरु धावा ॥ सुं० १८/४
कपिन्ह बिभीषनु आवत देखा । जाना कोउ रिपु दूत बिसेषा ॥ सुं० ४२/२
कपिपति नील रीछपति अंगद नल हनुमान ।
सहित बिभीषन अपर जे जूथप कपि बलवान ॥ लं० ११८/० (ख)
कपिपति बेगि बोलाए आए जूथप जूथ ।
नाना बरन अतुल बल बानर भालु बरूथ ॥ सुं० ३४/०
कपिपति रीछ निसाचर राजा । अंगदादि जे कीस समाजा ॥ बा० १७/१
कपि पुनि बैद तहाँ पहुँचावा । जेहि बिधि तबहिं ताहि लइ आवा ॥ लं० ६१/४
कपि बंधन सुनि निसिचर धाए । कौतुक लागि सभाँ सब आए ॥ सुं० १९/५
कपि बल देखि सकल हियँ हारे । उठा आपु कपि कें परचारे ॥ लं० ३४/१

कपि लंगूर बिपुल नभ छाए। मनहुँ इंद्रधनु उए सुहाए ॥ लं० ८६/५
कपिलीला करि तिन्हहिं डेरावहिं। रामचंद्र कर सुजसु सुनावहिं ॥ लं० ४३/५
कपि सब उठे गीध कहँ देखी। जामवंत मन सोच बिसेषी ॥ कि० २६/६
कपि सब चरित समास बखाने। भए दुखी मन महुँ पछिताने ॥ लं० ५९/२

कपि सेन संग सँघारि निसिचर रामु सीतहि आनिहैं।
त्रैलोक पावन सुजसु सुर मुनि नारदादि बखानिहैं॥
जो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावई।
रघुबीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावई॥ कि० २९/१ छं०

कपिहि तिलक करि प्रभु कृत सैल प्रबरषन बास।
बरनन बरषा सरद अरु राम रोष कपि त्रास॥ उ० ६६/० (ख)

कपिहि बिलोकि दसानन बिहसा कहि दुर्बाद।
सुत बध सुरति कीन्हि पुनि उपजा हृदयँ बिषाद॥ सुं० २०/०

कबहुँ उछंग कबहुँ बर पलना। मातु दुलारइ कहि प्रिय ललना ॥ बा० १९७/८
कबहुँक करि करुना नर देही। देत ईस बिनु हेतु सनेही ॥ उ० ४३/६
कबहुँक फिरि पाछें पुनि जाई। कबहुँक नृत्य करइ गुन गाई ॥ अर० ९/१२
कबहुँ कि दुख सब कर हित ताकें। तेहि कि दरिद्र परस मनि जाकें ॥ उ० १११/१

कबहुँ दिवस महँ निबिड़ तम कबहुँक प्रगट पतंग।
बिनसइ उपजइ ग्यान जिमि पाइ कुसंग सुसंग॥ कि० १५/० (ख)

कबहुँ न कियहु सवति आरेसु। प्रीति प्रतीति जान सबु देसू ॥ अ० ४८/७
कबहुँ न मिल भरि उदर अहारा। आजु दीन्ह बिधि एकहिं बारा ॥ कि० २६/४
कबहुँ नयन मम सीतल ताता। होइहहिं निरखि स्याम मृदु गाता ॥ सुं० १३/६
कबहुँ निकट पुनि दूरि पराई। कबहुँक प्रगटइ कबहुँ छपाई ॥ अर० २६/१२

कबहुँ प्रबल बह मारुत जहँ तहँ मेघ बिलाहिं।
जिमि कपूत के उपजें कुल सद्धर्म नसाहिं॥ कि० १५/० (क)

कबहुँ काल न ब्यापिहि तोही। सुमिरेसु भजेसु निरंतर मोही ॥ उ० ८७/१
कबहुँ जोग बियोग न जाकें। देखा प्रगट बिरह दुखु ताकें ॥ बा० ४८/८
कबि अलखित गति बेषु बिरागी। मन क्रम बचन राम अनुरागी ॥ अ० १०९/८
कबि कुल अगम भरत गुन गाथा। को जानइ तुम्ह बिनु रघुनाथा ॥ अ० २३२/२
कबिकुलं जीवनु पावन जानी। राम सीय जसु मंगल खानी ॥ बा० ३६०/७
कबि कोबिद अस हृदयँ बिचारी। गावहिं हरि जस कलि मल हारी ॥ बा० १०/६
कबि कोबिद गावहिं असि नीती। खल सन कलह न भल नहिं प्रीती ॥ उ० १०५/१४

कबि कोबिद रघुबर चरित मानस मंजु मराल।
बाल बिनय सुनि सुरुचि लखि मोपर होउ कृपाल॥ बा० १४/० (ग)

कबित रसिक न राम पद नेहू। तिन्ह कहँ सुखद हास रस एहू ॥ बा० ८/३

कबित बिबेक एक नहिं मोरें। सत्य कहउँ लिखि कागद कोरें ॥ बा० ८/११
कबि न होउँ नहिं चतुर कहावउँ। मति अनुरूप राम गुन गावउँ ॥ बा० ११/९
कबि न होउँ नहिं बचन प्रबीनू। सकल कला सब बिद्या हीनू ॥ बा० ८/८
कबि बृंद उदार दुनी न सुनी। गुन दूषक ब्रात न कोपि गुनी ॥ उ० १००/९ छं०
कबिहि अरथ आखर बलु साँचा। अनुहरि ताल गतिहि नटु नाचा ॥ अ० २४०/४
कमठ पीठ जामहिं बरु बारा। बंध्या सुत बरु काहुहि मारा ॥ उ० १२१/१५
कमठ पीठि पबि कूट कठोरा। नृप समाज महँ सिव धनु तोरा ॥ बा० ३५६/४
कमल कोक मधुकर खग नाना। हरषे सकल निसा अवसाना ॥ बा० २३८/२
कमल नाल जिमि चाप चढ़ावौं। जोजन सत प्रमान लै धावौं ॥ बा० २५२/८
करइ जे धरम करम मन बानी। बासुदेव अर्पित नृप ग्यानी ॥ बा० १५५/२
करइ जो करम पाव फल सोई। निगम नीति असि कह सबु कोई ॥ अ० ७६/८
करइ पान सोवइ षट मासा। जागत होइ तिहुँ पुर त्रासा ॥ बा० १७९/४
करइ मनोहर मति अनुहारी। सुजन सुचित सुनि लेहु सुधारी ॥ बा० ३५/२
करइ बिचारु कुबुद्धि कुजाती। होइ अकाजु कवनि बिधि राती ॥ अ० १२/३
करइ स्वयंबर सो नृपबाला। आए तहँ अगनित महिपाला ॥ बा० १२९/६
करइ स्वामि हित सेवकु सोई। दूषन कोटि देइ किन कोई ॥ अ० १८५/५
करउँ कृपानिधि एक ढिठाई। मैं सेवक तुम जन सुखदाई ॥ उ० ३६/१
करउँ प्रनाम करम मन बानी। करहु कृपा सुत सेवक जानी ॥ बा० १५/७
करउँ बिचार बहोरि बहोरी। मोह कलिल ब्यापित मति मोरी ॥ उ० ८१/७
करउँ सदा तिन्ह कै रखवारी। जिमि बालक राखइ महतारी ॥ अर० ४२/५
करउँ सदा रघुपति गुन गाना। सादर सुनहिं बिहंग सुजाना ॥ उ० ११३/११
कर कमलनि धनु सायकु फेरत। जिय की जरनि हरत हँसि हेरत ॥ अ० २३८/८
कर गहि पतिहि भवन निज आनी। बोली परम मनोहर बानी ॥ लं० ५/३
कर गहि प्रभु मुनिबर बैठारे। परम मनोहर बचन उचारे ॥ उ० ३२/६

कर जोरि जनकु बहोरि बंधु समेत कोसलराय सों।
बोले मनोहर बयन सानि सनेह सील सुभाय सों ॥
संबंध राजन रावरें हम बड़े अब सब बिधि भए।
एहि राज साज समेत सेवक जानिबे बिनु गथ लए ॥ बा० ३२५/२ छं०

कर जोरें सुर दिसिप बिनीता। भृकुटि बिलोकत सकल सभीता ॥ सुं० १९/७
करत कष्ट बहु पावइ कोऊ। भक्ति हीन मोहि प्रिय नहिं सोऊ ॥ उ० ४४/४

करत दंडवत देखि तेहि भरत लीन्ह उर लाइ।
मनहुँ लखन सन भेंट भइ प्रेमु न हृदयँ समाइ ॥ अ० १९३/०

करत दंडवत मुनि उर लाए। प्रेम बारि द्वौ जन अन्हवाए ॥ अर० २/६
करत दंडवत लिए उठाई। राखे बहुत बार उर लाइ ॥ अर० ४०/१०

करत प्रनाम चले दोउ भाई । कहत प्रीति सारद सकुचाई ॥ अ० २३७/२
करत प्रबेस मिटे दुख दावा । जनु जोगीं परमारथु पावा ॥ अ० २३८/३
करत बतकही अनुज सन मन सिय रूप लोभान ।
मुख सरोज मकरंद छबि करइ मधुप इव पान ॥ बा० २३१/०
करत बिचार भयउ भिनुसारा । लागे कपि पुनि चहूँ दुआरा ॥ लं० ४८/८
करत बिनय बहु बिधि नरनाहू । लहेउँ आजु जग जीवन लाहू ॥ बा० ३३०/४
करत बिलाप बहुत यहि भाँती । बैठेहिं बीति गई सब राती ॥ अ० १६८/६
करत मनोरथ जस जियँ जाके । जाहिं सनेह सुराँ सब छाके ॥ अ० २२४/३
करत राज लंका सठ त्यागी । होइहि जव कर कीट अभागी ॥ सुं० ५२/५
करतल बान धनुष अति सोहा । देखत रूप चराचर मोहा ॥ बा० २०३/७
करतल होहिं पदारथ चारी । तेइ सिय रामु कहेउ कामारी ॥ बा० ३१४/२
करति बिलाप जाति नभ सीता । ब्याध बिबस जनु मृगी सभीता ॥ अर० २८/२४
करति बिलाप मनहिं मन भारी । राम बिरहँ जानकी दुखारी ॥ लं० ९९/४
करतेहु राजु त तुम्हहि न दोषू । रामहि होत सुनत संतोषू ॥ अ० २०६/८
करन चहउँ रघुपति गुन गाहा । लघु मति मोरि चरित अवगाहा ॥ बा० ७/५
करनधार तुम्ह अवध जहाजू । चढ़ेउ सकल प्रिय पथिक समाजू ॥ अ० १५३/६
करनधार सदगुर दृढ़ नावा । दुर्लभ साज सुलभ करि पावा ॥ उ० ४३/८
करनबेध उपबीत बिआहा । संग संग सब भए उछाहा ॥ अ० ९/६
कर नित करहिं राम पद पूजा । राम भरोस हृदयँ नहिं दूजा ॥ अ० १२८/४
कर परसा सुग्रीव सरीरा । तनु भा कुलिस गई सब पीरा ॥ कि० ७/६
करब सदा लरिकन्ह पर छोहू । दरसनु देत रहब मुनि मोहू ॥ बा० ३५९/७
करबि पायँ परि बिनय बहोरी । तात करिअ जनि चिंता मोरी ॥ अ० १५०/७
करम धरम इतिहास अनेका । करइ निरूपन बिरति बिबेका ॥ बा० १६२/५
करमनास जलु सुरसरि परई । तेहि को कहहु सीस नहिं धरई ॥ अ० १९३/७
करम प्रधान बिस्व करि राखा । जो जस करइ सो तस फलु चाखा ॥ अ० २१८/४
करम बचन मन छाड़ि छलु जब लगि जनु न तुम्हार ।
तब लगि सुखु सपनेहुँ नहीं किएँ कोटि उपचार ॥ अ० १०७/०
करम बचन मन राउर चेरा । राम करहु तेहि कें उर डेरा ॥ अ० १३०/८
करम बचन मानस बिमल तुम्ह समान तुम्ह तात ।
गुर समाज लघु बंधु गुन कुसमयँ किमि कहि जात ॥ अ० ३०४/०
करम लिखा जौं बाउर नाहू । तौ कत दोसु लगाइअ काहू ॥ बा० ९६/७
करम सुभासुभ तुम्हहि न बाधा । अब लगि तुम्हहि न काहूँ साधा ॥ बा० १३६/४
कर मीजहिं सिरु धुनि पछिताहीं । जनु बिनु पंख बिहग अकुलाहीं ॥ अ० ७५/५
कर सरोज जयमाल सुहाई । बिस्व बिजय सोभा जेहिं छाई ॥ बा० २६३/२

कर सरोज प्रभु मम सिर धरेऊ। दीनदयाल सकल दुख हरेऊ ॥ उ० ८२/४

कर सरोज सिर परसेउ कृपासिंधु रघुबीर।
निरखि राम छबि धाम मुख बिगत भई सब पीर ॥ अर० ३०/०

कर सारंग साजि कटि भाथा। अरि दल दलन चले रघुनाथा ॥ लं० ६७/१
करसि पान सोवसि दिनु राती। सुधि नहिं तव सिर पर आराती ॥ अर० २०/७
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी। सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी ॥ बा० १२०/७
करहिं अहार साक फल कंदा। सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानंदा ॥ बा० १४३/१
करहिं आरती आरतिहर कें। रघुकुल कमल बिपिन दिनकर कें ॥ उ० ८/७
करहिं आरती पुर नर नारी। देहिं निछावरि बित्त बिसारी ॥ बा० २६४/६
करहिं आरती बारहिं बारा। प्रेमु प्रमोदु कहै को पारा ॥ बा० ३४८/१
करहिं उपद्रव असुर निकाया। नाना रूप धरहिं करि माया ॥ बा० १८२/४
करहिं कूटि नारदहि सुनाई। नीकि दीन्हि हरि सुंदरताई ॥ बा० १३३/३
करहिं गान कल मंगल बानीं। हरष बिबस सब काहुँ न जानीं ॥ बा० ३१७/८
करहिं गान बहु तान तरंगा। बहुबिधि क्रीड़हिं पानि पतंगा ॥ बा० १२५/५
करहि जाइ तपु सैलकुमारी। नारद कहा सो सत्य बिचारी ॥ बा० ७२/१
करहिं जोहारु भेंट धरि आगे। प्रभुहि बिलोकहिं अति अनुरागे ॥ अ० १३४/५
करहिं जोग जोगी जेहि लागी। कोहु मोहु ममता मद त्यागी ॥ बा० ३४०/५
करहिं निछावरि मनिगन चीरा। बारि बिलोचन पुलक सरीरा ॥ बा० ३४७/६
करहिं प्रनाम नगर नर नारी। मुदित ब्रह्ममय बारि निहारी ॥ अ० १९६/५
करहिं बिदूषक कौतुक नाना। हास कुसल कल गान सुजाना ॥ बा० ३०१/८
करहिं बिनय अति बारहिं बारा। हनूमान हियँ हरष अपारा ॥ उ० ४१/२
करहिं बिलाप अनेक प्रकारा। परहिं भूमितल बारहिं बारा ॥ अ० १५५/४
करहिं बिबिध बिधि भोग बिलासा। गनन्ह समेत बसहिं कैलासा ॥ बा० १०२/५
करहिं मोह बस द्रोह परावा। संत संग हरि कथा न भावा ॥ उ० ३९/६
करहिं मोह बस नर अघ नाना। स्वारथ रत परलोक नसाना ॥ उ० ४०/४
करहि सखा सोइ बेगि उपाऊ। रामु लखनु सिय नयन देखाऊ ॥ अ० १४९/२
करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना। निर्भर प्रेम मगन हनुमाना ॥ सुं० १६/४
करहु जाइ जा कहुँ जोइ भावा। हम तौ आजु जनम फलु पावा ॥ बा० २४५/६
करहु राजु परिहरहु गलानी। मानहु मोर बचन हित जानी ॥ अ० १७४/४
करहु राम पर सहज सनेहु। केहिं अपराध आजु बन देहू ॥ अ० ४८/६
करहु सीस धरि भूप रजाई। हइ तुम्ह कहँ सब भाँति भलाई ॥ अ० १७३/६
करहु सफल आपनि सेवकाई। करि हितु हरहु चाप गरुआई ॥ बा० २५६/६
कर त्रिसूल अरु डमरु बिराजा। चले बसहँ चढ़ि बाजहिं बाजा ॥ बा० ९१/५
करालं महाकाल कालं कृपालं। गुनागार संसारपारं नतोऽहं ॥ उ० १०७/४

करिअ कृपा सिसु सेवक जानी। तुम्ह सम सील धीर मुनि ग्यानी ॥ बा० २७६/४
करिअ न संसय अस उर आनी। सुनिअ कथा सादर रति मानी ॥ बा० ३२/८
करि आरति नेवछावरि करहीं। बार बार सिसु चरनन्हि परहीं ॥ बा० १९३/५
करि आरती अरघु तिन्ह दीन्हा। राम गमनु मंडप तव कीन्हा ॥ बा० ३१८/४
करि कर सरिस सुभग भुजदंडा। कटि निषंग कर सर कोदंडा ॥ बा० १४६/८
करि कुचालि सोचत सुरराजू। भरत हाथ सबु काजु अकाजू ॥ अ० २९५/१
करि कुमंत्रु मन साजि समाजू। आए करै अकंटक राजू ॥ अ० २२७/५
करि कुरूप बिधि परबस कीन्हा। बवा सो लुनिअ लहिअ जो दीन्हा ॥ अ० १५/५
करि कुल रीति बेद बिधि राऊ। देखि सबहि सब भाँति बनाऊ ॥ बा० ३०१/२
करि केहरि कपि कोल कुरंगा। बिगतबैर बिचरहिं सब संगा ॥ अ० १३७/१
करि केहरि निसिचर चरहिं दुष्ट जंतु बन भूरि।
बिष बाटिकाँ कि सोह सुत सुभग सजीवनि मूरि ॥ अ० ५९/०
करि केहरि बन जाइ न जोई। हम सँग चलहिं जो आयसु होई ॥ अ० १११/७
करि चिक्कार घोर अति धावा बदनु पसारि।
गगन सिद्ध सुर त्रासित हा हा हेति पुकारि ॥ लं० ७०/०
करि छलु मूढ़ हरी बैदेही। प्रभु प्रभाउ तस बिदित न तेही ॥ बा० ४८/५
करि जतन भट कोटिन्ह बिकट तन नगर चहुँ दिसि रच्छहीं।
कहुँ महिष मानुष धेनु खर अज खल निसाचर भच्छहीं ॥
एहि लागि तुलसीदास इन्ह की कथा कछु एक है कही।
रघुबीर सर तीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पैहहिं सही ॥ सुं० २/३ छं०
करि तड़ाग मज्जन जलपाना। बट तर गयउ हृदयँ हरषाना ॥ उ० ६२/३
करि दंडवत कहत कर जोरी। राखी नाथ सकल रुचि मोरी ॥ अ० ३१२/६
करि दंडवत भेंट धरि आगें। प्रभुहि बिलोकत अति अनुरागें ॥ अ० ८७/३
करि दंडवत मुनिहि सनमानी। निज आसन बैठारेन्हि आनी ॥ बा० २०६/२
करि दंडवत सप्रेम द्विज सिव सन्मुख कर जोरि।
बिनय करत गदगद स्वर समुझि घोर गति मोरि ॥ उ० १०७/० (ख)
करि न जाइ सर मज्जन पाना। फिरि आवइ समेत अभिमाना ॥ बा० ३८/३
करि नृप क्रिया संग पुरबासी। भरत गए जहँ प्रभु सुख रासी ॥ उ० ६४/६
करि पितु क्रिया बेद जसि बरनी। भे पुनीत पातक तम तरनी ॥ अ० २४७/१
करि पूजा कहि बचन सुहाए। दिए मूल फल प्रभु मन भाए ॥ अर० २/८
करि पूजा नैबेद्य चढ़ावा। आपु गई जहँ पाक बनावा ॥ बा० २००/३
करि पूजा भूपति अस भाषा। धरिअ नाम जो मुनि गुनि राखा ॥ बा० १९६/३
करि पूजा मान्यता बड़ाई। जनवासे कहुँ चले लवाई ॥ बा० ३०५/४
करि पूजा मारीच तब सादर पूछी बात।

कवन हेतु मन ब्यग्र अति अकसर आयहु तात ॥ अर० २४/०
करि पूजा मुनि सुजसु बखानी । बोले अति पुनीत मृदु बानी ॥ बा० ४४/६
करि पूजा बस बिधि सेवकाई । गयउ राउ गृह बिदा कराई ॥ बा० २१६/८
करि पूजा समेत अनुरागा । मधुर बचन तब बोलेउ कागा ॥ उ० ६२/८
करि प्रनामु तब रामु सिधाए । रिषि धरि धीर जनक पहिं आए ॥ अ० २९०/६
करि प्रनामु तिन्ह पाती दीन्ही । मुदित महीप आपु उठि लीन्ही ॥ बा० २८९/३
करि प्रनाम तिन्ह रामु निहारे । बेषु देखि भए निपट दुखारे ॥ अ० २६९/५
करि प्रनामु देखत बन बागा । कहत महातम अति अनुरागा ॥ अ० १०५/४
करि प्रनामु निज कथा सुनाई । राम कृपाँ आपनि गति पाई ॥ सुं० ५६/१०
करि प्रनामु पूँछहि जेहि तेही । केहि बन लखनु रामु बैदेही ॥ अ० २२३/५
करि प्रनाम पूँछी कुसलाई । बिप्र कहहु निज कथा बुझाई ॥ सुं० ५/६
करि प्रनामु पूजा कर जोरी । बोले गिरा अमिअँ जनु बोरी ॥ बा० ३२९/५
करि प्रनामु भेंटीं सब सासू । प्रीति कहत कबि हियँ न हुलासू ॥ अ० ३१९/२
करि प्रनाम रामहि त्रिपुरारी । हरषि सुधा सम गिरा उचारी ॥ बा० १११/५
करि प्रनामु रिषि आयसु पाई । प्रमुदित हृदयँ चले रघुराई ॥ अ० १०८/६
करि प्रनामु सब कहँ कर जोरे । रामु राउ गुर साधु निहोरे ॥ अ० २९६/५
करि प्रबोधु मुनिबर कहेउ अतिथि पेमप्रिय होहु ।
कंद मूल फल फूल हम देहिं लेहु करि छोहु ॥ अ० २१२/०
करि प्रेम निरंतर नेम लिएँ । पद पंकज सेवत सुद्ध हिएँ ॥ उ० १३/१५ छं०
करि बनाव सजि बाहन नाना । चले लेन सादर अगवाना ॥ बा० ९४/२
करि बर बिनय ससुर सनमाने । पितु कौसिक बसिष्ठ सम जाने ॥ बा० ३४१/७
करि बिचार जियँ देखहु नीकें । राम रजाइ सीस सबही कें ॥ अ० २५३/८
करि बिचार तिन्ह मंत्र दृढ़ावा । चारि अनी कपि कटकु बनावा ॥ लं० ३८/४
करि बिचारु मन दीन्ही ठीका । राम रजायस आपन नीका ॥ अ० २६५/७
करि बिनती जब संभु सिधाए । तब प्रभु निकट बिभीषनु आए ॥ लं० ११५/१
करि बिनती दुख दुसह सुनाए । हरषित निज निज सदन सिधाए ॥ अ० १३३/४
करि बिनती निज कथा सुनाई । रंग अवनि सब मुनिहि देखाई ॥ बा०२४३/५
करि बिनती पद गहि दससीसा । बोलेउ बचन सुनहु जगदीसा ॥ बा०१७६/३
करि बिनती मंदिर लै आए । चरन पखारि पलँग बैठाए ॥ कि० १९/५
करि बिनती मुनि आयसु पाई । पद सरोज पुनि पुनि सिरु नाई ॥ उ० ११३/८
करि बिनती सुर सकल सिधाए । तेही समय देवरिषि आए ॥ लं० ७०/१०
करि बिनती सुर सिद्ध सब रहे जहँ तहँ कर जोरि ।
अति सप्रेम तन पुलकि बिधि अस्तुति करत बहोरि ॥ लं० ११०/०
करि बिनय सिय रामहि समरपी जोरि कर पुनि पुनि कहै ।

बलि जाउँ तात सुजान तुम्ह कहुँ बिदित गति सब की अहै ॥
परिवार पुरजन मोहि राजहि प्रानप्रिय सिय जानिबी ।
तुलसीस सीलु सनेहु लखि निज किंकरी करि मानिबी ॥ बा० ३३५/१ छं०
करि बिलाप सब रोवहिं रानी । महा बिपति किमि जाइ बखानी ॥ अ० १५२/७
करि भोजनु मुनिबर बिग्यानी । लगे कहन कछु कथा पुरानी ॥ बा० २३६/५
करि मज्जन प्रभु भूषन साजे । अंग अनंग देखि सत लाजे ॥ उ० १०/८
करि मज्जनु पूजहिं नर नारी । गनप गौरि तिपुरारि तमारी ॥ अ० २७२/४
करि मज्जनु मागहिं कर जोरी । रामचंद पद प्रीति न थोरी ॥ अ० १९६/६
करि मुनि चरन सरोज प्रनामा । आयसु पाइ कीन्ह बिश्रामा ॥ बा० २३७/५
करि सबु जतनु राखि रखवारे । राम मातु पहिं भरतु सिधारे ॥ अ० १८५/८
करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ । बन असोक सीता रह जहवाँ ॥ सुं० ७/६
करिहउँ इहाँ संभु थापना । मोरे हृदयँ परम कलपना ॥ लं० १/४
करिहहिं बिप्र होम मख सेवा । तेहिं प्रसंग सहजेहिं बस देवा ॥ बा० १६८/२
करिहहिं भाइ सकल सेवकाई । होइहि तिहुँ पुर राम बड़ाई ॥ अ० ३५/४
करुनानिधि मन दीख बिचारी । उर अंकुरेउ गरब तरु भारी ॥ बा० १२८/४
करुनामय मृदु राम सुभाऊ । प्रथम दीख दुखु सुना न काऊ ॥ अ० ३९/३
करुनामय रघुनाथ गोसाँई । बेगि पाइअहिं पीर पराई ॥ अ० ८४/२
करुनासिंधु सुबंधु के सुनि मृदु बचन बिनीत ।
समुझाए उर लाइ प्रभु जानि सनेहँ सभीत ॥ अ० ७२/०
करु परितोषु मोर संग्रामा । नाहिं त छाड़ कहाउब रामा ॥ बा० २८०/२
करेहु कल्प भरि राजु तुम्ह मोहि सुमिरेहु मन माहिं ।
पुनि मम धाम पाइहहु जहाँ संत सब जाहिं ॥ लं० ११६/० (घ)
करेहु सदा संकर पद पूजा । नारिधरमु पति देउ न दूजा ॥ बा० १०१/३
करै सो तपु जेहिं मिलहिं महेसू । आन उपायँ न मिटिहि कलेसू ॥ बा० ७१/२
करौं कवन बिधि बिनय बनाई । महाराज मोहि दीन्ह बड़ाई ॥ बा० ३३९/८
करौं काह मुख एक प्रसंसा । जय महेस मन मानस हंसा ॥ बा० २८४/५
करौं जाइ सोइ जतन बिचारी । जेहि प्रकार मोहि बरै कुमारी ॥ बा० १३०/७
कल कपोल श्रुति कुंडल लोला । चिबुक अधर सुंदर मृदु बोला ॥ बा० २४२/४
कल किंकिनि कटि सूत्र मनोहर । बाहु बिसाल बिभूषन सुंदर ॥ बा० ३२६/४
कलिजुग केवल हरि गुन गाहा । गावत नर पावहिं भव थाहा ॥ उ० १०२/४
कलिजुग जोग न जग्य न ग्याना । एक अधार राम गुन गाना ॥ उ० १०२/५
कलप कलप प्रति प्रभु अवतरहीं । चारु चरित नानाबिधि करहीं ॥ बा० १३९/२
कलपबेलि जिमि बहुबिधि लाली । सींचि सनेह सलिल प्रतिपाली ॥ अ० ५८/३
कलपभेद हरिचरित सुहाए । भाँति अनेक मुनीसन्ह गाए ॥ बा० ३२/७

कल्प कल्प भरि एक एक नरका । परहिं जे दूषहिं श्रुति करि तरका ॥ उ० ९९/४
कल बल छल करि जाहिं समीपा । अंचल बात बुझावहिं दीपा ॥ उ० ११७/८
कलबल बचन अधर अरुनारे । दुइ दुइ दसन बिसद बर बारे ॥ उ० ७६/३
कलस सहित गहि भवनु ढहावा । देखि निसाचरपति भय पावा ॥ लं० ४३/३
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी । सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ॥ उ० १०७/११
कलि कर एक पुनीत प्रतापा । मानस पुन्य होहिं नहिं पापा ॥ उ० १०२/८
कलिकाल बिहाल किए मनुजा । नहिं मानत क्वौ अनुजा तनुजा ॥ उ० १०१/५ छं०
कलि कुकाठ कर कीन्ह कुजंत्रू । गाड़ि अवधि पढ़ि कठिन कुमंत्रू ॥ अ० २११/४
कलि के कबिन्ह करउँ परनामा । जिन्ह बरने रघुपति गुन ग्रामा ॥ बा० १३/४
कलि केवल मल मूल मलीना । पाप पयोनिधि जन मन मीना ॥ बा० २६/४
कलिजुग सम जुग आन नहिं जौं नर कर बिस्वास ।
गाइ राम गुन गन बिमल भव तर बिनहिं प्रयास ॥ उ० १०३/० (क)
कलित करिबरन्हि परी अँबारीं । कहि न जाहिं जेहि भाँति सँवारीं ॥ बा० २९९/१
कलि बारहिं बार दुकाल परै । बिनु अन्न दुखी सब लोग मरै ॥ उ० १००/१० छं०
कलि बिलोकि जग हित हर गिरिजा । साबर मंत्र जाल जिन्ह सिरिजा ॥ बा० १४/५
कलिमल ग्रसे धर्म सब लुप्त भए सदग्रंथ ।
दंभिन्ह निज मति कल्पि करि प्रगट किए बहु पंथ ॥ उ० ९७/० (क)
कलि मल मथन नाम ममताहन । तुलसिदास प्रभु पाहि प्रनत जन ॥ उ० ५०/९
कलिमल समन दमन मन राम सुजस सुखमूल ।
सादर सुनहिं जे तिन्ह पर राम रहहिं अनुकूल ॥ अर० ६/० (क)
कवच अभेद बिप्र गुर पूजा । एहि सम बिजय उपाय न दूजा ॥ लं० ७९/१०
कवन जोनि जनमेउँ जहँ नाहीं । मैं खगेस भ्रमि भ्रमि जग माहीं ॥ उ० ९५/८
कवन पुन्य श्रुति बिदित बिसाला । कहहु कवन अघ परम कराला ॥ उ० १२०/६
कवन बस्तु असि प्रिय मोहि लागी । जो मुनिबर न सकहु तुम्ह मागी ॥ अर० ४१/४
कवन सो काज कठिन जग माहीं । जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं ॥ कि० २९/५
कवनिउ सिद्धि कि बिनु बिस्वासा । बिनु हरि भजन न भव भय नासा ॥ उ० ८९/८
कवनें अवसर का भयउ गयउँ नारि बिस्वास ।
जोग सिद्धि फल समय जिमि जतिहि अबिद्या नास ॥ अ० २९/०
कवनेउँ जन्म मिटिहि नहिं ग्याना । सुनहि सूद्र मम बचन प्रवाना ॥ उ० १०८/८
कवनेहुँ जतन देइ नहिं जाना । ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना ॥ सुं० १/६
कवनेहुँ जन्म अवध बस जोई । राम परायन सो परि होई ॥ उ० ९६/६
कस कीन्ह बरु बौराह बिधि जेहिं तुम्हहि सुंदरता दई ।
जो फलु चहिअ सुरतरुहिं सो बरबस बबूरहिं लागई ॥
तुम्ह सहित गिरि तें गिरौं पावक जरौं जलनिधि महुँ परौं ।

घरु जाउ अपजसु होउ जग जीवत बिबाहु न हौं करौं ॥ बा० ९५/१ छं०
कस न कहहु अस रघुकुलकेतू । तुम्ह पालक संतत श्रुति सेतू ॥ अ० १२५/८
कसें कनकु मनि पारिखि पाएँ । पुरुष परिखिअहिं समयँ सुभाएँ ॥ अ० २८२/६
कस्यप अदिति तहाँ पितु माता । दसरथ कौसल्या बिख्याता ॥ बा० १२२/३
कस्यप अदिति महातप कीन्हा । तिन्ह कहुँ मैं पूरब बर दीन्हा ॥ बा० १८६/३
कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा । सोषेउ सुजसु सकल संसारा ॥ बा० २५५/७
कहँ कोसलाधीस द्वौ भ्राता । धन्वी सकल लोक बिख्याता ॥ लं० ४९/१
कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा । कहँ स्यामल मृदुगात किसोरा ॥ बा० २५७/४
कहँ नल नील दुबिद सुग्रीवा । अंगद हनूमंत बल सींवा ॥ लं० ४९/२
कहँ निसिचर अति घोर कठोरा । कहँ सुंदर सुत परम किसोरा ॥ बा० २०७/६
कहँ रघुपति के चरित अपारा । कहँ मति मोरि निरत संसारा ॥ बा० ११/१०
कहँरत भट घायल तट गिरे । जहँ तहँ मनहुँ अर्धजल परे ॥ लं० ८७/४
कहँ रामु कहि सिर निकर धाए देखि मर्कट भजि चले ।
संधानि धनु रघुबंसमनि हँसि सरन्हि सिर बेधे भले ॥
सिर मालिका कर कालिका गहि बृंद बृंदन्हि बहु मिलीं ।
करि रुधिर सरि मज्जनु मनहुँ संग्राम बट पूजन चलीं ॥ लं० ९२/१ छं०
कहँ लगि कहौं हृदय कठिनाई । निदरि कुलिस जेहिं लही बड़ाई ॥ अ० १७८/८
कहँ लगि सहिअ रहिअ मनु मारें । नाथ साथ धनु हाथ हमारें ॥ अ० २२८/८
कहँ लछिमन सुग्रीव कपीसा । कहँ रघुबीर कोसलाधीसा ॥ लं० ९२/८
कहँ हम लोक बेद बिधि हीनी । लघु तिय कुल करतूति मलीनी ॥ अ० २२२/६
कह अंगद बिचारि मन माहीं । धन्य जटायू सम कोउ नाहीं ॥ कि० २६/७
कह अंगद लोचन भरि बारी । दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी ॥ कि० २५/३
कह अंगद सलज्ज जग माहीं । रावन तोहि समान कोउ नाहीं ॥ लं० २८/५
कहइ करहु किन कोटि उपाया । इहाँ न लागिहि राउरि माया ॥ अ० ३२/५
कहइ चेरि सुधि अहइ कि नाहीं । स्वामिनि कहिहु कथा मोहि पाहीं ॥ अ० २१/४
कहइ दसानन सुनहु सुभट्टा । मर्दहु भालु कपिन्ह के ठट्टा ॥ लं० ७८/११
कहइ बिभीषन तिन्ह के नामा । देहिं राम तिन्हहू निज धामा ॥ लं० ४४/२
कहइ भुआलु सुनिअ मुनिनायक । भए राम सब बिधि सब लायक ॥ अ० २/१
कहइ भसुंड सुनहु खगनायक । रामचरित सेवक सुखदायक ॥ उ० ७५/१
कहइ रीछपति सुनु हनुमाना । का चुप साधि रहेउ बलवाना ॥ कि० २९/३
कहउँ कथा सोइ सुखद सुहाई । सादर सुनहु सुजन मन लाई ॥ बा० ३४/१३
कहउँ जान बन तौ बड़ि हानी । संकट सोच बिबस भइ रानी ॥ अ० ५४/५
कहउँ बचन सब स्वारथ हेतु । रहत न आरत कें चित चेतु ॥ अ० २६८/४
कहउँ राम गुन गाथ भरद्वाज सादर सुनहु ।

भव भंजन रघुनाथ भजु तुलसी तजि मान मद ॥ बा० १२४/० (ख) सो०
कहउँ साँचु सब सुनि पतिआहु । चाहिअ धरमसील नरनाहू ॥ अ० १७८/१
कहउँ सुभाउ न कुलहि प्रसंसी । कालहु डरहिं न रन रघुबंसी ॥ बा० २८३/४
कहउँ सुभाउ न छलु मन माहीं । जीवनु मोर राम बिनु नाहीं ॥ अ० ३२/२
कहउँ सुभाउ सत्य सिव साखी । भरत भूमि रह राउरि राखी ॥ अ० २६३/१
कहउँ सुभायँ सपथ सत मोही । सुमुखि मातु हित राखउँ तोही ॥ अ० ६०/८
कहउँ सो मति अनुहारि अब उमा संभु संबाद ।
भयउ समय जेहि हेतु जेहि सुनु मुनि मिटिहि बिषाद ॥ बा० ४७/०
कह कपि तव गुन गाहकताई । सत्य पवनसुत मोहि सुनाई ॥ लं० २३/५
कह कपि धर्मसीलता तोरी । हमहुँ सुनी कृत पर त्रिय चोरी ॥ लं० २१/५
कह कपि मुनि गुरदछिना लेहु । पाछें हमहि मंत्र तुम्ह देहु ॥ लं० ५७/४
कह कपि हृदयँ धीर धरु माता । सुमिरु राम सेवक सुखदाता ॥ सुं० १४/९
कहत अनुज सन कथा अनेका । भगति बिरति नृपनीति बिबेका ॥ कि० १२/७
कहत कठिन समुझत कठिन साधत कठिन बिबेक ।
होइ घुनाच्छर न्याय जौं पुनि प्रत्यूह अनेक ॥ उ० ११८/० (ख)
कहत कथा इतिहास पुरानी । रुचिर रजनि जुग जाम सिरानी ॥ बा० २२५/२
कहत कूप महिमा सकल गए जहाँ रघुराउ ।
अत्रि सुनायउ रघुबरहि तीरथ पुन्य प्रभाउ ॥ अ० ३१०/०
कहत चले पहिरें पट नाना । हरषि हने गहगहे निसाना ॥ बा० २९५/१
कहत धरम इतिहास सप्रीती । भयउ भोरु निसि सो सुख बीती ॥ अ० ३१०/१
कहत नसाइ होइ हियँ नीकी । रीझत राम जानि जन जी की ॥ बा० २८/४
कहत बचन मनु अति सकुचाई । हँसिहहु सुनि हमारि जड़ताई ॥ बा० ७७/४
कहत बिभीषन सुनहु कृपाला । होइ न तड़ित न बारिद माला ॥ लं० १२/३
कहत भरत गुन सीलु सुभाऊ । पेम पयोधि मगन रघुराऊ ॥ अ० २३१/८
कहत राम गुन गन अनुरागे । सब निज भाग सराहन लागे ॥ अ० २७३/७
कहत राम गुन भा भिनुसारा । जागे जग मंगल सुखदारा ॥ अ० ९३/२
कहत राम गुन सील सुभाऊ । सजल नयन पुलकेउ मुनिराऊ ॥ अ० १७०/७
कहत राम जसु बिसद बिसाला । निज निज भवन गए महिपाला ॥ बा० ३११/३
कहत राम जसु लंकाँ आए । रावन चरन सीस तिन्ह नाए ॥ सुं० ५२/२
कहत सप्रेम नाइ महि माथा । भरत प्रनाम करत रघुनाथा ॥ अ० २३९/७
कहत सारदहु कर मति हीचे । सागर सीप कि जाहिं उलीचे ॥ अ० २८२/४
कहत सुनत रघुपति गुन गाथा । कछु दिन तहाँ रहे गिरिनाथा ॥ बा० ४७/५
कहत सुनत रघुबीर निकाई । आइ सबन्हि देखे रघुराई ॥ अ० १३४/४
कहत सुनत सति भाउ भरत को । सीय राम पद होइ न रत को ॥ अ० ३०३/२

कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके । राम लखन सम प्रिय तुलसी के ।। बा० १९/३
कहत सुनत हरषहिं पुलकाहीं । ते सुकृती मन मुदित नहाहीं ।। बा० ४०/६
कहत सो मोहि लागत भय लाजा । जौं न कहउँ बड़ होइ अकाजा ।। बा० ४४/८
कह तापस नृप ऐसेइ होऊ । कारन एक कठिन सुनु सोऊ ।। बा० १६४/१
कह तापस नृप जानउँ तोही । कीन्हेहु कपट लाग भल मोही ।। बा० १६२/८
कहति न सीय सकुचि मन माहीं । इहाँ बसब रजनीं भल नाहीं ।। अ० २८६/७
कह दसकंठ कवन तैं बंदर । मैं रघुबीर दूत दसकंधर ।। लं० १९/१

कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता ।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता ।।
करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता ।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता ।। बा० १९१/२ छं०

कह नृपु जाइ कहहु पन मोरा । चले भाट हियँ हरष न थोरा ।। बा० २४८/८
कह नृप जे बिग्यान निधाना । तुम सारिखे गलित अभिमाना ।। बा० १६०/१
कह प्रभु जाहु जो बिनहिं बोलाएँ । नहिं भलि बात हमारे भाएँ ।। बा० ६१/८
कह प्रभु सखा बूझिऐ काहा । कहइ कपीस सुनहु नरनाहा ।। सुं० ४२/५
कह प्रभु ससि महुँ मेचकताई । कहहु काह निज निज मति भाई ।। लं० ११/४
कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरीसा । पुर न जाउँ दस चारि बरीसा ।। कि० ११/७
कह प्रभु हर तुम्हार पन रहेऊ । अब उर राखेहु जो हम कहेऊ ।। बा० ७६/६
कह प्रभु हँसि जनि हृदयँ डेराहू । लूक न असनि केतु नहिं राहू ।। लं० ३१/९
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा । एहि तें अधिक कहौं मैं काहा ।। अ० २५९/४
कहब सँदेसु भरत के आएँ । नीति न तजिअ राजपदु पाएँ ।। अ० १५१/३

कह बाली सुनु भीरु प्रिय समदरसी रघुनाथ ।
जौं कदाचि मोहि मारहिं तौ पुनि होउँ सनाथ ।। कि० ७/०

कह बिधि तुम्ह प्रभु अंतरजामी । तदपि भगति बस बिनवउँ स्वामी ।। बा० ८७/८
कह मुनि तात भयउ अँधियारा । जोजन सत्तरि नगरु तुम्हारा ।। बा० १५८/८
कह मुनि प्रभु सुनु बिनती मोरी । अस्तुति करौं कवन बिधि तोरी ।। अर० १०/१
कह मुनि बिहसि कहेहु नृप नीका । बचन तुम्हार न होइ अलीका ।। बा० २१५/६
कह मुनि बिहसि गूढ़ मृदु बानी । सुता तुम्हारि सकल गुन खानी ।। बा० ६६/१
कह मुनि राम जाइ रिस कैसें । अजहुँ अनुज तव चितव अनैसें ।। बा० २७८/७
कह मुनि राम सत्य तुम्ह भाषा । भरत सनेहँ बिचारु न राखा ।। अ० २५७/६
कह मुनि सुनहु भानुकुलनायक । आश्रम कहउँ समय सुखदायक ।। अ० १३१/२
कह मुनि सुनु नरनाथ प्रबीना । रहा बिबाहु चाप आधीना ।। बा० २८५/७
कह मुनि सुनु रघुबीर कृपाला । संकर मानस राजमराला ।। अर० ७/१

कह मुनीस हिमवंत सुनु जो बिधि लिखा लिलार ।

देव दनुज नर नाग मुनि कोउ न मेटनिहार ॥ बा० ६८/०
कह रघुपति सुनु भामिनि बाता । मानउँ एक भगति कर नाता ॥ अर० ३४/४
कह रघुबीर कहा मम मानहु । सीतहि सखा पयादें आनहु ॥ लं० १०७/११
कह रघुबीर देखु रन सीता । लछिमन इहाँ हत्यो इँद्रजीता ॥ लं० ११८/९
कह रघुबीर समुझु जियँ भ्राता । तुम्ह कृतांत भच्छक सुर त्राता ॥ लं० ८३/६
कह रावनु सुनु सुमुखि सयानी । मंदोदरी आदि सब रानी ॥ सुं० ८/४
कह रिषिबधू सरस मृदु बानी । नारिधर्म कछु ब्याज बखानी ॥ अर० ४/४
कह लंकेस कवन तैं कीसा । केहि कें बल घालेसि बन खीसा ॥ सुं० २०/१
कह लंकेस कहसि निज बाता । केइँ तव नासा कान निपाता ॥ अर० २१/२
कह लंकेस सुनहु रघुनायक । कोटि सिंधु सोषक तव सायक ॥ सुं० ४९/७
कहसि न खल अस को जग माहीं । भुज बल जाहि जिता मैं नाहीं ॥ सुं० ४०/४
कह सिव जदपि उचित अस नाहीं । नाथ बचन पुनि मेटि न जाहीं ॥ बा० ७६/१
कह सीता धरि धीरजु गाढ़ा । आइ गयउ प्रभु रहु खल ठाढ़ा ॥ अर० २७/१४
कह सीता बिधि भा प्रतिकूला । मिलहि न पावक मिटिहि न सूला ॥ सुं० ११/७
कह सीता सुनु जती गोसाईं । बोलेहु बचन दुष्ट की नाईं ॥ अर० २७/१२
कह सुक नाथ सत्य सब बानी । समुझहु छाड़ि प्रकृति अभिमानी ॥ सुं० ५६/३
कह सुग्रीव नयन भरि बारी । मिलिहि नाथ मिथिलेसकुमारी ॥ कि० ४/२
कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा । तजहु सोच मन आनहु धीरा ॥ कि० ४/७
कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा । बालि महाबल अति रनधीरा ॥ कि० ६/११
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई । आवा मिलन दसानन भाई ॥ सुं० ४२/४
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई । ससि महुँ प्रगट भूमि कै झाँई ॥ लं० ११/५
कह सुग्रीव सुनहु सब बानर । अंग भंग करि पठवहु निसिचर ॥ सुं० ५१/३
कह सुमंत्रु पुनि भूप सँदेसू । सहि न सकिहि सिय बिपिन कलेसू ॥ अ० ९५/६
कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई । जब तव सुमिरन भजन न होई ॥ सुं० ३१/३
कह हनुमंत सुनहु प्रभु ससि तुम्हार प्रिय दास ।
तव मूरति बिधु उर बसति सोइ स्यामता अभास ॥ लं० १२/० (क)
कहहिं एक अति भल नरनाहू । दीन्ह हमहि जोइ लोचन लाहू ॥ अ० १२१/३
कहहिं झूठि फुरि बात बनाई । ते प्रिय तुम्हहि करुइ मैं माई ॥ अ० १५/३
कहहिं ते बेद असंमत बानी । जिन्ह कें सूझ लाभु नहिं हानी ॥ बा० ११४/३
कहहिं परसपर कोकिलबयनीं । एहि बिआहँ बड़ लाभु सुनयनीं ॥ बा० ३०९/७
कहहिं परस्पर नारि बारि बिलोचन पुलक तन ।
सखि सबु करब पुरारि पुन्य पयोनिधि भूप दोउ ॥ बा० ३११/० (सो०)
कहहिं परसपर पुर नर नारी । भलि बनाइ बिधि बात बिगारी ॥ अ० ७५/३
कहहिं परसपर बचन सप्रीती । सखि इन्ह कोटि काम छबि जीती ॥ बा० २१९/५

कहहिं परसपर भा बड़ काजू। सकल चलै कर साजहिं साजू ॥ अ० १८४/५
कहहिं परसपर मिलि दस पाँचा। भरत सनेहु सीलु सुचि साँचा ॥ अ० २०५/२
कहहिं परसपर लोग लोगाई। बातें सरल सनेह सुहाई ॥ अ० १२१/४
कहहिं परसपर सिधि समुदाई। अतुलित अतिथि राम लघु भाई ॥ अ० २१३/२
कहहिं पुरातन कथा कहानी। सुनहिं लखनु सिय अति सुखु मानी ॥ अ०१४०/२
कहहिं बचन मृदु बिप्र अनेका। जग अभिराम राम अभिषेका ॥ उ० ९/७
कहहिं बसिष्टु धरम इतिहासा। सुनहिं महीसु सहित रनिवासा ॥ बा० ३५८/५
कहहिं बेद इतिहास पुराना। बिधि प्रपंचु गुन अवगुन साना ॥ बा० ५/४
कहहिं भरतु मुनि कहा सो कीन्हे। फलु जन जीवन्ह अभिमत दीन्हे ॥ अ० २५५/७
कहहिं लहेउ एहिं जीवन लाहू। भेंटेउ रामभद्र भरि बाहू ॥ अ० १९५/७
कहहिं सचिव सठ ठकुरसोहाती। नाथ न पूर आव एहि भाँती ॥ लं० ८/१
कहहिं सचिव सुनु निसिचर नाहा। बार बार प्रभु पूछहु काहा ॥ लं० ७/८
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी। जागत सोवत सरन तुम्हारी ॥ अ० १२९/४
कहहिं सनेह मगन मृदु बानी। मानत साधु पेम पहिचानी ॥ अ० २४९/५
कहहिं सपेम एक एक पाहीं। रामु लखनु सखि होहिं कि नाहीं ॥ अ० २२१/१
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं। ते गोपद इव भवनिधि तरहीं ॥ उ० १२८/६
कहहिं सुनहिं अस अधम नर ग्रसे जे मोह पिसाच।
पाषंडी हरि पद बिमुख जानहिं झूठ न साच ॥ बा० ११४/०
कहहिं सुसेवक बारहिं बारा। होइअ नाथ अस्व असवारा ॥ अ० २०२/५
कहहिं संत मुनि बेद पुराना। नहिं कछु दुर्लभ ग्यान समाना ॥ उ० ११४/९
कहहु कवन प्रभु कै असि रीती। सेवक पर ममता अरु प्रीती ॥ अर० ४४/२
कहहु कवन बिधि भा संबादा। दोउ हरिभगत काग उरगादा ॥ उ० ५४/५
कहहु कवन भय करिअ बिचारा। नर कपि भालु अहार हमारा ॥ लं० ७/९
कहहु कवन मैं परम कुलीना। कपि चंचल सबही बिधि हीना ॥ सुं० ६/७
कहहु कवन सुखु अस बरु पाएँ। भल भूलिहु ठग के बौराएँ ॥ बा० ७८/७
कहहु काहि यहु लाभु न भावा। काहुँ न संकर चाप चढ़ावा ॥ बा० २५१/१
कहहु ग्यान बिराग अरु माया। कहहु सो भगति करहु जेहिं दाया ॥ अर० १३/८
कहहु जथा जानकी बिबाहीं। राज तजा सो दूषन काहीं ॥ बा० १०९/६
कहहु तात केहि भाँति कोउ करिहि बड़ाई तासु।
राम लखन तुम्ह सत्रुहन सरिस सुअन सुचि जासु ॥ अ० १७३/०
कहहु तात केहि भाँति जानकी। रहति करति रच्छा स्वप्रान की ॥ सुं० २९/८
कहहु तात जननी बलिहारी। कबहिं लगन मुद मंगलकारी ॥ अ० ५१/७
कहहु तात प्रभु आयसु पाई। बोले बानि सनेह सुहाई ॥ अ० ३०७/२
कहहु तात प्रभु कृपानिकेता। कुसल अनुज कपि सेन समेता ॥ लं० १०६/६

कहहु नाथ सुंदर दोउ बालक । मुनिकुल तिलक कि नृप कुल पालक ॥ बा० २१५/१
कहहु नाम कर अरथ बखानी । मोहि सेवक अति आपन जानी ॥ बा० १६१/८
कहहु पाख महुँ आव न जोई । मोरें कर ता कर बध होई ॥ कि० १८/५
कहहु बिदेह कवन बिधि जाने । सुनि प्रिय बचन दूत मुसुकाने ॥ बा० २९०/८
कहहु बेगि का करिअ उपाई । जामवंत कह पद सिरु नाई ॥ लं० १६/२
कहहु भगति पथ कवन प्रयासा । जोग न मख जप तप उपवासा ॥ उ० ४५/१
कहहु पुनीत राम गुन गाथा । भुजगराज भूषन सुरनाथा ॥ बा० १०८/८
कहहु सखी अस को तनुधारी । जो न मोह यह रूप निहारी ॥ बा० २२०/१
कहहु सुपेम प्रगट को करई । केहि छाया कबि मति अनुसरई ॥ अ० २४०/३
कह त्रिजटा सुनु राजकुमारी । उर सर लागत मरइ सुरारी ॥ लं० ९८/१२
कहा एक मैं आजु निहारे । जनु बिरंचि निज हाथ सँवारे ॥ बा० ३१०/५
कहा भूप भल सबहि सोहाना । पाइ रजायसु चले नहाना ॥ अ० २७७/८

कहा हमार न सुनेहु तब नारद कें उपदेस ।
अब भा झूठ तुम्हार पन जारेउ कामु महेस ॥ बा० ८९/०

कहाँ बिभीषनु भ्राताद्रोही । आजु सबहि हठि मारउँ ओही ॥ लं० ४९/३
कहाँ लखनु कहँ रामु सनेही । कहँ प्रिय पुत्रबधू बैदेही ॥ अ० १५४/२
कहिअ काह कहि जाइ न बाता । जम कर धार किधौं बरिआता ॥ बा० ९४/७
कहिअ तात सो परम बिरागी । तृन सम सिद्धि तीनि गुन त्यागी ॥ अर० १४/८
कहिअ न लोभिहि क्रोधहि कामिहि । जो न भजइ सचराचर स्वामिहि ॥ उ० १२७/४
कहि अनीति ते मूदहिं काना । धरमु बिचारि सबहिं सुखु माना ॥ बा० २९२/८
कहि अनेक बिधि कथा पुरानी । भरत प्रबोधु कीन्ह मुनि ग्यानी ॥ अ० २६२/३
कहिअ बेगि जेहि बिधि रिस जाई । मुनिनायक सोइ करौं उपाई ॥ बा० २७८/६
कहि अस ब्रह्मभवन मुनि गयऊ । आगिल चरित सुनहु जस भयऊ ॥ बा० ७०/१
कहिउँ तात सब प्रस्न तुम्हारी । राम भगति महिमा अति भारी ॥ उ० ११३/१६

कहि कथा सकल बिलोकि हरि मुख हृदयँ पद पंकज धरे ।
तजि जोग पावक देह हरि पद लीन भइ जहँ नहिं फिरे ॥
नर बिबिध कर्म अधर्म बहु मत सोकप्रद सब त्यागहू ।
बिस्वास करि कह दास तुलसी राम पद अनुरागहू ॥ अर० ३५/१ छं०

कहि कहि कोटिक कथा प्रसंगा । रामु बिलोकहिं गंग तरंगा ॥ अ० ८६/५
कहि कहि कोटिक कपट कहानी । धीरजु धरहु प्रबोधिसि रानी ॥ अ० १९/३
कहि जग गति मायिक मुनिनाथा । कहे कछुक परमारथ गाथा ॥ अ० २४६/२
कहि जय जय जय रघुकुलकेतू । भृगुपति गए बनहि तप हेतू ॥ बा० २८४/७
कहि जयजीव बैठ सिरु नाई । देखि भूप गति गयउ सुखाई ॥ अ० ३७/६
कहि जयजीव सीस तिन्ह नाए । भूप सुमंगल बचन सुनाए ॥ अ० ४/२

कहि दुर्बचन क्रुद्ध दसकंधर । कुलिस समान लाग छाँड़ै सर ॥ लं० ९०/१

कहि देखा हर जतन बहु रहइ न दच्छकुमारि ।
दिए मुख्य गन संग तब बिदा कीन्ह त्रिपुरारि ॥ बा० ६२/०

कहि दंडक बन पावनताई । गीध मइत्री पुनि तेहिं गाई ॥ उ० ६५/१

कहि न जाइ कछु दाइज भूरी । रहा कनक मनि मंडपु पूरी ॥ बा० ३२५/२

कहि न जाइ कछु नगर बिभूती । जनु एतनिअ बिरंचि करतूती ॥ अ० ०/५

कहि न जाइ कछु हृदय गलानी । मन महुँ रामहि सुमिर सयानी ॥ बा० ५८/५

कहि न जाइ कछु हृदय बिषादू । मनहुँ मृगी सुनि केहरि नादू ॥ अ० ५३/३

कहि न जाइ सब भाँति सुहावा । बाजि बेषु जनु काम बनावा ॥ बा० ३१५/८

कहि न सकत कछु अति गंभीरा । प्रभु प्रभाउ जानत मतिधीरा ॥ बा० ५२/२

कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े । मीनु दीन जनु जल तें काढ़े ॥ अ० ६९/३

कहि न सकत रघुबीर डर लगे बचन जनु बान ।
नाइ राम पद कमल सिरु बोले गिरा प्रमान ॥ बा० २५२/०

कहि न सकति गुन रुचि अधिकाई । मति गति बाल बचन की नाई ॥ अ० ३०२/८

कहि न सकहिं कछु प्रेम बस भरि भरि लोचन बारि ।
सन्मुख चितवहिं राम तन नयन निमेष निवारि ॥ लं० ११८/० (ग)

कहि न सकहिं सत सारद सेसू । बेद बिरंचि महेस गनेसू ॥ बा० ३५४/५

कहि न सकहिं सुषमा जसि कानन । जौं सत सहस होहिं सहसानन ॥ अ० १३८/६

कहि निज धर्म ताहि समुझावा । निज पद प्रीति देखि मन भावा ॥ अर० ३३/३

कहि निषाद निज नाम सुबानीं । सादर सकल जोहारीं रानीं ॥ अ० १९५/४

कहि प्रनामु कछु कहन लिय सिय भइ सिथिल सनेह ।
थकित बचन लोचन सजल पुलक पल्लवित देह ॥ अ० १५२/०

कहि प्रिय बचन प्रिया समुझाई । लगे मातु पद आसिष पाई ॥ अ० ६७/५

कहि प्रिय बचन बिबेकमय कीन्हि मातु परितोष ।
लगे प्रबोधन जानकिहि प्रगटि बिपिन गुन दोष ॥ अ० ६०/०

कहि प्रिय बचन सकल समुझाए । बिप्र बृंद रघुबीर बोलाए ॥ अ० ७९/२

कहि बन के दुख दुसह सुनाए । सासु ससुर पितु सुख समुझाए ॥ अ० ७७/४

कहि बातें मृदु मधुर सुहाईं । किए बिदा बालक बरिआईं ॥ बा० २२४/८

कहि बिराध बध जेहि बिधि देह तजी सरभंग ।
बरनि सुतीछन प्रीति पुनि प्रभु अगस्ति सतसंग ॥ उ० ६५/०

कहि मृदु बचन बिनीत तिन्ह बैठारे नर नारि ।
उत्तम मध्यम नीच लघु निज निज थल अनुहारि ॥ बा० २४०/०

कहि सक न सारद सेष नारद सुनत पद पंकज गहे ।
अस दीनबंधु कृपाल अपने भगत गुन निज मुख कहे ॥

सिर नाइ बारहिं बार चरनन्हि ब्रह्मपुर नारद गए ।
ते धन्य तुलसीदास आस बिहाइ जे हरि रँग रँए ॥ अर० ४५/१ छं०
कहि सपेम सब कथाप्रसंगू । जेहि बिधि राम राज रस भंगू ॥ अ० २२१/७
कहि सप्रेम मृदु बचन सुहाए । बहुबिधि राम लोग समुझाए ॥ अ० ८४/३
कहि सबु मरमु धरमु भल भाषा । जो जेहि लायक सो तेहिं राखा ॥ अ० १८५/७
कहि सिय लखनहि सखहि सुनाई । श्रीमुख तीरथराज बड़ाई ॥ अ० १०५/३
कहिहउँ सोइ संबाद बखानी । सुनहुँ सकल सज्जन सुखु मानी ॥ बा० २९/२
कही जनक जसि अनुचित बानी । बिद्यमान रघुकुल मनि जानी ॥ बा० २५२/२
कही तात तुम्ह नीति सुहाई । सब तें कठिन राजमदु भाई ॥ अ० २३०/६
कहुँ कहुँ बृष्टि सारदी थोरी । कोउ एक पाव भगति जिमि मोरी ॥ कि० १५/१०
कहुँ कहुँ सरिता तीर उदासी । बसहिं ग्यान रत मुनि संन्यासी ॥ उ० २८/५
कहुँ कहुँ सुंदर बिटप सुहाए । जनु भट बिलग बिलग होइ छाए ॥ अर० ३७/४
कहु कपि कबहुँ कृपालु गोसाईं । सुमिरहिं मोहि दास की नाईं ॥ उ० १/१६
कहु कपि केहि बिधि राखौं प्राना । तुम्हहू तात कहत अब जाना ॥ सुं० २६/७
कहु कपि रावन पालित लंका । केहि बिधि दहेउ दुर्ग अति बंका ॥ सुं० ३२/५
कहु कहँ तात कहाँ सब माता । कहँ सिय राम लखन प्रिय भ्राता ॥ अ० १५८/८
कहु केहि रंकहि करौं नरेसू । कहु केहि नृपहि निकासौं देसू ॥ अ० २५/२
कहु खगेस अस कवन अभागी । खरी सेव सुरधेनुहि त्यागी ॥ उ० १०९/७
कहु तजि रोषु राम अपराधू । सबु कोउ कहइ रामु सुठि साधू ॥ अ० ३१/६
कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी । जिन्ह के हृदयँ त्रास अति मोरी ॥ सुं० ५२/८
कहु निज नाम जनक कर भाई । केहि नातें मानिऐ मिताई ॥ लं० २०/२
कहु रावन रावन जग केते । मैं निज श्रवन सुने सुनु जेते ॥ लं० २३/१२
कहु लंकेस सहित परिवारा । कुसल कुठाहर बास तुम्हारा ॥ सुं० ४५/४
कहेउ कृपाल भानुकुलनाथा । परिहरि सोचु चलहु बन साथा ॥ अ० ६७/३
कहेउ कृपाल लेहि उतराई । केवट चरन गहे अकुलाई ॥ अ० १०१/४
कहेउँ ग्यान सिद्धांत बुझाई । सुनहु भगति मनि कै प्रभुताई ॥ उ० ११९/१
कहेउँ न कछु करि जुगुति बिसेषी । यह सब मैं निज नयनन्हि देखी ॥ उ० ९०/२
कहेउँ नाथ हरि चरित अनूपा । ब्यास समास स्वमति अनुरूपा ॥ उ० १२२/१
कहेउँ परम पुनीत इतिहासा । सुनत श्रवन छूटहिं भव पासा ॥ उ० १२५/१
कहेउँ राम बन गवनु सुहावा । सुनहु सुमंत्र अवध जिमि आवा ॥ अ० १४१/४
कहेउ बहोरि कहाँ बृषकेतू । बिपिन अकेलि फिरहु केहि हेतू ॥ बा० ५२/८
कहेउ भूप जिमि भयउ बिबाहू । सुनि सुनि हरषु होत सब काहू ॥ बा० ३५३/६
कहेउ भूप मुनिराज कर जोइ जोइ आयसु होइ ।
राम राज अभिषेक हित बेगि करहु सोइ सोइ ॥ अ० ५/०

कहेउ राम बियोग तव सीता। मो कहुँ सकल भए बिपरीता॥ सुं० १४/१
कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा। को नहिं जान बिदित संसारा॥ बा० २७५/१
कहेउ लेहु सबु तिलक समाजू। बनहिं देब मुनि रामहि राजू॥ अ० १८६/३
कहेसि बहोरि राम अभिषेका। पुर बरनत नृपनीति अनेका॥ उ० ६७/३
कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई। सीतहि बहु बिधि त्रासहु जाई॥ सुं० ९/८
कहेहु तात अस मोर प्रनामा। सब प्रकार प्रभु पूरनकामा॥ सुं० २६/३
कहेहु दंडवत प्रभु सैं तुम्हहि कहउँ कर जोरि।
बार बार रघुनायकहि सुरति कराएहु मोरि॥ उ० १९/० (क)
कहेहु नीक मोरेहुँ मन भावा। यह अनुचित नहिं नेवत पठावा॥ बा० ६१/१
कहेहु मुखागर मूढ़ सन मम संदेसु उदार।
सीता देइ मिलहु न त आवा कालु तुम्हार॥ सुं० ५२/०
कहेहु सत्य सबु सखा सुजाना। मोहि दीन्ह पितु आयसु आना॥ अ० ८७/८
कहेहु तें कछु दुख घटि होई। काहि कहौं यह जान न कोई॥ सुं० १४/५
कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई। रामु न सकहिं नाम गुन गाई॥ बा० २५/८
कहौं कहावौं का अब स्वामी। कृपा अंबुनिधि अंतरजामी॥ अ० २६६/१
का आचरजु भरतु अस करहीं। नहिं बिष बेलि अमिअ फल फरहीं॥ अ० १८८/८
काई कुमति कैकई केरी। परी जासु फल बिपति घनेरी॥ बा० ४०/८
काक कंक लै भुजा उड़ाहीं। एक ते छीनि एक लै खाहीं॥ लं० ८७/२
काकभसुंडि मागु बर अति प्रसन्न मोहि जानि।
अनिमादिक सिधि अपर रिधि मोच्छ सकल सुख खानि॥ उ० ८३/० (ख)
काकभुसुंडि संग हम दोऊ। मनुजरूप जानइ नहिं कोऊ॥ बा० १९५/४
काक समान पाकरिपु रीती। छली मलीन कतहुँ न प्रतीती॥ अ० ३०१/२
काचे घट जिमि डारौं फोरी। सकउँ मेरु मूलक जिमि तोरी॥ बा० २५२/५
का छति लाभु जून धनु तोरें। देखा राम नयन के भोरें॥ बा० २७१/२
काजु हमार तासु हित होई। रिपु सन करेहु बतकही सोई॥ लं० १६/८
काटइ परसु मलय सुनु भाई। निज गुन देइ सुगंध बसाई॥ उ० ३६/८
काटत बढ़हिं सीस समुदाई। जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई॥ लं० १०१/१
काटत सिर होइहि बिकल छुटि जाइहि तव ध्यान।
तब रावनहि हृदय महुँ मरिहहिं रामु सुजान॥ लं० ९९/०
काटतहीं पुनि भए नबीने। राम बहोरि भुजा सिर छीने॥ लं० ९१/११
काटिअ तासु जीभ जो बसाई। श्रवन मूदि न त चलिअ पराई॥ बा० ६३/४
काटें भुजा सोह खल कैसा। पच्छहीन मंदर गिरि जैसा॥ लं० ६९/११
काटेसि दसन नासिका काना। गरजि अकास चलेउ तेहिं जाना॥ लं० ६५/६
काटेसि पंख परा खग धरनी। सुमिरि राम करि अदभुत करनी॥ अर० २८/२२

काटे सिर नभ मारग धावहिं। जय जय धुनि करि भय उपजावहिं॥ लं० ९२/७

काटे सिर भुज बार बहु मरत न भट लंकेस।
प्रभु क्रीड़त सुर सिद्ध मुनि ब्याकुल देखि कलेस॥ लं० १०१/० (ख)

काटेहिं पइ कदरी फरइ कोटि जतन कोउ सींच।
बिनय न मान खगेस सुनु डाटेहिं पइ नव नीच॥ सुं० ५८/०

कादर भयंकर रुधिर सरिता चली परम अपावनी।
दोउ कूल दल रथ रेत चक्र अबर्त बहति भयावनी॥
जलजंतु गज पदचर तुरग खर बिबिध बाहन को गने।
सर सक्ति तोमर सर्प चाप तरंग चर्म कमठ घने॥ लं० ८६/१ छं०

कादर मन कहुँ एक अधारा। दैव दैव आलसी पुकारा॥ सुं० ५०/४
काननु कठिन भयंकरु भारी। घोर घामु हिम बारि बयारी॥ अ० ६१/४
कानन करउँ जनम भरि बासू। एहिं तें अधिक न मोर सुपासू॥ अ० २५५/८
कानन गयउ बाजि चढ़ि तेहीं। पुर नर नारि न जानेउ केहीं॥ बा० १७१/४
कान नाक बिनु भगिनि निहारी। छमा कीन्हि तुम्ह धर्म बिचारी॥ लं० २१/७
कानन्हि कनक फूल छबि देहीं। चितवत चितहि चोरि जनु लेहीं॥ बा० २१८/७
कान मूदि कर रद गहि जीहा। एक कहहिं यह बात अलीहा॥ अ० ४७/७

काने खोरे कूबरे कुटिल कुचाली जानि।
तिय बिसेषि पुनि चेरि कहि भरतमातु मुसुकानि॥ अ० १४/०

का पूँछहु तुम्ह अबहुँ न जाना। निज हित अनहित पसु पहिचाना॥ अ० १८/२
का बरषा सब कृषी सुखानें। समय चुकें पुनि का पछितानें॥ बा० २६०/३
काम आदि मद दंभ न जाकें। तात निरंतर बस मैं ताकें॥ अर० १५/१२
काम कला कछु मुनिहि न ब्यापी। निज भयँ डरेउ मनोभव पापी॥ बा० १२५/७
काम कुसुम धनु सायक लीन्हे। सकल भुवन अपनें बस कीन्हे॥ बा० २५६/१
काम कोटि छबि स्याम सरीरा। नील कंज बारिद गंभीरा॥ बा० १९८/१
काम कोह कलिमल करिगन के। केहरि सावक जन मन बन के॥ बा० ३१/७
काम कोह मद मान न मोहा। लोभ न छोभ न राग न द्रोहा॥ अ० १२९/१
काम कोह मद मोह नसावन। बिमल बिबेक बिराग बढ़ावन॥ बा० ४२/५
काम क्रोध मद गज पंचानन। बसहु निरंतर जन मन कानन॥ लं० ११४/४ छं०
काम क्रोध मद मत्सर भेका। इन्हहि हरषप्रद बरषा एका॥ अर० ४३/३
काम क्रोध मद लोभ परायन। निर्दय कपटी कुटिल मलायन॥ उ० ३८/५

काम क्रोध मद लोभ रत गृहासक्त दुखरूप।
ते किमि जानहिं रघुपतिहि मूढ़ परे तम कूप॥ उ० ७३/० (क)

काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत॥ सुं० ३८/०

काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोह कै धारि।
तिन्ह महँ अति दारुन दुखद मायारूपी नारि॥ अर० ४३/०
काम चरित नारद सब भाषे। जद्यपि प्रथम बरजि सिवँ राखे॥ बा० १२७/७
कामद भे गिरि राम प्रसादा। अवलोकत अपहरत बिषादा॥ अ० २७८/१
कामधेनु सत कोटि समाना। सकल काम दायक भगवाना॥ उ० ९१/४
काम बात कफ लोभ अपारा। क्रोध पित्त नित छाती जारा॥ उ० १२०/३०
कामरूप खल जिनस अनेका। कुटिल भयंकर बिगत बिबेका॥ बा० १७५/७
कामरूप जानहिं सब माया। सपनेहुँ जिन्ह कें धरम न दाया॥ बा० १८०/१
कामरूप सुंदर तन धारी। सहित समाज सहित बर नारी॥ बा० ९३/५
कामिन्ह कै दीनता देखाई। धीरन्ह कें मन बिरति दृढ़ाई॥ अर० ३८/२
कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरन्तर प्रिय लागहु मोहि राम॥ उ० १३०/० (ख)
कामु जारि रति कहुँ बरु दीन्हा। कृपासिंधु यह अति भल कीन्हा॥ बा० ८८/२
कारन कवन देह यह पाई। तात सकल मोहि कहहु बुझाई॥ उ० ९३/३
कारन कवन नाथ नहिं आयउ। जानि कुटिल किधौं मोहि बिसरायउ॥ उ० ०/२
कारन कवन भरतु बन जाहीं। है कछु कपट भाउ मन माहीं॥ अ० १८८/३
कारन कवन श्राप मुनि दीन्हा। का अपराध रमापति कीन्हा॥ बा० १२३/७
कारन तें कारजु कठिन होइ दोसु नहिं मोर।
कुलिस अस्थि तें उपल तें लोह कराल कठोर॥ अ० १७९/०
कारुनीक दिनकर कुल केतू। दूत पठायउ तव हित हेतू॥ लं० ३६/२
कारुनीक ब्यलीक मद खंडन। सब बिधि कुसल कोसला मंडन॥ उ० ५०/८
कालउ तुअ पद नाइहि सीसा। एक बिप्रकुल छाड़ि महीसा॥ बा० १६४/२
काल करम बस होहिं गोसाईं। बरबस राति दिवस की नाईं॥ अ० १४९/६
काल कराल ब्याल खगराजहि। नमत राम अकाम ममता जहि॥ उ० २९/५
काल कर्म गुन ग्यान सुभाऊ। सोऊ देखा जो सुना न काऊ॥ बा० २०१/२
काल कर्म गुन दोष सुभाऊ। कछु दुख तुम्हहि न ब्यापिहि काऊ॥ उ० ११३/१
काल कवलु होइहि छन माहीं। कहउँ पुकारि खोरि मोहि नाहीं॥ बा० २७३/३
कालकेतु निसिचर तहँ आवा। जेहिं सूकर होइ नृपहि भुलावा॥ बा० १६९/३
काल कोटि सत सरिस अति दुस्तर दुर्ग दुरंत।
धूमकेतु सत कोटि सम दुराधरष भगवंत॥ उ० ९१/० (ख)
काल दंड गहि काहु न मारा। हरइ धर्म बल बुद्धि बिचारा॥ लं० ३६/७
काल धर्म नहिं ब्यापहिं ताही। रघुपति चरन प्रीति अति जाही॥ उ० १०३/७
कालनेमि कलि कपट निधानू। नाम सुमति समरथ हनुमानू॥ बा० २६/८
काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा। भयउ निसाचर सहित समाजा॥ बा० १७५/१

कालराति निसिचर कुल केरी । तेहि सीता पर प्रीति घनेरी ॥ सुं० ३९/८

कालरूप खल बन दहन गुनागार घनबोध ।
सिव बिरंचि जेहि सेवहिं तासों कवन बिरोध ॥ लं० ४८/० (ख)

कालरूप तिन्ह कहँ मैं भ्राता । सुभ अरु असुभ कर्म फल दाता ॥ उ० ४०/५
काल बिबस पति कहा न माना । अग जग नाथु मनुज करि जाना ॥ लं० १०३/१३
काल ब्याल कर भच्छक जोई । सपनेहुँ समर कि जीतिअ सोई ॥ लं० ५५/८
काल सुभाउ करम बरिआईं । भलेउ प्रकृति बस चुकइ भलाईं ॥ बा० ६/२
कालि लगन भलि केतिक बारा । पूजिहि बिधि अभिलाषु हमारा ॥ अ० १०/४
कासी मग सुरसरि क्रमनासा । मरु मारव महिदेव गवासा ॥ बा० ५/८
कासीं मरत जंतु अवलोकी । जासु नाम बल करउँ बिसोकी ॥ बा० ११८/१
का सुनाइ बिधि काह सुनावा । का देखाइ चह काह देखावा ॥ अ० ४७/१
काह करौं सखि सूध सुभाऊ । दाहिन बाम न जानउँ काऊ ॥ अ० १९/७

काष्ठ न पावकु जारि सक का न समुद्र समाइ ।
का न करै अबला प्रबल केहि जग कालु न खाइ ॥ अ० ४७/०

काहु न कोउ सुख दुख कर दाता । निज कृत करम भोग सबु भ्राता ॥ अ० ९१/४
काहुँ न लखा सो चरित बिसेषा । सो सरूप नृपकन्याँ देखा ॥ बा० १३३/७
काहुहि दोसु देहु जनि ताता । भा मोहि सब बिधि बाम बिधाता ॥ अ० १६४/७
काहुहि लात चपेटन्हि केहू । भजहु न रामहि सो फल लेहू ॥ लं० ४३/८
काहू की जौं सुनहिं बड़ाई । स्वास लेहिं जनु जूड़ी आई ॥ उ० ३९/२
काहूँ बैठन कहा न ओही । राखि को सकइ राम कर द्रोही ॥ अर० १/५
काहू सुमति कि खल सँग जामी । सुभ गति पाव कि परत्रिय गामी ॥ उ० १११/४

किए अमित उपदेस जहँ तहँ लोगन्ह मुनिबरन्ह ।
धीरजु धरिअ नरेस कहेउ बसिष्ठ बिदेह सन ॥ अ० २७६/० सो०

किएँ जाहिं छाया जलद सुखद बहइ बर बात ।
तस मगु भयउ न राम कहँ जस भा भरतहि जात ॥ अ० २१६/०

किए धरम उपदेस घनेरे । लोग प्रेम बस फिरहिं न फेरे ॥ अ० ८४/४
किए भृंग बहुरंग बिहंगा । गुँजहिं कूजहिं पवन प्रसंगा ॥ बा० २८७/५

किए सुखी कहि बानी सुधा सम बल तुम्हारें रिपु हयो ।
पायो बिभीषन राज तिहुँ पुर जसु तुम्हारो नित नयो ॥
मोहि सहित सुभ कीरति तुम्हारी परम प्रीति जो गाइहैं ।
संसार सिंधु अपार पार प्रयास बिनु नर पाइहैं ॥ लं० १०५/१ छं०

किंनर नाग सिद्ध गंधर्बा । बधुन्ह समेत चले सुर सर्बा ॥ बा० ६०/१
किंनर सिद्ध मनुज सुर नागा । हठि सबही के पंथहिं लागा ॥ बा० १८१/११
किमि सहि जात अनख तोहि पाहीं । प्रिया बेगि प्रगटसि कस नाहीं ॥ अर० २९/१५

कियउ निषादनाथु अगुआई । मातु पालकीं सकल चलाई ॥ अ० २०२/१
किएहुँ कुबेषु साधु सनमानू । जिमि जग जामवंत हनुमानू ॥ बा० ६/७
किलकत मोहि धरन जब धावहिं । चलउँ भागि तब पूप देखावहिं ॥ उ० ७६/१०
कीजिअ गुर आयसु अवसि कहहिं सचिव कर जोरि ।
रघुपति आएँ उचित जस तस तब करब बहोरि ॥ अ० १७५/०
कीट मनोरथ दारु सरीरा । जेहि न लाग घुन को अस धीरा ॥ उ० ७०/५
की तजि मान अनुज इव प्रभु पद पंकज भृंग ।
होहि कि राम सरानल खल कुल सहित पतंग ॥ सुं० ५६/० (ख)
की तनु प्रान कि केवल प्राना । बिधि करतबु कछु जाइ न जाना ॥ अ० ५७/४
की तुम्ह तीनि देव महँ कोऊ । नर नारायन की तुम्ह दोऊ ॥ कि० ०/१०
की तुम्ह रामु दीन अनुरागी । आयहु मोहि करन बड़भागी ॥ सुं० ५/८
की तुम्ह हरि दासन्ह महँ कोई । मोरें हृदय प्रीति अति होई ॥ सुं० ५/७
की धौं श्रवन सुनेहि नहिं मोही । देखउँ अति असंक सठ तोही ॥ सुं० २०/२
कीन्ह अनुग्रह अमित अति सब बिधि सीतानाथ ।
करि प्रनामु बोले भरतु जोरि जलज जुग हाथ ॥ अ० २६६/०
कीन्ह कपिन्ह सब जग्य बिधंसा । जब न उठइ तब करहिं प्रसंसा ॥ लं० ७५/२
कीन्ह कवन पन कहहु कृपाला । सत्यधाम प्रभु दीनदयाला ॥ बा० ५६/७
कीन्हि क्रिया प्रभु आयसु मानी । बिधिवत देस काल जियँ जानी ॥ लं० १०४/८
कीन्हि जोरि कर बिनय बड़ाई । कहि निज भाग्य बिभव बहुताई ॥ बा० ३२०/२
कीन्ह दंडवत तीनिउँ भाई । सहित पवनसुत सुख अधिकाई ॥ उ० ३२/१
कीन्ह निमज्जनु तीरथ राजा । नाइ मुनिहि सिरु सहित समाजा ॥ अ० २१५/१
कीन्ह निषाद दंडवत तेही । मिलेउ मुदित लखि राम सनेही ॥ अ० ११०/५
कीन्ह प्रनामु चरन धरि माथा । दीन्हि असीस मुदित मुनिनाथा ॥ बा० २१४/१
कीन्ह बहुत श्रम ऐक न आए । तेहिं इरषा बन आनि दुराए ॥ अ० ११९/६
कीन्ह बास भल ठाउँ बिचारी । इहाँ सकल रितु रहब सुखारी ॥ अ० १३५/४
कीन्ह बिबिध तप तीनिहुँ भाई । परम उग्र नहिं बरनि सो जाई ॥ बा० १७६/१
कीन्ह मोह बस द्रोह जद्यपि तेहि कर बध उचित ।
प्रभु छाड़ेउ करि छोह को कृपाल रघुबीर सम ॥ अर० २/० सो०
कीन्ह राम मोहि बिगत बिमोहा । सेवक सुखद कृपा संदोहा ॥ उ० ८२/५
कीन्ह सप्रेम प्रनामु बहोरी । बोले पानि पंकरुह जोरी ॥ अ० ३०६/५
कीन्हि प्रस्न जेहि भाँति भवानी । जेहि बिधि संकर कहा बखानी ॥ बा० ३२/१
कीन्हि प्रीति कछु बीच न राखा । लछिमन राम चरित सब भाषा ॥ कि० ४/१
कीन्हि प्रसंसा भूपति भूरी । रानिन्ह सहित लीन्हि पग धूरी ॥ बा० ३५१/६
कीन्हि बिनय पुनि पुनि सिरु नाई । फिरे महीसु आसिषा पाई ॥ बा० ३४२/६

कीन्हि मातु मिस काल कुचाली । ईति भीति जस पाकत साली ॥ अ० २५२/१

कीन्हि सौच सब सहज सुचि सरित पुनीत नहाइ ।
प्रातक्रिया करि तात पहिं आए चारिउ भाइ ॥ बा० ३५८/०

कीन्हेउँ प्रगट न कारन तेहीं । अस कहि चरन गहे बैदेहीं ॥ बा० २३५/४

कीन्हें प्राकृत जन गुन गाना । सिर धुनि गिरा लगत पछिताना ॥ बा० १०/७

कीन्हेहु प्रभु बिरोध तेहि देवक । सिव बिरंचि सुर जाके सेवक ॥ लं० ६२/५

की भइ भेंट कि फिरि गए श्रवन सुजसु सुनि मोर ।
कहसि न रिपु दल तेज बल बहुत चकित चित तोर ॥ सुं० ५३/०

की मैनाक कि खगपति होई । मम बल जान सहित पति सोई ॥ अर० २८/१३

कीरति बिजय बीरता भारी । चले चाप कर बरबस हारी ॥ बा० २५०/४

कीरति बिधु तुम्ह कीन्ह अनूपा । जहँ बस राम पेम मृगरूपा ॥ अ० २०९/१

कीरति भनिति भूति भलि सोई । सुरसरि सम सब कहँ हित होई ॥ बा० १३/९

कीरति सरित छहूँ रितु रूरी । समय सुहावनि पावनि भूरी ॥ बा० ४१/१

की रावन करि कोप चलाए । कुलिस चारि आवत अति धाए ॥ लं० ३१/८

कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी । भइ रघुबंस बेनु बन आगी ॥ अ० ४६/४

कुटिल कुबंधु कुअवसरु ताकी । जानि राम बनबास एकाकी ॥ अ० २२७/४

कुन्दइन्दुदरगौरसुंदरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम् ।
कारुणीककलकन्जलोचनं नौमि शंकरमनङ्गमोचनम् ॥ उ० श्लोक ३

कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ ।
शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ ॥
मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवर्मौ हितौ ।
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः ॥ कि० श्लोक १

कुपथ कुतरक कुचालि कलि कपट दंभ पाखंड ।
दहन राम गुन ग्राम जिमि ईंधन अनल प्रचंड ॥ बा० ३२/० (क)

कुपथ निवारि सुपंथ चलावा । गुन प्रगटै अवगुनन्हि दुरावा ॥ कि० ६/४

कुपथ माग रुज ब्याकुल रोगी । बैद्य न देइ सुनहु मुनि जोगी ॥ बा० १३२/१

कुबरिहि रानि प्रानप्रिय जानी । बार बार बड़ि बुद्धि बखानी ॥ अ० २२/१

कुबरीं करि कबुली कैकेई । कपट छुरी उर पाहन टेई ॥ अ० २१/१

कुबलय बिपिन कुंत बन सरिसा । बारिद तपत तेल जनु बरिसा ॥ सुं० १४/३

कुमतिहि कसि कुबेषता फाबी । अन अहिवातु सूच जनु भाबी ॥ अ० २४/७

कुमुख अकंपन कुलिसरद धूमकेतु अतिकाय ।
एक एक जग जीति सक ऐसे सुभट निकाय ॥ बा० १८०/०

कुमुदबंधु कर निंदक हाँसा । भृकुटी बिकट मनोहर नासा ॥ बा० २४२/५

कुल कपाट कर कुसल करम के । बिमल नयन सेवा सुधरम के ॥ अ० ३१५/७

कुल कलंकु करि सृजेउ बिधाताँ। साइँ दोह मोहि कीन्ह कुमाताँ ॥ अ० २००/६
कुल कलंकु जेहिं जनमेउ मोही। अपजस भाजन प्रियजन द्रोही ॥ अ० १६३/५
कुल रीति प्रीति समेत रबि कहि देत सबु सादर कियो।
एहि भाँति देव पुजाइ सीतहि सुभग सिंघासनु दियो॥
सिय राम अवलोकनि परसपर प्रेमु काहु न लखि परै।
मन बुद्धि बर बानी अगोचर प्रगट कबि कैसे करै ॥ बा० ३२२/२ छं०
कुलवंति निकारहिं नारि सती। गृह आनहिं चेरि निबेरि गती ॥ उ० १००/३ छं०
कुल समेत रिपु मूल बहाई। चौथें दिवस मिलब मैं आई ॥ बा० १७०/५
कुलिस कठोर निठुर सोइ छाती। सुनि हरिचरित न जो हरषाती ॥ बा० ११२/७
कुलिस कठोर सुनत कटु बानी। बिलपत लखन सीय सब रानी ॥ अ० २४६/५
कुलिसहु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि।
चित्त खगेस राम कर समुझि परइ कहु काहि ॥ उ० १९/० (ग)
कुस कंटक काँकरीं कुराईं। कटुक कठोर कुबस्तु दुराईं ॥ अ० ३१०/५
कुस कंटक मग काँकर नाना। चलब पयादेहिं बिनु पदत्राना ॥ अ० ६१/५
कुस किसलय साथरी सुहाई। प्रभु सँग मंजु मनोज तुराई ॥ अ० ६५/२
कुसगुन लंक अवध अति सोकू। हरष बिषाद बिबस सुरलोकु ॥ अ० ८०/४
कुसमउ देखि सनेहु सँभारा। बढ़त बिधि जिमि घटज निवारा ॥ अ० २९६/२
कुसल प्रस्न करि आसन दीन्हे। पूजि प्रेम परिपूरन कीन्हे ॥ अ० १०६/१
कुसल प्रस्न कहि बारहिं बारा। बिस्वामित्र नृपहि बैठारा ॥ बा० २१४/३
कुसल प्रानप्रिय बंधु दोउ अहहिं कहहु केहिं देस।
सुनि सनेह साने बचन बाची बहुरि नरेस ॥ बा० २९०/०
कुसल मूल पद पंकज पेखी। मैं तिहुँ काल कुसल निज लेखी ॥ अ० १९४/७
कुस साँथरी निहारि सुहाई। कीन्ह प्रनामु प्रदच्छिन जाई ॥ अ० १९८/१
कुसुमित बिबिध बिटप बहुरंगा। कूजहिं कोकिल गुंजहिं भृंगा ॥ बा० १२५/२
कुहू कुहू कोकिल धुनि करहीं। सुनि रव सरस ध्यान मुनि टरहीं ॥ अर० ३९/९
क्रुद्धे कृतांत समान कपि तन स्रवत सोनित राजहीं।
मर्दहिं निसाचर कटक भट बलवंत घन जिमि गाजहीं॥
मारहिं चपेटन्हि डाटि दातन्ह काटि लातन्ह मीजहीं।
चिक्करहिं मर्कट भालु छल बल करहिं जेहिं खल छीजहीं ॥ लं० ८०/१ छं०
कूजत पिक मानहुँ गज माते। ढेक महोख ऊँट बिसराते ॥ अर० ३७/५
कूजहिं खग मृग नाना बृंदा। अभय चरहिं बन करहिं अनंदा ॥ उ० २२/३
कूदि लंक गढ़ ऊपर आवा। गहि गिरि मेघनाद कहुँ धावा ॥ लं० ४२/६
कूबर टूटेउ फूट कपारू। दलित दसन मुख रूधिर प्रचारू ॥ अ० १६२/५
कूर कुटिल खल कुमति कलंकी। नीच निसील निरीस निसंकी ॥ अ० २९८/२

केकि कंठ दुति स्यामल अंगा । तड़ित बिनिंदक बसन सुरंगा ॥ बा० ३१५/१

केकीकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं ।
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम् ॥
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं ।
नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामम् ॥ उ० श्लोक १

केतिक बात प्रभु जातुधान की । रिपुहि जीति आनिबी जानकी ॥ सुं० ३१/४
केवट उतरि दंडवत कीन्हा । प्रभुहि सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा ॥ अ० १०१/२
केवट कीन्हि बहुत सेवकाई । सो जामिनि सिंगरौर गवाँई ॥ अ० १५०/१
केवट बुध बिद्या बड़ि नावा । सकहिं न खेइ ऐक नहिं आवा ॥ अ० २७५/४
केवट राम रजायसु पावा । पानि कठवता भरि लेइ आवा ॥ अ० १००/६

केहरि कटि पट पीत धर सुषमा सील निधान ।
देखि भानुकुलभूषनहि बिसरा सखिन्ह अपान ॥ बा० २३३/०

केहरि कंधर चारु जनेऊ । बाहु बिभूषन सुंदर तेऊ ॥ बा० १४६/७
केहरि कंधर बाहु बिसाला । उर अति रुचिर नागमनि माला ॥ बा० २१८/५
केहरि नाद बीर सब करहीं । निज निज बल पौरुष उच्चरहीं ॥ लं० ७८/१०
केहरिनाद भालु कपि करहीं । डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं ॥ सुं० ३४/१०
केहि अवराधहु का तुम्ह चहहू । हम सन सत्य मरमु किन कहहू ॥ बा० ७७/३
केहि कारन आगमन तुम्हारा । कहहु सो करत न लावउँ बारा ॥ बा० २०६/८
केहि बिधि अवध चलहिं रघुराऊ । कहहु समुझि सोइ करिअ उपाऊ ॥ अ० २५४/२
केहि बिधि अस्तुति करौं तुम्हारी । अधम जाति मैं जड़मति भारी ॥ अर० ३४/२
केहि बिधि कहौं जाहु अब स्वामी । कहहु नाथ तुम्ह अंतरजामी ॥ अर० ५/९
केहि बिधि होइ राम अभिषेकू । मोहि अवकलत उपाउ न एकू ॥ अ० २५२/२
केहि सुकृतीं केहि घरीं बसाए । धन्य पुन्यमय परम सुहाए ॥ अ० ११२/२

केहि हेतु रानि रिसानि परसत पानि पतिहि नेवारई ।
मानहुँ सरोष भुअंग भामिनि बिषम भाँति निहारई ॥
दोउ बासना रसना दसन बर मरम ठाहरु देखई ।
तुलसी नृपति भवतब्यता बस काम कौतुक लेखई ॥ अ० २४/१ छं०

कैकइ कत जनमी जग माझा । जौं जनमि त भइ काहे न बाँझा ॥ अ० १६३/४
कैकइ जठर जनमि जग माहीं । यह मोहि कहँ कछु अनुचित नाहीं ॥ अ० १७९/७
कैकइ सुअन जोगु जग जोई । चतुर बिरंचि दीन्ह मोहि सोई ॥ अ० १८०/१

कैकयनंदिनि मंदमति कठिन कुटिलपनु कीन्ह ।
जेहिं रघुनंदन जानकिहि सुख अवसर दुखु दीन्ह ॥ अ० ९१/०

कैकयसुता सुनत कटु बानी । कहि न सकइ कछु सहमि सुखानी ॥ अ० १९/१
कैकयसुता सुमित्रा दोऊ । सुंदर सुत जनमत भैं ओऊ ॥ बा० १९४/१

कैकेई कहँ नृप सो दयऊ। रह्यो सो उभय भाग पुनि भयऊ॥ बा० १८९/३
कैकेई भव तनु अनुरागे। पावँर प्रान अघाइ अभागे॥ अ० १७९/१
कैकेई सुअ कुटिलमति राम बिमुख गतलाज।
तुम्ह चाहत सुखु मोहबस मोहि से अधम कें राज॥ अ० १७८/०
कैकेई हरषित एहि भाँती। मनहुँ मुदित दव लाइ किराती॥ अ० १५८/५
कै तापस तिय कानन जोगू। जिन्ह तप हेतु तजा सब भोगू॥ अ० ५९/३
कोउ कह ए भूपति पहिचाने। मुनि समेत सादर सनमाने॥ बा० २२१/३
कोउ कह कहँ अंगद हनुमंता। कहँ नल नील दुबिद बलवंता॥ लं० ४२/२
कोउ कह चलन चहत हहिं आजू। कीन्ह बिदेह बिदा कर साजू॥ बा० ३३४/२
कोउ कह जब बिधि रति मुख कीन्हा। सार भाग ससि कर हरि लीन्हा॥ लं० ११/७
कोउ कह जिअत धरहु द्वौ भाई। धरि मारहु तिय लेहु छड़ाई॥ अर० १७/९
कोउ कह जौं भल अहइ बिधाता। सब कहँ सुनिअ उचित फलदाता॥ बा० २२१/५
कोउ कह दूषनु रानिहि नाहिन। बिधि सबु कीन्ह हमहि जो दाहिन॥ अ० २२२/५
कोउ कह रहन कहिअ नहिं काहू। को न चहइ जग जीवन लाहू॥ अ० १८४/७
कोउ कह संकर चाप कठोरा। ए स्यामल मृदुगात किसोरा॥ बा० २२२/२
कोउ किछु कहइ न कोउ किछु पूँछा। प्रेम भरा मन निज गति छूँछा॥ अ० २४१/७
कोउ न बुझाइ कहइ गुर पाहीं। ए बालक असि हठ भलि नाहीं॥ बा० २५५/२
कोउ नहिं सिव समान प्रिय मोरें। असि परतीति तजहु जनि भोरें॥ बा० १३७/६
कोउ नृप होउ हमहि का हानी। चेरि छाड़ि अब होब कि रानी॥ अ० १५/६
कोउ पंडित कोउ तापस ग्याता। कोउ धनवंत सूर कोउ दाता॥ उ० ८६/२
कोउ पितु भगत बचन मन कर्मा। सपनेहुँ जान न दूसर धर्मा॥ उ० ८६/४
कोउ ब्रह्म निर्गुन ध्याव। अब्यक्त जेहि श्रुति गाव॥
मोहि भाव कोसल भूप। श्रीराम सगुन सरूप॥ लं० ११२/७ छं०
कोउ बिश्राम कि पाव तात सहज संतोष बिनु।
चलै कि जल बिनुं नाव कोटि जतन पचि पचि मरिअ॥ उ० ८९/० (ख) सो०
कोउ मुखहीन बिपुल मुख काहू। बिनु पद कर कोउ बिनु पद बाहू॥ बा० ९२/७
कोउ सप्रेम बोली मृदु बानी। जो मैं सुना सो सुनहु सयानी॥ बा० २२०/२
कोउ सर्बग्य धर्मरत कोई। सब पर पितहि प्रीति सम होई॥ उ० ८६/३
कोक तिलोक प्रीति अति करिही। प्रभु प्रताप रबि छबिहि न हरिही॥ उ० २०८/३
कोक सोकप्रद पंकज द्रोही। अवगुन बहुत चंद्रमा तोही॥ बा० २३७/२
को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ। कलषु पुंज कुंजर मृगराऊ॥ अ० १०५/१
को जान केहि आनंद बस सब ब्रह्मु बर परिछन चली।
कल गान मधुर निसान बरषहिं सुमन सुर सोभा भली॥

आनंदकंदु बिलोकि दूलहु सकल हियँ हरषित भई।
अंभोज अंबक अंबु उमगि सुअंग पुलकावलि छई ॥ बा० ३१७/१ छं०
को जानै केहिं सुकृत सयानी। नयन अतिथि कीन्हे बिधि आनी ॥ बा० ३३४/४
कोट कँगूरन्हि सोहहिं कैसे। मेरु के सृंगनि जनु घन बैसे ॥ लं० ४०/१
कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा ॥ बा० २७२/८
कोटि कोटि कपि धरि धरि खाई। जनु टीड़ी गिरि गुहाँ समाई ॥ लं० ६६/२
कोटि कोटि गिरि सिखर प्रहारा। करहिं भालु कपि एक एक बारा ॥ लं० ६४/५
कोटिन्ह आयुध रावन डारे। तिल प्रवान करि काटि निवारे ॥ लं० ८२/४
कोटिन्ह काँवरि चले कहारा। बिबिध बस्तु को बरनै पारा ॥ बा० २९९/७
कोटिन्ह गहि सरीर सन मर्दा। कोटिन्ह मीजि मिलव महि गर्दा ॥ लं० ६६/३
कोटिन्ह चक्र त्रिसुल पबारै। बिनु प्रयास प्रभु काटि निवारै ॥ लं० ९०/५
कोटिन्ह चतुरानन गौरीसा। अगनित उडगन रबि रजनीसा ॥ उ० ७९/५
कोटिन्ह बाजिमेध प्रभु कीन्हे। दान अनेक द्विजन्ह कहँ दीन्हे ॥ उ० २३/१
कोटिन्ह मेघनाद सम सुभट उठे हरषाइ।
झपटहिं टरै न कपि चरन पुनि बैठहिं सिर नाइ ॥ लं० ३४/० (क)
कोटिन्ह रुंड मुंड बिनु डोल्लहिं। सीस परे महि जय जय बोल्लहिं ॥ लं० ८७/१०
कोटि प्रकार कलपि कुटिलाई। आए दल बटोरि दोउ भाई ॥ अ० २२७/६
कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू। आएँ सरन तजउँ नहिं ताहू ॥ सुं० ४३/१
कोटि बिरक्त मध्य श्रुति कहई। सम्यक ग्यान सकृत कोउ लहई ॥ उ० ५३/३
कोटि मनोज लजावनिहारे। सुमुखि कहहु को आहिं तुम्हारे ॥ अ० ११६/१
कोटिहुँ बदन नहिं बनै बरनत जग जननि सोभा महा।
सकुचहिं कहत श्रुति सेष सारद मंदमति तुलसी कहा ॥
छबिखानि मातु भवानि गवनीं मध्य मंडप सिव जहाँ।
अवलोकि सकहिं न सकुच पति पद कमल मन मधुकरु तहाँ ॥ बा० ९९/१ छं०
को तिभुवन मोहि सरिस अभागी। गति असि तोरि मातु जेहि लागी ॥ अ० १६३/६
को तुम्ह कस बन फिरहु अकेलें। सुंदर जुबा जीव परहेलें ॥ बा० १५८/३
को तुम्ह तात कहाँ ते आए। मोहि परम प्रिय बचन सुनाए ॥ उ० १/७
को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा। छत्री रूप फिरहु बन बीरा ॥ कि० ०/७
कोदंड कठिन चढ़ाइ सिर जट जूट बाँधत सोह क्यों।
मरकत सयल पर लरत दामिनि कोटि सों जुग भुजग ज्यों ॥
कटि कसि निषंग बिसाल भुज गहि चाप बिसिख सुधारि कै।
चितवत मनहुँ मृगराज प्रभु गजराज घटा निहारि कै ॥ अर० १७/१ छं०
को न कुसंगति पाइ नसाई। रहइ न नीच मतें चतुराई ॥ अ० २३/८
कोपभवन सुनि सकुचेउ राऊ। भय बस अगहुड़ परइ न पाऊ ॥ अ० २४/१

कोप समाजु साजि सबु सोई । राजु करत निज कुमति बिगोई ॥ अ० २२/७
कोपि कपिन्ह दुर्घट गढ़ु घेरा । नगर कोलाहलु भयउ घनेरा ॥ लं० ४८/९
कोपि कूदि द्वौ धरेसि बहोरी । महि पटकत भजे भुजा मरोरी ॥ लं० ९७/९
कोपि मरुतसुत अंगद धाए । हति त्रिसूल उर धरनि गिराए ॥ लं० ७५/६
कोपि महीधर लेइ उपारी । डारइ जहँ मर्कट भट भारी ॥ लं० ६८/३
कोपेउ जबहिं बारिचरकेतू । छन महुँ मिटे सकल श्रुति सेतू ॥ बा० ८३/६
कोपेउ समर श्रीराम । चले बिसिख निसित निकाम ॥ अर० १९/२ छं०
को प्रभु सँग मोहि चितवनिहारा । सिंघबधुहि जिमि ससक सिआरा ॥ अ० ६६/७
को बड़ छोट कहत अपराधू । सुनि गुन भेदु समुझिहहिं साधू ॥ बा० २०/३
कोमल चरन चलत बिनु पनहीं । भइ मृदु भूमि सकुचि मन मनहीं ॥ अ० ३१०/४
कोमल चित अति दीनदयाला । कारन बिनु रघुनाथ कृपाला ॥ अर० ३२/१
कोमलचित कृपाल रघुराई । कपि केहि हेतु धरी निठुराई ॥ सुं० १३/४
कोमलचित दीनन्ह पर दाया । मन बच क्रम मम भगति अमाया ॥ उ० ३७/३
को रघुबीर सरिस संसारा । सीलु सनेहु निबाहनिहारा ॥ अ० २३/४
कोल किरात दसन छबि गाई । तनु बिसाल पीवर अधिकाई ॥ बा० १५५/७
कोल किरात कुरंग बिहंगा । मोहि सब सुखद प्रानपति संगा ॥ अ० ९७/८
कोल किरात बेष सब आए । रचे परन तृन सदन सुहाए ॥ अ० १३२/७
कोल किरात भिल्ल बनचारी । फेरे फिरे जोहारि जोहारी ॥ अ० ३२०/२
कोल किरात भिल्ल बनबासी । मधु सुचि सुंदर स्वादु सुधा सी ॥ अ० २४९/१
कोल बिलोकि भूप बड़ धीरा । भागि पैठ गिरिगुहाँ गभीरा ॥ बा० १५६/७
कोलाहलु सुनि सीय सकानी । सखीं लवाइ गईं जहँ रानी ॥ बा० २६६/५
कोसलपति कर देखि समाजू । अति लघु लाग तिन्हहि सुरराजू ॥ बा० ३१२/६
कोसलपति गति सुनि जनकौरा । भे सब लोक सोक बस बौरा ॥ अ० २७०/१

कोसलपति समधी सजन सनमाने सब भाँति ।
मिलनि परसपर बिनय अति प्रीति न हृदयँ समाति ॥ बा० ३४०/०

कोसलपुर बासी नर नारि बृद्ध अरु बाल ।
प्रानहु ते प्रिय लागत सब कहुँ राम कृपाल ॥ बा० २०४/०

कोसलेन्द्रपदकञ्जमञ्जुलौ कोमलावजमहेशवन्दितौ ।
जानकीकरसरोजलालितौ चिन्तकस्य मनभृंगसंगिनौ ॥ उ० श्लोक २

कोसलेस दसरथ के जाए । हम पितु बचन मानि बन आए ॥ कि० १/१
कोसलेस सुत लछिमन रामा । कालहु जीति सकहिं संग्रामा ॥ कि० ६/२९
को साहिब सेवकहि नेवाजी । आपु समाज साज सब साजी ॥ अ० २९८/५

कोहबरहिं आने कुअँर कुअँरि सुआसिनिन्ह सुख पाइ कै ।
अति प्रीति लौकिक रीति लागीं करन मंगल गाइ कै ॥

लहकौरि गौरि सिखाव रामहि सीय सन सारद कहैं ।
रनिवासु हास बिलास रस बस जन्म को फलु सब लहैं ॥ बा० ३२६/२ छं०
कौतुक कहँ आए पुरबासी । मारहिं चरन करहिं बहु हाँसी ॥ सुं० २४/६
कौतुक कूदि चढ़े कपि लंका । पैठे रावन भवन असंका ॥ लं० ८४/५
कौतुक प्रात देखिअहु मोरा । करिहउँ बहुत कहौं का थोरा ॥ लं० ४८/६
कौतुक देखि चले गुरु पाहीं । जानि बिलंबु त्रास मन माहीं ॥ बा० २२४/६
कौतुक देखि पतंग भुलाना । एक मास तेइँ जात न जाना ॥ बा० १९४/८
कौतुक देखि राम मुसुकाने । भए सभीत सकल कपि जाने ॥ लं० ५१/६
कौतुक देखि सुमन बहु बरषी । नभ तें भवन चले सुर हरषी ॥ सुं० ३३/८
कौतुक लागि भवन लै आवा । सो पुलस्ति मुनि जाइ छोड़ावा ॥ लं० २३/१६
कौतुक सिंधु नाघि तव लंका । आयउ कपि केहरी असंका ॥ लं० ३५/४
कौतुकहीं कैलास पुनि लीन्हेसि जाइ उठाइ ।
मनहुँ तौलि निज बाहुबल चला बहुत सुख पाइ ॥ बा० १७९/०
कौल कामबस कृपिन बिमूढ़ा । अति दरिद्र अजसी अति बूढ़ा ॥ लं० ३०/२
कौसल्याँ अब काह बिगारा । तुम्ह जेहि लागि बज्र पुर पारा ॥ अ० ४८/८
कौसल्या कह दोसु न काहू । करम बिबस दुख सुख छति लाहू ॥ अ० २८१/३
कौसल्या कह धीर धरि सुनहु देबि मिथिलेसि ।
को बिबेकनिधि बल्लभहि तुम्हहि सकइ उपदेसि ॥ अ० २८३/०
कौसल्या के चरनन्हि पुनि तिन्ह नायउ माथ ।
आसिष दीन्हे हरषि तुम्ह प्रिय मम जिमि रघुनाथ ॥ उ० ८/० (क)
कौसल्या के बचन सुनि भरत सहित रनिवासु ।
ब्याकुल बिलपत राजगृह मानहुँ सोक नेवासु ॥ अ० १६६/०
कौसल्या कैकेई हाथ धरि । दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि ॥ बा० १८९/४
कौसल्या जब बोलन जाई । ठुमुकु ठुमुकु प्रभु चलहिं पराई ॥ बा० २०२/७
कौसल्यादि नारि प्रिय सब आचरन पुनीत ।
पति अनुकूल प्रेम दृढ़ हरि पद कमल बिनीत ॥ बा० १८८/०
कौसल्यादि मातु सब धाई । निरखि बच्छ जनु धेनु लवाई ॥ उ० ५/९
कौसल्यादि मातु सब मन अनंद अस होइ ।
आयउ प्रभु श्री अनुज जुत कहन चहत अब कोइ ॥ उ० ०/३ (ग)
कौसल्यादि राम महतारीं । प्रेमबिबस तन दसा बिसारीं ॥ बा० ३४४/८
कौसल्यादि सकल महतारीं । तेउ प्रजा सुख होहिं सुखारीं ॥ अ० १७४/६
कौसल्यादि सासु गृह माहीं । सेवइ सबन्हि मान मद नाहीं ॥ उ० २३/८
कौसल्या धरि धीरजु कहई । पूत पथ्य गुर आयसु अहई ॥ अ० १७५/१
कौसल्याँ नृपु दीख मलाना । रबिकुल रबि अँथयउ जियँ जाना ॥ अ० १५३/३

कौसल्या पुनि पुनि रघुबीरहि । चितवति कृपासिंधु रनधीरहि ॥ उ० ६/६
कौसल्या सम सब महतारी । रामहि सहज सुभायँ पिआरी ॥ अ० १४/५
कौसल्याँ सादर सनमानी । आसन दिए समय सम आनी ॥ अ० २८०/४
कौसल्या सुत सो सुख खानी । नामु रामु धनु सायक पानी ॥ बा० २२०/६
कौसिक कहा छमिअ अपराधू । बाल दोष गुन गनहिं न साधू ॥ बा० २७४/५
कौसिक कहि कहि कथा पुरानीं । समुझाई सब सभा सुबानीं ॥ अ० २७७/४
कौसिक कहेउ मोर मनु माना । इहाँ रहिअ रघुबीर सुजाना ॥ बा० २१३/६
कौसिक बामदेव जाबाली । पुरजन परिजन सचिव सुचाली ॥ अ० ३१८/६
कौसिक राउ लिए उर लाई । कहि असीस पूछी कुसलाई ॥ बा० ३०७/२
कौसिकरूप पयोनिधि पावन । प्रेम बारि अवगाहु सुहावन ॥ बा० २६१/२
कौसिक सतानंद तब जाई । कहा बिदेह नृपहि समुझाई ॥ बा० ३३१/६
कौसिक सुनहु मंद यहु बालकु । कुटिल कालबस निज कुल घालकु ॥ बा० २७३/१
कौसिकादि मुनि सचिव समाजू । ग्यान अंबुनिधि आपुनु आजू ॥ अ० २९२/३
कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि । कहत लखन सन रामु हृदयँ गुनि ॥ बा० २२९/१
कंकन किंकिनि नूपुर बाजहिं । चालि बिलोकि काम गज लाजहिं ॥ बा० ३१७/४
कंचन कलस बिचित्र सँवारे । सबहिं धरे सजि निज निज द्वारे ॥ उ० ८/१
कंचन थार आरतीं नाना । जुबतीं सजें करहि सुभ गाना ॥ उ० ८/६
कंचन थार सोह बर पानी । परिछन चली हरहि हरषानी ॥ बा० ९५/३
कंठु सूख मुख आव न बानी । जनु पाठीनु दीन बिनु पानी ॥ अ० ३४/२
कंत करष हरि सन परिहरहू । मोर कहा अति हित हियँ धरहू ॥ सुं० ३५/६
कंत राम बिरोध परिहरहू । जानि मनुज जनि हठ मन धरहू ॥ लं० १३/८
कंत समुझि मन तजहु कुमतिही । सोह न समर तुम्हहि रघुपतिही ॥ लं० ३५/१
कंद मूल फल अमिअ अहारू । अवध सौध सत सरिस पहारू ॥ अ० ६५/३
कंद मूल फल अंकुर नीके । दिए आनि मुनि मनहुँ अमी के ॥ अ० १०६/२
कंद मूल फल पत्र सुहाए । भए बहुत जब ते प्रभु आए ॥ कि० १२/२
कंद मूल फल भरि भरि दोना । चले रंक जनु लूटन सोना ॥ अ० १३४/२
कंद मूल फल सुरस अति दिए राम कहुँ आनि ।
प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि ॥ अर० ३४/०
कंदर खोह नदीं नद नारे । अगम अगाध न जाहिं निहारे ॥ अ० ६१/७
कंध बाल केहरि दर ग्रीवा । चारु चिबुक आनन छबि सींवा ॥ उ० ७६/२
कंप न भूमि न मरुत बिसेषा । अस्त्र सस्त्र कछु नयन न देखा ॥ लं० १३/१
कंप पुलक तन नयन सनीरा । गहे चरन अति प्रेम अधीरा ॥ अ० ६९/२
कंपहिं भूप बिलोकत जाकें । जिमि गज हरि किसोर के ताकें ॥ बा० २९२/४
कंपहिं लोकप जाकीं त्रासा । तासु नारि सभीत बड़ि हासा ॥ सुं० ३६/४

कंबल बसन बिचित्र पटोरे। भाँति भाँति बहु मोल न थोरे ॥ बा० ३२५/३
कंबु कंठ अति चिबुक सुहाई। आनन अमित मदन छबि छाई ॥ बा० १९८/७
काँच किरिच बदलें ते लेहीं। कर ते डारि परस मनि देहीं ॥ उ० १२०/१२
कुअँरु कुअँरि कल भावँरि देहीं। नयन लाभु सब सादर लेहीं ॥ बा० ३२४/१

कुअँरि मनोहर बिजय बड़ि कीरति अति कमनीय।
पावनिहार बिरंचि जनु रचेउ न धनु दमनीय ॥ बा० २५१/०

कुंजर मनि कंठा कलित उरन्हि तुलसिका माल।
बृषभ कंध केहरि ठवनि बल निधि बाहु बिसाल ॥ बा० २४३/०

कुंडल कंकन पहिरे ब्याला। तन बिभूति पट केहरि छाला ॥ बा० ९१/२
कुंडल मकर मुकुट सिर भ्राजा। कुटिल केस जनु मधुप समाजा ॥ बा० १४६/५
कुंद इंदु दर गौर सरीरा। भुज प्रलंब परिधन मुनिचीरा ॥ बा० १०५/६

कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुना अयन।
जाहि दीन पर नेह करउ कृपा मर्दन मयन ॥ बा० ०/४ सो०

कुंद कली दाड़िम दामिनी। कमल सरद ससि अहिभामिनी ॥ अर० २९/११

कुंभकरन अस बंधु मम सुत प्रसिद्ध सक्रारि।
मोर पराक्रम नहिं सुनेहि जितेउँ चराचर झारि ॥ लं० २७/०

कुंभकरन कपि फौज बिडारी। सुनि धाई रजनीचर धारी ॥ लं० ६६/७
कुंभकरन दुर्मद रन रंगा। चला दुर्ग तजि सेन न संगा ॥ लं० ६३/२
कुंभकरन बूझा कहु भाई। काहे तव मुख रहे सुखाई ॥ लं० ६१/८
कुंभकरन मन दीख बिचारी। हति छन माझ निसाचर धारी ॥ लं० ६८/१
कुंभकरन रन रंग बिरुद्धा। सन्मुख चला काल जनु क्रुद्धा ॥ लं० ६६/१
कुंभकरन रावन द्वौ भाई। इहाँ हते सुर मुनि दुखदाई ॥ लं० ११८/११
कुंभजादि मुनिनायक नाना। गए रामु सब कें अस्थाना ॥ लं० ११९/२
कृतकृत्य बिभो सब बानर ए। निरखंति तवानन सादर ए ॥ लं० ११०/१७ छं०
कृतजुग सब जोगी बिग्यानी। करि हरि ध्यान तरहिं भव प्रानी ॥ उ० १०२/१

कृतजुग त्रेताँ द्वापर पूजा मख अरु जोग।
जो गति होइ सो कलि हरि नाम ते पावहिं लोग ॥ उ० १०२/० (ख)

कृपा अनुग्रहु अंगु अघाई। कीन्हि कृपानिधि सब अधिकाई ॥ अ० २९९/५
कृपा करिअ पुर धारिअ पाऊ। थापिअ जनु सबु लोगु सिहाऊ ॥ अ० ८७/७
कृपा कोपु बधु बँधव गोसाईं। मो पर करिअ दास की नाईं ॥ बा० २७८/५
कृपादृष्टि कपि भालु बिलोके। भए प्रबल रन रहहिं न रोके ॥ लं० ५१/८

कृपादृष्टि करि बृष्टि प्रभु अभय किए सुर बृंद।
भालु कीस सब हरषे जय सुख धाम मुकुंद ॥ लं० १०३/०

कृपादृष्टि प्रभु ताहि बिलोका। करहु क्रिया परिहरि सब सोका ॥ लं० १०४/७

कृपादृष्टि रघुबीर बिलोकी । किए सकल नर नारि बिसोकी ॥ उ० ५/६

कृपाँ भलाई आपनी नाथ कीन्ह भल मोर ।
दूषन भे भूषन सरिस सुजसु चारु चहु ओर ॥ अ० २९८/०

कृपा रहित हिंसक सब पापी । बरनि न जाहिं बिस्व परितापी ॥ बा० १७५/८
कृपा बारिधर राम खरारी । पाहि पाहि प्रनतारति हारी ॥ लं० ६९/४
कृपासिंधु जब मंदिर गए । पुर नर नारि सुखी सब भए ॥ उ० ९/३
कृपासिंधु प्रभु होहिं दुखारी । धीरजु धरहिं कुसमउ बिचारी ॥ अ० १४०/५
कृपासिंधु बहुबिधि समुझावहिं । फिरहिं प्रेम बस पुनि फिरि आवहिं ॥ अ० ८२/४
कृपासिंधु बोले मुसुकाई । सोइ करु जेहिं तव नाव न जाई ॥ अ० १००/१
कृपासिंधु मुनि दरसन तोरें । चारि पदारथ करतल मोरें ॥ बा० १६३/७
कृपासिंधु मुनि मति करि भोरी । लीन्ही प्रेम परिच्छा मोरी ॥ उ० ११२/२
कृपासिंधु लखि लोग दुखारे । निज सनेहँ सुरपति छल भारे ॥ अ० ३०२/१
कृपासिंधु सनमानि सुबानी । बैठाए समीप गहि पानी ॥ अ० ३००/७
कृपासिंधु सिव परम अगाधा । प्रगट न कहेउ मोर अपराधा ॥ बा० ५७/२
कृषी निरावहिं चतुर किसाना । जिमि बुध तजहिं मोह मद माना ॥ कि० १४/८
कृष्न तनय होइहि पति तोरा । बचनु अन्यथा होइ न मोरा ॥ बा० ८७/२
कृस तनु सीस जटा एक बेनी । जपति हृदयँ रघुपति गुन श्रेनी ॥ सुं० ७/८
कृस सरीर मुनिपट परिधाना । सत समाज नित सुनहिं पुराना ॥ बा० १४२/८

क्रोध कि द्वैतबुद्धि बिनु द्वैत कि बिनु अग्यान ।
मायाबस परिछिन्न जड़ जीव कि ईस समान ॥ उ० १११/० (ख)

क्रोध मनोज लोभ मद माया । छूटहिं सकल राम कीं दाया ॥ अर० ३८/३
क्रोधवंत तब भयउ अनंता । भंजेउ रथ सारथी तुरंता ॥ लं० ५३/४

क्रोधवंत तब रावन लीन्हिसि रथ बैठाइ ।
चला गगनपथ आतुर भयँ रथ हाँकि न जाइ ॥ अर० २८/०

क्रोधवंत लछिमन सुनि काना । कह कपीस अति भयँ अकुलाना ॥ कि० १९/२
क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा । ऊसर बीज बएँ फल जथा ॥ सुं० ५७/४

ख

खग कंक काक सृगाल । कटकटहिं कठिन कराल ॥ अर० १९/१३ छं०
खगपति राम कथा मैं बरनी । स्वमति बिलास त्रास दुख हरनी ॥ उ० १४/६

खगपति सब धरि खाए माया नाग बरूथ ।
माया बिगत भए सब हरषे बानर जूथ ॥ लं० ७४/० (क)

खग मृग परिजन नगरु बनु बलकल बिमल दुकूल ।
नाथ साथ सुरसदन सम परनसाल सुख मूल ॥ अ० ६५/०

खग मृग बिपुल कोलाहल करहीं । बिरहित बैर मुदित मन चरहीं ॥ अ० १२३/८

खग मृग बृंद अनंदित रहहीं । मधुप मधुर गुंजत छबि लहहीं ॥ अर० १३/३
खग मृग मगन देखि छबि होहीं । लिए चोरि चित राम बटोहीं ॥ अ० १२२/८
खग मृग सहज बयरु बिसराई । सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई ॥ उ० २२/२
खग मृग हय गय जाहिं न जोए । राम बियोग कुरोग बिगोए ॥ अ० १५७/७
खगहा करि हरि बाघ बराहा । देखि महिष बृष साजु सराहा ॥ अ० २३५/३
खबरि लीन्ह सब लोग नहाए । कीन्ह प्रनामु त्रिबेनिहिं आए ॥ अ० २०३/३
खबरि लेन हम पठए नाथा । तिन्ह कहि अस महि नायउ माथा ॥ अ० २७१/७
खर आरूढ़ नगन दससीसा । मुंडित सिर खंडित भुज बीसा ॥ सुं० १०/४
खर कुठार मैं अकरुन कोही । आगें अपराधी गुरुद्रोही ॥ बा० २७४/६
खर दूषन तिसिरा कर घाता । सुनि दससीस जरे सब गाता ॥ अर० २१/१२
खर दूषन पहिं गइ बिलपाता । धिग धिग तव पौरुष बल भ्राता ॥ अर० १७/२
खर दूषन बध बहुरि बखाना । जिमि सब मरमु दसानन जाना ॥ उ० ६५/४
खर दूषन बिराध तुम्ह मारा । बधेहु ब्याध इव बालि बिचारा ॥ लं० ८९/५
खर दूषन मोहि सम बलवंता । तिन्हहि को मारइ बिनु भगवंता ॥ अर० २२/२
खर दूषन सुनि लगे पुकारा । छन महुँ सकल कटक उन्ह मारा ॥ अर० २१/११
खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली । बधे सकल अतुलित बलसाली ॥ सुं० २०/९
खरभरु देखि बिकल पुर नारीं । सब मिलि देहिं महीपन्ह गारीं ॥ बा० २६७/१
खरभरु नगर सोचु सब काहू । दुसह दाहु उर मिटा उछाहू ॥ अ० ४८/२
खर सिआर बोलहिं प्रतिकूला । सुनि सुनि होइ भरत मन सूला ॥ अ० १५७/५
खल अघ अगुन साधु गुन गाहा । उभय अपार उदधि अवगाहा ॥ बा० ५/१
खल कामादि निकट नहिं जाहीं । बसइ भगति जाके उर माहीं ॥ उ० ११९/६
खल खंडन मंडन रम्य छमा । पद पंकज सेवित संभु उमा ॥ लं० ११०/२१ छं०
खल तव कठिन बचन सब सहऊँ । नीति धर्म मैं जानत अहऊँ ॥ लं० २१/४
खलन्ह हृदयँ अति ताप बिसेषी । जरहिं सदा पर संपति देखी ॥ बा० ३८/३
खल परिहास होइ हित मोरा । काक कहहिं कलकंठ कठोरा ॥ बा० ८/१
खल बधि तुरत फिरे रघुबीरा । सोह चाप कर कटि तूनीरा ॥ अर० २७/१
खल बिनु स्वारथ पर अपकारी । अहि मूषक इव सुनु उरगारी ॥ उ० १२०/१८
खल मंडलीं बसहु दिनु राती । सखा धरम निबहइ केहि भाँती ॥ सुं० ४५/५
खल मनुजाद द्विजामिष भोगी । पावहिं गति जो जाचत जोगी ॥ लं० ४४/३
खल मल धाम काम रत रावन । गति पाई जो मुनिबर पाव न ॥ लं० ११३/१०
खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू । मिटइ न मलिन सुभाउ अभंगू ॥ बा० ६/४
खाइअ पहिरिअ राज तुम्हारें । सत्य कहें नहिं दोषु हमारें ॥ अ० १८/४
खाईं सिंधु गभीर अति चारिहुँ दिसि फिरि आव ।
कनक कोट मनि खचित दृढ़ बरनि न जाइ बनाव ॥ बा० १७८/० (क)

खाएसि फल अरु बिटप उपारे । रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे ॥ सुं०१७/४
खायउँ फल प्रभु लागी भूँखा । कपि सुभाव तें तोरेउँ रूखा ॥ सुं० २१/३
खाहिं मधुर फल बिटप हलावहिं । लंका सन्मुख सिखर चलावहिं ॥ लं० ४/६
खाहु जाइ फल मूल सुहाए । सुनत भालु कपि जहँ तहँ धाए ॥ लं० ४/४
खेद खिन्न छुद्धित तृषित राजा बाजि समेत ।
खोजत ब्याकुल सरित सर जल बिनु भयउ अचेत ॥ बा० १५७/०
खेद खिन्न मन तर्क बढ़ाई । भयउ मोहबस तुम्हरिहिं नाई ॥ उ० ५८/२
खेलउँ तहूँ बालकन्ह मीला । करउँ सकल रघुनायक लीला ॥ उ० १०९/४
खेलत रहे तहाँ सुधि पाई । आए भरतु सहित हित भाई ॥ बा० २८९/७
खेलहिं बालक मारहिं जाई । दया लागि बलि दीन्ह छोड़ाई ॥ लं० २३/१४
खैंचि धनुष सर सत संधाने । छूटे तीर सरीर समाने ॥ लं० ६९/७
खैंचि सरासन श्रवन लगि छाड़े सर एकतीस ।
रघुनायक सायक चले मानहुँ काल फनीस ॥ लं० १०२/०
खैंचहिं गीध आँत तट भए । जनु बंसी खेलत चित दए ॥ लं० ८७/५
खोजइ सो कि अग्य इव नारी । ग्यानधाम श्रीपति असुरारी ॥ बा० ५०/२
खोजत कतहुँ मिलइ नहिं धूरी । करइ क्रोध जिमि धरमहि दूरी ॥ कि० १४/४
खोजत रहेउँ तोहि सुतघाती । आजु निपाति जुड़ावउँ छाती ॥ लं० ८२/२
खोज मारि रथु हाँकहु ताता । आन उपायँ बनिहि नहिं बाता ॥ अ० ८४/८
खंजन मंजु तिरीछे नयननि । निज पति कहेउ तिन्हहि सियँ सयननि ॥ अ० ११६/७
खंजन सुक कपोत मृग मीना । मधुप निकर कोकिला प्रबीना ॥ अर० २९/१०

ग

गइ मुरुछा तब भूपति जागे । बोलि सुमंत्रु कहन अस लागे ॥ अ० ८०/५
गइ मुरुछा रामहि सुमिरि नृप फिरि करवट लीन्ह ।
सचिव राम आगमन कहि बिनय समय सम कीन्ह ॥ अ० ४३/०
गइ लछिमन रिपु भगिनी जानी । प्रभु बिलोकि बोले मृदु बानी ॥ अर० १६/१२
गई समीप महेस तब हँसि पूछी कुसलात ।
लीन्हि परीछा कवन बिधि कहहु सत्य सब बात ॥ बा० ५५/०
गई बहोर गरीब नेवाजू । सरल सबल साहिब रघुराजू ॥ बा० १२/७
गई भवानी भवन बहोरी । बंदि चरन बोली कर जोरी ॥ बा० २३४/४
गई सहमि सुनि बचन कठोरा । मृगी देखि दव जनु चहु ओरा ॥ अ० ७२/६
गए अवध चर भरत गति बूझि देखि करतूति ।
चले चित्रकूटहि भरतु चार चले तेरहूति ॥ अ० २७१/०
गएँ काल कछु संपति पाई । तहँ पुनि करउँ संभु सेवकाई ॥ उ० १०४/२
गए जनकु रघुनाथ समीपा । सनमाने सब रबिकुल दीपा ॥ अ० २९५/२

गए जानि अंगद हनुमाना । फिरे भालु मर्कट भट नाना ॥ लं० ४५/३
गएँ जाम जुग भूपति आवा । घर घर उत्सव बाज बधावा ॥ बा० १७१/५
गए देव सब निज निज धामा । भूमि सहित मन कहुँ बिश्रामा ॥ बा० १८७/१
गए बिभीषन पास पुनि कहेउ पुत्र बर मागु ।
तेहिं मागेउ भगवंत पद कमल अमल अनुरागु ॥ बा० १७७/०
गए बीति कछु दिन एहि भाँती । प्रमुदित पुरजन सकल बराती ॥ बा० ३११/४
गएँ भवन पूछहिं पितु माता । कहहिं बचन भय कंपित गाता ॥ बा० ९४/६
गए लखनु जहँ जानकिनाथू । भे मन मुदित पाइ प्रिय साथू ॥ अ० ७५/१
गए सकल तुहिनाचल गेहा । गावहिं मंगल सहित सनेहा ॥ बा० ९३/६
गएँ समीप सो अवसि नसाई । असि मन्मथ महेस की नाई ॥ बा० ८९/८
गए सुमंत्रु तब राउर माहीं । देखि भयावन जात डेराहीं ॥ अ० ३७/३
गगन चढ़इ रज पवन प्रसंगा । कीचहिं मिलइ नीच जल संगा ॥ बा० ६/९
गगन पंथ देखी मैं जाता । परबस परी बहुत बिलपाता ॥ कि० ४/४
गगन बिमल संकुल सुर जूथा । गावहिं गुन गंधर्ब बरूथा ॥ बा० १९०/६
गगन ब्रह्मबानी सुनि काना । तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना ॥ बा० १८६/८
गगन समीर अनल जल धरनी । इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी ॥ सुं० ५८/२
गगनोपरि हरि गुन गन गाए । रुचिर बीररस प्रभु मन भाए ॥ लं० ७०/११
गज रथ तुरग दास अरु दासी । धेनु अलंकृत कामदुहा सी ॥ बा० ३२५/४
गज रथ तुरग चिकार कठोरा । गर्जहिं मनहुँ बलाहक घोरा ॥ लं० ८६/४
गज रथ तुरग हेम गो हीरा । दीन्हे नृप नानाबिधि चीरा ॥ बा० १९५/८
गर्जहिं तर्जहिं गगन उड़ाहीं । देखि कटकु भट अति हरषाहीं ॥ अर० १७/८
गर्जहिं तर्जहिं भालु कपीसा । जय रघुबीर कोसलाधीसा ॥ लं० ३८/८
गर्जहिं तर्जहिं सहज असंका । मानहुँ ग्रसन चहत हहिं लंका ॥ सुं० ५४/८
गर्जि परे रिपु कटक मझारी । लागे मर्दै भुज बल भारी ॥ लं० ४३/७
गर्जेउ मरत घोर रव भारी । कहाँ राम रन हतौं पचारी ॥ लं० १०२/४
गर्जेउ मूढ़ महा अभिमानी । धायउ दसहु सरासन तानी ॥ लं० ९२/२
गत ग्रीषम बरषा रितु आई । रहिहउँ निकट सैल पर छाई ॥ कि० ११/८
गननायक बरदायक देवा । आजु लगें कीन्हिउँ तुअ सेवा ॥ बा० २५६/७
गनपति गौरि गिरीसु मनाई । चले असीस पाइ रघुराई ॥ अ० ८०/२
गनी गरीब ग्रामनर नागर । पंडित मूढ़ मलीन उजागर ॥ बा० २७/६
गर्भ न गयहु ब्यर्थ तुम्ह जायहु । निज मुख तापस दूत कहायहु ॥ लं० २०/६
गर्भ स्रवहिं अवनिप रवनि सुनि कुठार गति घोर ।
परसु अछत देखउँ जिअत बैरी भूपकिसोर ॥ बा० २७९/०
गयउँ उजेनी सुनु उरगारी । दीन मलीन दरिद्र दुखारी ॥ उ० १०४/१

गयउ गरुड़ जहँ बसइ भुसुंडा। मति अकुंठ हरि भगति अखंडा ॥ उ० ६२/१
गयउ दसानन मंदिर माहीं। अति बिचित्र कहि जात सो नाहीं ॥ सुं० ४/६
गयउ दूरि घन गहन बराहू। जहँ नाहिन गज बाजि निबाहू ॥ बा० १५६/५
गयउ न गृह मन बहुत गलानी। मिला न राजहि नृप अभिमानी ॥ बा० १५७/४
गयउ निकट तप देखि बिधाता। मागहु बर प्रसन्न मैं ताता ॥ बा० १७६/२

गयउ मोर संदेह सुनेउँ सकल रघुपति चरित।
भयउ राम पद नेह तव प्रसाद बायस तिलक ॥ उ० ६८/० (क) सो०

गयउ सभा दरबार तब सुमिरि राम पद कंज।
सिंह ठवनि इत उत चितव धीर बीर बल पुंज ॥ लं० १८/०

गयउ सभाँ मन नेकु न मुरा। बालितनय अतिबल बाँकुरा ॥ लं० १८/७
गयउ सहमि नहिं कछु कहि आवा। जनु सचान बन झपटेउ लावा ॥ अ० २८/५
गरइ गलानि कुटिल कैकेई। काहि कहै केहि दूषनु देई ॥ अ० २७२/१
गरजहिं गज घंटा धुनि घोरा। रथ रव बाजि हिंस चहु ओरा ॥ बा० ३००/१
गरल कंठ उर नर सिर माला। असिव बेष सिवधाम कृपाला ॥ बा० ९१/४
गरल सुधा रिपु करहिं मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई ॥ सुं० ४/२
गरल सुधासम अरि हित होई। तेहि मनि बिनु सुख पाव न कोई ॥ उ० ११९/७
गरुड़ गिरा सुनि हरषेउ कागा। बोलेउ उमा परम अनुरागा ॥ उ० ९४/१
गरुड़ महाग्यानी गुन रासी। हरि सेवक अति निकट निवासी ॥ उ० ५४/३
गरुड़ सुमेरु रेनु सम ताही। राम कृपा करि चितवा जाही ॥ सुं० ४/३
गलीं सकल अरगजाँ सिंचाईं। जहँ तहँ चौकें चारु पुराईं ॥ बा० ३४३/५
गवने तुरत तहाँ रिषिराई। जहाँ स्वयंबर भूमि बनाई ॥ बा० १३२/४
गवने भरत पयादेहिं पाए। कोतल संग जाहिं डोरिआए ॥ अ० २०२/४
गहइ छाँह सक सो न उड़ाई। एहि बिधि सदा गगनचर खाई ॥ सुं० २/३
गहत चरन कह बालिकुमारा। मम पद गहें न तोर उबारा ॥ लं० ३४/२
गहसि न राम चरन सठ जाई। सुनत फिरा मन अति सकुचाई ॥ लं० ३४/३
गहिसि पूँछ कपि सहित उड़ाना। पुनि फिरि भिरेउ प्रबल हनुमाना ॥ लं० ९४/५
गह सिसु बच्छ अनल अहि धाई। तहँ राखइ जननी अरगाई ॥ अर० ४२/६

गहहु घाट भट समिटि सब लेउँ मरम मिलि जाइ।
बूझि मित्र अरि मध्य गति तस तब करिहउँ आइ ॥ अ० १९२/०

गहि कर पादप उपल पहारा। डारेन्हि ता पर एकहिं बारा ॥ लं० ८१/२
गहि गिरि तरु अकास कपि धावहिं। देखहिं तेहि न दुखित फिरि आवहिं ॥ लं० ७२/५
गहि गिरि निसि नभ धावत भयऊ। अवधपुरी ऊपर कपि गयऊ ॥ लं० ५७/८

गहि गिरि पादप उपल नख धाए कीस रिसाइ।
चले तमीचर बिकलतर गढ़ पर चढ़े पराइ ॥ लं० ७४/० (ख)

गहि गिरीस कुस कन्या पानी । भवहि समरपीं जानि भवानी ॥ बा० १००/२
गहि गुन पय तजि अवगुन बारी । निज जस जगत कीन्हि उजिआरी ॥ अ० २३१/७
गहि पद कमल अनुज कर जोरी । कहेउ नाथ कछु मोहि न खोरी ॥ अर० २९/४
गहि पद डारहिं सागर माहीं । मकर उरग झष धरि धरि खाहीं ॥ लं० ४६/८
गहि पद बिनय कीन्ह बैठारी । जनि दिनकर कुल होसि कुठारी ॥ अ० ३३/६
गहि पद भरत मातु सब राखी । रहीं रानि दरसन अभिलाषी ॥ अ० १६९/२
गहि पद लगे सुमित्रा अंका । जनु भेंटी संपति अति रंका ॥ अ० २४४/३
गहि भूमि पार्‌यो लात मार्‌यो बालिसुत प्रभु पहिं गयो ।
संभारि उठि दसकंठ घोर कठोर रव गर्जत भयो ॥
करि दाप चाप चढ़ाइ दस संधानि सर बहु बरषई ।
किए सकल भट घायल भयाकुल देखि निज बल हरषई ॥ लं० ९६/१ छं०
गहेउ चरन गहि भूमि पछारा । अति लाघवँ उठि पुनि तेहि मारा ॥ लं० ६५/७
गहे चरन सिय सहित बहोरी । बोले रामु कमल कर जोरी ॥ अ० ८/४
गहे न जाहिं करन्हि पर फिरहीं । जनु जुग मधुप कमल बन चरहीं ॥ लं० ९७/८
गहे भरत पुनि प्रभु पद पंकज । नमत जिन्हहि सुर मुनि संकर अज ॥ उ० ४/६
गाउँ जाति गुहँ नाउँ सुनाई । कीन्ह जोहारु माथ महि लाई ॥ अ० १९२/८
गा चह पार जतुन हियँ हेरा । पावति नाव न बोहितु बेरा ॥ अ० २५६/३
गाथे महामनि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं ।
पुन नारि सुर सुंदरीं बरहि बिलोकि सब तिन तोरहीं ॥
मनि बसन भूषन वारि आरति करहिं मंगल गावहीं ।
सुर सुमन बरिसहिं सूत मागध बंदि सुजसु सुनावहीं ॥ बा० ३२६/१ छं०
गाधितनय मन चिंता ब्यापी । हरि बिनु मरहिं न निसिचर पापी ॥ बा० २०५/५
गाधिसूनु सब कथा सुनाई । जेहि प्रकार सुरसरि महि आई ॥ बा० २११/२
गाधिसूनु कह हृदयँ हँसि मुनिहि हरिअरइ सूझ ।
अयमय खाँड़ न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ ॥ बा० २७५/०
गान निसान कोलाहलु भारी । प्रेम प्रमोद मगन नर नारी ॥ बा० ३२२/६
गारीं मधुर स्वर देहिं सुंदरि बिंग्य बचन सुनावहीं ।
भोजनु करहिं सुर अति बिलंबु बिनोदु सुनि सचु पावहीं ॥
जेवँत जो बढ़्यो अनंदु सो मुख कोटिहूँ न परै कह्यो ।
अचवाँइ दीन्हे पान गवने बास जहँ जाको रह्यो ॥ बा० ९८/१ छं०
गारीं सकल कैकइहि देहीं । नयन बिहीन कीन्ह जग जेहीं ॥ अ० १५५/७
गावत राम चरित मृदु बानी । प्रेम सहित बहु भाँति बखानी ॥ अर० ४०/९
गावहिं गीत मनोहर नाना । अति आनंदु न जाइ बखाना ॥ बा० ३००/५
गावहिं छबि अवलोकि सहेली । सियँ जयमाल राम उर मेली ॥ बा० २६३/८

गावहिं मंगल कोकिलबयनीं । बिधुबदनीं मृगसावकनयनीं ॥ अ० ७/७
गावहिं मंगल मंजुल बानीं । सुनि कल रव कलकंठि लजानीं ॥ बा० २९६/३
गावहिं सुंदरि मंगल गीता । लै लै नामु रामु अरु सीता ॥ बा० २९६/७
गावहिं सुनहिं सदा मम लीला । हेतु रहित परहित रत सीला ॥ अर० ४५/७
गिरत सँभारि उठा दसकंधर । भूतल परे मुकुट अति सुंदर ॥ लं० ३१/५
गिरा अरथ जल बीचि सम कहिअत भिन्न न भिन्न ।
बंदउँ सीता राम पद जिन्हहि परम प्रिय खिन्न ॥ बा० १८/०
गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी । प्रक़ट न लाज निसा अवलोकी ॥ बा० २५८/१
गिरा मुखर तन अरध भवानी । रति अति दुखित अतनु पति जानी ॥ बा० २४६/५
गिरि कानन जहँ तहँ भरि पूरी । रहे निज निज अनीक रचि रूरी ॥ बा० १८७/५
गिरिजा कहेउँ सो सब इतिहासा । मैं जेहि समय गयउँ खग पासा ॥ उ० ५७/१
गिरिजा चकित भई सुनि बानी । नारद बिष्नुभगत पुनि ग्यानी ॥ बा० १२३/६
गिरिजा जासु नाम जपि मुनि काटहिं भव पास ।
सो कि बंध तर आवइ ब्यापक बिस्व निवास ॥ लं० ७३/०
गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई । बार बार प्रभु निज मुख गाई ॥ उ० ४९/९
गिरिजा रघुपति कै यह रीती । संतत करहिं प्रनत पर प्रीती ॥ लं० २/६
गिरिजा सुनहु बिसद यह कथा । मैं सब कही मोरि मति जथा ॥ उ० ५१/१
गिरिजा सुनहु राम कै लीला । सुर हित दनुज बिमोहनसीला ॥ बा० ११२/८
गिरिजा संत समागम सम न लाभ कछु आन ।
बिनु हरि कृपा न होइ सो गावहिं बेद पुरान ॥ उ० १२५/० (ख)
गिरि तरु नख आयुध सब बीरा । हरि मारग चितवहिं मति धीरा ॥ बा० १८७/४
गिरि ते उतरि पवनसुत आवा । सब कहुँ लै सोइ बिबर देखावा ॥ कि० २३/७
गिरि पर चढ़ि लंका तेहिं देखी । कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेषी ॥ सुं० २/१०
गिरि पर बैठे कपिन्ह निहारी । कहि हरि नाम दीन्ह पट डारी ॥ अर० २८/२५
गिरि बन नदीं ताल छबि छाए । दिन दिन प्रति अति होहिं सुहाए ॥ अर० १३/२
गिरिबर गुहाँ पैठ सो जाई । तब बालीं मोहि कहा बुझाई ॥ कि० ५/५
गिरिबरु दीख जनकपति जबहीं । करि प्रनामु रथ त्यागेउ तबहीं ॥ अ० २७४/२
गिरि सरि सिंधु भार नहिं मोही । जस मोहि गरुअ एक परद्रोही ॥ बा० १८३/५
गिरि सुमेर उत्तर दिसि दूरी । नील सैल एक सुंदर भूरी ॥ उ० ५५/७
गिरिहहिं रसना संसय नाहीं । सिरन्हि समेत समर महि माहीं ॥ लं० ३२/९
गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका । तहँ रह रावन सहज असंका ॥ कि० २७/११
गिरि त्रिकूट एक सिंधु मझारी । बिधि निर्मित दुर्गम अति भारी ॥ बा० १७७/५
गीध अधम खग आमिष भोगी । गति दीन्ही जो जाचत जोगी ॥ अर० ३२/२
गीध देह तजि धरि हरि रूपा । भूषन बहु पट पीत अनूपा ॥ अर० ३१/१

गीधराज सुनि आरत बानी । रघुकुलतिलक नारि पहिचानी ॥ अर० २८/७
गीधराज सैं भेंट भइ बहु बिधि प्रीति बढ़ाइ ।
गोदावरी निकट प्रभु रहे परन गृह छाइ ॥ अर० १३/०
गुन अवगुन जानत सब कोई । जो जेहि भाव नीक तेहि सोई ॥ बा० ४/९
गुन कृत सन्यपात नहिं केही । कोउ न मान मद तजेउ निबेही ॥ उ० ७०/१
गुन ग्यान निधान अमान अजं । नित राम नमामि बिभुं बिरजं ॥ लं० ११०/९ छं०
गुन तुम्हार समुझइ निज दोषा । जेहि सब भाँति तुम्हार भरोसा ॥ अ० १३०/३
गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी । भजहिं नारि पर पुरुष अभागी ॥ उ० ९८/४
गुन सागर नागर नर जोऊ । अलप लोभ भल कहइ न कोऊ ॥ सुं० ३७/८
गुन सागर नागर बर बीरा । सुंदर स्यामल गौर सरीरा ॥ बा० २४०/२
गुन सील कृपा परमायतनं । प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं ॥ उ० १३/१९ छं०
गुनह लखन कर हम पर रोषू । कतहुँ सुधाइहु ते बड़ दोषू ॥ बा० २८०/५
गुनागार संसार दुख रहित बिगत संदेह ।
तजि मम चरन सरोज प्रिय तिन्ह कहुँ देह न गेह ॥ अर० ४५/०
गुनातीत सचराचर स्वामी । राम उमा सब अंतरजामी ॥ अर० ३८/१
गुर बसिष्ठ कहँ गयउ हँकारा । आए द्विजन सहित नृपद्वारा ॥ बा० १९२/७
गुर सुर संत पितर महिदेवा । करइ सदा नृप सब कै सेवा ॥ बा० १५४/४
गुर अनुरागु भरत पर देखी । राम हृदयँ आनंदु बिसेषी ॥ अ० २५८/१
गुर आगमनु सुनत रघुनाथा । द्वार आइ पद नायउ माथा ॥ अ० ८/२
गुर कें बचन प्रतीति न जेही । सपनेहुँ सुगम न सुख सिधि तेही ॥ बा० ७९/८
गुर के बचन सचिव अभिनंदनु । सुने भरत हिय हित जनु चंदनु ॥ अ० १७५/७
गुर के बचन सुरति करि राम चरन मनु लाग ।
रघुपति जस गावत फिरउँ छन छन नव अनुराग ॥ उ० ११०/० (क)
गुर गुरतिय पद बंदि प्रभु सीता लखन समेत ।
फिरे हरष बिसमय सहित आए परन निकेत ॥ अ० ३२०/०
गुर गोसाइँ साहिब सिय रामू । लागत मोहि नीक परिनामू ॥ अ० २६०/८
गुरगृहँ गए पढ़न रघुराई । अलप काल बिद्या सब आई ॥ बा० २०३/४
गुर गृह गयउ तुरत महिपाला । चरन लागि करि बिनय बिसाला ॥ बा० १८८/२
गुर गृह बसहुँ रामु तजि गेहू । नृप सन अस बरु दूसर लेहू ॥ अ० ४९/४
गुरजन लाज समाजु बड़ देखि सीय सकुचानि ।
लागि बिलोकन सखिन्ह तन रघुबीरहि उर आनि ॥ बा० २४८/०
गुरतिय पद बंदे दुहु भाईं । सहित बिप्रतिय जे सँग आईं ॥ अ० २४४/१
गुर नित मोहि प्रबोध दुखित देखि आचरन मम ।
मोहि उपजइ अति क्रोध दंभिहि नीति कि भावई ॥ उ० १०५/० (ख) सो०

गुर नृप भरत सभा अवलोकी। सकुचि राम फिरि अवनि बिलोकी॥ अ० ३१२/३
गुरपतिनिहि मुनितियन्ह समेता। मिली पेमु कहि जाइ न जेता॥ अ० २४५/२
गुर पद कमल प्रनामु करि बैठे आयसु पाइ।
बिप्र महाजन सचिव सब जुरे सभासद आइ॥ अ० २५३/०
गुर पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान।
चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान॥ अर० ३५/०
गुर पद प्रीति नीति रत जेई। द्विज सेवक अधिकारी तेई॥ उ० १२७/७
गुर पद बंदि सहित अनुरागा। राम मुनिन्ह सन आयसु मागा॥ बा० २५४/४
गुर पितु मातु न जानउँ काहू। कहउँ सुभाउ नाथ पतिआहू॥ अ० ७१/४
गुर पितु मातु बचन अनुसारी। खल दलु दलन देव हितकारी॥ अ० २५३/४
गुर पितु मातु बंधु सुर साईं। सेइअहिं सकल प्रान की नाईं॥ अ० ७३/५
गुर पितु मातु महेस भवानी। प्रनवउँ दीनबंधु दिन दानी॥ बा० १४/३
गुर पितु मातु स्वामि हित बानी। सुनि मन मुदित करिअ भलि जानी॥ अ० १७६/३
गुर प्रसन्न साहिब अनुकूला। मिटी मलिन मन कलपित सूला॥ अ० २६६/२
गुर प्रसाद सब जानिअ राजा। कहिअ न आपन जानि अकाजा॥ बा० १६३/२
गुर बसिष्ट कुलपूज्य हमारे। इन्ह की कृपाँ दनुज रन मारे॥ उ० ७/६
गुर बसिष्ट द्विज लिए बुलाई। आजु सुघरी सुदिन समुदाई॥ उ० ९/४
गुर बिनु भव निधि तरइ न कोई। जौं बिरंचि संकर सम होई॥ उ० ९२/५
गुर बिबेक सागर जगु जाना। जिन्हहि बिस्व कर बदर समाना॥ अ० १८१/१
गुर रघुपति सब मुनि मन माहीं। मुदित भए पुनि पुनि पुलकाहीं॥ बा० २५३/३
गुर सन कहब सँदेसु बार बार पद पदुम गहि।
करब सोइ उपदेसु जेहिं न सोच मोहि अवधपति॥ अ० १५१/० सो०
गुर सन कहि बरषासन दीन्हे। आदर दान बिनय बस कीन्हे॥ अ० ७९/३
गुर सन कहेउ करिअ प्रभु सोई। रामहि भरतहि भेट न होई॥ अ० २१६/८
गुर समाज भाइन्ह सहित राम राजु पुर होउ।
अछत राम राजा अवध मरिअ माग सबु कोउ॥ अ० २७३/०
गुर सिष बधिर अंध का लेखा। एक न सुनइ एक नहिं देखा॥ उ० ९८/६
गुर श्रुति संमत धरम फलु पाइअ बिनहिं कलेस।
हठ बस सब संकट सहे गालव नहुष नरेस॥ अ० ६१/०
गुरहि देखि सानुज अनुरागे। दंड प्रनाम करन प्रभु लागे॥ अ० २४२/३
गुरहि पूछि करि कुल बिधि राजा। चले संग मुनि साधु समाजा॥ बा० ३१२/८
गुरहि प्रनामु मनहिं मन कीन्हा। अति लाघवँ उठाइ धनु लीन्हा॥ बा० २६०/५
गुरहि सुनावँ चढ़ाइ सुहाईं। नईं नाव सब मातु चढ़ाईं॥ अ० २०१/८
गुरु जिमि मूढ़ करसि मम बोधा। कहु जग मोहि समान को जोधा॥ अर० २५/२

गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन । नयन अमिअ दृग दोष बिभंजन ॥ बा० १/१
गुरु पितु मातु स्वामि सिख पालें । चलेहुँ कुमग पग परहिं न खालें ॥ अ० ३१४/५
गुरु पितु मातु प्रजा परिवारू । सब कहुँ परइ दुसह दुख भारू ॥ अ० ७०/४
गुरु पितु मातु बंधु पति देवा । सब मोहि कहँ जानै दृढ़ सेवा ॥ अर० १५/१०
गुरु सिख देइ राय पहिं गयऊ । राम हृदयँ अस बिसमउ भयऊ ॥ अ० ९/४
गुहँ बोलाइ पाहरू प्रतीती । ठावँ ठावँ राखे अति प्रीती ॥ अ० ८९/३
गुहँ सँवारि साँथरी डसाई । कुस किसलयमय मृदुल सुहाई ॥ अ० ८८/७
गुह सारथिहि फिरेउ पहुँचाई । बिरहु बिषादु बरनि नहिं जाई ॥ अ० १४३/१
गूढ़उ तत्त्व न साधु दुरावहिं । आरत अधिकारी जहँ पावहिं ॥ बा० १०९/२

गूढ़ कपट प्रिय बचन सुनि तीय अधरबुधि रानि ।
सुरमाया बस बैरनिहि सुहृद जानि पतिआनि ॥ अ० १६/०

गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी । भयउ बिलंबु मातु भय मानी ॥ बा० २३३/७
गूढ़ सनेह भरत मन माहीं । रहें नीक मोहि लागत नाहीं ॥ अ० २८३/४
गूलरि फल समान तव लंका । बसहु मध्य तुम्ह जंतु असंका ॥ लं० ३३/३
गे नहाइ गुर पहिं रघुराई । बंदि चरन बोले रुख पाई ॥ अ० २८९/३
गै जननी सिसु पहिं भयभीता । देखा बाल तहाँ पुनि सूता ॥ बा० २००/५
गै निसि बहुत सयन अब कीजे । मोहि तोहि भूप भेंट दिन तीजे ॥ बा० १६८/७
गै श्रम सकल सुखी नृप भयऊ । निज आश्रम तापस लै गयऊ ॥ बा० १५८/१
गो गोचर जहँ लगि मन जाई । सो सब माया जानेहु भाई ॥ अर० १४/३
गोद राखि कराव पय पाना । रघुपति चरित ललित कर गाना ॥ उ० ८७/८
गोद राखि पुनि हृदयँ लगाए । स्रवत प्रेमरस पयद सुहाए ॥ अ० ५१/४
गो द्विज धेनु देव हितकारी । कृपा सिंधु मानुष तनुधारी ॥ सुं० ३८/३
गोपद जल बूड़हिं घटजोनी । सहज छमा बरु छाड़ै छोनी ॥ अ० २३१/२

गोतम तिय गति सुरति करि नहिं परसति पग पानि ।
मन बिहसे रघुबंसमनि प्रीति अलौकिक जानि ॥ बा० २६५/०

गौतम नारि श्राप बस उपल देह धरि धीर ।
चरन कमल रज चाहति कृपा करहु रघुबीर ॥ बा० २१०/०

गौर किसोर बेषु बर काछें । कर सर चाप राम के पाछें ॥ बा० २२०/७
गौर सरीर स्याम मन माहीं । कालकूटमुख पयमुख नाहीं ॥ बा० २७६/७
गौरि सरीर भूति भल भ्राजा । भाल बिसाल त्रिपुंड बिराजा ॥ बा० २६७/४
गौरि गिरा सुनि सरल सुहाई । बोले सिव सादर सुख पाई ॥ उ० ५४/६
गंग अवनि थल तीनि बड़ेरे । एहिं किए साधु समाज घनेरे ॥ अ० २८६/४
गंग गौरि सम सब सनमानीं । देहिं असीस मुदित मृदु बानीं ॥ अ० २४४/२
गंग बचन सुनि मंगल मूला । मुदित सीय सुरसरि अनुकूला ॥ अ० १०३/१

गंग सकल मुद मंगल मूला । सब सुख करनि हरनि सब सूला ॥ अ० ८६/४
गावँ गावँ अस होइ अनंदू । देखि भानुकुल कैरव चंदू ॥ अ० १२१/१
गुंजत मंजु मत्त रस भृंगा । कूजत कल बहुबरन बिहंगा ॥ बा० २११/७
गुंजत मधुकर मुखर अनूपा । सुंदर खग रव नाना रूपा ॥ कि० १६/३
गुंजत मधुकर मुखर मनोहर । मारुत त्रिबिध सदा बह सुंदर ॥ उ० २७/३
गुंज मंजुतर मधुकर श्रेनी । त्रिबिध बयारि बहइ सुख देनी ॥ अ० १३६/८
गृह कारज नाना जंजाला । ते अति दुर्गम सैल बिसाला ॥ बा० ३७/८
गृह गृह बाज बधाव सुभ प्रगटे सुषमा कंद ।
हरषवंत सब जहँ तहँ नगर नारि नर बृंद ॥ बा० १९४/०
ग्रंथि न छूटि मिटा सो प्रकासा । बुद्धि बिकल भइ बिषय बतासा ॥ उ० ११७/१४
ग्रह ग्रहीत पुनि बात बस तेहि पुनि बीछी मार ।
तेहि पिआइअ बारुनी कहहु काह उपचार ॥ अ० १८०/०
ग्रह तिथि नखतु जोग बर बारू । लगन सोधि बिधि कीन्ह बिचारु ॥ बा० ३११/६
ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग ।
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग ॥ बा० ७/० (क)
ग्राम निकट जब निकसहिं जाई । देखहिं दरसु नारि नर धाई ॥ अ० १०८/७
ग्रीष्म दुसह राम बनगवनू । पंथकथा खर आतप पवनू ॥ बा० ४१/४
ग्यान अखंड एक सीताबर । माया बस्य जीव सचराचर ॥ उ० ७७/४
ग्यान अगम प्रत्यूह अनेका । साधन कठिन न मन कहुँ टेका ॥ उ० ४४/३
ग्यान गिरा गोतीत अज माया मन गुन पार ।
सोइ सच्चिदानंद घन कर नर चरित उदार ॥ उ० २५/०
ग्यान दया दम तीरथ मज्जन । जहँ लगि धर्म कहत श्रुति सज्जन ॥ उ० ४८/२
ग्यान निधान अमान मानप्रद । पावन सुजस पुरान बेद बद ॥ उ० ३३/५
ग्यान निधान सुजान सुचि धरम धीर नरपाल ।
तुम्ह बिनु असमंजस समन को समरथ एहि काल ॥ अ० २९१/०
ग्यान पंथ कृपान कै धारा । परत खगेस होइ नहिं बारा ॥ उ० ११८/१
ग्यान बिबेक बिरति बिग्याना । मुनि दुर्लभ गुन जे जग नाना ॥ उ० ८३/१
ग्यान बिरति बिग्यान निवासा । रघुनायक के तुम्ह प्रिय दासा ॥ उ० ९३/२
ग्यान बिराग जोग बिग्याना । ए सब पुरुष सुनहु हरिजाना ॥ उ० ११४/१५
ग्यान बिराग सकल गुन अयना । सो प्रभु मैं देखब भरि नयना ॥ बा० २०५/८
ग्यानवंत कोटिक महँ कोऊ । जीवनमुक्त सकृत जग सोऊ ॥ उ० ५३/४
ग्यान मान जहँ एकउ नाहीं । देख ब्रह्म समान सब माहीं ॥ अर० १४/७
ग्यानहि भगतिहि अंतर केता । सकल कहहु प्रभु कृपा निकेता ॥ बा० ११४/११
ग्यानी तापस सूर कबि कोबिद गुन आगार ।

केहि कै लोभ बिडंबना कीन्हि न एहिं संसार ॥ उ० ७०/० (क)
ग्यानी भगत सिरोमनि त्रिभुवनपति कर जान ।
ताहि मोह माया नर पावँर करहिं गुमान ॥ उ० ६२/० (क)

घ

घटइ बढ़इ बिरहिनि दुखदाई । ग्रसइ राहु निज संधिहिं पाई ॥ बा० २३७/१
घटाटोप करि चहुँ दिसि घेरी । मुखहिं निसान बजावहिं भेरी ॥ लं० ३८/१०
घन घमंड नभ गरजत घोरा । प्रिया हीन डरपत मन मोरा ॥ कि० १३/१
घर घर करहिं जागरन नारीं । देहिं परसपर मंगल गारीं ॥ बा० ३५७/२
घर घर साजहिं बाहन नाना । हरषु हृदयँ परभात पयाना ॥ अ० १८५/१
घर पुर देस राखि रखवारे । हय गय रथ बहु जान सँवारे ॥ अ० २७१/४
घर मसान परिजन जनु भूता । सुत हित मीत मनहुँ जमदूता ॥ अ० ८२/७
घरी कुघरी समुझि जियँ देखू । बेगि प्रिया परिहरहि कुबेषू ॥ अ० २५/८
घायल बीर बिराजहिं कैसे । कुसुमित किंसुक के तरु जैसे ॥ लं० ५३/१
घुरुघुरात हय आरौ पाएँ । चकित बिलोकत कान उठाएँ ॥ बा० १५५/८
घुर्मि घुर्मि घायल महि परहीं । उठि संभारि सुभट पुनि लरहीं ॥ लं० ६७/६
घेरेन्हि नगर निसान बजाई । बिबिध भाँति नित होइ लराई ॥ बा० १७४/५
घोर जंतु सम पुर नर नारी । डरपहिं एकहि एक निहारी ॥ अ० ८२/६
घोर धार भृगुनाथ रिसानी । घाट सुबद्ध राम बर बानी ॥ बा० ४०/४
घोर निसाचर बिकट भट समर गनहिं नहिं काहु ।
मारे सहित सहाय किमि खल मारीच सुबाहु ॥ बा० ३५६/०
घंट घंटि धुनि बरनि न जाहीं । सरव करहिं पाइक फहराहीं ॥ बा० ३०१/७

च

चक चकोर चातक सुक पिक गन । कूजत मंजु मराल मुदित मन ॥ अ० २३५/६
चकित चितव मुदरी पहिचानी । हरष बिषाद हृदयँ अकुलानी ॥ सुं० १२/२
चकित बिप्र सब सुनि नभबानी । भूप गयउ जहँ भोजन खानी ॥ बा० १७३/६
चक्क चक्कि जिमि पुर नर नारी । चहत प्रात उर आरत भारी ॥ अ० १८६/१
चक्रबर्ति के लच्छन तोरें । देखत दया लागि अति मोरें ॥ बा० १५८/४
चक्रबाक बक खग समुदाई । देखत बनइ बरनि नहिं जाई ॥ अर० ३९/३
चक्रबाक बक हंस उड़ाहीं । बहुतक खग प्रबिसहिं तेहि माहीं ॥ कि० २३/६
चक्रबाक मन दुख निसि पेखी । जिमि दुर्जन पर संपति देखी ॥ कि० १६/४
चढ़ु मम सायक सैल समेता । पठवौं तोहि जहँ कृपानिकेता ॥ लं० ५९/६
चढ़ि गिरि सिखर चहूँ दिसि देखा । भूमि बिबर एक कौतुक पेखा ॥ कि० २३/५
चढ़ि चढ़ि रथ बाहेर नगर लागी जुरन बरात ।
होत सगुन सुंदर सबहि जो जेहि कारज जात ॥ बा० २९९/०

चढ़ि बर बाजि बार एक राजा । मृगया कर सब साजि समाजा ॥ बा० १५५/३
चढ़ि रथ सीय सहित दोउ भाई । चले हृदयँ अवधहि सिरु नाई ॥ अ० ८२/२
चढ़ि बिमान सुनु सखा बिभीषन । गगन जाइ बरषहु पट भूषन ॥ लं० ११६/५
चढ़ी अटारिन्ह देखहिं नारीं । लिएँ आरती मंगल थारीं ॥ बा० ३००/४
चढ़े दुर्ग पुनि जहँ तहँ बानर । जय रघुबीर प्रताप दिवाकर ॥ लं० ४१/२
चतुरंगिनी सेन सँग लीन्हें । बिचरत सबहि चुनौती दीन्हें ॥ अर० ३७/१०
चतुर गँभीर राम महतारी । बीचु पाइ निज बात सँवारी ॥ अ० १७/१
चतुर सखीं लखि कहा बुझाई । पहिरावहु जयमाल सुहाई ॥ बा० २६३/५
चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं । जे मनि लागि सुजतन कराहीं ॥ उ० ११९/१०
चतुरानन पहिं जाहु खगेसा । सोइ करेहु जेहि होइ निदेसा ॥ उ० ५८/८
चर अरु अचर नाग नर देवा । सकल करहिं पद पंकज सेवा ॥ बा० १०६/८
चरन चाँपि कहि कहि मृदु बानी । जननीं सकल भरत सनमानी ॥ अ० १९७/३
चरन कमल बंदउँ तिन्ह केरे । पुरवहुँ सकल मनोरथ मेरे ॥ बा० १३/३
चरन कमल मृदु मंजु तुम्हारे । मारग अगम भूमिधर भारे ॥ अ० ६१/६
चरन कमल रज कहुँ सबु कहई । मानुष करनि मूरि कछु अहई ॥ अ० ९९/४
चरन नलिन उर धरि गृह आवा । प्रभु सुभाउ परिजनन्हि सुनावा ॥ उ० १९/५
चरन नाइ सिरु अंचलु रोपा । सुनहु बचन पिय परिहरि कोपा ॥ लं० ५/४
चरन नाइ सिरु बिनती कीन्ही । लछिमन अभय बाँह तेहि दीन्ही ॥ कि० १९/१
चरन पखारि कीन्हि अति पूजा । मो सम आजु धन्य नहिं दूजा ॥ बा० २०६/३
चरनपीठ करुनानिधान के । जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के ॥ अ० ३१५/५
चरन राम तीरथ चलि जाहीं । राम बसहु तिन्ह के मन माहीं ॥ अ० १२८/५
चरन रेख रज आँखिन्ह लाई । बनइ न कहत प्रीति अधिकाई ॥ अ० १९८/२
चरन सरोज धूरि धरि सीसा । मुदित महीपति पाइ असीसा ॥ बा० ३३८/७
चरफराहिं मग चलहिं न घोरे । बन मृग मनहुँ आनि रथ जोरे ॥ अ० १४२/५
चरम देह द्विज कै मैं पाई । सुर दुर्लभ पुरान श्रुति गाई ॥ उ० १०९/३
चरित राम के सगुन भवानी । तर्कि न जाहिं बुद्धि मन बानी ॥ लं० ७३/१
चरित सिंधु गिरिजा रमन बेद न पावहिं पारु ।
बरनै तुलसीदासु किमि अति मतिमंद गवाँरु ॥ बा० १०३/०
चलइ बहुत सो बीर न होई । पठवा खबरि लेन हम सोई ॥ लं० २२/१०
चलत कटक दिगसिंधुर डगहीं । छुभित पयोधि कुधर डगमगहीं ॥ लं० ७८/६
चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं । प्रसन्नानन नीलकण्ठं दयालं ॥ उ० १०७/७
चलत कुपंथ बेद मग छाँड़े । कपट कलेवर कलि मल भाँड़े ॥ बा० ११/२
चलत गगन भै गिरा सुहाई । जय महेस भलि भगति दृढ़ाई ॥ बा० ५६/४
चलत दसानन डोलति अवनी । गर्जत गर्भ स्रवहिं सुर रवनी ॥ बा० १८१/५

चलत न देखन पायउँ तोही। तात न रामहि सौंपेहु मोही ॥ अ० १५९/५
चलत पयादें खात फल पिता दीन्ह तजि राजु।
जात मनावन रघुबरहि भरत सरिस को आजु ॥ अ० २२२/०
चलत प्रात लखि निरनउ नीके। भरतु प्रानप्रिय भे सबही के ॥ अ० १८४/२
चलत महाधुनि गर्जेसि भारी। गर्भ स्रवहिं सुनि निसिचर नारी ॥ सुं० २७/१
चलत मार अस हृदयँ बिचारा। सिव बिरोध ध्रुव मरनु हमारा ॥ बा० ८३/४
चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही। रघुपति हृदयँ लाइ सोइ लीन्ही ॥ सुं० ३०/१
चलत राम सब पुर नर नारी। पुलक पूरि तन भए सुखारी ॥ बा० २५४/६
चलत रामु लखि अवध अनाथा। बिकल लोग सब लागे साथा ॥ अ० ८२/३
चलत बिमानु कोलाहल होई। जय रघुबीर कहइ सबु कोई ॥ लं० ११८/३
चलत होहिं अति असुभ भयंकर। बैठहिं गीध उड़ाइ सिरन्ह पर ॥ लं० ८५/१
चलन चहत बन जीवननाथू। केहि सुकृती सन होइहि साथू ॥ अ० ५७/३
चल न ब्रह्मकुल सन बरिआई। सत्य कहउँ दोउ भुजा उठाई ॥ बा० १६४/५
चलहु बेगि रघुबीर बराता। सुनत पुलक पूरे दोउ भ्राता ॥ बा० २९७/२
चलहु बेगि सुनि गुर बचन भलेहिं नाथ सिरु नाइ।
भूपति गवने भवन तब दूतन्ह बासु देवाइ ॥ बा० २९४/०
चलहु सफल श्रम सब कर करहू। राम देहु गौरव गिरिबरहू ॥ अ० १३१/८
चला अकेल जान चढ़ि तहवाँ। बस मारीच सिंधु तट जहवाँ ॥ अर० २२/७
चला इंद्रजित अतुलित जोधा। बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा ॥ सुं० १८/३
चला कटकु को बरनैं पारा। गर्जहिं बानर भालु अपारा ॥ सुं० ३४/८
चला कटकु प्रभु आयसु पाई। को कहि सक कपि दल बिपुलाई ॥ लं० ३/९
चला न अचल रहा रथ रोपी। रन दुर्मद रावन अति कोपी ॥ लं० ८१/४
चला रुधिर रघुनायक जाना। सींक धनुष सायक संधाना ॥ अर० ०/८
चलिहि बरात सुनत सब रानीं। बिकल मीनगन जनु लघु पानीं ॥ बा० ३३३/२
चलि ल्याइ सीतहि सखीं सादर सजि सुमंगल भामिनीं।
नवसप्त साजें सुंदरीं सब मत्त कुंजर गामिनीं ॥
कल गान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिल लाजहीं।
मंजीर नूपुर कलित कंकन ताल गति बर बाजहीं ॥ बा० ३२१/१ छं०
चली अग्र करि प्रिय सखि सोई। प्रीति पुरातन लखइ न कोई ॥ बा० २२८/८
चली तमीचर अनी अपारा। बहु गज रथ पदाति असवारा ॥ लं० ८५/३
चली बरात निसान बजाई। मुदित छोट बड़ सब समुदाई ॥ बा० ३४२/७
चली बलीमुख सेन पराई। अति भय त्रसित न कोउ समुहाई ॥ लं० ६४/१०
चलीं संग लै सखीं सयानी। गावत गीत मनोहर बानी ॥ बा० २४७/१
चलीं सती सिव आयसु पाई। करहिं बिचारु करौं का भाई ॥ बा० ५१/४

चली सुभग कबिता सरिता सो । राम बिमल जस जल भरिता सो ॥ बा० ३८/११
चली सुहावनि त्रिबिध बयारी । काम कृसानु बढ़ावनिहारी ॥ बा० १२५/३
चली सेन कछु बरनि न जाई । गर्जहिं मर्कट भट समुदाई ॥ लं० ३/२
चले अवध लेइ रथहि निषादा । होहिं छनहिं छन मगन बिषादा ॥ अ० १४३/२
चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा । फल खाएसि तरु तोरैं लागा ॥ सुं० १७/१
चलेउ निसाचर कटकु अपारा । चतुरंगिनी अनी बहु धारा ॥ लं० ७८/१
चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं । करत मनोरथ बहु मन माहीं ॥ सुं० ४१/४
चलेउ सुमंत्रु राय रूख जानी । लखी कुचालि कीन्हि कछु रानी ॥ अ० ३८/२
चले जहाँ दसरथु जनवासे । मनहुँ सरोबर तकेउ पिआसे ॥ बा० ३०६/८
चले जात मुनि दीन्हि देखाई । सुनि ताड़का क्रोध करि धाई ॥ बा० २०८/५
चले जात सिव सती समेता । पुनि पुनि पुलकत कृपानिकेता ॥ बा० ४९/४
चले जुगल मुनि पद सिर नाई । भए निसाचर कालहि पाई ॥ बा० १३८/८
चले नहाइ नदिहि सिर नाई । साथ निषादनाथ दोउ भाई ॥ अ० २२०/४
चले निषाद जोहारि जोहारी । सूर सकल रन रूचइ रारी ॥ अ० १९०/३
चले निसाचर आयसु मागी । गहि कर भिंडिपाल बर साँगी ॥ लं० ३९/७
चले निसाचर निकर पराई । प्रबल पवन जिमि घन समुदाई ॥ लं० ४१/३
चले निसान बजाइ सुर निज निज पुर सुख पाइ ।
कहत परसपर राम जसु प्रेम न हृदयँ समाइ ॥ बा० ३५३/०
चले पढ़त गावत गुन गाथा । जय जय जय दिनकर कुल नाथा ॥ बा० ३३०/७
चले पराइ भालु कपि नाना । त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना ॥ लं० ८१/६
चले बान सपच्छ जनु उरगा । प्रथमहिं हतेउ सारथी तुरगा ॥ लं० ९१/१
चले बिपिन सुनि सिय सँग लागी । रहइ न राम चरन अनुरागी ॥ अ० १६५/२
चले बीर सब अतुलित बली । जनु कज्जल कै आँधी चली ॥ लं० ७७/८
चले भरतु जहँ सिय रघुराई । साथ निषादनाथु लघु भाई ॥ अ० २३२/६
चले भागि कपि भालु भवानी । बिकल पुकारत आरत बानी ॥ लं० ६९/२
चले मत्त गज घंट बिराजी । मनहुँ सुभग सावन घन राजी ॥ बा० २९९/२
चले मत्त गज जूथ घनेरे । प्राबिट जलद मरुत जनु प्रेरे ॥ लं० ७८/३
चले राम त्यागा बन सोऊ । अतुलित बल नर केहरि दोऊ ॥ अर० ३६/१
चले राम मुनि आयसु पाई । तुरतहिं पंचबटी निअराई ॥ अर० १२/१८
चले राम लछिमन मुनि संगा । गए जहाँ जग पावनि गंगा ॥ बा० २११/१
चले संग हिमवंतु तब पहुँचावन अति हेतु ।
बिबिध भाँति परितोषु करि बिदा कीन्ह बृषकेतु ॥ बा० १०२/०
चले सकल गृह काज बिसारी । बाल जुबान जरठ नर नारी ॥ बा० २३९/६
चले सकल बन खोजत सरिता सर गिरि खोह ।

राम काज लयलीन मन बिसरा तन कर छोह ॥ कि० २३/०
चले सकल सेवक समुदाई । निज निज साजु समाजु बनाई ॥ बा० २९९/८
चले सखा कर सों कर जोरें । सिथिल सरीरु सनेह न थोरें ॥ अ० १९७/५
चले समीर बेग हय हाँके । नाघत सरित सैल बन बाँके ॥ अ० १५७/१
चले सबेग रामु तेहि काला । धीर धरम धुर दीनदयाला ॥ अ० २४२/२
चले ससीय मुदित दोउ भाई । रबितनुजा कइ करत बड़ाई ॥ अ० १११/२
चले साथ अस मंत्रु दृढ़ाई । सुर दुर्लभ सुख सदन बिहाई ॥ अ० ८३/७
चले हरषि तजि नगर नृप तापस बनिक भिखारि ।
जिमि हरि भगति पाइ श्रम तजहिं आश्रमी चारि ॥ कि० १६/०
चले हरषि रघुनायक पासा । पूँछत कहत नवल इतिहासा ॥ सुं० २७/६
चवँर चारु किंकिनि धुनि करहीं । भानु जान सोभा अपहरहीं ॥ बा० २९८/४
चवँर जमुन अरु गंग तरंगा । देखि होहिं दुख दारिद भंगा ॥ अ० १०४/८
चहत न भरत भूपतहि भोरें । बिधि बस कुमति बसी जिय तोरें ॥ अ० ३५/१
चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ । कलि बिसेषि नहिं आन उपाऊ ॥ बा० २१/८
चहुँ जुग तीनि काल तिहुँ लोका । भए नाम जपि जीव बिसोका ॥ बा० २६/१
चहुँ दिसि कंचन मंच बिसाला । रचे जहाँ बैठहिं महिपाला ॥ बा० २२३/३
चहुँ दिसि चितइ पूँछि मालीगन । लगे लेन दल फूल मुदित मन ॥ बा० २२७/१
चहू चतुर कहुँ नाम अधारा । ग्यानी प्रभुहि बिसेषि पिआरा ॥ बा० २१/७
चातक कोकिल कीर चकोरा । कूजत बिहग नटत कल मोरा ॥ बा० २२६/६
चातक रटत तृषा अति ओही । जिमि सुख लहइ न संकरद्रोही ॥ कि० १६/५
चातकु रटनि घटें घटि जाई । बढ़ें प्रेमु सब भाँति भलाई ॥ अ० २०४/४
चापत चरन लखनु उर लाएँ । सभय सप्रेम परम सचु पाएँ ॥ बा० २२५/७
चाप समीप रामु जब आए । नर नारिन्ह सुर सुकृत मनाए ॥ बा० २५९/३
चाप स्रुवा सर आहुति जानू । कोपु मोर अति घोर कृसानू ॥ बा० २८२/२
चामर चरम बसन बहु भाँती । रोम पाट पट अगनित जाती ॥ अ० ५/३
चारा चाषु बाम दिसि लेई । मनहुँ सकल मंगल कहि देई ॥ बा० ३०२/२
चारिउ चरन धर्म जग माहीं । पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं ॥ उ० २०/३
चारिउ भाइ सुभायँ सुहाए । नगर नारि नर देखन धाए ॥ बा० ३३४/१
चारिउ सील रूप गुन धामा । तदपि अधिक सुखसागर रामा ॥ बा० १९७/६
चारि खानि जग जीव अपारा । अवध तजें तनु नहिं संसारा ॥ बा० ३४/४
चारि पदारथ करतल ताकें । प्रिय पितु मातु प्रान सम जाकें ॥ अ० ४५/२
चारि पदारथ भरा भँडारू । पुन्य प्रदेस देस अति चारू ॥ बा० १०४/४
चारि भाँति भोजन बिधि गाई । एक एक बिधि बरनि न जाई ॥ बा० ३२८/४
चारि लच्छ बर धेनू मगाईं । कामसुरभि सम सील सुहाईं ॥ बा० ३३०/२

चारि सिंघासन सहज सुहाए । जनु मनोज निज हाथ बनाए ॥ बा० ३४९/१
चारु चरन नख लेखति धरनी । नूपुर मुखर मधुर कबि बरनी ॥ अ० ५७/५
चारु चिबुक नासिका कपोला । हास बिलास लेत मनु मोला ॥ बा० २३२/५
चारु चित्रसाला गृह गृह प्रति लिखे बनाइ ।
राम चरित जे निरख मुनि ते मन लेहिं चोराइ ॥ उ० २७/०
चारु पुरट मनि रचित बनाई । कटि किंकिनि कल मुखर सुहाई ॥ उ० ७५/८
चारु बजारु बिचित्र अँबारी । मनिमय बिधि जनु स्वकर सँवारी ॥ बा० २१२/२
चारु बिचित्र पबित्र बिसेषी । बूझत भरतु दिब्य सब देखी ॥ अ० ३११/३
चाहहु सुनै राम गुन गूढ़ा । कीन्हिहु प्रस्न मनहुँ अति मूढ़ा ॥ बा० ४६/४
चाहिअ करन सो सब करि बीते । तुम्ह सुर असुर चराचर जीते ॥ लं० ६/२
चाहिअ कीन्हि भरत पहुनाई । कंद मूल फल आनहु जाई ॥ अ० २१२/५
चिक्कन कच कुंचित गभुआरे । बहु प्रकार रचि मातु सँवारे ॥ बा० १९८/१०
चिक्करत लागत बान । धर परत कुधर समान ॥ अर० १९/१० छं०
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि गिरि लोल सागर खरभरे ।
मन हरष सभ गंधर्ब सुर मुनि नाग किंनर दुख टरे ॥
कटकटहिं मर्कट बिकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं ।
जय राम प्रबल प्रताप कोसलनाथ गुन गन गावहीं ॥ सुं० ३४/१ छं०
चितइ सबन्हि पर कीन्ही दाया । बोले मृदुल बचन रघुराया ॥ लं० ११७/३
चितव जो लोचन अंगुलि लाएँ । प्रगट जुगल ससि तेहि के भाएँ ॥ बा० ११६/३
चितवत पंथ रहेउँ दिन राती । अब प्रभु देखि जुड़ानी छाती ॥ अर० ७/३
चितवति चकित चहूँ दिसि सीता । कहँ गए नृपकिसोर मनु चिंता ॥ बा० २३१/१
चितवनि चारु भृकुटि बर बाँकी । तिलक रेख सोभा जनु चाँकी ॥ बा० २१८/८
चितवनि चारु मार मनु हरनी । भावति हृदय जाति नहिं बरनी ॥ बा० २४२/३
चितवहिं चकित बिचित्र बिताना । रचना सकल अलौकिक नाना ॥ बा० ३१३/५
चितवहिं सादर रूप अनूपा । तृप्ति न मानहिं मनु सतरूपा ॥ बा० १४७/६
चिंता साँपिनि को नहिं खाया । को जग जाहि न ब्यापी माया ॥ उ० ७०/४
चिदानंदमय देह तुम्हारी । बिगत बिकार जान अधिकारी ॥ अ० १२६/५
चिदानंदसंदोह मोहापहारी । प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥ उ० १०७/१२
चिदानंद सुखधाम सिव बिगत मोह मद काम ।
बिचरहिं महि धरि हृदयँ हरि सकल लोक अभिराम ॥ बा० ७५/०
चिरजीवी मुनि ग्यान बिकल जनु । बूड़त लहेउ बाल अवलंबनु ॥ अ० २८५/७
चित्रकूट के बिहग मृग बेलि बिटप तृन जाति ।
पुन्य पुंज सब धन्य अस कहहिं देव दिन राति ॥ अ० १३८/०
चित्रकूट गिरि करहु निवासू । तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू ॥ अ० १३१/३

चित्रकूट जनु अचल अहेरी । चुकइ न घात मार मुठभेरी ॥ अ० १३२/४

चित्रकूट महिमा अमित कही महामुनि गाइ ।
आइ नहाए सरित बर सिय समेत दोउ भाइ ॥ अ० १३२/०

चित्रकूट रघुनंदनु छाए । समाचार सुनि सुनि मुनि आए ॥ अ० १३३/५

चित्रकूट सुचि थल तीरथ बन । खग मृग सर सरि निर्झर गिरिगन ॥ अ० ३०७/३

चित्रकेतु कर घरु उन घाला । कनककसिपु कर पुनि अस हाला ॥ बा० ७८/२

चित्र लिखे जनु जहँ तहँ ठाढ़े । पुलक सरीर नयन जल बाढ़े ॥ अ० १३४/६

चुपहिं रहे रघुनाथ सँकोची । प्रभु गति देखि सभा सब सोची ॥ अ० २६९/३

चूड़ाकरन कीन्ह गुरु जाई । बिप्रन्ह पुनि दछिना बहु पाई ॥ बा० २०२/३

चूड़ामनि उतारि तब दयऊ । हरष समेत पवनसुत लयऊ ॥ सुं० २६/२

चोचन्ह मारि बिदारेसि देही । दंड एक भइ मुरछा तेही ॥ अर० २८/२०

चोंच भंग दुख तिन्हहि न सूझा । तिमि धाए मनुजाद अबूझा ॥ लं० ३९/१०

चौकें चारु सुमित्राँ पूरी । मनिमय बिबिध भाँति अति रूरी ॥ अ० ७/३

चौकें भाँति अनेक पुराईं । सिंधुर मनिमय सहज सुहाईं ॥ बा० २८७/७

चौथेंपन पायउँ सुत चारी । बिप्र बचन नहिं कहेहु बिचारी ॥ बा० २०७/२

चौदह भुवन एक पति होई । भूतद्रोह तिष्टइ नहिं सोई ॥ सुं० ३७/७

चौहट सुंदर गलीं सुहाई । संतत रहहिं सुगंध सिंचाई ॥ बा० २१२/४

चंचल तुरग मनोहर चारी । अजर अमर मन सम गतिकारी ॥ लं० ८८/४

चंद किरन रस रसिक चकोरी । रबि रुख नयन सकइ किमि जोरी ॥ अ० ५८/८

चंदन अगर भार बहु आए । अमित अनेक सुगंध सुहाए ॥ अ० १६९/३

चंद्रहास हरु मम परितापं । रघुपति बिरह अनल संजातं ॥ सुं० ९/५

चंदु चवै बरु अनल कन सुधा होइ बिषतूल ।
सपनेहुँ कबहुँ न करहिं किछु भरतु राम प्रतिकूल ॥ अ० ४८/०

चंपक बकुल कंदब तमाला । पाटल पनस परास रसाला ॥ अर० ३९/६

छ

छठ दम सील बिरति बहु करमा । निरत निरंतर सज्जन धरमा ॥ अर० ३५/२

छठें श्रवन यह परत कहानी । नास तुम्हार सत्य मम बानी ॥ बा० १६५/२

छतज नयन उर बाहु बिसाला । हिमगिरि निभ तनु कछु एक लाला ॥ लं० ५२/१

छन एक सोच मगन होइ रहे । पुनि अस बचन कहत सब भए ॥ कि० २५/८

छन महुँ प्रभु के सायकन्हि काटे बिकट पिसाच ।
पुनि रघुबीर निषंग महुँ प्रबिसे सब नाराच ॥ लं० ६८/०

छन महिं सबहि मिले भगवाना । उमा मरम यह काहुँ न जाना ॥ उ० ५/७

छन सुख लागि जनम सत कोटी । दुख न समुझ तेहि सम को खोटी ॥ अर० ४/१७

छबिसमुद्र हरि रूप बिलोकी । एकटक रहे नयन पट रोकी ॥ बा० १४७/५

छमब आजु अति अनुचित मोरा। कहउँ बदन मृदु बचन कठोरा ॥ अ० २९६/६
छमहु चूक अनजानत केरी। चहिअ बिप्र उर कृपा घनेरी ॥ बा० २८१/४
छमासील जे पर उपकारी। ते द्विज मोहि प्रिय जथा खरारी ॥ उ० १०८/५
छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई। सुनिहहिं बालबचन मन लाई ॥ बा० ७/८
छरस रुचिर बिंजन बहु जाती। एक एक रस अगनित भाँती ॥ बा० ३२८/५
छरे छबीले छयल सब सूर सुजान नबीन।
जुग पदचर असवार प्रति जे असिकला प्रबीन ॥ बा० २९८/०
छल करि टारेउ तासु ब्रत प्रभु सुर कारज कीन्ह।
जब तेहिं जानेउ मरम तब श्राप कोप करि दीन्ह ॥ बा० १२३/०
छलु तजि करहि समरु सिवद्रोही। बंधु सहित न त मारउँ तोही ॥ बा० २८०/३
छल बिहीन सुचि सरल सुबानी। बोले भरत जोरि जुग पानी ॥ अ० १६६/४
छत्रबंधु तैं बिप्र बोलाई। घालै लिए सहित समुदाई ॥ बा० १७३/१
छत्र मुकुट ताटंक तब हते एकहीं बान।
सब कें देखत महि परे मरमु न कोऊ जान ॥ लं० १३/० (क)
छत्र मेघडंबर सिर धारी। सोइ जनु जलद घटा अति कारी ॥ लं० १२/५
छत्रि जाति रघुकुल जनमु राम अनुग जगु जान।
लातहुँ मारें चढ़ति सिर नीच को धूरि समान ॥ अ० २२९/०
छत्रिय तनु धरि समर सकाना। कुल कलंकु तेहि पावँर आना ॥ बा० २८३/३
छाड़हु बचनु कि धीरजु धरहु। जनि अबला जिमि करुना करहू ॥ अ० ३४/७
छाड़ा बान माझ उर लागा। मरती बार कपटु सब त्यागा ॥ लं० ७५/१६
छाड़िसि तीब्र सक्ति खिसिआई। बान संग प्रभु फेरि चलाई ॥ लं० ९०/४
छाँड़े बिपुल नाराच। लगे कटन बिकट पिसाच ॥ अर० १९/८ छं०
छाँड़े बिषम बिसिख उर लागे। छूटि समाधि संभु तब जागे ॥ बा० ८६/३
छाँह करहिं घन बिबुधगन बरषहिं सुमन सिहाहिं।
देखत गिरि बन बिहग मृग रामु चले मग जाहिं ॥ अ० ११३/०
छिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित यह अधम सरीरा ॥ कि० १०/४
छिद्र सो प्रगट इंदु उर माहीं। तेहि मग देखिअ नभ परिछाहीं ॥ लं० ११/८
छिनु छिनु पिय बिधु बदन निहारी। प्रमुदित मनहुँ चकोरकुमारी ॥ अ० १२९/२
छिनु छिनु प्रभु पद कमल बिलोकी। रहिहउँ मुदित दिवस जिमि कोकी ॥ अ० ६५/४
छिनु छिनु लखि सिय राम पद जानि आपु पर नेहु।
करत न सपनेहुँ लखनु चितु बंधु मात पितु गेहु ॥ अ० १३९/०
छीजहिं निसिचर दिनु अरु राती। निज मुख कहें सुकृत जेहि भाँती ॥ लं० ७१/३
छीरसिंधु गवने मुनिनाथा। जहँ बस श्रीनिवास श्रुतिमाथा ॥ बा० १२७/४
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू ॥ बा० २७१/३

छुअत सिला भइ नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई॥ अ० ९९/५
छुअतहिं टूट पिनाक पुराना। मैं केहि हेतु करौं अभिमाना॥ बा० २८२/८
छुद्र नदीं भरि चलीं तोराई। जस थोरेहुँ धन खल इतराई॥ कि० १३/५
छुधा छीन बलहीन सुर सहजेहिं मिलिहहिं आइ।
तब मारिहउँ कि छाड़िहउँ भली भाँति अपनाइ॥ बा० १८१/०
छुधा न रही तुम्हहि तब काहू। जारत नगरु कस न धरि खाहू॥ लं० ८/३
छुहे पुरट घट सहज सुहाए। मदन सकुन जनु नीड़ बनाए॥ बा० ३४५/६
छूटइ मल कि मलहि के धोएँ। घृत कि पाव कोइ बारि बिलोएँ॥ उ० ४८/५
छूटी त्रिबिधि ईषना गाढ़ी। एक लालसा उर अति बाढ़ी॥ उ० १०९/१३
छेमकरी कह छेम बिसेषी। स्यामा बाम सुतरु पर देखी॥ बा० ३०२/७
छेत्रु अगम गढ़ु गाढ़ सुहावा। सपनेहुँ नहिं प्रतिपच्छिन्ह पावा॥ अ० १०४/५
छोटे बदन कहउँ बड़ि बाता। छमब तात लखि बाम बिधाता॥ अ० २९२/६
छोरत ग्रंथि जानि खगराया। बिघ्न अनेक करइ तब माया॥ उ० ११७/६
छोरन ग्रंथि पाव जौं सोई। तब यह जीव कृतारथ होई॥ उ० ११७/५
छंद सोरठा सुंदर दोहा। सोइ बहुरंग कमल कुल सोहा॥ बा० ३६/५

ज

जग कारन तारन भव भंजन धरनी भार।
की तुम्ह अखिल भुवन पति लीन्ह मनुज अवतार॥ कि० १/०
जग जस भाजन चातक मीना। नेम पेम निज निपुन नबीना॥ अ० २३३/३
जगत पिता रघुपतिहि बिचारी। भरि लोचन छबि लेहु निहारी॥ बा० २४५/३
जगत प्रकास्य प्रकासक रामू। मायाधीस ग्यान गुन धामू॥ बा० ११६/७
जगत मातु पितु संभु भवानी। तेहिं सिंगारु न कहउँ बखानी॥ बा० १०२/४
जगत मातु सर्बग्य भवानी। मातु सुखद बोलीं मृदु बानी॥ बा० ७१/८
जगत बिदित तुम्हारि प्रभुताई। सुत परिजन बल बरनि न जाई॥ बा० १०३/९
जगद्गुरुं च शाश्वतं। तुरीयमेव केवलं॥ अर० ३/१८ छं०
जगदातमा प्रानपति रामा। तासु बिमुख किमि लह बिश्रामा॥ लं० ३४/६
जगदातमा महेसु पुरारी। जगत जनक सब के हितकारी॥ बा० ६३/५
जगदंबा जहँ अवतरी सो पुरु बरनि कि जाइ।
रिद्धि सिद्धि संपत्ति सुख नित नूतन अधिकाइ॥ बा० ९४/०
जगदंबिका जानि भव भामा। सुरन्ह मनहिं मन कीन्ह प्रनामा॥ बा० ९९/७
जग पतिब्रता चारि बिधि अहहीं। बेद पुरान संत सब कहहीं॥ अर० ४/११
जग पावनि कीरति बिस्तरिहहिं। गाइ गाइ भवनिधि नर तरिहहिं॥ लं० ६५/३
जग बहु नर सर सरि सम भाई। जे निज बाढ़ि बढ़हिं जल पाई॥ बा० ७/१३
जग भल पोच ऊचँ अरु नीचू। अमिअ अमरपद माहुरु मीचू॥ अ० २९७/६

जग मंगल गुनग्राम राम के। दानि मुकुति धन धरम धाम के॥ बा० ३१/२
जग मंगल भल काजु बिचारा। बेगिअ नाथ न लाइअ बारा॥ अ० ४/६
जग महुँ सखा निसाचर जेते। लछिमनु हनइ निमिष महुँ तेते॥ सुं० ४३/७
जग संभव पालन लय कारिनि। निज इच्छा लीला बपु धारिनि॥ बा० ९७/४
जगु अनभल भल एकु गोसाईं। कहिअ होइ भल कासु भलाईं॥ अ० २६६/७
जगु जान षन्मुख जन्मु कर्मु प्रतापु पुरुषारथु महा।
तेहि हेतु मैं बृषकेतु सुत कर चरित संछेपहिं कहा॥
यह उमा संभु बिबाहु जे नर नारि कहहिं जे गावहीं।
कल्यान काज बिबाह मंगल सर्बदा . सुखु पावहीं॥ बा० १०२/१ छं०
जगु पेखन तुम्ह देखनिहारे। बिधि हरि संभु नचावनिहारे॥ अ० १२६/१
जगु बिरंचि उपजावा जब तें। देखे सुने ब्याह बहु तब तें॥ बा० ३१९/५
जगु भय मगन गगन भइ बानी। लखन बाहुबलु बिपुल बखानी॥ अ० २३०/१
जगु भल कहिहि भाव सब काहू। हठ कीन्हें अंतहुँ उर दाहू॥ बा० २४८/५
जग्य करत जबहीं सो देखा। सकल कपिन्ह भा क्रोध बिसेषा॥ लं० ८४/६
जग्य बिधंस जाइ तिन्ह कीन्हा। सकल सुरन्ह बिधिवत फलु दीन्हा॥ बा० ६४/२
जग्य बिधंसि कुसल कपि आए रघुपति पास।
चलेउ निसाचर क्रुद्ध होइ त्यागि जिवन कै आस॥ लं० ८५/०
जटा जूट दृढ़ बाँधें माथे। सोहहिं सुमन बीच बिच गाथे॥ लं० ८५/८
जटाजूट सिर मुनिपट धारी। महि खनि कुस साँथरी सँवारी॥ अ० ३२३/३
जटा मुकुट सीसनि सुभग उर भुज नयन बिसाल।
सरद परब बिधु बदन बर लसत स्वेद कन जाल॥ अ० ११५/०
जटा मुकुट सुरसरित सिर लोचन नलिन बिसाल।
नीलकंठ लावन्यनिधि सोह बालबिधु भाल॥ बा० १०६/०
जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार॥ बा० ६/०
जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि।
बंदउँ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि॥ बा० ७/० (ग)
जड़ चेतन मग जीव घनेरे। जे चितए प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे॥ अ० २१६/१
जड़ चेतनहि ग्रंथि परि गई। जदपि मृषा छूटत कठिनई॥ उ० ११६/४
जड़ता जाड़ बिषम उर लागा। गयहुँ न मज्जन पाव अभागा॥ बा० ३८/२
जतन अनेक साथ हित कीन्हे। उचित उतर रघुनंदन दीन्हे॥ अ० ९८/६
जथा अनेक बेष धरि नृत्य करइ नट कोइ।
सोइ सोइ भाव देखावइ आपुन होइ न सोइ॥ उ० ७२/० (ख)
जथा अनंत राम भगवाना। तथा कथा कीरति गुन नाना॥ बा० ११३/४

जथा गगन घन पटल निहारी । झाँपेउ भानु कहहिं कुबिचारी ॥ बा० ११६/२

जथाजोग सनमानि प्रभु बिदा किए मुनिबृंद ।
करहिं जोग जप जाग तप निज आश्रमन्हि सुछंद ॥ अ० १३४/०

जथाजोग सेनापति कीन्हे । जूथप सकल बोलि तब लीन्हे ॥ लं० ३८/५

जथा जोगु करि बिनय प्रनामा । बिदा किए सब सानुज रामा ॥ अ० ३१८/७

जथा दरिद्र बिबुधतरु पाई । बहु संपति मागत सकुचाई ॥ बा० १४८/५

जथा पंख बिनु खग अति दीना । मनि बिनु फनि करिबर कर हीना ॥ लं० ६०/९

जथा मत्त गज जूथ महुँ पंचानन चलि जाइ ।
राम प्रताप सुमिरि मन बैठ सभाँ सिरु नाइ ॥ लं० १९/०

जथा सुअंजन अंजि दृग साधक सिद्ध सुजान ।
कौतुक देखत सैल बन भूतल भूरि निधान ॥ बा० १/०

जदपि अकाम तदपि भगवाना । भगत बिरह दुख दुखित सुजाना ॥ बा० ७५/२

जदपि अहइ असमंजस भारी । तदपि बात एक सुनहु हमारी ॥ बा० ८२/४

जदपि कबित रस एकउ नाहीं । राम प्रताप प्रगट एहि माहीं ॥ बा० ९/७

जदपि कही कपि अति हित बानी । भगति बिबेक बिरति नय सानी ॥ सुं० २३/१

जदपि कीन्ह एहिं दारुन पापा । मैं पुनि दीन्हि कोप करि सापा ॥ उ० १०८/३

जदपि जोषिता नहिं अधिकारी । दासी मन क्रम बचन तुम्हारी ॥ बा० १०९/१

जदपि नाथ बहु अवगुन मोरें । सेवक प्रभुहि परै जनि भोरें ॥ कि० २/१

जदपि प्रथम दुख पावइ रोवइ बाल अधीर ।
ब्याधि नास हित जननी गनति न सो सिसु पीर ॥ उ० ७४/० (क)

जदपि मित्र प्रभु पितु गुर गेहा । जाइअ बिनु बोलेहुँ न सँदेहा ॥ बा० ६१/५

जदपि रहेउँ रघुपति रजधानी । तदपि न कछु महिमा तब जानी ॥ उ० ९६/४

जदपि बिरज ब्यापक अबिनासी । सब के हृदयँ निरंतर बासी ॥ अर० १०/१७

जदपि सखा तव इच्छा नाहीं । मोर दरसु अमोघं जग माहीं ॥ सुं० ४८/९

जदपि सतीं पूछा बहु भाँती । तदपि न कहेउ त्रिपुर आराती ॥ बा० ५६/८

जदपि सुनहिं मुनि अटपटि बानी । समुझि न परइ बुद्धि भ्रम सानी ॥ बा० १३३/६

जद्यपि अवध सदैव सुहावनि । राम पुरी मंगलमय पावनि ॥ बा० २९५/५

जद्यपि गृहँ सेवक सेवकिनी । बिपुल सदा सेवा बिधि गुनी ॥ उ० २३/५

जद्यपि जग दारुन दुख नाना । सब तें कठिन जाति अवमाना ॥ बा० ६२/७

जद्यपि जनमु कुमातु तें मैं सठु सदा सदोस ।
आपन जानि न त्यागिहहिं मोहि रघुबीर भरोस ॥ अ० १८३/०

जद्यपि तदपि नीति असि गाई । बिनय करिअ सागर सन जाई ॥ सुं० ४९/८

जद्यपि तव गुर कें नहिं क्रोधा । अति कृपाल चित सम्यक बोधा ॥ उ० १०६/२

जद्यपि नीति निपुन नरनाहू । नारिचरित जलनिधि अवगाहू ॥ अ० २६/७

जद्यपि प्रभु के नाम अनेका। श्रुति कह अधिक एक तें एका॥ अर० ४१/७
जद्यपि प्रभु जानत सब बाता। राजनीति राखत सुरत्राता॥ कि० २२/१३
जद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी। हर अंतरजामी सब जानी॥ बा० ५०/५
जद्यपि बर अनेक जग माहीं। एहि कहँ सिव तजि दूसर नाहीं॥ बा० ६९/६
जद्यपि ब्रह्म अखंड अनंता। अनुभव गम्य भजहिं जेहि संता॥ अर० १२/१२
जद्यपि भगिनी कीन्हि कुरूपा। बध लायक नहिं पुरुष अनूपा॥ अर० १८/५
जद्यपि मनुज दनुज कुल घालक। मुनि पालक खल सालक बालक॥ अर० १८/११
जद्यपि मैं अनभल अपराधी। भै मोहि कारन सकल उपाधी॥ अ० १८२/३
जद्यपि यह समुझत हउँ नीकें। तदपि होत परितोषु न जी कें॥ अ० १७६/६

जद्यपि लघुता राम कहुँ तोहि बधें बड़ दोष।
तदपि कठिन दसकंठ सुनु छत्र जाति कर रोष॥ लं० २३/० (घ)

जद्यपि सब बैकुंठ बखाना। बेद पुरान बिदित जगु जाना॥ उ० ३/३
जद्यपि सम नहिं राग न रोषू। गहहिं न पाप पूनु गुन दोषू॥ अ० २१८/३
जन अवगुन प्रभु मान न काऊ। दीन बंधु अति मृदुल सुभाऊ॥ उ० ०/६
जनक कीन्ह कौसिकहि प्रनामा। प्रभु प्रसाद धनु भंजेउ रामा॥ बा० २८५/५
जनक गहे कौसिक पद जाई। चरन रेनु सिर नयनन्ह लाई॥ बा० ३४२/२
जनक जाति अवलोकहिं कैसें। सजन सगे प्रिय लागहिं जैसें॥ बा० २४१/२
जनक दूत तेहि अवसर आए। मुनि बसिष्ठँ सुनि बेगि बोलाए॥ अ० २६९/४
जनक पाटमहिषी जग जानी। सीय मातु किमि जाइ बखानी॥ बा० ३२३/१
जनक बचन सुनि सब नर नारी। देखि जानकिहि भए दुखारी॥ बा० २५१/७
जनक बहोरि आइ सिरु नावा। सीय बोलाइ प्रनामु करावा॥ बा० २६८/४
जनक बाम दिसि सोह सुनयना। हिमगिरि संग बनी जनु मयना॥ बा० ३२३/४
जनक बिनय तिन्ह आइ सुनाई। हरषे बोलि लिए दोउ भाई॥ बा० २३८/१०
जनक भरत संबादु सुनाई। भरत कहाउति कही सुहाई॥ अ० २९५/४
जनक भवन कै सोभा जैसी। गृह गृह प्रति पुर देखिअ तैसी॥ बा० २८८/६
जनकु रहे पुर बासर चारी। राज काज सब साज सँभारी॥ अ० ३२१/६
जनक राज गुन सीलु बड़ाई। प्रीति रीति संपदा सुहाई॥ बा० ३५३/७
जनक राम गुर आयसु पाई। चले थलहि सिय देखी आई॥ अ० २८५/३
जनक लहेउ सुखु सोचु बिहाई। पैरत थकें थाह जनु पाई॥ बा० २६२/४
जनक सनेहु सीलु करतूती। नृपु सब भाँति सराह बिभूती॥ बा० ३३१/१
जनक सभाँ अगनित भूपाला। रहे तुम्हउ बल अतुल बिसाला॥ लं० ३५/१०
जनक सुकृत मूरति बैदेही। दसरथ सुकृत रामु धरें देही॥ बा० ३०९/१

जनकसुतहि समुझाइ करि बहु बिधि धीरजु दीन्ह।
चरन कमल सिरु नाइ कपि गवनु राम पहिं कीन्ह॥ सुं० २७/०

जनकसुता कइ सुधि भामिनी। जानहि कहु करिबरगामिनी ॥ अर० ३५/१०
जनकसुता कहुँ खोजहु जाई। मास दिवस महँ आएहु भाई ॥ कि० २१/७
जनकसुता जग जननि जानकी। अतिसय प्रिय करुना निधान की ॥ बा० १७/७
जनकसुता तब उर धरि धीरा। नील नलिन लोयन भरि नीरा ॥ अ० २४५/७
जनकसुता परिहरिहु अकेली। आयहु तात बचन मम पेली ॥ अर० २९/२
जनकसुता रघुनाथहि दीजे। एतना कहा मोर प्रभु कीजे ॥ सुं० ५६/७
जनकसुता समेत प्रभु सोभा अमित अपार।
देखि भालु कपि हरषे जय रघुपति सुख सार ॥ लं० १०९/० (ख)
जनकसुता समेत रघुबीरहि। कस न भजहु भंजन भव भीरहि ॥ उ० २९/८
जनकसुता समेत रघुराई। पेखि प्रहरषे मुनि समुदाई ॥ उ० ११/३
जन कहुँ कछु अदेय नहिं मोरें। अस बिस्वास तजहु जनि भोरें ॥ अर० ४१/५
जननि जनक गुर बंधु हमारे। कृपा निधान प्रान ते प्यारे ॥ उ० ४६/२
जननि जनक सिय राम प्रेम के। बीज सकल ब्रत धरम नेम के ॥ बा० ३१/४
जननिन्ह सादर बदन निहारे। भूपति संग द्वार पगु धारे ॥ बा० ३५७/८
जननिहिं बहुरि मिलि चली उचित असीस सब काहूँ दई।
फिरि फिरि बिलोकति मातु तन तब सखीं लै सिव पहिं गईं॥
जाचक सकल संतोषि संकरु उमा सहित भवन चले।
सब अमर हरषे सुमन बरषि निसान नभ बाजे भले ॥ बा० १०१/१ छं०
जननिहि बिकल बिलोकि भवानी। बोली जुत बिबेक मृदु बानी ॥ बा० ९६/५
जननीं उमा बोलि तब लीन्ही। लै उछंग सुंदर सिख दीन्ही ॥ बा० १०१/२
जननी जनक बंधु सुत दारा। तनु धनु भवन सुहृद परिवारा ॥ सुं० ४७/४
जननी सम जानहिं परनारी। धनु पराव बिष तें बिष भारी ॥ अ० १२९/६
जनम एक दुइ कहउँ बखानी। सावधान सुनु सुमति भवानी ॥ बा० १२१/३
जनमत मरत दुसह दुख होई। एहि स्वल्पउ नहिं ब्यापिहि सोई ॥ उ० १०८/७
जन मन मंजु कंज मधुकर से। जीह जसोमति हरि हलधर से ॥ बा० १९/८
जन मन मंजु मुकुर मल हरनी। किएँ तिलक गुन गन बस करनी ॥ बा० ०/४
जनम मरन सब दुख सुख भोगा। हानि लाभु प्रिय मिलन बियोगा ॥ अ० १४९/५
जनम रंक जनु पारस पावा। अंधहि लोचन लाभु सुहावा ॥ बा० ३४९/७
जनम हेतु सब कहँ पितु माता। करम सुभासुभ देइ बिधाता ॥ अ० २५४/६
जनमीं प्रथम दच्छ गृह जाई। नामु सती सुंदर तनु पाई ॥ बा० ९७/५
जनमु मरनु जहँ लगि जग जालू। संपति बिपति करमु अरु कालू ॥ अ० ९१/६
जनमु सिंधु पुनि बंधु बिषु दिन मलीन सकलंक।
सिय मुख समता पाव किमि चंदु बापुरो रंक ॥ बा० २३७/०
जनमे एक संग सब भाई। भोजन सयन केलि लरिकाई ॥ अ० ९/५

जन रंजन भंजन खल ब्राता। बेद धर्म रच्छक सुनु भ्राता ॥ सुं० ३८/४
जन रंजन भंजन भव भारू। राम सनेह सुधाकर सारू ॥ अ० ३२५/८
जन रंजन भंजन सोक भयं। गतक्रोध सदा प्रभु बोधमयं ॥ लं० ११०/५ छं०
जनहि मोर बल निज बल ताही। दुहु कहँ काम क्रोध रिपु आही ॥ अर० ४२/९
जनि आचरजु करहु मन माहीं। सुत तप तें दुर्लभ कछु नाहीं ॥ बा० १६२/१
जनि जननी मानहु जियँ ऊना। तुम्ह ते प्रेमु राम कें दूना ॥ सुं० १३/१०
जनि जल्पना करि सुजसु नासहि नीति सुनहि करहि छमा।
संसार महँ पूरुष त्रिबिध पाटल रसाल पनस समा ॥
एक सुमनप्रद एक सुमन फल एक फलइ केवल लागहीं।
एक कहहिं कहहिं करहिं अपर एक करहिं कहत न बागहीं ॥ लं० ८९/१ छं०
जनि जल्पसि जड़ जंतु कपि सठ बिलोकु मम बाहु।
लोकपाल बल बिपुल ससि ग्रसन हेतु सबु राहु ॥ लं० २२/० (क)
जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा। तुम्हहि लागि धरिहउँ नर बेसा ॥ बा० १८६/१
जनि मानहु हियँ हानि गलानी। काल करम गति अघटित जानी ॥ अ० १६४/६
जनि लेहु मातु कलंकु करुना परिहरहु अवसर नहीं।
दुखु सुखु जो लिखा लिलार हमरें जाब जहँ पाउब तहीं ॥
सुनि उमा बचन बिनीत कोमल सकल अबला सोचहीं।
बहु भाँति बिधिहि लगाइ दूषन नयन बारि बिमोचहीं ॥ बा० ९६/१ छं०
जनि सनेह बस डरपसि भोरें। आनँदु अंब अनुग्रह तोरें ॥ अ० ५२/८
जनु उछाह सब सहज सुहाए। तनु धरि धरि दसरथ गृहँ छाए ॥ बा० ३४४/३
जनु कठोरपनु धरें सरीरू। सिखइ धनुषबिद्या बर बीरू ॥ अ० ४०/३
जनु धेनु बालक बच्छ तजि गृहँ चरन बन परबस गईं।
दिन अंत पुर रुख स्रवत थन हुंकार करि धावत भईं ॥
अति प्रेम प्रभु सब मातु भेटीं बचन मृदु बहुबिधि कहे।
गइ बिषम बिपति बियोग भव तिन्ह हरष सुख अगनित लहे ॥ उ० ५/१ छं०
जनु बाजि बेषु बनाइ मनसिजु राम हित अति सोहई।
आपनें बय बल रूप गुन गति सकल भुवन बिमोहई ॥
जगमगत जीनु जराव जोति सुमोति मनि मानिक लगे।
किंकिनि ललाम लगामु ललित बिलोकि सुर नर मुनि ठगे ॥ बा० ३१५/१ छं०
जनु बिरंचि सब निज निपुनाई। बिरचि बिस्व कहँ प्रगटि देखाई ॥ बा० २२९/६
जनु राहु केतु अनेक नभ पथ स्रवत सोनित धावहीं।
रघुबीर तीर प्रचंड लागहिं भूमि गिरन न पावहीं ॥
एक एक सर सिर निकर छेदे नभ उड़त इमि सोहहीं।
जनु कोपि दिनकर कर निकर जहँ तहँ बिधुंतुद पोहहीं ॥ लं० ९१/१ छं०

जन्म कोटि लगि रगर हमारी । बरउँ संभु न त रहउँ कुआरी ॥ बा० ८०/५
जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं । अंत राम कहि आवत नाहीं ॥ कि० ९/३
जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि । उत्तर दिसि बह सरजू पावनि ॥ उ० ३/५
जन्म महोत्सव देखउँ जाई । बरष पाँच तहँ रहउँ लोभाई ॥ उ० ७४/४
जन्म महोत्सव रचहिं सुजाना । करहिं राम कल कीरति गाना ॥ बा० ३३/८
जपउँ मंत्र सिव मंदिर जाई । हृदयँ दंभ अहमिति अधिकाई ॥ उ० १०४/८

जप जोग बिरागा तप मख भागा श्रवन सुनइ दससीसा ।
आपुनु उठि धावइ रहै न पावइ धरि सब घालइ खीसा ॥
अस भ्रष्ट अचारा भा संसारा धर्म सुनिअ नहिं काना ।
तेहि बहुबिधि त्रासइ देस निकासइ जो कह बेद पुराना ॥ बा० १८२/१ छं०

जप तप कछु न होइ तेहि काला । हे बिधि मिलइ कवन बिधि बाला ॥ बा० १३०/८
जप तप नियम जोग निज धर्मा । श्रुति संभव नाना सुभ कर्मा ॥ उ० ४८/१
जप तप नेम जलाश्रय झारी । होइ ग्रीषम सोषइ सब नारी ॥ अर० ४३/२
जप तप ब्रत जम नियम अपारा । जे श्रुति कह सुभ धर्म अचारा ॥ उ० ११६/१०
जप तप ब्रत दम संजम नेमा । गुरु गोबिंद बिप्र पद प्रेमा ॥ अर० ४५/३
जप तप मख सम दम ब्रत दाना । बिरति बिबेक जोग बिग्याना ॥ उ० ९४/५
जपहिं नामु जन आरत भारी । मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी ॥ बा० २१/५
जपहिं सदा रघुनायक नामा । जहँ तहँ सुनहिं राम गुन ग्रामा ॥ बा० ७४/८
जपहु जाइ संकर सत नामा । होइहि हृदयँ तुरत बिश्रामा ॥ बा० १३७/५
जब अति भयउ बिरह उर दाहू । फरकेउ बाम नयन अरु बाहू ॥ लं० ९९/५
जब काहू कै देखहिं बिपती । सुखी भए मानहुँ जग नृपती ॥ उ० ३९/३
जब कीन्ह तेहिं पाषंड । भए प्रगट जंतु प्रचंड ॥ ,
बेताल भूत पिसाच । कर धरें धनु नाराच ॥ लं० १००/१ छं०
जब जब अवधपुरी रघुबीरा । धरहिं भगत हित मनुज सरीरा ॥ उ० ११३/१२
जब जब नाथ सुरन्ह दुखु पायो । नाना तनु धरि तुम्हइँ नसायो ॥ लं० १०९/८
जब जब मातु करिहि सुधि मोरी । होइहि प्रेम बिकल मति भोरी ॥ अ० ६०/६
जब जब रामु अवध सुधि करहीं । तब तब बारि बिलोचन भरहीं ॥ अ० १४०/३
जब जब राम मनुज तनु धरहीं । भक्त हेतु लीला बहु करहीं ॥ उ० ७४/२
जब जब होइ धरम कै हानी । बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी ॥ बा० १२०/६
जब जदुबंस कृष्न अवतारा । होइहि हरन महा महिभारा ॥ बा० ८७/१
जब जेहि दिसि भ्रम होइ खगेसा । सो कह पच्छिम उयउ दिनेसा ॥ उ० ७२/४
जब तें आइ रहे रघुनायकु । तब तें भयउ बनु मंगलदायकु ॥ अ० १३६/५
जब तें उमा सैल गृह जाईं । सकल सिद्धि संपति तहँ छाईं ॥ बा० ६४/७
जब तें कुमत सुना मैं स्वामिनि । भूख न बासर नींद न जामिनि ॥ अ० २०/६

जब तें तुम्ह सीता हरि आनी। असगुन होहिं न जाहिं बखानी॥ लं० ४७/७
जब तें प्रभु पद पदुम निहारे। मिटे दुसह दुख दोष हमारे॥ अ० २५०/७
जब ते राम कीन्ह तहँ बासा। सुखी भए मुनी बीती त्रासा॥ अर० १३/१
जब ते राम प्रताप खगेसा। उदित भयउ अति प्रबल दिनेसा॥ उ० ३०/१
जब तें रामु ब्याहि घर आए। नित नव मंगल मोद बधाए॥ अ० ०/१
जब तें सतीं जाइ तनु त्यागा। तब तें सिव मन भयउ बिरागा॥ बा० ७४/७
जब तेहिं कहा देन बैदेही। चरन प्रहार कीन्ह सठ तेही॥ सुं० ५६/८
जब तेहिं कीन्हि राम कै निंदा। क्रोधवंत अति भयउ कपिंदा॥ लं० ३१/१
जब तैं कुमति कुमत जियँ ठयऊ। खंड खंड होइ हृदय न गयऊ॥ अ० १६१/१
जब न लेउँ मैं तब बिधि मोही। कहा, लाभ आगें सुत तोही॥ उ० ४७/७
जब प्रतापरबि भयउ नृप फिरी दोहाई देस।
प्रजा पाल अति बेदबिधि कतहुँ नहीं अघ लेस॥ बा० १५३/०
जब मैं जाइ सो कौतुक देखा। उर उपजा आनंद बिसेषा॥ उ० ५६/१०
जब रघुनाथ कीन्ह रन क्रीड़ा। समुझत चरित होति मोहि ब्रीड़ा॥ उ० ५७/३
जब रघुनाथ समर रिपु जीते। सुर नर मुनि सब के भय बीते॥ अर० २०/१
जब रघुबीर दीन्हि अनुसासन। कटि निषंग कसि साजि सरासन॥ लं० ७४/११
जब रावनहि ब्रह्म बर दीन्हा। चलत बिरंचि कहा मोहिं चीन्हा॥ सुं० ३/६
जब लगि आवौं सीतहि देखी। होइहि काजु मोहि हरष बिसेषी॥ सुं० ०/३
जब लगि उर न बसत रघुनाथा। धरें चाप सायक कटि भाथा॥ सुं० ४६/२
जब लगि जिऔं कहउँ कर जोरी। तब लगि जनि कछु कहसि बहोरी॥ अ० ३५/७
जब समुझत रघुनाथ सुभाऊ। तब पथ परत उताइल पाऊ॥ अ० २३३/६
जब सिय कानन देखि डेराई। कहेहु मोरि सिख अवसरु पाई॥ अ० ८१/३
जब सिय सखिन्ह प्रेमबस जानी। कहि न सकहिं कछु मन सकुचानी॥ बा० २३१/८
जब सुग्रीव भवन फिरि आए। रामु प्रबरषन गिरि पर छाए॥ कि० ११/१०
जब सुग्रीवँ राम कहुँ देखा। अतिसय जन्म धन्य करि लेखा॥ कि० ३/६
जब सो प्रभंजन उर गृहँ जाई। तबहिं दीप बिग्यान बुझाई॥ उ० ११७/१३
जब हरि माया दूरि निवारी। नहिं तहँ रमा न राजकुमारी॥ बा० १३७/१
जबहिं जाम जुग जामिनि बीती। राम सचिव सन कहेउ सप्रीती॥ अ० ८४/७
जबहिं बिभीषन प्रभु पहिं आए। पाछें रावन दूत पठाए॥ सुं० ५०/८
जबहिं राम सब कहा बखानी। प्रभु पद धरि हियँ अनल समानी॥ अर० २३/३
जबहिं रामु कहि लेहिं उसासा। उमगत पेमु मनहुँ चहु पासा॥ अ० २१९/६
जबहिं संभु कैलासहिं आए। सुर सब निज निज लोक सिधाए॥ बा० १०२/३
जबहिं समर कोपिहि रघुनायक। छुटिहहिं अति कराल बहु सायक॥ लं० २६/६
जबहिं त्रिबिक्रम भए खरारी। तब मैं तरुन रहेउँ बल भारी॥ कि० २८/८

जम गन मुहँ मसि जग जमुना सी। जीवन मुकुति हेतु जनु कासी ॥ बा० ३०/११
जमिहहिं पंख ॥ करसि जनि चिंता। तिन्हहि देखाइ देहेसु तैं सीता ॥ कि० २७/९
जमुन तीर तेहि दिन करि बासू। भयउ समय सम सबहि सुपासू ॥ अ० २२०/१
जमुना उतरि पार सबु भयऊ। सो बासरु बिनु भोजन गयऊ ॥ अ० ३२१/३
जय अनंत ॥ जय जगदाधारा। तुम्ह प्रभु सब देवन्हि निस्तारा ॥ लं० ७६/४
जय इंदिरा रमन जय भूधर। अनुपम अज अनादि सोभाकर ॥ उ० ३३/४

जय कृपा कंद मुकुंद द्वंद हरन सरन सुखप्रद प्रभो।
खल दल बिदारन परम कारन कारुनीक सदा बिभो॥
सुर सुमन बरषहिं हरष संकुल बाज दुंदुभि गहगही।
संग्राम अंगन राम अंग अनंग बहु सोभा लही ॥ लं० १०२/१ छं०

जय गजबदन षडानन माता। जगत जननि दामिनि दुति गाता ॥ बा० २३४/६

जय जय अबिनासी सब घट बासी ब्यापक परमानंदा।
अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुंदा॥
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी बिगतमोह मुनिबृंदा।
निसि बासर ध्यावहिं गुन गन गावहिं जयति सच्चिदानंदा ॥ बा० १८५/२ छं०

जय जय गिरिबरराज किसोरी। जय महेस मुख चंद चकोरी ॥ बा० २३४/५

जय जय जय रघुबंस मनि धाए कपि दै हूह।
एकहि बार ॥ तासु पर छाड़ेन्हि गिरि तरु जूह ॥ लं० ६६/०

जय जय धुनि पूरी ब्रह्मंडा। जय रघुबीर प्रबल भुजदंडा ॥ लं० १०२/१०

जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कंता॥
पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानइ कोई।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करउ अनुग्रह सोई ॥ बा० १८५/१ छं०

जयति राम ॥ जय लछिमन जय कपीस सुग्रीव।
गर्जहिं सिंघनाद कपि भालु महा बल सींव ॥ लं० ३९/०

जय दूषनारि खरारि। मर्दन निसाचर धारि॥
यह दुष्ट ॥ मारेउ नाथ। भए देव सकल सनाथ ॥ लं० ११२/२ छं०

जय धुनि बंदी बेद धुनि मंगल गान निसान।
सुनि हरषहिं बरषहिं बिबुध सुरतरु सुमन सुजान ॥ बा० ३२४/०

जय धुनि बिमल बेद बर बानी। दस दिसि सुनिअ सुमंगल सानी ॥ बा० ३४७/२
जय निर्गुन जय जय गुन सागर। सुख मंदिर सुंदर अति नागर ॥ उ० ३३/३
जय भगवंत अनंत अनामय। अनघ अनेक एक करुनामय ॥ उ० ३३/२
जय रघुबंस बनज बन भानू। गहन दनुज कुल दहन कृसानू ॥ बा० २८४/१
जय राम रमारमनं समनं। भव ताप भयाकुल पाहि जनं ॥ उ० १३/१ छं०

जय राम रूप अनूप निर्गुन सगुन गुन प्रेरक सही।
दससीस बाहु प्रचंड खंडन चंड सर मंडन मही ॥
पाथोद गात सरोज मुख राजीव आयत लोचनं।
नित नौमि रामु कृपालु बाहु बिसाल भव भय मोचनं ॥ अर० ३१/१ छं०
जय राम सदा सुखधाम हरे। रघुनायक सायक चाप धरे ॥ लं० ११०/१ छं०
जय राम सोभा धाम। दायक प्रनत बिश्राम ॥
धृत त्रोन बर सर चाप। भुजदंड प्रबल प्रताप ॥ लं० ११२/१ छं०
जय सगुन निर्गुन रूप रूप अनूप भूप सिरोमने।
दसकंधरादि प्रचंड निसिचर प्रबल खल भुज बल हने ॥
अवतार नर संसार भार बिभंजि दारुन दुख दहे।
जय प्रनतपाल दयाल प्रभु संजुक्त सक्ति नमामहे ॥ उ० १२/१ छं०
जय सच्चिदानंद जग पावन। अस कहि चलेउ मनोज नसावन ॥ बा० ४९/३
जय सुर बिप्र धेनु हितकारी। जय मद मोह कोह भ्रम हारी ॥ बा० २८४/२
जय हरन धरनी भार। महिमा उदार अपार ॥
जय रावनारि कृपाल। किए जातुधान बिहाल ॥ लं० ११२/३ छं०
जरइ नगर भा लोग बिहाला। झपट लपट बहु कोटि कराला ॥ सुं० २५/२
जरउ सो संपति सदन सुखु सुहृद मातु पितु भाइ।
सनमुख होत जो राम पद करै न सहस सहाइ ॥ अ० १८५/०
जरठ भयउँ अब कहइ रिछेसा। नहिं तन रहा प्रथम बल लेसा ॥ कि० २८/७
जरत बिलोकेउँ जबहिं कपाला। बिधि के लिखे अंक निज भाला ॥ लं० २८/१
जरत सकल सुर बृंद बिषम गरल जेहिं पान किय।
तेहि न भजसि मन मंद को कृपाल संकर सरिस ॥ कि० ०/२ (ख) सो०
जरहिं पतंग मोह बस भार बहहिं खर बृंद।
ते नहिं सूर कहावहिं समुझि देखु मतिमंद ॥ लं० २९/०
जरहिं बिषम जर लेहिं उसासा। कवनि राम बिनु जीवन आसा ॥ अ० ५०/५
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं। प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो ॥ उ० १०७/१६
जरा मरन दुख रहित तनु समर जितै जनि कोउ।
एकछत्र रिपुहीन महि राज कलप सत होउ ॥ बा० १६४/०
जरि तुम्हारि चह सवति उखारी। रुँधहु करि उपाउ बर बारी ॥ अ० १६/८
जरे पंख अति तेज अपारा। परेउँ भूमि करि घोर चिकारा ॥ कि० २७/४
जलचर थलचर नभचर नाना। जे जड़ चेतन जीव जहाना ॥ बा० २/४
जलज बिलोचन स्यामल गातहि। पलक नयन इव सेवक त्रातहि ॥ उ० २९/३
जलदु जनम भरि सुरति बिसारउ। जाचत जलु पबि पाहन डारउ ॥ अ० २०४/३
जलधि अगाध मौलि बह फेनू। संतत धरनि धरत सिर रेनू ॥ अ० १६६/८

जलनिधि रघुपति दूत बिचारी। तैं मैनाक होहि श्रमहारी ॥ सुं० ०/९
जल भरि नयन कहहिं रघुराई। तात कर्म निज तें गति पाई ॥ अर० ३०/८
जल संकोच बिकल भइँ मीना। अबुध कुटुंबी जिमि धनहीना ॥ कि० १५/८
जल सीकर महि रज गनि जाहीं। रघुपति चरित न बरनि सिराहीं ॥ उ० ५१/४
जलु थलु देखि बसे निसि बीतें। कीन्ह गवन रघुनाथ पिरीतें ॥ अ० २२५/२
जलु पय सरिस बिकाइ देखहु प्रीति कि रीति भलि।
बिलग होइ रसु जाइ कपट खटाई परत पुनि ॥ बा० ५७/० सो०
जस कछु बुधि बिबेक बल मेरें। तस कहिहउँ हियँ हरि के प्रेरें ॥ बा० ३०/३
जस कौसिलाँ मोर भल ताका। तस फलु उन्हहि देउँ करि साका ॥ अ० ३२/८
जस जस सुरसा बदनु बढ़ावा। तासु दून कपि रूप देखावा ॥ सुं० १/९
जस दूलहु तसि बनी बराता। कौतुक बिबिध होहिं मग जाता ॥ बा० ९३/१
जस बरु मैं बरनेउँ तुम्ह पाहीं। मिलिहि उमहि तस संसय नाहीं ॥ बा० ६८/२
जस मानस जेहि बिधि भयउ जग प्रचार जेहि हेतु।
अब सोइ कहउँ प्रसंग सब सुमिरि उमा बृषकेतु ॥ बा० ३५/०
जसि रघुबीर ब्याह बिधि बरनी। सकल कुँअर ब्याहे तेहिं करनी ॥ बा० ३२५/१
जसि बिबाह के बिधि श्रुति गाई। महामुनिन्ह सो सब करवाई ॥ बा० १००/१
जसु तुम्हार मानस बिमल हंसिनि जीहा जासु।
मुकताहल गुन गन चुनइ राम बसहु हियँ तासु ॥ अ० १२८/०
जसु पावन रावन नाग महा। खगनाथ जथा करि कोप गहा ॥ लं० ११०/४ छं०
जहँ असि दसा जड़न्ह कै बरनी। को कहि सकइ सचेतन करनी ॥ बा० ८४/३
जहँ कहुँ निंदा सुनहिं पराई। हरषहिं मनहुँ परी निधि पाई ॥ उ० ३८/४
जहँ कहुँ फिरत निसाचर पावहिं। घेरि सकल बहु नाच नचावहिं ॥ लं० ४/७
जहँ चितवहिं तहँ प्रभु आसीना। सेवहिं सिद्ध मुनीस प्रबीना ॥ बा० ५३/६
जहँ जप जग्य जोग मुनि करहीं। अति मारीच सुबाहुहि डरहीं ॥ बा० २०५/३
जहँ जस मुनिबर आयसु दीन्हा। तहँ तस सहस भाँति सबु कीन्हा ॥ अ० १६९/७
जहँ जहँ आवत बसे बराती। तहँ तहँ सिद्ध चला बहु भाँती ॥ बा० ३३२/३
जहँ जहँ कृपासिंधु बन कीन्ह बास बिश्राम।
सकल दिखाए जानकिहि कहे सबन्हि के नाम ॥ लं० ११९/० (ख)
जहँ जहँ जाहिं कुअँर बर दोऊ। तहँ तहँ चकित चितव सबु कोऊ ॥ बा० २४३/६
जहँ जहँ जाहिं देव रघुराया। करहिं मेघ तहँ तहँ नभ छाया ॥ अर० ६/५
जहँ जहँ तीरथ रहे सुहाए। मुनिन्ह सकल सादर करवाए ॥ बा० १४२/७
जहँ जहँ राम चरन चलि जाहीं। तिन्ह समान अमरावति नाहीं ॥ अ० ११२/३
जहँ जहँ राम बास बिश्रामा। तहँ तहँ करहिं सप्रेम प्रनामा ॥ अ० २२०/८
जहँ जहँ बिपिन मुनीस्वर पावउँ। आश्रम जाइ जाइ सिरु नावउँ ॥ उ० १०९/१०

जहँ जाहिं मर्कट भागि। तहँ बरत देखहिं आगि ॥
भए बिकल बानर भालु। पुनि लाग बरषै बालु ॥ लं० १००/४ छं०
जहँ तहँ गईं सकल तब सीता कर मन सोच।
मास दिवस बीतें मोहि मारिहि निसिचर पोच ॥ सुं० ११/०
जहँ तहँ चले बिपुल नाराचा। लगे कटन भट बिकट पिसाचा ॥ लं० ६७/४
जहँ तहँ जनु उमगत अनुरागा। देखि मुएहुँ मन मनसिज जागा ॥ बा० ८५/८
जहँ तहँ जूथ जूथ मिलि भामिनि। सजि नव सप्त सकल दुति दामिनि ॥ बा० २९६/१
जहँ तहँ थकित करि कीस। गर्जेउ बहुरि दससीस ॥
लछिमन कपीस समेत। भए सकल बीर अचेत ॥ लं० १००/५ छं०
जहँ तहँ देखहिं निज परिछाहीं। बहु बिधि कूजहिं नृत्य कराहीं ॥ उ० २७/६
जहँ तहँ धावन पठइ पुनि मंगल द्रब्य मगाइ।
हरष समेत बसिष्ट पद पुनि सिरु नायउ आइ ॥ उ० १०/० (ख)
जहँ तहँ नर रघुपति गुन गावहिं। बैठि परसपर इहइ सिखावहिं ॥ उ० २९/१
जहँ तहँ नारि निछावरि करहीं। देहिं असीस हरष उर भरहीं ॥ उ० ८/५
जहँ तहँ परत देखिअहिं बानर। सन्मुख होइ न सके तेहि अवसर ॥ लं० ४९/६
जहँ तहँ परीं अनेक लराईं। जीते सकल भूप बरिआईं ॥ बा० १५३/६
जहँ तहँ पिअहिं बिबिध मृग नीरा। जनु उदार गृह जाचक भीरा ॥ अर० ३८/८
जहँ तहँ बिप्र बेदधुनि करहीं। बंदी बिरिदावलि उच्चरहीं ॥ बा० २६४/४
जहँ तहँ भागि चले कपि रीछा। बिसरी सबहि जुद्ध कै ईछा ॥ लं० ४९/७
जहँ तहँ भूधर बिटप उपारी। धाए कटकटाइ भट भारी ॥ लं० ९९/११
जहँ तहँ मुनिन्ह सुआश्रम कीन्हे। उचित बास हिम भूधर दीन्हे ॥ बा० ६४/८
जहँ तहँ रहे पथिक थकि नाना। जिमि इंद्रिय गन उपजें ग्याना ॥ कि० १४/१२
जहँ तहँ राम ब्याहु सबु गावा। सुजसु पुनीत लोक तिहुँ छावा ॥ बा० ३६०/४
जहँ तहँ लोगन्ह डेरा कीन्हा। भरत सोधु सबही कर लीन्हा ॥ अ० १९७/१
जहँ बिलोक मृग सावक नैनी। जनु तहँ बरिस कमल सित श्रेनी ॥ बा० २३१/२
जहँ बैठें देखहिं सब नारी। जथा जोगु निज कुल अनुहारी ॥ बा० २२३/७
जहँ रनिवासु तहाँ पगु धारे। सहित बहूटिन्ह कुअँर निहारे ॥ बा० ३५३/२
जहँ लगि कहे पुरान श्रुति एक एक सब जाग।
बार सहस्र सहस्र नृप किए सहित अनुराग ॥ बा० १५५/०
जहँ लगि जगत सनेह सगाई। प्रीति प्रतीति निगम निजु गाई ॥ अ० ७१/५
जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते। पिय बिनु तियहि तरनिहु ते ताते ॥ अ० ६४/३
जहँ लगि रहे अपर मुनि बृंदा। हरषे सब बिलोकि सुखकंदा ॥ अर० ११/१३
जहँ लगि बेद कही बिधि करनी। श्रवन नयन मन गोचर बरनी ॥ अ० ११९/३
जहँ लगि साधन बेद बखानी। सब कर फल हरि भगति भवानी ॥ उ० १२५/७

जहँ सिंसुपा पुनीत तर रघुबर किय बिश्रामु ।
अति सनेहँ सादर भरत कीन्हेउ दंड प्रनामु ॥ अ० १९८/०
जहँ सिय रामु लखनु निसि सोए । कहत भरे जल लोचन कोए ॥ अ० १९७/७
जहाँ जनक गुर गति मति भोरी । प्राकृत प्रीति कहत बड़ि खोरी ॥ अ० ३१७/१
जहाँ बैठि मुनिगन सहित नित सिय रामु सुजान ।
सुनहिं कथा इतिहास सब आगम निगम पुरान ॥ अ० २३७/०
जहाँ रामु तहँ सबुइ समाजू । बिनु रघुबीर अवध नहिं काजू ॥ अ० ८३/६
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना । जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना ॥ सुं० ३९/६
जाइ उतरु अब देहउँ काहा । उर उपजा अति दारुन दाहा ॥ बा० ५३/२
जाइ उपाय रचहु नृप एहू । संबत भरि संकलप करेहू ॥ बा० १६७/८
जाइ कपिन्ह सो देखा बैसा । आहुति देत रुधिर अरु भैंसा ॥ लं० ७५/१
जाइ जननि पग नायउ माथा । मनु रघुनंदन जानकि साथा ॥ अ० ७२/४
जाइ दीख रघुबंसमनि नरपति निपट कुसाजु ।
सहमि परेउ लखि सिंघिनिहि मनहुँ बृद्ध गजराजु ॥ अ० ३९/०
जाइ देखि आवहु नगरु सुख निधान दोउ भाइ ।
करहु सुफल सब के नयन सुंदर बदन देखाइ ॥ बा० २१८/०
जाइ न बरनि मनोहर जोरी । जो उपमा कछु कहौं सो थोरी ॥ बा० ३२४/२
जाइ न बरनि मनोहरताई । जनु महि करति जनक पहुनाई ॥ अ० २७८/५
जाइ निकट नृपु कह मृदु बानी । प्रानप्रिया केहि हेतु रिसानी ॥ अ० २४/८
जाइ निकट पहिचानि तरु छाहँ समनि सब सोच ।
मागत अभिमत पाव जग राउ रंकु भल पोच ॥ अ० २६७/०
जाइ पवनसुत नायउ माथा । लाग सो कहै राम गुन गाथा ॥ लं० ५६/४
जाइ पुकारे ते सब बन उजार जुबराज ।
सुनि सुग्रीव हरष कपि करि आए प्रभु काज ॥ सुं० २८/०
जाइ बिधिहि तिन्ह दीन्हि सो पाती । बाचत प्रीति न हृदयँ समाती ॥ बा० ९०/६
जाइ मुनिन्ह हिमवंतु पठाए । करि बिनती गिरजहिं गृह ल्याए ॥ बा० ८९/१
जाइ संभु पद बंदनु कीन्हा । सनमुख संकर आसनु दीन्हा ॥ बा० ५९/४
जाइ समीप राखि निज डोली । राम मातु मृदु बानी बोली ॥ अ० १८७/४
जाइ समीप राम छबि देखी । रहि जनु कुअँरि चित्र अवरेखी ॥ बा० २६३/४
जाइ सुनहु तहँ हरि गुन भूरी । होइहि मोह जनित दुख दूरी ॥ उ० ६१/५
जाइ सुमंत्र दीख कस राजा । अमिअ रहित जनु चंदु बिराजा ॥ अ० १४७/४
जाइ सुराज सुदेस सुखारी । होहिं भरत गति तेहि अनुहारी ॥ अ० २३४/४
जाइहि सुनत सकल संदेहा । राम चरन होइहि अति नेहा ॥ उ० ६०/८
जाउँ राम पहिं आयसु देहू । एकहिं आँक मोर हित एहू ॥ अ० १७७/७

जा कर चित अहि गति सम भाई। अस कुमित्र परिहरेहिं भलाई ॥ कि० ६/८
जा कर नाम मरत मुख आवा। अधमउ मुकुत होइ श्रुति गावा ॥ अर० ३०/६
जाकर नाम सुनत सुभ होई। मोरें गृह आवा प्रभु सोई ॥ बा० १९२/५
जाकी सहज स्वास श्रुति चारी। सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी ॥ बा० २०३/५
जाकें डर अति काल डेराई। जो सुर असुर चराचर खाई ॥ सुं० २१/९
जाकें डर सुर असुर डेराहीं। निसि न नीद दिन अन्न न खाहीं ॥ अर० २७/८
जाकें नख अरु जटा बिसाला। सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला ॥ उ० ९७/८
जाकें बल बिरंचि हरि ईसा। पालत सृजत हरत दससीसा ॥ सुं० २०/५

जाके बल लवलेस तें जितेहु चराचर झारि।
तासु दूत मैं जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि ॥ सुं० २१/०

जाके सुमिरन तें रिपु नासा। नाम सत्रुहन बेद प्रकासा ॥ बा० १९६/८
जाके हृदयँ भगति जसि प्रीती। प्रभु तहँ प्रगट सदा तेहिं रीती ॥ बा० १८४/३

जागइ मनोभव मुएहुँ मन बन सुभगता न परै कही।
सीतल सुगंध सुमंद मारुत मदन अनल सखा सही ॥
बिकसे सरन्हि बहु कंज गुंजत पुंज मंजुल मधुकरा।
कलहंस पिक सुक सरस रव करि गान नाचहिं अपछरा ॥ बा० ८५/१ छं०

जागत सब निसि भयउ बिहाना। भरत बोलाए सचिव सुजाना ॥ अ० १८६/२
जागबलिक जो कथा सुहाई। भरद्वाज मुनिबरहि सुनाई ॥ बा० २९/१
जागबलिक बोले मुसुकाई। तुम्हहि बिदित रघुपति प्रभुताई ॥ बा० ४६/२
जागबलिक मुनि परम बिबेकी। भरद्वाज राखे पद टेकी ॥ बा० ४४/४
जागा निसिचर देखिअ कैसा। मानहुँ कालु देह धरि बैसा ॥ लं० ६१/७
जागेउ नृप अनभएँ बिहाना। देखि भवन अति अचरजु माना ॥ बा० १७१/२
जागे सकल लोग भएँ भोरू। गे रघुनाथ भयउ अति सोरू ॥ अ० ८५/१
जाचक जन जाचहिं जोइ जोई। प्रमुदित राउ देहिं सोइ सोई ॥ बा० ३५०/७
जाचक दान मान संतोषे। मीत पुनीत प्रेम परितोषे ॥ अ० ७९/४

जाचक लिए हँकारि दीन्हि निछावरि कोटि बिधि।
चिरु जीवहुँ सुत चारि चक्रबर्ति दसरत्थ के ॥ बा० २९५/० सो०

जात पवनसुत देवन्ह देखा। जानैं कहुँ बल बुद्धि बिसेषा ॥ सुं० १/१
जात रहेउँ बिरंचि के धामा। सुनेउँ श्रवन बन ऐहहिं रामा ॥ अर० ७/२
जातरूप मनि रचित अटारीं। नाना रंग रुचिर गच ढारीं ॥ उ० २६/३
जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई। धन बल परिजन गुन चतुराई ॥ अर० ३४/५
जाति पाँति धनु धरमु बड़ाई। प्रिय परिवार सदन सुखदाई ॥ अ० १३०/५

जाति हीन अघ जन्म महि मुक्त कीन्हि असि नारि।
महामंद मन सुख चहसि ऐसे प्रभुहि बिसारि ॥ अर० ३६/०

जातुधान अंगद पन देखी । भय ब्याकुल सब भए बिसेषी ॥ लं० ३४/१३
जातुधान प्रदोष बल पाई । धाए करि दससीस दोहाई ॥ लं० ४५/४
जातुधान बरूथ बल भंजन । मुनि सज्जन रंजन अघ गंजन ॥ उ० ५०/३
जातुधान सुनि रावन बचना । लागे रचैं मूढ़ सोइ रचना ॥ सुं० २४/४
जातें बेगि द्रवउँ मैं भाई । सो मम भगति भगत सुखदाई ॥ अर० १५/२
जातें मोहि न कहत कछु राऊ । मोरि सपथ तोहि कहु सतिभाऊ ॥ अ० ४१/८
जातें लाग न छुधा पिपासा । अतुलित बल तनु तेज प्रकासा ॥ बा० २०८/८
जा दिन तें मुनि गए लवाई । तब तें आजु साँचि सुधि पाई ॥ बा० २९०/७
जा दिन तें हरि गर्भहिं आए । सकल लोक सुख संपति छाए ॥ बा० १८९/६
जान आदिकबि नाम प्रतापू । भयउ सुद्ध करि उलटा जापू ॥ बा० १८/५
जानउँ मैं तुम्हारि प्रभुताई । सहसबाहु सन परी लराई ॥ सुं० २१/१
जानउँ सदा भरत कुलदीपा । बार बार मोहि कहेउ महीपा ॥ अ० २८२/५
जान उमापति जासु सुराई । पूजेउँ जेहि सिर सुमन चढ़ाई ॥ लं० २४/२
जानकी लघु भगिनी सकल सुंदरि सिरोमनि जानि कै ।
सो तनय दीन्ही ब्याहि लखनहि सकल बिधि सनमानि कै ॥
जेहि नाम श्रुतकीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुन आगरी ।
सो दई रिपुसूदनहि भूपति रूप सील उजागरी ॥ बा० ३२४/३ छं०
जानत परम दुर्ग अति लंका । प्रभु प्रताप कपि चले असंका ॥ लं० ३८/९
जानतहूँ अस प्रभु परिहरहीं । काहे न बिपति जाल नर परहीं ॥ कि० ११/५
जानतहूँ अस स्वामि बिसारी । फिरहिं ते काहे न होहिं दुखारी ॥ सुं० ७/१
जानतहूँ पूछिअ कस स्वामी । सबदरसी तुम्ह अंतरजामी ॥ अर० ८/७
जानति कृपासिंधु प्रभुताई । सेवति चरन कमल मन लाई ॥ उ० २३/४
जानब तैं सबही कर भेदा । मम प्रसाद नहिं साधन खेदा ॥ उ० ८४/८
जानसि मोर सुभाउ बरोरू । मनु तव आनन चंद चकोरू ॥ अ० २५/४
जानहिं तीनि काल निज ग्याना । करतल गत आमलक समाना ॥ बा० २९/७
जानहिं दिग्गज उर कठिनाई । जब जब भिरउँ जाइ बरिआई ॥ लं० २४/५
जानहिं यह चरित्र मुनि ग्यानी । जिन्ह रघुबीर चरन रति मानी ॥ कि० १७/७
जानहिं सानुज रामहि मारी । करउँ अकंटक राजु सुखारी ॥ अ० १८८/५
जानहु तात तरनि कुल रीती । सत्यसंध पितु कीरति प्रीती ॥ अ० ३०४/१
जानहु मुनि तुम्ह मोर सुभाऊ । जन सन कबहुँ कि करउँ दुराऊ ॥ अर० ४१/३
जानहुँ राम कुटिल करि मोही । लोग कहउ गुर साहिब द्रोही ॥ अ० २०४/१
जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ । नाम जीहँ जपि जानहिं तेऊ ॥ बा० २१/३
जाना जरठ जटायू एहा । मम कर तीरथ छाँड़िहि देहा ॥ अर० २८/१४
जाना प्रताप ते रहे निर्भय कपिन्ह रिपु माने फुरे ।

चले बिचलि मर्कट भालु सकल कृपाल पाहि भयातुरे ॥
हनुमंत अंगद नील नल अतिबल लरत रन बाँकुरे।
मर्दहिं दसानन कोटि कोटिन्ह कपट भू भट अंकुरे ॥ लं० ९५/१ छं०
जाना मरमु नहात प्रयागा। मगन होहिं तुम्हरें अनुरागा ॥ अ० २०७/५
जाना राम प्रभाउ तब पुलक प्रफुल्लित गात।
जोरि पानि बोले बचन हृदयँ न प्रेमु अमात ॥ बा० २८४/०
जाना राम सतीं दुखु पावा। निज प्रभाउ कछु प्रगटि जनावा ॥ बा० ५३/३
जानिअ तब मन बिरुज गोसाँई। जब उर बल बिराग अधिकाई ॥ उ० १२१/९
जानिअ तबहिं जीव जग जागा। जब सब बिषय बिलास बिरागा ॥ अ० ९२/४
जानिउँ प्रिया तोरि चतुराई। एहि बिधि कहहु मोरि प्रभुताई ॥ लं० १५/६
जानि कठिन सिवचाप बिसूरति। चली राखि उर स्यामल मूरति ॥ बा० २३४/१
जानि कुअवसरु प्रीति दुराई। सखी उछँग बैठी पुनि जाई ॥ बा० ६७/६
जानि कुअवसरु मन धरि धीरा। पुनि कपि सन बोले बलबीरा ॥ लं० ५९/४
जानि कृपाकर किंकर मोहू। सब मिलि करहु छाड़ि छल छोहू ॥ बा० ७/३
जानि गरुइ गुर गिरा बहोरी। चरन बंदि बोले कर जोरी ॥ अ० २१२/२
जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥ बा० २३६/० सो०
जानि तुम्हहि मृदु कहउँ कठोरा। कुसमयँ तात न अनुचित मोरा ॥ अ० ३०५/७
जानि न जाइ निसाचर माया। कामरूप केहि कारन आया ॥ सुं० ४२/६
जानि नृपहि आपन आधीना। बोला तापस कपट प्रबीना ॥ बा० १६७/१
जानि प्रिया आदरु अति कीन्हा। बाम भाग आसनु हर दीन्हा ॥ बा० १०६/३
जानि रामप्रिय दीन्हि असीसा। भरतहि कहेउ बुझाइ मुनीसा ॥ अ० १९२/६
जानि लखन सम देहिं असीसा। जिअहु सुखी सय लाख बरीसा ॥ अ० १९५/५
जानि सभय सुरभूमि सुनि बचन समेत सनेह।
गगनगिरा गंभीर भइ हरनि सोक संदेह ॥ बा० १८६/०
जानि समय सनकादिक आए। तेज पुंज गुन सील सुहाए ॥ उ० ३१/३
जानि सरद रितु खंजन आए। पाइ समय जिमि सुकृत सुहाए ॥ कि० १५/६
जानि सुअवसरु सीय तब पठई जनक बोलाइ।
चतुर सखीं सुंदर सकल सादर चलीं लवाइ ॥ बा० २४६/०
जानी सियँ बरात पुर आई। कछु निज महिमा प्रगटि जनाई ॥ बा० ३०५/७
जानी श्रमित सीय मन माहीं। घरिक बिलंबु कीन्ह बट छाहीं ॥ अ० ११४/३
जानु टेकि कपि भूमि न गिरा। उठा सँभारि बहुत रिस भरा ॥ लं० ८३/१
जानु पानि धाए मोहि धरना। स्यामल गात अरुन कर चरना ॥ उ० ७८/६
जानेउँ तव बल अधम सुरारी। सूनें हरि आनिहि परनारी ॥ लं० २९/६

जानेउँ मरमु राउ हँसि कहई । तुम्हहि कोहाब परम प्रिय अहई ॥ अ० २७/१
जाने ते छीजहिं कछु पापी । नास न पावहिं जन परितापी ॥ उ० १२१/३
जानें बिनु न होइ परतीती । बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती ॥ उ० ८८/७
जानेहि नहीं मरमु सठ मोरा । मोर अहार जहाँ लगि चोरा ॥ सुं० ३/३
जानेहु सदा मोहि निज किंकर । पुनि पुनि उमा कहइ बिहंगबर ॥ उ० १२४/१०
जान्यो मनुज करि दनुज कानन दहन पावक हरि स्वयं ।
जेहि नमत सिव ब्रह्मादि सुर पिय भजेहु नहिं करुनामयं ॥
आजन्म ते परद्रोह रत पापौघमय तव तनु अयं ।
तुम्हहू दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं ॥ लं० १०३/१ छं०
जाब जहाँ लगि तहँ पहुँचाई । फिरब बहोरि तुम्हहि सिरु नाई ॥ अ० १११/८
जा बल सीस धरत सहसानन । अंडकोष समेत गिरि कानन ॥ सुं० २०/६
जा मज्जन ते बिनहिं प्रयासा । मम समीप नर पावहिं बासा ॥ उ० ३/६
जामवंत अंगद दुख देखी । कहीं कथा उपदेस बिसेषी ॥ कि० २५/११
जामवंत कह खल रहु ठाढ़ा । सुनि करि ताहि क्रोध अति बाढ़ा ॥ लं० ७३/४
जामवंत कह तुम्ह सब लायक । पठइअ किमि सब ही कर नायक ॥ कि० २९/२
जामवंत कह बैद सुषेना । लंकाँ रहइ को पठई लेना ॥ लं० ५४/७
जामवंत कह सुनु रघुराया । जा पर नाथ करहु तुम्ह दाया ॥ सुं० २९/१
जामवंत के बचन सुहाए । सुनि हनुमंत हृदय अति भाए ॥ सुं० ०/१
जामवंत नीलादि सब पहिराए रघुनाथ ।
हियँ धरि राम रूप सब चले नाइ पद माथ ॥ उ० १७/० (क)
जामवंत बोले दोउ भाई । नल नीलहि सब कथा सुनाई ॥ लं० ०/५
जामवंत मैं पूँछउँ तोही । उचित सिखावनु दीजहु मोही ॥ कि० २९/१०
जामवंत मंत्री अति बूढ़ा । सो कि होइ अब समरारूढ़ा ॥ लं० २२/४
जामवंत सुग्रीव बिभीषन । सेन समेत रहेहु तीनिउ जन ॥ लं० ७४/१०
जायँ जिअत जग सो महि भारू । जननी जौबन बिटप कुठारू ॥ अ० १८९/८
जायँ जीव बिनु देह सुहाई । बादि मोर सबु बिनु रघुराई ॥ अ० १७७/६
जारा नगरु निमिष एक माहीं । एक बिभीषन कर गृह नाहीं ॥ सुं० २५/६
जारि सकल पुर कीन्हेसि छारा । कहाँ रहा बल गर्ब तुम्हारा ॥ लं० ३५/६
जारै जोगु सुभाउ हमारा । अनभल देखि न जाई तुम्हारा ॥ अ० १५/७
जावक जुत पद कमल सुहाए । मुनि मन मधुप रहत जिन्ह छाए ॥ बा० ३२६/२
जासु अंस उपजहिं गुनखानी । अगनित लच्छि उमा ब्रह्मानी ॥ बा० १४७/३
जासु कथा कुंभज रिषि गाई । भगति जासु मैं मुनिहि सुनाई ॥ बा० ५०/७
जासु कृपा अज सिव सनकादी । कहत सकल परमारथ बादी ॥ अर० ५/५
जासु कृपाँ अस भ्रम मिटि जाई । गिरिजा सोइ कृपाल रघुराई ॥ बा० ११७/३

जासु कृपा कटाच्छु सुर चाहत चितव न सोइ ।
राम पदारबिंद रति करति सुभावहि खोइ ॥ उ० २४/०
जासु कृपा छूटहिं मद मोहा । ता कहुँ उमा कि सपनेहुँ कोहा ॥ कि० १७/६
जासु ग्यान रबि भव निसि नासा । बचन किरन मुनि कमल बिकासा ॥ अ० २७६/१
जासु घ्रान अस्विनीकुमारा । निसि अरु दिवस निमेष अपारा ॥ लं० १४/३
जासु चरन अज सिव अनुरागी । तासु द्रोहँ सुख चहसि अभागी ॥ उ० १०५/४
जासु चरित अवलोकि भवानी । सती सरीर रहिहु बौरानी ॥ बा० १४०/४
जासु चलत डोलति इमि धरनी । चढ़त मत्त गज जिमि लघु तरनी ॥ लं० २४/७
जासु दूत बल बरनि न जाई । तेहि आएँ पुर कवन भलाई ॥ सुं० ३५/३
जासु देस नृप लीन्ह छड़ाई । समर सेन तजि गयउ पराई ॥ बा० १५७/२
जासु नाम जपि सुनहु भवानी । भव बंधन काटहिं नर ग्यानी ॥ सुं० १९/३
जासु नाम पावक अघ तूला । सुमिरत सकल सुमंगल मूला ॥ अ० २४७/२
जासु नाम बल संकर कासी । देत सबहि सम गति अबिनासी ॥ कि० ९/४
जासु नाम भव भेषज हरन घोर त्रय सूल ।
सो कृपाल मोहि तो पर सदा रहउ अनुकूल ॥ उ० १२४/० (क)
जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा । तेहि किमि कहिअ बिमोह प्रसंगा ॥ बा० ११५/४
जासु नाम त्रय ताप नसावन । सोइ प्रभु प्रगट समुझु जियँ रावन ॥ सुं० ३८/८
जासु नाम सुमिरत एक बारा । उतरहिं नर भवसिंधु अपारा ॥ अ० १००/३
जासु पतित पावन बड़ बाना । गावहिं कबि श्रुति संत पुराना ॥ उ० १२९/७
जासु परसु सागर खर धारा । बूड़े नृप अगनित बहु बारा ॥ लं० २५/३
जासु प्रबल माया बस सिव बिरंचि बड़ छोट ।
ताहि दिखावइ निसिचर निज माया मति खोट ॥ लं० ५१/०
जासु बियोग बिकल पसु ऐसें । प्रजा मातु पितु जिइहहिं कैसें ॥ अ० ९९/१
जासु बिरहँ सोचहु दिन राती । रटहु निरंतर गुन गन पाँती ॥ उ० १/३
जासु बिलोकि अलौकिक सोभा । सहज पुनीत मोर मनु छोभा ॥ बा० २३०/३
जासु बिलोकि भगति लवलेसू । प्रेम मगन मुनिगन मिथिलेसू ॥ अ० ३०२/५
जासु भवनु सुरतरु तर होई । सहि कि दरिद्र जनित दुखु सोई ॥ बा० १०७/३
जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी । सो नृपु अवसि नरक अधिकारी ॥ बा० ७०/६
जासु रूप मुनि ध्यान न आवा । तेहिं प्रभु हरषि हृदयँ मोहि लावा ॥ सुं० ४६/८
जासु सकल मंगलमय कीती । तासु पयान सगुन यह नीती ॥ सुं० ३४/५
जासु सत्यता तें जड़ माया । भास सत्य इव मोह सहाया ॥ बा० ११६/८
जासु सनेह सकोच बस राम प्रगट भए आइ ।
जे हर हिय नयननि कबहुँ निरखे नहीं अघाइ ॥ अ० २०९/०
जासु समीप सरित पय तीरा । सीय समेत बसहिं दोउ बीरा ॥ अ० २२४/६

जासु सुभाउ अरिहि अनुकूला। सो किमि करिहि मातु प्रतिकूला ॥ अ० ३१/८
जासु त्रास डर कहुँ डर होई। भजन प्रभाउ देखावत सोई ॥ बा० २२४/७
जाहिं कहाँ ब्याकुल भए बंदर। सुरपति बंदि परे जनु मंदर ॥ लं० ७२/७
जाहि न चाहिअ कबहुँ कछु तुम्ह सन सहज सनेहु।
बसहु निरंतर तासु मन सो राउर निज गेहु ॥ अ० १३१/०
जाहु बेगि संकट अति भ्राता। लछिमन बिहसि कहा सुनु माता ॥ अर० २७/३
जाहु भवन कुल कुसल बिचारी। सुनत जरा दीन्हिसि बहु गारी ॥ अर० २५/१
जाहु भवन मम सुमिरन करेहू। मन क्रम बचन धर्म अनुसरेहू ॥ उ० १९/२
जाहु सुखेन बनहि बलि जाऊँ। करि अनाथ जन परिजन गाऊँ ॥ अ० ५६/४
जाहु सुमंत्र जगावहु जाई। कीजिअ काजु रजायसु पाई ॥ अ० ३७/२
जिअत राम बिधु बदनु निहारा। राम बिरह करि मरनु सँवारा ॥ अ० १५५/२
जिअन मरन फलु दसरथ पावा। अंड अनेक अमल जसु छावा ॥ अ० १५५/१
जिअनमूरि जिमि जोगवत रहऊँ। दीप बाति नहिं टारन कहऊँ ॥ अ० ५८/६
जिअसि सदा सठ मोर जिआवा। रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा ॥ सुं० ४०/३
जिऐ मरै भल भूपति जाना। मोर हृदय सत कुलिस समाना ॥ अ० १६५/८
जिऐ मीन बरु बारि बिहीना। मनि बिनु फनिकु जिऐ दुख दीना ॥ अ० ३२/१
जिति सुरसरि कीरति सरि तोरी। गवनु कीन्ह बिधि अंड करोरी ॥ अ० २८६/३
जितेहु सुरासुर तब श्रम नाहीं। नर बानर केहि लेखे माहीं ॥ सुं० ३६/९
जिन्ह एहिं बारि न मानस धोए। ते कायर कलिकाल बिगोए ॥ बा० ४२/७
जिन्ह कर नामु लेत जग माहीं। सकल अमंगल मूल नसाहीं ॥ बा० ३१४/१
जिन्ह कर नासा कान निपाता। तिन्ह रावनहि कही सब बाता ॥ लं० ४/९
जिन्ह कर भुजबल पाइ दसानन। अभय भए बिचरत मुनि कानन ॥ अर० २१/५
जिन्ह कर मन इन्ह सन नहिं राता। ते जन बंचित किए बिधाता ॥ बा० २०३/२
जिन्ह कें अगुन न सगुन बिबेका। जल्पहिं कल्पित बचन अनेका ॥ बा० ११४/५
जिन्ह कें असि मति सहज न आई। ते सठ कत हठि करत मिताई ॥ कि० ६/२
जिन्ह कें कपट दंभ नहिं माया। तिन्ह कें हृदय बसहु रघुराया ॥ अ० १२९/२
जिन्ह के कछु बिचारु मन माहीं। चाप समीप महीप न जाहीं ॥ बा० २४९/८
जिन्ह के चरन सरोरुह लागी। करत बिबिध जप जोग बिरागी ॥ बा० २२५/४
जिन्ह के जस प्रताप कें आगे। ससि मलीन रबि सीतल लागे ॥ बा० २९१/२
जिन्ह के जीवन कर रखवारा। भयउ मृदुल चित सिंधु बिचारा ॥ सुं० ५२/२
जिन्ह के दसन कराल न फूटे। उर लागत मूलक इव टूटे ॥ लं० २४/६
जिन्ह के बल कर गर्ब तोहि अइसे मनुज अनेक।
खाहिं निसाचर दिवस निसि मूढ़ समुझु तजि टेक ॥ लं० ३१/० (ख)
जिन्ह कें रही भावना जैसी। प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी ॥ बा० २४०/४

जिन्ह के यह आचरन भवानी । ते जानहु निसिचर सब प्रानी ॥ बा० १८३/३
जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना । कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना ॥ अ० १२७/४
जिन्ह कै कीन्हिसि बहुत बड़ाई । देखउँ मैं तिन्ह कै प्रभुताई ॥ सुं० २४/२
जिन्ह कै लहहिं न रिपु रन पीठी । नहिं पावहिं परतिय मनु डीठी ॥ बा० २३०/७
जिन्ह कृत महामोह मद पाना । तिन्ह कर कहा करिअ नहिं काना ॥ बा० ११४/८
जिन्ह जानकी राम छबि देखी । को सुकृती हम सरिस बिसेखी ॥ बा० ३०९/५

जिन्ह जिन्ह देखे पथिक प्रिय सिय समेत दोउ भाइ ।
भव मगु अगमु अनंदु तेइ बिनु श्रम रहे सिराइ ॥ अ० १२३/०

जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाए । भूप द्वार रथु देखन आए ॥ अ० १४६/६
जिन्ह तरुबरन्ह मध्य बटु सोहा। मंजु बिसाल देखि मनु मोहा ॥ अ० २३६/३
जिन्ह निज रूप मोहनी डारी । कीन्हे स्वबस नगर नर नारी ॥ बा० २२८/५

जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि भरतु रहे मन लाइ ।
ते पद आजु बिलोकिहउँ इन्ह नयनन्हि अब जाइ ॥ सुं० ४२/०

जिन्ह बीथिन्ह बिहरहिं सब भाई । थकित होहिं सब लोग लुगाई ॥ बा० २०३/८
जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे । तेहि पर बाँधेउँ तनयँ तुम्हारे ॥ सुं० २१/५
जिन्ह रघुनाथ चरन रति मानी । तिन्ह की यह गति प्रगट भवानी ॥ बा० १९९/२
जिन्ह हरि कथा सुनी नहिं काना । श्रवन रंध्र अहिभवन समाना ॥ बा० ११२/२
जिन्ह हरिभगति हृदयँ नहिं आनी । जीवत सव समान तेइ प्रानी ॥ बा० ११२/५
जिन्हहि निरखि मग साँपिनि बीछी । तजहिं बिषम बिषु तामस तीछी ॥ अ० २६१/८
जिन्हहि बिरचि बड़ भयउ बिधाता । महिमा अवधि राम पितु माता ॥ बा० १५/८
जिन्हहि राम तुम्ह प्रानपिआरे । तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे ॥ अ० १२९/८
जिन्हहि सोक ते कहउँ बखानी । प्रथमं अबिद्या निसा नसानी ॥ उ० ३०/३
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना । एही भाँति चलेउ हनुमाना ॥ सुं० ०/८
जिमि अरुनोपल निकर निहारी । धावहिं सठ खग मांस अहारी ॥ लं० ३९/९
जिमि करि निकर दलइ मृगराजू । लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू ॥ अ० २२९/६
जिमि कुलीन तिय साधु सयानी । पतिदेवता करम मन बानी ॥ अ० १४४/१
जिमि कोउ करै गरुड़ सैं खेला । डरपावै गहि स्वल्प सपेला ॥ लं० ५०/८
जिमि चह कुसल अकारन कोही । सब संपदा चहै सिवद्रोही ॥ बा० २६६/२
जिमि जलु निघटत सरद प्रकासे । बिलसत बेतस बनज बिकासे ॥ अ० ३२४/३

जिमि जिमि प्रभु हर तासु सिर तिमि तिमि होहिं अपार ।
सेवत बिषय बिबर्ध जिमि नित नित नूतन मार ॥ लं० ९२/०

जिमि जिमि तापसु कथइ उदासा । तिमि तिमि नृपहि उपज बिस्वासा ॥ बा० १६१/५
जिमि जिमि दूरि उड़ाउँ अकासा । तहँ भुज हरि देखउँ निज पासा ॥ उ० ७८/८
जिमि थल बिनु जल रहि न सकाई । कोटि भाँति कोउ करै उपाई ॥ उ० ११८/५

जिमि पिपीलिका सागर थाहा । महा मंदमति पावन चाहा ॥ अर० ०/६
जिमि सरिता सागर महुँ जाहीं । जद्यपि ताहि कामना नाहीं ॥ बा० २९३/२
जिमि सिसु तन ब्रन होइ गोसाईं । मातु चिराव कठिन की नाईं ॥ उ० ७३/८
जिमि हरिबधुहि छुद्र सस चाहा । भएसि कालबस निसिचर नाहा ॥ अर० २७/१५
जिय बिनु देह नदी बिनु बारी । तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी ॥ अ० ६४/७
जीति को सकइ अजय रघुराई । माया तें असि रचि नहिं जाई ॥ सुं० १२/३
जीति मोह महिपालु दल सहित बिबेक भुआलु ।
करत अकंटक राजु पुरँ सुख संपदा सुकालु ॥ अ० २३५/०
जीतेहु जे भट संजुग माहीं । सुनु तापस मैं तिन्ह सम नाहीं ॥ लं० ८९/३
जीभ कमान बचन सर नाना । मनहुँ महिप मृदु लच्छ समाना ॥ अ० ४०/२
जीव करम बस सुख दुख भागी । जाइअ अवध देव हित लागी ॥ अ० ११/४
जीव चराचर जंतु समाना । भीतर बसहिं न जानहिं आना ॥ अर० १२/७
जीव चराचर जो संसारा । देखे सकल अनेक प्रकारा ॥ बा० ५४/२
जीव चराचर बस कै राखे । सो माया प्रभु सों भय भाखे ॥ बा० १९९/४
जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं । जल बिलोकि तिन्ह कै परिछाहीं ॥ सुं० २/२
जीवत पाउ न पाछें धरहीं । रुंड मुंडमयं मेदिनि करहीं ॥ अ० १९१/२
जीवत सकल जनम फल पाए । अंत अमरपति सदन सिधाए ॥ अ० १६०/३
जीवन जन्म सुफल मम भयऊ । तव प्रसाद संसय सब गयऊ ॥ उ० १२४/९
जीवनमुक्त महामुनि जेऊ । हरि गुन सुनहिं निरंतर तेऊ ॥ उ० ५२/२
जीवनमुक्त ब्रह्मपर चरित सुनहिं तजि ध्यान ।
जे हरि कथाँ न करहिं रति तिन्ह के हिय पाषान ॥ उ० ४२/०
जीवन लाहु लखन भल पावा । सबु तजि राम चरन मनु लावा ॥ अ० १८१/७
जीव हृदयँ तम मोह बिसेखी । ग्रंथि छूट किमि परइ न देखी ॥ उ० ११६/७
जुग बिच भगति देवधुनि धारा । सोहति सहित सुबिरति बिचारा ॥ बा० ३९/३
जुग बिधि ज्वर मत्सर अबिबेका । कहँ लगि कहौं कुरोग अनेका ॥ उ० १२०/३७
जुग सम नृपहि गए दिन तीनी । कपटी मुनि पद रह मति लीनी ॥ बा० १७१/७
जुगुति बिभीषन सकल सुनाई । चलेउ पवनसुत बिदा कराई ॥ सुं० ७/५
जुगुति बेधि पुनि पोहिअहिं रामचरित बर ताग ।
पहिरहिं सज्जन बिमल उर सोभा अति अनुराग ॥ बा० ११/०
जुगुति सुनत रावन मुसुकाई । मूढ़ सिखिहि कहँ बहुत झुठाई ॥ लं० ३३/५
जुद्ध बिरुद्ध क्रुद्ध द्वौ बंदर । राम प्रताप सुमिरि उर अंतर ॥ लं० ४३/१
जुबति बृंद रोवत उठि धाईं । तेहि उठाइ रावन पहिं आईं ॥ लं० १०३/२
जुबतीं भवन झरोखन्हि लागीं । निरखहिं राम रूप अनुरागीं ॥ बा० २१९/४
जूझे सकल सुभट करि करनी । बंधु समेत परेउ नृप धरनी ॥ बा० १७४/६

जूथ जूथ मिलि चलीं सुआसिनि । निज छबि निदरहिं मदन बिलासिनि ॥ बा० ३४४/५
जूथ जूथ मिलि सुमुखि सुनयनीं । करहिं गान कल कोकिलबयनीं ॥ बा० २८५/२
जे अघ तिय बालक बध कीन्हें । मीत महीपति माहुर दीन्हें ॥ अ० १६६/६
जे अघ मातु पिता सुत मारें । गाइ गोठ महिसुर पुर जारें ॥ अ० १६६/५
जे अपकारी चार तिन्ह कर गौरव मान्य तेइ ।
मन क्रम बचन लबार तेइ बकता कलिकाल महुँ ॥ उ० ९८/० (ख) सो०
जे असि भगति जानि परिहरहीं । केवल ग्यान हेतु श्रम करहीं ॥ उ० ११४/१
जे एहि कथहि सनेह समेता । कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता ॥ बा० १४/१०
जे कछु समाचार सुनि पावहिं । ते नृप रानिहि दोसु लगावहिं ॥ अ० १२१/२
जे कामी लोलुप जग माहीं । कुटिल काक इव सबहि डेराहीं ॥ बा० १२४/८
जे गावहिं यह चरित सँभारे । तेइ एहि ताल चतुर रखवारे ॥ बा० ३७/१
जे गुर चरन रेनु सिर धरहीं । ते जनु सकल बिभव बस करहीं ॥ अ० २/५
जे गुर पद अंबुज अनुरागी । ते लोकहुँ बेदहुँ बड़भागी ॥ अ० २५८/५
जे ग्यान मान बिमत्त तव भव हरनि भक्ति न आदरी ।
ते पाइ सुर दुर्लभ पदादपि परत हम देखत हरी ॥
बिस्वास करि सब आस परिहरि दास तव जे होइ रहे ।
जपि नाम तव बिनु श्रम तरहिं भव नाथ सो समरामहे ॥ उ० १२/३ छं०
जे चरन सिव अज पूज्य रज सुभ परसि मुनिपतिनी तरी ।
नख निर्गता मुनि बंदिता त्रैलोक पावनि सुरसरी ॥
ध्वज कुलिस अंकुस कंज जुत बन फिरत कंटक किन लहे ।
पद कंज द्वंद मुकुंद राम रमेस नित्य भजामहे ॥ उ० १२/४ छं०
जे जन कहहिं कुसल हम देखे । ते प्रिय राम लखन सम लेखे ॥ अ० २२३/७
जे जनमे कलिकाल कराला । करतब बायस बेष मराला ॥ बा० ११/१
जे जल चलहिं थलहि की नाईं । टाप न बूड़ बेग अधिकाईं ॥ बा० २९८/७
जे जानहिं ते जानहुँ स्वामी । सगुन अगुन उर अंतरजामी ॥ अर० १०/१९
जे जे बर के दोष बखाने । ते सब सिव पहिं मैं अनुमाने ॥ बा० ६८/३
जे जैसेहिं तैसेहिं उठि धावहिं । बाल बृद्ध कहँ सँग न लावहिं ॥ उ० २/७
जेठ स्वामि सेवक लघु भाई । यह दिनकर कुल रीति सुहाई ॥ अ० १४/३
जेठे सुतहि राज नृप दीन्हा । हरि हित आपु गवन बन कीन्हा ॥ बा० १५२/८
जे तिन्ह महुँ बयबिरिध सयाने । तिन्ह करि जुगुति रामु पहिचाने ॥ अ० १०९/४
जे दिन गए तुम्हहि बिनु देखें । ते बिरंचि जनि पारहिं लेखें ॥ बा० ३५६/८
जे न भजहिं अस प्रभु भ्रम त्यागी । ग्यान रंक नर मंद अभागी ॥ अर० ४४/३
जे न भजहिं हरि नरतनु पाई । जिन्हहि न हरि हर सुजसु सोहाई ॥ अ० १६७/६
जे न मित्र दुख होहिं दुखारी । तिन्हहि बिलोकत पातक भारी ॥ कि० ६/१

जे नर नारि न अवसर आए। तिन्ह सिय रामु न देखन पाए॥ अ० १२०/६
जे नहिं साधुसंग अनुरागे। परमारथ पथ बिमुख अभागे॥ अ० १६७/५
जे निज भगत नाथ तव अहहीं। जो सुख पावहिं जो गति लहहीं॥ बा० १४९/८
जे नृप सीय स्वयंबर आए। देखि बंधु सब तिन्ह सुख पाए॥ बा० ३११/२
जे पद जनकसुताँ उर लाए। कपट कुरंग संग धर धाए॥ सुं० ४१/७
जे पद परस तरी रिषिनारी। दंडक कानन पावनकारी॥ सुं० ४१/६
जे पर दोष लखहिं सहसाखी। पर हित घृत जिन्ह के मन माखी॥ बा० ३/४
जे पर भनिति सुनत हरषाहीं। ते बर पुरुष बहुत जग नाहीं॥ बा० ७/१२
जे परसि मुनिबनिता लही गति रही जो पातकमई।
मकरंदु जिन्ह को संभु सिर सुचिता अवधि सुर बरनई॥
करि मधुप मन मुनि जोगिजन जे सेइ अभिमत गति लहैं।
ते पद पखारत भाग्यभाजनु जनकु जय जय सब कहैं॥ बा० ३२३/२ छं०
जे परिहरि हरि हर चरन भजहिं भूतगन घोर।
तेहि कइ गति मोहि देउ बिधि जौं जननी मत मोर॥ अ० १६७/०
जे पातक उपपातक अहहीं। करम बचन मन भव कबि कहहीं॥ अ० १६६/७
जे पुर गाँव बसहिं मग माहीं। तिन्हहि नाग सुर नगर सिहाहीं॥ अ० ११२/१
जे प्राकृत कबि परम सयाने। भाषाँ जिन्ह हरि चरित बखाने॥ बा० १३/५
जे बरनाधम तेलि कुम्हारा। स्वपच किरात कोल कलवारा॥ उ० ९९/५
जे बिरंचि निरलेप उपाए। पदुम पत्र जिमि जग जल जाए॥ अ० ३१६/८
जे ब्रह्म अजमद्वैतमनुभवगम्य मनपर ध्यावहीं।
ते कहहुँ जानहुँ नाथ हम तव सगुन जस नित गावहीं॥
करुनायतन प्रभु सदगुनाकर देव यह बर मागहीं।
मन बचन कर्म बिकार तजि तव चरन हम अनुरागहीं॥ उ० १२/६ छं०
जे भरि नयन बिलोकहिं रामहि। सीता लखन सहित घनस्यामहि॥ अ० ११२/५
जे मति मलिन बिषयबस कामी। प्रभु पर मोह धरहिं इमि स्वामी॥ उ० ७२/२
जे महिसुर दसरथ पुर बासी। जे मिथिलापति नगर निवासी॥ अ० २७७/१
जे मृग राम बान के मारे। ते तनु तजि सुरलोक सिधारे॥ बा० २०४/३
जे रामेस्वर दरसनु करिहहिं। ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं॥ लं० २/१
जेवँत देहिं मधुर धुनि गारी। लै लै नाम पुरुष अरु नारी॥ बा० ३२८/६
जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं। सुख संपति नाना बिधि पावहिं॥ उ० १४/३
जे सजीव जग अचर चर नारि पुरुष अस नाम।
ते निज निज मरजाद तजि भए सकल बस काम॥ बा० ८४/०
जे सठ गुर सन इरिषा करहीं। रौरव नरक कोटि जुग परहीं॥ उ० १०६/५
जे सर सरित राम अवगाहहिं। तिन्हहि देव सर सरित सराहहिं॥ अ० ११२/६

जे सुनि सादर नर बड़भागी । भव तरिहहिं ममता मद त्यागी ॥ बा० १५१/३
जे सुर समर धीर बलवाना । जिन्ह कें लरिबे कर अभिमाना ॥ बा० १८१/२
जे श्रद्धा संबल रहित नहिं संतन्ह कर साथ ।
तिन्ह कहुँ मानस अगम अति जिन्हहि न प्रिय रघुनाथ ॥ बा० ३८/०
जे हरषहिं पर संपति देखी । दुखित होहिं पर बिपति बिसेषी ॥ अ० १२९/७
जेहिं अघ बधेउ ब्याध जिमि बाली । फिरि सुकंठ सो कीन्हि कुचाली ॥ बा० २८/६
जेहिं आश्रम तुम्ह बसब पुनि सुमिरत श्रीभगवंत ।
ब्यापिहि तहँ न अबिद्या जोजन एक प्रजंत ॥ उ० ११३/० (ख)
जेहि इमि गावहिं बेद बुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान ।
सोइ दसरथ सुत भगत हित कोसलपति भगवान ॥ बा० ११८/०
जेहिं उपाय पुनि पाय जनु देखै दीनदयाल ।
सो सिख देइअ अवधि लगि कोसलपाल कृपाल ॥ अ० ३१३/०
जेहि कारन अज अगुन अरूपा । ब्रह्म भयउ कोसलपुर भूपा ॥ बा० १४०/२
जेहिं कृत कपट कनक मृग झूठा । अजहुँ सो दैव मोहि पर रूठा ॥ लं० ९८/७
जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू । सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू ॥ बा० २५८/६
जेहिं कौतुक सिवसैलु उठावा । सोउ तेहि सभाँ पराभउ पावा ॥ बा० २९१/८
जेहिं गिरि चरन देइ हनुमंता । चलेउ सो गा पाताल तुरंता ॥ सुं० ०/७
जेहिं चाहत नर नारि सब अति आरत एहि भाँति ।
जिमि चातक चातकि तृषित बृष्टि सरद रितु स्वाति ॥ अ० ५२/०
जेहि जन पर ममता अति छोहू । जेहिं करुना करि कीन्ह न कोहू ॥ बा० १२/६
जेहिं जलनाथ बँधायउ हेला । उतरे प्रभु दल सहित सुबेला ॥ लं० ३६/१
जेहि जस जोग बाँटि गृह दीन्हे । सुखी सकल रजनीचर कीन्हे ॥ बा० १७८/७
जेहि जानें जग जाइ हेराई । जागें जथा सपन भ्रम जाई ॥ बा० ११२/२
जेहिं जेहिं जोनि करम बस भ्रमहीं । तहँ तहँ ईसु देउ यह हमहीं ॥ अ० २३/५
जेहिं जेहिं देस धेनु द्विज पावहिं । नगर गाउँ पुर आगि लगावहिं ॥ बा० १८२/६
जे हित रहे करत तेइ पीरा । उरग स्वास सम त्रिबिध समीरा ॥ सुं० १४/४
जेहि तरु तर प्रभु बैठहिं जाई । करहिं कलपतरु तासु बड़ाई ॥ अ० ११२/७
जेहिं ताड़का सुबाहु हति खंडेउ हर कोदंड ।
खर दूषन तिसिरा बधेउ मनुज कि अस बरिबंड ॥ अर० २५/०
जेहि तुरंग पर रामु बिराजे । गति बिलोकि खगनायकु लाजे ॥ बा० ३१५/७
जेहि तें कछु निज स्वारथ होई । तेहि पर ममता कर सब कोई ॥ उ० ९४/८
जेहि ते नीच बड़ाई पावा । सो प्रथमहिं हति ताहि नसावा ॥ उ० १०५/९
जेहि ते बिपरीत क्रिया करिऐ । दुख सो सुख मानि सुखी चरिऐ ॥ लं० ११०/२० छं०
जेहिं तेहि गति तेहि समय निहारी । तेहि लघु लगहिं भुवन दस चारी ॥ बा० २८८/७

जेहि दिन राम जनम श्रुति गावहिं । तीरथ सकल तहाँ चलि आवहिं ॥ बा० ३३/६
जेहि दिसि बैठे नारद फूली । सो दिसि तेहिं न बिलोकी भूली ॥ बा० १३४/१
जेहिं देखे तेहि समय बिदेहू । नामु सत्य अस लाग न केहू ॥ अ० २७०/२
जेहिं न रामु बन लहहिं कलेसू । सुत सोइ करेहु इहइ उपदेसू ॥ अ० ७४/८
जेहि न होइ रन सनमुख कोई । सुरपुर नितहिं परावन होई ॥ बा० १७९/८
जेहिं पद सुरसरिता परम पुनीता प्रगट भई सिव सीस धरी ।
सोई पद पंकज जेहि पूजत अज मम सिर धरेउ कृपाल हरी ॥
एहि भाँति सिधारी गौतम नारी बार बार हरि चरन परी ।
जो अति मन भावा सो बरु पावा गै पतिलोक अनंद भरी ॥ बा० २१०/४ छं०
जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी । कबि उर अजिर नचावहिं बानी ॥ बा० १०४/६
जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी । सो न पाव मुनि भगति हमारी ॥ बा० १३७/७
जेहिं पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा । सकल कपिन्ह महँ तेहि बलु थोरा ॥ सुं० ५३/७
जेहि पूँछउँ सोइ मुनि अस कहई । ईस्वर सर्ब भूतमय अहई ॥ उ० १०९/१५
जेहिं बन जाइ रहब रघुराई । परनकुटी मैं करबि सुहाई ॥ अ० १०३/५
जेहिं बर बाजि रामु असवारा । तेहि सारदउ न बरनै पारा ॥ बा० ३१६/१
जेहिं बलि बाँधि सहसभुज मारा । सोइ अवतरेउ हरन महि भारा ॥ लं० ५/८
जेहिं बहु बार नचावा मोही । सोइ ब्यापी बिहंगपति तोही ॥ उ० ५८/६
जेहिं बारीस बँधायउ हेला । उतरेउ सेन समेत सुबेला ॥ लं० ८/५
जेहि बिधि अवध आव फिरि सीया । सोइ रघुबरहि तुम्हहि करनीया ॥ अ० ९५/७
जेहि बिधि कपट कुरंग सँग धाइ चले श्रीराम ।
सो छबि सीता राखि उर रटति रहति हरिनाम ॥ अर० २९/० (ख)
जेहि बिधि कपिपति कीस पठाए । सीता खोज सकल दिसि धाए ॥ उ० ६६/१
जेहि बिधि कृपासिंधु सुख मानइ । सोइ कर श्री सेवा बिधि जानइ ॥ उ० २३/७
जेहिं बिधि तुम्हहि रूपु अस दीन्हा । तेहिं जड़ बरु बाउर कस कीन्हा ॥ बा० ९५/८
जेहि बिधि नाथ होइ हित मोरा । करहु सो बेगि दास मैं तोरा ॥ बा० १३१/७
जेहि बिधि प्रभु प्रसन्न मन होई । करुना सागर कीजिअ सोई ॥ अ० २६८/२
जेहि बिधि मोह भयउ प्रभु मोही । सोउ सब कथा सुनावउँ तोही ॥ उ० ७३/२
जेहिं बिधि मोहि दुख दुसह सहाए । लछिमन कहुँ कटु बचन कहाए ॥ लं० ९८/८
जेहि बिधि राम नगर निज आए । बायस बिसद चरित सब गाए ॥ उ० ६७/५
जेहिं बिधि राम बिमुख मोहि कीन्हा । तेहिं पुनि यह दारुन दुख दीन्हा ॥ लं० ५८/५
जेहि बिधि सुखी होहिं पुर लोगा । करहिं कृपानिधि सोइ संजोगा ॥ बा० २०४/५
जेहि बिधि होइ धर्म निर्मूला । सो सब करहिं बेद प्रतिकूला ॥ बा० १८२/५
जेहि बिधि होइ राम कल्यानू । देहू दया करि सो बरदानू ॥ अ० ७/६
जेहि बिधि होइहि परम हित नारद सुनहु तुम्हार ।

सोइ हम करब न आन कछु बचन न मृषा हमार ॥ बा० १३२/०
जेहिं बिरंचि रचि सीय सँवारी । तेहिं स्यामल बरु रचेउ बिचारी ॥ बा० २२२/७
जेहि भाँति सोकु कलंकु जाइ उपाय करि कुल पालही ।
हठि फेरु रामहि जात बन जनि बात दूसरि चालही ॥
जिमि भानु बिनु दिनु प्रान बिनु तनु चंद बिनु जिमि जामिनी ।
तिमि अवध तुलसीदास प्रभु बिनु समुझि धौं जियँ भामिनी ॥ अ० ४९/१ छं०
जेहिं मंडप दुलहिनि बैदेही । सो बरनै अस मति कबि केही ॥ बा० २८८/४
जेहि महुँ आदि मध्य अवसाना । प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना ॥ उ० ६०/६
जेहिं मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं । कहहु तूल केहि लेखे माहीं ॥ बा० ११/११
जेहिं यह कथा सुनी नहिं होई । जनि आचरजु करै सुनि सोई ॥ बा० ३२/३
जेहिं राउर अति अनभल ताका । सोइ पाइहि यहु फलु परिपाका ॥ अ० २०/५
जेहिं रिपु छय सोइ रचेन्हि उपाऊ । भावी बस न जान कछु राऊ ॥ बा० १६९/८
जेहिं रिस जाइ करिअ सोइ स्वामी । मोहि जानिअ आपन अनुगामी ॥ बा० २८०/८
जेहि राखहिं रहु घर रखवारी । सो जानइ जनु गरदनि मारी ॥ अ० १८४/६
जेहि लखि लखनहु तें अधिक मिले मुदित मुनिराउ ।
सो सीतापति भजन को प्रगट प्रताप प्रभाउ ॥ अ० २४३/०
जेहिं समाज बैठे मुनि जाई । हृदयँ रूप अहमिति अधिकाई ॥ बा० १३३/१
जेहि समान अतिसय नहिं कोई । ता कर सील कस न अस होई ॥ अर० ५/८
जेहिं सायक मारा मैं बाली । तेहिं सर हतौं मूढ़ कहँ काली ॥ कि० १७/५
जेहि सुख लागि पुरारि असुभ बेष कृत सिव सुखद ।
अवधपुरी नर नारि तेहि सुख महुँ संतत मगन ॥ उ० ८८/० (क) सो०
जेहिं सुनि बिनय मोहि जनु जानी । आवहिं बहुरि रामु रजधानी ॥ अ० १८२/८
जेहि सुभायँ चितवहिं हितु जानी । सो जानइ जनु आइ खुटानी ॥ बा० २६८/३
जेहिं सृष्टि उपाई त्रिबिध बनाई संग सहाय न दूजा ।
सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिअ भगति न पूजा ॥
जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन बिपति बरूथा ।
मन बच क्रम बानी छाड़ि सयानी सरन सकल सुर जूथा ॥ बा० १८५/३ छं०
जेहि श्रुति निरंजन ब्रह्म ब्यापक बिरज अज कहि गावहीं ।
करि ध्यान ग्यान बिराग जोग अनेक मुनि जेहि पावहीं ॥
सो प्रगट करुना कंद सोभा बृंद अग जग मोहई ।
मम हृदय पंकज भृंग अंग अनंग बहु छबि सोहई ॥ अर० ३१/३ छं०
जैसें जाइ मोह भ्रम भारी । करेहु सो जतनु बिबेक बिचारी ॥ बा० ५१/३
जैसें मिटै मोर भ्रम भारी । कहहु सो कथा नाथ बिस्तारी ॥ बा० ४६/१
जैहउँ अवध कवन मुहु लाई । नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई ॥ लं० ६०/११

जो अगम सुगम सुभाव निर्मल असम सम सीतल सदा ।
पस्यंति जं जोगी जतन करि करत मन गो बस सदा ॥
सो राम रमा निवास संतत दास बस त्रिभुवन धनी ।
मम उर बसउ सो समन संसृति जासु कीरति पावनी ॥ अर० ३१/४ छं०
जो अचवँत नृप मातहिं तेई । नाहिन साधुसभा जेहिं सेई ॥ अ० २३०/७
जो अति आतप ब्याकुल होई । तरु छाया सुख जानइ सोई ॥ उ० ६८/३
जो अति सुभट सराहेहु रावन । सो सुग्रीव केर लघु धावन ॥ लं० २२/९
जो अपराधु भगत कर करई । राम रोष पावक सो जरई ॥ अ० २१७/५
जो आनंद सिंधु सुखरासी । सीकर तें त्रैलोक सुपासी ॥ बा० १९६/५
जो आपन चाहै कल्याना । सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना ॥ सुं० ३७/५
जो इच्छा करिहहु मन माहीं । हरि प्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं ॥ उ० ११३/४
जो इन्ह कर मारा नहिं मरई । बिप्रद्रोह पावक सो जरई ॥ उ० १०८/१४
जोइ जोइ मन भावइ सोइ लेहीं । मनि मुख मेलि डारि कपि देहीं ॥ लं० ११६/७
जोइ जोइ सगुन जानकिहि होई । असगुन भयउ रावनहि सोई ॥ सुं० ३४/७
जोइ तनु धरउँ तजउँ पुनि अनायास हरिजान ।
जिमि नूतन पट पहिरइ नर परिहरइ पुरान ॥ उ० १०९/० (ग)
जोइ पूँछिहि तेहि ऊतरु देबा । जाइ अवध अब यहु सुखु लेबा ॥ अ० १४५/५
जो एतेहुँ दुख मोहि जिआवा । अजहुँ को जानइ का तेहि भावा ॥ अ० १६४/८
जो एहि बरइ अमर सोइ होई । समरभूमि तेहि जीत न कोई ॥ बा० १३०/३
जो कछु आयसु ब्रह्माँ दीन्हा । हरषे देव बिलंब न कीन्हा ॥ बा० १८७/२
जो कछु कहेहु सत्य सब सोई । सखा बचन मम मृषा न होई ॥ कि० ६/२३
जो कछु रुचि तुम्हरे मन माहीं । मैं सो दीन्ह सब संसय नाहीं ॥ बा० १५०/२
जो कह झूँठ मसखरी जाना । कलिजुग सोइ गुनवंत बखाना ॥ उ० ९७/६
जो कह रामु लखनु बैदेही । हिंकरि हिंकरि हित हेरहिं तेही ॥ अ० १४२/७
जो किछु कहब थोर सखि सोई । राम बंधु अस काहे न होई ॥ अ० २२२/२
जो कोसल पति राजिव नयना । करउ सो राम हृदय मम अयना ॥ अर० १०/२०
जोग अगिनि करि प्रगट तब कर्म सुभासुभ लाइ ।
बुद्धि सिरावै ग्यान घृत ममता मल जरि जाइ ॥ उ० ११७/० (क)
जोग जग्य जप तप ब्रत कीन्हा । प्रभु कहँ देइ भगति बर लीन्हा ॥ अर० ७/७
जोग जुगुति तप मंत्र प्रभाऊ । फलइ तबहिं जब करिअ दुराऊ ॥ बा० १६७/४
जोग बियोग भोग भल मंदा । हित अनहित मध्यम भ्रम फंदा ॥ अ० ९१/५
जोग भोग महँ राखेउ गोई । राम बिलोकत प्रगटेउ सोई ॥ बा० १६/२
जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भए अनुकूल ।
चर अरु अचर हर्षजुत राम जनम सुखमूल ॥ अ० १९०/०

जोगवहिं जिन्हहि प्रान की नाईं। महि सोवत तेइ राम गोसाईं॥ अ० ९०/५
जोगवहिं प्रभु सिय लखनहिं कैसें। पलक बिलोचन गोलक जैसें॥ अ० १४१/१
जोगिनि गहें करबाल। एक हाथ मनुज कपाल॥
करि सद्य सोनित पान। नाचहिं करहिं बहु गान॥ लं० १००/२ छं०
जोगिनि भरि भरि खप्पर संचहिं। भूत पिसाच बधू नभ नंचहिं॥ लं० ८७/७
जोगिन्ह परम तत्त्वमय भासा। सांत सुद्ध सम सहज प्रकासा॥ बा० २४१/४
जोगि बृंद दुरलभ गति जोई। तो कहुँ आजु सुलभ भइ सोई॥ अर० ३५/८
जोगी अकंटक भए पति गति सुनत रति मुरुछित भई।
रोदति बदति बहु भाँति करुना करति संकर पहिं गई॥
अति प्रेम करि बिनती बिबिध बिधि जोरि कर सन्मुख रही।
प्रभु आसुतोष कृपाल सिव अबला निरखि बोले सही॥ अ० ८६/१ छं०
जोगी जटिल अकाम मन नगन अमंगल बेष।
अस स्वामी एहि कहँ मिलिहि परी हस्त असि रेख॥ बा० ६७/०
जोगी सूर सुतापस ग्यानी। धर्म निरत पंडित बिग्यानी॥ उ० १२३/६
जोगु कुजोगु ग्यानु अग्यानु। जहँ नहिं राम पेम परधानू॥ अ० २९०/२
जो गुन रहित सगुन सोइ कैसें। जलु हिम उपल बिलग नहिं जैसें॥ बा० ११५/३
जो गंगाजलु आनि चढ़ाइहि। सो सायुज्य मुक्ति नर पाइहि॥ लं० २/२
जो ग्यानिन्ह कर चित अपहरई। बरिआईं बिमोह मन करई॥ उ० ५८/५
जो चेतन कहँ जड़ करइ जड़हि करइ चैतन्य।
अस समर्थ रघुनायकहि भजहिं जीव ते धन्य॥ अ० ११९/० (ख)
जोजन भरि तेहिं बदनु पसारा। कपि तनु कीन्ह दुगुन बिस्तारा॥ सुं० १/७
जो जहँ सुनइ धुनइ सिरु सोई। बड़ बिषादु नहिं धीरजु होई॥ अ० ४५/८
जो जेहि भायँ रहा अभिलाषी। तेहि तेहि कै तसि तसि रुख राखी॥ अ० २४३/२
जो तुम्ह कहा सो मृषा न होई। मोरें मन प्रतीति अति सोई॥ बा० ५५/३
जो न तरै भव सागर नर समाज अस पाइ।
सो कृत निंदक मंदमति आत्माहन गति जाइ॥ उ० ४४/०
जो नहाइ चह एहिं सर भाई। सो सतसंग करउ मन लाई॥ बा० ३८/८
जो नहिं करइ राम गुन गाना। जीह सो दादुर जीह समाना॥ बा० ११२/६
जो नहिं देखा नहिं सुना जो मनहुँ न समाइ।
सो सब अद्भुत देखेउँ बरनि कवनि बिधि जाइ॥ उ० ८०/० (क)
जो नाघइ सत जोजन सागर। करइ सो राम काज मति आगर॥ कि० २८/१
जो निर्बिघ्न पंथ निर्बहई। सो कैवल्य परम पद लहई॥ उ० ११८/२
जो पावँरु अपनी जड़ताईं। तुम्हहि सुगाइ मातु कुटिलाईं॥ अ० १८३/६
जो प्रबंध बुध नहिं आदरहीं। सो श्रम बादि बाल कबि करहीं॥ बा० १३/८

जो प्रभु बिपिन फिरत तुम्ह देखा। बंधु समेत धरें मुनिबेषा ॥ बा० १४०/३
जो प्रभु मैं पूछा नहिं होई। सोउ दयाल राखहु जनि गोई ॥ बा० ११०/४
जोबन ज्वर केहि नहिं बलकावा। ममता केहि कर जस न नसावा ॥ उ० ७०/२
जो बरु नाथ चतुर नृप मागा। सोइ कृपाल मोहि अति प्रिय लागा ॥ बा० १४९/४
जो बसिष्ट अनुसासन दीन्ही। लोक बेद बिधि सादर कीन्ही ॥ बा० ३५१/१
जो बसिष्ठ कछु हृदयँ बिचारा। सकल काजु भा सिद्ध तुम्हारा ॥ बा० १८८/७

जो बिलोकि अनुचित कहेउँ छमहु महामुनि धीर।
सुनि सरोष भृगुबंसमनि बोले गिरा गभीर ॥ बा० २७३/०

जो भुसुंडि मन मानस हंसा। सगुन अगुन जेहि निगम प्रसंसा ॥ बा० १४५/५
जो माया सब जगहि नचावा। जासु चरित लखि काहुँ न पावा ॥ उ० ७१/१
जो मुनि कोटि जतन नहिं लहहीं। जे जप जोग अनल तन दहहीं ॥ उ० ८४/४
जो मुनीस जेहि आयसु दीन्हा। सो तेहिं काजु प्रथम जनु कीन्हा ॥ अ० ६/१
जो रन बिमुख सुना मैं काना। सो मैं हतब कराल कृपाना ॥ लं० ४१/७
जोरि पानि कह तब हनुमंता। सुनहु दीनदयाल भगवंता ॥ उ० ३५/५
जोरि पानि प्रभु कीन्ह प्रनामू। पिता समेत लीन्ह निज नामू ॥ बा० ५२/७
जोरि पानि बर मागउँ एहू। सीय राम पद सहज सनेहू ॥ अ० १९६/८
जोरि पानि सबहीं सिर नाए। सहित बिभीषन प्रभु पहिं आए ॥ लं० १०५/७
जोरि पंकरुह पानि सुहाए। बोले बचन प्रेम जनु जाए ॥ बा० ३४०/३
जो सरूप बस सिव मन माहीं। जेहि कारन मुनि जतन कराहीं ॥ बा० १४५/४
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा। बंदनीय जेहिं जग जस पावा ॥ बा० १/६
जोसि सोसि तव चरन नमामी। मो पर कृपा करिअ अब स्वामी ॥ बा० १६०/५

जो सुखु भा सिय मातु मन देखि राम बर बेषु।
सो न सकहिं कहि कलप सत सहस सारदा सेषु ॥ बा० ३१८/०

जो सुखु सुजसु लोकपति चहहीं। करत मनोरथ सकुचत अहहीं ॥ बा० ३४२/४
जो सुनि सरु अस लाग तुम्हारें। काहे न बोलहु बचन सँभारें ॥ अ० २९/३

जो सुमिरत सिधि होइ गन नायक करिबर बदन।
करउ अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभ गुन सदन ॥ बा० ०/१ सो०

जो सेवकु साहिबहि सँकोची। निज हित चहइ तासु मति पोची ॥ अ० २६७/३

जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिएँ दस माथ।
सोइ संपदा बिभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ ॥ सुं० ४९/० (ख)

जो संपदा नीच गृह सोहा। सो बिलोकि सुरनायक मोहा ॥ बा० २८८/८
जो सृजि पालइ हरइ बहोरी। बाल केलि सम बिधि मति भोरी ॥ अ० २८९/२
जो हठि भयउ सकल दुख भाजनु। अबला बिबस ग्यानु गुनु गा जनु ॥ अ० ४७/३
जो हमार हर नासा काना। तेहि कोसलाधीस कै आना ॥ सुं० ५१/६

जो हसि सो हसि मुहँ मसि लाई। आँखि ओट उठि बैठहि जाई ॥ अ० १६१/८
जौं अति प्रिय तौ करिअ उपाई। जोरिअ कोउ बड़ गुनी बोलाई ॥ बा० २७७/३
जौं अनाथ हित हम पर नेहू। तौ प्रसन्न होइ यह बर देहू ॥ बा० १४५/३
जौं अनीति कछु भाषौं भाई। तौ मोहि बरजहु भय बिसराई ॥ उ० ४२/६
जौं अनीह ब्यापक बिभु कोऊ। कहहु बुझाइ नाथ मोहि सोऊ ॥ बा० १०८/१
जौं अपने अवगुन सब कहऊँ। बाढ़इ कथा पार नहिं लहऊँ ॥ बा० ११/५
जौं अब करउँ सती सन प्रीती। मिटइ भगति पथु होइ अनीती ॥ बा० ५५/८
जौं अस करौं तदपि न बड़ाई। मुएहि बधें नहिं कछु मनुसाई ॥ लं० ३०/१
जौं असत्य कछु कहब बनाई। तौ बिधि देइहि हमहि सजाई ॥ अ० १८/५

जौं अस हिसिषा करहिं नर जड़ बिबेक अभिमान।
परहिं कलप भरि नरक महुँ जीव कि ईस समान ॥ बा० ६९/०

जौं असि मति पितु खाए कीसा। कहि अस बचन हँसा दससीसा ॥ लं० २३/९
जौं अहि सेज सयन हरि करहीं। बुध कछु तिन्ह कर दोषु न धरहीं ॥ बा० ६८/५
जौं आवइ मर्कट कटकाई। जिअहिं बिचारे निसिचर खाई ॥ सुं० ३६/३
जौं ए कंद मूल फल खाहीं। बादि सुधादि असन जग माहीं ॥ अ० ११९/१
जौं एहि खल नित करब अहारू। होइहि सब उजारि संसारू ॥ बा० १७६/७

जौं ए मुनि पट धर जटिल सुंदर सुठि सुकुमार।
बिबिध भाँति भूषन बसन बादि किए करतार ॥ अ० ११९/०

जौं अंतहुँ अस करतबु रहेऊ। मागु मागु तुम्ह केहिं बल कहेऊ ॥ अ० ३४/४
जौं कछु कहौं कपटु करि तोही। भामिनि राम सपथ सत मोही ॥ अ० २५/६
जौं करनी समुझै प्रभु मोरी। नहिं निस्तार कलप सत कोरी ॥ उ० ०/५
जौं करि कष्ट जाइ पुनि कोई। जातहिं नीद जुड़ाई होई ॥ बा० ३८/१
जौं केवल पितु आयसु ताता। तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता ॥ अ० ५५/१
जौं कृपाल पूँछिहु मोहि बाता। मति अनुरूप कहउँ हित ताता ॥ सुं० ३७/४
जौं खल भएसि राम कर द्रोही। ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही ॥ लं० २६/२
जौं घरु बरु कुलु होइ अनूपा। करिअ बिबाहु सुता अनुरूपा ॥ बा० ७०/३
जौं छबि सुधा पयोनिधि होई। परम रूपमय कच्छपु सोई ॥ बा० २४६/७
जौं जगदीस इन्हहि बनु दीन्हा। कस न सुमनमय मारगु कीन्हा ॥ अ० १२०/४
जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पिता बचन मनतेउँ नहिं ओहू ॥ लं० ६०/६
जौं जनतेउँ बिनु भट भुबि भाई। तौ पन करि होतेउँ न हँसाई ॥ बा० २५१/६
जौं जियँ धरिअ बिनय पिय मोरी। रामु लखनु सिय मिलहिं बहोरी ॥ अ० १५३/८
जौं जियँ होति न कपट कुचाली। केहि सोहाति रथ बाजि गजाली ॥ बा० २२७/७
जौं तपु करै कुमारि तुम्हारी। भावउि मेटि सकहिं त्रिपुरारी ॥ बा० ६९/५
जौं तुम्ह औतेहु मुनि की नाईं। पद रज सिर सिसु धरत गोसाईं ॥ बा० २८१/३

जौं तुम्ह मिलतेहु प्रथम मुनीसा । सुनतिउँ सिख तुम्हारि धरि सीसा ॥ बा० ८०/१
जौं तुम्हरें मन अति संदेहू । तौ किन जाइ परीछा लेहू ॥ बा० ५२/१
जौं तुम्हरें हठ हृदयँ बिसेषी । रहि न जाइ बिनु किएँ बरेषी ॥ बा० ८०/३
जौं तुम्हारि अनुसासन पावौं । कंदुक इव ब्रह्मांड उठावौं ॥ बा० २५२/४
जौं तेहि आजु बधें बिनु आवौं । तौ रघुपति सेवक न कहावौं ॥ लं० ७४/१३
जौं तेहि बिघ्न बुद्धि नहिं बाधी । तौ बहोरि सुर करहिं उपाधी ॥ उ० ११७/१०
जौं दिन प्रति अहार कर सोई । बिस्व बेगि सब चौपट होई ॥ बा० १७९/५
जौं न चलब हम कहे तुम्हारें । होउ नास नहिं सोच हमारें ॥ बा० १६५/७
जौं न जाउँ तव होइ अकाजू । बना आइ असमंजस आजू ॥ बा० १६६/५
जौं न जाउँ बन ऐसेहु काजा । प्रथम गनिअ मोहि मूढ़ समाजा ॥ अ० ४१/२
जौं न मिलिहि बरु गिरिजहि जोगू । गिरि जड़ सहज कहिहि सबु लोगू ॥ बा० ७०/५
जौं नर तात तदपि अति सूरा । तिन्हहि बिरोधि न आइहि पूरा ॥ अर० २४/८
जौं नररूप भूपसुत कोऊ । हरिहिउँ नारि जीति रन दोऊ ॥ अर० २२/६
जौं नर होइ चराचर द्रोही । आवै सभय सरन तकि मोही ॥ सुं० ४७/२
जौं न राम अपमानहि डरऊँ । तोहि देखत अस कौतुक करऊँ ॥ लं० २९/८
जौं नरेस मैं करौं रसोई । तुम्ह परुसहु मोहि जान न कोई ॥ बा० १६७/५
जौं नहिं जाउँ रहइ पछितावा । करत बिचारु न बनत बनावा ॥ बा० ४८/२
जौं नहिं दंड करौं खल तोरा । भ्रष्ट होइ श्रुतिमारग मोरा ॥ उ० १०६/४
जौं नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई । सत्यसंध दृढ़ब्रत रघुराई ॥ अ० ८९/१
जौं नहिं लगिहहु कहें हमारे । नहिं लागिहि कछु हाथ तुम्हारे ॥ अ० ४९/५
जौं नहिं होत मोह अति मोही । मिलतेउँ तात कवन बिधि तोही ॥ उ० ६८/४
जौं न होइ बल घर फिरि जाहू । समर बिमुख मैं हतउँ न काहू ॥ अर० १८/१२
जौं न होत जग जनम भरत को । सकल धरम धुर धरनि धरत को ॥ अ० २३२/१
जौं न होति सीता सुधि पाईं । मधुबन के फल सकहिं कि खाई ॥ सुं० २८/१

जौं नृप तनय त ब्रह्म किमि नारि बिरहँ मति भोरि ।
देखि चरित महिमा सुनत भ्रमित बुद्धि अति मोरि ॥ बा० १०८/०

जौं पटतरिअ तीय सम सीया । जग असि जुबति कहाँ कमनीया ॥ बा० २४६/४
जौं परलोक इहाँ सुख चहहू । सुनि मम बचन हृदयँ दृढ़ गहहू ॥ उ० ४४/१
जौं परिहरहिं मलिन मनु जानी । जौं सनमानहिं सेवकु मानी ॥ अ० २३३/१
जौं परिहास कीन्हि कछु होई । तौ कहि प्रगट जनावहु सोई ॥ अ० ४९/६
जौं पाँचहि मत लागै नीका । करहु हरषि हियँ रामहि टीका ॥ अ० ४/३
जौं पितु मातु कहेउ बन जाना । तौ कानन सत अवध समाना ॥ अ० ५५/२
जौं पिय मानहु मोर सिखावन । सुजसु होइ तिहुँ पुर अति पावन ॥ लं० ६/८
जौं पै इन्हहि दीन्ह बनबासू । कीन्ह बादि बिधि भोग बिलासू ॥ अ० ११८/५

जौं पै कुरुचि रही अति तोही। जनमत काहे न मारे मोही ॥ अ० १६०/७
जौं पै कृपाँ जरिहिं मुनि गाता। क्रोध भएँ तनु राख बिधाता ॥ बा० २७९/५
जौं पै जियँ न होति कुटिलाई। तौ कत लीन्ह संग कटकाई ॥ अ० १८८/४
जौं पै दुष्टहृदय सोइ होई। मोरें सनमुख आव कि सोई ॥ सुं० ४३/४
जौं पै प्रभु प्रभाउ कछु जाना। तौ कि बराबरि करत अयाना ॥ बा० २७६/२
जौं पै प्रिय बियोगु बिधि कीन्हा। तौ कस मरनु न मागें दीन्हा ॥ अ० ८५/६
जौं पै समर सुभट तव नाथा। पुनि पुनि कहसि जासु गुन गाथा ॥ लं० २७/६
जौं पै सीय रामु बन जाहीं। अवध तुम्हार काजु कछु नाहीं ॥ अ० ७३/४
जौं प्रभु दीनदयालु कहावा। आरति हरन बेद जसु गावा ॥ बा० ५८/६
जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहि पद पदुम पखारन कहहू ॥ अ० ९९/८
जौं प्रभु सिद्ध होइ सो पाइहि। नाथ बेगि पुनि जीति न जाइहि ॥ लं० ७४/५
जौं प्रभु होइ प्रसन्न बर देहू। मो पर करहु कृपा अरु नेहू ॥ उ० ८३/७

जौं प्रसन्न प्रभु मो पर नाथ दीन पर नेहु।
निज पद भगति देइ प्रभु पुनि दूसर बर देहु ॥ उ० १०८/० (ख)

जौं प्रिय बिरहँ प्रान प्रिय लागे। देखब सुनब बहुत अब आगे ॥ अ० १७९/२
जौं बरषइ बर बारि बिचारू। होहिं कबित मुकतामनि चारू ॥ बा० १०/९
जौं बहोरि कोउ पूछन आवा। सर निंदा करि ताहि बुझावा ॥ बा० ३८/४
जौं बालक कह तोतरि बाता। सुनहिं मुदित मन पितु अरु माता ॥ बा० ७/९
जौं बिधि जनमु देइ करि छोहू। होहुँ राम सिय पूत पुतोहू ॥ अ० १४/७
जौं बिनु अवसर अथवँ दिनेसू। जग केहि कहहु न होइ कलेसू ॥ अ० ३०४/७
जौं बिनु बोलें जाहु भवानी। रहइ न सीलु सनेहु न कानी ॥ बा० ६१/४
जौं मन बच क्रम मम उर माहीं। तजि रघुबीर आन गति नाहीं ॥ लं० १०८/७
जौं मम चरन सकसि सठ टारी। फिरहिं रामु सीता मैं हारी ॥ लं० ३३/९
जौं महेसु मोहि आयसु देहीं। कछु दिन जाइ रहौं मिस एहीं ॥ बा० ६०/६
जौं मागा पाइअ बिधि पाहीं। ए रखिअहिं सखि आँखिन्ह माहीं ॥ अ० १२०/५
जौं मैं सिव सेये अस जानी। प्रीति समेत कर्म मन बानी ॥ बा० ८९/४
जौं मो पर प्रसन्न सुखरासी। जानिअ सत्य मोहि निज दासी ॥ बा० १०७/१
जौं मोरें सिव चरन सनेहू। मन क्रम बचन सत्य ब्रतु एहू ॥ बा० ५८/८
जौं मोरें मन बच अरु काया। प्रीति राम पद कमल अमाया ॥ लं० ५८/६
जौं यह बचन सत्य श्रुति भाषा। तौ हमार पूजिहि अभिलाषा ॥ बा० १४३/८
जौं रघुबीर अनुग्रह कीन्हा। तौ तुम्ह मोहि दरसु हठि दीन्हा ॥ सुं० ६/५
जौं रघुबीर होति सुधि पाई। करते नहिं बिलंबु रघुराई ॥ सुं० १५/१
जौं रन हमहि पचारै कोऊ। लरहिं सुखेन कालु किन होऊ ॥ बा० २८३/२
जौं राउर आयसु मैं पावौं। नगर देखाइ तुरत लै आवौं ॥ बा० २१७/६

जौं लरिका कछु अचगरि करहीं । गुर पितु मातु मोद मन भरहीं ॥ बा० २७६/३
जौं बिदेहु कछु करै सहाई । जीतहु समर सहित दोउ भाई ॥ बा० २६५/५
जौं बिधि पुरब मनोरथु काली । करौं तोहि चख पूतरि आली ॥ अ० २२/३
जौं बिधि बस अस बनै सँजोगू । तौ कृतकृत्य होइ सब लोगू ॥ बा० २२१/७
जौं बिप्रन्ह बस करहु नरेसा । तौ तुअ बस बिधि बिष्नु महेसा ॥ बा० १६४/४
जौं बिबाहु संकर सन होई । दोषउ गुन सम कह सबु कोई ॥ बा० ६८/४
जौं सखि इन्हहि देख नरनाहू । पन परिहरि हठि करइ बिबाहू ॥ बा० २२१/२
जौं सत संकर करहिं सहाई । तदपि हतउँ रघुबीर दोहाई ॥ लं० ७४/१४
जौं सपनें सिर काटै कोई । बिनु जागें न दूरि दुख होई ॥ बा० ११७/२
जौं सब कें रह ग्यान एकरस । ईस्वर जीवहि भेद कहहु कस ॥ उ० ७७/५
जौं सभीत आवा सरनाईं । रखिहउँ ताहि प्रान की नाईं ॥ सुं० ४३/८
जौं सहाय कर संकरु आई । तौ मारउँ रन राम दोहाई ॥ अ० २२९/८
जौं सिय भवन रहै कह अंबा । मोहि कहँ होइ बहुत अवलंबा ॥ अ० ५९/७
जौं सुत कहौं संग मोहि लेहू । तुम्हरे हृदयँ होइ संदेहू ॥ अ० ५५/६
जौं सुत सहित करहु सेवकाई । तौ घर रहहु न आन उपाई ॥ अ० १८/८
जौं हठ करउँ त निपट कुकरमू । हरगिरि तें गुरु सेवक धरमू ॥ अ० २५२/६
जौं हठ करहु प्रेम बस बामा । तौ तुम्ह दुखु पाउब परिनामा ॥ अ० ६१/३
जौं हम निदरहिं बिप्र बदि सत्य सुनहु भृगुनाथ ।
तौ अस को जग सुभटु जेहि भय बस नावहिं माथ ॥ बा० २८३/०
जंबुक निकर कटक्कट कट्टहिं । खाहिं हुआहिं अघाहिं दपट्टहिं ॥ लं० ८७/९
ज्यों मुखु मुकुर मुकुरु निज पानी । गहि न जाइ अस अदभुत बानी ॥ अ० २९३/३

झ

झपटहिं करि बल बिपुल उपाई । पद न टरइ बैठहिं सिरु नाई ॥ लं० ३३/१२
झरना झरहिं मत्त गज गाजहिं । मनहुँ निसान बिबिधि बिधि बाजहिं ॥ अ० २३५/५
झरना झरहिं सुधासम बारी । त्रिबिध तापहर त्रिबिध बयारी ॥ अ० २४८/६
झलका झलकत पायन्ह कैसें । पंकज कोस ओस कन जैसें ॥ अ० २०३/१
झाँझि बिरव डिंडिमीं सुहाई । सरस राग बाजहिं सहनाई ॥ बा० ३४३/२
झाँझि मृदंग संख सहनाई । भेरि ढोल दुंदुभी सुहाई ॥ बा० २६२/१
झूठइ लेना झूठइ देना । झूठइ भोजन झूठ चबेना ॥ उ० ३८/७
झूठि न होई देवरिषि बानी । सोचहिं दंपति सखीं सयानी ॥ बा० ६७/७
झूठेउ सत्य जाहि बिनु जानें । जिमि भुजंग बिनु रजु पहिचानें ॥ बा० १११/१
झूठेहुँ हमहि दोषु जनि देहू । दुइ कै चारि मागि मकु लेहू ॥ अ० २७/३

ट

टूट चाप नहिं जुरिहि रिसाने । बैठिअ होइहिं पाय पिराने ॥ बा० २७७/२

तजि जानकिहि कुसल गृह जाहू। नाहिं त अस होइहि बहुबाहू॥ अर० २८/१६
तजि मद मोह कपट छल नाना। करउँ सद्य तेहि साधु समाना॥ सुं० ४७/३
तजि माया सेइअ परलोका। मिटहिं सकल भवसंभव सोका॥ कि० २२/५
तजि श्रुतिपंथु बाम पथ चलहीं। बंचक बिरचि बेष जगु छलहीं॥ अ० १६७/७
तजिहउँ तुरत देह तेहि हेतू। उर धरि चंद्रमौलि बृषकेतू॥ बा० ६३/७
तजे राम जेहिं बचनहि लागी। तनु परिहरेउ राम बिरहागी॥ अ० १७३/४
तजौं देह करु बेगि उपाई। दुसह बिरहु अब नहिं सहि जाई॥ सुं० ११/२
तथा मोच्छ सुख सुनु खगराई। रहि न सकइ हरि भगति बिहाई॥ उ० ११८/६
तदपि अनुज श्री सहित खरारी। बसतु मनसि मम काननचारी॥ अर० १०/१८
तदपि असंका कीन्हिहु सोई। कहत सुनत सब कर हित होई॥ बा० ११२/१
तदपि उचित जनु बोलि सप्रीती। पठइअ काज नाथ असि नीती॥ अ० ८/६
तदपि एक मैं कहउँ उपाई। होइ करै जौं दैउ सहाई॥ बा० ६८/१
तदपि करब मैं काजु तुम्हारा। श्रुति कह परम धरम उपकारा॥ बा० ८३/१
तदपि करहिं सम बिषम बिहारा। भगत अभगत हृदय अनुसारा॥ अ० २१८/५
तदपि कही गुर बारहिं बारा। समुझि परी कछु मति अनुसारा॥ बा० ३०/१
तदपि जथाश्रुत कहउँ बखानी। सुमिरि गिरापति प्रभु धनुपानी॥ बा० १०४/४
तदपि जथा श्रुत जसि मति मोरी। कहिहउँ देखि प्रीति अति तोरी॥ बा० ११३/५

तदपि जाइ तुम्ह करहु अब जथा बंस ब्यवहारु।
बूझि बिप्र कुलबृद्ध गुर बेद बिदित आचारु॥ बा० २८६/०

तदपि तुम्हारि साधुता देखी। करिहउँ एहि पर कृपा बिसेषी॥ उ० १०८/४
तदपि देबि मैं देबि असीसा। सफल होन हित निज बागीसा॥ अ० १०२/८
तदपि धीर धरि समउ बिचारी। पूँछी मधुर बचन महतारी॥ अ० ३९/४
तदपि न उठइ धरेन्हि कच जाई। लातन्हि हति हति चले पराई॥ लं० ७५/३
तदपि प्रीति कै प्रीति सुहाई। मंगल रचना रची बनाई॥ बा० २९५/६
तदपि बिरोध मान जहँ कोई। तहाँ गएँ कल्यानु न होई॥ बा० ६१/६
तदपि मलिन मन बोधु न आवा। सो फलु भली भाँति हम पावा॥ बा० १०८/४
तदपि सरन सनमुख मोहि देखी। छमि सब करिहहिं कृपा बिसेषी॥ अ० १८२/४
तदपि साप सठ दैहउँ तोही। नीति बिरोध सोहाइ न मोही॥ उ० १०६/३
तदपि संत मुनि बेद पुराना। जस कछु कहहिं स्वमति अनुमाना॥ बा० १२०/४
तन अनुहरत सुचंदन खोरी। स्यामल गौर मनोहर जोरी॥ बा० २१८/४
तन काम अनेक अनूप छबी। गुन गावत सिद्ध मुनींद्र कबी॥ लं० ११०/३ छं०
तन कृस मन दुखु बदन मलीने। बिकल मनहुँ माखी मधु छीने॥ अ० ७५/४

तन खीन कोउ अति पीन पावन कोउ अपावन गति धरें।
भूषन कराल कपाल कर सब सद्य सोनित तन भरें॥

खर स्वान सुअर सृकाल मुख गन बेष अगनित को गनै।
बहु जिनस प्रेत पिसाच जोगि जमात बरनत नहिं बनै॥ बा० ९२/१ छं०
तन छार ब्याल कपाल भूषन नगन जटिल भयंकरा।
सँग भूत प्रेत पिसाच जोगिनि बिकट मुख रजनीचरा॥
जो जिअत रहिहि बरात देखत पुन्य बड़ तेहि कर सही।
देखिहि सो उमा बिबाहु घर घर बात असि लरिकन्ह कही॥ बा० ९४/१ छं०
तन पसेउ कदली जिमि काँपी। कुबरीं दसन जीभ तब चाँपी॥ अ० १९/२
तन पुलक निर्भर प्रेम पूरन नयन मुख पंकज दिए।
मन ग्यान गुन गोतीत प्रभु मैं दीख जप तप का किए॥
जप जोग धर्म समूह तें नर भगति अनुपम पावई।
रघुबीर चरित पुनीत निसि दिन दास तुलसी गावई॥ अर० ५/१ छं० -
तन पुलकित मुख बचन न आवा। नयन मूदि चरननि सिरु नावा॥ बा० २०१/५
तन मन बचन उमग अनुरागा। धीर धुंरधर धीरजु त्यागा॥ अ० ३१६/५
तन मन बचन मोर पनु साचा। रघुपति पद सरोज चितु राचा॥ बा० २५८/४
तनय जजातिहि जौबनु दयऊ। पितु अग्याँ अघ अजसु न भयऊ॥ अ० १७३/८
तनय मातु पितु तोषनिहारा। दुर्लभ जननि सकल संसारा॥ अ० ४०/८
तन सकोचु मन परम उछाहू। गूढ़ प्रेमु लखि परइ न काहू॥ बा० २६३/३
तनु तजि तात जाहु मम धामा। देउँ काह तुम्ह पूरनकामा॥ अर० ३०/१०
तनु तिय तनय धामु धनु धरनी। सत्यसंध कहुँ तृन सम बरनी॥ अ० ३४/८
तनु धनु धाम राम हितकारी। सब बिधि तुम्ह प्रनतारति हारी॥ उ० ४६/३
तनु धनु धामु धरनि पुर राजू। पति बिहीन सबु सोक समाजू॥ अ० ६४/४
तनु पुलकित जलु लोचन बहई। बचन सप्रेम लखन सन कहई॥ अ० ८९/६
तनु पुलकेउ हियँ हरषु सुनि बेनि बचन अनुकूल।
भरत धन्य कहि धन्य सुर हरषित बरषहिं फूल॥ अ० २०५/०
तनु पोषक निंदक अघ खानी। जीवत सव सम चौदह प्रानी॥ लं० ३०/४
तनु पोषक नारि नरा सगरे। परनिंदक जे जग मो बगरे॥ उ० १०१/१० छं०
तनु बिनु परस नयन बिनु देखा। ग्रहइ घ्रान बिनु बास असेषा॥ बा० ११७/७
तनु महुँ प्रबिसि निसरि सर जाहीं। जिमि दामिनि घन माझ समाहीं॥ लं० ६८/६
तप अधार सब सृष्टि भवानी। करहि जाइ तपु अस जियँ जानी॥ बा० ७२/५
तपबल तें जग सृजइ बिधाता। तपबल बिष्नु भए परित्राता॥ बा० १६२/२
तपबल तेहि करि आपु समाना। रखिहउँ इहाँ बरष परवाना॥ बा० १६८/५
तपबल बिप्र सदा बरिआरा। तिन्ह के कोप न कोउ रखवारा॥ बा० १६४/३
तपबल रचइ प्रपंचु बिधाता। तपबल बिष्नु सकल जग त्राता॥ बा० ७२/३
तपबल संभु करहिं संघारा। तप तें अगम न कछु संसारा॥ बा० १६२/३

तपबल संभु करहिं संघारा । तपबल सेषु धरइ महिभारा ॥ बा० ७२/४
तपसी धनवंत दरिद्र गृही । कलि कौतुक तात न जात कही ॥ उ० १००/२ छं०
तब अति सोच भयउ मन मोरें । दुखी भयउँ बियोग प्रिय तोरें ॥ उ० ५५/५
तब अदृस्य भए पावक सकल सभहि समुझाइ ।
परमानंद मगन नृप हरष न हृदयँ समाइ ॥ बा० १८९/०
तब अनुजहि समुझावा रघुपति करुना सींव ।
भय देखाइ लै आवहु तात सखा सुग्रीव ॥ कि० १८/०
तब आपन प्रभाउ बिस्तारा । निज बस कीन्ह सकल संसारा ॥ बा० ८३/५
तब अंगद उठि नाइ सिरु सजल नयन कर जोरि ।
अति बिनीत बोलेउ बचन मनहुँ प्रेम रस बोरि ॥ उ० १७/० (ख)
तब उठि भूप बसिष्ट कहुँ दीन्हि पत्रिका जाइ ।
कथा सुनाई गुरहि सब सादर दूत बोलाइ ॥ बा० २९३/०
तब कछु काल मराल तनु धरि तहँ कीन्ह निवास ।
सादर सुनि रघुपति गुन पुनि आयउँ कैलास ॥ उ० ५७/०
तब कपीस चरनन्हि सिरु नावा । गहि भुज लछिमन कंठ लगावा ॥ कि० १९/६
तब कपीस रिच्छेस बिभीषन । सुमिरि हृदयँ दिनकर कुल भूषन ॥ लं० ३८/३
तब कर अस बिमोह अब नाहीं । रामकथा पर रुचि मन माहीं ॥ बा० १०८/७
तब कर कमल जोरि रघुराई । बोले बचन श्रवन सुखदाई ॥ अ० १२४/६
तब कर जोरि जनकु मृदु बानी । बोले सब बरात सनमानी ॥ बा० ३२५/८
तब कह गीध बचन धरि धीरा । सुनहु राम भंजन भव भीरा ॥ अर० ३०/१
तब कि चलिहि अस गाल तुम्हारा । अस बिचारि भजु राम उदारा ॥ लं० २६/७
तब किछु कीन्ह राम रुख जानी । अब कुचालि करि होइहि हानी ॥ अ० २१७/३
तब केवट ऊँचें चढ़ि धाई । कहेउ भरत सन भुजा उठाई ॥ अ० २३६/१
तब खगपति बिरंचि पहिं गयऊ । निज संदेह सुनावत भयऊ ॥ उ० ५९/१
तब खिसिआनि राम पहिं गई । रूप भयंकर प्रगटत भई ॥ अर० १६/११
तब गनपति सिव सुमिरि प्रभु नाइ सुरसरिहि माथ ।
सखा अनुज सिय सहित बन गवनु कीन्ह रघुनाथ ॥ अ० १०४/०
तब चले बान कराल । फुंकरत जनु बहु ब्याल ॥ अर० १९/१ छं०
तब चित चढ़ेउ जो संकर कहेऊ । प्रभु अपमानु समुझि उर दहेऊ ॥ बा० ६२/५
तब जनक पाइ बसिष्ठ आयसु ब्याह साज सँवारि कै ।
मांडवी श्रुतकीरति उरमिला कुअँरि लईं हँकारि कै ॥
कुसकेतु कन्या प्रथम जो गुन सील सुख सोभामई ।
सब रीति प्रीति समेत करि सो ब्याहि नृप भरतहि दई ॥ बा० ३२४/२ छं०
तब जनमेउ षटबदन कुमारा । तारकु असुरु समर जेहिं मारा ॥ बा० १०२/७

तब जानकी सासु पग लागी । सुनिअ माय मैं परम अभागी ॥ अ० ६८/३
तब तकि राम कठिन सर मारा । धरनि परेउ करि घोर पुकारा ॥ अर० २६/१४
तब तब अवधपुरी मैं जाऊँ । बालचरित बिलोकि हरषाऊँ ॥ उ० ७४/३
तब तब कथा मुनीसन्ह गाई । परम पुनीत प्रबंध बनाई ॥ बा० १३९/३
तब तब जाइ राम पुर रहऊँ । सिसुलीला बिलोकि सुख लहऊँ ॥ उ० ११३/१३
तब तब तुम्ह कहि कथा पुरानी । सुंदरि समुझाएहु मृदु बानी ॥ अ० ६०/७
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा । हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा ॥ बा० १२०/८
तब तब राम लखनहि निहारी । होइहहिं सब पुर लोग सुखारी ॥ बा० ३१०/२
तब तव बदन पैठिहउँ आई । सत्य कहउँ मोहि जान दे माई ॥ सुं० १/५
तब ते जीव भयउ संसारी । छूट न ग्रंथि न होई सुखारी ॥ उ० ११६/५
तब ते मोहि न ब्यापी माया । जब ते रघुनायक अपनाया ॥ उ० ८८/३
तब दसकंठ बिबिधि बिधि समुझाईं सब नारि ।
नस्वर रूप जगत सब देखहु हृदयँ बिचारि ॥ लं० ७७/०
तब देखी मुद्रिका मनोहर । राम नाम अंकित अति सुंदर ॥ सुं० १२/१
तब देवन्ह दुंदुभीं बजाईं । बरषि सुमन जय जय सुर साईं ॥ बा० ८८/६
तब नरनाहँ बसिष्ठु बोलाए । रामधाम सिख देन पठाए ॥ अ० ८/१
तब नल नील सिरन्हि चढ़ि गयऊ । नखन्हि लिलार बिदारत भयऊ ॥ लं० ९७/६
तब नारद गवने सिव पाहीं । जिता काम अहमिति मन माहीं ॥ बा० १२६/५
तब नारद सबही समुझावा । पूरुब कथाप्रसंगु सुनावा ॥ बा० ९७/१
तब नारद बोले हरषाई । अस बर मागउँ करउँ ढिठाई ॥ अर० ४१/६
तब नारद हरि पद सिर नाई । चले हृदयँ अहमिति अधिकाई ॥ बा० १२८/७
तब निज भुज बल राजिवनैना । कौतुक लागि संग कपि सेना ॥ कि० २९/१२
तब निषादपति उर अनुमाना । तरु सिंसुपा मनोहर जाना ॥ अ० ८८/४
तब नृप दूत निकट बैठारे । मधुर मनोहर बचन उचारे ॥ बा० २९०/३
तब नृप सीय लाइ उर लीन्ही । अति हित बहुत भाँति सिख दीन्ही ॥ अ० ७७/३
तब प्रभु कोपि तीब्र सर लीन्हा । धर ते भिन्न तासु सिर कीन्हा ॥ लं० ७०/४
तब प्रभु गुहहि कहेउ घर जाहू । सुनत सूख मुखु भा उर दाहू ॥ अ० १०३/२
तब प्रभु भरद्वाज पहिं आए । करत दंडवत मुनि उर लाए ॥ अ० १०५/७
तब प्रभु भूषन बसन मगाए । नाना रंग अनूप सुहाए ॥ उ० १६/५
तब प्रभु रिषिन्ह समेत नहाए । बिबिध दान महिदेवन्हि पाए ॥ बा० २११/३
तब फिरि जीव बिबिधि बिधि पावइ संसृति क्लेस ।
हरि माया अति दुस्तर तरि न जाइ बिहगेस ॥ उ० ११८/० (क)
तब बसिष्ट बहुबिधि समुझावा । नृप सदेह नास कहँ पावा ॥ बा० २०७/८
तब बसिष्ठ मुनि समय सम कहि अनेक इतिहास ।

सोक नेवारेउ सबहि कर निज बिग्यान प्रकास ॥ अ० १५६/०
तब बिग्यानरूपिनी बुद्धि बिसद घृत पाइ ।
चित्त दिआ भरि धरै दृढ़ समता दिअटि बनाइ ॥ उ० ११७/० (ख)
तब बिदेह बोले कर जोरी । बचन सनेह सुधाँ जनु बोरी ॥ बा० ३३९/७
तब बिबाह मैं चाहउँ कीन्हा । प्रभु केहि कारन करै न दीन्हा ॥ अर० ४२/३
तब बिरंचि सन जाइ पुकारे । देखे बिधि सब देव दुखारे ॥ बा० ८१/८
तब बोले बिधि गिरा सुहाई । जान महेस राम प्रभुताई ॥ उ० ५९/६
तब बंदीजन जनक बोलाए । बिरिदावली कहत चलि आए ॥ बा० २४८/७
तब ब्रह्माँ धरनिहि सुमझावा । अभय भई भरोस जियँ आवा ॥ बा० १८६/९
तब मज्जनु करि रघुकुलनाथा । पूजि पारथिव नायउ माथा ॥ अ० १०२/१
तब मथि काढ़ि लेइ नवनीता । बिमल बिराग सुभग सुपुनीता ॥ उ० ११६/१६
तब मधुबन भीतर सब आए । अंगद संमत मधु फल खाए ॥ सुं० २७/७
तब मन हरषि बचन कह राऊ । मुनि अस कृपा न कीन्हिहु काऊ ॥ बा० २०६/७
तब मारीच हृदयँ अनुमाना । नवहि बिरोधें नहिं कल्याना ॥ अर० २५/३
तब मारुतसुत मुठिका हन्यो । पर्‌यो धरनि ब्याकुल सिर धुन्यो ॥ लं० ६४/७
तब मुनि अति सभीत हरि चरना । गहे पाहि प्रनतारति हरना ॥ बा० १३७/२
तब मुनि कहेउ सुमंत्र सन सुनत चलेउ हरषाइ ।
रथ अनेक बहु बाजि गज तुरत सँवारे जाइ ॥ उ० १०/० (क)
तब मुनिबर मन कीन्ह बिचारा । प्रभु अवतरेउ हरन महि भारा ॥ बा० २०५/६
तब मुनि बोले भरत सन सब सँकोचु तजि तात ।
कृपासिंधु प्रिय बंधु सन कहहु हृदय कै बात ॥ अ० २५९/०
तब मुनि सन कह कृपानिधाना । आयसु होइ जाउँ बन आना ॥ अर० ५/२
तब मुनि सादर कहा बुझाई । चरित एक प्रभु देखिअ जाई ॥ बा० २०९/९
तब मुनि हृदयँ धीर धरि गहि पद बारहिं बार ।
निज आश्रम प्रभु आनि करि पूजा बिबिध प्रकार ॥ अर० १०/०
तब मुनीस रघुपति गुन गाथा । कहे कछुक सादर खगनाथा ॥ उ० ११०/१
तब मैं कहा कृपानिधि तुम्ह सर्बग्य सुजान ।
सगुन ब्रह्म अवराधन मोहि कहहु भगवान ॥ उ० ११०/० (घ)
तब मयना हिमवंतु अनंदे । पुनि पुनि पारबती पद बंदे ॥ बा० ९८/१
तब मैं निर्गुन मत कर दूरी । सगुन निरूपउँ करि हठ भूरी ॥ उ० ११०/१३
तब मैं भागि चलेउँ उरगारी । राम गहन कहँ भुजा पसारी ॥ उ० ७८/७
तब मैं हृदयँ बिचारा जोग जग्य ब्रत दान ।
जा कहुँ करिअ सो पैहउँ धर्म न एहि सम आन ॥ उ० ४८/०
तब मोहि कहँ जसि देब रजाई । सोइ करिहउँ रघुबीर दोहाई ॥ अ० १०३/६

तब रघुनाथ कौसिकहि कहेऊ । नाथ कालि जल बिनु सबु रहेऊ ॥ अ० २७७/५
तब रघुनाथ निकट चलि आए । देखि दसा निज जन मन भाए ॥ अर० ९/१६
तब रघुपति अनुसासन पाई । मातलि चलेउ चरन सिरु नाई ॥ लं० १०९/१
तब रघुपति उठाइ उर लावा । निज लोचन जल सींचि जुड़ावा ॥ कि० २/६
तब रघुपति कपिपतिहि बोलावा । कहा चलै कर करहु बनावा ॥ सुं० ३३/६
तब रघुपति जानत सब कारन । उठे हरषि सुर काज सँवारन ॥ अर० २६/६
तब रघुपति बोले मुसुकाई । तुम्ह प्रिय मोहि भरत जिमि भाई ॥ कि० २०/७

तब रघुपति रावन के सीस भुजा सर चाप ।
काटे बहुत बढ़े पुनि जिमि तीरथ कर पाप ॥ लं० ९७/०

तब रघुपति सब सखा बोलाए । आइ सबन्हि सादर सिरु नाए ॥ उ० १५/२
तब रघुपति सबही सिरु नाई । चले संग सिय अरु लघु भाई ॥ अ० १६५/४
तब रघुपति सुग्रीव पठावा । गर्जेसि जाइ निकट बल पावा ॥ कि० ६/२६
तब रघुबर मुनि सुजसु सुहावा । कोटि भाँति कहि सबहि सुनावा ॥ अ० १०७/२

तब रघुबीर अनेक बिधि सखहि सिखावनु दीन्ह ।
राम रजायसु सीस धरि भवन गवनु तेइँ कीन्ह ॥ अ० १११/०

तब रघुबीर कहा मुनि पाहीं । तुम्ह सन प्रभु दुराव कछु नाहीं ॥ अर० १२/१

तब रघुबीर पचारे धाए कीस प्रचंड ।
कपि बल प्रबल देखि तेहिं कीन्ह प्रगट पाषंड ॥ लं० ९५/०

तब रघुबीर बोलि कपि लीन्हे । कहि प्रिय बचन सुखी सब कीन्हे ॥ लं० १०५/८
तब रघुबीर श्रमित सिय जानी । देखि निकट बटु सीतल पानी ॥ अ० १२३/३
तब रामहि बिलोकि बैदेही । सभय हृदयँ बिनवति जेहि तेही ॥ बा० २५६/४
तब रावन दस सूल चलावा । बाजि चारि महि मारि गिरावा ॥ लं० ९१/५
तब रावन निज रूप देखावा । भई सभय जब नाम सुनावा ॥ अर० २७/१३
तब रावन मयसुता उठाई । कहै लाग खल निज प्रभुताई ॥ लं० ७/१
तब रिषि निज नाथहि जियँ चीन्ही । बिद्यानिधि कहुँ बिद्या दीन्ही ॥ बा० २०८/७

तब लगि कुसल न जीव कहुँ सपनेहुँ मन बिश्राम ।
जब लगि भजत न राम कहुँ सोक धाम तजि काम ॥ सुं० ४६/०

तब लगि बसति जीव मन माहीं । जब लगि प्रभु प्रताप रबि नाहीं ॥ सुं० ४६/४
तब लगि बैठ अहउँ बटछाहीं । जब लगि तुम्ह ऐहहु मोहि पाहीं ॥ बा० ५१/२
तब लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई । सहि दुख कंद मूल फल खाई ॥ सुं० ०/२
तब लगि रहहु दीन हित लागी । जब लगि मिलौं तुम्हहि तनु त्यागी ॥ अर० ७/६
तब लगि लै आयउ हनुमाना । अनुज देखि प्रभु अति दुख माना ॥ लं० ५४/६
तब लगि हृदयँ बसत खल नाना । लोभ मोह मच्छर मद माना ॥ सुं० ४६/१
तब लछिमन सीतहि लै आए । प्रभु पद परत हरषि उर लाए ॥ अर० २०/२

तब लंकेस क्रोध उर छावा । गर्जत तर्जत सन्मुख धावा ॥ लं० ८९/२
तब सक्रोध निसिचर खिसिआना । काढ़ेसि परम कराल कृपाना ॥ अर० २८/२१
तब सत बान सारथी मारेसि । परेउ भूमि जय राम पुकारेसि ॥ लं० ९०/७
तब सब लोग नहाइ नहाई । राम जनक मुनि आयसु पाई ॥ अ० २७८/६
तब सिय देखि भूप अभिलाषे । कूर कपूत मूढ़ मन माखे ॥ बा० २६५/१
तब सिवँ तीसर नयन उघारा । चितवत कामु भयउ जरि छारा ॥ बा० ८६/६
तब सीताँ पूजी सुरसरी । बहु प्रकार पुनि चरनन्हि परी ॥ लं० १२०/८
तब सुग्रीव चरन गहि नाना । भाँति बिनय कीन्हे हनुमाना ॥ उ० १८/७
तब सुग्रीव बिकल होइ भागा । मुष्टि प्रहार बज्र सम लागा ॥ कि० ७/३
तब सुग्रीवहि आयसु दीन्हा । मृतक कर्म बिधिवत सब कीन्हा ॥ कि० १०/८
तब सुमंत्र दुइ स्यंदन साजी । जोतें रबि हय निंदक बाजी ॥ बा० ३००/६
तब सुमंत्र नृप बचन सुनाए । करि बिनती रथ रामु चढ़ाए ॥ अ० ८२/१
तब सेवकन्ह सरस थलु देखा । कीन्ह सुजल हित कूप बिसेषा ॥ अ० ३०९/५
तब सोइ बुद्धि पाइ उँजियारा । उर गृहँ बैठि ग्रंथि निरुआरा ॥ उ० ११७/४
तब संकर देखेउ धरि ध्याना । सतीं जो कीन्ह चरित सबु जाना ॥ बा० ५५/४
तब संकर प्रभु पद सिरु नावा । सुमिरत रामु हृदयँ अस आवा ॥ बा० ५६/१
तब हनुमान राम पहिं जाई । जनकसुता कै कुसल सुनाई ॥ लं० १०७/२
तब हनुमंत उभय दिसि की सब कथा सुनाइ ।
पावक साखी देइ करि जोरी प्रीति दृढ़ाइ ॥ कि० ४/०
तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता । देखी चहउँ जानकी माता ॥ सुं० ७/४
तब हनुमंत कही सब राम कथा निज नाम ।
सुनत जुगल तन पुलक मन मगन सुमिरि गुन ग्राम ॥ सुं० ६/०
तब हनुमंत नगर महुँ आए । सुनि निसिचरी निसाचर धाए ॥ लं० १०६/३
तब हनुमंत नाइ पद माथा । कहे सकल रघुपति गुन गाथा ॥ उ० १/१५
तब हनुमंत निकट चलि गयऊ । फिरि बैठीं मन बिसमय भयऊ ॥ सुं० १२/८
तब हनुमंत बोलाए दूता । सब कर करि सनमान बहूता ॥ कि० १८/६
तब हम जाइ सिवहि सिर नाई । करवाउब बिबाहु बरिआई ॥ बा० ८२/६
तब हर गन बोले मुसुकाई । निज मुख मुकुर बिलोकहु जाई ॥ बा० १३४/६
तबहिं रायँ प्रिय नारि बोलाई । कौसल्यादि तहाँ चलि आई ॥ बा० १८९/१
तबहिं लखन रघुबर रुख जानी । पूँछेउ मगु लोगन्हि मृदु बानी ॥ अ० ११७/५
तबहिं सप्तरिषि सिव पहिं आए । बोले प्रभु अति बचन सुहाए ॥ बा० ७६/८
तबहिं होइ सब संसय भंगा । जब बहु काल करिअ सतसंगा ॥ उ० ६०/४
तबहुँ कृपाल हेरि निज ओरा । सबहि भाँति भल मानेउ मोरा ॥ अ० २९९/२
तबहुँ न बोल चेरि बड़ि पापिनि । छाड़इ स्वास कारि जनु साँपिनि ॥ अ० १[illegible]/८

तमकि ताकि तकि सिवधनु धरहीं । उठइ न कोटि भाँति बलु करहीं ॥ बा० २४९/७

तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप उठइ न चलहिं लजाइ ।
मनहुँ पाइ भट बाहुबलु अधिकु अधिकु गरुआइ ॥ बा० २५०/०

तमसा प्रथम दिवस करि बासू । दूसर गोमति तीर निवासू ॥ अ० १८७/८

तमेकमद्भुतं प्रभुं । निरीहमीश्वरं विभुं ॥ अर० ३/१७

तरकि पवनसुत कर गहे आनि धरे प्रभु पास ।
कौतुक देखहिं भालु कपि दिनकर सरिस प्रकास ॥ लं० ३२/० (क)

तरनिउ मुनि घरिनी होइ जाई । बाट परइ मोरि नाव उड़ाई ॥ अ० ९९/६

तरपन होम करहिं बिधि नाना । बिप्र जेवाँइ देहिं बहु दाना ॥ अ० १२८/७

तरहिं न बिनु सेएँ मम स्वामी । राम नमामि नमामि नमामी ॥ उ० १२३/७

तरुन अरुन अंबुज सम चरना । नख दुति भगत हृदय तम हरना ॥ बा० १०५/७

तरुन तमाल बरन तनु सोहा । देखत कोटि मदन मनु मोहा ॥ अ० ११४/६

तरु पल्लव महुँ रहा लुकाई । करइ बिचार करौं का भाई ॥ सुं० ८/१

तरुबर बास इन्हहि बिधि दीन्हा । धवन धाम रचि रचि श्रमु कीन्हा ॥ अ० ११८/८

तलफत बिषम मोह मन मापा । माजा मनहुँ मीन कहुँ ब्यापा ॥ अ० १५२/६

तव अनुचरीं करउँ पन मोरा । एक बार बिलोकु मम ओरा ॥ सुं० ८/५

तव उर कुमति बसी बिपरीता । हित अनहित मानुह रिपु प्रीता ॥ सुं० ३९/७

तव कुल कमल बिपिन दुखदाई । सीता सीत निसा सम आई ॥ सुं० ३५/९

तव नाम जपामि नमामि हरी । भव रोग महागद मान अरी ॥ उ० १३/१८

तव पद पंकज प्रीति निरंतर । सब साधन कर यह फल सुंदर ॥ उ० ४८/४

तव प्रताप उर राखि प्रभु जैहउँ नाथ तुरंत ।
अस कहि आयसु पाइ पद बंदि चलेउ हनुमंत ॥ लं० ६०/० (क)

तव प्रताप महिमा भगवाना । को बापुरो पिनाक पुराना ॥ बा० २५२/६

तव प्रभु नारि बिरहँ बलहीना । अनुज तासु दुख दुखी मलीना ॥ लं० २२/२

तव प्रसाद प्रभु कृपानिधाना । मो कहुँ सर्ब काल कल्याना ॥ बा० १६४/८

तव प्रसाद प्रभु मम उर माहीं । संसय सोक मोह भ्रम नाहीं ॥ उ० ११४/६

तव प्रसाद मम मोह नसाना । राम रहस्य अनूपम जाना ॥ उ० ९२/८

तव प्रेरित मायाँ उपजाए । सृष्टि हेतु सब ग्रंथनि गाए ॥ सुं० ५८/३

तब बतकही गूढ़ मृगलोचनि । समुझत सुखद सुनत भय मोचनि ॥ लं० १५/७

तव बल नाथ डोल नित धरनी । तेज हीन पावक ससि तरनी ॥ लं० १०३/५

तव बस बिधि प्रपंच सब नाथा । सभय दिसिप नित नावहिं माथा ॥ लं० १०३/११

तव बिषम माया बस सुरासुर नाग नर अग जग हरे ।
भव पंथ भ्रमत अमित दिवस निसि काल कर्म गुननि भरे ॥
जे नाथ करि करुना बिलोके त्रिबिधि दुख ते निर्बहे ।

भव खेद छेदन दच्छ हम कहुँ रच्छ राम नमामहे ॥ उ० १२/२ छं०
तव भुज बल महिमा उदघाटी । प्रगटी धनु बिघटन परिपाटी ॥ बा० २३८/६
तव मन प्रीति देखि अधिकाई । तब मैं रघुपति कथा सुनाई ॥ उ० १२७/२
तव माया बस जीव जड़ संतत फिरइ भुलान ।
तेहि पर क्रोध न करिअ प्रभु कृपा सिंधु भगवान ॥ उ० १०८/० (ग)
तव माया बस फिरउँ भुलाना । ता ते मैं नहिं प्रभु पहिचाना ॥ कि० १/९
तव रिपु नारि रुदन जल धारा । भरेउ बहोरि भयउ तेहिं खारा ॥ लं० ०/३
तव सरूप गारुड़ि रघुनायक । मोहि जिआयउ जन सुखदायक ॥ उ० ९२/७
तव सिर निकर कपिन्ह के आगें । परिहहिं धरनि राम सर लागें ॥ लं० २६/४
तव सोनित कीं प्यास तृषित राम सायक निकर ।
तजउँ तोहि तेहि त्रास कटु जल्पक निसिचर अधम ॥ लं० ३३/० (ख)
तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा । जानत प्रिया एकु मनु मोरा ॥ सुं० १४/६
तस उतपातु तात बिधि कीन्हा । मुनि मिथिलेस राखि सबु लीन्हा ॥ अ० ३०४/८
तसि मति फिरी अहइ जसि भाबी । रहसी चेरि घात जनु फाबी ॥ अ० १६/२
तस मैं सुमुखि सुनावउँ तोही । समुझि परइ जस कारन मोही ॥ बा० १२०/५
तहँ असोक उपबन जहँ रहई । सीता बैठि सोच रत अहई ॥ कि० २७/१२
तहँउँ तुम्हार अलप अपराधू । कहै सो अधम अयान असाधू ॥ अ० २०६/७
तहँ करि भोग बिसाल तात गएँ कछु काल पुनि ।
होइहहु अवध भुआल तब मैं होब तुम्हार सुत ॥ बा० १५१/० सो०
तहँ करि मुनिन्ह केर संतोषा । चला बिमानु तहाँ ते चोखा ॥ लं० ११९/४
तहँ तरु किसलय सुमन सुहाए । लछिमन रचि निज हाथ डसाए ॥ लं० १०/३
तहँ तहँ तुम्हहि अहेर खेलाउब । सर निरझर जलठाउँ देखाउब ॥ अ० १३५/७
तहँ न असन नहिं बिप्र सुआरा । फिरेउ राउ मन सोच अपारा ॥ बा० १७३/७
तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया । रहे कीन्हि बिप्रन्ह पर दाया ॥ बा० २०९/७
तहँ पुनि देखेउँ राम सुजाना । माया पति कृपाल भगवाना ॥ उ० ८१/६
तहँ पुनि सकल देव मुनि आए । अस्तुति करि निज धाम सिधाए ॥ अर० ४०/३
तहँ पुनि संभु समुझि पन आपन । बैठे बट तर करि कमलासन ॥ बा० ५७/७
तहँ बसि कंद मूल फल खाई । प्रात नहाइ चले रघुराई ॥ अ० १२३/४
तहँ बसि हरिहि भजइ जिमि कागा । सो सुनु उमा सहित अनुरागा ॥ उ० ५६/४
तहँ बैठे महेस गन दोऊ । बिप्रबेष गति लखइ न कोऊ ॥ बा० १३३/२
तहँ रचि रुचिर परन तृन साला । बासु करौं कछु काल कृपाला ॥ अ० १२५/६
तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा । आवत देखि अतुल बल सींवा ॥ कि० ०/२
तहँ सिय रामु सयन निसि करहीं । निज छबि रति मनोज मदु हरहीं ॥ अ० ९०/२
तहँहुँ सती संकरहि बिबाहीं । कथा प्रसिद्ध सकल जग माहीं ॥ बा० ९७/६

तहँ होइहि तव संसय हानी । चलेउ बिहंग सुनत बिधि बानी ॥ उ० ५९/८
तहाँ जलंधर रावन भयऊ । रन हति राम परम पद दयऊ ॥ बा० १२३/२
तहाँ जाइ देखी बन सोभा । गुंजत चंचरीक मधु लोभा ॥ सुं० २/६
तहाँ बेद अस कारन राखा । भजन प्रभाउ भाँति बहु भाषा ॥ बा० १२/२
तहाँ राम रघुबंस मनि सुनिअ महा महिपाल ।
भंजेउ चाप प्रयास बिनु जिमि गज पंकज नाल ॥ बा० २९२/०
तहाँ रहे सनकादि भवानी । जहँ घटसंभव मुनिबर ग्यानी ॥ उ० ३१/७
तहाँ होइ मुनि रिषय समाजा । जाहिं जे मज्जन तीरथराजा ॥ बा० ४३/७
त्यागहिं कर्म सुभासुभ दायक । भजहिं मोहि सुर नर मुनि नायक ॥ उ० ४०/७
त्वदंघ्रि मूल ये नरा: । भजंति हीन मत्सरा: ॥ अर० ३/१३ छं०
ता कर दूत अनल जेहिं सिरिजा । जरा न सो तेहि कारन गिरिजा ॥ सुं० २५/७
ता कहुँ प्रभु कछु अगम नहिं जा पर तुम्ह अनुकूल ।
तव प्रभावँ बड़वानलहि जारि सकइ खल तूल ॥ सुं० ३३/०
ता कहँ यह बिसेष सुखदाई । जाहि प्रानप्रिय श्रीरघुराई ॥ उ० १२७/८
ताके गुन गन कछु कहे जड़मति तुलसीदास ।
जिमि निज बल अनुरूप ते माछी उड़इ अकास ॥ लं० १०१/० (क)
ताके जुग पद कमल मनावउँ । जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ ॥ बा० १७/८
ताके बचन बान सम लागे । करिआ मुह करि जाहि अभागे ॥ लं० ४८/२
ताकें भय रघुबीर कृपाला । सकल भुवन मैं फिरेउँ बिहाला ॥ कि० ५/१२
तात अनल कर सहज सुभाऊ । हिम तेहि निकट जाइ नहिं काऊ ॥ बा० ८९/७
तात अनादि सिद्ध थल एहू । लोपेउ काल बिदित नहिं केहू ॥ अ० ३०९/४
तात अनुज तव नीति बिभुषन । सो उर धरहु जो कहत बिभीषन ॥ सुं० ३९/२
तात कपिन्ह सब निसिचर मारे । महा महा जोधा संघारे ॥ लं० ६१/१०
तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा । करिहहिं कृपा भानुकुल नाथा ॥ सुं० ६/२
तात करहु जनि सोचु बिसेषी । सब दुखु मिटिहि राम पग देखी ॥ अ० २११/८
तात कहउँ कछु करउँ ढिठाई । अनुचितु छमब जानि लरिकाई ॥ अ० ४४/६
तात किएँ प्रिय प्रेम प्रमादू । जसु जग जाइ होइ अपबादू ॥ अ० ७६/४
तात कुतरक करहु जनि जाएँ । बैर पेम नहिं दुरइ दुराएँ ॥ अ० २६३/२
तात कुसल कहु सुखनिधान की । सहित अनुज अरु मातु जानकी ॥ लं० ५९/१
तात कृपा करि कीजिअ सोई । जातें अवध अनाथ न होई ॥ अ० ९४/१
तात गलानि करहु जियँ जाएँ । डरहु दरिद्रहि पारसु पाएँ ॥ अ० २०९/२
तात गहरु होइहि तोहि जाता । काजु नसाइहि होत प्रभाता ॥ लं० ५९/५
तात चढ़हु रथ बलि महतारी । होइहि प्रिय परिवारु दुखारी ॥ अ० १८७/५
तात चरन गहि मागउँ राखहु मोर दुलार ।

सीता देहु राम कहुँ अहित न होइ तुम्हार ॥ सुं० ४०/०
तात जनकतनया यह सोई। धनुषजग्य जेहि कारन होई ॥ बा० २३०/१
तात जाउँ बलि कीन्हेहु नीका। पितु आयसु सब धरमक टीका ॥ अ० ५४/८
तात जाउँ बलि बेगि नहाहू। जो मन भाव मधुर कछु खाहू ॥ अ० ५२/१
तात जायँ जियँ करहु गलानी। ईस अधीन जीव गति जानी ॥ अ० २६२/५
तात तात बिनु बात हमारी। केवल गुरुकुल कृपाँ सँभारी ॥ अ० ३०४/५
तात तात हा तात पुकारी। परे भूमितल ब्याकुल भारी ॥ अ० १५९/४
तात तीनि अति प्रबल खल काम क्रोध अरु लोभ।
मुनि बिग्यान धाम मन करहिं निमिष महुँ छोभ ॥ अर० ३८/० (क)
तात तुम्हहि मैं जानउँ नीकें। करौं काह असमंजस जीकें ॥ अ० २६३/५
तात तुम्हार बिमल जसु गाई। पाइहि लोकउ बेदु बड़ाई ॥ अ० २०६/२
तात तुम्हारि मातु बैदेही। पिता रामु सब भाँति सनेही ॥ अ० ७३/२
तात तुम्हारि मोरि परिजन की। चिंता गुरहि नृपहि घर बन की ॥ अ० ३१४/१
तात पितहि तुम्ह प्रानपिआरे। देखि मुदित नित चरित तुम्हारे ॥ अ० ५३/६
तात प्रताप प्रभाउ तुम्हारा। को कहि सकइ को जाननिहारा ॥ अ० २३०/२
तात प्रनामु तात सन कहेहू। बार बार पद पंकज गहेहू ॥ अ० १५०/६
तात प्रेम बस जनि कदराहू। समुझि हृदयँ परिनाम उछाहू ॥ अ० ६९/८
तात बचन पुनि मातु हित भाइ भरत अस राउ।
मो कहुँ दरस तुम्हार प्रभु सबु मम पुन्य प्रभाउ ॥ अ० १२५/०
तात बचन मम सुनु अति आदर। जनि मन गुनहु मोहि करि कादर ॥ लं० ८/७
तात बात फुरि राम कृपाहीं। राम बिमुख सिधि सपनेहुँ नाहीं ॥ अ० २५५/१
तात बात मैं सकल सँवारी। भै मंथरा सहाय बिचारी ॥ अ० १५९/१
तात बिचारु करहु मन माहीं। सोच जोगु दसरथु नृपु नाहीं ॥ अ० १७१/२
तात भरत अस काहे न कहहू। प्रान समान राम प्रिय अहहू ॥ अ० १८३/५
तात भरत कह तेरहुति राऊ। तुम्हहि बिदित रघुबीर सुभाऊ ॥ अ० २९१/८
तात भरत तुम्ह धरम धुरीना। लोक बेद बिद प्रेम प्रबीना ॥ अ० ३०३/८
तात भरत तुम्ह सब बिधि साधू। राम चरन अनुराग अगाधू ॥ अ० २०४/७
तात भाँति तेहि राखब राऊ। सोच मोर जेहिं करै न काऊ ॥ अ० १५१/६
तात मातु हा सुनिअ पुकारा। एहिं अवसर को हमहि उबारा ॥ सुं० २५/३
तात मोर अति पुन्य बहूता। देखेउँ नयन राम कर दूता ॥ सुं० ३/८
तात राउ नहिं सोचै जोगू। बिढ़इ सुकृत जसु कीन्हेउ भोगू ॥ अ० १६०/२
तात राम कहुँ नर जनि मानहु। निर्गुन ब्रह्म अजित अज जानहु ॥ कि० २५/१२
तात राम जस आयसु देहू। सो सबु करै मोर मत एहू ॥ अ० २९५/५
तात राम नहिं नर भूपाला। भुवनेस्वर कालहु कर काला ॥ सुं० ३८/१

तात लात रावन मोहि मारा । कहत परम हित मंत्र बिचारा ॥ लं० ६३/५
तात सकल तव पुन्य प्रभाऊ । जीत्यों अजय निसाचर राऊ ॥ लं० १११/३
तात सक्रसुत कथा सुनाएहु । बान प्रताप प्रभुहि समुझाएहु ॥ सुं० २६/५
तात सुनहु सादर अति प्रीती । मैं संछेप कहउँ यह नीती ॥ उ० १२०/८
तात सुनहु सादर मनु लाई । कहउँ राम कै कथा सुहाई ॥ बा० ४६/५
तात सुनहु सिय अति सुकुमारी । सासु ससुर परिजनहि पिआरी ॥ अ० ५७/८
तात सुनावहु मोहि निदानू । को दिनकर कुल भयउ कृसानू ॥ अ० ५३/८
तात हृदयँ धीरजु धरहु करहु जो अवसर आजु ।
उठे भरत गुर बचन सुनि करन कहेउ सबु साजु ॥ अ० १६९/०
तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग ।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग ॥ सुं० ४/०
तातें अब लगि रहिउँ कुमारी । मनु माना कछु तुम्हहि निहारी ॥ अर० १६/१०
ताते उमा न मैं समुझावा । रघुपति कृपाँ मरमु मैं पावा ॥ उ० ६१/७
ताते उमा मोच्छ नहिं पायो । दसरथ भेद भगति मन लायो ॥ लं० १११/६
तातें कछुक बात अनुसारी । छमिअ देबि बड़ि चूक हमारी ॥ अ० १५/८
ताते करहिं कृपानिधि दूरी । सेवक पर ममता अति भूरी ॥ उ० ७३/७
तातें गुपुत रहउँ जग माहीं । हरि तजि किमपि प्रयोजन नाहीं ॥ बा० १६१/१
ताते नहिं कछु तुम्हहिं दुरावउँ । परम रहस्य मनोहर गावउँ ॥ उ० ७३/४
ताते नास न होइ दास कर । भेद भगति बाढ़इ बिहंगबर ॥ उ० ७८/३
ताते प्रभु पूछउँ सतिभाऊ । कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ ॥ बा० २१५/४
ताते मुनि हरि लीन न भयऊ । प्रथमहिं भेद भगति बर लयऊ ॥ अर० ८/२
ताते मैं अति अलप बखाने । थोरे महुँ जानिहहिं सयाने ॥ बा० ११/६
तातें मैं तोहि बरजउँ राजा । कहें कथा तव परम अकाजा ॥ बा० १६५/१
ताते मोहि तुम्ह अति प्रिय लागे । मम हित लागि भवन सुख त्यागे ॥ उ० १५/५
ताते यह तन मोहि प्रिय भयउ राम पद नेह ।
निज प्रभु दरसन पायउँ गए सकल संदेह ॥ उ० ११४/० (क)
तातें रामचरितमानस बर । धरेउ नाम हियँ हेरि हरषि हर ॥ बा० ३४/१२
ताते सुर सीसन्ह चढ़त जग बल्लभ श्रीखंड ।
अनल दाहि पीटत घनहिं परसु बदन यह दंड ॥ उ० ३७/०
तानेउ चाप श्रवन लगि छाँड़े बिसिख कराल ।
राम मारगन गन चले लहलहात जनु ब्याल ॥ लं० ९१/०
ता पर गुर मोहि आयसु दीन्हा । अवसि जो कहहु चहउँ सोइ कीन्हा ॥ अ० २६३/८
ता पर मैं रघुबीर दोहाई । जानउँ नहिं कछु भजन उपाई ॥ कि० २/३
ता पर रुचिर मृदुल मृगछाला । तेहि आसन आसीन कृपाला ॥ लं० १०/४

ता पर हरषि चढ़ी बैदेही । सुमिरि राम सुखधाम सनेही ॥ लं० १०७/८
तापस अंध साप सुधि आई । कौसल्यहि सब कथा सुनाई ॥ अ० १५४/४
तापस नृप निज सखहि निहारी । हरषि मिलेउ उठि भयउ सुखारी ॥ बा० १७०/१
तापस नृपहि बहुत परितोषी । चला महाकपटी अतिरोषी ॥ बा० १७०/६
तापस बेष गात कृस जपत निरंतर मोहि ।
देखौं बेगि सो जतनु करु सखा निहोरउँ तोहि ॥ लं० ११६/० (ख)
तापस बेष जनक सिय देखी । भयउ पेमु परितोषु बिसेषी ॥ अ० २८६/१
तापस बेष जानकी देखी । भा सबु बिकल बिषाद बिसेषी ॥ अ० २८५/२
तापस बेष बिसेषि उदासी । चौदह बरिस रामु बनवासी ॥ अ० २८/३
तापस मुनि महिसुर सुनि देखी । भए प्रेम बस बिकल बिसेषी ॥ अ० २९१/५
तापस सम दम दया निधाना । परमारथ पथ परम सुजाना ॥ बा० ४३/२
तामस तनु कछु साधन नाहीं । प्रीति न पद सरोज मन माहीं ॥ सुं० ६/३
तामस धर्म करहिं नर जप तप ब्रत मख दान ।
देव न बरषहिं धरनीं बए न जामहिं धान ॥ उ० १०१/० (ख)
तामस बहुत रजोगुन थोरा । कलि प्रभाव बिरोध चहुँ ओरा ॥ उ० १०३/५
तारकु असुर भयउ तेहि काला । भुज प्रताप बल तेज बिसाला ॥ बा० ८१/५
तारन तरन हरन सब दूषन । तुलसिदास प्रभु त्रिभुवन भूषन ॥ उ० ३४/९
तारा बिकल देखि रघुराया । दीन्ह ग्यान हरि लीन्ही माया ॥ कि० १०/३
तारा सहित जाइ हनुमाना । चरन बंदि प्रभु सुजस बखाना ॥ कि० १९/४
ताल समीप मुनिन्ह गृह छाए । चहु दिसि कानन बिटप सुहाए ॥ अर० ३९/५
तासु अनुज काटे श्रुति नासा । सुनि तव भगिनि करहिं परिहासा ॥ अर० २१/१०
तासु कनकमय सिखर सुहाए । चारि चारु मोरे मन भाए ॥ उ० ५५/८
तासु खोज पठइहि प्रभु दूता । तिन्हहि मिलें तैं होब पुनीता ॥ कि० २७/८
तासु गर्ब जेहि देखत भागा । सो नर क्यों दससीस अभागा ॥ लं० २५/४
तासु चरन सिरु नाइ करि प्रेम सहित मतिधीर ।
गयउ गरुड़ बैकुंठ तब हृदयँ राखि रघुबीर ॥ उ० १२५/० (क)
तासु तरक तियगन मन मानी । कहहिं सकल तेहि सम न सयानी ॥ अ० २२१/५
तासु तेज प्रभु बदन समाना । सुर मुनि सबहिं अचंभव माना ॥ लं० ७०/८
तासु तेज समान प्रभु आनन । हरषे देखि संभु चतुरानन ॥ लं० १०२/९
तासु दसा देखी सखिन्ह पुलक गात जलु नैन ।
कहु कारनु निज हरष कर पूछहिं सब मृदु बैन ॥ बा० २२८/०
तासु दूत कि बंध तरु आवा । प्रभु कारज लगि कपिहिं बँधावा ॥ सुं० १९/४
तासु दूत तुम्ह तजि कदराई । राम हृदयँ धरि करहु उपाई ॥ कि० २८/४
तासु दूत होइ हम कुल बोरा । अइसिहुँ मति उर बिहर न तोरा ॥ लं० २१/२

तासु नारि निज सचिव बोलाई। पठवहु कंत जो चहहु भलाई ॥ सुं० ३५/८
तासु प्रभाउ जान नहिं सोई। तथा हृदयँ मम संसय होई ॥ बा० १४८/६
तासु बचन अति सियहि सोहाने। दरस लागि लोचन अकुलाने ॥ बा० २२८/७
तासु बचन मेटत मन सोचू। तेहि तें अधिक तुम्हार सँकोचू ॥ अ० २६३/७
तासु बचन सुनि ते सब डरीं। जनकसुता के चरनन्हि परीं ॥ सुं० १०/८
तासु बचन सुनि सब हरषानीं। ऐसेइ होउ कहहिं मृदु बानीं ॥ बा० २२२/८
तासु बचन सुनि सागर पाहीं। मागत पंथ कृपा मन माहीं ॥ सुं० ५५/३
तासु बिरोध न कीजिअ नाथा। काल करम जिव जाकें हाथा ॥ लं० ५/९
तासु भजन कीजिअ तहँ भर्ता। जो कर्ता पालक संहर्ता ॥ लं० ६/४
तासु मरन सुनि सुर गंधर्बा। चढ़ि बिमान आए नभ सर्बा ॥ लं० ७६/२
तासु मुकुट तुम्ह चारि चलाए। कहहु तात कवनी बिधि पाए ॥ लं० ३७/७
तासु समीप गवन नृप कीन्हा। यह प्रतापरबि तेहिं तब चीन्हा ॥ बा० १५७/६
तासु श्राप हरि दीन्ह प्रमाना। कौतुकनिधि कृपाल भगवाना ॥ बा० १२३/१
तासों तात बयरु नहिं कीजै। मारें मरिअ जिआएँ जीजै ॥ अर० २४/४
तासों बयरु कबहुँ नहिं कीजै। मोरे कहें जानकी दीजै ॥ सुं० २१/१०
ताहि कबहुँ भल कहइ न कोई। गुंजा ग्रहइ परस मनि खोई ॥ उ० ४३/३
ताहि कि संपति सगुन सुभ सपनेहुँ मन बिश्राम।
भूत द्रोह रत मोहबस राम बिमुख रति काम ॥ लं० ७८/०
ताहि देइ गति राम उदारा। सबरी कें आश्रम पगु धारा ॥ अर० ३३/५
ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा। पुनि निज भवन गवन हरि कीन्हा ॥ उ० ९/२
ताहि प्रसंसि बिबिधि बिधि सीस नाइ कर जोरि।
बचन बिनीत सप्रेम मृदु बोलेउ गरुड़ बहोरि ॥ उ० ९३/० (क)
ताहि बयरु तजि नाइअ माथा। प्रनतारति भंजन रघुनाथा ॥ सुं० ३८/५
ताहि भजहि मन तजि कुटिलाई। राम भजें गति केहिं नहिं पाई ॥ उ० १२९/८
ताहि मारि मारुतसुत बीरा। बारिधि पार गयउ मतिधीरा ॥ सुं० २/५
ताहि राखि कपीस पहिं आए। समाचार सब ताहि सुनाए ॥ सुं० ४२/३
ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर। सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ॥ सुं० २९/२
तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं। जौं तुम्ह सुख मानहु मन माहीं ॥ सुं० १६/१
तिन्ह कर संग सदा दुखदाई। जिमि कपिलहि घालइ हरहाई ॥ उ० ३८/२
तिन्ह कहँ कहिअ नाथ किमि चीन्हे। देखिअ रबि कि दीप कर लीन्हे ॥ बा० २९१/३
तिन्ह की ओट न देखिअ बारी। मगन भए हरि रूप निहारी ॥ लं० ३/८
तिन्ह के आयुध तिल सम करि काटे रघुबीर।
तानि सरासन श्रवन लगि पुनि छाँड़े निज तीर ॥ अर० १९/० (ख)
तिन्ह कें गृह अवतरिहउँ जाई। रघुकुल तिलक सो चारिउ भाई ॥ बा० १८६/५

तिन्ह के निकट बिसाल सुहाए। धवल धाम बहुबरन बनाए ॥ बा० २२३/६
तिन्ह कें हृदय सदन सुखदायक। बसहु बंधु सिय सह रघुनायक ॥ अ० १२७/८
तिन्ह कें परस किएँ गिरि भारे। तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे ॥ सुं० ५९/२
तिन्ह कै गति मोहि संकर देऊ। जननी जौं यहु जानौं भेऊ ॥ अ० १६७/८
तिन्ह कै दसा देखि रघुबीरा। स्रवत नयन जल पुलक सरीरा ॥ उ० ३२/५
तिन्ह चढ़ि चले बिप्रबर बृंदा। जनु तनु धरें सकल श्रुति छंदा ॥ बा० २९९/४
तिन्ह तें अधिक रम्य अति बंका। जग बिख्यात नाम तेहि लंका ॥ बा० १७७/८
तिन्ह ते पुनि मोहि प्रिय निज दासा। जेहि गति मोरि न दूसरि आसा ॥ उ० ८५/७
तिन्ह नृपसुतहि कीन्ह परनामा। कहि सच्चिदानंद परधामा ॥ बा० ४९/७
तिन्ह पर एक एक बिटप बिसाला। बट पीपर पाकरी रसाला ॥ उ० ५५/९
तिन्ह पर कुअँरि कुअँर बैठारे। सादर पाय पुनीत पखारे ॥ बा० ३४९/२
तिन्ह महँ जिन्ह देखे दोउ भ्राता। अपर तिन्हहि पूँछहिं मगु जाता ॥ अ० १३४/३
तिन्ह महँ जो परिहरि मद माया। भजै मोहि मन बच अरु काया ॥ उ० ८६/८
तिन्ह महँ द्विज द्विज महँ श्रुतिधारी। तिन्ह महुँ निगम धरम अनुसारी ॥ उ० ८५/५
तिन्ह महँ प्रथम रेख जग मोरी। धींग धरमध्वज धंधक धोरी ॥ बा० ११/४
तिन्ह महँ प्रिय बिरक्त पुनि ग्यानी। ग्यानिहु ते अति प्रिय बिग्यानी ॥ उ० ८५/६
तिन्ह सब छ्यल भए असवारा। भरत सरिस बय राजकुमारा ॥ बा० २९७/७
तिन्ह सहस्त्र महुँ सब सुख खानी। दुर्लभ ब्रह्मलीन बिग्यानी ॥ उ० ५३/५
तिन्ह सिय निरखि निपट दुखु पावा। सो सबु सहिअ जो दैउ सहावा ॥ अ० २४५/६
तिन्हहि अभय करि पूछेसि जाई। कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई ॥ कि० २६/१०
तिन्हहि ग्यान उपदेसा रावन। आपुन मंद कथा सुभ पावन ॥ लं० ७७/१
तिन्हहि जीति रन आनेसु बाँधी। उठि सुत पितु अनुसासन काँधी ॥ बा० १८१/३
तिन्हहि देइ बर ब्रह्म सिधाए। हरषित ते अपने गृह आए ॥ बा० १७७/१
तिन्हहि देखि सब सुर सुरनारीं। भए नखत जनु बिधु उजिआरीं ॥ बा० ३१३/७
तिन्हहि देखि सुखु पावहिं नारीं। बिनु पहिचानि प्रानहु ते प्यारीं ॥ बा० ३२१/६
तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा। भिरे जुगल मानहुँ गजराजा ॥ सुं० १८/७
तिन्हहि बिलोकि बिलोकति धरनी। दुहुँ सकोच सकुचति बरबरनी ॥ अ० ११६/३
तिन्हहि सोहाइ न अवध बधावा। चोरहि चंदिनि राति न भावा ॥ अ० १०/७
तिभुवन तीनि काल जग माहीं। भूरि भाग दसरथ सम नाहीं ॥ अ० १/४
तिमि जनि हरिहि सुनावहु कबहूँ। चलेहुँ प्रसंग दुराएहु तबहूँ ॥ बा० १२६/८
तिमि रघुपति निज दास कर हरहिं मान हित लागि ।
तुलसिदास ऐसे प्रभुहि कस न भजहु भ्रम त्यागि ॥ उ० ७४/० (ख)
तिमि रघुपति महिमा अवगाहा। तात कबहुँ कोउ पाव कि थाहा ॥ उ० ९०/६
तिमिरु तरुन तरनिहि मकु गिलई। गगनु मगन मकु मेघहिं मिलई ॥ अ० २३१/१

तिमि सुख संपति बिनहिं बोलाएँ। धरमसील पहिं जाहिं सुभाएँ ॥ बा० २९३/३
तिलक समाजु साजि सबु आना। करिअ सुफल प्रभु जौं मनु माना ॥ अ० २६७/८
तीतिर लावक पदचर जूथा। बरनि न जाइ मनोज बरूथा ॥ अर० ३७/७
तीनि लोक महँ जे भटमानी। सभ कै सकति संभु धनु भानी ॥ बा० २९१/६
तीनि अवस्था तीनि गुन तेहि कपास तें काढ़ि।
तूल तुरीय सँवारि पुनि बाती करै सुगाढ़ि ॥ उ० ११७/० (ग)
तीनिउ भाइ राम सम जानी। धोए चरन जनक निज पानी ॥ बा० ३२७/६
तीनि काल तिभुअन मत मोरें। पुन्यसिलोक तात तर तोरें ॥ अ० २६२/६
तीर तीर तुलसिका सुहाई। बृंद बृंद बहु मुनिन्ह लगाई ॥ उ० २८/६
तीर तीर देवन्ह के मंदिर। चहुँ दिसि तिन्ह के उपबन सुंदर ॥ उ० २८/४
तीरथ अमित कोटि सम पावन। नाम अखिल अघ पूग नसावन ॥ उ० ९१/२
तीरथपति पुनि देखु प्रयागा। निरखत जन्म कोटि अघ भागा ॥ लं० ११९/७
तीरथ बर नैमिष बिख्याता। अति पुनीत साधक सिधि दाता ॥ बा० १४२/२
तीरथ मुनि आश्रम सुरधामा। निरखि निमज्जहिं करहिं प्रनामा ॥ अ० २२३/२
तीर्थाटन साधन समुदाई। जोग बिराग ग्यान निपुनाई ॥ उ० १२५/४
तीस तीर रघुबीर पबारे। भुजन्हि समेत सीस महि पारे ॥ लं० ९१/१०
तुम्ह अति कीन्हि मोरि सेवकाई। मुख पर केहि बिधि करौं बड़ाई ॥ उ० १५/४
तुम्ह अपराध जोगु नहिं ताता। जननी जनक बंधु सुखदाता ॥ अ० ४२/३
तुम्ह आनंद करहु मृग जाए। कंचन मृग खोजन ए आए ॥ अर० ३६/६
तुम्ह कपीस अंगद नल नीला। जामवंत मारुति नयसीला ॥ लं० १०५/२
तुम्ह कहँ भरत कलंक यह हम सब कहँ उपदेसु।
राम भगति रस सिद्धि हित भा यह समउ गनेसु ॥ अ० २०८/०
तुम्ह कहुँ तौ न दीन्ह बनबासू। करहु जो कहहिं ससुर गुर सासू ॥ अ० ७७/८
तुम्ह कहुँ बन सब भाँति सुपासू। सँग पितु मातु रामु सिय जासू ॥ अ० ७४/७
तुम्ह कहुँ सर्ब काल कल्याना। सजहु बरात बजाइ निसाना ॥ बा० २९३/८
तुम्ह कृपाल जा पर अनुकूला। ताहि न ब्याप त्रिबिध भव सूला ॥ सुं० ४६/६
तुम्ह कृपाल सबु संसउ हरेऊ। राम स्वरूप जानि मोहि परेऊ ॥ बा० ११९/२
तुम्ह कानन गवन्हु दोउ भाई। फेरिअहिं लखन सीय रघुराई ॥ अ० २५५/३
तुम्ह केहि भाँति सुना मदनारी। कहहु मोहि अति कौतुक भारी ॥ उ० ५४/२
तुम्ह गलानि जियँ जनि करहु समुझि मातु करतूति।
तात कैकइहि दोसु नहिं गई गिरा मति धूति ॥ अ० २०६/०
तुम्ह गुर बिप्र धेनु सुर सेबी। तसि पुनीत कौसल्या देबी ॥ बा० २९३/४
तुम्ह जानहु कपि मोर सुभाऊ। भरतहि मोहि कछु अंतर काऊ ॥ उ० ३५/७
तुम्ह जानहु जेहि कारन आयउँ। ताते तात न कहि समुझायउँ ॥ अर० १२/२

तुम्ह जो कहहु करहु सब साँचा । जस काछिअ तस चाहिअ नाचा ॥ अ० १२६/८
तुम्ह जो कहा राम कोउ आना । जेहि श्रुति गाव धरहिं मुनि ध्याना ॥ बा० ११३/८
तुम्ह जो कहा हर जारेउ मारा । सोइ अति बड़ अबिबेकु तुम्हारा ॥ बा० ८९/६
तुम्ह जो कही यह कथा सुहाई । कागभसुंडि गरुड़ प्रति गाई ॥ उ० ५२/८
तुम्ह जो हमहि बड़ि बिनय सुनाई । कृपा कीन्हि मोहि दीन्हि बड़ाई ॥ अ० १०२/७
तुम्ह तें अधिक गुरहि जियँ जानी । सकल शायँ सेवहिं सनमानी ॥ अ० १२८/८
तुम्ह ते अधिक पुन्य बड़ काकें । राजन राम सरिस सुत जाकें ॥ बा० २९३/६
तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा । बार बार मोहि लागि बोलावा ॥ बा० २७४/१
तुम्ह तौ देहु सरल सिख सोई । जो आचरत मोर भल होई ॥ अ० १७६/५
तुम्ह तौ भरत मोर मत एहू । धरें देह जनु राम सनेहू ॥ अ० २०७/८
तुम्ह निज मोह कही खग साईं । सो नहिं कछु आचरज गोसाईं ॥ उ० ६९/५
तुम्ह पंडित परमारथ ग्याता । धरहु धीर लखि बिमुख बिधाता ॥ अ० १४२/२
तुम्ह पर अस सनेहु रघुबर कें । सुख जीवन जग जस जड़ नर कें ॥ अ० २०७/६
तुम्ह परिपूरन काम जान सिरोमनि भावप्रिय ।
जन गुन गाहक राम दोष दलन करुनायतन ॥ बा० ३३६/० सो०
तुम्ह पावक महुँ करहु निवासा । जौ लगि करौं निसाचर नासा ॥ अर० २३/२
तुम्ह पितु सरिस भलेहिं मोहि मारा । रामु भजें हित नाथ तुम्हारा ॥ सुं० ४०/८
तुम्ह पितु ससुर सरिस हितकारी । उतरु देउँ फिरि अनुचित भारी ॥ अ० ९६/८
तुम्ह पुनि पितु सम अति हित मोरें । बिनती करउँ तात कर जोरें ॥ अ० ९५/१
तुम्ह पुनि राम राम दिन राती । सादर जपहु अनँग आराती ॥ बा० १०७/७
तुम्ह पूँछहु मैं कहत डेराऊँ । धरेहु मोर घरफोरी नाऊँ ॥ अ० १६/३
तुम्ह पै पाँच मोर भल मानी । आयसु आसिष देहु सुबानी ॥ अ० १८२/७
तुम्ह प्रिय पाहुने बन पगु धारे । सेवा जोगु न भाग हमारे ॥ अ० २५०/१
तुम्ह प्रेरक सब के हृदयँ सो मति रामहि देहु ।
बचनु मोर तजि रहहिं घर परिहरि सीलु सनेहु ॥ अ० ४४/०
तुम्ह बिग्यानरुप नहिं मोहा । नाथ कीन्हि मो पर अति छोहा ॥ उ० १२२/४
तुम्ह बिनु दुखी सुखी तुम्ह तेहीं । तुम्ह जानहु जिय जो जेहि केहीं ॥ अ० २९०/३
तुम्ह बिनु राम सकल सुख साजा । नरक सरिस दुहु राज समाजा ॥ अ० २८९/८
तुम्ह ब्रह्मादि जनक जग स्वामी । ब्रह्म सकल उर अंतरजामी ॥ बा० १४९/६
तुम्ह मम सखा भरत सम भ्राता । सदा रहेहु पुर आवत जाता ॥ उ० १९/३
तुम्ह माया भगवान सिव सकल जगत पितु मातु ।
नाइ चरन सिर मुनि चले पुनि पुनि हरषत गातु ॥ बा० ८१/०
तुम्ह मुनि मातु सचिव सिख मानी । पालेहु पुहुमि प्रजा रजधानी ॥ अ० ३१४/८
तुम्ह रघुबीर चरन अनुरागी । कीन्हिहु प्रस्न जगत हित लागी ॥ बा० १११/८

तुम्हरिहि कृपाँ तुम्हहि रघुनंदन । जानहिं भगत भगत उर चंदन ॥ अ० १२६/४
तुम्हरी कृपाँ कृपायतन अब कृतकृत्य न मोह ।
जानेउँ राम प्रताप प्रभु चिदानंद संदोह ॥ उ० ५२/० (क)
तुम्हरी कृपाँ सुनहु मुनिराजा । भयउँ आजु मैं पूरनकाजा ॥ बा० ३२९/६
तुम्हरी कृपाँ सुलभ सोउ मोरे । सिअनि सुहावनि टाट पटोरे ॥ बा० १३/११
तुम्हरें अनुग्रह तात कानन जात सब सुखु पाइहौं ।
प्रतिपालि आयसु कुसल देखन पाय पुनि फिरि आइहौं ॥
जननीं सकल परितोषि परि परि. पायँ करि बिनती घनी ।
तुलसी करेहु सोइ जतनु जेहिं कुसली रहहिं कोसल धनी ॥ अ० १५०/१ छं०
तुम्हरेइँ भजन प्रभाव अघारी । जानउँ महिमा कछुक तुम्हारी ॥ अर० १२/५
तुम्हरे उपरोहित कहुँ राया । हरि आनब मैं करि निज माया ॥ बा० १६८/४
तुम्हरे कटक माझ सुनु अंगद । मो सन भिरिहि कवन जोधा बद ॥ लं० २२/१
तुम्हरें चलत चलिहि सबु लोगू । सकल सोक कृस नहिं मग जोगू ॥ अ० १८७/६
तुम्हरें जान कामु अब जारा । अब लगि संभु रहे सबिकारा ॥ बा० ८९/२
तुम्हरें बल मैं रावनु मार्‌यो । तिलक बिभीषन कहँ पुनि सार्‌यो ॥ लं० १७७/४
तुम्हरेहिं भाग रामु बन जाहीं । दूसर हेतु तात कछु नाहीं ॥ अ० ७४/३
तुम्ह लछिमन मारेहु रन ओही । देखि सभय सुर दुख अति मोही ॥ लं० ७४/८
तुम्ह सन तात बहुत का कहऊँ । दिएँ उतरु फिरि पातकु लहऊँ ॥ अ० ९४/८
तुम्ह सन मिटहिं कि बिधि के अंका । मातु ब्यर्थ जनि लेहु कलंका ॥ बा० ९६/८
तुम्ह सब कहहु कढ़ावन टीका । राय रजायसु सब कहँ नीका ॥ अ० १८०/३
तुम्ह सब भाँति परम हितकारी । अग्या सिर पर नाथ तुम्हारी ॥ बा० ७६/४
तुम्ह सर्बग्य कहउँ सतिभाऊ । उर अंतरजामी रघुराऊ ॥ अ० २१०/३
तुम्ह सर्बग्य तग्य तम पारा । सुमति सुसील सरल आचारा ॥ उ० ९३/१
तुम्ह सर्बग्य सिरोमनि स्वामी । आपनि समुझि कहउँ अनुगामी ॥ अ० २२६/८
तुम्ह सम अधन भिखारि अगेहा । होत बिरंचि सिवहि संदेहा ॥ बा० १६०/४
तुम्ह सम पुरुष न मो सम नारी । यह सँजोग बिधि रचा बिचारी ॥ अर० १६/८
तुम्ह समरूप ब्रह्म अबिनासी । सदा एकरस सहज उदासी ॥ लं० १०९/५
तुम्ह सम सुअन सुकृत जेहिं दीन्हे । उचित न तासु निरादरु कीन्हे ॥ अ० ४२/६
तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरें । धरउँ देह नहिं आन निहोरें ॥ सुं० ४७/८
तुम्ह सुकृती हम नीच निषादा । पावा दरसनु राम प्रसादा ॥ अ० २४९/६
तुम्ह सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ । अनुज हमार भीरु अति सोऊ ॥ लं० २२/३
तुम्ह सुचि सुमति परम प्रिय मोरें । प्रीति प्रतीति मोहि पर तोरें ॥ बा० १६१/३
तुम्ह हटकहु जौं चहहु उबारा । कहि प्रतापु बलु रोषु हमारा ॥ बा० २७३/४
तुम्हहि आदि खग मसक प्रजंता । नभ उड़ाहिं नहिं पावहिं अंता ॥ उ० ९०/५

तुम्हहि छाड़ि गति दूसरि नाहीं। राम बसहु तिन्ह के मन माहीं ॥ अ० १२९/५
तुम्हहि देत अति सुगम गोसाईं। अगम लाग मोहि निज कृपनाईं ॥ बा० १४८/४
तुम्हहि न ब्यापत काल अति कराल कारन कवन।
मोहि सो कहहु कृपाल ग्यान प्रभाव कि जोग बल ॥ उ० ९४/० (क) सो०
तुम्हहि न संसय मोह न माया। मो पर नाथ कीन्हि तुम्ह दाया ॥ उ० ६९/३
तुम्हहि न सोचु सोहाग बल निज बस जानहु राउ।
मन मलीन मुह मीठ नृपु राउर सरल सुभाउ ॥ अ० १७/०
तुम्हहि निबेदित भोजन करहीं। प्रभु प्रसाद पट भूषन धरहीं ॥ अ० १२८/२
तुम्हहि नीक लागै रघुराई। सो मोहि देहु दास सुखदाई ॥ अर० १०/२५
तुम्हहि बिचारि कहहु नरनाहा। प्रभु तजि भवन काज मम काहा ॥ उ० १७/५
तुम्हहि बिदित सबही कर करमू। आपन मोर परम हित धरमू ॥ अ० ३०४/३
तुम्हहि रघुपतिहि अंतर कैसा। खलु खद्योत दिनकरहि जैसा ॥ लं० ५/६
तुम्ह त्रिकाल दरसी मुनिनाथा। बिस्व बदर जिमि तुम्हरें हाथा ॥ अ० १२४/७
तुम्ह त्रिभुवन गुर बेद बखाना। आन जीव पाँवर का जाना ॥ बा० ११०/५
तुरग उठाइ कोपि रघुनायक। खैंचि सरासन छाँड़े सायक ॥ लं० ९१/६
तुरग नचावहिं कुअँर बर अकनि मृदंग निसान।
नागर नट चितवहिं चकित डगहिं न ताल बँधान ॥ बा० ३०२/०
तुरग लाख रथ सहस पचीसा। सकल सँवारे नख अरु सीसा ॥ बा० ३३२/६
तुरत आन रथ चढ़ि खिसिआना। अस्त्र सस्त्र छाँड़ेसि बिधि नाना ॥ लं० ९१/३
तुरत गयउ गिरिबर कंदरा। करौं अजय मख अस मन धरा ॥ लं० ७४/२
तुरत कीन्ह नृप सर संधाना। महि मिलि गयउ बिलोकत बाना ॥ बा० १५६/२
तुरत चले कपि सुनि प्रभु बचना। कीन्ही जाइ तिलक की रचना ॥ लं० १०५/५
तुरत नाइ लछिमन पद माथा। चले दूत बरनत गुन गाथा ॥ सुं० ५२/१
तुरत निसाचर एक पठावा। समाचार रावनहि जनावा ॥ लं० १८/१
तुरत पवनसुत गवनत भयऊ। तब प्रभु भरद्वाज पहिं गयऊ ॥ लं० १२०/३
तुरत बिभीषन पाछें मेला। सन्मुख राम सहेउ सोइ सेला ॥ लं० ९३/२
तुरत बिमान तहाँ चलि आवा। दंडक बन जहँ परम सुहावा ॥ लं० ११९/१
तुरत बैद तब कीन्हि उपाई। उठि बैठे लछिमन हरषाई ॥ लं० ६१/२
तुरत भयउँ मैं काग तब पुनि मुनि पद सिरु नाइ।
सुमिरि राम रघुबंस मनि हरषित चलेउँ उड़ाइ ॥ उ० ११२/० (क)
तुरत भवन आए गिरिराई। सकल सैल सर लिए बोलाई ॥ बा० १०२/१
तुरत सकल लोगन्ह पहिं जाहू। आसन उचित देहु सब काहू ॥ बा० २३९/८
तुरत सुतीछन गुर पहिं गयऊ। करि दंडवत कहत अस भयऊ ॥ अर० ११/६
तुरतहिं रुचिर रूप तेहिं पावा। देखि दुखी निज धाम पठावा ॥ अर० ६/७

तुरतहिं सकल गए जहँ सीता। सेवहिं सब निसिचरीं बिनीता ॥ लं० १०७/५
तुलसी जसि भवतब्यता तैसी मिलइ सहाइ।
आपुनु आवइ ताहि पहिं ताहि तहाँ लै जाइ ॥ बा० १५९/० (ख)
तुलसी तरुबर बिबिध सुहाए। कहुँ कहुँ सियँ कहुँ लखन लगाए ॥ अ० २३६/७
तुलसी देखि सुबेषु भूलहिं मूढ़ न चतुर नर।
सुंदर केकिहि पेखु बचन सुधा सम असन अहि ॥ बा० १६१/० (ख) सो०
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं। मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं ॥ उ० १०७/५
तुहूँ सराहसि करसि सनेहू। अब सुनि मोहि भयउ संदेहू ॥ अ० ३१/७
ते अब फिरत बिपिन पदचारी। कंद मूल फल फूल अहारी ॥ अ० २००/३
तेइ अभेदबादी ग्यानी नर। देखा मैं चरित्र कलिजुग कर ॥ उ० ९९/२
तेइ तृन हरित चरै जब गाई। भाव बच्छ सिसु पाइ पेन्हाई ॥ उ० ११६/११
तेइ दोउ बंधु प्रेम जनु जीते। गुर पद कमल पलोटत प्रीते ॥ बा० २२५/५
तेइ रघुनंदनु लखनु सिय अनहित लागे जाहि।
तासु तनय तजि दुसह दुख दैउ सहावइ काहि ॥ अ० २६२/०
तेउ न जानहिं मरमु तुम्हारा। औरु तुम्हहि को जाननिहारा ॥ अ० १२६/२
तेउ न पाइ अस समउ चुकाहीं। देखु बिचारि मातु मन माहीं ॥ अ० ४१/४
तेउ यह चरित देखि ठगि रहहीं। उमा तासु गुन नर किमि कहहीं ॥ उ० ८/९
तेउ बिलोकि रघुबर भरत प्रीति अनूप अपार।
भए मगन मन तन बचन सहित बिराग बिचार ॥ अ० ३१७/०
तेउ सुनि सरन सामुहें आए। सकृत प्रनामु किहें अपनाए ॥ अ० २९८/३
तेऊ आजु राम पदु पाई। चले धरम मरजाइ मेटाई ॥ अ० २२७/३
तेज कृसानु रोष महिषेसा। अघ अवगुन धन धनी धनेसा ॥ बा० ३/५
ते जड़ कामधेनु गृहँ त्यागी। खोजत आकु फिरहिं पय लागी ॥ उ० ११४/२
ते जड़ जीव निजात्मक घाती। जिन्हहि न रघुपति कथा सोहाती ॥ उ० ५२/६
तेज न सहि सक सो फिरि आवा। मैं अभिमानी रबि निअरावा ॥ कि० २७/३
तेज पुंज रथ दिब्य अनूपा। हरषि चढ़े कोसलपुर भूपा ॥ लं० ८८/३
ते तव सिर कंदुक सम नाना। खेलिहहिं भालु कीस चौगाना ॥ लं० २६/५
ते तुम्ह कहहु मातु बन जाऊँ। मैं सुनि बचन बैठि पछिताऊँ ॥ अ० ५५/८
ते तुम्ह राम अकाम पिआरे। दीन बंधु मृदु बचन उचारे ॥ अर० ५/६
ते तुम्ह सकल लोकपति साईं। पूँछेहु मोहि मनुज की नाईं ॥ अर० १२/९
ते दसरथ कौसल्या रूपा। कोसलपुरीं प्रगट नरभूपा ॥ बा० १८६/४
ते नर यह सर तजहिं न काऊ। जिन्ह कें राम चरन भल भाऊ ॥ बा० ३८/७
ते पातक मोहि होहुँ बिधाता। जौं यहु होइ मोर मत माता ॥ अ० १६६/८
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे। जिन्ह पठए बन बालक ऐसे ॥ अ० ११०/७

ते पितु मातु कहहु सखि कैसे। जिन्ह पठए बन बालक ऐसे ॥ अ० ८८/२
ते पितु मातु धन्य जिन्ह जाए। धन्य सो नगरु जहाँ तें आए ॥ अ० १२१/५
ते पुनि पुन्यपुंज हम लेखे। जे देखहिं देखिहहिं जिन्ह देखे ॥ अ० ११९/८
ते प्रभु समाचार सब कहहीं। भरतहिं देखि जनम फलु लहहीं ॥ अ० २२३/६
ते फल भच्छक कठिन कराला। तव भयँ डरत सदा सोउ काला ॥ अर० १२/८
ते बन सहहिं बिपति सब भाँती। निदरे कोटि कुलिस यह छाती ॥ अ० ११९/४
ते बिप्रन्ह सन आपु पुजावहिं। उभय लोक निज हाथ नसावहिं ॥ उ० ९९/७
ते भरतहि भेंटत सनमाने। राजसभाँ रघुबीर बखाने ॥ बा० २८/८
तेल नावँ भरि नृप तनु राखा। दूत बोलाइ बहुरि अस भाषा ॥ अ० १५६/१
ते सठ महासिंधु बिनु तरनी। पैरि पार चाहहिं जड़ करनी ॥ उ० ११४/४
ते सठ हठ बस संसय करहीं। निज अग्यान राम पर धरहीं ॥ उ० ७२/९
ते सनमुख नहिं करहिं लराई। देखिं सबल रिपु जाहिं पराई ॥ बा० १८०/६
ते सब भए परम पद जोगू। भरत दरस मेटा भव रोगू ॥ अ० २१६/२
ते सिय रामु साथरीं सोए। श्रमित बसन बिनु जाहिं न जोए ॥ अ० ९०/३
ते सिर कटु तुंबरि समतूला। जे न नमत हरि गुर पद मूला ॥ बा० ११२/४
ते श्रोता बकता समसीला। सवँदरसी जानहिं हरिलीला ॥ बा० २९/६
तेन्ह कर मरन एक बिधि होई। कहउँ बुझाइ सुनहु अब सोई ॥ बा० १८०/७
तेहिं अपने मन अस अनुमाना। बध्यो चहत एहि कृपानिधाना ॥ लं० ४८/४
तेहि अवसर आए दोउ भाई। गए रहे देखन फुलवाई ॥ बा० २१४/४

तेहि अवसर आए लखन मगन प्रेम आनंद।
सनमाने प्रिय बचन कहि रघुकुल कैरव चंद ॥ अ० १०/०

तेहि अवसर एक तापसु आवा। तेजपुंज लघुबयस सुहावा ॥ अ० १०९/७
तेहि अवसर कर बिधि ब्यवहारू। दुहुँ कुलगुर सब कीन्ह अचारू ॥ बा० ३२२/८
तेहि अवसर कर हरष बिषादू। किमि कबि कहै मूक जिमि स्वादू ॥ अ० २४४/६
तेहि अवसर कुबरी तहँ आई। बसन बिभूषन बिबिध बनाई ॥ अ० १६२/२
तेहि अवसर केवट धीरजु धरि। जोरि पानि बिनवत प्रनामु करि ॥ अ० २४१/८
तेहि अवसर खग मृग जल मीना। चित्रकूट चर अचर मलीना ॥ अ० ३२०/६
तेहि अवसर जो जेहि बिधि आवा। दीन्ह भूप जो जेहि मन भावा ॥ बा० १९५/७
तेहि अवसर दसरथ तहँ आए। तनय बिलोकि नयन जल छाए ॥ लं० १११/१

तेहि अवसर नारद सहित अरु रिषि सप्त समेत।
समाचार सुनि तुहिनगिरि गवने तुरत निकेत ॥ बा० ९७/०

तेहि अवसर फल फूल दल मूल अनेक प्रकार।
लइ आए बनचर बिपुल भरि भरि काँवरि भार ॥ अ० २७८/०

तेहि अवसर बन अधिक उछाहू। त्रिबिध समीर सुखद सब काहू ॥ अ० २७८/४

तेहि अवसर भाइन्ह सहित रामु भानु कुल केतु ।
चले जनक मंदिर मुदित बिदा करावन हेतु ॥ बा० ३३४/०
तेहि अवसर भंजन महिभारा । हरि रघुबंस लीन्ह अवतारा ॥ बा० ४७/७
तेहिं अवसर मुनि नारद आए करतल बीन ।
गावन लगे राम कल कीरति सदा नबीन ॥ उ० ५०/०
तेहि अवसर रघुबर रुख पाई । केवट पारहि नाव चलाई ॥ अ० १५२/१
तेहि अवसर रावनु तहँ आवा । संग नारि बहु किएँ बनावा ॥ सुं० ८/२
तेहि अवसर सीता तहँ आई । गिरिजा पूजन जननि पठाई ॥ बा० २२७/२
तेहिं अवसर सुनि सिव धनु भंगा । आयउ भृगुकुल कमल पतंगा ॥ बा० २६७/२
तेहि आश्रमहिं मदन जब गयऊ । निज मायाँ बसंत निरमयऊ ॥ बा० १२५/१
तेहिं अंगद कहुँ लात उठाई । गहि पद पटकेउ भूमि भवाँई ॥ लं० १७/५
तेहिं करि बिमल बिबेक बिलोचन । बरनउँ राम चरित भव मोचन ॥ बा० १/२
तेहि कर भेद सुनहु तुम्ह सोऊ । बिद्या अपर अबिद्या दोऊ ॥ अर० १४/४
तेहिं कलिकाल बरष बहु बसेउँ अवध बिहगेस ।
परेउ दुकाल बिपति बस तब मैं गयउँ बिदेस ॥ उ० १०४/० (ख)
तेहिं कलिजुग कोसलपुर जाई । जन्मत भयउँ सुद्र तनु पाई ॥ उ० ९६/१
तेहि कहँ पिय पुनि पुनि नर कहहू । मुधा मान ममता मद बहहू ॥ लं० ३६/५
तेहि कारन आवत हियँ हारे । कामी काक बलाक बिचारे ॥ बा० ३७/५
तेहि कारन करुनानिधि कहे कछुक दुर्बाद ।
सुनत जातुधानीं सब लागीं करै बिषाद ॥ लं० १०८/०
तेहि कारन खल अब लगि बाँच्यो । अब तव कालु सीस पर नाच्यो ॥ लं० ९३/७
तेहि कारन हिमगिरि गृह जाई । जनमीं पारबती तनु पाई ॥ बा० ६४/६
तेहि कि मोह ममता निअराई । यह सिय राम सनेह बड़ाई ॥ अ० २७६/२
तेहि कें बचन मानि बिस्वासा । तुम्ह चाहहु पति सहज उदासा ॥ बा० ७८/५
तेहि कें भए जुगल सुत बीरा । सब गुन धाम महा रनधीरा ॥ बा० १५२/४
तेहि के रचि पचि बंध बनाए । बिच बिच मुकुता दाम सुहाए ॥ बा० २८७/३
तेहि के सत सुत अरु दस भाई । खल अति अजय देव दुखदाई ॥ बा० १६९/५
तेहिं केहि हेतु काग सन जाई । सुनी कथा मुनि निकर बिहाई ॥ उ० ५४/४
तेहि कौतुक कर मरमु न काहूँ । जाना अनुज न मातु पिताहूँ ॥ उ० ७८/५
तेहिं खल जहँ तहँ पत्र पठाए । सजि सजि सेन भूप सब धाए ॥ बा० १७४/४
तेहिं खल पाछिल बयरु सँभारा । तापस नृप मिलि मंत्र बिचारा ॥ बा० १६९/७
तेहिं गलानि रघुपति पहिं आयउँ । देखि दीन प्रभु के मन भायउँ ॥ लं० ६३/६
तेहि गिरि पर बट बिटप बिसाला । नित नूतन सुंदर सब काला ॥ बा० १०५/२
तेहिं गिरि रुचिर बसइ खग सोई । तासु नास कल्पांत न होई ॥ उ० ५६/१

तेहि छन राम मध्य धनु तोरा। भरे भुवन धुनि घोर कठोरा ॥ बा० २६०/८
तेहिं तपु कीन्ह संभु पति लागी। सिव समाधि बैठे सबु त्यागी ॥ बा० ८२/३
तेहिं तब कहा करहु जल पाना। खाहु सुरस सुंदर फल नाना ॥ कि० २४/२
तेहि तें कछु गुन दोष बखाने। संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने ॥ बा० ५/२
तेहि तें कहहिं संत श्रुति टेरें। परम अकिंचन प्रिय हरि केरें ॥ बा० १६०/३
तेहिं तें कहउँ बहोरि बहोरी। भरत भगति बस भइ मति मोरी ॥ अ० २५७/७
तेहि ते मैं कछु कहा बखानी। करन पुनीत हेतु निज बानी ॥ बा० ३६०/८
तेहि दिन भयउ बिटप तर बासू। लखन सखाँ सब कीन्ह सुपासू ॥ अ० १०४/१
तेहिं देखा कपि मुरुछित भयऊ। नागपास बाँधेसि लै गयऊ ॥ सुं० १९/२
तेहिं देखे कपि सकल पराने। दसहुँ चाप सायक संधाने ॥ लं० ८१/८
तेहिं दोउ बंधु बिलोके जाई। प्रेम बिबस सीता पहिं आई ॥ बा० २२७/८
तेहि न जान नृप नृपहि सो जाना। भूप सुहृद सो कपट सयाना ॥ बा० १५९/५
तेहिं नाहीं कछु काज बिगारा। अपराधी मैं नाथ तुम्हारा ॥ बा० २७८/४
तेहिं निसि नीद परी नहिं काहू। राम दरस लालसा उछाहू ॥ अ० ३६/८
तेहिं पद गहि बहु बिधि समुझावा। भोरु भएँ रथ चढ़ि पुनि धावा ॥ लं० ९९/९
तेहि पर राम सपथ करि आई। सुकृत सनेह अवधि रघुराई ॥ अ० २७/७
तेहि पाछें समीप चहूँ पासा। अपर मंच मंडली बिलासा ॥ बा० २२३/४
तेहि पाछें दोउ बंधु पयादें। भूषन बसन बेष सुठि सादें ॥ अ० २२०/६
तेहिं पुनि कहा सुनहु दससीसा। ते नररूप चराचर ईसा ॥ अर० २४/३
तेहिं पुर बसइ सीलनिधि राजा। अगनित हय गय सेन समाजा ॥ बा० १२९/२
तेहिं पुर बसत भरत बिनु रागा। चंचरीक जिमि चंपक बागा ॥ अ० ३२३/७
तेहिं पूछा सब कहेसि बुझाई। जातुधान सुनि सेन बनाई ॥ अर० १७/३
तेहि फल कर फलु दरस तुम्हारा। सहित पयाग सुभाग हमारा ॥ अ० २०९/५
तेहि बधब हम निज पानि। फिरे मरन मन महुँ ठानि ॥ अर० १९/५ छं०
तेहि बन निकट दसानन गयऊ। तब मारीच कपटमृग भयऊ ॥ अर० २६/१
तेहिं बल मैं रघुपति गुन गाथा। कहिहउँ नाइ राम पद माथा ॥ बा० १२/९
तेहि बासर बसि प्रातहीं चले सुमिरि रघुनाथ।
राम दरस की लालसा भरत सरिस सब साथ ॥ अ० २२४/०
तेहि बिलोकि माया सकुचाई। करि न सकइ कछु निज प्रभुताई ॥ उ० ११५/७
तेहि भरि अंक राम लघु भ्राता। मिलत पुलक परिपूरित गाता ॥ अ० १९३/४
तेहिं मध्य कोसलराज सुंदर स्याम तनु सोभा लही।
जनु इंद्रधनुष अनेक की बर बारि तुंग तमालही ॥
प्रभु देखि हरष बिषाद उर सुर बदत जय जय जय करी।
रघुबीर एकहिं तीर कोपि निमेष महुँ माया हरी ॥ लं० १००/१ छं०

तेहिं मनु राज कीन्ह बहु काला । प्रभु आयसु सब बिधि प्रतिपाला ॥ बा० १४१/८
तेहिं मम पद सादर सिरु नावा । पुनि आपन संदेह सुनावा ॥ उ० ६०/१
तेहिं रथ रुचिर बसिष्ठ कहुँ हरषि चढ़ाइ नरेसु ।
आपु चढ़ेउ स्यंदन सुमिरि हर गुर गौरि गनेसु ॥ बा० ३०१/०
तेहि रावन कहँ लघु कहसि नर कर करसि बखान ।
रे कपि बर्बर खर्ब खल अब जाना तव ग्यान ॥ लं० २५/०
तेहि सन जागबलिक पुनि पावा । तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गावा ॥ बा० २९/५
तेहि सन नाथ मयत्री कीजे । दीन जानि तेहि अभय करीजे ॥ कि० ३/३
तेहिं सब आपनि कथा सुनाई । मैं अब जाब जहाँ रघुराई ॥ कि० २४/४
तेहिं सब लोक लोकपति जीते । भए देव सुख संपति रीते ॥ बा० ८१/६
तेहि समय सुनिअ असीस जहँ तहँ नगर नभ आनँदु महा ।
चिरु जिअहुँ जोरीं चारु चारयो मुदित मन सबहीं कहा ॥
जोगींद्र सिद्ध मुनीस देव बिलोकि प्रभु दुंदुभि हनी ।
चले हरषि बरषि प्रसून निज निज लोक जय जय जय भनी ॥ बा० ३२६/४ छं०
तेहि समाज गिरिजा मैं रहेऊँ । अवसर पाइ बचन एक कहेऊँ ॥ बा० १८४/४
तेहि सराहि बानी फुरि पूजी । बोली मधुर बचन तिय दूजी ॥ अ० २२१/६
तेहि सेवउँ मैं कपट समेता । द्विज दयाल अति नीति निकेता ॥ उ० १०४/५
तेही निसि सीता पहिं जाई । त्रिजटा कहि सब कथा सुनाई ॥ लं० ९८/१
तैसेहिं भरतहि सेन समेता । सानुज निदरि निपातउँ खेता ॥ अ० २२९/७
तैसेहिं सुकबि कबित बुध कहहीं । उपजहिं अनत अनत छबि लहहीं ॥ बा० १०/३
तैं निसिचर पति गर्ब बहूता । मैं रघुपति सेवक कर दूता ॥ लं० २९/७
तोमर मुद्गर परसु प्रचंडा । सूल कृपान परिघ गिरिखंडा ॥ लं० ३९/८
तोर कलंकु मोर पछिताऊ । मुएहुँ न मिटिहि न जाइहि काऊ ॥ अ० ३५/५
तोर कोस गृह मोर सब सत्य बचन सुनु भ्रात ।
भरत दसा सुमिरत मोहि निमिष कल्प सम जात ॥ लं० ११६/० (क)
तोरें धनुष चाड़ नहिं सरई । जीवत हमहि कुअँरि को बरई ॥ बा० २६५/४
तोरेहुँ धनुषु ब्याहु अवगाहा । बिनु तोरें को कुअँरि बिआहा ॥ बा० २४४/६
तोरौं छत्रक दंड जिमि तव प्रताप बल नाथ ।
जौं न करौं प्रभु पद सपथ कर न धरौं धनु भाथ ॥ बा० २५३/०
तोष मरुत तब छमाँ जुड़ावै । धृति सम जावनु देइ जमावै ॥ उ० ११६/१४
तोहि देखि सीतलि भई छाती । पुनि मो कहुँ सोइ दिनु सो राती ॥ सुं० २६/८
तोहि पटकि महि सेन हति चौपट करि तव गाउँ ।
तव जुबतिन्ह समेत सठ जनकसुतहि लै जाउँ ॥ लं० ३०/०
तोहि निज भगत राम कर जानी । ताते मैं सब कहेउँ बखानी ॥ उ० ११२/१२

तोहि सम हित न मोर संसारा। बहे जात कह भइसि अवारा ॥ अ० २२/२
तौ कपि होउ बिगत श्रम सूला। जौं मो पर रघुपति अनुकूला ॥ लं० ५८/७
तौ कृसानु सब कै गति जाना। मो कहूँ होउ श्रीखंड समाना ॥ लं० १०८/८
तौ कौतुकिअन्ह आलसु नाहीं। बर कन्या अनेक जग माहीं ॥ बा० ८०/४
तौ जानकिहि मिलिहि बरु एहू। नाहिन आलि इहाँ संदेहू ॥ बा० २२१/६
तौ तुम्ह बिनय करेहु कर जोरी। फेरिअ प्रभु मिथिलेसकिसोरी ॥ अ० ८१/२
तौ परिनाम न मोरि भलाई। पाप सिरोमनि साइँ दोहाई ॥ अ० १८५/४
तौ प्रभु हरहु मोर अग्याना। कहि रघुनाथ कथा बिधि नाना ॥ बा० १०७/२
तौ बसीठ पठवत केहि काजा। रिपु सन प्रीति करत नहिं लाजा ॥ लं० २७/७
तौ भगवानु सकल उर बासी। करिहि मोहि रघुबर कै दासी ॥ बा० २५८/५
तौ भल जतनु करब सुबिचारी। मोरें सोचु भरत कर भारी ॥ अ० २८३/३
तौ मैं जाइ बैरु हठि करऊँ। प्रभु सर प्रान तजें भव तरऊँ ॥ अर० २२/४
तौ मैं बिनय करउँ कर जोरी। छूटउ बेगि देह यह मोरी ॥ बा० ५८/७
तौ सबदरसी सुनिअ प्रभु करउ सो बेगि उपाइ।
होइ मरनु जेहिं बिनहिं श्रम दुसह बिपत्ति बिहाइ ॥ बा० ५९/०
तौ सिवधनु मृनाल की नाईं। तोरहुँ रामु गनेस गोसाईं ॥ बा० २५४/८
तौ हमार पन सुनहु मुनीसा। करिहहिं सत्य कृपानिधि ईसा ॥ बा० ८९/५
तृन ते कुलिस कुलिस तृन करई। तासु दूत पन कहु किमि टरई ॥ लं० ३४/८
तृन धरि ओट कहति बैदेही। सुमिरि अवधपति परम सनेही ॥ सुं० ८/६
तृस्ना उदरबृद्धि अति भारी। त्रिबिधि ईषना तरुन तिजारी ॥ उ० १२०/३६
तृस्नाँ केहि न कीन्ह बौराहा। केहि कर हृदय क्रोध नहिं दाहा ॥ उ० ६९/८
तृषा जाइ बरु मृगजल पाना। बरु जामहिं सस सीस बिषाना ॥ उ० १२१/१७
तृषित निरखि रबि कर भव बारी। फिरिहहिं मृग जिमि जीव दुखारी ॥ बा० ४२/८
तृषित बारि बिनु जो तनु त्यागा। मुएँ करइ का सुधा तड़ागा ॥ बा० २६०/२

थ

थके नयन रघुपति छबि देखें। पलकन्हिहूँ परिहरीं निमेषें ॥ बा० २३१/५
थके नारि नर प्रेम पिआसे। मनहुँ मृगी मृग देखि दिआ से ॥ अ० ११५/३
थर थर काँपहिं पुर नर नारी। छोट कुमार खोट बड़ भारी ॥ बा० २७७/५
थाती राखि न मागिहु काऊ। बिसरि गयउ मोहि भोर सुभाऊ ॥ अ० २७/२
थोरिहिं बात पितहि दुख भारी। होति प्रतीति न मोहि महतारी ॥ अ० ४१/६
थोरेहि महँ सब कहउँ बुझाई। सुनहु तात मति मन चित लाई ॥ अर० १४/१

द

दच्छ जग्य तव भा अपमाना। तुम्ह अति क्रोध तजे तब प्राना ॥ उ० ५५/३
दच्छ न कछु पूछी कुसलाता। सतिहि बिलोकि जरे सब गाता ॥ बा० ६२/३

दच्छ लिए मुनि बोलि सब करन लगे बड़ जाग ।
नेवते सादर सकल सुर जे पावत मख भाग ॥ बा० ६०/०
दच्छ सकल निज सुता बोलाईं । हमरें बयर तुम्हउ बिसराईं ॥ बा० ६१/२
दच्छ सकल लच्छन जुत सोई । जाकें पद सरोज रति होई ॥ उ० ४८/८
दच्छसुतन्ह उपदेसेन्हि जाई । तिन्ह फिरि भवनु न देखा आई ॥ बा० ७८/१
दधि चिउरा उपहार अपारा । भरि भरि काँवरि चले कहारा ॥ बा० ३०४/६
दधि दूर्बा रोचन फल फूला । नव तुलसी दल मंगल मूला ॥ उ० २/५
दमकेउ दामिनि जिमि जब लयऊ । पुनि नभ धनु मंडल सम भयऊ ॥ बा० २६०/६
दम दान दया नहिं जानपनी । जड़ता परबंचनताति घनी ॥ उ० १०१/९ छं०
दरसनु देब जानि निज दासी । लखीं सीयँ सब प्रेम पिआसी ॥ अ० ११७/३
दरस परस मज्जन अरु पाना । हरइ पाप कह बेद पुराना ॥ बा० ३४/१
दरस लागि प्रभु राखेउँ प्राना । चलन चहत अब कृपानिधाना ॥ अर० ३०/४
दरस लालसा सकुच न थोरी । प्रगटत दुरत बहोरि बहोरी ॥ बा० ३२४/५
दलकि उठेउ सुनि हृदउ कठोरू । जनु छुइ गयउ पाक बरतोरू ॥ अ० २६/४
दल फल फूल कंद बिधि नाना । पावन सुंदर सुधा समाना ॥ अ० २७८/८
दलन मोह तम सो सप्रकासू । बड़े भाग उर आवइ जासू ॥ बा० ०/६
दलि दुख सजइ सकल कल्याना । अस असीस राउरि जगु जाना ॥ अ० २५४/७
दसकंधर मारीच बतकही । जेहि बिधि भई सो सब तेहिं कही ॥ उ० ६५/५
दस दस बान भाल दस मारे । निसरि गए चले रुधिर पनारे ॥ लं० ९१/८
दस दस सर सब मारेसि परे भूमि कपि बीर ।
सिंहनाद करि गर्जा मेघनाद बल धीर ॥ लं० ५०/०
दस दिसि दाह होन अति लागा । भयउ परब बिनु रबि उपरागा ॥ लं० १०१/९
दस दिसि रहे बान नभ छाई । मानहुँ मघा मेघ झरि लाई ॥ लं० ७२/३
दसन गहहु तृन कंठ कुठारी । परिजन सहित संग निज नारी ॥ लं० १९/७
दसनन्हि काटि नासिका काना । कहि प्रभु सुजसु देहिं तब जाना ॥ लं० ४/८
दसमुख कतहुँ खबरि असि पाई । सेन साजि गढ़ घेरेसि जाई ॥ बा० १७८/३
दसमुख कहा मरमु तेहिं सुना । पुनि पुनि कालनेमि सिरु धुना ॥ लं० ५५/३
दसमुख गयउ जहाँ मारीचा । नाइ माथ स्वारथ रत नीचा ॥ अर० २३/६
दसमुख देखि सभा भय पाई । बिहसि बचन कह जुगुति बनाई ॥ लं० १३/३
दसमुख देखि सिरन्ह कै बाढ़ी । बिसरा मरन भई रिस गाढ़ी ॥ लं० ९२/१
दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना । मानहुँ ब्रह्मानंद समाना ॥ बा० १९२/३
दसमुख बैठ सभाँ एक बारा । देखि अमित आपन परिवारा ॥ बा० १८०/२
दसमुख मैं न बसीठीं आयउँ । अस बिचारि रघुबीर पठायउँ ॥ लं० २९/२
दसमुख सकल कथा तेहि आगें । कही सहित अभिमान अभागें ॥ अर० २४/१

दसमुख सभा दीखि कपि जाई। कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई ॥ सुं० १९/६
दसरथ कौसल्या सुनु ताता। बिबिध रूप भरतादिक भ्राता ॥ उ० ८०/७
दसरथ गुन गन बरनि न जाहीं। अधिकु कहा जेहि सम जग नाहीं ॥ अ० २०८/८
दसरथ तनय राम लघु भाई। दीन्हि मोहि बिधि बादि बड़ाई ॥ अ० १८०/२
दसरथ बिप्र बोलि सब लीन्हे। दान मान परिपूरन कीन्हे ॥ बा० ३३८/६
दसरथ राउ सहित सब रानी। सुकृत सुमंगल मूरति मानी ॥ बा० १५/६
दसरथु सहित समाज बिराजे। बिभव बिलोकि लोकपति लाजे ॥ बा० ३१८/५
दस सिर ताहि बीस भुजदंडा। रावन नाम बीर बरिबंडा ॥ बा० १७५/२
दससीस बिनासन बीस भुजा। कृत दूरि महा महि भूरि रुजा ॥ उ० १३/३ छं०
दहँ दिसि धावहिं कोटिन्ह रावन। गर्जहिं घोर कठोर भयावन ॥ लं० ९५/५

दाइज अमित न सकिअ कहि दीन्ह बिदेहँ बहोरि।
जो अवलोकत लोकपति लोकसंपदा थोरि ॥ बा० ३३३/०

दाइज दियो बहु भाँति पुनि कर जोरि हिमभूधर कह्यो।
का देउँ पूरनकाम संकर चरन पंकज गहि रह्यो ॥
सिवँ कृपासागर ससुर कर संतोषु सब भाँतिहिं कियो।
पुनि गहे पद पाथोज मयनाँ प्रेम परिपूरन हियो ॥ बा० १००/१ छं०

दादुर धुनि चहु दिसा सुहाई। बेद पढ़हिं जनु बटु समुदाई ॥ कि० १४/१
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा। बर बिग्यान कठिन कोदंडा ॥ लं० ७९/८
दानव देव ऊँच अरु नीचू। अमिअ सुजीवनु माहुरु मीचू ॥ बा० ५/६
दानि कहाउब अरु कृपनाई। होइ कि खेम कुसल रौताई ॥ अ० ३४/६

दानि सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहउँ सतिभाउ।
चाहउँ तुम्हहि समान सुत प्रभु सन कवन दुराउ ॥ बा० १४९/०

दामिनि दमक रह न घन माहीं। खल कै प्रीति जथा थिर नाहीं ॥ कि० १३/२
दामिनि बरन लखन सुठि नीके। नख सिख सुभग भावते जी के ॥ अ० ११४/७
दारुन दुसह दाहु उर ब्यापा। बरनि न जाहिं बिलाप कलापा ॥ अ० ५६/७
दासिन्ह दीख सचिव बिकलाई। कौसल्या गृहँ गई लवाई ॥ अ० १४७/३
दासीं दास तुरग रथ नागा। धेनु बसन मनि बस्तु बिभागा ॥ बा० १००/७
दासीं दास दिए बहुतेरे। सुचि सेवक जे प्रिय सिय केरे ॥ बा० ३३८/२
दासीं दास बोलाइ बहोरी। गुरहि सौंपि बोले कर जोरी ॥ अ० ७९/५
दासीं दास साजु सब लीन्हें। जोगवत रहहिं मनहि मनु दीन्हें ॥ अ० २१३/६
दाहिन काग सुखेत सुहावा। नकुल दरसु सब काहूँ पावा ॥ बा० ३०२/३
दाहिन दइउ होइ जब सबही। राम समीप बसिअ बन तबही ॥ अ० २७९/५
दिए दान आनंद समेता। चले बिप्रबर आसिष देता ॥ बा० २९४/८

दिए दान बिप्रन्ह बिपुल पूजि गनेस पुरारि।

प्रमुदित परम दरिद्र जनु पाइ पदारथ चारि ॥ बा० ३४५/०
दिगपालन्ह के लोक सुहाए । सूने सकल दसानन पाए ॥ बा० १८१/७
दिगपालन्ह मैं नीर भरावा । भूप सुजस खल मोहि सुनावा ॥ लं० २७/५
दिन उठि बिदा अवधपति मागा । राखहिं जनकु सहित अनुरागा ॥ बा० ३३१/२
दिन कें अंत फिरीं दोउ अनी । समर भई सुभटन्ह श्रम घनी ॥ लं० ७१/१
दिन दस करि रघुपति पद सेवा । पुनि तव चरन देखिहउँ देवा ॥ उ० १८/८
दिन दस गएँ बालि पहिं जाई । बूझेहु कुसल सखा उर लाई ॥ लं० २०/८
दिन दिन सयगुन भूपति भाऊ । देखि सराह महामुनिराऊ ॥ बा० ३५९/४
दिन प्रति देइ बिबिध बिधि दाना । सुनइ सास्त्र बर बेद पुराना ॥ बा० १५४/६
दिन प्रति देखउँ राति कुसपने । कहउँ न तोहि मोह बस अपने ॥ अ० १९/६
दिन प्रति सकल अजोध्या आवहिं । देखि नगरु बिरागु बिसरावहिं ॥ उ० २६/२
दिनेश वंश मंडनं । महेश चाप खंडनं ॥ अर० ३/७ छं०
दिब्य बसन भूषन पहिराए । जे नित नूतन अमल सुहाए ॥ अर० ४/३
दिवस जात नहिं लागिहि बारा । सुंदरि सिखवनु सुनहु हमारा ॥ अ० ६१/२
दिसि अरु बिदिसि पंथ नहिं सूझा । को मैं चलेउँ कहाँ नहिं बूझा ॥ अर० ९/११
दिसिकुंजरहु कमठ अहि कोला । धरहु धरनि धरि धीर न डोला ॥ बा० २५९/१
दीख जाइ उपबन बन सर बिगसित बहु कंज ।
मंदिर एक रुचिर तहँ बैठि नारि तप पुंज ॥ कि० २४/०
दीख निषादनाथ भल टोलू । कहेउ बजाउ जुझाऊ ढोलू ॥ अ० १९१/३
दीख मंथरा नगरु बनावा । मंजुल मंगल बाज बधावा ॥ अ० १२/१
दीन जानि कपि किए सनाथा । तुम्ह त्रैलोक ईस रघुनाथा ॥ लं० ११७/८
दीन दयाल बिरिदु संभारी । हरहु नाथ मम संकट भारी ॥ सुं० २६/४
दीन बचन कह बहुबिधि रानी । सुनि कुबरीं तियमाया ठानी ॥ अ० २०/३
दीन बचन गुह कह कर जोरी । बिनय सुनहु रघुकुलमनि मोरी ॥ अ० १०३/३
दीन बचन सुनि प्रभु मन भावा । भुज बिसाल गहि हृदयँ लगावा ॥ सुं० ४५/२
दीन बंधु दयाल रघुराया । देव कीन्हि देवन्ह पर दाया ॥ लं० १०९/३
दीनबंधु रघुपति कर किंकर । सुनत भरत भेंटेउ उठि सादर ॥ उ० १/९
दीनबंधु सुनि बंधु के बचन दीन छलहीन ।
देस काल अवसर सरिस बोले रामु प्रबीन ॥ अ० ३१४/०
दीन मलीन हीन मति जाती । मो पर कृपा कीन्हि बहु भाँती ॥ लं० ११५/४
दीन्ह जाचकन्हि जो जेहि भावा । उबरा सो जनवासेहिं आवा ॥ बा० ३२५/७
दीन्हि असीस मुनीस उर अति अनंदु अस जानि ।
लोचन गोचर सुकृत फल मनहुँ किए बिधि आनि ॥ अ० १०६/०
दीन्हि असीस लाइ उर लीन्हे । भूषन बसन निछावरि कीन्हे ॥ अ० ५१/२

दीन्हि असीस बिप्र बहु भाँती । चले न प्रीति रीति कहि जाती ॥ बा० ३५९/९
दीन्हि असीस सासु मृदु बानी । अति सुकुमारि देखि अकुलानी ॥ अ० ५७/१
दीन्हि असीस हरषि मन गंगा । सुंदरि तव अहिवात अभंगा ॥ लं० १२०/९
दीन्हि प्रानपति मोहि सिख सोई । जेहि बिधि मोर परम हित होई ॥ अ० ६३/६
दीन्हि मोहि सिख नीकि गोसाईं । लागि अगम अपनी कदराईं ॥ अ० ७१/१
दीप दीप के भूपति नाना । आए सुनि हम जो पनु ठाना ॥ बा० २५०/७
दीप मनोहर मनिमय नाना । जाइ न बरनि बिचित्र बिताना ॥ बा० २८८/३
दीप सिखा सम जुबति तन मन जनि होसि पतंग ।
भजहि राम तजि काम मद करहि सदा सतसंग ॥ अर० ४६/० (ख)
दुइ कि होइ एक समय भुआला । हँसब ठठाइ फुलाउब गाला ॥ अ० ३४/५
दुइ दुइ दसन अधर अरुनारे । नासा तिलक को बरनै पारे ॥ बा० १९८/८
दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह केरे । भए रूप गुन सील घनेरे ॥ उ० २४/८
दुइ बरदान भूप सन थाती । मागहु आजु जुड़ावहु छाती ॥ अ० २१/५
दुइ सुत मरे दहेउ पुर अजहुँ पूर पिय देहु ।
कृपासिंधु रघुनाथ भजि नाथ बिमल जसु लेहु ॥ लं० ३७/०
दुइ सुत सुंदर सीताँ जाए । लव कुस बेद पुरानन्ह गाए ॥ उ० २४/६
दुख सुख पाप पुन्य दिन राती । साधु असाधु सुजाति कुजाती ॥ बा० ५/५
दुघरी साधि चले ततकाला । किए बिश्रामु न मग महिपाला ॥ अ० २७१/५
दुचित कतहुँ परितोषु न लहहीं । एक एक सन मरमु न कहहीं ॥ अ० ३०१/७
दुबिध मनोगति प्रजा दुखारी । सरित सिंधु संगम जनु बारी ॥ अ० ३०१/६
दुर्बासना कुमुद समुदाई । तिन्ह कहँ सरद सदा सुखदाई ॥ अर० ४३/४
दुर्मुख सुररिपु मनुज अहारी । भट अतिकाय अकंपन भारी ॥ लं० ६१/११
दुरबासा मोहि दीन्ही सापा । प्रभु पद पेखि मिटा सो पापा ॥ अर० ३२/७
दुराराध्य पै अहहिं महेसू । आसुतोष पुनि किएँ कलेसू ॥ बा० ६९/४
दुलहिनि लै गे लच्छिनिवासा । नृपसमाज सब भयउ निरासा ॥ बा० १३४/४
दुष्ट उदय जग आरति हेतू । जथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू ॥ उ० १२०/२०
दुसरें सूत बिकल तेहि जाना । स्यंदन घालि तुरत गृह आना ॥ लं० ४२/८
दुहुँ कर कमल सुधारत बाना । कह लंकेस मंत्र लगि काना ॥ लं० १०/६
दुहु दिसि जय जयकार करि निज निज जोरी जानि ।
भिरे बीर इत रामहि उत रावनहि बखानि ॥ लं० ७९/०
दुहुँ दिसि पर्बत करहिं प्रहारा । बज्रपात जनु बारहिं बारा ॥ लं० ८६/७
दुहु समाज असि रुचि मन माहीं । बिनु सिय राम फिरब भल नाहीं ॥ अ० २७९/२
दूत अवधपुर पठवहु जाई । आनहिं नृप दसरथहि बोलाई ॥ बा० २८६/१
दूतन्ह आइ भरत कइ करनी । जनक समाज जथामति बरनी ॥ अ० २७१/१

दूतन्ह कहा राम सन जाई। सुनत राम बोले मुसुकाई ॥ अर० १८/८
दूतन्ह जाइ तुरत सब कहेऊ। सुनि खर दूषन उर अति दहेऊ ॥ अर० १८/१४
दूतन्ह मुनिबर बूझी बाता। कहहु बिदेह भूप कुसलाता ॥ अ० २६९/६
दूत बचन रचना प्रिय लागी। प्रेम प्रताप बीर रस पागी ॥ बा० २९२/६
दूतिन्ह सन सुनि पुरजन बानी। मंदोदरी अधिक अकुलानी ॥ सुं० ३५/४
दूरिहि ते देखे द्वौ भ्राता। नयनानंद दान के दाता ॥ सुं० ४४/२
दूरि ते ताहि सबन्हि सिरु नावा। पूछें निज बृत्तांत सुनावा ॥ कि० २४/१
दूरि फराक रुचिर सो घाटा। जहँ जल पिअहिं बाजि गज ठाटा ॥ उ० २८/१
दूरिहि ते प्रनाम कपि कीन्हा। रघुपति दूत जानकीं चीन्हा ॥ लं० १०६/५
दूलहु रामु रूप गुन सागर। सो बितानु तिहुँ लोक उजागर ॥ बा० २८८/५
दूषन रहित सकल गुन रासी। श्रीपति पुर बैकुंठ निवासी ॥ बा० ७९/३
देइ पान पूजे जनक दसरथु सहित समाज।
जनवासेहि गवने मुदित सकल भूप सिरताज ॥ बा० ३२९/०
देउ देवतरु सरिस सुभाऊ। सनमुख बिमुख न काहुहि काऊ ॥ अ० २६६/८
देखत जग्य निसाचर धावहिं। करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं ॥ बा० २०५/४
देखत तुम्हहि नगरु जेहिं जारा। तासु पंथ को रोकन हारा ॥ लं० ५५/४
देखत पुरी अखिल अघ भागा। बन उपबन बापिका तड़ागा ॥ उ० २८/८
देखत बन सर सैल सुहाए। बालमीकि आश्रम प्रभु आए ॥ अ० १२३/५
देखत बालक काल समाना। परम धीर धन्वी गुन नाना ॥ अर० २१/६
देखत भरतु बिकल भए भारी। परे चरन तन दसा बिसारी ॥ अ० १६३/२
देखत भीमरूप सब पापी। निसिचर निकर देव परितापी ॥ बा० १८२/३
देखत भृगुपति बेषु कराला। उठे सकल भय बिकल भुआला ॥ बा० २६८/१
देखत रूपु सकल सुर मोहे। बरनै छबि अस जग कबि को है ॥ बा० ९९/६
देखत स्यामल धवल हलोरे। पुलकि सरीर भरत कर जोरे ॥ अ० २०३/५
देखत हनूमान अति हरषेउ। पुलक गात लोचन जल बरषेउ ॥ उ० १/१
देखन कहुँ प्रभु करुना कंदा। प्रगट भए सब जलचर बृंदा ॥ लं० ३/४
देखन नगरु भूपसुत आए। समाचार पुरबासिन्ह पाए ॥ बा० २१९/१
देखन बागु कुअँर दुइ आए। बय किसोर सब भाँति सुहाए ॥ बा० २२८/१
देखन भालु कीस सब आए। रच्छक कोपि निवारन धाए ॥ लं० १०७/१०
देखन मिस मृग बिहग तरु फिरइ बहोरि बहोरि।
निरखि निरखि रघुबीर छबि बाढ़इ प्रीति न थोरि ॥ बा० २३४/०
देखन हेतु राम बैदेही। कहहु लालसा होहि न केही ॥ बा० ३४४/४
देखरावा मातहि निज अद्भुत रूप अखंड।
रोम रोम प्रति लागे कोटि कोटि ब्रह्मंड ॥ बा० २०१/०

देखहिं कौतुक नभ सुर बृंदा। कबहुँक बिसमय कबहुँ अनंदा ॥ लं० ५२/८
देखहिं रूप महा रनधीरा। मनहुँ बीर रसु धरें सरीरा ॥ बा० २४०/५
देखहिं राति भयानक सपना। जागि करहिं कटु कोटि कलपना ॥ अ० १५६/६
देखहिं सुर नभ चढ़े बिमाना। बरषहिं सुमन करहिं कल गाना ॥ बा० २४५/८
देखहिं हम सो रूप भरि लोचन। कृपा करहु प्रनतारति मोचन ॥ बा० १४५/६
देखहु कस न जाइ सब सोभा। जो अवलोकि मोर मनु छोभा ॥ अ० १३/४
देखहु खोजि भुअन दस चारी। कहँ अस पुरुष कहाँ असि नारी ॥ अ० ११९/४
देखहु तात बसंत सुहावा। प्रिया हीन मोहि भय उपजावा ॥ अ० ३६/१०
देखहु बनरन्ह केरि ढिठाई। बिहँसि निसाचर सेन बोलाई ॥ लं० ३९/२
देखहु मुनि अबिबेकु हमारा। चाहिअ सदा सिवहि भरतारा ॥ बा० ७७/७
देखहु रामहि नयन भरि तजि इरिषा मदु कोहु।
लखन रोषु पावकु प्रबल जानि सलभ जनि होहु ॥ बा० २६६/०
देखहु कपि जननी की नाईं। बिहसि कहा रघुनाथ गोसाईं ॥ लं० १०७/१२
देखा जीव नचावइ जाही। देखी भगति जो छोरइ ताही ॥ बा० २०१/४
देखा बिधि बिचारि सब लायक। दच्छहि कीन्ह प्रजापति नायक ॥ बा० ५९/६
देखा भरत बिसाल अति निसिचर मन अनुमानि।
बिनु फर सायक मारेउ चाप श्रवन लगि तानि ॥ लं० ५८/०
देखा स्वबस कर्म मन बानी। तब बोला तापस बगध्यानी ॥ बा० १६१/६
देखा सैल न औषध चीन्हा। सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा ॥ लं० ५७/७
देखा श्रमित बिभीषनु भारी। धायउ हनूमान गिरि धारी ॥ लं० ९४/१
देखि अजय रिपु डरपे कीसा। परम क्रुद्ध तब भयउ अहीसा ॥ लं० ७५/१३
देखिअत चक्रबाक खग नाहीं। कलिहि पाइ जिमि धर्म पराहीं ॥ कि० १४/९
देखिअत प्रगट गगन अंगारा। अवनि न आवत एकउ तारा ॥ सुं० ११/८
देखि अनूप एक अँवराई। सब सुपास सब भाँति सुहाई ॥ बा० २१३/५
देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती। बालि बधब इन्ह भइ परतीती ॥ कि० ६/१३
देखिअ सुनिअ गुनिअ मन माहीं। मोह मूल परमारथु नाहीं ॥ अ० ९१/८
देखिअहिं रूप नाम आधीना। रूप ग्यान नहिं नाम बिहीना ॥ बा० २०/४
देखि इंदु चकोर समुदाई। चितवहिं जिमि हरिजन हरि पाई ॥ कि० १६/७
देखि उमहि तप खीन सरीरा। ब्रह्मगिरा भै गगन गभीरा ॥ बा० ७३/८
देखि करहिं सब दंड प्रनामा। कहि जय जानकि जीवन रामा ॥ अ० २२४/७
देखि कुअँर बर बधुन्ह समेता। किमि कहि जात मोदु मन जेता ॥ बा० ३२९/३
देखि कुठार बान धनु धारी। भै लरिकहि रिस बीरु बिचारी ॥ बा० २८१/१
देखि कुठारु सरासर बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना ॥ बा० २७२/४
देखि कृपा करि सकल सराहे। दिए उचित जिन्ह जिन्ह तेइ चाहे ॥ उ० ४९/४

देखि पवनसुत धायउ बोलत बचन कठोर ।
आवत कपिहि हन्यो तेहिं मुष्टि प्रहार प्रघोर ॥ लं० ८३/०
देखि पवनसुत पति अनुकूला । हृदयँ हरष बीती सब सूला ॥ कि० ३/१
देखि पाय मुनिराय तुम्हारे । भए सुकृत सब सुफल हमारे ॥ अ० १२५/१
देखि प्रताप न कपि मन संका । जिमि अहिगन महुँ गरुड़ असंका ॥ सुं० १९/८
देखि प्रताप मूढ़ खिसिआना । करै लाग माया बिधि नाना ॥ लं० ५०/७
देखि प्रभाउ सुरेसहि सोचू । जगु भल भलेहि पोच कहुँ पोचू ॥ अ० २१६/७
देखि प्रीति सुनि बचन अमोले । एवमस्तु करुनानिधि बोले ॥ बा० १४९/१
देखि प्रीति सुनि बिनय सुहाई । मिलेउ बहोरि भरत लघु भाई ॥ अ० १९५/३
देखि प्रेमु बोले मुनि ग्यानी । जय जय जगदंबिके भवानी ॥ बा० ८०/८
देखि बनाव सहित अगवाना । मुदित बरातिन्ह हने निसाना ॥ बा० ३०४/८
देखि बिकट भट बड़ि कटकाई । जच्छ जीव लै चले पराई ॥ बा० १७८/४
देखि बिकल सुर अंगद धायो । कूदि चरन गहि भूमि गिरायो ॥ लं० ९६/८
देखि बिभीषनु आगें आयउ । परेउ चरन निज नाम सुनायउ ॥ लं० ६३/३
देखि बिभीषनु प्रभु श्रम पायो । गहि कर गदा क्रुद्ध होइ धायो ॥ लं० ९३/४
देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानकीं जाहु ।
रघुपति चरन हृदयँ धरि तात मधुर फल खाहु ॥ सुं० १७/०
देखि भरत कर सीलु सनेहू । भा निषाद तेहि समय बिदेहू ॥ अ० १९४/४
देखि भरत कर सोचु सनेहू । भा निषाद तेहि समयँ बिदेहू ॥ अ० २३३/८
देखि भरत गति अकथ अतीवा । प्रेम मगन मृग खग जड़ जीवा ॥ अ० २३७/५
देखि भरत गति सुनि मृदु बानी । सब सेवक गन गरहिं गलानी ॥ अ० २०२/८
देखि भानु जनु मन सकुचानी । तदपि बनी संध्या अनुमानी ॥ बा० १९४/४
देखि भालुपति निज दल घाता । कोपि माझ उर मारेसि लाता ॥ लं० ९७/१५
देखि मनहि महुँ कीन्ह प्रनामा । बैठेहिं बीति जात निसि जामा ॥ सुं० ७/७
देखि मनोहर चारिउ जोरीं । सारद उपमा सकल ढँढोरीं ॥ बा० ३४८/७
देखि मनोहर सैल अनूपा । रहे तहँ अनुज सहित सुरभूपा ॥ कि० १२/३
देखि महा मर्कट प्रबल रावन कीन्ह बिचार ।
अंतरहित होइ निमिष महुँ कृत माया बिस्तार ॥ लं० १००/०
देखि महीप सकल सकुचाने । बाज झपट जनु लवा लुकाने ॥ बा० २६७/३
देखि मातु आतुर उठि धाई । कहि मृदु बचन लिए उर लाई ॥ उ० ८७/७
देखि महोत्सव सुर मुनि नागा । चले भवन बरनत निज भागा ॥ बा० १९५/२
देखि रसाल बिटप बर साखा । तेहि पर चढ़ेउ मदनु मन माखा ॥ बा० ८६/१
देखि राम अति रुचिर तलावा । मज्जनु कीन्ह परम सुख पावा ॥ अर० ४०/१
देखि राम छबि अति अनुरागीं । प्रेमबिबस पुनि पुनि पद लागीं ॥ बा० ३३५/१

देखि राम छबि कोउ एक कहई । जोगु जानकिहि यह बरु अहई ॥ बा० २२१/१
देखि राम छबि नयन जुड़ाने । करि सनमानु आश्रमहिं आने ॥ अ० १२४/२
देखि राम छबि नयन जड़ाने । सादर निज आश्रम तब आने ॥ अर० २/७
देखि राम जननी अकुलानी । प्रभु हँसि दीन्ह मधुर मुसुकानी ॥ बा० २००/८
देखि राम बल पौरुष भारी । हरषि पयोनिधि भयउ सुखारी ॥ सुं० ५९/७
देखि राम बलु निज धनु दीन्हा । करि बहु बिनय गवनु बन कीन्हा ॥ बा० २९२/२
देखि राम रुख बानर रीछा । प्रेम मगन नहिं गृह कै ईछा ॥ लं० ११७/१०

देखि राम मुख पंकज मुनिबर लोचन भृंग ।
सादर पान करत अति धन्य जन्म सरभंग ॥ अर० ७/०

देखि राम मुनि आवत हरषि दंडवत कीन्ह ।
स्वागत पूँछि पीत पट प्रभु बैठन कहँ दीन्ह ॥ उ० ३२/०

देखि राम रिपुदल चलि आवा । बिहसि कठिन कोदंड चढ़ावा ॥ अर० १७/१३
देखि राम रुख लछिमन धाए । पावक प्रगटि काठ बहु लाए ॥ लं० १०८/५
देखि रामु सब सभा जुड़ानी । लोचन लाभ अवधि अनुमानी ॥ बा० ३५८/२
देखि रूप मुनि बिरति बिसारी । बड़ी बार लगि रहे निहारी ॥ बा० १३०/१
देखि रूप लोचन ललचाने । हरषे जनु निज निधि पहिचाने ॥ बा० २३१/४
देखि लागि मधु कुटिल किराती । जिमि गवँ तकइ लेउँ केहि भाँती ॥ अ० १२/४
देखि लोग सब भए सुखारे । एकटक लोचन चलत न तारे ॥ बा० २४३/३

देखि सचिवँ जय जीव कहि कीन्हेउ दंड प्रनामु ।
सुनत उठेउ ब्याकुल नृपति कहु सुमंत्र कहँ रामु ॥ अ० १४८/०

देखि सनेहु लोग अनुरागे । उतरि चले हय गय रथ त्यागे ॥ अ० १८७/३
देखि समाजु मुदित रनिवासू । सब कें उर अनंद कियो बासू ॥ बा० ३५३/५
देखि सहाय मदन हरषाना । कीन्हेसि पुनि प्रपंच बिधि नाना ॥ बा० १२५/६
देखि स्याम मृदु मंजुल गाता । कहहिं सप्रेम बचन सब माता ॥ बा० ३५५/७
देखि सिवहि सुरत्रिय मुसुकाहीं । बर लायक दुलहिनि जग नाहीं ॥ बा० ९१/६
देखि सीय सोभा सुखु पावा । हृदयँ सराहत बचनु न आवा ॥ बा० २२९/५
देखि सुभट सब लायक जाने । लै लै नाम सकल सनमाने ॥ अ० १९०/८
देखि सुभाउ कहत सबु कोई । राम मातु अस काहे न होई ॥ अ० १६४/३
देखि सुभाउ सनेहु सुसेवा । देहिं असीस मुदित बनदेवा ॥ अ० ३११/७
देखि सेतु अति सुंदर रचना । बिहसि कृपानिधि बोले बचना ॥ लं० १/२
देखि सैल प्रसन्न मन भयऊ । माया मोह सोच सब गयऊ ॥ उ० ६२/२
देखिहउँ जाइ चरन जलजाता । अरुन मृदुल सेवक सुखदाता ॥ सुं० ४१/५
देखी कपिन्ह निसाचर अनी । अनुज सहित बहु कोसलधनी ॥ लं० ८८/८
देखी जनक भीर भै भारी । सुचि सेवक सब लिए हँकारी ॥ बा० २३९/७

देखी नयन दूत रखवारी । बूड़ि न मरहु धर्म ब्रतधारी ॥ लं० २१/६

देखी बिपुल बिकल बैदेही । निमिष बिहात कलप सम तेही ॥ बा० २६०/२

देखी माया सब बिधि गाढ़ी । अति सभीत जोरें कर ठाढ़ी ॥ बा० २०१/३

देखीं राम दुखित महतारीं । जनु सुबेलि अवलीं हिम मारीं ॥ अ० २४३/६

देखी राम बिकल कटकाई । रिपु अनीक नाना बिधि आई ॥ लं० ६६/८

देखी राम सकल कपि सेना । चितइ कृपा करि राजिव नैना ॥ सुं० ३४/२

देखी ब्याधि असाध नृपु परेउ धरनि धुनि माथ ।
कहत परम आरत बचन राम राम रघुनाथ ॥ अ० ३४/०

देखी सुंदर तरुबर छाया । बैठे अनुज सहित रघुराया ॥ अर० ४०/२

देखु गरुड़ निज हृदयँ बिचारी । मैं रघुबीर भजन अधिकारी ॥ उ० १२२/७

देखु जनक हठि बालकु एहू । कीन्ह चहत जड़ जमपुर गेहू ॥ बा० २७९/१

देखु देवपति भरत प्रभाऊ । सहज सुभायँ बिबस रघुराऊ ॥ अ० २६५/३

देखु परम पावनि पुनि बेनी । हरनि सोक हरि लोक निसेनी ॥ लं० ११९/८

देखु बिभीषन दच्छिन आसा । घन घमंड दामिनी बिलासा ॥ लं० १२/१

देखेउँ आइ जो कछु कपि भाषा । तुम्हरें लाज न रोष न माखा ॥ लं० २३/८

देखेउँ करि सब करम गोसाईं । सुखी न भयउँ अबहिं की नाईं ॥ उ० ९५/९

देखउँ जन्म महोत्सव जाई । जेहि बिधि प्रथम कहा मैं गाई ॥ उ० ८१/४

देखेउँ पाय सुमंगल मूला । जानेउँ स्वामि सहज अनुकूला ॥ अ० २९९/३

देखे कपिन्ह अमित दससीसा । जहँ तहँ भजे भालु अरु कीसा ॥ लं० ९५/३

देखे जहँ तहँ रघुपति जेते । सक्तिन्ह सहित सकल सुर तेते ॥ अ० ५४/१

देखे थल तीरथ सकल भरत पाँच दिन माझ ।
कहत सुनत हरि हर सुजसु गयउ दिवसु भइ साँझ ॥ अ० ३१२/०

देखे भरत लखन प्रभु आगे । पूँछे बचन कहत अनुरागे ॥ अ० २३८/४

देखेसि आवत पबि सम बाना । तुरत भयउ खल अंतरधाना ॥ लं० ७५/११

देखे सिव बिधि बिष्नु अनेका । अमित प्रभाउ एक तें एका ॥ बा० ५३/७

देखेहु कालि मोरि मनुसाई । अबहिं बहुत का करौं बड़ाई ॥ लं० ७१/७

देखहु तुम्ह निज कुलहि बिचारी । भ्रम तजि भजहु भगत भय हारी ॥ सुं० २१/८

देत चापु आपुहिं चलि गयऊ । परसुराम मन बिसमय भयऊ ॥ बा० २८३/८

देत न बनहिं निपट लघु लागीं । एकटक रहीं रूप अनुरागीं ॥ बा० ३४८/८

देत पाँवड़े अरघु सुहाए । सादर जनकु मंडपहिं ल्याए ॥ बा० ३१९/८

देत लेत मन संक न धरई । बल अनुमान सदा हित करई ॥ कि० ६/५

देन कहेहु अब जनि बरु देहू । तजहु सत्य जग अपजसु लेहू ॥ अ० २९/५

देन कहेन्हि मोहि दुइ बरदाना । मागेउँ जो कुछ मोहि सोहाना ॥ अ० ३९/७

देब काह हम तुम्हहि गोसाँई । ईंधनु पात किरात मिताई ॥ अ० २५०/२

देइ भक्ति रमानिवास त्रास हरन सरन सुखदायकं ।
सुख धाम राम नमामि काम अनेक छबि रघुनायकं ॥
सुर बृंद रंजन द्वंद भंजन मनुज तनु अतुलितबलं ।
ब्रह्मादि संकर सेब्य राम नमामि करुना कोमलं ॥ लं० ११२/९ छं०
देव एकु गुनु धनुष हमारें । नव गुन परम पुनीत तुम्हारें ॥ बा० २८१/७
देव एक बिनती सुनि मोरी । उचित होइ तस करब बहोरी ॥ अ० २६७/७
देव गिरा सुनि सुंदर साँची । प्रीति अलौकिक दुहु दिसि माची ॥ बा० ३१९/७
देव जच्छ गंधर्ब नर किंनर नाग कुमारि ।
जीति बरीं निज बाहुबल बहु सुंदर बर नारि ॥ बा० १८२/० (ख)
देव दनुज किंनर नर श्रेनीं । सादर मज्जहिं सकल त्रिबेनीं ॥ बा० ४३/४
देव दनुज गन नाना जाती । सकल जीव तहँ आनहि भाँती ॥ उ० ८०/३
देव दनुज धरि मनुज सरीरा । बिपुल बीर आए रनधीरा ॥ बा० २५०/८
देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्ब ।
बंदउँ किंनर रजनिचर कृपा करहु अब सर्ब ॥ बा० ७/० (घ)
देव दनुज नर सब बस मोरें । कवन हेतु उपजा भय तोरें ॥ लं० ७/४
देव दनुज नर किंनर ब्याला । प्रेत पिसाच भूत बेताला ॥ बा० ८४/६
देव दनुज भूपति भट नाना । समबल अधिक होउ बलवाना ॥ बा० २८३/१
देव दया बस बड़ दुखु पायउ । सहित समाज काननहिं आयउ ॥ अ० ३१८/२
देवँ दीन्ह सबु मोहि अभारू । मोरें नीति न धरम बिचारू ॥ अ० २६८/३
देव देखि तव बालक दोऊ । अब न आँखि तर आवत कोऊ ॥ बा० २९२/५
देव देखि रघुबीर बिबाहू । बरषि प्रसून प्रसंसि उछाहू ॥ बा० २९२/८
देव देव अभिषेक हित गुर अनुसासनु पाइ ।
आनेउँ सब तीरथ सलिलु तेहि कहँ काह रजाइ ॥ अ० ३०७/०
देव धरनि धनु धामु . तुम्हारा । मैं जनु नीचु सहित परिवारा ॥ अ० ८७/६
देवन्ह दीन्हीं दुंदुभीं प्रभु पर बरषहिं फूल ।
हरषे पुर नर नारि सब मिटी मोहमय सूल ॥ बा० २८५/०
देवन्ह देखे दसरथु जाता । महामोद मन पुलकित गाता ॥ बा० ३१४/४
देवन्ह प्रभुहि पयादें देखा । उपजा उर अति छोभ बिसेषा ॥ लं० ८८/१
देवन्ह समाचार सब पाए । ब्रह्मादिक बैकुंठ सिधाए ॥ बा० ८७/४
देव पितर पूजे बिधि नीकी । पूजीं सकल बासना जी की ॥ बा० ३५०/१
देव पितर सब तुम्हहि गोसाईं । राखहुँ पलक नयन की नाईं ॥ अ० ५६/१
देवँ प्रथम कुलगुर गति देखी । निरखि बिदेह सनेह बिसेषी ॥ अ० २९३/६
देव बचन सुनि प्रभु मुसुकाना । उठि रघुबीर सुधारे बाना ॥ लं० ८५/७
देव सकल सुरपतिहि सिहाहीं । आजु पुरंदर सम कोउ नाहीं ॥ बा० ३१६/७

देवहूति पुनि तासु कुमारी। जो मुनि कर्दम कै प्रिय नारी ॥ बा० १४१/५
देबि उचित असि बिनय तुम्हारी। दसरथ घरिनि राम महतारी ॥ अ० २८४/२
देबि तजिअ संसउ अस जानी। भंजब धनुषु राम सुनु रानी ॥ बा० २५६/२
देबि दंड जुग जामिनि बीती। राम मातु सुनि उठी सप्रीती ॥ अ० २८३/८
देबि परंतु भरत रघुबर की। प्रीति प्रतीति जाइ नहिं तरकी ॥ अ० २८८/५
देबि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे ॥ बा० २३५/२
देबि मोह बस सोचिअ बादी। बिधि प्रपंचु अस अचल अनादी ॥ अ० २८१/६
देस काल अवसर अनुसारी। बोले बचन बिनीत बिचारी ॥ अ० ४४/५
देस काल दिसि बिदिसिहु माहीं। कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं ॥ बा० १८४/६
देसु काल लखि समउ समाजू। नीति प्रीति पालक रघुराजू ॥ अ० ३०३/६
देसु कोसु परिजन परिवारू। गुरु पद रजहिं लाग छरुभारू ॥ अ० ३१४/७
देहउँ उतरु कौनु मुहु लाई। आयउँ कुसल कुअँर पहुँचाई ॥ अ० १४५/७
देहउँ श्राप कि मरिहउँ जाई। जगत मोरि उपहास कराई ॥ बा० १३५/३
देह दिनहुँ दिन दूबरि होई। घटइ तेजु बलु मुखछबि सोई ॥ अ० ३२४/१
देह धरे कर यह फलु भाई। भजिअ राम सब काम बिहाई ॥ कि० २२/६
देह प्रान तें प्रिय कछु नाहीं। सोउ मुनि देउँ निमिष एक माहीं ॥ बा० २०७/४
देह बिसाल परम हरुआई। मंदिर तें मंदिर चढ़ धाई ॥ सुं० २५/१
देहिं असीस जोहारि सब गावहिं गुन गन गाथ।
तब गुर भूसुर सहित गृहँ गवनु कीन्ह नरनाथ ॥ बा० ३५१/०
देहिं असीस बूझि कुसलाता। होइ अचल तुम्हार अहिवाता ॥ उ० ६/२
देहिं असीस परम सुखु पाई। फिरे सराहत सुंदरताई ॥ अ० १०७/८
देहिं परम गति सो जियँ जानी। अस कृपाल को कहहु भवानी ॥ लं० ४४/५
देहिं लोग बहु मोल न लेहीं। फेरत राम दोहाई देहीं ॥ अ० २४९/४
देहु उतरु अनु करहु कि नाहीं। सत्यसंध तुम्ह रघुकुल माहीं ॥ अ० २९/४
देहु एक बर मागउँ स्वामी। जद्यपि जानत अंतरजामी ॥ अर० ४१/२
देहु कि लेहु अजसु करि नाहीं। मोहि न बहुत प्रपंच सोहाहीं ॥ अ० ३२/६
देहु तुरत निज नारि दुराई। जीअत भवन जाहु द्वौ भाई ॥ अर० १८/६
देहु नाथ प्रभु कहुँ बैदेही। भजहु राम बिनु हेतु सनेही ॥ सुं० ३८/६
देहु भगति रघुपति अति पावनि। त्रिबिधि ताप भव दाप नसावनि ॥ उ० ३४/१
देहु भूप मन हरषित तजहु मोह अग्यान।
धर्म सुजस प्रभु तुम्ह कौं इन्ह कहँ अति कल्यान ॥ बा० २०७/०
दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहिं ब्यापा ॥ उ० २०/१
दोउ दिसि समुझि कहत सबु लोगू। सब बिधि भरत सराहन जोगू ॥ अ० ३२५/३
दोउ बर कूल कठिन हठ धारा। भवँर कुबरी बचन प्रचारा ॥ अ० ३३/३

दोउ बिजई बिनईं गुन मंदिर । हरि प्रतिबिंब मनहुँ अति सुंदर ॥ उ० २४/७
दोउ रथ रुचिर भूप पहिं आने । नहिं सारद पहिं जाहिं बखाने ॥ बा० ३००/७
दोउ समाज निमिराजु रघुराजु नहाने प्रात ।
बैठे सब बट बिटप तर मन मलीन कृस गात ॥ अ० २७७/०
दोसु देहिं जननिहि जड़ तेई । जिन्ह गुर साधु सभा नहिं सेई ॥ अ० २६२/८
दंड एक रथ देखि न परेऊ । जनु निहार महुँ दिनकर दुरेऊ ॥ लं० ९२/४
दंडक बन पुनीत प्रभु करहू । उग्र साप मुनिबर कर हरहू ॥ अर० १२/१६
दंडक बन प्रभु कीन्ह सुहावन । जन मन अमित नाम किए पावन ॥ बा० २३/७
दंड चारि महँ भा सबु पारा । उतरि भरत तब सबहि सँभारा ॥ अ० २०१/९
दंड जतिन्ह कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज ।
जीतहु मनहि सुनिअ अस रामचंद्र कें राज ॥ उ० २२/०
दंड प्रनामु करत मुनि देखे । मूरतिमंत भाग्य निज लेखे ॥ अ० २०५/४
दंड प्रनामु सबहि नृप कीन्हे । पूजि सप्रेम बरासन दीन्हे ॥ बा० ३३०/१
दंपति उर धरि भगत कृपाला । तेहिं आश्रम निवसे कछु काला ॥ बा० १५१/७
दंपति धरम आचरन नीका । अजहुँ गाव श्रुति जिन्ह कै लीका ॥ बा० १४१/२
दंपति बचन परम प्रिय लागे । मृदुल बिनीत प्रेम रस पागे ॥ बा० १४५/७
दंभ मान मद करहिं न काऊ । भूलि न देहिं कुमारग पाऊ ॥ अर० ४५/६
दुंदुभि अस्थि ताल देखराए । बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाए ॥ कि० ६/१२
दुंदुभि धुनि घन गरजनि घोरा । जाचक चातक दादुर मोरा ॥ बा० ३४६/५
द्रवहिं बचन सुनि कुलिस पषाना । पुरजन पेमु न जाइ बखाना ॥ अ० २१९/७
द्वंद बिपति भव फंद बिभंजय । हृदि बसि राम काम मद गंजय ॥ उ० ३३/८
द्वादस अच्छर मंत्र पुनि जपहिं सहित अनुराग ।
बासुदेव पद पंकरुह दंपति मन अति लाग ॥ बा० १४३/०
द्वापर करि रघुपति पद पूजा । नर भव तरहिं उपाय न दूजा ॥ उ० १०२/३
द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ । जय अरु बिजय जान सब कोऊ ॥ बा० १२१/४
द्वार भीर सेवक सचिव कहहिं उदित रबि देखि ।
जागेउ अजहुँ न अवधपति कारनु कवनु बिसेषि ॥ अ० ३७/०
द्विज द्रोहिहि न सुनाइअ कबहूँ । सुरपति सरिस होइ नृप जबहूँ ॥ उ० १२७/५
द्विज निंदक बहु नरक भोग करि । जग जनमइ बायस सरीर धरि ॥ उ० १२०/२४
द्विजभोजन मख होम सराधा । सब कै जाइ करहु तुम्ह बाधा ॥ बा० १८०/८
द्विज श्रुति बेचक भूप प्रजासन । कोउ नहिं मान निगम अनुसासन ॥ उ० ९७/२
द्विबिद मयंद नील नल अंगद गद बिकटासि ।
दधिमुख केहरि निसठ सठ जामवंत बलरासि ॥ सुं० ५४/०
द्वौ दल प्रबल पचारि पचारी । लरत सुभट नहिं मानहिं हारी ॥ लं० ४५/६

ध

धनद कोटि सत सम धनवाना। माया कोटि प्रपंच निधाना ॥ उ० ९१/७
धन मद मत्त परम बाचाला। उग्रबुद्धि उर दंभ बिसाला ॥ उ० ९६/३
धनवंत कुलीन मलीन अपी। द्विज चिन्ह जनेउ उघार तपी ॥ उ० १००/७ छं०
धनिक बनिक बर धनद समाना। बैठे सकल वस्तु लै नाना ॥ बा० २१२/३
धनुष चढ़ाइ कहा तब जारि करउँ पुर छार।
ब्याकुल नगर देखि तब आयउ बालिकुमार ॥ कि० १९/०
धनुषजग्य सुनि रघुकुल नाथा। हरषि चले मुनिबर के साथा ॥ बा० २०९/१०
धन्य कीस जो निज प्रभु काजा। जहँ तहँ नाचइ परिहरि लाजा ॥ लं० २३/१
धन्य घरी सोइ जब सतसंगा। धन्य जन्म द्विज भगति अभंगा ॥ उ० १२६/८
धन्य जनमु जगतीतल तासू। पितहि प्रमोदु चरित सुनि जासू ॥ अ० ४५/१
धन्य देस सो जहँ सुरसरी। धन्य नारि पतिब्रत अनुसरी ॥ उ० १२६/५
धन्य धन्य गिरिराजकुमारी। तुम्ह समान नहिं कोउ उपकारी ॥ बा० १११/६
धन्य धन्य तव मति उरगारी। प्रस्न तुम्हारि मोहि अति प्यारी ॥ उ० ९४/२
धन्य धन्य तैं धन्य बिभीषन। भयहु तात निसिचर कुल भूषन ॥ लं० ६३/८
धन्य धन्य धुनि गगन पयागा। सुनि सुनि भरतु मगन अनुरागा ॥ अ० २०९/८
धन्य धन्य धुनि मंगल मूला। सुर सराहि तेहि बरिसहिं फूला ॥ अ० १९३/२
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी। सुनेउँ राम गुन भव भय हारी ॥ उ० ५१/९
धन्य बिहग मृग काननचारी। सफल जनम भए तुम्हहि निहारी ॥ अ० १३५/२
धन्य भरत जय राम गोसाईं। कहत देव हरषत बरिआईं ॥ अ० ३०८/१
धन्य भरत जीवनु जग माहीं। सीलु सनेहु सराहत जाहीं ॥ अ० १८४/४
धन्य भूमि बन पंथ पहारा। जहँ जहँ नाथ पाउ तुम्ह धारा ॥ अ० १३५/१
धन्य सती पावन मति तोरी। रघुपति चरन प्रीति नहिं थोरी ॥ उ० ५४/७
धन्य सो देसु सैलु बन गाऊँ। जहँ तहँ जाहिं धन्य सोइ ठाऊँ ॥ अ० १२१/६
धन्य सो भूपु नीति जो करई। धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई ॥ उ० १२६/६
धरइ जो बिबिध देह सुरत्राता। तुम्ह से सठन्ह सिखावनु दाता ॥ सुं० २०/७
धरनि धरहि मन धीर कह बिरंचि हरिपद सुमिरु।
जानत जन की पीर प्रभु भंजिहि दारुन बिपति ॥ बा० १८४/० सो०
धरनि धसइ धर धाव प्रचंडा। तब प्रभु काटि कीन्ह दुइ खंडा ॥ लं० ७०/६
धरनि धसइ धर धाव प्रचंडा। तब सर हति प्रभु कृत दुइ खंडा ॥ लं० १०२/३
धरनि धामु धनु पुर परिवारू। सरगु नरकु जहँ लगि ब्यवहारू ॥ अ० ९१/७
धरनि परेउँ मुख आव न बाता। त्राहि त्राहि आरत जन त्राता ॥ उ० ८२/२
धरनि परेउ द्वौ खंड बढ़ाई। चापि भालु मर्कट समुदाई ॥ लं० १०२/६
धरम तड़ाग ग्यान बिग्याना। ए पंकज बिकसे बिधि नाना ॥ उ० ३०/७

धरम धुरंधर गुननिधि ग्यानी । हृदयँ भगति मति सारँगपानी ॥ बा० १८७/८
धरम धुरंधर धीर धरि नयन उघारे रायँ ।
सिरु धुनि लीन्हि उसास असि मारेसि मोहि कुठायँ ॥ अ० ३०/०
धरम धुरंधर नीति निधाना । तेज प्रताप सील बलवाना ॥ बा० १५२/३
धरम धुरीन धरम गति जानी । कहेउ मातु सन अति मृदु बानी ॥ अ० ५२/५
धरम धुरीन धीर नय नागर । सत्य सनेह सील सुख सागर ॥ अ० ३०३/५
धरम धुरीन भानुकुल भानू । राजा रामु स्वबस भगवानू ॥ अ० २५३/२
धरमु न दूसर सत्य समाना । आगम निगम पुरान बखाना ॥ अ० ९४/५
धरम नीति उपदेसिअ . ताही । कीरति भूति सुगति प्रिय जाही ॥ अ० ७१/७
धरम राजनय ब्रह्मबिचारू । इहाँ जथामति मोर प्रचारू ॥ अ० २८७/४
धरम सनेह उभयँ मति घेरी । भइ गति साँप छुछुंदरि केरी ॥ अ० ५४/३
धरम सेतु पालक तुम्ह ताता । प्रेम बिबस सेवक सुखदाता ॥ बा० २१७/८
धरहु धीर होइहहिं सुत चारी । त्रिभुवन बिदित भगत भय हारी ॥ बा० १८८/४
धरि कच बिरथ कीन्ह महि गिरा । सीतहि राखि गीध पुनि फिरा ॥ अर० २८/१९
धरि कुधर खंड प्रचंड मर्कट भालु गढ़ पर डारहीं ।
झपटहिं चरन गहि पटकि महि भजि चलत बहुरि पचारहीं ॥
अति तरल तरुन प्रताप तरपहिं तमकि गढ़ चढ़ि चढ़ि गए ।
कपि भालु चढ़ि मंदिरन्ह जहँ तहँ राम जसु गावत भए ॥ लं० ४१/१ छं०
धरि गाल फारहिं उर बिदारहिं गल अँतावरि मेलहीं ।
प्रह्लादपति जनु बिबिध तनु धरि समर अंगन खेलहीं ॥
धरु मारु काटु पछारु घोर गिरा गगन महि भरि रही ।
जय राम जो तृन ते कुलिस कर कुलिस ते कर तृन सही ॥ लं० ८०/२ छं०
धरि धीरजु उठि बैठ भुआलू । कहु सुमंत्र कहँ राम कृपालू ॥ अ० १५४/१
धरि धीरजु एक आलि सयानी । सीता सन बोली गहि पानी ॥ बा० २३३/१
धरि धीरजु करि भरत बड़ाई । लिए सुभट साहनी बोलाई ॥ अ० २७१/३
धरि धीरजु तब कहइ निषादू । अब सुमंत्र परिहरहु बिषादू ॥ अ० १४२/१
धरि धीरजु तहँ रहे सयाने । बालक सब लै जीव पराने ॥ बा० ९४/५
धरि धीरजु पद बंदि बहोरी । बिनय सप्रेम करत कर जोरी ॥ अ० १९४/६
धरि धीरजु सुत बदनु निहारी । गदगद बचन कहति महतारी ॥ अ० ५३/५
धरि निज रूप गयउ पितु पाहीं । राम बिमुख राखा तेहि नाहीं ॥ अर० १/२
धरि नृपतनु तहँ गयउ कृपाला । कुअँरि हरषि मेलेउ जयमाला ॥ बा० १३४/३
धरि बटु रूप देखु तैं जाई । कहेसु जानि जियँ सयन बुझाई ॥ कि० ०/४
धरि बड़ि धीर रामु उर आने । फिरी अपनपउ पितुबस जाने ॥ बा० २३३/८
धरि रूप पावक पानि गहि श्री सत्य श्रुति जग बिदित जो ।

जिमि छीरसागर इंदिरा रामहि समर्पी आनि सो ॥
सो राम बाम बिभाग राजति रुचिर अति सोभा भली।
नव नील नीरज निकट मानहुँ कनक पंकज की कली ॥ लं० १०८/२ छं०
धरि लघु रूप गयउ हनुमंता। आनेउ भवन समेत तुरंता ॥ लं० ५४/८
धरी न काहूँ धीर सब के मन मनसिज हरे।
जे राखे रघुबीर ते उबरे तेहि काल महुँ ॥ बा० ८५/० सो
धरु धरु मारु सुनिअ धुनि काना। जो मारइ तेहि कोउ न जाना ॥ लं० ७२/४
धरु मारु बोलहिं घोर। रहि पूरि धुनि चहुँ ओर ॥
मुख बाइ धावहिं खान। तब लगे कीस परान ॥ लं० १००/३ छं०
धरे नाम गुर हृदयँ बिचारी। बेद तत्व नृप तव सुत चारी ॥ बा० १९७/१
धर्म तें बिरति जोग तें ग्याना। ग्यान मोच्छप्रद बेद बखाना ॥ अर० १५/१
धर्म धुरंधर प्रभु कै बानी। सुनि सप्रेम बोले मुनि ग्यानी ॥ अर० ५/४
धर्म परायन सोइ कुल त्राता। राम चरन जा कर मन राता ॥ उ० १२६/२
धर्म बिचारि समुझि कुल रहई। सो निकिष्ट त्रिय श्रुति अस कहई ॥ अर० ४/१४
धर्म वर्म नर्मद गुण ग्रामः। संतत शं तनोतु मम रामः ॥ अर० १०/१६
धर्म सकल सरसीरुह बृंदा। होइ हिम तिन्हहि दहइ सुख मंदा ॥ अर० ४३/५
धर्मसील कोटिक महँ कोई। बिषय बिमुख बिराग रत होई ॥ उ० ५३/२
धर्मसीलता तव जग जागी। पावा दरसु हमहुँ बड़भागी ॥ लं० २१/८
धर्मसील बिरक्त अरु ग्यानी। जीवनमुक्त ब्रह्मपर प्रानी ॥ उ० ५३/६
धर्म सेतु करुनायतन कस न कहहु अस राम।
लोग दुखित दिन दुइ दरस देखि लहहुँ बिश्राम ॥ अ० २४८/०
धर्महीन प्रभु पद बिमुख काल बिबस दससीस।
तेहि परिहरि गुन आए सुनहु कोसलाधीस ॥ लं० ३८/० (क)
धर्म हेतु अवतरेहु गोसाईं। मारेहु मोहि ब्याध की नाईं ॥ कि० ८/५
धवल धाम ऊपर नभ चुंबत। कलस मनहुँ रबि ससि दुति निंदत ॥ उ० २६/७
धवल धाम मनि पुरट पट सुघटित नाना भाँति।
सिय निवास सुंदर सदन सोभा किमि कहि जात ॥ बा० २१३/०
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हे। दीन्हि असीस कृतारथ कीन्हे ॥ अ० २०५/५
धाइ खाइ जनु जाइ न हेरा। मानहुँ बिपति बिषाद बसेरा ॥ अ० ३७/४
धाइ धरे गुर चरन सरोरुह। अनुज सहित अति पुलक तनोरुह ॥ उ० ४/३
धाइ पूँछिहहिं मोहि जब बिकल नगर नर नारि।
उतरु देब मैं सबहि तब हृदयँ बज्रु बैठारि ॥ अ० १४५/०
धाए जो मर्कट बिकट भालु कराल कर भूधर धरा।
अति कोप करहिं प्रहार मारत भजि चले रजनीचरा ॥

बिचलाइ दल बलवंत कीसन्ह घेरि पुनि रावनु लियो।
चहुँ दिसि चपेटन्हि मारि नखन्हि बिदारि तनु ब्याकुल कियो ॥ लं० ९९/१ छं०
धाए धाम काम सब त्यागी। मनहुँ रंक निधि लूटन लागी॥ बा० २१९/२
धाए निसिचर निकर बरूथा। जनु सपच्छ कज्जल गिरि जूथा॥ अर० १७/४
धाए बिसाल कराल मर्कट भालु काल समान ते।
मानहुँ सपच्छ उड़ाहिं भूधर बृंद नाना बान ते॥
नख दसन सैल महाद्रुमायुध सबल संक न मानहीं।
जय राम रावन मत्त गज मृगराज सुजसु बखानहीं ॥ लं० ७८/१ छं०
धायउ परम क्रुद्ध दसकंधर। सन्मुख चले हूह दै बंदर॥ लं० ८१/१
धावहिं गनहिं न अवघट घाटा। पर्बत फोरि करहिं बहु बाटा॥ लं० ४०/५
धावहु बेगि भरत पहिं जाहू। नृप सुधि कतहुँ कहहु जनि काहू॥ अ० १५६/२
धावहु मर्कट बिकट बरूथा। आनहु बिटप गिरिन्ह के जूथा॥ लं० ०/९
धावा क्रोधवंत खग कैसें। छूटइ पबि परबत कहुँ जैसें॥ अर० २८/१०
धावा बाम बाहु गिरि धारी। प्रभु सोउ भुजा काटि महि पारी॥ लं० ६९/१०
धावा बालि देखि सो भागा। मैं पुनि गयउँ बंधु सँग लागा॥ कि० ५/४
धिग कैकई अमंगल मूला। भइसि प्रान प्रियतम प्रतिकूला॥ अ० २००/४
धिग जीवन देव सरीर हरे। तव भक्ति बिना भव भूलि परे॥ लं० ११०/१८ छं०
धिग धिग मम पौरुष धिग मोही। जौं तैं जिअत रहेसि सुरद्रोही॥ लं० ८३/४
धिग मोहि भयउँ बेनु बन आगी। दुसह दाह दुख दुषन भागी॥ अ० १६३/८
धीरज धरहु बिबेकु बिचारी। छाड़िअ सोच सकल हितकारी॥ अ० १४९/८
धीरज धर्म मित्र अरु नारी। आपद काल परिखिअहिं चारी॥ अर० ४/७
धीरज धरि भरि लेहिं उसासा। पापिनि सबहि भाँति कुल नासा॥ अ० १६०/६
धीरजु धरेउ कुअवसर जानी। सहज सुहृद बोली मृदु बानी॥ अ० ७३/१
धीरजु धरिअ त पाइअ पारू। नाहिं त बूड़िहि सबु परिवारू॥ अ० १५३/७
धीरजु मन कीन्हा प्रभु कहुँ चीन्हा रघुपति कृपाँ भगति पाई।
अति निर्मल बानीं अस्तुति ठानी ग्यानगम्य जय रघुराई॥
मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुखदाई।
राजीव बिलोचन भव भय मोचन पाहि पाहि सरनहिं आई ॥ बा० २१०/२ छं०
धुआँ देखि खरदूषन केरा। जाइ सूपनखाँ रावन प्रेरा॥ अर० २०/५
धुनि अवरेब कबित गुन जाती। मीन मनोहर ते बहुभाँती॥ बा० ३६/८
धूप दीप नैबेद बेद बिधि। पूजे बर दुलहिनि मंगलनिधि॥ बा० ३४९/३
धूप धूम नभु मेचक भयऊ। सावन घन घमंडु जनु ठयऊ॥ बा० ३४६/१
धूम अनल संभव सुनु भाई। तेहि बुझाव घन पदवी पाई॥ उ० १०५/१०
धूमउ तजइ सहज करुआई। अगरु प्रसंग सुगंध बसाई॥ बा० ९/९

धूम कुसंगति कारिख होई । लिखिअ पुरान मंजु मसि सोई ॥ बा० ६/११
धूरि पूरि नभ मंडल रहा । राम बोलाइ अनुज सन कहा ॥ अर० १७/१०
धूसर धूरि भरें तनु आए । भूपति बिहसि गोद बैठाए ॥ बा० २०२/९
धेनुधूरि बेला बिमल सकल सुमंगल मूल ।
बिप्रन्ह कहेउ बिदेह सन जानि सगुन अनुकूल ॥ बा० ३१२/०
धेनु रूप धरि हृदयँ बिचारी । गई तहाँ जहँ सुर मुनि झारी ॥ बा० १८३/७
धोए जनक अवधपति चरना । सीलु सनेहु जाइ नहिं बरना ॥ बा० ३२७/४
ध्यानु प्रथम जुग मखबिधि दूजें । द्वापर परितोषत प्रभु पूजें ॥ बा० २६/३
धृत सर रुचिर चाप तूनीरहि । संत कंज बन रबि रनधीरहि ॥ उ० २९/४
ध्वज पताक तोरन कलस सजहु तुरग रथ नाग ।
सिर धरि मुनिबर बचन सबु निज निज काजहिं लाग ॥ अ० ६/०
ध्वज पताक तोरन पुर छावा । कहि न जाइ जेहि भाँति बनावा ॥ बा० १९३/१
ध्वज पताक पट चामर चारू । छावा परम बिचित्र बजारू ॥ बा० २९५/७
ध्रुव बिस्वासु अवधि राका सी । स्वामि सुरति सुरबीथि बिकासी ॥ अ० ३२४/५
ध्रुवँ सगलानि जपेउ हरि नाऊँ । पायउ अचल अनूपम ठाऊँ ॥ बा० २५/५

न

नख आयुध गिरि पादपधारी । चले गगन महि इच्छाचारी ॥ सुं० ३४/९
नख सिख देखि राम कै सोभा । सुमिरि पिता पनु मनु अति छोभा ॥ बा० २३३/४
नगर नारि नर गुर सिख मानी । बसे सुखेन राम रजधानी ॥ अ० ३२१/८
नगर नारि नर निपट दुखारी । मनहुँ सबन्हि सब संपति हारी ॥ अ० १५७/८
नगर नारि नर ब्याकुल कैसें । निघटत नीर मीनगन जैसें ॥ अ० १४६/८
नगर नारि नर रूप निधाना । सुघर सुधरम सुसील सुजाना ॥ बा० ३१३/६
नगर निकट बरात सुनि आई । पुर खरभरु सोभा अधिकाई ॥ बा० ९४/१
नगर फिरी रघुबीर दोहाई । तब प्रभु सीता बोलि पठाई ॥ सुं० १०/६
नगर ब्यापि गइ बात सुतीछी । छुअत चढ़ी जनु सब तन बीछी ॥ अ० ४५/६
नगर लोग सब ब्याकुल सोचा । सकल कहहिं दसकंधर पोचा ॥ लं० ७६/८
नगर लोग सब सजि सजि जाना । चित्रकूट कहँ कीन्ह पयाना ॥ अ० १८६/७
नगरु सफल बनु गहबर भारी । खग मृग बिपुल सकल नर नारी ॥ अ० ८३/२
न जानामि योगं जपं नैव पूजां । नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ॥ उ० १०७/१५
नट इव कपट चरित कर नाना । सदा स्वतंत्र एक भगवाना ॥ लं० ७२/१२
नट कृत बिकट कपट खगराया । नट सेवकहि न ब्यापइ माया ॥ उ० १०३/८
नट मर्कट इव सबहि नचावत । रामु खगेस बेद अस गावत ॥ कि० ६/२४
न त एहि काटि कुठार कठोरें । गुरहि उरिन होतेउँ श्रम थोरें ॥ बा० २७४/८
न त कन्या बरु रहउ कुआरी । कंत उमा मम प्रानपिआरी ॥ बा० ७०/४

नयनवंत रघुबरहि बिलोकी । पाइ जनम फल होहिं बिसोकी ॥ अ० १३८/१
नयन सजल तन थर थर काँपी । माजहि खाइ मीन जनु मापी ॥ अ० ५३/४
नयन सूझ नहिं सुनइ न काना । कहि न सकइ कछु अति अकुलाना ॥ अ० ९८/४
नयन स्रवहिं जलु निज हित लागी । जरैं न पाव देह बिरहागी ॥ सुं० ३०/८
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं । भजंतीह लोके परे वा नराणां ॥ उ० १०७/१३
नर अरु नारि राम गुन गानहिं । करहिं दिवस निसि जात न जानहिं ॥ उ० २५/८
नर अहार रजनीचर चरहीं । कपट बेष बिधि कोटिक करहीं ॥ अ० ६२/१
नरक स्वर्ग अपबर्ग निसेनी । ग्यान बिराग भगति सुभ देनी ॥ उ० १२०/१०
नर कें कर आपन बध बाँची । हसेउँ जानि बिधि गिरा असाँची ॥ लं० २८/२
नर गंधर्ब भूत बेताला । किंनर निसिचर पसु खग ब्याला ॥ उ० ८०/२
नर तनु धरेहु संत सुर काजा । कहहु करहु जस प्राकृत राजा ॥ अ० १२६/६
नर तनु पाइ बिषयँ मन देहीं । पलटि सुधा ते सठ बिष लेहीं ॥ उ० ४३/२
नर तनु भव बारिधि कहुँ बेरो । सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो ॥ उ० ४३/७
नर तन सम नहिं कवनिउ देही । जीव चराचर जाचत तेही ॥ उ० १२०/९
नर नारायन सरिस सुभ्राता । जग पालक बिसेषि जन त्राता ॥ बा० १९/५
नर पीड़ित रोग न भोग कहीं । अभिमान बिरोध अकारनहीं ॥ उ० १०१/३ छं०
नरबर धीर धरम धुर धारी । निगम नीति कहुँ ते अधिकारी ॥ अ० ७१/२
नर बानरहि संग कहु कैसें । कही कथा भइ संगति जैसें ॥ सुं० १२/११
नर सरीर धरि जे पर पीरा । करहिं ते सहहिं महा भव भीरा ॥ उ० ४०/३
नर सहस्र महँ सुनहु पुरारी । कोउ एक होइ धर्म ब्रतधारी ॥ उ० ५३/१
नव अंबुज अंबक छबि नीकी । चितवनि ललित भावँती जी की ॥ बा० १४६/३
नव गयंदु रघुबीर मनु राजु अलान समान ।
छूट जानि बन गवनु सुनि उर अनंदु अधिकान ॥ अ० ५१/०
नव ग्रह निकर अनीक बनाई । जनु घेरी अमरावति आई ॥ उ० २६/५
नव तरु किसलय मनहुँ कृसानू । काल निसा सम निसि ससि भानू ॥ सुं० १४/२
नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं । सावधान सुनु धरु मन माहीं ॥ अर० ३४/७
नवनि नीच कै अति दुखदाई । जिमि अंकुस धनु उरग बिलाई ॥ अर० २३/७
नव पल्लव कुसुमित तरु नाना । चंचरीक पटली कर गाना ॥ अर० ३९/७
नव पल्लव फल सुमन सुहाए । निज संपति सुर रूख लजाए ॥ बा० २२६/५
नव पल्लव भए बिटप अनेका । साधक मन जस मिलें बिबेका ॥ कि० १४/२
नव बिधु बिमल तात जसु तोरा । रघुबर किंकर कुमुद चकोरा ॥ अ० २०८/१
नवम सरल सब सन छलहीना । मम भरोस हियँ हरष न दीना ॥ अर० ३५/५
नव महुँ एकउ जिन्ह कें होई । नारि पुरुष सचराचर कोई ॥ अर० ३५/६
नव रस जप तप जोग बिरागा । ते सब जलचर चारु तड़ागा ॥ बा० ३६/१०

नव रसाल बन बिहरनसीला । सोह कि कोकिल बिपिन करीला ॥ अ० ६२/७
नव राजीव अरुन मृदु चरना । पदज रुचिर नख ससि दुति हरना ॥ उ० ७५/६
नहिं अचिरिजु जुग जुग चलि आई । केहि न दीन्हि रघुबीर बड़ाई ॥ अ० १९४/१
नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई । सुनहु करहु जो तुम्हहि सोहाई ॥ उ० ४२/४
नहिं असत्य सम पातक पुंजा । गिरि सम होहिं कि कोटिक गुंजा ॥ अ० २७/५
नहिं कलि करम न भगति बिबेकू । राम नाम अवलंबन एकू ॥ बा० २६/७
नहिं कोउ अस जनमा जग माहीं । प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं ॥ बा० ५९/८

नहिं चितव जब करि कोप कपि गहि दसन लातन्ह मारहीं ।
धरि केस नारि निकारि बाहेर तेऽतिदीन पुकारहीं ॥
तब उठेउ क्रुद्ध कृतांत सम गहि चरन बानर डारई ।
एहि बीच कपिन्ह बिधंस कृत मख देखि मन महुँ हारई ॥ लं० ८४/१ छं०

नहिं तव आदि मध्य अवसाना । अमित प्रभाव बेदु नहिं जाना ॥ बा० २३४/७
नहिं तोष बिचार न सीतलता । सब जाति कुजाति भए मगता ॥ उ० १०१/६ छं०

नहिं तृन चरहिं न पिअहिं जलु मोचहिं लोचन बारि ।
ब्याकुल भए निषाद सब रघुबर बाजि निहारि ॥ अ० १४२/०

नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना । नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना ॥ उ० २०/६
नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं । संत मिलन सम सुख जग नाहीं ॥ उ० १२०/१३
नहिं पद त्रान सीस नहिं छाया । पेमु नेमु ब्रतु धरमु अमाया ॥ अ० २१५/५
नहिं प्रसन्न मुख मानस खेदा । सखि संदेहु होइ एहिं भेदा ॥ अ० २२१/४
नहिं बिषाद कर अवसरु आजू । बेगि करहु बन गवन समाजू ॥ अ० ६७/४
नहिं मग श्रमु भ्रमु दुख मन मोरें । मोहि लगि सोचु करिअ जनि भोरें ॥ अ० ९८/२
नहिं मान पुरान न बेदहि जो । हरि सेवक संत सही कलि सो ॥ उ० १००/८ छं०
नहिं राग न लोभ न मान मदा । तिन्ह कें सम वैभव वा बिपदा ॥ उ० १३/१३ छं०
नहिं सतसंग जोग तप जागा । नहिं दृढ़ चरन कमल अनुरागा ॥ अर० ९/७
नहिं संतोषु त पुनि कछु कहहू । जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू ॥ बा० २७३/७
नहिं हरिभगति जग्य तप ग्याना । सपनेहुँ सुनिअ न बेद पुराना ॥ बा० १८२/८
नाइ चरन सिरु आयसु पाई । गयउ मदन तब सहित सहाई ॥ बा० १२६/२
नाइ चरन सिरु कह कर जोरी । नाथ मोहि कछु नाहिन खोरी ॥ कि० २०/१
नाइ चरन सिरु कह मृदु बानी । बिनय सुनहु प्रभु सारँगपानी ॥ लं० ११५/२
नाइ चरन सिरु चला सो तहाँ । कृपासिंधु रघुनायक जहाँ ॥ सुं० ५६/९
नाइ सीस करि बिनय बहूता । नीति बिरोध न मारिअ दूता ॥ सुं० २३/७
नाइ सीसु पद अति अनुरागा । उठि रघुबीर बिदा तब मागा ॥ अ० ७६/२

नाऊ बारी भाट नट राम निछावरि पाइ ।
मुदित असीसहिं नाइ सिर हरषु न हृदयँ समाइ ॥ बा० ३१९/०

नाक कान काटे जियँ जानी। फिरा क्रोध करि भइ मन ग्लानी ॥ लं० ६५/९
नाक कान बिनु भइ बिकरारा। जनु स्रव सैल गेरु कै धारा ॥ अर० १७/१
नाग असुर सुर नर मुनि जेते। देखे जिते हते हम केते ॥ अर० १८/३
नाघहिं खग अनेक बारीसा। सूर न होहिं ते सुनु सब कीसा ॥ लं० २७/२
नाघि सिंधु एहि पारहि आवा। सबद किलिकिला कपिन्ह सुनावा ॥ सुं० २७/२
नाघि सिंधु हाटकपुर जारा। निसिचर गन बधि बिपिन उजारा ॥ सुं० ३२/८
नाचहिं गावहिं गीत परम तरंगी भूत सब।
देखत अति बिपरीत बोलहिं बचन बिचित्र बिधि ॥ बा० ९३/० सो०
नाचहिं गावहिं बिबुध बधूटीं। बार बार कुसुमांजलि छूटीं ॥ बा० २६४/३
नाचि कूदि करि लोग रिझाई। पति हित करइ धर्म निपुनाई ॥ लं० २३/२
नाथ आजु मैं काह न पावा। मिटे दोष दुख दारिद दावा ॥ अ० १०१/५
नाथ इहाँ कछु कारन आना। सुनहु सो सावधान हरिजाना ॥ उ० ७७/३
नाथ उमा मम प्रान सम गृहकिंकरी करेहु।
छमेहु सकल अपराध अब होइ प्रसन्न बरु देहु ॥ बा० १०१/०
नाथ एक आवा कपि भारी। तेहि असोक बाटिका उजारी ॥ सुं० १७/३
नाथ एक बर मागउँ राम कृपा करि देहु।
जन्म जन्म प्रभु पद कमल कबहुँ घटै जनि नेहु ॥ उ० ४९/०
नाथ एक संसउ बड़ मोरें। करगत बेदतत्व सबु तोरें ॥ बा० ४४/७
नाथ कटक महँ सो कपि नाहीं। जो न तुम्हहि जीतै रन माही ॥ सुं० ५४/४
नाथ करइ रावन एक जागा। सिद्ध भएँ नहिं मरिहि अभागा ॥ लं० ८४/२
नाथ करहु बालक पर छोहू। सूध दूधमुख करिअ न कोहू ॥ बा० २७६/१
नाथ कहेउ अस कोसलनाथा। लै रथु जाहु राम कें साथा ॥ अ० ९३/६
नाथ काजु कीन्हेउ हनुमाना। राखे सकल कपिन्ह के प्राना ॥ सुं० २८/५
नाथ कुसल पद पंकज देखें। भयउँ भागभाजन जन लेखें ॥ अ० ८७/५
नाथ कृतारथ भयउँ मैं तव दरसन खगराज।
आयसु देहु सो करौं अब प्रभु आयहु केहि काज ॥ उ० ६३/० (क)
नाथ कृपाँ अब गयउ बिषादा। सुखी भयउँ प्रभु चरन प्रसादा ॥ बा० ११९/३
नाथ कृपा करि पूँछेहु जैसें। मानहु कहा क्रोध तजि तैसें ॥ सुं० ५३/१
नाथ कृपाँ मम गत संदेहा। राम चरन उपजेउ नव नेहा ॥ उ० १२८/८
नाथ कोसलाधीस कुमारा। आए मिलन जगत आधारा ॥ अर० ११/७
नाथ जथामति भाषेउँ राखेउँ नहिं कछु गोइ।
चरित सिंधु रघुनायक थाह कि पावइ कोइ ॥ उ० १२३/० (ख)
नाथ जबहिं कोसलपुरीं होइहि तिलक तुम्हार।
कृपासिंधु मैं आउब देखन चरित उदार ॥ लं० ११५/०

नाथ जानि अस आयसु होऊ । कौतुकु करौं बिलोकिअ सोऊ ॥ बा० २५२/७
नाथ जीव तव मायाँ मोहा । सो निस्तरइ तुम्हारेहिं छोहा ॥ कि० २/२
नाथ जुगल लोचन भरि बारी । बचन कहे कछु जनककुमारी ॥ सुं० ३०/२
नाथ तवानन ससि स्रवत कथा सुधा रघुबीर ।
श्रवण पुटन्हि मन पान करि नहिं अघात मतिधीर ॥ उ० ५२/० (ख)
नाथ दसानन कर मैं भ्राता । निसिचर बंस जनम सुरत्राता ॥ सुं० ४४/७
नाथ दसानन यह गति कीन्ही । तेहिं खल जनकसुता हरि लीन्ही ॥ अर० ३०/२
नाथ दीनदयाल रघुराई । बाघउ सनमुख गएँ न खाई ॥ लं० ६/१
नाथ देखिअहिं बिटप बिसाला । पाकरि जंबु · रसाल तमाला ॥ अ० २३६/२
नाथ देखि पद कमल तुम्हारे । अब पूरे सब काम हमारे ॥ बा० १४८/२
नाथ दैव कर कवन भरोसा । सोषिअ सिंधु करिअ मन रोषा ॥ सुं० ५०/३
नाथ धरेउ नरतनु केहि हेतू । मोहि समुझाइ कहहु बृषकेतू ॥ बा० ११९/७
नाथ न मोहि संदेह कछु सपनेहुँ सोक न मोह ।
केवल कृपा तुम्हारिहि कृपानंद संदोह ॥ उ० ३६/०
नाथ न रथ नहिं तन पद त्राना । केहि बिधि जितब बीर बलवाना ॥ लं० ७९/३
नाथ निपट मैं कीन्हि ढिठाई । स्वामि समाज सकोच बिहाई ॥ अ० २९९/७
नाथ नील नल कपि · द्वौ भाई । लरिकाईं रिषि आसिष पाई ॥ सुं० ५९/१
नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी । सहसहुँ मुख न जाइ सो बरनी ॥ सुं० २९/५
नाथ बयरु कीजे ताही सों । बुधि बल सकिअ जीति जाही सों ॥ लं० ५/५
नाथ बालि अरु मैं द्वौ भाई । प्रीति रही कछु बरनि न जाई ॥ कि० ५/१
नाथ बिषय सम मद कछु नाहीं । मुनि मन मोह करइ छन माहीं ॥ कि० १९/७
नाथ भगति अति सुखदायनी । देहु कृपा करि अनपायनी ॥ सुं० ३३/१
नाथ भयउ सुखु साथ गए को । लहेउँ लाहु जग जनमु भए को ॥ अ० ३०६/६
नाथ भरत कछु पूँछन चहहीं । प्रस्न करत मन सकुचत अहहीं ॥ उ० ३५/६
नाथ भरतु पुरजन महतारी । सोक बिकल बनबास दुखारी ॥ अ० २८९/४
नाथ भूधराकार सरीरा । कुंभकरन आवत रनधीरा ॥ लं० ६४/२
नाथ मुनीस कहहिं कछु अंतर । सावधान सोउ सुनु बिहंगबर ॥ उ० ११४/१४
नाथ मोहि निज सेवक जानी । सप्त प्रस्न मम कहहु बखानी ॥ उ० १२०/२
नाथ रामु करिअहिं जुबराजू । कहिअ कृपा करि करिअ समाजू ॥ अ० ३/२
नाथ लखनु पुरु देखन चहहीं । प्रभु सकोच डर प्रगट न कहहीं ॥ बा० २१७/५
नाथ लोग सब निपट दुखारी । कंद मूल फल अंबु अहारी ॥ अ० २४७/५
नाथ सकल साधन मैं हीना । कीन्ही कृपा जानि जन दीना ॥ अर० ७/४
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारें । सरद बिमल बिधु बदनु निहारें ॥ अ० ६४/८
नाथ सकल संपदा तुम्हारी । मैं सेवकु समेत सुत नारी ॥ बा० ३५९/६

नाथ सपथ पितु चरन दोहाई। भयउ न भुअन भरत सम भाई ॥ अ० २५८/४
नाथ समुझि मन करिअ बिचारू। राम बियोग पयोधि अपारू ॥ अ० १५३/५
नाथ साथ मुनिनाथ के मातु सकल पुर लोग।
सेवक सेनप सचिव सब आए बिकल बियोग ॥ अ० २४२/०
नाथ साथ रहि पंथु देखाई। करि दिन चारि चरन सेवकाई ॥ अ० १०३/४
नाथ साथ साँथरी सुहाई। मयन सयन सय सम सुखदाई ॥ अ० १३९/७
नाथ सुना मैं अस सिव पाहीं। महा प्रलयहुँ नास तव नाहीं ॥ उ० ९३/५
नाथ सुहृद सुठि सरल चित सील सनेह निधान।
सब पर प्रीति प्रतीति जियँ जानिअ आपु समान ॥ अ० २२७/०
नाथ सैल पर कपिपति रहई। सो सुग्रीव दास तव अहई ॥ कि० ३/२
नाथ सो नयनन्हि को अपराधा। निसरत प्रान करहिं हठि बाधा ॥ सुं० ३०/६
नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा ॥ बा० २७०/१
नाना कर्म धर्म ब्रत दाना। संजम दम जप तप मख नाना ॥ उ० १२५/५
नाना खग बालकन्हि जिआए। बोलत मधुर उड़ात सुहाए ॥ उ० २७/४
नाना जनम कर्म पुनि नाना। किए जोग जप तप मख दाना ॥ उ० ९५/७
नाना तरु फल फूल सुहाए। खग मृग बृंद देखि मन भाए ॥ सुं० २/७
नानाकार सिलीमुख धाए। दिसि अरु बिदिसि गगन महि छाए ॥ लं० ९०/२
नाना जाति न जाहिं बखाने। निदरि पवनु जनु चहत उड़ाने ॥ बा० २९७/६
नाना जिनस देखि सब कीसा। पुनि पुनि हँसत कोसलाधीसा ॥ लं० ११७/२
नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद् रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि।
स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथा भाषानिबन्धमतिमज्जुलमातनोति ॥ बा० श्लोक ७
नाना बरन भालु कपि धारी। बिकटानन बिसाल भयकारी ॥ सुं० ५३/६
नाना बापीं कूप तड़ागा। सुमन बाटिका सुंदर बागा ॥ बा० १५४/७
नाना बाहन नानाकारा। नानायुध धर घोर अपारा ॥ अर० १७/५
नाना बाहन नाना बेषा। बिहसे सिव समाज निज देखा ॥ बा० ९२/६
नाना बिधि करि कथा सुहाई। राजनीति भय प्रीति देखाई ॥ अर० २७/११
नाना बिधि तेहि कहेसि बुझाई। सभाँ बहोरि बैठ सो जाई ॥ लं० ७/५
नाना बिधि प्रहार कर सेषा। राच्छस भयउ प्रान अवसेषा ॥ लं० ५३/५
नाना बिधि बिनती करि प्रभु प्रसन्न जियँ जानि।
नारद बोले बचन तब जोरि सरोरुह पानि ॥ अर० ४१/०
नाना बिधि बिलाप कर तारा। छूटे केस न देह सँभारा ॥ कि० १०/२
नाना बिधि मुनि पूजा कीन्ही। अस्तुति करि पुनि आसिष दीन्ही ॥ लं० १२०/४

नाना भाँति निछावरि करहीं । परमानंद हरष उर भरहीं ॥ उ० ६/५
नाना भाँति पिसाच पिसाची । मारु काटु धुनि बोलहिं नाची ॥ लं० ५१/२
नाना भाँति बिनय तेहिं कीन्ही । अनपायनी भगति प्रभु दीन्ही ॥ कि० २४/८
नाना भाँति मनहि समुझावा । प्रगट न ग्यान हृदयँ भ्रम छावा ॥ उ० ५८/१
नाना भाँति राम अवतारा । रामायन सत कोटि अपारा ॥ बा० ३२/६
नाना भाँति सुमंगल साजे । हरषि नगर निसान बहु बाजे ॥ उ० ८/४
नानायुध सर चाप धर जातुधान बल बीर ।
कोट कँगूरन्हि चढ़ि गए कोटि कोटि रनधीर ॥ लं० ४०/०
नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥ सुं० श्लोक २
नाभिकुंड पियूष बस याकें । नाथ जिअत रावनु बल ताकें ॥ लं० १०१/५
नामकरन कर अवसरु जानी । भूप बोलि पठए मुनि ग्यानी ॥ बा० १९६/२
नाम कामतरु काल कराला । सुमिरत समन सकल जग जाला ॥ बा० २६/५
नाम गरीब अनेक नेवाजें । लोक बेद बर बिरिद बिराजे ॥ बा० २४/२
नाम जीहँ जपि जागहिं जोगी । बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी ॥ बा० २१/१
नाम तुम्हार प्रताप दिनेसा । सत्यकेतु तव पिता नरेसा ॥ बा० १६३/१
नाम निरूपन नाम जतन तें । सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तें ॥ बा० २२/८
नाम पाहरु दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट ।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट ॥ सुं० ३०/०
नाम प्रतापभानु अवनीसा । तासु सचिव मैं सुनहु मुनीसा ॥ बा० १५८/५
नाम प्रभाउ जान सिव नीको । कालकूट फलु दीन्ह अमी को ॥ बा० १८/८
नाम प्रसाद संभु अबिनासी । साजु अमंगल मंगल रासी ॥ बा० २५/१
नाम बिभीषन जेहि जग जाना । बिष्नुभगत बिग्यान निधाना ॥ बा० १७५/५
नाम राम लछिमन दोउ भाई । संग नारि सुकुमारि सुहाई ॥ कि० १/२
नाम रूप गति अकथ कहानी । समुझत सुखद न परति बखानी ॥ बा० २०/७
नाम रूप दुइ ईस उपाधी । अकथ अनादि सुसामुझि साधी ॥ बा० २०/२
नाम लंकिनी एक निसिचरी । सो कह चलेसि मोहि निंदरी ॥ सुं० ३/२
नामु सप्रेम जपत अनयासा । भगत होहिं मुद मंगल बासा ॥ बा० २३/२
नाम हमार एकतनु भाई । सुनि नृप बोलेउ पुनि सिरु नाई ॥ बा० १६१/७
नामु जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू । भगत सिरोमनि भे प्रहलादू ॥ बा० २५/४
नामु जान पै तुम्हहि न चीन्हा । बंस सुभायँ उतरु तेहिं दीन्हा ॥ बा० २८१/२
नामु मंथरा मंदमति चेरी कैकइ केरि ।

अजस पेटारी ताहि करि गई गिरा मति फेरि ॥ अ० १२/०
नामु राम को कलपतरु कलि कल्यान निवासु ।
जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदासु ॥ बा० २६/०
नामु लेत भवसिंधु सुखाहीं । करहु बिचारु सुजन मन माहीं ॥ बा० २४/४
नारद कर मैं काह बिगारा । भवनु मोर जिन्ह बसत उजारा ॥ बा० ९६/१
नारद कहा सत्य सोइ जाना । बिनु पंखन्ह हम चहहिं उड़ाना ॥ बा० ७७/६
नारद कहेउ सहित अभिमाना । कृपा तुम्हारि सकल भगवाना ॥ बा० १२८/३
नारद जानेउ नाम प्रतापू । जग प्रिय हरि हरि हर प्रिय आपू ॥ बा० २५/३
नारद देखा बिकल जयंता । लागि दया कोमल चित संता ॥ अर० १/९
नारद बचन न मैं परिहरऊँ । बसउ भवनु उजरउ नहिं डरऊँ ॥ बा० ७९/७
नारद बचन सगर्भ सहेतू । सुंदर सब गुन निधि बृषकेतू ॥ बा० ७१/३
नारद बचन सत्य सब करिहउँ । परम सक्ति समेत अवतरिहउँ ॥ बा० १८६/६
नारद बचन सदा सुचि साचा । सो बरु मिलिहि जाहिं मनु राचा ॥ बा० २३५/८
नारद भव बिरंचि सनकादी । जे मुनिनायक आतमबादी ॥ उ० ६९/६
नारद मुनि मोहि ग्यान जो कहा । कहतेउँ तोहि समय निरबहा ॥ लं० ६२/६
नारद समाचार सब पाए । कौतुकहीं गिरि गेह सिधाए ॥ बा० ६५/५
नारद सिख जे सुनहिं नर नारी । अवसि होहिं तजि भवनु भिखारी ॥ बा० ७८/३
नारद श्राप दीन्ह एक बारा । कलप एक तेहि लगि अवतारा ॥ बा० १२३/५
नारदहूँ यह भेदु न जाना । दसा एक समुझब बिलगाना ॥ बा० ६७/२
नारदादि सनकादि मुनीसा । दरसन लागि कोसलाधीसा ॥ उ० २६/१
नारि कुमुदिनीं अवध सर रघुपति बिरह दिनेस ।
अस्त भएँ बिगसत भईं निरखि राम राकेस ॥ उ० ९/० (क)
नारि नयन सर जाहि न लागा । घोर क्रोध तम निसि जो जागा ॥ कि० २०/४
नारि पाइ फिरि जाहिं जौं तौ न बढ़ाइअ रारि ।
नाहिं त सन्मुख समर महि तात करिअ हठि मारि ॥ लं० ९/०
नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे । सब सनमानि कृपानिधि फेरे ॥ अ० ३१८/८
नारि पुरुष सिसु जुबा सयाने । नगर लोग सब अति हरषाने ॥ बा० ९८/२
नारि बचन सुनि बिसिख समाना । सभाँ गयउ उठि होत बिहाना ॥ लं० ३७/१
नारि बिरहँ दुखु लहेउ अपारा । भयउ रोषु रन रावनु मारा ॥ बा० ४५/८
नारि बिलोकहिं हरषि हियँ निज निज रुचि अनुरूप ।
जनु सोहत सिंगार धरि मूरति परम अनूप ॥ बा०२४१/०
नारि बिबस नर सकल गोसाईं । नाचहिं नट मर्कट की नाईं ॥ उ० ९८/१
नारि बेष जे सुर बर बामा । सकल सुभायँ सुंदरी स्यामा ॥ बा० ३२१/५
नारि बृंद कर पीटहिं छाती । अब दुइ कपि आए उतपाती ॥ लं० ४३/४

नारिबृंद सुर जेवँत जानी। लगीं देन गारीं मृदु बानी॥ बा० ९८/८
नारि मुई गृह संपति नासी। मूड़ मुड़ाइ होहिं संन्यासी॥ उ० ९९/६
नारि सनेह बिकल बस होहीं। चकई साँझ समय जनु सोहीं॥ अ० १२०/१
नारि सहित मुनि पद सिरु नावा। चरन सलिल सबु भवनु सिंचावा॥ बा० ६५/७
नारि सहित सब खग मृग बृंदा। मानहुँ मोरि करत हहिं निंदा॥ अर० ३६/४
नारि सुभाउ सत्य सब कहहीं। अवगुन आठ सदा उर रहहीं॥ लं० १५/२
नाह नेहु नित बढ़त बिलोकी। हरषित रहति दिवस जिमि कोकी॥ अ० १३९/३
नाहिं त करि मुख भंजन तोरा। लै जातेउँ सीतहि बरजोरा॥ लं० २९/५
नाहिं त कोसल नाथ कें साथ कुसल गइ नाथ।
मिथिला अवध बिसेष तें जगु सब भयउ अनाथ॥ अ० २७०/०
नाहिं त मोर मरनु परिनामा। कछु न बसाइ भएँ बिधि बामा॥ अ० ८१/७
नाहिं त सपदि मानु मम बानी। सुमुखि होति न त जीवन हानी॥ सुं० ९/२
नाहिं त हम कहुँ सुनहु सखि इन्ह कर दरसनु दूरि।
यह संघटु तब होइ जब पुन्य पुराकृत भूरि॥ बा० २२२/०
नाहिन डरु बिगरिहि परलोकु। पितहु मरन कर मोहि न सोकू॥ अ० २१०/५
नाहिन तात उरिन मैं तोही। अब प्रभु चरित सुनावहु मोही॥ उ० १/१४
नाहिन रामु राज के भूखे। धरम धुरीन बिषय रस रूखे॥ अ० ४९/३
निकट काल जेहि आवत साईं। तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाईं॥ लं० ३६/८
निकट जाइ चरनन्हि सिरु नावा। चारिहु बिधि तेहि कहि समुझावा॥ कि० १८/२
निकसि बसिष्ठ द्वार भए ठाढ़े। देखे लोग बिरह दव दाढ़े॥ अ० ७९/१
निकाम श्याम सुंदरं। भवाम्बुनाथ मंदरं॥ अर० ३/३ छं०
निगम नीति कुल रीति करि अरघ पाँवड़े देत।
बधुन्ह सहित सुत परिछि सब चलीं लवाइ निकेत॥ बा० ३४९/०
निगम नेति सिव अंत न पावा। ताहि धरै जननी हठि धावा॥ बा० २०२/८
निगम नेति सिव ध्यान न पावा। मायामृग पाछें सो धावा॥ अर० २६/११
निगमागम पुरान मत एहा। कहहिं सिद्ध मुनि नहिं संदेहा॥ उ० ६८/६
निज अघ समुझि न कछु कहि जाई। तपइ अवाँ इव उर अधिकाई॥ बा० ५७/४
निज अनुभव अब कहउँ खगेसा। बिनु हरि भजन न जाहिं कलेसा॥ उ० ८८/५
निज इच्छाँ प्रभु अवतरइ सुर महि गो द्विज लागि।
सगुन उपासक संग तहँ रहहिं मोच्छ सब त्यागि॥ कि० २६/०
निज उर माल बसन मनि बालितनय पहिराइ।
बिदा कीन्ह भगवान तब बहु प्रकार समुझाइ॥ उ० १८/० (ख)
निज कर कमल परसि मम सीसा। हरषित आसिष दीन्ह मुनीसा॥ उ० ११२/१५
निज कर गृह परिचरजा करई। रामचंद्र आयसु अनुसरई॥ उ० २३/६

निज कर डासि नागरिपु छाला । बैठे सहजहिं संभु कृपाला ॥ बा० १०५/५
निज करतूति न समुझिअ सपनें । सेवक सकुच सोचु उर अपनें ॥ अ० २९८/६
निज कर मुदित रायँ अरु रानी । धरे राम के आगें आनी ॥ बा० ३२३/६
निज कर नयन काढ़ि चह दीखा । डारि सुधा बिषु चाहत चीखा ॥ अ० ४६/३
निज कबित्त केहि लाग न नीका । सरस होउ अथवा अति फीका ॥ बा० ७/११
निज कुल इष्टदेव भगवाना । पूजा हेतु कीन्ह अस्नाना ॥ बा० २००/२
निज कृत कर्म जनित फल पायउँ । अब प्रभु पाहि सरन तकि आयउँ ॥ अर० १/१३
निज गिरा पावनि करन कारन राम जसु तुलसीं कह्यो ।
रघुबीर चरित अपार बारिधि पारु कबि कौनें लह्यो ॥
उपबीत ब्याह उछाह मंगल सुनि जे सादर गावहीं ।
बैदेहि राम प्रसाद ते जन सर्बदा सुखु पावहीं ॥ बा० ३६०/१ छं०
निज गुन सहित राम गुन गाथा । सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथा ॥ अ० २२३/१
निज जड़ता लोगन्ह पर डारी । होहि हरुअ रघुपतिहि निहारी ॥ बा० २५७/७
निज गुन श्रवन सुनत सकुचाहीं । पर गुन सुनत अधिक हरषाहीं ॥ अर० ४५/१
निज जन जानि ताहि अपनावा । प्रभु सुभाव कपि कुल मन भावा ॥ सुं० ४९/२
निज जननी के एक कुमारा । तात तासु तुम्ह प्रान अधारा ॥ लं० ६०/१४
निज दल बिकल देखि कटि कसि निषंग धनु हाथ ।
लछिमन चले क्रुद्ध होइ नाइ राम पद माथ ॥ लं० ८२/०
निज दल बिकल सुना हनुमाना । पच्छिम द्वार रहा बलवाना ॥ लं० ४२/३
निज दल बिचलत देखेसि बीस भुजाँ दस चाप ।
रथ चढ़ि चलेउ दसानन फिरहु फिरहु करि दाप ॥ लं० ८१/०
निज दल बिचल सुनी तेहिं काना । फेरि सुभट लंकेस रिसाना ॥ लं० ४१/६
निज दास ज्यों रघुबंसभूषन कबहुँ मम सुमिरन कर्‌यो ।
सुनि भरत बचन बिनीत अति कपि पुलकि तन चरनन्हि पर्‌यो ॥
रघुबीर निज मुख जासु गुन गन कहत अग जग नाथ जो ।
काहे न होइ बिनीत परम पुनीत सदगुन सिंधु सो ॥ उ० १/१ छं०
निज दुख गिरि सम रज करि जाना । मित्रक दुख रज मेरु समाना ॥ कि० ६/२
निज दुख सुख सब गुरहि सुनायउ । कहि बसिष्ठ बहुबिधि समुझायउ ॥ बा० १८८/३
निज निज आसन बैठे राजा । बहु बनाव करि सहित समाजा ॥ बा० १३२/५
निज निज गृह अब तुम्ह सब जाहू । सुमिरेहु मोहि डरपहु जनि काहू ॥ लं० ११७/५
निज निज गृह गए आयसु पाई । बरनत प्रभु बतकही सुहाई ॥ उ० ४६/८
निज निज गृहँ सब करहिं बिचारा । नहिं निसिचर कुल केर उबारा ॥ सुं० ३५/२
निज निज बल सब काहूँ भाषा । पार जाइ कर संसय राखा ॥ कि० २८/६
निज निज बास बिलोकि बराती । सुर सुख सकल सुलभ सब भाँती ॥ बा० ३०६/१

निज निज मति मुनि हरि गुन गावहिं । निगम सेष सिव पार न पावहिं ॥ उ० ९०/४
निज निज रुख रामहि सबु देखा । कोउ न जान कछु मरमु बिसेषा ॥ बा० २४३/७
निज निज रुचि सब लेहिं बोलाई । सहित सनेह जाहिं दोउ भाई ॥ बा० २२४/२
निज निज साजु समाजु बनाई । गुह राउतहि जोहारे जाई ॥ अ० १९०/७
निज निज सुंदर सदन सँवारे । हाट बाट चौहट पुर द्वारे ॥ बा० ३४३/४
निज पद नयन दिएँ मन राम पद कमल लीन ।
परम दुखी भा पवनसुत देखि जानकीं दीन ॥ सुं० ८/०
निज पन तजि राखेउ पनु मोरा । छोहु सनेहु कीन्ह नहिं थोरा ॥ अ० २६५/८
निज परम प्रीतम देखि लोचन सुफल करि सुख पाइहौं ।
श्री सहित अनुज समेत कृपानिकेत पद मन लाइहौं ॥
निर्बान दायक क्रोध जा कर भगति अबसहि बसकरी ।
निज पानि सर संधानि सो मोहि बधिहि सुखसागर हरी ॥ अ० २५/१ छं०
निज परिताप द्रवइ नवनीता । पर दुख द्रवहिं संत सुपुनीता ॥ उ० १२४/८
निज पानि मनि महुँ देखिअति मूरति सुरूपनिधान की ।
चालति न भुजबल्ली बिलोकनि बिरह भय बस जानकी ॥
कौतुक बिनोद प्रमोदु प्रेमु न जाइ कहि जानहिं अलीं ।
बर कुअँरि सुंदर सकल सखीं लवाइ जनवासेहि चलीं ॥ बा० ३२६/३ छं०
निज प्रतिबिंबु बरुकु गहि जाई । जानि न जाइ नारि गति भाई ॥ अ० ४६/८
निज प्रतिबिंब राखि तहँ सीता । तैसइ सील रूप सुबिनीता ॥ अर० २३/४
निज प्रभु जन्म अवध सुनि पायउँ । निर्भर प्रेम हरषि उठि धायउँ ॥ उ० ८१/३
निज प्रभु बदन निहारि निहारी । लोचन सुफल करउँ उरगारी ॥ उ० ७४/६
निज बिकलता बिचारि बहोरी । बिहँसि गयउ गृह करि भय भोरी ॥ ल० ५/१
निज बुधि बल भरोस मोहि नाहीं । तातें बिनय करउँ सब पाहीं ॥ बा० ७/४
निज भवन गवनेउ सिंधु श्रीरघुपतिहि यह मत भायऊ ।
यह चरित कलि मलहर जथामति दास तुलसी गायऊ ॥
सुख भवन संसय समन दवन बिषाद रघुपति गुन गना ।
तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना ॥ सुं० ५९/१ छं०
निज भुज बल मैं बयरु बढ़ावा । देहउँ उतरु जो रिपु चढ़ि आवा ॥ लं० ७७/६
निज भ्रम नहिं समुझहिं अग्यानी । प्रभु पर मोह धरहिं जड़ प्रानी ॥ बा० ११६/१
निज मति सरिस नाथ मैं गाई । प्रभु प्रताप महिमा खगराई ॥ उ० ९०/१
निज माया बल देखि बिसाला । हियँ हँसि बोले दीनदयाला ॥ बा० १३१/८
निज माया बलु हृदयँ बखानी । बोले बिहसि रामु मृदु बानी ॥ बा० ५२/६
निज लोकहि बिरंचि गे देवन्ह इहइ सिखाइ ।
बानर तनु धरि धरि महि हरि पद सेवहु जाइ ॥ बा० १८७/०

निज संताप सुनाएसि रोई । काहू तें कछु काज न होई ॥ बा० १८३/८
निज संदेह मोह भ्रम हरनी । करउँ कथा भव सरिता तरनी ॥ बा० ३०/४
निज सिद्धांत सुनावउँ तोही । सुनु मन धरु सब तजि भजु मोही ॥ उ० ८५/२
निज सिर भारु भरत जियँ जाना । करत कोटि बिधि उर अनुमाना ॥ अ० २६५/६
निज सुख बिनु मन होइ कि थीरा । परस कि होइ बिहीन समीरा ॥ उ० ८९/७
निज सौभाग्य बहुत गिरि बरना । सुता बोलि मेली मुनि चरना ॥ बा० ६५/८
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं । चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं ॥ उ० १०७/२
नित जुग धर्म होहिं सब केरे । हृदयँ राम माया के प्रेरे ॥ उ० १०३/१
नित नइ प्रीति राम पद पंकज । सब कें जिन्हहि नमत सिव मुनि अज ॥ उ० १४/९
नित नव चरन उपज अनुरागा । बिसरी देह तपहिं मनु लागा ॥ बा० ७३/३
नित नव चरित देखि मुनि जाहीं । ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं ॥ उ० ४१/५
नित नव नगर अनंद उछाहू । दसरथ गवनु सोहाइ न काहू ॥ बा० ३३१/४
नित नव मंगल कौसलपुरी । हरषित रहहिं लोग सब कुरी ॥ उ० १४/८
नित नव राम प्रेम पनु पीना । बढ़त धरम दलु मनु न मलीना ॥ अ० ३२४/२
नित नव सुखु सुर देखि सिहाहीं । अवध जन्म जाचहिं बिधि पाहीं ॥ बा० ३५९/२
नित नव सोचु सती उर भारा । कब जैहउँ दुख सागर पारा ॥ बा० ५८/१
नित नूतन आदरु अधिकाई । दिन प्रति सहस भाँति पहुनाई ॥ बा० ३३१/३

नित नूतन द्विज सहस सत बरेहु सहित परिवार ।
मैं तुम्हरे संकलप लगि दिनहिं करबि जेवनार ॥ बा० १६८/०

नित नूतन मंगल गृह तासू । ब्रह्मादिक गावहिं जसु जासू ॥ बा० ६५/४
नित नूतन मंगल पुर माहीं । निमिष सरिस दिन जामिनि जाहीं ॥ बा० ३२९/१
नित नूतन सब बाढ़त जाई । जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई ॥ बा० १७९/२
नित नूतन सुख लखि अनुकूले । सकल बरातिन्ह मंदिर भूले ॥ बा० ३०३/८

नित पूजत प्रभु पाँवरी प्रीति न हृदयँ समाति ।
मागि मागि आयसु करत राज काज बहु भाँति ॥ अ० ३२५/०

नित हरि कथा होत जहँ भाई । पठवउँ तहाँ सुनहु तुम्ह जाई ॥ उ० ६०/७
नित्यक्रिया करि गुरु पहिं आए । चरन सरोज सुभग सिर नाए ॥ बा० २३८/८
नित्य निबाहि भरत दोउ भाई । राम अत्रि गुर आयसु पाई ॥ अ० ३१०/२
निदरि घनहि घुर्म्मरहिं निसाना । निज पराइ कछु सुनिअ न काना ॥ बा० ३००/२
निदरहिं सरित सिंधु सर भारी । रूप बिंदु जन होहिं सुखारी ॥ अ० १२७/७
निधरक बैठि कहइ कटु बानी । सुनत कठिनता अति अकुलानी ॥ अ० ४०/१
निपट निरंकुस निठुर निसंकू । जेहिं ससि कीन्ह सरुज सकलंकू ॥ अ० ११८/३
निपटहिं द्विज करि जानहि मोही । मैं जस बिप्र सुनावउँ तोही ॥ बा० २८२/१
निफल होहिं रावन सर कैसें । खल के सकल मनोरथ जैसें ॥ लं० ९०/६

निबुकि चढ़ेउ कपि कनक अटारीं। भईं सभीत निसाचर नारीं ॥ सुं० २४/९

निमिष निमिष करुनानिधि जाहिं कलप सम बीति।
बेगि चलिअ प्रभु आनिअ भुज बल खल दल जीति ॥ सुं० ३१/०

निरखि निषादु नगर नर नारी। भए सुखी जनु लखनु निहारी ॥ अ० १९५/६

निरखि बदनु कहि भूप रजाई। रघुकुलदीपहि चलेउ लेवाई ॥ अ० ३८/७

निरखि बिबेक बिलोचनन्हि सिथिल सनेहँ समाजु।
करि प्रनामु बोले भरतु सुमिरि सीय रघुराजु ॥ अ० २९७/०

निरखि राम छबि बिधि हरषाने। आठइ नयन जानि पछिताने ॥ बा० ३१६/४

निरखि राम रुख सचिवसुत कारनु कहेउ बुझाइ।
सुनि प्रसंगु रहि मूक जिमि दसा बरनि नहिं जाई ॥ अ० ५४/०

निरखि राम सोभा उर धरहू। निज मन फनि मूरति मनि करहू ॥ बा० ३३४/७

निरखि सहज सुंदर दोउ भाई। होहिं सुखी लोचन फल पाई ॥ बा० २१९/३

निरखि सिद्ध साधक अनुरागे। सहज सनेहु सराहन लागे ॥ अ० २३७/७

निरखि सैल सरि बिपिन बिभागा। भयउ रमापति पद अनुरागा ॥ बा० १२४/३

निरगुन तें एहि भाँति बड़ नाम प्रभाउ अपार।
कहउँ नामु बड़ राम तें निज बिचार अनुसार ॥ बा० २३/०

निरवधि गुन निरुपम पुरुषु भरतु भरत सम जानि।
कहिअ सुमेरु कि सेर सम कबिकुल मति सकुचानि ॥ अ० २८८/०

निरस्य इंद्रियादिकं। प्रयांति ते गतिं स्वकं ॥ अर० ३/१६ छं०

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं। गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं ॥ उ० १०७/३

निराचार जो श्रुति पथ त्यागी। कलिजुग सोइ ग्यानी सो बिरागी ॥ उ० ९७/७

निरुपम न उपमा आन राम समान रामु निगम कहै।
जिमि कोटि सत खद्योत सम रबि कहत अति लघुता लहै॥
एहि भाँति निज निज मति बिलास मुनीस हरिहि बखानहीं।
प्रभु भाव गाहक अति कृपाल सप्रेम सुनि सुख मानहीं ॥ उ० ९१/१ छं०

निर्गुन निलज कुबेष कपाली। अकुल अगेह दिगंबर ब्याली ॥ बा० ७८/६

निर्गुन मत नहिं मोहि सोहाई। सगुन ब्रह्म रति उर अधिकाई ॥ उ० १०९/१६

निर्गुन रूप सुलभ अति सगुन जान नहिं कोइ।
सुगम अगम नाना चरित सुनि मुनि मन भ्रम होइ ॥ उ० ७३/० (ख)

निर्गुण सगुण विषम समं रूपं। ज्ञान गिरा गोतीतमनूपं ॥ अर० १०/११

निर्नय सकल पुरान बेद कर। कहेउँ तात जानहिं कोबिद नर ॥ उ० ४०/२

निर्भर प्रेम मगन मुनि ग्यानी। कहि न जाइ सो दसा भवानी ॥ अर० ९/१०

निर्मम निराकार निरमोहा। नित्य निरंजन सुख संदोहा ॥ उ० ७१/६

निर्मल मन जन सो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भावा ॥ सुं० ४३/५

निशिचर करि वरूथ मृगराजः । त्रातु सदा नो भव खग बाजः ॥ अर० १०/६
निषंग चाप सायकं । धरं त्रिलोक नायकं ॥ अर० ३/६
निसा घोर गंभीर बन पंथ न सुनहु सुजान ।
बसहु आजु अस जानि तुम्ह जाएहु होत बिहान ॥ बा० १५९/० (क)
निसा जानि कपि चारिउ अनी । आए जहाँ कोसला धनी ॥ लं० ४७/१
निसा सिरानि भयउ भिनुसारा । लगे भालु कपि चारिहुँ द्वारा ॥ लं० ७७/३
निसिचर अधम मलाकर ताहि दीन्ह निज धाम ।
गिरिजा ते नर मंदमति जे न भजहिं श्रीराम ॥ लं० ७१/०
निसिचर अनी देखि कपि फिरे । जहँ तहँ कटकटाइ भट भिरे ॥ लं० ४५/५
निसिचर कीस लराई बरनिसि बिबिधि प्रकार ।
कुंभकरन घननाद कर बल पौरुष संघार ॥ उ० ६७/० (ख)
निसिचर जाइ होहु तुम्ह दोऊ । बैभव बिपुल तेज बल होऊ ॥ बा० १३८/५
निसिचर निकर दले रघुनंदन । नामु सकल कलि कलुष निकंदन ॥ बा० २३/८
निसिचर निकर देखि भट भारी । जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी ॥ लं० १७/६
निसिचर निकर पतंग सम रघुपति बान कृसानु ।
जननी हृदयँ धीर धरु जरे निसाचर जानु ॥ सुं० १५/०
निसिचर निकर फिरहिं बन माहीं । मम मन सीता आश्रम नाहीं ॥ अर० २९/३
निसिचर निकर मरन बिधि नाना । रघुपति रावन समर बखाना ॥ उ० ६७/१
निसिचर निकर सकल मुनि खाए । सुनि रघुबीर नयन जल छाए ॥ अर० ८/८
निसिचर निकर सुभट संघारेहु । कुंभकरन घननादहि मारेहु ॥ लं० ८९/६
निसिचर भट महि गाड़हिं भालू । ऊपर ढारि देहिं बहु बालू ॥ लं० ८०/७
निसिचर मारि तोहि लै जैहहिं । तिहुँ पुर नारदादि जसु गैहहिं ॥ सुं० १५/५
निसिचर सिखर समूह ढहावहिं । कूदि धरहिं कपि फेरि चलावहिं ॥ लं० ४०/८
निसिचर हीन करउँ महि भुज उठाइ पन कीन्ह ।
सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि जाइ जाइ सुख दीन्ह ॥ अर० ९/०
निसिचरि एक सिंधु महुँ रहई । करि माया नभु के खग गहई ॥ सुं० २/१
निसि तम घन खद्योत बिराजा । जनु दंभिन्ह कर मिला समाजा ॥ कि० १४/६
निसि दिन सुखद सदा सब काहू । ग्रसिहि न कैकइ करतबु राहू ॥ अ० २०८/४
निसि न अनल मिल सुनु सुकुमारी । अस कहि सो निज भवन सिधारी ॥ सुं० ११/६
निसि न नीद नहिं भूख दिन भरतु बिकल सुचि सोच ।
नीच कीच बिच मगन जस मीनहि सलिल सँकोच ॥ अ० २५२/०
निसि प्रबेस मुनि आयसु दीन्हा । सबहीं संध्याबंदनु कीन्हा ॥ बा० २२५/१
निसिहि ससिहि निंदति बहु भाँती । जुग सम भई सिराति न राती ॥ लं० ९९/३
नीक मंत्र सब के मन माना । अंगद सन कह कृपानिधाना ॥ लं० १६/५

नीकें निरखि नयन भरि सोभा । पितु पनु सुमिरि बहुरि मनु छोभा ॥ बा० २५७/१
नीचि टहल गृह कै सब करिहउँ । पद पंकज बिलोकि भव तरिहउँ ॥ उ० १७/७
नीति धर्म के चरन सुहाए । अस जियँ जानि नाथ पहिं आए ॥ लं० ३७/१०
नीति निपुन जिन्ह कइ जग लीका । घर तुम्हार तिन्ह कर मनु नीका ॥ अ० १३० /२
नीति निपुन सोइ परम सयाना । श्रुति सिद्धांत नीक तेहिं जाना ॥ उ० १२६/३
नीति प्रीति परमारथ स्वारथु । कोउ न राम सम जान जथारथु ॥ अ० २५३/५
नीदउँ बदन सोह सुठि लोना । मनहुँ साँझ सरसीरुह सोना ॥ बा० ३५७/१
नीद बहुत प्रिय सेज तुराई । लखहु न भूप कपट चतुराई ॥ अ० १३/६
नील कंज तनु सुंदर स्यामा । हृदयँ राखु लोचनाभिरामा ॥ लं० ५५/६
नील कंज लोचन भव मोचन । भ्राजत भाल तिलक गोरोचन ॥ उ० ७६/५
नीलकंठ कलकंठ सुक चातक चक्क चकोर ।
भाँति भाँति बोलहिं बिहग श्रवन सुखद चित चोर ॥ अ० १३७/०
नील तामरस स्याम काम अरि । हृदय कंज मकरंद मधुप हरि ॥ उ० ५० /२
नील महीधर सिखर सम देखि बिसाल बराहु ।
चपरि चलेउ हय सुटुकि नृप हाँकि न होइ निबाहु ॥ बा० १५६/०
नील सघन पल्लव फल लाला । अबिरल छाँह सुखद सब काला ॥ अ० २३६/४
नील सरोरुह नील मनि नील नीरधर स्याम ।
लाजहिं तन सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम ॥ बा० १४६/०
नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन बारिज नयन ।
करउ सो मम उर धाम सदा छीरसागर सयन ॥ बा० ० /३ सो०
नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपितवामभागम् ।
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥ अ० श्लोक ३
नीलोत्पल तन स्याम काम कोटि सोभा अधिक ।
सुनिअ तासु गुन ग्राम जासु नाम अघ खग बधिक ॥ कि० ३० /० (ख) सो०
नूतन किसलय अनल समाना । देहि अगिनि जनि करिहि निदाना ॥ सुं० ११/११
नेगु मागि मुनिनायक लीन्हा । आसिरबादु बहुत बिधि दीन्हा ॥ बा० ३५२/२
नेगी नेग जोग सब लेहीं । रुचि अनुरूप भूपमनि देहीं ॥ बा० ३५२/६
नेति नेति जेहि बेद निरूपा । निजानंद निरुपाधि अनूपा ॥ बा० १४३/५
नेम धर्म आचार तप ग्यान जग्य जप दान ।
भेषज पुनि कोटिन्ह नहिं रोग जाहिं हरिजान ॥ उ० १२१/० (ख)
नेमु प्रेमु संकर कर देखा । अबिचल हृदयँ भगति कै रेखा ॥ बा० ७५/४
नैहर जनमु भरब बरु जाई । जिअत न करबि सवति सेवकाई ॥ अ० २०/१
नोइ निबृत्ति पात्र बिस्वासा । निर्मल मन अहीर निज दासा ॥ उ० ११६/१२
नौकारूढ़ चलत जग देखा । अचल मोह बस आपुहि लेखा ॥ उ० ७२/५

नौमी तिथि मधु मास पुनीता । सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता ॥ बा० १९०/१
नौमी भौम बार मधु मासा । अवधपुरीं यह चरित प्रकासा ॥ बा० ३३/५
नंदिगावँ करि परन कुटीरा । कीन्ह निवासु धरम धुर धीरा ॥ अ० ३२३/२
नंदीमुख सराध करि जातकरम सब कीन्ह ।
हाटक धेनु बसन मनि नृप बिप्रन्ह कहँ दीन्ह ॥ बा० १९३/०
निंदहिं आपु सराहहिं मीना । धिग जीवनु रघुबीर बिहीना ॥ अ० ८५/५
निंदहिं आपु सराहि निषादहि । को कहि सकइ बिमोह बिषादहि ॥ अ० २०१/६
निंदा अस्तुति उभय सम ममता मम पद कंज ।
ते सज्जन मम प्रानप्रिय गुन मंदिर सुख पुंज ॥ उ० ३८/०
नृप अभिमान मोह बस किंबा । हरि आनिहु सीता जगदंबा ॥ लं० १९/५
नृप अस कहेउ गोसाइँ जस कहइ करौं बलि सोइ ।
करि बिनती पायन्ह परेउ दीन्ह बाल जिमि रोइ ॥ अ० ९४/०
नृप उत्तानपाद सुत तासू । ध्रुव हरि भगत भयउ सुत जासू ॥ बा० १४१/३
नृप कर सुरपुर गवनु सुनावा । सुनि रघुनाथ दुसह दुखु पावा ॥ अ० २४६/३
नृप करि बिनय महाजन फेरे । सादर सकल मागने टेरे ॥ बा० ३३९/१
नृप किरीट तरुनी तनु पाई । लहहिं सकल सोभा अधिकाई ॥ बा० १०/२
नृप जुबराजु राम कहुँ देहू । जीवन जनम लाहु किन लेहू ॥ अ० १/८
नृपतनु बेद बिदित अन्हवावा । परम बिचित्र बिमानु बनावा ॥ अ० १६९/१
नृपन्ह केरि आसा निसि नासी । बचन नखत अवली न प्रकासी ॥ बा० २५४/१
नृपन्ह बिलोकि जनकु अकुलाने । बोले बचन रोष जनु साने ॥ बा० २५०/६
नृप बहु भाँति प्रसंसेउ ताही । चरन बंदि निज भाग्य सराही ॥ बा० १५९/२
नृप पाप परायन धर्म नहीं । करि दंड बिडंब प्रजा नितहीं ॥ उ० १००/६ छं०
नृप भुजबलु बिधु सिवधनु राहू । गरुअ कठोर बिदित सब काहू ॥ बा० २४९/१
नृप बूझे बुध सचिव समाजू । कहहु बिचारि उचित का आजू ॥ अ० २७० /५
नृप नायक दे बरदानमिदं । चरनांबुज प्रेम सदा सुभदं ॥ लं० ११०/२२ छं०
नृपमंदिर सुंदर सब भाँती । खचित कनक मनि नाना जाती ॥ उ० ७५/२
नृप सब नखत करहिं उजिआरी । टारि न सकहिं चाप तम भारी ॥ बा० २३८/१
नृप सब भाँति सबहि सनमानी । कहि मृदु बचन बोलाई रानी ॥ बा० ३५४/७
नृप सब रहहिं कृपा अभिलाषें । लोकप करहिं प्रीति रुख राखें ॥ अ० १/३
नृपहि मोदु सुनि सचिव सुभाषा । बढ़त बौंड़ जनु लही सुसाखा ॥ अ० ४/७
नृप सुनि श्राप बिकल अति त्रासा । भै बहोरि बर गिरा अकासा ॥ बा० १७३/४
नृप समीप सोहहिं सुत चारी । जनु धन धरमादिक तनुधारी ॥ बा० ३०८/२
नृप हरषेउ पहिचानि गुरु भ्रम बस रहा न चेत ।
बरे तुरत सत सहस बर बिप्र कुटुंब समेत ॥ बा० १७२/०

नृप हितकारक सचिव सयाना। नाम धरमरुचि सुक्र समाना॥ बा० १५३/१
नृपहिं धीर धरि हृदयँ बिचारी। पठए अवध चतुर चर चारी॥ अ० २७०/७
नृपहि नारि पहिं सयन कराई। हयगृहँ बाँधेसि बाजि बनाई॥ बा० १७०/८
नृपहि प्रानप्रिय तुम्ह रघुबीरा। सील सनेह न छाड़िहि भीरा॥ अ० ७८/३
नृपहि बचन प्रिय नहिं प्रिय प्राना। करहु तात पितु बचन प्रवाना॥ अ० १७३/५

प

पग परि कीन्ह प्रबोधु बहोरी। काल करम बिधि सिर धरि खोरी॥ अ० २४३/८
पछिले पहर भूपु नित जागा। आजु हमहि बड़ अचरजु लागा॥ अ० ३७/१
पठइ मोह मिस खगपति तोही। रघुपति दीन्हि बड़ाई मोही॥ उ० ६९/४
पठए बालि होहिं मन मैला। भागौं तुरत तजौं यह सैला॥ कि० ० /५
पठए बोलि गुनी तिन्ह नाना। जे बितान बिधि कुसल सुजाना॥ बा० २८६/७
पठए भरतु भूप ननिअउरें। राम मातु मत जानब रउरें॥ अ० १७/२
पठवहु कामु जाइ सिव पाहीं। करै छोभु संकर मन माहीं॥ बा० ८२/५
पठवहु नाथ बेगि भट बंदर। करहिं बिध्वंस आव दसकंधर॥ लं० ८४/३
पठवा तुरत राम पहि ताही। कहेसि पुकारि प्रनत हित पाही॥ अर० १/१०
पठै दीन्हि नारद सन सोई। गनी जनक के गनकन्ह जोई॥ बा० ३११/७
पठंति ये स्तवं इदं। नरादरेण ते पदं॥ अर० ३/२३ छं०
पढ़हिं बेद मुनि मंगल बानी। गगन सुमन झरि अवसरु जानी॥ बा० ३२३/७
पढ़हिं भाट गुन गावहिं गायक। सुनत नृपहि जनु लागहिं सायक॥ अ० ३६/६
पति अनुकूल सदा रह सीता। सोभा खानि सुसील बिनीता॥ उ० २३/३
पति गति देखि ते करहिं पुकारा। छूटे कच नहिं बपुष सँभारा॥ लं० १०३/३
पति देवता सुतीय मनि सीय साँथरी देखि।
बिहरत हृदउ न हहरि हर पबि तें कठिन बिसेषि॥ अ० १९९/०
पतिदेवता सुतीय महुँ मातु प्रथम तव रेख।
महिमा अमित न सकहिं कहि सहस सारदा सेष॥ बा० २३५/०
पति देवर सँग कुसल बहोरी। आइ करौं जेहिं पूजा तोरी॥ अ० १०२/३
पति परित्याग हृदयँ दुखु भारी। कहइ न निज अपराध बिचारी॥ बा० ६०/७
पति प्रतिकूल जनम जहँ जाई। बिधवा होइ पाइ तरुनाई॥ अर० ४/१९
पति बंचक परपति रति करई। रौरव नरक कल्प सत परई॥ अर० ४/१६
पति रघुपतिहि नृपति जनि मानहु। अग जग नाथ अतुल बल जानहु॥ लं० ३५/८
पति सिर देखत मंदोदरी। मुरछित बिकल धरनि खसि परी॥ लं० १०३/१
पतिहि एकांत पाइ कह मैना। नाथ न मैं समुझे मुनि बैना॥ बा० ७०/२
पतिहि प्रेममय बिनय सुनाई। कहति सचिव सन गिरा सुहाई॥ अ० ९६/७
पति हियँ हेतु अधिक अनुमानी। बिहसि उमा बोलीं प्रिय बानी॥ बा० १०६/५

पतंति नो भवार्णवे। वितर्क वीचि संकुले ॥ अर० ३/१४ छं०
पथ गति कुसल साथ सब लीन्हें। चले चित्रकूटहिं चितु दीन्हें ॥ अ० २१५/३
पथिक अनेक मिलहिं मग जाता। कहहिं सप्रेम देखि दोउ भ्राता ॥ अ० १११/३
पद अंबुज गहि बारहिं बारा। हृदयँ समात न प्रेमु अपारा ॥ सुं० ४८/४
पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं।
मोहि राम राउरि आन दसरथ सपथ सब साची कहौं॥
बरु तीर मारहुँ लखनु पै जब लगि न पाय पखारिहौं।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारु उतारिहौं ॥ अ० ९९/१ छं०
पद नख निरखि देवसरि हरषी। सुनि प्रभु बचन मोहँ मति करषी ॥ अ० १००/५
पद पखारि जलु पान करि आपु सहित परिवार।
पितर पारु करि प्रभुहि पुनि मुदित गयउ लेइ पार ॥ अ० १०१/०
पद पाताल सीस अज धामा। अपर लोक अँग अँग बिश्रामा ॥ लं० १४/१
पद राजीव बरनि नहिं जाहीं। मुनि मन मधुप बसहिं जेन्ह माहीं ॥ बा० १४७/१
पनव निसान घोर रव बाजहिं। प्रलय समय के घन जनु गाजहिं ॥ लं० ७८/८
पनिघट परम मनोहर नाना। तहाँ न पुरुष करहिं अस्नाना ॥ उ० २८/२
पनु करि रघुपति भगति देखाई। को सिव सम रामहि प्रिय भाई ॥ बा० १० ३/८
पन्नगारि असि नीति श्रुति संमत सज्जन कहहिं।
अति नीचहु सन प्रीति करिअ जानि निज परम हित ॥ उ० ९५/० (क) सो०
पय अहार फल असन एक निसि भोजन एक लोग।
करत राम हित नेम ब्रत परिहरि भूषन भोग ॥ अ० १८८/०
पय पयोधि तजि अवध बिहाई। जहँ सिय लखनु रामु रहे आई ॥ अ० १३८/५
पर अकाजु लगि तनु परिहरहीं। जिमि हिम उपल कृषी दलि गरहीं ॥ बा० ३/७
पर उपकार बचन मन काया। संत सहज सुभाउ खगराया ॥ उ० १२०/१४
पर उपदेस कुसल बहुतेरे। जे आचरहिं ते नर न घनेरे ॥ लं० ७७/२
परउँ कूप तुअ बचन पर सकउँ पूत पति त्यागि।
कहसि मोर दुखु देखि बड़ कस न करब हित लागि ॥ अ० २१/०
पर घर घालक लाज न भीरा। बाँझ कि जान प्रसव कै पीरा ॥ बा० ९६/४
परत पाँवड़े बसन अनूपा। सुतन्ह समेत गवन कियो भूपा ॥ बा० ३२७/२
परदखिना करि करहिं प्रनामा। देहिं कैकइहि खोरि निकामा ॥ अ० २०१/३
परद्रोह रत अति दुष्ट। पायो सो फलु पापिष्ट ॥
अब सुनहु दीन दयाल। राजीव नयन बिसाल ॥ लं० ११२/५ छं०
परद्रोही की होहिं निसंका। कामी पुनि कि रहहिं अकलंका ॥ उ० १११/२
पर द्रोही पर दार रत पर धन पर अपबाद।
ते नर पाँवर पापमय देह धरें मनुजाद ॥ उ० ३९/०

परनकुटी प्रिय प्रियतम संगा । प्रिय परिवारु कुरंग बिहंगा ॥ अ० १३९/५
परबस जीव स्वबस भगवंता । जीव अनेक एक श्रीकंता ॥ उ० ७७/७
परबस सखिन्ह लखी जब सीता । भयउ गहरु सब कहहिं सभीता ॥ बा० २३३/५
परम क्रोध मीजहिं सब हाथा । आयसु पै न देहिं रघुनाथा ॥ सुं० ५४/५
परम चतुरता श्रवन सुनि बिहँसे रामु उदार ।
समाचार पुनि सब कहे गढ़ के बालिकुमार ॥ लं० ३८/० (ख)
परम तुम्हार राम कर जानिहि । सो सब बिधि तुम्ह सन भल मानिहि ॥ अ० १७४/७
परम धर्म श्रुति बिदित अहिंसा । पर निंदा सम अघ न गरीसा ॥ उ० १२० /२२
परम धर्ममय पय दुहि भाई । अवटै अनल अकाम बनाई ॥ उ० ११६/१३
परम पुनीत न जाइ तजि किएँ प्रेम बड़ पापु ।
प्रगटि न कहत महेसु कछु हृदयँ अधिक संतापु ॥ बा० ५६/०
परम पुनीत भरत आचरनू । मधुर मंजु मुद मंगल करनू ॥ अ० ३२५/५
परम प्रकास रूप दिन राती । नहिं कछु चहिअ दिआ घृत बाती ॥ उ० ११९/३
परम प्रसन्न जानु मुनि मोही । जो बर मागहु देउँ सो तोही ॥ अर० १०/२३
परम प्रीति कर जोरि जुग नलिन नयन भरि बारि ।
पुलकित तन गदगद गिराँ बिनय करत त्रिपुरारि ॥ लं० ११४/० (ख)
परम प्रीति समीप बैठारे । भगत सुखद मृदु बचन उचारे ॥ उ० १५/३
परम प्रेम तिन्ह कर प्रभु देखा । कहा बिबिधि बिधि ग्यान बिसेषा ॥ उ० १६/३
परम पेम पूरन दोउ भाई । मन बुधि चित अहमिति बिसराई ॥ अ० २४०/२
परम प्रेम मन पुलक सरीरा । चाहत उठन करत मति धीरा ॥ बा० १९२/४
परम प्रेममय मृदु मसि कीन्ही । चारु चित्त भीतीं लिखि लीन्ही ॥ बा० २३४/३
परम बिनीत सकुचि मुसुकाई । बोले गुर अनुसासन पाई ॥ बा० २१७/४
परम मनोहर चरित अपारा । करत फिरत चारिउ सुकुमारा ॥ बा० २०२/४
परम मित्र तापस नृप केरा । जानइ सो अति कपट घनेरा ॥ बा० १६९/४
परम रम्य उत्तम यह धरनी । महिमा अमित जाइ नहिं बरनी ॥ लं० १/३
परम रम्य गिरिबरु कैलासू । सदा जहाँ सिव उमा निवासू ॥ बा० १०५/८
परम सती असुराधिप नारी । तेहिं बल ताहि न जितहिं पुरारी ॥ बा० १२२/७
परम साधु परमारथ बिंदक । संभु उपासक नहिं हरि निंदक ॥ उ० १०४/४
परम सुखद चलि त्रिबिध बयारी । सागर सर सरि निर्मल बारी ॥ लं० ११८/७
परम स्वतंत्र न सिर पर कोई । भावइ मनहि करहु तुम्ह सोई ॥ बा० १३६/१
परम हानि सब कहँ बड़ लाहू । अदिनु मोर नहिं दूषन काहू ॥ अ० १८०/७
परमातमा ब्रह्म नर रूपा । होइहि रघुकुल भूषन भूपा ॥ उ० ४७/८
परमातुर बिहंगपति आयउ तब मो पास ।
जात रहेउँ कुबेर गृह रहिहु उमा कैलास ॥ उ० ६०/०

परमानंद कृपायतन मन परिपूरन काम ।
प्रेम भगति अनपायनी देहु हमहि श्रीराम ।। उ० ३४/०
परमानंद पूरि मन राजा । कहा बोलाइ बजावहु बाजा ।। बा० १९२/६
परमानंद प्रेमसुख फूले । बीथिन्ह फिरहिं मगन मन भूले ।। बा० १९५/५
परमारथ स्वारथ सुख सारे । भरत न सपनेहुँ मनहुँ निहारे ।। अ० २८८/७
परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तपपुंज सही ।
देखत रघुनायक जन सुख दायक सनमुख होइ कर जोरि रही ।।
अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहिं आवइ बचन कही ।
अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुगल नयन जलधार बही ।। बा० २१० /१ छं०
परसत मृदुल चरन अरुनारे । सकुचति महि जिमि हृदय हमारे ।। अ० १२०/३
परसा सीस सरोरुह पानी । करमुद्रिका दीन्हि जन जानी ।। कि० २२/१०
परसि चरन रज अचर सुखारी । भए परम पद के अधिकारी ।। अ० १३८/२
परसि जासु पद पंकज धूरी । तरी अहल्या कृत अघ भूरी ।। बा० २२२/५
परसि राम पद पदुम परागा । मानति भूमि भूरि निज भागा ।। अ० ११२/८
पर सुख देखि जरनि सोइ छई । कुष्ट दुष्टता मन कुटिलई ।। उ० १२० /३४
परसुरामु तब राम प्रति बोले उर अति क्रोधु ।
संभु सरासनु तोरि सठ करसि हमार प्रबोधु ।। बा० २८०/०
परसुराम पितु अग्या राखी । मारी मातु लोक सब साखी ।। अ० १७३/७
पर संपदा बिनासि नसाहीं । जिमि ससि हति हिम उपल बिलाहीं ।। उ० १२० /१९
पर संपदा सकहु नहिं देखी । तुम्हरें इरिषा कपट बिसेषी ।। बा० १३५/७
परहित बस जिन्ह के मन माहीं । तिन्ह कहुँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ।। अर० ३०/९
पर हित लागि तजइ जो देही । संतत संत प्रसंसहिं तेही ।। बा० ८३/२
पर हित सरिस धर्म नहिं भाई । पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ।। उ० ४०/१
पर हित हानि लाभ जिन्ह केरें । उजरें हरष बिषाद बसेरें ।। बा० ३/२
पर त्रिय लंपट कपट सयाने । मोह द्रोह ममता लपटाने ।। उ० ९९/१
परा बिकल महि सर के लागें । पुनि उठि बैठ देखि प्रभु आगें ।। कि० ८/१
परिकर बाँधि उठे अकुलाई । चले इष्टदेवन्ह सिर नाई ।। बा० २४९/६
परिखेसु मोहि एक पखवारा । नहिं आवौं तब जानेसु मारा ।। कि० ५/६
परिजन पुरजन प्रजा बोलाए । समाधानु करि सुबस बसाए ।। अ० ३२२/५
परिजन प्रजा सचिव सब अंबा । तुम्हही सुत सब कहँ अवलंबा ।। अ० १७५/४
परिजन मातु पितहि मिलि सीता । फिरी प्रानप्रिय प्रेम पुनीता ।। अ० ३१९/१
परिहरि बयरु देहु बैदेही । भजहु कृपानिधि परम सनेही ।। लं० ४८/१
परिहरि रामु सीय जग माहीं । कोउ न कहिहि मोर मत नाहीं ।। अ० १८१/३

पत्री सप्तरिषिन्ह सोइ दीन्ही। गहि पद बिनय हिमाचल कीन्ही ॥ बा० ९०/५
पाइ असीस बहुरि सिरु नाई। भाइन्ह सहित चले रघुराई ॥ बा० ३३६/४
पाइ असीस महीसु अनंदा। लिए बोलि पुनि जाचक बृंदा ॥ बा० ३३०/५
पाइ कपट जलु अंकुर जामा। बर दोउ दल दुख फल परिनामा ॥ अ० २२/६
पाइ रजायसु नाइ सिरु रथु अति बेग बनाइ।
गयउ जहाँ बाहेर नगर सीय सहित दोउ भाइ ॥ अ० ८२/०
पाई न केहिं गति पतित पावन राम भजि सुनु सठ मना।
गनिका अजामिल ब्याध गीध गजादि खल तारे घना।
आभीर जमन किरात खस स्वपचादि अति अघरूप जे।
कहि नाम बारक तेपि पावन होहिं राम नमामि ते ॥ उ० १२९/१ छं०
पाउ रोपि सब मिलि मोहि घाला। प्रनतपाल पन आपन पाला ॥ अ० २६६/५
पाछिल दुखु न हृदयँ अस ब्यापा। जस यह भयउ महा परितापा ॥ बा० ६२/६
पाछिल मोह समुझि पछिताना। ब्रह्म अनादि मनुज करि माना ॥ उ० ९२/३
पाछें पवन तनय सिरु नावा। जानि काज प्रभु निकट बोलावा ॥ कि० २२/९
पाट कीट तें होइ तेहि तें पाटंबर रुचिर।
कृमि पालइ सबु कोइ परम अपावन प्रान सम ॥ उ० ९५/०(ख) सो०
पाणि चाप शर कटि तूणीरं। नौमि निरंतर श्री रघुवीरं ॥ अर० १०/४
पानि जोरि आगें भइ ठाढ़ी। प्रभुहि बिलोकि प्रीती अति बाढ़ी ॥ अर० ३४/१
पानिग्रहन जब कीन्ह महेसा। हियँ हरषे तब सकल सुरेसा ॥ बा० १००/३
पानि सरोज सोह जयमाला। अवचट चितए सकल भुआला ॥ बा० २४७/६
पाप उलूक निकर सुखकारी। नारि निबिड़ रजनी अँधिआरी ॥ अर० ४३/७
पापवंत कर सहज सुभाऊ। भजनु मोर तेहि भाव न काऊ ॥ सुं० ४३/३
पाप पहार प्रगट भइ सोई। भरी क्रोध जल जाइ न जोई ॥ अ० ३३/२
पाप पुंज कुंजर मृगराजू। समन सकल संताप समाजू ॥ अ० ३२५/७
पाप करत निसि बासर जाहीं। नहिं पट कटि नहिं पेट अघाहीं ॥ अ० २५०/५
पापिउ जा कर नाम सुमिरहीं। अति अपार भवसागर तरहीं ॥ कि० २८/३
पाय पखारि सकल अन्हवाए। पूजि भली बिधि भूप जेवाँए ॥ बा० ३५१/३
पाय पखारि बैठि तरु छाहीं। करिहउँ बाउ मुदित मन माहीं ॥ अ० ६६/३
पारबतीं तपु कीन्ह अपारा। करहु तासु अब अंगीकारा ॥ बा० ८८/४
पारबती पहिं जाइ तुम्ह प्रेम परिच्छा लेहु।
गिरिहि प्रेरि पठएहु भवन दूरि करेहु संदेहु ॥ बा० ७७/०
पारबती भल अवसरु जानी। गईं संभु पहिं मातु भवानी ॥ बा० १०६/२
पारबती सम पतिप्रिय होहू। देबि न हम पर छाड़ब छोहू ॥ अ० ११७/१
पालव बैठि पेड़ु एहिं काटा। सुख महुँ सोक ठाटु धरि ठाटा ॥ अ० ४६/५

पितु आगमनु सुनत दोउ भाई । हृदयँ न अति आनंदु अमाई ॥ बा० ३०६/४
पितु आयसु पालिहिं दुहु भाई । लोक बेद भल भूप भलाई ॥ अ० ३१४/४
पितु आयस भूषन बसन तात तजे रघुबीर ।
बिसमउ हरषु न हृदयँ कछु पहिरे बलकल चीर ॥ अ० १६५/०
पितु कह सत्य सनेहँ सुबानी । सीय सकुच महुँ मनहुँ समानी ॥ अ० २८६/५
पितुगृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी । रहेहु जहाँ रुचि होइ तुम्हारी ॥ अ० ८१/५
पितु पद गहि कहि कोटि नति बिनय करब कर जोरि ।
चिंता कवनिहु बात कै तात करिअ जनि मोरि ॥ अ० ९५/०
पितु बनदेव मातु बनदेवी । खग मृग चरन सरोरुह सेवी ॥ अ० ५५/३
पितु बैभव बिलास मैं डीठा । नृप मनि मुकुट मिलित पद पीठा ॥ अ० ९७/१
पितु सँदेसु सुनि कृपानिधाना । सियहि दीन्ह सिख कोटि बिधाना ॥ अ० ९६/२
पितु समीप तब जाएहु भैआ । भइ बड़ि बार जाइ बलि मैआ ॥ अ० ५२/२
पितु समेत कहि कहि निज नामा । लगे करन सब दंड प्रनामा ॥ बा० २६८/२
पितु सुरपुर बन रघुबर केतू । मैं केवल सब अनरथ हेतू ॥ अ० १६३/७
पितु सुरपुर सिय रामु बन करन कहहु मोहि राजु ।
एहि तें जानहु मोर हित कै आपन बड़ काजु ॥ अ० १७७/०
पितु हित भरत कीन्हि जसि करनी । सो मुख लाख जाइ नहिं बरनी ॥ अ० १७० /१
पिय तुम्ह ताहि जितब संग्रामा । जाके दूत केर यह कामा ॥ लं० ३५/३
पिय हिय की सिय जाननिहारी । मनि मुदरी मन मुदित उतारी ॥ अ० १० १/३
पीत चौतनीं सिरन्हि सुहाई । कुसुम कलीं बिच बीच बनाई ॥ बा० २४२/७
पीत जनेउ महाछबि देई । कर मुद्रिका चोरि चितु लेई ॥ बा० ३२६/५
पीत जग्य उपबीत सुहाए । नख सिख मंजु महाछबि छाए ॥ बा० २४३/२
पीत झगुलिआ तनु पहिराई । जानु पानि बिचरनि मोहि भाई ॥ बा० १९८/११
पीत झीनि झगुली तन सोही । किलकनि चितवनि भावति मोही ॥ उ० ७६/७
पीत पुनीत मनोहर धोती । हरति बाल रबि दामिनि जोती ॥ बा० ३२६/३
पीत बसन परिकर कटि भाथा । चारु चाप सर सोहत हाथा ॥ बा० २१८/३
पीपर तरु तर ध्यान सो धरई । जाप जग्य पाकरि तर करई ॥ उ० ५६/५
पुछिहहिं दीन दुखित सब माता । कहब काह मैं तिन्हहि बिधाता ॥ अ० १४५/१
पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं
मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम् ।
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहन्ति ये
ते संसारपतंगघोरकिरणैर्दह्यन्ति नो मानवाः ॥ उ० १३० /२ श्लोक
पुनि अस कबहुँ कहसि घरफोरी । तब धरि जीभ कढ़ावउँ तोरी ॥ अ० १३/८
पुनि आउब एहि बेरिआँ काली । अस कहि मन बिहसी एक आली ॥ बा० २३३/६

पुनि आए जहँ मुनि सरभंगा । सुंदर अनुज जानकी संगा ॥ अर० ६/८
पुनि आयउ प्रभु पहिं बलवाना । जयति जयति जय कृपानिधाना ॥ लं० ६५/८
पुनि उठि झपटहिं सुर आराती । टरइ न कीस चरन एहि भाँती ॥ लं० ३३/१३
पुनि उठि तेहिं मारेउ हनुमंता । घुर्मित भूतल परेउ तुरंता ॥ लं० ६४/८
पुनि उर राखि राम सिसुरूपा । निज आश्रम आवउँ खगभूपा ॥ उ० ११३/१४
पुनि कछु लखन कही कटु बानी । प्रभु बरजे बड़ अनुचित जानी ॥ अ० ९५/४
पुनि कपि कही नीति बिधि नाना । मान न ताहि कालु निअराना ॥ लं० ३४/९
पुनि कर गहि कंचन के खंभा । कहेन्हि करिअ उतपात अरंभा ॥ लं० ४३/६
पुनि करि बहु प्रकार प्रभु पूजा । मोहि सम भाग्यवंत नहि दूजा ॥ अर० ११/१२
पुनि करुनानिधि भरतु हँकारे । निज कर राम जटा निरुआरे ॥ उ० १० /४
पुनि कह कटु कठोर कैकेई । मनहुँ घाय महुँ माहुर देई ॥ अ० ३४/३
पुनि कह भूपति बचन सुहाए । फिरिअ महीस दूरि बड़ि आए ॥ बा० ३३९/५
पुनि कह राउ सुहृद जियँ जानी । प्रेम पुलकि मृदु मंजुल बानी ॥ अ० २६/१
पुनि कहु खबरि बिभीषन केरी । जाहि मृत्यु आई अति नेरी ॥ सुं० ५२/४
पुनि कहु भालु कीस कटकाई । कठिन काल प्रेरित चलि आई ॥ सुं० ५२/६
पुनि कृपाल पुर बाहेर गए । गज रथ तुरग मगावत भए ॥ उ० ४९/३
पुनि कृपाल लियो बोलि निषादा । दीन्हे भूषन बसन प्रसादा ॥ उ० १९/१
पुनि कृपाल हँसि चाप चढ़ावा । पावक सायक सपदि चलावा ॥ लं० ४६/३
पुनि कोदंड बान गहि धाए । रिपु सन्मुख अति आतुर आए ॥ लं० ८३/८
पुनि गुहँ ग्याति बोलि सब लीन्हे । करि परितोषु बिदा तब कीन्हे ॥ लं० १० ३/८
पुनि चरननि मेले सुत चारी । राम देखि मुनि देह बिसारी ॥ बा० २० ६/५
पुनि जननी चरननि दोउ भ्राता । परे पेम ब्याकुल सब गाता ॥ अ० २४४/४
पुनि जल दीख रूप निज पावा । तदपि हृदयँ संतोष न आवा ॥ बा० १३५/१
पुनि जेवनार भई बहु भाँती । पठए जनक बोलाइ बराती ॥ बा० ३२७/१
पुनि जेहि कहँ जस कहब गोसाईं । सो सब भाँति घटिहि सेवकाईं ॥ अ० २५७/५
पुनि तिन्ह के गृह जेवँइ जोऊ । तव बस होइ भूप सुनु सोऊ ॥ बा० १६७/७

पुनि दसकंठ क्रुद्ध होइ छाँड़ी सक्ति प्रचंड ।
चली बिभीषन सन्मुख मनहुँ काल कर दंड ॥ लं० ९३/०

पुनि देखब रघुबीर बिआहू । लेब भली बिधि लोचन लाहू ॥ बा० ३० ९/६
पुनि देखी सुरसरी पुनीता । राम कहा प्रनाम करु सीता ॥ लं० ११९/६
पुनि देखु अवधपुरी अति पावनि । त्रिबिध ताप भव रोग नसावनि ॥ लं० ११९/९
पुनि दंडवत करत दोउ भाई । देखि नृपति उर सुखु न समाई ॥ बा० ३० ७/३
पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक । छाँड़े अति कराल बहु सायक ॥ लं० ६८/५
पुनि धरि धीर कहइ नरनाहू । लै रथु संग सखा तुम्ह जाहू ॥ अ० ८० /८

पुनि धरि धीर पत्रिका बाँची । हरषी सभा बात सुनि साँची ॥ बा० २८९/६
पुनि धीरजु धरि अस्तुति कीन्ही । हरष हृदयँ निज नाथहि चीन्ही ॥ कि० १/७
पुनि धीरजु धरि कुअँरि हँकारीं । बार बार भेटहिं महतारीं ॥ बा० ३३६/६
पुनि नभ सर मम कर निकर कमलन्हि पर करि बास ।
सोभत भयउ मराल इव संभु सहित कैलास ॥ लं० २२/० (ख)
पुनि नल नीलहि अवनि पछारेसि । जहँ तहँ पटकि पटकि भट डारेसि ॥ लं० ६४/९
पुनि न सोच तनु रहउ कि जाऊ । जेहिं न होइ पाछें पछिताऊ ॥ अ० ३/५
पुनि नाना बिधि भई लराई । बिटप ओट देखहिं रघुराई ॥ कि० ७/८
पुनि नारद कर मोह अपारा । कहेसि बहुरि रावन अवतारा ॥ उ० ६३/८
पुनि निज जटा राम बिबराए । गुर अनुसासन मागि नहाए ॥ उ० १० /७
पुनि निज बानन्ह कीन्ह प्रहारा । स्यंदनु भंजि सारथी मारा ॥ लं० ८२/५
पुनि पठयउ तेहिं अच्छकुमारा । चला संग लै सुभट अपारा ॥ सुं० १७/७
पुनि परिहरे सुखानेउ परना । उमहि नामु तब भयउ अपरना ॥ बा० ७३/७
पुनि पितु मातु लीन्हि उर लाई । सिख आसिष हित दीन्हि सुहाई ॥ अ० २८६/६
पुनि पुनि अस कहि कृपानिधाना । अंतरधान भए भगवाना ॥ बा० १५१/६
पुनि पुनि अंगद कह सब पाहीं । मरन भयउ कछु संसय नाहीं ॥ कि० २५/६
पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता । लोचन नीर पुलक अति गाता ॥ सुं० ३१/८
पुनि पुनि करत प्रनाम उठाए । सिर कर कमल परसि बैठाए ॥ अ० २४१/४
पुनि पुनि काग चरन सिरु नावा । जानि राम सम प्रेम बढ़ावा ॥ उ० ९२/४
पुनि पुनि चितइ चरन चित दीन्हा । सुफल जन्म माना प्रभु चीन्हा ॥ कि० ८/३
पुनि पुनि नाइ राम पद सीसा । चलीं तहाँ जहँ रहे गिरीसा ॥ बा० ५४/८
पुनि पुनि पूँछत मंत्रिहि राऊ । प्रियतम सुअन सँदेस सुनाऊ ॥ अ० १४९/१
पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता । पौढ़े धरि उर पद जलजाता ॥ बा० २२५/८
पुनि पुनि प्रभु काटत भुज सीसा । अति कौतुकी कोसलाधीसा ॥ लं० ९१/१३
पुनि पुनि प्रभु पद कमल गहि जोरि पंकरुह पानि ।
बोलीं गिरिजा बचन बर मनहुँ प्रेम रस सानि ॥ बा० ११९/०
पुनि पुनि प्रभुहि चितव नरनाहू । पुलक गात उर अधिक उछाहू ॥ बा० २१६/५
पुनि पुनि बिनय करिअ कर जोरी । जौं एहि मारग फिरिअ बहोरी ॥ अ० ११७/२
पुनि पुनि मिलत सखिन्ह बिलगाई । बाल बच्छ जिमि धेनु लवाई ॥ बा० ३३६/८
पुनि पुनि मिलति परति गहि चरना । परम प्रेमु कछु जाइ न बरना ॥ बा० १०१/७
पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं । देखि दसा हर गन मुसुकाहीं ॥ बा० १३४/२
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू । चहत उड़ावन फूँकि पहारू ॥ बा० २७२/२
पुनि पुनि रामहि चितव सिय सकुचति मनु सकुचै न ।
हरत मनोहर मीन छबि प्रेम पिआसे नैन ॥ बा० ३२६/०

पुनि पुनि सगुन पच्छ मैं रोपा । तब मुनि बोले बचन सकोपा ॥ उ० १११/१२
पुनि पुनि सत्य कहउँ तोहि पाहीं । मोहि सेवक सम प्रिय कोउ नाहीं ॥ उ० ८५/८
पुनि पुनि सिंघनाद करि भारी । देइ देवतन्ह गारि पचारी ॥ बा० १८१/८
पुनि पुनि सीय गोद करि लेहीं । देइ असीस सिखावनु देहीं ॥ बा० ३३३/३
पुनि पुनि सीय राम छबि देखी । मुदित सफल जग जीवन लेखी ॥ बा० ३४८/४
पुनि पुनि हृदयँ बिचारु करि धरि सीता कर रूप ।
आगें होइ चलि पंथ तेहिं जेहिं आवत नरभूप ॥ बा० ५२/०
पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन्ह समेता । अवध चले प्रभु कृपा निकेता ॥ उ० ६७/४
पुनि प्रनवउँ पृथुराज समाना । पर अघ सुनइ सहस दस काना ॥ बा० ३/९
पुनि प्रभु आइ त्रिबेनीं हरषित मज्जनु कीन्ह ।
कपिन्ह सहित बिप्रन्ह कहुँ दान बिबिध बिधि दीन्ह ॥ लं० १२० /० (ख)
पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा । बालचरित पुनि कहहु उदारा ॥ बा० १०९/५
पुनि प्रभु कहहु सो तत्त्व बखानी । जेहिं बिग्यान मगन मुनि ग्यानी ॥ बा० ११० /१
पुनि प्रभु कुंभकरन पहिं गयऊ । तेहि बिलोकि मन बिसमय भयऊ ॥ बा० १७६/६
पुनि प्रभु गए सरोबर तीरा । पंपा नाम सुभग गंभीरा ॥ अर० ३८/६
पुनि प्रभु गीध क्रिया जिमि कीन्ही । बधि कबंध सबरिहि गति दीन्ही ॥ उ० ६५/७
पुनि प्रभु पंचबटीं कृत बासा । भंजी सकल मुनिन्ह की त्रासा ॥ उ० ६५/२
पुनि प्रभु बोलि लियउ हनुमाना । लंका जाहु कहेउ भगवाना ॥ लं० १०६/१
पुनि प्रभु हरषि सत्रुहन भेंटे हृदयँ लगाइ ।
लछिमन भरत मिले तब परम प्रेम दोउ भाइ ॥ उ० ५/०
पुनि फिरि राम निकट सो आई । प्रभु लछिमन पहिं बहुरि पठाई ॥ अर० १६/१७
पुनि बसिष्टु मुनि कौसिकु आए । सुभग आसनन्हि मुनि बैठाए ॥ बा० ३५८/३
पुनि बसिष्ठ पद सिर तिन्ह नाए । प्रेम मुदित मुनिबर उर लाए ॥ बा० ३०७/५
पुनि बोलेउ मृदु गिरा सुहाई । जानि पिता प्रभु करउँ ढिठाई ॥ बा० १५९/३
पुनि बंदउँ सारद सुरसरिता । जुगल पुनीत मनोहर चरिता ॥ बा० १४/१
पुनि ममता जवास बहुताई । पलुहइ नारि सिसिर रितु पाई ॥ अर० ४३/६
पुनि मन बचन कर्म रघुनायक । चरन कमल बंदउँ सब लायक ॥ बा० १७/९
पुनि माया सीता कर हरना । श्रीरघुबीर बिरह कछु बरना ॥ उ० ६५/६
पुनि मुनिगन दुहुँ भाइन्ह बंदे । अभिमत आसिष पाइ अनंदे ॥ अ० २४१/२
पुनि मुनिबृंद समेत कृपाला । देखन चले धनुषमख साला ॥ बा० २३९/४
पुनि मैं कहेउँ नाइ पद सीसा । सगुन उपासन कहहु मुनीसा ॥ उ० ११० /८
पुनि मंदिर महँ बात जनाई । आवत नगर कुसल रघुराई ॥ उ० २/२
पुनि रघुनाथ चले बन आगे । मुनिबर बृंद बिपुल सँग लागे ॥ अर० ८/५
पुनि रघुपति निज मंदिर गए । एहि बिधि चरित करत नित नए ॥ उ० ४१/३

पुनि रघुपति बहुबिधि समुझाए । लै पाका अवधपुर आए ॥ उ० ६४/७
पुनि रघुपति सब सखा बोलाए । मुनि पद लागहु सकल सिखाए ॥ उ० ७/५
पुनि रघुपति सैं जूझै लागा । सर छाँडइ होइ लागहिं नागा ॥ लं० ७२/१०
पुनि रघुबीरहि भगति पिआरी । माया खलु नर्तकी बिचारी ॥ उ० ११५/४
पुनि रामहि बिलोकि हियँ हरषे । नृपहि सराहि सुमन तिन्ह बरषे ॥ बा० ३१४/८
पुनि रावन कपि हतेउ पचारी । चलेउ गगन कपि पूँछ पसारी ॥ लं० ९४/४
पुनि रिसान गहि चरन फिरायो । महि पछारि निज बल देखरायो ॥ लं० ७३/८
पुनि लछिमन उपदेस अनूपा । सूपनखा जिमि कीन्हि कुरूपा ॥ उ० ६५/३
पुनि लछिमन सुग्रीव बिभीषन । सरन्हि मारि कीन्हेसि जर्जर तन ॥ लं० ७२/९
पुनि सकोप दस धनु कर लीन्हे । सरन्हि मारि घायल कपि कीन्हे ॥ लं० ९७/१०
पुनि सकोप बोलेउ जुबराजा । गाल बजावत तोहि न लाजा ॥ लं० ३२/३
पुनि सत सर मारा उर माहीं । परेउ धरनि तल सुधि कछु नाहीं ॥ लं० ८२/७
पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ । जौं कृपाल मोहि ऊपर भाऊ ॥ उ० १२० /१
पुनि सब कथा बिभीषन कही । जेहि बिधि जनकसुता तहँ रही ॥ सुं० ७/३
पुनि सबही बिनवउँ कर जोरी । करत कथा जेहिं लाग न खोरी ॥ बा० ३३/२
पुनि सर्बग्य सर्ब उर बासी । सर्बरूप सब रहित उदासी ॥ सुं० ४९/३
पुनि सादर बोले मुनि नारद । सुनहु राम बिग्यान बिसारद ॥ अर० ४४/४
पुनि सिख दीन्हि बोलि लघु भाई । सौंपी सकल मातु सेवकाई ॥ अ० ३२२/२
पुनि सिय चरन धूरि धरि सीसा । जननि जानि सिसु दीन्हि असीसा ॥ अ० ११० /४
पुनि सियँ राम लखन कर जोरी । जमुनहि कीन्ह प्रनामु बहोरी ॥ अ० १११/१
पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन । बोला बचन पाइ अनुसासन ॥ सुं० ३७/३
पुनि सीतहि खोजत द्वौ भाई । चले बिलोकत बन बहुताई ॥ अर० ३२/४
पुनि सुग्रीवहि लीन्ह बोलाई । बहु प्रकार नृपनीति सिखाई ॥ कि० ११/६
पुनि संभारि उठी सो लंका । जोरि पानि कर बिनय ससंका ॥ सुं० ३/५
पुनि हरि हेतु करन तप लागे । बारि अधार मूल फल त्यागे ॥ बा० १४३/२
पुन्य एक जग महुँ नहिं दूजा । मन क्रम बचन बिप्र पद पूजा ॥ उ० ४४/७
पुन्य जलाश्रय भूमि बिभागा । खग मृग तरु तृन गिरि बन बागा ॥ अ० ३११/२
पुन्य पुंज तुम्ह पवनकुमारा । सेवहु जाइ कृपा आगारा ॥ उ० १८/९
पुन्य पुंज बिनु मिलहिं न संता । सतसंगति संसृति कर अंता ॥ उ० ४४/६
पुन्यपुंज मग निकट निवासी । तिन्हहि सराहहिं सुरपुरबासी ॥ अ० ११२/४
पुर अरु ब्योम बाजने बाजे । खल भए मलिन साधु सब राजे ॥ बा० २६४/१
पुरइनि सघन ओट जल बेगि न पाइअ मर्म ।
मायाछन्न न देखिऐ जैसें निर्गुन ब्रह्म ॥ अर० ३९/० (क)
पुरइनि सघन चारु चौपाई । जुगुति मंजु मनि सीप सोहाई ॥ बा० ३६/४

पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा। सत्य सत्य पन सत्य हमारा॥ बा० १५१/५
पुर चहुँ पास कोट अति सुंदर। रचे कँगूरा रंग रंग बर॥ उ० २६/४
पुर जन आवत अकनि बराता। मुदित सकल पुलकावलि गाता॥ बा० ३४३/३
पुरजन करि जोहारु घर आए। रघुबर संध्या करन सिधाए॥ अ० ८८/६
पुर जन नारि मगन अति प्रीती। बासर जाहिं पलक सम बीती॥ अ० २५१/१
पुरजन परिजन जातिजन जाचक मंत्री मीत।
मिले जथाबिधि सबहिं प्रभु परम कृपालु बिनीत॥ बा० ३०८/०
पुरजन परिजन गुर पितु माता। राम सुभाउ सबहि सुखदाता॥ अ० १९९/६
पुरजन परिजन प्रजा गोसाईं। सब सुचि सरस सनेहँ सगाईं॥ अ० ३१३/१
पुरजन परिजन सकल निहोरी। तात सुनाएहु बिनती मोरी॥ अ० १५१/१
पुरजन पाइ मुनीस नियोगू। जल थल तकि तकि उतरेउ लोगू॥ अ० २४४/८
पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारे। सिय रघुबीरहि प्रानपिआरे॥ अ० १९९/२
पुरजन मिलहिं न कहहिं कछु गवँहिं जोहारहिं जाहिं।
भरत कुसल पूँछि न सकहिं भय बिषाद मन माहिं॥ अ० १५८/०
पुर नर नारि सकल पहिराए। घर घर बाजन लगे बधाए॥ बा० ३५०/६
पुर नर नारि सुभग सुचि संता। धरमसील ग्यानी गुनवंता॥ बा० २१२/६
पुर नर भरत प्रीति मैं गाई। मति अनुरूप अनूप सुहाई॥ अर० ०/१
पुर पगु धारिअ देइ असीसा। कीन्ह धीर धरि गवनु महीसा॥ अ० ३१८/३
पुर पूरब दिसि गे दोउ भाई। जहँ धनुमख हित भूमि बनाई॥ बा० २२३/१
पुर पैठत रावन कर बेटा। खेलत रहा सो होइ गै भेटा॥ लं० १७/३
पुर बालक कहि कहि मृदु बचना। सादर प्रभुहि देखावहिं रचना॥ बा० २२३/८
पुरबासिन्ह कर बिरह बिषादा। कहेसि राम लछिमन संबादा॥ उ० ६४/२
पुरबासिन्ह तब राय जोहारे। देखत रामहि भए सुखारे॥ बा० ३४७/५
पुरबासिन्ह देखे दोउ भाई। नरभूषन लोचन सुखदाई॥ बा० २४०/८
पुरबासी सुनि चलिहि बराता। बूझत बिकल परस्पर बाता॥ बा० ३३२/१
पुर बाहेर सर सरित समीपा। उतरे जहँ तहँ बिपुल महीपा॥ बा० २१३/४
पुर बैकुंठ जान कह कोई। कोउ कह पय निधि बस प्रभु सोई॥ बा० १८४/२
पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह बिचार।
अति लघु रूप धरौं निसि नगर करौं पइसार॥ सुं० ३/०
पुर रम्यता राम जब देखी। हरषे अनुज समेत बिसेषी॥ बा० २११/५
पुर सोभा अवलोकि सुहाई। लागइ लघु बिरंचि निपुनाई॥ बा० ९३/८
पुर सोभा कछु बरनि न जाई। बाहेर नगर परम रुचिराई॥ उ० २८/७
पुर सोभा संपति कल्याना। निगम सेष सारदा बखाना॥ उ० ८/८
पुरी प्रभाव अनुग्रह मोरें। राम भगति उपजिहि उर तोरें॥ उ० १०८/१०

पुरी बिराजति राजति रजनी। रानीं कहहिं बिलोकहु सजनी ॥ बा० ३५७/३
पुरुष कुजोगी जिमि उरगारी। मोह बिटप नहिं सकहिं उपारी ॥ लं० ३३/१४
पुरुष त्यागि सक नारिहि जो बिरक्त मति धीर।
न तु कामी बिषयाबस बिमुख जो पद रघुबीर ॥ उ० ११५/० (क)
पुरुष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोइ।
सर्ब भाव भज कपट तजि मोहि परम प्रिय सोइ ॥ उ० ८७/० (क)
पुरुष प्रताप प्रबल सब भाँती। अबला अबल सहज जड़ जाती ॥ उ० ११४/१६
पुरुष प्रसिद्ध प्रकास निधि प्रगट परावर नाथ।
रघुकुलमनि मम स्वामि सोइ कहि सिवँ नायउ माथ ॥ बा० ११६/०
पुरुषसिंह दोउ बीर हरषि चले मुनि भय हरन।
कृपासिंधु मतिधीर अखिल बिस्व कारन करन ॥ बा० २०८/० (ख) सो०
पुलक गात हियँ रामु सिय सजल सरोरुह नैन।
करि प्रनामु मुनि मंडलिहि बोले गदगद बैन ॥ अ० २१०/०
पुलक गात हियँ सिय रघुबीरू। जीह नामु जप लोचन नीरू ॥ अ० ३२५/१
पुलक बाटिका बाग बन सुख सुबिहंग बिहारु।
माली सुमन सनेह जल सींचत लोचन चारु ॥ बा० ३७/०
पुलकित गात अत्रि उठि धाए। देखि रामु आतुर चलि आए ॥ अर० २/५
पुलकित तन मुख आव न बचना। देखत रुचिर बेष कै रचना ॥ कि० १/६
पुलकि सप्रेम परसपर कहहीं। भरत आगमनु सूचक अहहीं ॥ अ० ६/५
पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े। नीरज नयन नेह जल बाढ़े ॥ अ० २५९/३
पुलक सिथिल तन बारि बिलोचन। महि नख लिखन लगीं सब सोचन ॥ अ० २८०/६
पुत्रवती जुबती जग सोई। रघुपति भगतु जासु सुतु होई ॥ अ० ७४/१
पुत्रि पबित्र किए कुल दोऊ। सुजस धवल जगु कह सबु कोऊ ॥ अ० २८६/२
पूछत अति सनेहँ सकुचाई। तात कहाँ तें पाती आई ॥ बा० २८९/८
पूँछत उतरु देब मैं तेही। गे बनु राम लखनु बैदेही ॥ अ० १४५/४
पूछत प्रभुहि सकल सकुचाहीं। चितवहिं सब मारुतसुत पाहीं ॥ उ० ३५/२
पूँछत सखहि सो ठाउँ देखाऊ। नेकु नयन मन जरनि जुड़ाऊ ॥ अ० १९७/६
पूछन जोगु न तनय तुम्हारे। पुरुषसिंघ तिहु पुर उजिआरे ॥ बा० २९१/१
पूँछ बुझाइ खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि।
जनकसुता कें आगें ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥ सुं० २६/०
पूँछहीन बानर तहँ जाइहि। तब सठ निज नाथहि लै आइहि ॥ सुं० २४/१
पूछा मुनिहि सिला प्रभु देखी। सकल कथा मुनि कहा बिसेषी ॥ बा० २०९/१२
पूँछिहि जबहिं राउ दुख दीना। जिवनु जासु रघुनाथ अधीना ॥ अ० १४५/६
पूछिहि जबहिं लखन महतारी। कहिहउँ कवन सँदेस सुखारी ॥ अ० १४५/२

पूँछिहु नाथ राम कटकाई । बदन कोटि सत बरनि न जाई ॥ सुं० ५३/५
पूँछिहु राम कथा अति पावनि । सुख सनकादि संभु मन भावनि ॥ उ० १२२/५
पूँछी कुसल कुसल पद देखी । राम कृपाँ भा काजु बिसेषी ॥ सुं० २८/४
पूँछेउँ गुनिन्ह रेख तिन्ह खाँची । भरत भुआल होहिं यह साँची ॥ अ० २० /७
पूछेउ तब सिवँ कहेउ बखानी । पिता जग्य सुनि कछु हरषानी ॥ बा० ६० /५
पूछें कोउ न ऊतरु देई । गए जेहिं भवन भूप कैकेई ॥ अ० ३७/५
पूँछें मातु मलिन मन देखी । लखन कही सब कथा बिसेषी ॥ अ० ७२/५
पूछेसि लोगन्ह काह उछाहू । राम तिलकु सुनि भा उर दाहू ॥ अ० १२/२
पूँछेहु मोहि कि रहौं कहँ मैं पूँछत सकुचाउँ ।
जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहि देखावौं ठाउँ ॥ अ० १२७/०
पूँछेहु रघुपति कथा प्रसंगा । सकल लोक जस पावनि गंगा ॥ बा० १११/७
पूजन गौरि सखीं लै आईं । करत प्रकासु फिरइ फुलवाईं ॥ बा० २३०/२
पूजनीय प्रिय परम जहाँ तें । सब मानिअहिं राम के नातें ॥ अ० ७३/७
पूजहिं प्रभुहि देव बहु बेषा । राम रूप दूसर नहिं देखा ॥ बा० ५४/३
पूजहिं माधव पद जलजाता । परसि अखय बटु हरषहिं गाता ॥ बा० ४३/५
पूजहु गनपति गुर कुलदेवा । सब बिधि करहु भुमिसुर सेवा ॥ अ० ५/८
पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा । निज अनुरूप सुभग बरु मागा ॥ बा० २२७/६
पूजिअ बिप्र सील गुन हीना । सूद्र न गुन गन ग्यान प्रबीना ॥ अर० ३३/२
पूजीं ग्रामदेबि सुर नागा । कहेउ बहोरि देन बलिभागा ॥ अ० ७/५
पूजे गुर पद कमल बहोरी । कीन्हि बिनय उर प्रीति न थोरी ॥ बा० ३५१/८
पूजे जनक देव सम जानें । दिए सुआसन बिनु पहिचानें ॥ बा० ३२०/८
पूजे भूपति सकल बराती । समधी सम सादर सब भाँती ॥ बा० ३२०/३
पूत परम प्रिय तुम्ह सबही के । प्रान प्रान के जीवन जी के ॥ अ० ५५/७
पूतु बिदेस न सोचु तुम्हारें । जानति हहु बस नाहु हमारें ॥ अ० १३/५
पूरन काम राम अनुरागी । तुम्ह सम तात न कोउ बड़भागी ॥ उ० १२४/५
पूरनकाम राम सुख रासी । मनुज चरित कर अज अबिनासी ॥ अर० २९/१७
पूरन राम सुपेम पियूषा । गुर अवमान दोष नहिं दूषा ॥ अ० २०८/५
पूरुब कल्प एक प्रभु जुग कलिजुग मल मूल ।
नर अरु नारि अधर्म रत सकल निगम प्रतिकूल ॥ उ० ९६/० (ख)
पूरब दिसा बिलोकि प्रभु देखा उदित मयंक ।
कहत सबहि देखहु ससिहि मृगपति सरिस असंक ॥ लं० ११/० (ख)
पूरब दिसि गिरिगुहा निवासी । परम प्रताप तेज बल रासी ॥ लं० ११/१
पूरि प्रकास रहेउँ तिहुँ लोका । बहुतेन्ह सुख बहुतन मन सोका ॥ उ० ३०/२
पेड़ काटि तैं पालउ सींचा । मीन जिअन निति बारि उलीचा ॥ अ० १६०/८

पेम अमिअ मंदरु बिरहु भरत पयोधि गँभीर ।
मथि प्रगटेउ सुर साधु हित कृपासिंधु रघुबीर ।। अ० २३८/०
पैठत नगर सचिव सकुचाई । जनु मारेसि गुर बाँभन गाई ।। अ० १४६/३
पंक न रेनु सोह असि धरनी । नीति निपुन नृप कै जसि करनी ।। कि० १५/७
पंच कवल करि जेवन लागे । गारि गान सुनि अति अनुरागे ।। बा० ३२८/१
पंच कहें सिवँ सती बिबाही । पुनि अवडेरि मराएन्हि ताही ।। बा० ७८/८
पंचबटीं बसि श्रीरघुनायक । करत चरित सुर मुनि सुखदायक ।। अर० २०/४
पंचबटी सो गइ एक बारा । देखि बिकल भइ जुगल कुमारा ।। अर० १६/४
पंच सबद धुनि मंगल गाना । पट पाँवड़े परहिं बिधि नाना ।। बा० ३१८/३
पंथ कहत निज भगति अनूपा । मुनि आश्रम पहुँचे सुरभूपा ।। अर० ११/५
पंथ जात सोहहिं मतिधीरा । ग्यान भगति जनु धरें सरीरा ।। बा० १४२/४
पंपा सरहि जाहु रघुराई । तहँ होइहि सुग्रीव मिताई ।। अर० ३५/११
पृथक पृथक तिन्ह कीन्हि प्रसंसा । भए प्रसन्न चंद्र अवतंसा ।। बा० ८७/६
प्रकृति पार प्रभु सब उर बासी । ब्रह्म निरीह बिरज अबिनासी ।। उ० ७१/७
प्रगट चारि पद धर्म के कलि महुँ एक प्रधान ।
जेन केन बिधि दीन्हें दान करइ कल्यान ।। उ० १०३/० (ख)
प्रगटत दुरत करत छल भूरी । एहि बिधि प्रभुहि गयउ लै दूरी ।। अर० २६/१३
प्रगटत दुरत जाइ मृग भागा । रिस बस भूप चलेउ सँग लागा ।। बा० १५६/४
प्रगट बखानहिं राम सुभाऊ । अति सप्रेम गा बिसरि दुराऊ ।। सुं० ५१/१
प्रगट सो तनु तव आगें सोवा । जीव नित्य केहि लगि तुम्ह रोवा ।। कि० १०/५
प्रगटहिं दुरहिं अटन्ह पर भामिनि । चारु चपल जनु दमकहिं दामिनि ।। बा० ३४६/४
प्रगटीं गिरिन्ह बिबिधि मनि खानी । जगदातमा भूप जग जानी ।। उ० २२/७
प्रगटेउ जहँ रघुपति ससि चारू । बिस्व सुखद खल कमल तुसारू ।। बा० १५/५
प्रगटे रामु कृतग्य कृपाला । रूप सील निधि तेज बिसाला ।। बा० ७५/५
प्रगटेसि तुरत रुचिर रितुराजा । कुसुमित नव तरु राजि बिराजा ।। बा० ८५/६
प्रगटेसि बिपुल हनुमान । धाए गहे पाषान ।।
तिन्ह रामु घेरे जाइ । चहुँ दिसि बरूथ बनाइ ।। लं० १००/७ छं०
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं । अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं ।। उ० १०७/९
प्रति अवतार कथा प्रभु केरी । सुनु मुनि बरनी कबिन्ह घनेरी ।। बा० १२३/४
प्रति उपकार करौं का तोरा । सनमुख होइ न सकत मन मोरा ।। सुं० ३१/६
प्रति ब्रह्मांड राम अवतारा । देखउँ बालबिनोद अपारा ।। उ० ८०/८
प्रतिमा रुदहिं पबिपात नभ अति बात बह डोलति मही ।
बरषहिं बलाहक रुधिर कच रज असुभ अति सक को कही ।।
उतपात अमित बिलोकि नभ सुर बिकल बोलहिं जय जए ।

सुर सभय जानि कृपाल रघुपति चाप सर जोरत भए ॥ लं० १०१/१ छं०
प्रति संबत अति होइ अनंदा। मकर मज्जि गवनहिं मुनिबृंदा ॥ बा० ४४/२
प्रथम कथा सब मुनिबर बरनी। कैकइ कुटिल कीन्हि जसि करनी ॥ अ० १७०/५
प्रथम कीन्हि प्रभु धनुष टँकोरा। रिपु दल बधिर भयउ सुनि सोरा ॥ लं० ६७/२
प्रथम कुमत करि कपटु सँकेला। सो उचाटू सब कें सिर मेला ॥ अ० ३०१/३
प्रथम गए जहँ रहीं भवानी। बोले मधुर बचन छल सानी ॥ बा० ८८/८
प्रथम जन्म के चरित अब कहउँ सुनहु बिहगेस।
सुनि प्रभु पद रति उपजइ जातें मिटहिं कलेस ॥ उ० ९६/० (क)
प्रथम जाइ जिन्ह बचन सुनाए। भूषन बसन भूरि तिन्ह पाए ॥ अ० ७/१
प्रथम जो आयसु मो कहुँ होई। माथें मानि करौं सिख सोई ॥ अ० २५७/४
प्रथम जो मैं पूछा सोइ कहहू। जौं मो पर प्रसन्न प्रभु अहहू ॥ बा० ११९/५
प्रथम तिलक बसिष्ट मुनि कीन्हा। पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा ॥ उ० ११/५
प्रथम दच्छ गृह तव अवतारा। सती नाम तब रहा तुम्हारा ॥ उ० ५५/२
प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई। बैठे पुनि तट दर्भ डसाई ॥ सुं० ५०/७
प्रथम बरात लगन तें आई। तातें पुर प्रमोदु अधिकाई ॥ बा० ३०८/७
प्रथम बसीठ पठउ सुनु नीती। सीता देइ करहु पुनि प्रीती ॥ लं० ८/१०
प्रथम बासु तमसा भयउ दूसर सुरसरि तीर।
न्हाइ रहे जलपानु करि सिय समेत दोउ बीर ॥ अ० १५०/०
प्रथम भगति संतन्ह कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा ॥ अर० ३४/८
प्रथम मोहँ मोहि बहुत बिगोवा। राम बिमुख सुख कबहुँ न सोवा ॥ उ० ९५/६
प्रथम राम भेंटी कैकेई। सरल सुभायँ भगति मति भेई ॥ अ० २४३/७
प्रथम सो कारन कहहु बिचारी। निर्गुन ब्रह्म सगुन बपु धारी ॥ बा० १०९/४
प्रथमहिं अति अनुराग भवानी। रामचरित सर कहेसि बखानी ॥ उ० ६३/७
प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा। सब ते दुर्लभ कवन सरीरा ॥ उ० १२०/३
प्रथमहिं गिरि बहु गृह सँवराए। जथाजोगु तहँ तहँ सब छाए ॥ बा० ९३/७
प्रथमहिं जिन्ह कहुँ आयसु दीन्हा। तिन्ह कर चरित सुनहु जो कीन्हा ॥ बा० १८२/२
प्रथमहिं तासु तनय कपि मारा। सो सुनि रावन भयउ दुखारा ॥ लं० ३४/१२
प्रथमहिं देवन्ह गिरि गुहा राखेउ रुचिर बनाइ।
राम कृपानिधि कछु दिन बास करहिंगे आइ ॥ कि० १२/०
प्रथमहिं बास दिए सब केही। सुंदर सुखद जथा रुचि जेही ॥ अ० २१३/८
प्रथमहिं बिप्र चरन अति प्रीती। निज निज कर्म निरत श्रुति रीती ॥ अर० १५/६
प्रथमहिं भूप समर सब मारे। बिप्र संत सुर देखि दुखारे ॥ बा० १६९/६
प्रथमहिं मैं कहि सिव चरित बूझा मरमु तुम्हार।
सुचि सेवक तुम्ह राम के रहित समस्त बिकार ॥ बा० १०४/०

प्रनत कल्पतरु करुना पुंजा । उपजइ प्रीति राम पद कंजा ॥ उ० १२५/२
प्रनत काम सुरधेनु कलपतरु । होइ प्रसन्न दीजै प्रभु यह बरु ॥ उ० ३४/२
प्रनतपालु पालिहि सब काहू । देउ दुहू दिसि ओर निबाहू ॥ अ० ३१३/४
प्रनतपाल रघुनायक करुना सिंधु खरारि ।
गएँ सरन प्रभु राखिहैं तव अपराध बिसारि ॥ सुं० २२/०
प्रनतपाल रघुबंसमनि त्राहि त्राहि अब मोहि ।
आरत गिरा सुनत प्रभु अभय करैगो तोहि ॥ लं० २०/०
प्रनवउँ परिजन सहित बिदेहू । जाहि राम पद गूढ़ सनेहू ॥ बा० १६/१
प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यानघन ।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर ॥ बा० १७/० सो०
प्रनवउँ पुर नर नारि बहोरी । ममता जिन्ह पर प्रभुहि न थोरी ॥ बा० १५/२
प्रनवउँ प्रथम भरत के चरना । जासु नेम ब्रत जाइ न बरना ॥ बा० १६/३
प्रनवउँ सबहि धरनि धरि सीसा । करहु कृपा जन जानि मुनीसा ॥ बा० १७/६
प्रनवउँ सोइ कृपाल रघुनाथा । बरनउँ बिसद तासु गुन गाथा ॥ बा० १०४/७
प्रफुल्ल कंज लोचनं । मदादि दोष मोचनं ॥ अर० ३/४ छं०
प्रबल अबिद्या कर परिवारा । मोह आदि तम मिटइ अपारा ॥ उ० ११७/३
प्रबल अबिद्या तम मिटि जाई । हारहिं सकल सलभ समुदाई ॥ उ० ११९/५
प्रबिसि नगर कीजे सब काजा । हृदयँ राखि कोसलपुर राजा ॥ सुं० ४/१
प्रबिसे सब निषंग महु जाई । देखि सुरन्ह दुंदुभीं बजाई ॥ लं० १०२/८
प्रभा जाइ कहँ भानु बिहाई । कहँ चंद्रिका चंदु तजि जाई ॥ अ० ९६/६
प्रभु अगाध सत कोटि पताला । समन कोटि सत सरिस कराला ॥ उ० ९१/१
प्रभु अग्या अपेल श्रुति गाई । करौं सो बेगि जो तुम्हहि सोहाई ॥ सुं० ५८/८
प्रभु अग्या धरि सीस चरन बंदि अंगद उठेउ ।
सोइ गुन सागर ईस राम कृपा जा पर करहु ॥ लं० १७/० (क) सो०
प्रभु अपने अबिबेक ते बूझउँ स्वामी तोहि ।
कृपासिंधु सादर कहहु जानि दास निज मोहि ॥ उ० ९३/० (ख)
प्रभु अपने नीचहु आदरहीं । अगिनि धूम गिरि सिर तिनु धरहीं ॥ अ० २८४/२
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई । तब सिसु चरित कहेसि मन लाई ॥ उ० ६३/९
प्रभु आगवनु श्रवन सुनि पावा । करत मनोरथ आतुर धावा ॥ अर० ९/३
प्रभु आदरहिं प्रेमु पहिचानी । पूँछहिं कुसल खेम मृदु बानी ॥ अ० २३/२
प्रभु आयसु जेहि कहँ जस अहई । सो तेहि भाँति रहें सुख लहई ॥ सुं० ५८/४
प्रभु आसन आसीन भरि लोचन सोभा निरखि ।
मुनिबर परम प्रबीन जोरि पानि अस्तुति करत ॥ अर० ३/० सो०
प्रभु कर पंकज कपि कें सीसा । सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा ॥ सुं० ३२/२

प्रभु करि कृपा पाँवरी दीन्हीं । सादर भरत सीस धरि लीन्हीं ॥ अ० ३१५/४
प्रभु करुनामय परम बिबेकी । तनु तजि रहति छाँह किमि छेंकी ॥ अ० ९६/५
प्रभु कह गरल बंधु ससि केरा । अति प्रिय निज उर दीन्ह बसेरा ॥ लं० ११/९
प्रभु कह देन सकल सुख सही । भगति आपनी देन न कही ॥ उ० ८३/४
प्रभु कहँ छाँड़ेसि सूल प्रचंडा । सर हति कृत अनंत जुग खंडा ॥ लं० ७५/७
प्रभु कीं कृपा भयउ सबु काजू । जन्म हमार सुफल भा आजू ॥ सुं० २९/४
प्रभु के बचन सीस धरि सीता । बोली मन क्रम बचन पुनीता ॥ लं० १०८/१

प्रभु के बचन श्रवन सुनि नहिं अघाहिं कपि पुंज ।
बार बार सिर नावहिं गहहिं सकल पद कंज ॥ लं० १०६/०

प्रभु कौतुकी प्रनत हितकारी । सेवत सुलभ सकल दुख हारी ॥ बा० १३९/८
प्रभु कृत सीस कपीस उछंगा । बाम दहिन दिसि चाप निषंगा ॥ लं० १०/५
प्रभु गुप्त ग्राम गनत मन माहीं । सब चुपचाप चले मग जाहीं ॥ अ० ३२१/२
प्रभु छन महुँ माया सब काटी । जिमि रबि उएँ जाहिं तम फाटी ॥ लं० ९६/१
प्रभु जब जात जानकी जानी । सुख सनेह सोभा गुन खानी ॥ बा० २३४/२
प्रभु जानत सब बिनहिं जनाएँ । कहहु कवनि सिधि लोक रिझाएँ ॥ बा० १६१/२
प्रभु जानी कैकई लजानी । प्रथम तासु गृह गए भवानी ॥ उ० ९/१
प्रभु जे मुनि परमारथबादी । कहहिं राम कहुँ ब्रह्म अनादी ॥ बा० १०७/५
प्रभु जोइ कहहु तुम्हहि सब सोहा । हमरें होत बचन सुनि मोहा ॥ लं० ११७/७
प्रभु जो दीन्ह सो बरु मैं पावा । अब सो देहु मोहि जो भावा ॥ अर० १०/२७
प्रभु तन चितइ प्रेम तन ठाना । कृपानिधान राम सबु जाना ॥ बा० २५८/७
प्रभु तब मोहि बहु भाँति प्रबोधा । नाथ सो समुझि करहु जनि क्रोधा ॥ बा० १०८/६

प्रभु तरु तर कपि डार पर ते किए आपु समान ।
तुलसी कहूँ न राम से साहिब सीलनिधान ॥ बा० २९/० (क)

प्रभु तव आश्रम आएँ मोर मोह भ्रम भाग ।
कारन कवन सो नाथ सब कहहु सहित अनुराग ॥ उ० ९४/० (ख)

प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू । भयउ पुनीत आजु यहु गेहू ॥ अ० ८/७
प्रभु ताते उर हतइ न तेही । एहि के हृदयँ बसति बैदेही ॥ लं० ९८/१२
प्रभुता प्रथम बिचारि बिचारी । मन महँ होइ हरष अति भारी ॥ उ० ८२/६

प्रभु तुम्हार कुलगुर जलधि कहिहि उपाय बिचारि ।
बिनु प्रयास सागर तरिहि सकल भालु कपि धारि ॥ सुं० ५०/०

प्रभु तोषेउ सुनि संकर बचना । भक्ति बिबेक धर्म जुत रचना ॥ बा० ७६/५
प्रभु दोउ चापखंड महि डारे । देखि लोग सब भए सुखारे ॥ बा० २६१/१

प्रभु नारद संबाद कहि मारुति मिलन प्रसंग ।
पुनि सुग्रीव मिताई बालि प्रान कर भंग ॥ बा० ६६/० (क)

प्रभु पद अंकित अवनि बिसेषी । आयसु होइ त आवौं देखी ॥ अ० ३०७/४
प्रभु पद कमल गहे अकुलाई । समउ सनेहु न सो कहि जाई ॥ अ० ३००/६
प्रभु पद कमल सीस तिन्ह नाए । देखि सुभट रघुपति मन भाए ॥ लं० ४५/१
प्रभु पद पदुम पराग दोहाई । सत्य सुकृत सुख सीवँ सुहाई ॥ अ० ३००/१
प्रभु पद पदुम बंदि दोउ भाई । चले सीस धरि राम रजाई ॥ अ० ३१७/७
प्रभु पद प्रीति न सामुझि नीकी । तिन्हहि कथा सुनि लागिहि फीकी ॥ बा० ८/५
प्रभु पद पंकज नावहिं सीसा । गर्जहिं भालु महाबल कीसा ॥ सुं० ३४/१
प्रभु पद बंदि सीस रज राखी । बोले सत्य सहज बलु भाषी ॥ अ० २२८/६
प्रभु पद रेख बीच बिच सीता । धरति चरन मग चलति सभीता ॥ अ० १२२/५
प्रभु पद सपथ कहउँ सति भाऊ । जग मंगल हित एक उपाऊ ॥ अ० २६८/८
प्रभु प्यान जाना बैदेहीं । फरकि बाम अँग जनु कहि देहीं ॥ सुं० ३४/६
प्रभु पखुं सुठि होति ढिठाई । जदपि भगत हित तुम्हहि सोहाई ॥ बा० १४९/५
प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना । सो सुख उमा जाइ नहिं बरना ॥ कि० १/५
प्रभु पाछें लछिमन बीरासन । कटि निषंग कर बान सरासन ॥ लं० १०/८
प्रभु पितु बचन मोह बस पेली । आयउँ इहाँ समाज सकेली ॥ अ० २९७/५
प्रभु पितु मातु सुहृद गुर स्वामी । पूज्य परम हित अंतरजामी ॥ अ० २९७/१
प्रभु प्रताप उर धरि रनधीरा । बोले घन इव गिरा गँभीरा ॥ लं० ७४/१२
प्रभु प्रताप उर सहज असंका । रन बाँकुरा बालिसुत बंका ॥ लं० १७/२
प्रभु प्रताप कहि सब समुझाए । सुनि कपि सिंघनाद करि धाए ॥ लं० ३८/६
प्रभु प्रताप बड़वानल भारी । सोषेउ प्रथम पयोनिधि बारी ॥ लं० ०/२
प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई । उतरिहि कटकु न मोरि बड़ाई ॥ सुं० ५८/७
प्रभु प्रनामु करि दीन्ह भरोसो । चले मुदित मन डर न खरो सो ॥ अ० ३२०/८
प्रभु प्रनामु करि दीन्ह सुआसनु । बैठे सब सुनि मुनि अनुसासनु ॥ अ० २५६/६
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना । बोला बचन बिगत अभिमाना ॥ सुं० ३२/६
प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि जो जेहि आयसु देब ।
सो सिर धरि धरि करिहि सबु मिटिहि अनट अवरेब ॥ अ० २६९/०
प्रभु प्रसाद सिव सबइ निबाहीं । यह लालसा एक मन माहीं ॥ अ० ३/४
प्रभु प्रसाद सुचि सुभग सुबासा । सादर जासु लहइ नित नासा ॥ अ० १२८/१
प्रभु प्रलाप सुनि कान बिकल भए बानर निकर ।
आइ गयउ हनुमान जिमि करुना महँ बीर रस ॥ लं० ६१/० सो०
प्रभु प्रिय पूज्य पिता सम आपू । कुलगुरु सम हित माय न बापू ॥ अ० २९२/२
प्रभु प्रेरित कपि भालु सब राम रूप उर राखि ।
हरष बिषाद सहित चले बिनय बिबिध बिधि भाषि ॥ लं० ११८/० (क)
प्रभु प्रेरित लछिमन पहिराए । लंकापति रघुपति मन भाए ॥ उ० १६/७

प्रभु बचनामृत सुनि न अघाऊँ । तनु पुलकित मन अति हरषाऊँ ॥ उ० ८७/२
प्रभु बलु पाइ भालु कपि धाए । तरल तमकि संजुग महि आए ॥ लं० ९६/४
प्रभु बहु बार बाहु सिर हए । कटत झटिति पुनि नूतन भए ॥ लं० ९१/१२
प्रभु बिबाहँ जस भयउ उछाहू । सकहिं न बरनि गिरा अहिनाहू ॥ बा० ३६०/६
प्रभु बियोग लवलेस समाना । सब मिलि होहिं न कृपानिधाना ॥ अ० ६५/६
प्रभु बिलोकि मुनि नयन जुड़ाने । होइहि काजु हिएँ हरषाने ॥ बा० १३१/४
प्रभु बिलोकि मुनि मन अनुरागा । तुरत दिब्य सिंघासन मागा ॥ उ० ११/१
प्रभु बिलोकि सर सकहिं न डारी । थकित भए रजनीचर धारी ॥ अर० १८/१
प्रभु बिलोकि हरषे पुरबासी । जनित बियोग बिपति सब नासी ॥ उ० ५/३
प्रभु बंधन समुझत बहु भाँती । करत बिचार उरग आराती ॥ उ० ५७/६
प्रभु ब्रह्मन्यदेव मैं जाना । मोहि निति पिता तजेउ भगवाना ॥ बा० २०८/४
प्रभु भय बहुरि मुनिहि सकुचाहीं । प्रगट न कहहिं मनहिं मुसुकाहीं ॥ बा० २१७/२
प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही । मरजादा पुनि तुम्हरी कीन्ही ॥ सुं० ५८/५
प्रभु मनसहिं लयलीन मनु चलत बाजि छबि पाव ।
भूषित उड़गन तड़ित घनु जनु बर बरहि नचाव ॥ बा० ३१६/०
प्रभु माया बलवंत भवानी । जाहि न मोह कवन अस ग्यानी ॥ उ० ६१/१०
प्रभु मुख कमल बिलोकत रहहीं । कबहुँ कृपाल हमहि कछु कहहिं ॥ उ० २४/२
प्रभु मुसुकान समुझि अभिमाना । चाप चढ़ाइ बान संधाना ॥ लं० १२/८
प्रभु रघुपति तजि सेइअ काही । मोहि से सठ पर ममता जाही ॥ उ० १२२/३
प्रभु रुख देखि बिनय बहु भाषी । चलेउ हृदयँ पद पंकज राखी ॥ उ० १८/५
प्रभु लछिमनहि कहा समुझाई । फिरत बिपिन निसिचर बहु भाई ॥ अर० २६/८
प्रभु सक त्रिभुअन मारि जिआई । केवल सक्रहि दीन्हि बड़ाई ॥ लं० ११३/४
प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई । हरउ भगत मन कै कुटिलाई ॥ अ० ९/८
प्रभु सर्बग्य कीन्ह अति आदर कृपानिधान ।
लखेउ न काहुँ मरम कछु लगे कहन गुन गान ॥ उ० १२/० (ग)
प्रभु सर्बग्य दास निज जानी । गति अनन्य तापस नृप रानी ॥ बा० १४४/५
प्रभु समरथ सर्बग्य सिव सकल कला गुन धाम ।
जोग ग्यान बैराग्य निधि प्रनत कलपतरु नाम ॥ बा० १०७/०
प्रभु समर्थ कोसलपुर राजा । जो कुछ करहिं उनहि सब छाजा ॥ अर० १६/१४
प्रभु सन्मुख कछु कहन न पारहिं । पुनि पुनि चरन सरोज निहारहिं ॥ उ० १६/४
प्रभु सन्मुख धाए खल कैसें । सलभ समूह अनल कहँ जैसें ॥ लं० ८५/४
प्रभु सिय लखन बैठि बट छाहीं । प्रिय परिजन बियोग बिलखाहीं ॥ अ० ३२०/२
प्रभु सोइ राम कि अपर कोउ जाहि जपत त्रिपुरारि ।
सत्यधाम सर्बग्य तुम्ह कहहु बिबेकु बिचारि ॥ बा० ४६/०

प्रभु सोभा सुख जानहिं नयना । कहि किमि सकहिं तिन्हहि नहिं बयना ॥ उ० ८७/४
प्रभु संदेसु सुनत बैदेही । मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही ॥ सुं० १४/८
प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई । धरि बटु रूप अवधपुर जाई ॥ लं० १२०/१
प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि राजत लोचन लोल ।
खेलत मनसिज मीन जुग जनु बिधु मंडल डोल ॥ बा० २५८/०
प्रभुहि जोहारि बहोरि बहोरी । बचन बिनीत कहहिं कर जोरी ॥ अ० १३४/८
प्रभुहि तथापि प्रसन्न बिलोकी । मागि अगम बर होउँ असोकी ॥ बा० १६३/८
प्रभुहि देखि सब नृप हियँ हारे । जनु राकेस उदय भएँ तारे ॥ बा० २४४/१
प्रभुहि बिलोकहिं टरहिं न टारे । मन हरषित सब भए सुखारे ॥ लं० ३/७
प्रभुहि बिलोकि चला मृग भाजी । धाए रामु सरासन साजी ॥ अर० २६/१०
प्रभुहि सहित बिलोकि बैदेही । परेउ अवनि तन सुधि नहिं तेही ॥ लं० १२०/११
प्रभुहि सेवकहि समरु कस तजहु बिप्रबर रोसु ।
बेषु बिलोकें कहेसि कछु बालकहू नहिं दोसु ॥ बा० २८१/०
प्रमुदित तीरथराज निवासी । बैखानस बटु गृही उदासी ॥ अ० २०५/१
प्रमुदित पुर नर नारि सब सजहिं सुमंगलचार ।
एक प्रबिसहिं एक निर्गमहिं भीर भूप दरबार ॥ अ० २३/०
प्रमुदित मुनिन्ह भाँवरीं फेरीं । नेगसहित सब रीति निबेरीं ॥ बा० ३२४/७
प्रलंब बाहु विक्रमं । प्रभोऽप्रमेय वैभवं ॥ अर० ३/५ छं०
प्रसन्नतां या न गताभिषेकतस्तथा न मम्ले वनवासदुःखतः ।
मुखाम्बुजश्री रघुनन्दनस्य मे सदास्तु सा मंजुलमंगलप्रदा ॥ अ० श्लोक २
प्रसीद मे नमामि ते । पदाब्ज भक्ति देहि मे ॥ अर० ३/२२ छं०
प्रस्न उमा कै सहज सुहाई । छल बिहीन सुनि सिव मन भाई ॥ बा० ११०/६
प्राकृत सिसु इव लीला देखि भयउ मोहि मोह ।
कवन चरित्र करत प्रभु चिदानंद संदोह ॥ उ० ७७/० (ख)
प्राची दिसि ससि उयउ सुहावा । सिय मुख सरिस देखि सुखु पावा ॥ बा० २३६/७
प्रात कहा मुनि सन रघुराई । निर्भय जग्य करहु तुम्ह जाई ॥ बा० २०९/१
प्रातकाल उठि कै रघुनाथा । मातु पिता गुरु नावहिं माथा ॥ बा० २०४/७
प्रातकाल सरऊ करि मज्जन । बैठहिं सभाँ संग द्विज सज्जन ॥ उ० २५/१
प्रातक्रिया करि गे गुरु पाहीं । महाप्रमोदु प्रेमु मन माहीं ॥ बा० ३२९/४
प्रातक्रिया करि मातु पद बंदि गुरहि सिरु नाइ ।
आगें किए निषाद गन दीन्हेउ कटकु चलाइ ॥ अ० २०२/०
प्रात नहाइ प्रभुहि सिर नाई । बैठत पठए रिषयँ बोलाई ॥ अ० २५२/८
प्रात पार भए एकहि खेवाँ । तोषे रामसखा की सेवाँ ॥ अ० २२०/३
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे । अरुनचूड़ बर बोलन लागे ॥ बा० ३५७/५

प्रात प्रातकृत करि रघुराई । तीरथराजु दीख प्रभु जाई ॥ अ० १०४/२
प्रात लेइ जो नाम हमारा । तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा ॥ सुं० ६/८
प्रात होत प्रभु सुभट पठाए । हनुमदादि अंगद सब धाए ॥ लं० ८४/४
प्रान कंठगत भयउ भुआलू । मनि बिहीन जनु ब्याकुल ब्यालू ॥ अ० १५३/१
प्रान तजत प्रगटेसि निज देहा । सुमिरेसि रामु समेत सनेहा ॥ अर० २६/१६
प्रान तें अधिक रामु प्रिय मोरें । तिन्ह कें तिलक छोभु कस तोरें ॥ अ० १४/८

प्राननाथ करुनायतन सुंदर सुखद सुजान ।
तुम्ह बिनु रघुकुल कुमुद बिधु सुरपुर नरक समान ॥ अ० ६४/०

प्राननाथ तुम्ह बिनु जग माहीं । मो कहुँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं ॥ अ० ६४/६

प्राननाथ देवर सहित कुसल कोसला आइ ।
पूजिहि सब मनकामना सुजसु रहिहि जग छाइ ॥ अ० १०३/०

प्राननाथ प्रिय देवर साथा । बीर धुरीन धरें धनु भाथा ॥ अ० ९८/१
प्राननाथु रघुनाथ गोसाईं । जो बड़ होत सो राम बड़ाईं ॥ अ० १९८/८

प्रान प्रान के जीव के जिव सुख के सुख राम ।
तुम्ह तजि तात सोहात गृह जिन्हहि तिन्हहि बिधि बाम ॥ अ० २९०/०

प्राबिट सरद पयोद घनेरे । लरत मनहुँ मारुत के प्रेरे ॥ लं० ४५/९
प्रिय परिजनहि मिली बैदेही । जो जेहि जोगु भाँति तेहि तेही ॥ अ० २८५/१
प्रिय परिवार पिता अरु माता । भए बिकल मुख आव न बाता ॥ बा० ७२/८
प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने । भूपति भली भाँति सनमाने ॥ बा० ३५२/७

प्रिय लागिहि अति सबहि मम भनिति राम जस संग ।
दारु बिचारु कि करइ कोउ बंदिअ मलय प्रसंग ॥ बा० १०/० (क)

प्रियबादिनि सिख दीन्हिउँ तोही । सपनेहुँ तो पर कोपु न मोही ॥ अ० १४/१
प्रिय बानी जे सुनहिं जे कहहीं । ऐसे नर निकाय जग अहहीं ॥ लं० ८/८
प्रिय सिय रामु कहा तुम्ह रानी । रामहि तुम्ह प्रिय सो फुरि बानी ॥ अ० १६/५
प्रिया प्रान सुत सरबसु मोरें । परिजन प्रजा सकल बस तोरें ॥ अ० २५/५
प्रिया बचन कस कहसि कुभाँती । भीर प्रतीति प्रीति करि हाँती ॥ अ० ३०/५

प्रिया बचन मृदु सुनत नृपु चितयउ आँखि उघारि ।
तलफत मीन मलीन जनु सींचत सीतल बारि ॥ अ० १५४/०

प्रिया बंधु गति लखि रघुनंदनु । धीर कृपाल भगत उर चंदनु ॥ अ० १४०/७

प्रिया सोचु परिहरहु सबु सुमिरहु श्रीभगवान ।
पारबतिहि निरमयउ जेहिं सोइ करिहि कल्यान ॥ बा० ७१/०

प्रिया हास रिस परिहरहि मागु बिचारि बिबेकु ।
जेहिं देखौं अब नयन भरि भरत राज अभिषेकु ॥ अ० ३२/०

प्रीति करहिं जौं तीनिउ भाई । उपजइ सन्यपात दुखदाई ॥ उ० १२०/३१

प्रीति परम बिलोकि रघुराई । हरषि उठाइ लियो उर लाई ॥ लं० १२०/१२
प्रीति पुनीत भरत कै देखी । सकल सभाँ सुखु लहेउ बिसेषी ॥ बा० २९०/२
प्रीति प्रतीति बचन मन करनी । श्रीमुख राम प्रेम बस बरनी ॥ अ० ३२०/५
प्रीति प्रनय बिनु मद ते गुनी । नासहिं बेगि नीति अस सुनी ॥ अर० २०/११
प्रीति बिना नहिं भगति दिढ़ाई । जिमि खगपति जल कै चिकनाई ॥ उ० ८८/८
प्रीति बिरोध समान सन करिअ नीति असि आहि ।
जौं मृगपति बध मेडुकन्हि भल कि कहइ कोउ ताहि ॥ लं० २३/० (ग)
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा । तृन सम बिषय स्वर्ग अपबर्गा ॥ उ० ४५/७
प्रीति सहित सब भेटे रघुपति करुना पुंज ।
पूँछी कुसल नाथ अब कुसल देखि पद कंज ॥ सुं० २९/०
प्रेम पुलकि तन मन अनुरागीं । मंगल कलस सजन सब लागीं ॥ अ० ७/२
प्रेम पुलकि जन हृदयँ उछाहू । चले बिलोकन राम बिआहू ॥ बा० ३१३/२
प्रेम पुलकि केवट कहि नामू । कीन्ह दूरि तें दंड प्रनामू ॥ अ० २४२/५
प्रेम प्रफुल्लित राजहिं रानी । मनहुँ सिखिनि सुनि बारिद बानी ॥ बा० २९४/३
प्रेमु प्रमोदु न कछु कहि जाई । रंक धनद पदबी जनु पाई ॥ अ० ५१/५
प्रेमु प्रमोदु बिनोदु बड़ाई । समउ समाजु मनोहरताई ॥ बा० ३५४/४
प्रेमबिबस नर नारि सब सखिन्ह सहित रनिवासु ।
मानहुँ कीन्ह बिदेहपुर करुनाँ बिरहँ निवासु ॥ बा० ३३७/०
प्रेमबिबस परिवारु सबु जानि सुलगन नरेस ।
कुअँरि चढ़ाइ पालकिन्ह सुमिरे सिद्धि गनेस ॥ बा० ३३८/०
प्रेम बिबस मुख आव न बानी । दसा देखि हरषे मुनि ग्यानी ॥ बा० १०३/३
प्रेम भगति जल बिनु रघुराई । अभिअंतर मल कबहुँ न जाई ॥ उ० ४८/६
प्रेम भगति जो बरनि न जाई । सोइ मधुरता सुसीतलताई ॥ बा० ३५/६
प्रेम मगन अस राज समाजू । जनु फिरि अवध चले रघुराजू ॥ अ० २२४/८
प्रेम मगन कौसल्या निसि दिन जात न जान ।
सुत सनेह बस माता बालचरित कर गान ॥ बा० २००/०
प्रेम मगन तेहि समय सब सुनि आवत मिथिलेसु ।
सहित सभा संभ्रम उठेउ रबिकुल कमल दिनेसु ॥ अ० २७४/०
प्रेम मगन मनु जानि नृपु करि बिबेकु धरि धीर ।
बोलेउ मुनि पद नाइ सिरु गदगद गिरा गभीर ॥ बा० २१५/०
प्रेम मगन मुख बचन न आवा । पुनि पुनि पद सरोज सिर नावा ॥ अर० ३३/९
प्रेम मगन मोहि कछु न सोहाई । हारेउ पिता पढ़ाइ पढ़ाई ॥ उ० १०९/८
प्रेम सनेम निमज्जत प्रानी । होइहहिं बिमल करम मन बानी ॥ अ० ३०९/८
प्रेम समेत रायँ सबु लीन्हा । भै बकसीस जाचकन्हि दीन्हा ॥ बा० ३०५/२

प्रेम सहित मुनि नारद बरनि राम गुन ग्राम।
सोभासिंधु हृदयँ धरि गए जहाँ बिधि धाम॥ उ० ५१/०
प्रेमाकुल प्रभु मोहि बिलोकी। निज माया प्रभुता तब रोकी॥ उ० ८२/३
प्रेमातुर सब लोग निहारी। कौतुक कीन्ह कृपाल खरारी॥ उ० ५/४
प्रेरित काल बिंधि गिरि जाइ भयउँ मैं ब्याल।
पुनि प्रयास बिनु सो तनु तजेउँ गएँ कछु काल॥ उ० १०९/० (ख)
प्रेरित मंत्र ब्रह्मसर धावा। चला भाजि बायस भय पावा॥ अर० १/१
प्रौढ़ भएँ तेहि सुत पर माता। प्रीति करइ नहिं पाछिलि बाता॥ अर० ४२/७
प्रौढ़ भएँ मोहि पिता पढ़ावा। समझउँ सुनउँ गुनउँ नहिं भावा॥ उ १०९/५
प्रौढ़ि सुजन जनि जानहिं जन की। कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मन की॥ बा० २२/३

फ

फटिक सिला अति सुभ्र सुहाई। सुख आसीन तहाँ द्वौ भाई॥ कि० १२/६
फटिक सिला बैठे द्वौ भाई। परे सकल कपि चरनन्हि जाई॥ सुं० २८/८
फरइ कि कोदव बालि सुसाली। मुकता प्रसव कि संबुक काली॥ अ० २६०/४
फरकत अधर कोप मन माहीं। सपदि चले कमलापति पाहीं॥ बा० १३५/२
फल अनेक बर बस्तु सुहाईं। हरषि भेंट हित भूप पठाईं॥ बा० ३०४/३
फल भारन नमि बिटप सब रहे भूमि निअराइ।
पर उपकारी पुरुष जिमि नवहिं सुसंपति पाइ॥ अर० ४०/०
फिरत अहेर राम छबि देखी। होहिं मुदित मृगबृंद बिसेषी॥ अ० १३७/२
फिरत अहेरें परेउँ भुलाई। बड़ें भाग देखेउँ पद आई॥ बा० १५८/६
फिरत नारि नर अति पछिताहीं। दैअहि दोषु देहिं मन माहीं॥ अ० ११८/१
फिरत फिरत निज आश्रम आयउँ। तहँ पुनि रहि कछु काल गवाँयउँ॥ उ० ८१/२
फिरत बिपिन आश्रम एक देखा। तहँ बस नृपति कपट मुनिबेषा॥ बा० १५७/१
फिरत बिपिन नृप दीख बराहू। जनु बन दुरेउ ससिहि ग्रसि राहू॥ बा० १५५/५
फिरत लाज कछु करि नहिं जाई। मरनु ठानि मन रचेसि उपाई॥ बा० ८५/५
फिरत सदा माया कर प्रेरा। काल कर्म सुभाव गुन घेरा॥ उ० ४३/५
फिरत सनेहँ मगन सुख अपनें। नाम प्रसाद सोच नहिं सपनें॥ बा० २४/८
फिरती बार मोहि जो देबा। सो प्रसादु मैं सिर धरि लेबा॥ अ० १०१/८
फिरहिं गएँ दिनु पहर अढ़ाई। प्रभु पद कमल बिलोकहिं आई॥ अ० ३११/८
फिरहिं भवन प्रिय आयसु पाई। करत परसपर राम बड़ाई॥ अ० २३/३
फिरा करमु प्रिय लागि कुचाली। बकिहि सराहइ मानि मराली॥ अ० १९/४
फिरि चितवा पाछें प्रभु देखा। सहित बंधु सिय सुंदर बेषा॥ बा० ५३/५
फिरि पछितैहसि अंत अभागी। मारसि गाय नहारू लागी॥ अ० ३५/८
फिरि सब नगर दसानन देखा। गयउ सोच सुख भयउ बिसेषा॥ बा० १७८/५

फिरिहि दसा बिधि बहुरि कि मोरी । देखिहउँ नयन मनोहर जोरी ॥ अ० ६७/७
फिरेउ निषादु प्रभुहि पहुँचाई । सचिव सहित रथ देखेसि आई ॥ अ० १४१/५
फिरे बीर रिपु मरइ न मारा । तब धावा करि घोर चिकारा ॥ लं० ७५/९
फूलइ फरइ न बेत जदपि सुधा बरषहिं जलद ।
मूरुख हृदयँ न चेत जौं गुर मिलहिं बिरंचि सम ॥ लं० १६/० (ख)
फूलत फलत भयउ बिधि बामा । जानि न जाइ काह परिनामा ॥ अ० ५८/४
फूलहिं नभ बरु बहुबिधि फूला । जीव न लह सुख हरि प्रतिकूला ॥ उ० १२१/१६
फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन । रहहिं एक सँग गज पंचानन ॥ उ० २२/१
फूलहिं फलहि बिटप बिधि नाना । मंजु बलित बर बेलि बिताना ॥ अ० १३६/६
फूलें कमल सोह सर कैसा । निर्गुन ब्रह्म सगुन भएँ जैसा ॥ कि० १६/२
फूलें कास सकल महि छाई । जनु बरषाँ कृत प्रगट बुढ़ाई ॥ कि० १५/२
फेरति मनहुँ मातु कृत खोरी । चलत भगति बल धीरज धोरी ॥ अ० २३३/५
फेरहिं चतुर तुरग गति नाना । हरषहिं सुनि सुनि पनव निसाना ॥ बा० २९८/२
फेरि भरत मति करि निज माया । पालु बिबुध कुल करि छल छाया ॥ अ० २९४/२
फोरै जोगु कपारु अभागा । भलेउ कहत दुख रउरेहि लागा ॥ अ० १५/२

ब

बक्र उक्ति धनु बचन सर हृदय दहेउ रिपु कीस ।
प्रतिउत्तर सड़सिन्ह मनहुँ काढ़त भट दससीस ॥ लं० २३/० (ङ)
बचन कर्म मन कपट तजि भजेहु राम रनधीर ।
जाहु न निज पर सूझ मोहि भयउँ कालबस बीर ॥ लं० ६४/०
बचन कर्म मन मोरि गति भजनु करहिं निःकाम ।
तिन्ह के हृदय कमल महुँ करउँ सदा बिश्राम ॥ अर० १६/०
बचन कहत भरे लोचन बारी । बहुरि लाइ उर लीन्हि कुमारी ॥ बा० १०१/४
बचन कायँ मन मम गति जाही । सपनेहुँ बूझिअ बिपति कि ताही ॥ सुं० ३१/२
बचन परम हित सुनत कठोरे । सुनहिं जे कहहिं ते नर प्रभु थोरे ॥ लं० ८/९
बचन बिनीत मधुर रघुबर के । सर सम लगे मातु उर करके ॥ अ० ५३/१
बचन बज्र जेहि सदा पिआरा । सहस नयन पर दोष निहारा ॥ बा० ३/११
बचन सप्रेम लखन पहिचाने । करत प्रनामु भरत जियँ जाने ॥ अ० २३९/३
बचन सुनत उपजा सुख भारी । परेउ चरन भरि लोचन बारी ॥ उ० १९/४
बचन सुनत कपि मन मुसुकाना । भइ सहाय सारद मैं जाना ॥ सुं० २४/३
बचन सुनत पुरजन अनुरागे । तिन्ह के भाग सराहन लागे ॥ अ० २५०/८
बचन सुनत सब बानर जहँ तहँ चले तुरंत ।
तब सुग्रीवँ बोलाए अंगद नल हनुमंत ॥ कि० २२/०
बचन सुनत सुरगुरु मुसुकाने । सहसनयन बिनु लोचन जाने ॥ अ० २१७/१

बचनु न आव नयन भरे बारी । अहह नाथ हौं निपट बिसारी ॥ सुं० १३/७
बचनु न आव हृदयँ पछिताई । अवध काह मैं देखब जाई ॥ अ० १४४/७
बट छायाँ बेदिका बनाई । सियँ निज पानि सरोज सुहाई ॥ अ० २३६/८
बटु बिस्वास अचल निज धरमा । तीरथराज समाज सुकरमा ॥ बा० १/११
बड़ अधिकार दच्छ जब पावा । अति अभिमानु हृदयँ तब आवा ॥ बा० ५९/७

बड़ कुघातु करि पातकिनि कहेसि कोपगृहँ जाहु ।
काजु सँवारेहु सजग सबु सहसा जनि पतिआहु ॥ अ० २२/०

बड़ दुख कवन कवन सुख भारी । सोउ संछेपहिं कहहु बिचारी ॥ उ० १२०/४
बड़ बिधु नहिं समात मुख माहीं । मनहुँ क्रोध बस उगिलत नाहीं ॥ बा० १५५/६
बड़भागी अंगद हनुमाना । चरन कमल चापत बिधि नाना ॥ लं० १०/७
बड़भागी बनु अवध अभागी । जो रघुबंसतिलक तुम्ह त्यागी ॥ अ० ५५/५
बड़े भाग पाइब सतसंगा । बिनहिं प्रयास होहिं भव भंगा ॥ उ० ३२/८
बड़ें भाग बिधि बात बनाई । नयन अतिथि होइहहिं दोउ भाई ॥ बा० ३०९/८
बड़ें भाग मानुष तनु पावा । सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा ॥ उ० ४२/७
बड़े भोर भूपतिमनि जागे । जाचक गुन गन गावन लागे ॥ बा० ३२९/२
बड़े सनेह लघुन्ह पर करहीं । गिरि निज सिरनि सदा तृन धरहीं ॥ बा० १६६/७
बड़ें समाज बिलोकेउँ भागू । बड़ीं चूक साहिब अनुरागू ॥ अ० २९९/४
बदन पइठि पुनि बाहेर आवा । मागा बिदा ताहि सिरु नावा ॥ सुं० १/११

बदरीबन कहुँ सो गई प्रभु अग्या धरि सीस ।
उर धरि राम चरन जुग जे बंदत अज ईस ॥ कि० २५/०

बधि बिराध खर दूषनहिं लीलाँ हत्यो कबंध ।
बालि एक सर मारयो तेहि जानहु दसकंध ॥ लं० ३६/०

बधुन्ह समेत कुमार सब रानिन्ह सहित महीसु ।
पुनि पुनि बंदत गुर चरन देत असीस मुनीसु ॥ बा० ३५२/०

बधुन्ह समेत देखि सुत चारी । परमानंद मगन महतारी ॥ बा० ३४८/३
बधू लरिकनीं पर घर आईं । राखेहु नयन पलक की नाईं ॥ बा० ३५४/८
बधू सप्रेम गोद बैठारीं । बार बार हियँ हरषि दुलारीं ॥ बा० ३५३/४
बधें पापु अपकीरति हारें । मारतहूँ पा परिअ तुम्हारें ॥ बा० २७२/७
बनइ न बरनत नगर निकाई । जहाँ जाइ मन तहँइँ लोभाई ॥ बा० २१२/१
बनइ न बरनत बनी बराता । होहिं सगुन सुंदर सुभदाता ॥ बा० ३०२/१
बन उजारि रावनहि प्रबोधी । पुर दहि नाघेउ बहुरि पयोधी ॥ उ० ६६/५
बन उपबन बापिका तड़ागा । परम सुभग सब दिसा बिभागा ॥ बा० ८५/७
बन कुसुमित गिरिगन मनिआरा । स्रवहिं सकल सरिताऽमृतधारा ॥ बा० १९०/४
बनचर कोल किरात बिचारे । थके बिलोकि पथिक हियँ हारे ॥ अ० २७५/५

बनचर देह धरी छिति माहीं । अतुलित बल प्रताप तिन्ह पाहीं ॥ बा० १८७/३
बनत उपाउ करत कछु नाहीं । राम सरन सब गे मन माहीं ॥ अ० २६४/२
बन दिसि देव सौंपि सब काहू । चले जहाँ रावन ससि राहू ॥ अर० २७/६
बन दुख नाथ कहे बहुतेरे । भय बिषाद परिताप घनेरे ॥ अ० ६५/५
बनदेबीं बनदेव उदारा । करिहहिं सासु ससुर सम सारा ॥ अ० ६५/१
बनु देखाइ सुरसरि अन्हवाई । आनहु फेरि बेगि दोउ भाई ॥ अ० ९३/७
बन प्रदेस मुनि बास घनेरे । जनु पुर नगर गाउँ गन खेरे ॥ अ० २३५/१
बन बसि कीन्हे चरित अपारा । कहहु नाथ जिमि रावन मारा ॥ बा० १०९/७
बन बहु बिषम मोह मद माना । नदीं कुतर्क भयंकर नाना ॥ बा० ३७/९
बन बाग उपबन बाटिका सर कूप बापीं सोहहीं ।
नर नाग सुर गंधर्ब कन्या रूप मुनि मन मोहहीं ॥
कहुँ माल देह बिसाल सैल समान अतिबल गर्जहीं ।
नाना अखारेन्ह भिरहिं बहु बिधि एक एकन्ह तर्जहीं ॥ सुं० २/२ छं०
बन बिधंसि सुत बधि पुर जारा । तदपि न तेहिं कछु कृत अपकारा ॥ लं० २३/६
बन बेहड़ गिरि कंदर खोहा । सब हमार प्रभु पग पग जोहा ॥ अ० १३५/६
बन मग मंगल कुसल हमारें । कृपा अनुग्रह पुन्य तुम्हारें ॥ अ० १५०/८
बन रघुपति सुरपति नरनाहू । तुम्ह एहि भाँति तात कदराहू ॥ अ० १७५/३
बन सागर सब नदीं तलावा । हिमगिरि सब कहुँ नेवत पठावा ॥ बा० ९३/४
बन सिय रामु समुझि मन माहीं । सानुज भरत पयादेहिं जाहीं ॥ अ० १८७/२
बन हित कोल किरात किसोरी । रचीं बिरंचि बिषय सुख भोरी ॥ अ० ५९/१
बना बजारु न जाइ बखाना । तोरन केतु पताक बिताना ॥ बा० ३४३/६
बनी बिसाल बाजि गज साला । हय गय रथ संकुल सब काला ॥ बा० २१३/२
बने बराती बरनि न जाहीं । महा मुदित मन सुख न समाहीं ॥ बा० ३४७/४
बय किसोर सुषमा सदन स्याम गौर सुख धाम ।
अंग अंग पर वारिअहिं कोटि कोटि सत काम ॥ बा० २२०/०
बय बपु बरन रूपु सोइ आली । सीलु सनेहु सरिस सम चाली ॥ अ० २२१/२
बयरु अकारन सब काहू सों । जो कर हित अनहित ताहू सों ॥ उ० ३८/६
बयरु न कर काहू सन कोई । राम प्रताप बिषमता खोई ॥ उ० १९/८
बयरु बिहाइ चरहिं एक संगा । जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरंगा ॥ अ० २३५/४
बर अनुहारि बरात न भाई । हँसी करैहहु पर पुर जाई ॥ बा० ९२/१
बर कुअँरि करतल जोरि साखोचारु दोउ कुलगुर करैं ।
भयो पानिगहनु बिलोकि बिधि सुर मनुज मुनि आँनद भरैं ॥
सुखमूल दूलहु देखि दंपति पुलक तन हुलस्यो हियो ।
करि लोक बेद बिधानु कन्यादानु नृपभूषन कियो ॥ बा० ३२३/३ छं०

बर तर कह हरि कथा प्रसंगा। आवहिं सुनहिं अनेक बिहंगा ॥ उ० ५६/७
बर दायक प्रनतारति भंजन। कृपासिंधु सेवक मन रंजन ॥ बा० ६९/७
बरनत छबि जहँ तहँ सब लोगू। अवसि देखिअहिं देखन जोगू ॥ बा० २२८/६
बरनत पंथ बिबिधि इतिहासा। बिस्वनाथ पहुँचे कैलासा ॥ बा० ५७/६
बरनत बरन प्रीति बिलगाती। ब्रह्म जीव सम सहज सँघाती ॥ बा०.१९/४
बरनत रघुबर भरत बियोगू। सुनि कठोर कबि जानिहि लोगू ॥ अ० ३१७/२
बरनत सकल सुकबि सकुचाहीं। सेस गनेस गिरा गमु नाहीं ॥ अ० ३२४/८
बरन धर्म नहिं आश्रम चारी। श्रुति बिरोध रत सब नर नारी ॥ उ० ९७/१
बरन बरन बिकसे बन जाता। त्रिबिध समीर सदा सुखदाता ॥ बा० २११/८
बरन बरन बिरदैत निकाया। समर सूर जानहिं बहु माया ॥ लं० ७८/४
बरनब राम बिबाह समाजू। सो मुद मंगलमय रितुराजू ॥ बा० ४१/३
बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखहि नहिं भय सोक न रोग ॥ उ० २०/०
बरनि उमापति राम गुन हरषि गए कैलास।
तब प्रभु कपिन्ह दिवाए सब बिधि सुखप्रद बास ॥ उ० १४/० (ख)
बरनि न जाइ अनीति घोर निसाचर जो करहिं।
हिंसा पर अति प्रीति तिन्ह के पापहि कवन मिति ॥ बा० १८३/० सो०
बरनि न जाइ दसा तिन्ह केरी। लहि जनु रंकन्ह सुरमनि ढेरी ॥ अ० ११३/५
बरनि न जाइ मनोहर जोरी। सोभा बहुत थोरि मति मोरी ॥ अ० ११५/१
बरनि न जाइ रुचिर अँगनाई। जहँ खेलहिं नित चारिउ भाई ॥ उ० ७५/३
बरनि न जाहिं मंजु दुइ साला। एक ललित लघु एक बिसाला ॥ अ० १३२/८
बरनि राम गुन सीलु सुभाऊ। बोले प्रेम पुलकि मुनिराऊ ॥ अ० ९/१
बरनि सप्रेम भरत अनुभाऊ। तिय जिय की रुचि लखि कह राऊ ॥ अ० २८८/३
बर पायहु कीन्हेहु सब काजा। जीतेहु लोकपाल सब राजा ॥ लं० १९/४
बर प्रसाद सो मरइ न मारा। तब गहि पद लंका पर डारा ॥ लं० ७३/९
बरबस राज सुतहि तब दीन्हा। नारि समेत गवन बन कीन्हा ॥ बा० १४२/१
बरबस राम सुमंत्रु पठाए। सुरसरि तीर आपु तब आए ॥ अ० ९९/२
बरबस रोकि बिलोचन बारी। धरि धीरजु उर अवनिकुमारी ॥ अ० ६३/४
बरबस लिए उठाइ उर लाए कृपानिधान।
भरत राम की मिलनि लखि बिसरे सबहि अपान ॥ अ० २४०/०
बर मागत मन भइ नहिं पीरा। गरि न जीह मुहँ परेउ न कीरा ॥ अ० १६१/२
बरै बालकु एकु सुभाऊ। इन्हहि न संत बिदूषहिं काऊ ॥ बा० २७८/३
बरष चारिदस बासु बन मुनि ब्रत बेषु अहारु।
ग्राम बासु नहिं उचित सुनि गुहहि भयउ दुखु भारु ॥ अ० ८८/०

बरष चारिदस बिपिन बसि करि पितु बचन प्रमान।
आइ पाय पुनि देखिहउँ मनु ज़नि करसि मलान ॥ अ० ५३/०
बरष सहस दस त्यागेउ सोऊ। ठाढ़े रहे एक पद दोऊ ॥ बा० १४४/१
बरषहिं जलद भूमि निअराएँ। जथा नवहिं बुध बिद्या पाएँ ॥ कि० १३/३
बरषहिं राम सुजस बर बारी। मधुर मनोहर मंगलकारी ॥ बा० ३५/४
बरषहिं सुमन छनहिं छन देवा। नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा ॥ बा० ३४८/६
बरषहिं सुमन देव मुनि बृंदा। जय कृपाल जय जयति मुकुंदा ॥ लं० १०२/११
बरिषहिं सुमन रंग बहु माला। गावहिं किंनर गीत रसाला ॥ बा० २६१/६
बरषहिं सुमन सुअंजुलि साजी। गहगहि गगन दुंदभी बाजी ॥ बा० १९०/७
बरषहिं सुमन हरषि सुर बाजहिं गगन निसान।
गावहिं किंनर सुरबधू नाचहिं चढ़ीं बिमान ॥ लं० १०९/० (क)
बरषा काल मेघ नभ छाए। गरजत लागत परम सुहाए ॥ कि० १२/८
बरषा गत निर्मल रितु आई। सुधि न तात सीता कै पाई ॥ कि० १७/१
बरषा घोर निसाचर रारी। सुरकुल सालि सुमंगलकारी ॥ बा० ४१/५
बरषा बिगत सरद रितु आई। लछिमन देखहु परम सुहाई ॥ कि० १५/१
बरषा रितु रघुपति भगति तुलसी सालि सुदास।
राम नाम बर बरन जुग सावन भादव मास ॥ बा० १९/०
बरषि धूरि कीन्हेसि अँधिआरा। सूझ न आपन हाथ पसारा ॥ लं० ५१/४
बरषि प्रसून हरषि सुरराऊ। लगे सराहन भरत सुभाऊ ॥ अ० २१९/४
बरषि सुमन कह देव समाजू। नाथ सनाथ भए हम आजू ॥ अ० १३३/३
बरषि सुमन दुंदुभीं बजावहिं। श्रीरघुनाथ बिमल जसु गावहिं ॥ लं० ७६/३
बरषि सुमन सुर सकल सिहाहीं। एहि सम पुन्यपुंज कोउ नाहीं ॥ अ० १००/८
बरषि सुमन सुर सुंदरि गावहिं। मुदित देव दुंदुभीं बजावहिं ॥ बा० ३०५/१
बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं ॥ लं० ६०/१२
बरुन कुबेर पवन जम काला। भुज बल जितेउँ सकल दिगपाला ॥ लं० ७/३
बरुन कुबेर सुरेस समीरा। रन सन्मुख धरि काहुँ न धीरा ॥ लं० १०३/७
बरुन पास मनोज धनु हंसा। गज केहरि निज सुनत प्रसंसा ॥ अर० २९/१२
बरु पावक प्रगटै ससि माहीं। नारद बचनु अन्यथा नाहीं ॥ बा० ७०/८
बरु बिलोकि दंपति अनुरागे। पाय पुनीत पखारन लागे ॥ बा० ३२३/८
बरु बौराह बसहँ असवारा। ब्याल कपाल बिभूषन छारा ॥ बा० ९४/८
बरु भल बास नरक कर ताता। दुष्ट संग जनि देइ बिधाता ॥ सुं० ४५/७
बसइ नगर जेहिं लच्छि करि कपट नारि बर बेषु।
तेहि पुर कै सोभा कहत सकुचहिं सारद सेषु ॥ बा० २८९/०
बसन बिचित्र पाँवड़े परहीं। देखि धनद धन मदु परिहरहीं ॥ बा० ३०५/५

बसन हीन नहिं सोह सुरारी। सब भूषन भूषित बर नारी॥ सुं० २२/४

बसह बाजि गज पसु हियँ हारें। चले जाहिं परबस मन मारें॥ अ० ३१९/८

बसहिं कुदेस कुगाँव कुबामा। कहँ यह दरसु पुन्य परिनामा॥ अ० २२२/७

बसहिं तहाँ मुनि सिद्ध समाजा। तहँ हियँ हरषि चलेउ मनु राजा॥ बा० १४२/३

बसहिं नगर सुंदर नर नारी। जनु बहु मनसिज रति तनुधारी॥ बा० १२९/१

बस्तु अनेक करिअ किमि लेखा। कहि न जाइ जानहिं जिन्ह देखा॥ बा० ३२५/५

बस्तु अनेक निछावरि होहीं। भरीं प्रमोद मातु सब सोहीं॥ बा० ३४९/५

बस्तु सकल राखीं नृप आगें। बिनय कीन्हि तिन्ह अति अनुरागें॥ बा० ३०५/२

बलकल बसन जटिल तनु स्यामा। जनु मुनि बेष कीन्ह रति कामा॥ अ० २३८/७

बल बिबेक दम परहित घोरे। छमा कृपा समता रजु जोरे॥ लं० ७९/६

बलमप्रमेयमनादिमजमब्यक्तमेकमगोचरं।
गोबिंद गोपर द्वंद्वहर बिग्यानघन धरनीधरं॥
जे राम मंत्र जपंत संत अनंत जन मन रंजनं।
नित नौमि राम अकाम प्रिय कामादि खल दल गंजनं॥ अर० ३१/२ छं०

बलि बाँधत प्रभु बाढ़ेउ सो तनु बरनि न जाइ।
उभय घरी महँ दीन्हीं सात प्रदच्छिन धाइ॥ कि० २९/०

बलिहि जितन एक गयउ पताला। राखेउ बाँधि सिसुन्ह हयसाला॥ लं० २३/१३

बलु प्रतापु बीरता बड़ाई। नाक पिनाकहि संग सिधाई॥ बा० २६५/७

बहइ न हाथु दहइ रिस छाती। भा कुठारु कुंठित नृपघाती॥ बा० २७९/१

बहइ सुहावन त्रिबिध समीरा। भइ सरजू अति निर्मल नीरा॥ उ० २/१०

बहु आयुध धर सुभट सब भिरहिं पचारि पचारि।
ब्याकुल किए भालु कपि परिघ त्रिसूलन्हि मारि॥ लं० ४२/०

बहु कृपान तरवारि चमंकहिं। जनु दहँ दिसि दामिनीं दमंकहिं॥ लं० ८६/३

बहु छल बल सुग्रीव कर हियँ हारा भय मानि।
मारा बालि राम तब हृदय माझ सर तानि॥ कि० ८/०

बहुत उछाहु भवनु अति थोरा। मानहुँ उमगि चला चहु ओरा॥ बा० २९६/८

बहुतक चढ़ीं अटारिन्ह निरखहिं गगन बिमान।
देखि मधुर सुर हरषित करहिं सुमंगल गान॥ उ० ३/० (ख)

बहुत कहउँ का कथा बढ़ाई। एहि आचरन बस्य मैं भाई॥ उ० ४५/४

बहुत कहेउँ सब कियउँ ढिठाई। उचित होइ तस करिअ गोसाँई॥ अ० २४७/८

बहुत काल मैं कीन्हि मजूरी। आजु दीन्ह बिधि बनि भलि भूरी॥ अ० १०१/६

बहुत कीन्ह प्रभु लखन सियँ नहिं कछु केवटु लेइ।
बिदा कीन्ह करुनायतन भगति बिमल बरु देइ॥ अ० १०२/०

बहुत दिवस गुरु दरसनु पाएँ। भए मोहि एहिं आश्रम आएँ॥ अर० ११/२

बहुत दिवस बीते एहि भाँती । जनु सनेह रजु बँधे बराती ॥ बा० ३३१/५
बहुत बुझाइ तुम्हहि का कहऊँ । परम चतुर मैं जानत अहऊँ ॥ लं० १६/७
बहुत लाभ लोगन्ह लघु हानी । सम दुख सुख सब रोवहिं रानी ॥ अ० २५५/६
बहु दाम सँवारहिं धाम जती । बिषया हरि लीन्हि न रहि बिरती ॥ उ० १००/१ छं०
बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं । कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं ॥ बा० २७०/७
बहु प्रकार गिरि कानन हेरहिं । कोउ मुनि मिलइ ताहि सब घेरहिं ॥ कि० २३/२
बहु प्रकार तिन्ह पूजा कीन्ही । जनकसुता देखाइ पुनि दीन्ही ॥ लं० १०६/४
बहु प्रकार तेहिं ग्यान सुनावा । देह जनित अभिमान छड़ावा ॥ कि० २७/६
बहु प्रकार भूषन पहिराए । सिबिका रुचिर साजि पुनि ल्याए ॥ लं० १०७/७
बहु प्रकार मारन कपि लागे । दीन पुकारत तदपि न त्यागे ॥ सुं० ५१/५
बहु प्रकार सीतहि समुझाएहु । कहि बल बिरह बेगि तुम्ह आएहु ॥ कि० २२/११
बहु प्रकार संकरहि सराहा । तुम्ह बिनु अस ब्रतु को निरबाहा ॥ बा० ७५/६
बहु बासना मसक हिम रासिहि । सदा एकरस अज अबिनासिहि ॥ उ० २९/९
बहुबिधि करत मनोरथ जात लागि नहिं बार ।
करि मज्जन सरऊ जल गए भूप दरबार ॥ बा० २०६/०
बहु बिधि करि बिलाप जानकी । करि करि सुरति कृपानिधान की ॥ लं० ९८/११
बहु बिधि कीन्हि गाधिसुत पूजा । नाथ मोहि सम धन्य न दूजा ॥ बा० ३५१/५
बहु बिधि खल सीतहि समुझावा । साम दान भय भेद देखावा ॥ सुं० ८/३
बहुबिधि चेरिहि आदरु देई । कोपभवन गवनी कैकेई ॥ अ० २२/४
बहुबिधि बिनय कीन्हि तेहि काला । प्रगटेउ प्रभु कौतुकी कृपाला ॥ बा० १३१/३
बहुबिधि बिलपि चरन लपटानी । परम अभागिनि आपुहि जानी ॥ अ० ५६/६
बहुबिधि भूप भाट जिमि बरनी । रानीं सब प्रमुदित सुनि करनी ॥ बा० ३५३/८
बहुबिधि भूप सुता समुझाई । नारिधरमु कुलरीति सिखाई ॥ बा० ३३८/१
बहुबिधि मुनिहि प्रबोधि प्रभु तब भए अंतरधान ।
सत्यलोक नारद चले करत राम गुन गान ॥ बा० १३८/०
बहु बिधि मोहि प्रबोधि सुख देई । लगे करन सिसु कौतुक तेई ॥ उ० ८७/५
बहुबिधि राम सिवहि समुझावा । पारबती कर जन्मु सुनावा ॥ बा० ७५/७
बहु बिधि सोचत सोच बिमोचन । स्रवत सलिल राजिव दल लोचन ॥ लं० ६०/१७
बहु बिधि संभु सासु समुझाई । गवनी भवन चरन सिरु नाई ॥ बा० १०१/१
बहु बिलाप दसकंधर करई । बंधु सीस पुनि पुनि उर धरई ॥ लं० ७१/४
बहु भट बहहिं चढ़े खग जाहीं । जनु नावरि खेलहिं सरि माहीं ॥ लं० ८७/६
बहु मनि रचित झरोखा भ्राजहिं । गृह गृह प्रति मनि दीप बिराजहिं ॥ उ० २६/८
बहु रज स्वल्प सत्व कछु तामस । द्वापर धर्म हरष भय मानस ॥ उ० १०३/४
बहुरहिं लखनु भरतु बन जाहीं । सब कर भल सब के मन माहीं ॥ अ० २८८/४

बहु राम लछिमन देखि मर्कट भालु मन अति अपडरे।
जनु चित्र लिखित समेत लछिमन जहँ सो तहँ चितवहिं खरे॥
निज सेन चकित बिलोकि हँसि सर चाप सजि कोसल धनी।
माया हरी हरि निमिष महुँ हरषी सकल मर्कट अनी॥ लं० ८८/१ छं०
बहुरि आइ देखा सुत सोई। हृदयँ कंप मन धीर न होई॥ बा० २००/६
बहुरि कहउँ छबि जसि मन बसई। जनु मधु मदन मध्य रति लसई॥ अ० १२२/३
बहुरि कहहु करुनायतन कीन्ह जो अचरज राम।
प्रजा सहित रघुबंसमनि किमि गवने निज धाम॥ बा० ११०/०
बहुरि कहेउ रति कर बरदाना। सुनि हिमवंत बहुत सुखु माना॥ बा० ९०/२
बहुरि कीन्हि कोसलपति पूजा। जानि ईस सम भाउ न दूजा॥ बा० ३२०/१
बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू। भूपकिसोर देखि किन लेहू॥ बा० २३३/२
बहुरि धीर धरि उठे सँभारी। कहु पितु मरन हेतु महतारी॥ अ० १५९/६
बहुरि निहारि निषाद सनेहू। कुलिस कठिन उर भयउ न बेहू॥ अ० २६१/६
बहुरि बच्छ कहि लालु कहि रघुपति रघुबर तात।
कबहिं बोलाइ लगाइ हियँ हरषि निरखिहउँ गात॥ अ० ६८/०
बहुरि बदनु बिधु अंचल ढाँकी। पिय तन चितइ भौंह करि बाँकी॥ अ० ११६/६
बहुरि बसिष्ठ दीन्हि अनुसासन। बरु दुलहिनि बैठे एक आसन॥ बा० ३२४/१०
बहुरि बहुरि कोसलपति कहहीं। जनकु प्रेमबस फिरै न चहहीं॥ बा० ३३९/४
बहुरि बहुरि भेटहिं महतारीं। कहहिं बिरंचि रचीं कत नारीं॥ बा० ३३३/८
बहुरि बिचारु कीन्ह मन माहीं। सीय बदन सम हिमकर नाहीं॥ बा० २३६/८
बहुरि बिचारि परस्पर कहहीं। रघुपति भगत भगति बस अहहीं॥ अ० २६४/३
बहुरि बिभीषन भवन सिधायो। मनि गन बसन बिमान भरायो॥ लं० ११६/३
बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा। जेहि बिधि गए सरोबर तीरा॥ उ० ६५/८
बहुरि बिलोकि बिदेह सन कहहु काह अति भीर।
पूछत जान अजान जिमि ब्यापेउ कोपु सरीर॥ बा० २६९/०
बहुरि बिलोकेउ नयन उघारी। कछु न दीख तहँ दच्छकुमारी॥ बा० ५४/७
बहुरि बोलाइ सुआसिनि लीन्हीं। रुचि बिचारि पहिरावनि दीन्हीं॥ बा० ३५२/५
बहुरि बंदि खल गन सतिभाएँ। जे बिनु काज दाहिनेहु बाएँ॥ बा० ३/१
बहुरि महाजन सकल बोलाए। आइ सबन्हि सादर सिर नाए॥ बा० २८६/३
बहुरि मातु तहवाँ चलि आई। भोजन करत देख सुत जाई॥ बा० २००/४
बहुरि मुनिन्ह हिमवंत कहुँ लगन सुनाई आइ।
समय बिलोकि बिबाह कर पठए देव बोलाइ॥ बा० ९९/०
बहुरि मुनीसन्ह उमा बोलाईं। करि सिंगारु सखीं लै आईं॥ बा० ९९/५
बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा। पुनि नृप बचन राज रस भंगा॥ उ० ६४/१

बहुरि राम अस मन अनुमाना । होइहि भीर सबहिं मोहि जाना ॥ अर० २/२
बहुरि राम छबिधाम बिलोकी । रहेउ ठटुकि एकटक पल रोकी ॥ सुं० ४४/३
बहुरि राम जानकिहि देखाई । जमुना कलि मल हरनि सुहाई ॥ लं० ११९/५
बहुरि राम पद पंकज धोए । जे हर हृदय कमल महुँ गोए ॥ बा० ३२७/५
बहुरि राममायहि सिरु नावा । प्रेरि सतिहि जेहिं झूँठ कहावा ॥ बा० ५५/५
बहुरि राम सब तन चितइ बोले बचन गँभीर ।
द्वंदजुद्ध देखहु सकल श्रमित भए अति बीर ॥ लं० ८९/०
बहुरि लखन सिय प्रीति बखानी । सोक सनेह मगन मुनि ग्यानी ॥ अ० १७०/८
बहुरि लखन पायन्ह सोइ लागा । लीन्ह उठाइ उमगि अनुरागा ॥ अ० ११०/३
बहुरि सक्र सम बिनवउँ तेही । संतत सुरानीक हित जेही ॥ बा० ३/१०
बहुरि सप्तरिषि सिव पहिं जाई । कथा उमा कै सकल सुनाई ॥ बा० ८९/२
बहुरि सपरिजन भरत कहुँ रिषि अस आयसु दीन्ह ।
बिधि बिसमय दायकु बिभव मुनिबर तपबल कीन्ह ॥ अ० २१४/०
बहुरि समुझि तिय धरमु सयानी । रामु भरतु दोउ सुत सम जानी ॥ अ० ५४/६
बहुरि सोचबस भे सियरवनू । कारन कवन भरत आगवनू ॥ अ० २२६/१
बहुरे लोग रजायसु भयऊ । सुतन्ह समेत नृपति गृहँ गयऊ ॥ बा० ३६०/३
बहु रोग बियोगन्हि लोग हए । भवदंघ्रि निरादर के फल ए ॥ उ० १३/९ छं०
बहु लालसा कथा पर बाढ़ी । नयनन्हि नीरु रोमावलि ठाढ़ी ॥ बा० १०३/२
बाउ कृपा मूरति अनुकूला । बोलत बचन झरत जनु फूला ॥ बा० २७९/४
बागु तड़ागु बिलोकि प्रभु हरषे बंधु समेत ।
परम रम्य आरामु यहु जो रामहि सुख देत ॥ बा० २२७/०
बागन्ह बिटप बेलि कुम्हिलाहीं । सरित सरोवर देखि न जाहीं ॥ अ० ८२/८
बाजहि ढोल देहिं सब तारी । नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी ॥ सुं० २४/७
बाजहि ढोल निसान जुझाऊ । सुनि धुनि होइ भटन्हि मन चाऊ ॥ लं० ४०/२
बाजहि ताल पखाउज बीना । नृत्य करहिं अपछरा प्रबीना ॥ लं० ९/९
बाजहिं ताल मृदंग अनूपा । सोइ रव मधुर सुनहु सुरभूपा ॥ लं० १२/७
बाजहि बहु बाजने सुहाए । जहँ तहँ जुबतिन्ह मंगल गाए ॥ बा० २६२/२
बाजहिं बाजन बिबिध बिधाना । सुमनबृष्टि नभ भै बिधि नाना ॥ बा० १००/५
बाजहिं बाजने बिबिध प्रकारा । नभ अरु नगर सुमंगलचारा ॥ बा० ३१७/५
बाजहिं बाजने बिबिध बिधाना । पुर प्रमोदु नहिं जाइ बखाना ॥ अ० १०/१
बाजहिं भेरि नफीरि अपारा । सुनि कादर उर जाहिं दरारा ॥ लं० ४०/३
बाजार रुचिर न बनइ बरनत बस्तु बिनु गथ पाइए ।
जहँ भूप रमानिवास तहँ की संपदा किमि गाइए ॥
बैठे बजाज सराफ बनिक अनेक मनहुँ कुबेर ते ।

सब सुखी सब सच्चरित सुंदर नारि नर सिसु जरठ जे ॥ उ० २७/१ छं०
बाजि बिरह गति कहि किमि जाती । बिनु मनि फनिक बिकल जेहि भाँती ॥ अ० १४२/८
बाजे नभ गहगहे निसाना । देवबधू नाचहिं करि गाना ॥ बा० २६१/४
बाँटी बिपति सबहिं मोहि भाई । तुम्हहि अवधि भरि बड़ि कठिनाई ॥ अ० ३०५/६
बाढ़े खल बहु चोर जुआरा । जे लंपट परधन परदारा ॥ बा० १८३/१
बात दृढ़ाइ कुमति हँसि बोली । कुमत कुबिहग कुलह जनु खोली ॥ अ० २७/८
बातन्ह मनहि रिझाइ सठ जनि घालेसि कुल खीस ।
राम बिरोध न उबरसि सरन बिष्नु अज ईस ॥ सुं० ५६/०
बातहिं बात करष बढ़ि आई । जुगल अतुल बल पुनि तरुनाई ॥ लं० १७/४
बातुल भूत बिबिस मतवारे । ते नहिं बोलहिं बचन बिचारे ॥ बा० ११४/७
बादहिं सूद्र द्विजन्ह सन हम तुम्ह ते कछु घाटि ।
जानइ ब्रह्म सो बिप्रबर आँखि देखावहिं डाटि ॥ अर० ९९/० (ख)
बादि गलानि करहु मन माहीं । तुम्ह सम रामहि कोउ प्रिय नाहीं ॥ अ० २०४/८
बादि बसन बिनु भुषन भारू । बादि बिरति बिनु ब्रह्म बिचारू ॥ अ० १७७/४
बान प्रताप जान मारीचा । तासु कहा नहिं मानेहि नीचा ॥ लं० ३५/९
बानर कटक उमा मैं देखा । सो मूरुख जो करन चह लेखा ॥ कि० २१/१
बानर भालु सकल हरषाने । गहि प्रभु पद गुन बिमल बखाने ॥ लं० ११६/२
बापीं कूप सरित सर नाना । सलिल सुधासम मनि सोपाना ॥ बा० २११/६
बापीं तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत सोहहीं ।
सोपान सुंदर नीर निर्मल देखि सुर मुनि मोहहीं ।
बहु रंग कंज अनेक खग कूजहिं मधूप गुंजारहीं ।
आराम रम्य पिकादि खग रव जनु पथिक हंकारहीं ॥ उ० २८/१ छं०
बामदेउ अरु देवरिषि बालमीकि जाबालि ।
आए मुनिबर निकर तब कौसिकादि तपसालि ॥ बा० ३३०/०
बामदेउ बसिष्ठ तब आए । सचिव महाजन सकल बोलाए ॥ अ० १६८/७
बामदेव आदिक रिषय पुजे मुदित महीस ।
दिए दिब्य आसन सबहि सब सन लही असीस ॥ बा० ३२०/०
बामदेव रघुकुल गुर ग्यानी । बहुरि गाधिसुत कथा बखानी ॥ बा० ३६०/१
बामदेव बसिष्ट मुनिनायक । देखे प्रभु महि धरि धनु सायक ॥ उ० ४/२
बाम भाग सोभति अनुकूला । आदिसक्ति छबिनिधि जगमूला ॥ बा० १४७/२
बायस पलिअहिं अति अनुरागा । होहिं निरामिष कबहुँ कि कागा ॥ बा० ४/२
बारक राम कहत जग जेऊ । होत तरन तारन नर तेऊ ॥ अ० २१६/४
बार बार अस कहइ कृपाला । नहिं गजारि जसु बधें सृकाला ॥ लं० २९/३
बार बार अस्तुति करि प्रेम सहित सिरु नाइ ।

ब्रह्म भवन सनकादि गे अति अभीष्ट बर पाइ ॥ उ० ३५/०
बार बार कर दंड प्रनामा । मन अस रहन कहहिं मोहि रामा ॥ उ० १८/३
बार बार करि प्रभुहि प्रनामा । दसरथ हरषि गए सुरधामा ॥ लं० १११/८
बार बार करि बिनय बड़ाई । रघुपति चले संग सब भाई ॥ बा० ३४२/१
बार बार कह राउ सुमुखि सुलोचनि पिकबचनि ।
कारन मोहि सुनाउ गजगामिनि निज कोप कर ॥ अ० २५/०
बार बार कौसल्या बिनय करइ कर जोरि ।
अब जनि कबहूँ ब्यापै प्रभु मोहि माया तोरि ॥ बा० २०२/०
बार बार कौसिक चरन सीसु नाइ कह राउ ।
यह सबु सुखु मुनिराज तव कृपा कटाच्छ पसाउ ॥ बा० ३३१/०
बार बार गहि चरन सँकोची । चली बिचारि बिबुध मति पोची ॥ अ० ११/५
बार बार नाएसि पद सीसा । बोला बचन जोरि कर कीसा ॥ सुं० १६/५
बार बार नारद मुनि आवहिं । चरित पुनीत राम के गावहिं ॥ उ० ४१/४
बार बार नावइ पद सीसा । प्रभुहि जानि मन हरष कपीसा ॥ कि० ६/१४
बार बार निज सपथ देवाई । कहबि न तात लखन लरिकाई ॥ अ० १५१/८
बार बार पद लागउँ बिनय करउँ दससीस ।
परिहरि मान मोह मद भजहु कोसलाधीस ॥ सुं० ३९/० (क)
बार बार पचार हनुमाना । निकट न आव मरमु सो जाना ॥ लं० ५०/४
बार बार प्रभु चहइ उठावा । प्रेम मगन तेहि उठब न भावा ॥ सुं० ३२/१
बार बार प्रभु पद सिरु नाई । प्रेम सहित सब कथा सुनाई ॥ अर० ३५/१३
बार बार बर मागउँ हरषि देहु श्रीरंग ।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग ॥ उ० १४/० (क)
बार बार बिनती सुनि मोरी । करहु चाप गुरुता अति थोरी ॥ बा० २५६/८
बार बार बिनवउँ मुनि तोही । जिमि यह कथा सुनायहु मोही ॥ बा० १२६/७
बार बार बिरिदावलि भाषी । फिरे सकल रामहि उर राखी ॥ बा० ३३९/३
बार बार बूझी कुसलाता । तो कहुँ देउँ काह सुनु भ्राता ॥ उ० १/१२
बार बार मागउँ कर जोरें । मनु परिहरै चरन जनि भोरें ॥ बा० ३४१/५
बार बार मिलि भेंटि सिय बिदा कीन्हि सनमानि ।
कही समय सिर भरत गति रानि सुबानि सयानि ॥ अ० २८७/०
बार बार मुख चुंबति माता । नयन नेह जलु पुलकित गाता ॥ अ० ५१/३
बार बार मुनि अग्या दीन्ही । रघुबर जाइ सयन तब कीन्ही ॥ बा० २२५/६
बार बार मुनि बिप्रबर कहा राम सन राम ।
बोले भृगुपति सरुष हसि तहूँ बंधु सम बाम ॥ बा० २८२/०
बार बार मृदु मूरति जोही । लागिहि तात बयारि न मोही ॥ अ० ६६/६

बार बार रघुबीर सँभारी। तरकेउ पवनतनय बल भारी ॥ सुं० ०/६
बार बार सनमानहिं रानी। उमा रमा सारद सम जानी ॥ बा० ३२१/७
बार बार सब लागहिं पाएँ। कहहिं बचन मृदु सरल सुभाएँ ॥ अ० ११५/५
बार बार हिलि मिलि दुहु भाई। सम सनेहँ जननी पहुँचाई ॥ अ० ३१९/५
बारहिं बार आरती करहीं। ब्यजन चारु चामर सिर ढरहीं ॥ बा० ३४९/४
बारहिं बार जोरि जुग पानी। कहत रामु सब सन मृदु बानी ॥ अ० ७९/७
बारहिं बार लाइ उर लीन्हीं। धरि धीरजु सिख आसिष दीन्हीं ॥ अ० ६८/७
बारहिं बार लेति उर लाई। गदगद कंठ न कछु कहि जाई ॥ बा० ७१/७
बारहिं बार सनेह बस जनक बोलाउब सीय।
लेन आइहहिं बंधु दोउ कोटि काम कमनीय ॥ बा० ३१०/०
बारहिं बार सुता उर लाईं। सजि सुंदर पालकीं मगाईं ॥ बा० ३३७/८
बारिज लोचन मोचत बारी। देखि दसा सुर सभा दुखारी ॥ अ० ३१६/६
बारिदनाद जेठ सुत तासू। भट महुँ प्रथम लीक जग जासू ॥ बा० १७९/७
बारिधि नाघि एक कपि आवा। तासु चरित मन महुँ सबु गावा ॥ लं० ८/२
बारि बिलोचन बाँचत पाती। पुलक गात आई भरि छाती ॥ बा० २८९/४
बारि मथें घृत होइ बरु सिकता ते बरु तेल।
बिनु हरि भजन न भव तरिअ यह सिद्धांत अपेल ॥ उ० १२२/० (क)
बारेहि ते निज हित पति जानी। लछिमन राम चरन रति मानी ॥ बा० १९७/३
बारंबार सकोप मुनि करइ निरूपन ग्यान।
मैं अपनें मन बैठ तब करउँ बिबिधि अनुमान ॥ उ० १११/०(क)
बालक ग्यान बुद्धि बल हीना। राखहु सरन नाथ जन दीना ॥ उ० १७/६
बालक बृद्ध बिहाइ गृहँ लगे लोग सब साथ।
तमसा तीर निवासु किय प्रथम दिवस रघुनाथ ॥ अ० ८४/०
बालक बृंद देखि अति सोभा। लगे संग लोचन मनु लोभा ॥ बा० २१८/२
बालक भ्रमहिं न भ्रमहिं गृहादी। कहहिं परस्पर मिथ्याबादी ॥ उ० ७२/६
बालकरूप राम कर ध्याना। कहेउ मोहि मुनि कृपानिधाना ॥ उ० ११२/७
बालकु बोलि बधउँ नहिं तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही ॥ बा० २७१/५
बालचरित अति सरल सुहाए। सारद सेष संभु श्रुति गाए ॥ बा० २०३/१
बालचरित कहि बिबिधि बिधि मन महँ परम उछाह।
रिषि आगमन कहेसि पुनि श्रीरघुबीर बिबाह ॥ उ० ६४/०
बालचरित चहु बंधु के बनज बिपुल बहुरंग।
नृप रानी परिजन सुकृत मधुकर बारिबिहंग ॥ बा० ४०/०
बालचरित हरि बहुबिधि कीन्हा। अति अनंद दासन्ह कहँ दीन्हा ॥ बा० २०२/१
बालबिनोद करत रघुराई। बिचरत अजिर जननि सुखदाई ॥ उ० ७५/४

बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा । अब यहु मरनिहार भा साँचा ॥ बा० २७४/४
बाल ब्रह्मचारी अति कोही । बिस्व बिदित छत्रियकुल द्रोही ॥ बा० २७१/६
बालमीक नारद घटजोनी । निज निज मुखनि कही निज होनी ॥ बा० २/३
बालमीक प्रभु मिलन बखाना । चित्रकूट जिमि बसे भगवाना ॥ उ० ६४/४
बालमीकि मन आनँदु भारी । मंगल मूरति नयन निहारी ॥ अ० १२४/५
बालमीकि हँसि कहहिं बहोरी । बानी मधुर अमिअ रस बोरी ॥ अ० १२७/२
बाल सखा सुनि हियँ हरषाहीं । मिलि दस पाँच राम पहिं जाहीं ॥ अ० २३/१
बालि न कबहुँ गाल अस मारा । मिलि तपसिन्ह तैं भएसि लबारा ॥ लं० ३३/६
बालितनय कौतुक अति मोही । तात सत्य कहु पूछउँ तोही ॥ लं० ३७/५
बालितनय बुधि बल गुन धामा । लंका जाहु तात मम कामा ॥ लं० १६/६
बालितनय मारुति नल नीला । बानरराज दुबिद बलसीला ॥ लं० ९७/३
बालि परम हित जासु प्रसादा । मिलेहु राम तुम्ह समन बिषादा ॥ कि० ६/१९
बालि बिमल जस भाजन जानी । हतउँ न तोहि अधम अभिमानी ॥ लं० २३/११
बालि हतेसि मोहि मारिहि आई । सिला देइ तहँ चलेउँ पराई ॥ कि० ५/८
बालि त्रास ब्याकुल दिन राती । तन बहु ब्रन चिंताँ जर छाती ॥ कि० ११/३
बाली ताहि मारि गृह आवा । देखि मोहि जियँ भेद बढ़ावा ॥ कि० ५/१०
बास करहु तहँ रघुकुल राया । कीजे सकल मुनिन्ह पर दाया ॥ अर० १२/१७
बाहन अपर अनेक बिधाना । सिबिका सुभग सुखासन जाना ॥ बा० २९९/३
बाहिज नम्र देखि मोहि साईं । बिप्र पढ़ाव पुत्र की नाईं ॥ उ० १०४/६
बाहेर होइ देखि बहु कीसा । मोहि अहार दीन्ह जगदीसा ॥ कि० २६/२
बिकट बेष रुद्रहि जब देखा । अबलन्ह उर भय भयउ बिसेषा ॥ बा० ९५/४
बिकट भृकुटि कच घूघरवारे । नव सरोज लोचन रतनारे ॥ बा० २३२/४
बिकट भृकुटि सम श्रवन सुहाए । कुंचित कच मेचक छबि छाए ॥ उ० ७६/६
बिकल बिलोकि कीस उर लावा । जागत नहिं बहु भाँति जगावा ॥ लं० ५८/३
बिकल बिलोकि भालु कपि धाए । बिहँसा जबहिं निकट कपि आए ॥ लं० ६८/८
बिकल बिलोकि मोहि रघुबीरा । बोले मधुर बचन धरि धीरा ॥ अ० १५०/५
बिकल बिलोकि सुतहि समुझावति । मनहुँ जरे पर लोनु लगावति ॥ अ० १६०/१
बिकल सनेहँ सीय सब रानीं । बैठन सबहि कहेउ गुर ग्यानीं ॥ अ० २४६/१
बिकल होसि तैं कपि कें मारे । तब जानेसु निसिचर संघारे ॥ सुं० ३/७
बिकसे सरसिज नाना रंगा । मधुर मुखर गुंजत बहु भृंगा ॥ अर० ३९/१
बिगत काम मम नाम परायन । सांति बिरति बिनती मुदितायन ॥ उ० ३७/५
बिगत दिवसु गुरु आयसु पाई । संध्या करन चले दोउ भाई ॥ बा० २३६/६
बिगत निसा रघुनायक जागे । बंधु बिलोकि कहन अस लागे ॥ बा० २३७/६
बिगत्त बिषाद निषादपति सबहि बढ़ाइ उछाहु ।

सुमिरि राम मागेउ तुरत तरकस धनुष सनाहु ॥ अ० १९०/०
बिगत त्रास भइ सीय सुखारी । जनु बिधु उदयँ चकोरकुमारी ॥ बा० २८५/४
बिच बिच कथा बिचित्र बिभागा । जनु सरि तीर तीर बन बागा ॥ बा० ३९/६
बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं । मिलत एक दुख दारुन देहीं ॥ बा० ४/४
बिजई समर बीर बिख्याता । धरि बराह बपु एक निपाता ॥ बा० १२१/७
बिजय हेतु कटकई बनाई । सुदिन साधि नृप चलेउ बजाई ॥ बा० १५३/५
बिटप बिसाल लता अरुझानी । बिबिध बितान दिए जनु तानी ॥ अर० ३७/१
बिटप बेलि तृन अगनित जाती । फल प्रसून पल्लव बहु भाँती ॥ अ० २४८/७
बिटप महीधर करहिं प्रहारा । सोइ गिरि तरु गहि कपिन्ह सो मारा ॥ लं० ९७/४
बिष्टा पूय रुधिर कच हाड़ा । बरषइ कबहुँ उपल बहु छाड़ा ॥ लं० ५१/३
बिथुरे नभ मुकुताहल तारा । निसि सुंदरी केर सिंगारा ॥ लं० ११/३
बिदा कीन्ह सनमानि निषादू । चलेउ हृदयँ बड़ बिरह बिषादू ॥ अ० ३२०/१
बिदा किए करि बिनय निषादा । फिरे पायँ परि बिकल बिषादा ॥ अ० १४६/२
बिदा किए बटु बिनय करि फिरे पाइ मन काम ।
उतरि नहाए जमुन जल जो सरीर सम स्याम ॥ अ० १०९/०
बिदा किए सिर नाइ सिधाए । प्रभु गुन कहत सुनत घर आए ॥ अ० १३६/३
बिदा मातु सन आवउँ मागी । चलिहउँ बनहि बहुरि पग लागी ॥ अ० ४५/४
बिदुषन्ह प्रभु बिराटमय दीसा । बहु मुख कर पग लोचन सीसा ॥ बा० २४१/१
बिद्यमान आपुनि मिथिलेसू । मोर कहब सब भाँति भदेसू ॥ अ० २९५/७
बिद्या बिनय निपुन गुन सीला । खेलहिं खेल सकल नृपलीला ॥ बा० २०३/६
बिद्या बिनु बिबेक उपजाएँ । श्रम फल पढें किएँ अरु पाएँ ॥ अर० २०/९
बिधि कैकई किरातिनि कीन्ही । जेहिं दव दुसह दसहुँ दिसि दीन्ही ॥ अ० ८३/३
बिधि केहि भाँति धरौं उर धीरा । सिरस सुमन कन बेधिअ हीरा ॥ बा० २५७/५
बिधि गनपति अहिपति सिव सारद । कबि कोबिद बुध बुद्धि बिसारद ॥ अ० २८७/६
बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा । नीच बीचु जननी मिस पारा ॥ अ० २६०/१
बिधि निषेधमय कलि मलहरनी । करम कथा रबिनंदनि बरनी ॥ बा० १/९
बिधि बस भयउ बिस्व उपकारू । सुगम अगम अति धरम बिचारू ॥ अ० ३०९/६
बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं । फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं ॥ बा० २/१०
बिधि बाम की करनी कठिन जेहिं मातु कीन्ही बावरी ।
तेहि राति पुनि पुनि करहिं प्रभु सादर सरहना रावरी ॥
तुलसी न तुम्ह सो राम प्रीतमु कहतु हौं सौहें किएँ ।
परिनाम मंगल जानि अपने आनिए धीरजु हिएँ ॥ अ० २००/१ छं०
बिधि हरि हरु कबि कोबिद बानी । कहत साधु महिमा सकुचानी ॥ बा० २/११
बिधि हरि हर तप देखि अपारा । मनु समीप आए बहु बारा ॥ बा० १४४/२

बिधि हरि हरु दिसिपति दिनराऊ। जे जानहिं रघुबीर प्रभाऊ ॥ बा० ३२०/६
बिधि हरि हरमय बेद प्रान सो। अगुन अनूपम गुन निधान सो ॥ बा० १८/२
बिधि हरि हर माया बड़ि भारी। सोउ न भरत मति सकइ निहारी ॥ अ० २९४/५
बिधि हरि हरु ससि रबि दिसिपाला। माया जीव करम कुलि काला ॥ अ० २५३/६
बिधि हरि हरु सुरपति दिसिनाथा। बरनहिं सब दसरथ गुन गाथा ॥ अ० १७२/७
बिधिहि बंदि तिन्ह कीन्ह अरंभा। बिरचे कनक कदलि के खंभा ॥ बा० २८६/८
बिधिहि भयउ आचरजु बिसेषी। निज करनी कछु कतहुँ न देखी ॥ बा० ३१३/८
बिधिहि मनाव राउ मन माहीं। जेहिं रघुनाथ न कानन जाहीं ॥ अ० ४३/६
बिधिहुँ न नारि हृदय गति जानी। सकल कपट अघ अवगुन खानी ॥ अ० १६१/४
बिधुबदनीं मृग सावक लोचनि। निज सरूप रति मानु बिमोचनि ॥ बा० २९६/२
बिधुबदनीं सब भाँति सँवारी। सोह न बसन बिना बर नारी ॥ बा० ९/४
बिधुबदनीं सब सब मृगलोचनि। सब निज तन छबि रति मदुमोचनि ॥ बा० ३१७/१
बिधु बिष चवै स्रवै हिमु आगी। होइ बारिचर बारि बिरागी ॥ अ० १६८/२
बिधु महि पूर मयूखन्हि रबि तप जेतनेहि काज।
मागें बारिद देहिं जल रामचंद्र कें राज ॥ उ० २३/०
बिनती करउँ जोरि कर रावन। सुनहु मान तजि मोर सिखावन ॥ सुं० २१/७
बिनती करि मुनि नाइ सिरु कह कर जोरि बहोरि।
चरन सरोरुह नाथ जनि कबहुँ तजै मति मोरि ॥ अर० ४/०
बिनती बहुत करौं का स्वामी। करुनामय उर अंतरजामी ॥ अ० ६५/८
बिनती बहुरि भरत सन कीन्ही। मिलि सप्रेमु पुनि आसिष दीन्ही ॥ बा० ३४१/८
बिनती भूप कीन्ह जेहि भाँती। आरति प्रीति न सो कहि जाती ॥ अ० ९६/१
बिनती सचिव करहिं कर जोरी। जिअहु जगतपति बरिस करोरी ॥ अ० ४/५
बिनय कीन्हि उर अति अनुरागें। सुत संपदा राखि सब आगें ॥ बा० ३५२/१
बिनय कीन्हि चतुरानन प्रेम पुलक अति गात।
सोभासिंधु बिलोकत लोचन नहीं अघात ॥ लं० १११/०
बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति।
बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति ॥ सुं० ५७/०
बिनय प्रेम बस भई भवानी। खसी माल मूरति मुसुकानी ॥ बा० २३५/५
बिनय सील करुना गुन सागर। जयति बचन रचना अति नागर ॥ बा० २८४/३
बिनु अवसर भय तें रह जोई। जानेहु अधम नारि जग सोई ॥ अर० ४/१५
बिनु कारन दीन दयाल हितं। छबि धाम नमामि रमा सहितं ॥ लं० ११०/११ छं०
बिनु गुर होइ कि ग्यान ग्यान कि होइ बिराग बिनु।
गावहिं बेद पुरान सुख कि लहिअ हरि भगति बिनु ॥ उ० ८९/० (क) सो०
बिनु घन निर्मल सोह अकासा। हरिजन इव परिहरि सब आसा ॥ कि० १५/९

बिनु छल बिस्वनाथ पद नेहू । राम भगत कर लच्छन एहू ॥ बा० १०३/६
बिनु तप तेज कि कर बिस्तारा । जल बिनु रस कि होइ संसारा ॥ उ० ८९/५
बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना । कर बिनु करम करइ बिधि नाना ॥ बा० ११७/५
बिनु पानहिन्ह पयादेहि पाएँ । संकरु साखि रहेउँ एहि घाएँ ॥ अ० २६१/५
बिनु पूछें कछु कहउँ गोसाईं । सेवकु समयँ न ढीठ ढिठाईं ॥ अ० २२६/७
बिनु पूछें मगु देहिं दिखाई । जेहि बिलोक सोइ जाइ सुखाई ॥ लं० १७/१०
बिनु प्रयास हनुमान उठायो । लंका द्वार राखि पुनि आयो ॥ लं० ७६/१
बिनु फर बान राम तेहि मारा । सत जोजन गा सागर पारा ॥ बा० २०९/४
बिनु बिग्यान कि समता आवइ । कोउ अवकास कि नभ बिनु पावइ ॥ उ० ८९/३
बिनु बिचार पनु तजि नरनाहू । सीय राम कर करै बिबाहू ॥ बा० २४८/४
बिनु बिस्वास भगति नहिं तेहि बिनु द्रवहिं न रामु ।
राम कृपा बिनु सपनेहुँ जीव न लह बिश्रामु ॥ उ० ९०/०
बिनु भंजेहुँ भव धनुषु बिसाला । मेलिहि सीय राम उर माला ॥ बा० २४४/३
बिनु रघुपति पद पदुम परागा । मोहि केउ सपनेहुँ सुखद न लागा ॥ अ० ९७/६
बिनु रघुबीर बिलोकि अबासू । रहे प्रान सहि जग उपहासू ॥ अ० १७८/६
बिनु सतसंग न हरि कथा तेहि बिनु मोह न भाग ।
मोह गएँ बिनु राम पद होइ न दृढ़ अनुराग ॥ उ० ६१/०
बिनु सतसंग बिबेक न होई । राम कृपा बिनु सुलभ न सोई ॥ बा० २/७
बिनु समुझें निज अघ परिपाकू । जारिउँ जायँ जननि कहि काकू ॥ अ० २६०/६
बिनु संतोष न काम नसाहीं । काम अछत सुख सपनेहुँ नाहीं ॥ उ० ८९/१
बिनु श्रम तुम्ह जानब सब सोऊ । नित नव नेह राम पद होऊ ॥ उ० ११३/३
बिनु श्रम नारि परम गति लहई । पतिब्रत धर्म छाड़ि छल गहई ॥ अर० ४/१८
बिपति काल कर सतगुन नेहा । श्रुति कह संत मित्र गुन एहा ॥ कि० ६/६
बिपति बीजु बरषा रितु चेरी । भुइँ भइ कुमति कैकई केरी ॥ अ० २२/५
बिपति मोरि को प्रभुहि सुनावा । पुरोडास चह रासभ खावा ॥ अर० २८/५
बिपति हमारि बिलोकि बड़ि मातु करिअ सोइ आजु ।
रामु जाहिं बन राजु तजि होइ सकल सुरकाजु ॥ अर० ११/०
बिपिन गवन केवट अनुरागा । सुरसरि उतरि निवास प्रयागा ॥ उ० ६४/३
बिपुल नयन कोउ नयन बिहीना । रिष्टपुष्ट कोउ अति तनखीना ॥ बा० ९२/८
बिपुल बाजने बाजन लागे । नभ सुर नगर लोग अनुरागे ॥ बा० ३४७/३
बिपुल बिचित्र बिहग मृग नाना । प्रजा समाजु न जाइ बखाना ॥ अ० २३५/२
बिपुल बियोग प्रजा अकुलानी । जनु जलचर गन सूखत पानी ॥ अ० ५०/६
बिपुल सुमन सुर बरषहिं गावहिं प्रभु गुन गाथ ।
निज पद दीन्ह असुर कहुँ दीनबंधु रघुनाथ ॥ अर० २७/०

बिप्र एक बैदिक सिव पूजा। करइ सदा तेहि काजु न दूजा ॥ उ० १०४/३
बिप्रकाजु करि बंधु दोउ मग मुनिबधू उधारि।
आए देखन चापमख सुनि हरषीं सब नारि ॥ बा० २२१/०
बिप्रगिरा सुनि परहित सानी। एवमस्तु इति भइ नभबानी ॥ उ० १०८/२
बिप्र जेवाँइ देहिं दिन दाना। सिव अभिषेक करहिं बिधि नाना ॥ अ० १५६/७
बिप्र द्रोह पर द्रोह बिसेषा। दंभ कपट जियँ धरें सुबेषा ॥ उ० ३९/८
बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार ॥ बा० १९२/०
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी। निराचार सठ बृषली स्वामी ॥ उ० ९९/८
बिप्र बधू कुलबृद्ध बोलाईं। करि कुल रीति सुमंगल गाईं ॥ बा० ३२१/४
बिप्रबधू कुलमान्य जठेरी। जे प्रिय परम कैकई केरी ॥ अ० ४८/३
बिप्रबधू सब भूप बोलाईं। चैल चारु भूषन पहिराईं ॥ बा० ३५२/४
बिप्र बिबेकी बेदबिद संमत साधु सुजाति।
जिमि धोखें मदपान कर सचिव सोच तेहि भाँति ॥ अ० १४४/०
बिप्रबंस कै असि प्रभुताई। अभय होइ जो तुम्हहि डेराई ॥ बा० २८३/५
बिप्रबृंद उठि उठि गृह जाहू। है बड़ि हानि अन्न जनि खाहू ॥ बा० १७२/६
बिप्र बृंद चढ़ि बाहन नाना। चले सकल तप तेज निधाना ॥ अ० १८६/६
बिप्र बृंद बंदे दुहुँ भाईं। मनभावती असीसें पाईं ॥ बा० ३०७/६
बिप्रबृंद सब सादर बंदे। जानि भाग्य बड़ राउ अनंदे ॥ बा० २१४/२
बिप्रभवन सुरभवन सुहाए। सब तीरथन्ह बिचित्र बनाए ॥ बा० १५४/८
बिप्र रूप धरि कपि तहँ गयऊ। माथ नाइ पूछत अस भयऊ ॥ कि० ०/६
बिप्र रूप धरि बचन सुनाए। सुनत बिभीषन उठि तहँ आए ॥ सुं० ५/५
बिप्र सहित परिवार गोसाईं। करहिं छोहु सब रौरिहि नाईं ॥ अ० २/४
बिप्र साधु सुर पूजत राजा। करत राम हित मंगल काजा ॥ अ० ६/२
बिप्र श्राप तें दूनउ भाई। तामस असुर देह तिन्ह पाई ॥ बा० १२१/५
बिप्र श्राप बिनु सुनु महिपाला। तोर नास नहिं कवनेहुँ काला ॥ बा० १६४/६
बिप्रहु श्राप बिचारि न दीन्हा। नहिं अपराध भूप कछु कीन्हा ॥ बा० १७३/५
बिप्रन्ह दान बिबिधि बिधि दीन्हे। जाचक सकल अजाचक कीन्हे ॥ उ० ११/७
बिफल होहिं सब उद्यम ताके। जिमि परद्रोह निरत मनसा के ॥ लं० ९१/४
बिबरन भयउ न जाइ निहारी। मारेसि मनहुँ पिता महतारी ॥ अ० १४४/५
बिबरन भयउ निपट नरपालू। दामिनि हनेउ मनहुँ तरु तालू ॥ अ० २८/६
बिबर प्रबेस कीन्ह जेहि भाँती। कपिन्ह बहोरि मिला संपाती ॥ उ० ६६/२
बिबसहुँ जासु नाम नर कहहीं। जनम अनेक रचित अघ दहहीं ॥ बा० ११८/३
बिबिध कथा कहि कहि मृदु बानी। रथ बैठारेउ बरबस आनी ॥ अ० १४२/३

बिबिध कर्म गुन काल सुभाऊ। ए चकोर सुख लहहिं न काऊ ॥ उ० ३०/५
बिबिध जंतु संकुल महि भ्राजा। प्रजा बाढ़ जिमि पाइ सुराजा ॥ कि० १४/११
बिबिधि पाँति बैठी जेवनारा। लागे परुसन निपुन सुआरा ॥ बा० ९८/७
बिबिध प्रसंग अनूप बखाने। करहिं न सुनि आचरजु सयाने ॥ बा० १३९/४
बिबिध बसन उपधान तुराईं। छीर फेन मृदु बिसद सुहाईं ॥ अ० ९०/१
बिबिध बिधान बाजने बाजे। मंगल मुदित सुमित्राँ साजे ॥ बा० ३४५/३
बिबिध बिलाप करति बैदेही। भूरि कृपा प्रभु दूरि सनेही ॥ अर० २८/४
बिबिध बेष धरि करइ लराई। कबहुँक प्रगट कबहुँ दुरि जाई ॥ लं० ७५/१२
बिबिध भाँति फूले तरु नाना। जनु बानैत बने बहु बाना ॥ अर० ३७/३
बिबिधि भाँति बाहन रथ जाना। बिपुल बरन पताक ध्वज नाना ॥ लं० ७८/२
बिबिध भाँति भोजन करवावा। मुनिबर हृदयँ हरष अति पावा ॥ बा० २०६/४
बिबिध भाँति मेवा पकवाना। भोजन साजु न जाइ बखाना ॥ बा० ३३२/४
बिबिधि भाँति मोहि मुनि समुझावा। निर्गुन मत मम हृदयँ न आवा ॥ उ० ११०/७

बिबिध भाँति मंगल कलस गृह गृह रचे सँवारि।
सुर ब्रह्मादि सिहाहिं सब रघुबर पुरी निहारि ॥ बा० ३४४/०

बिबिध भाँति होइहि पहुनाई। प्रिय न काहि अस सासुर माई ॥ बा० ३१०/१
बिबिध मृगन्ह कर आमिष राँधा। तेहि महुँ बिप्र माँसु खल साँधा ॥ बा० १७२/३
बिबिधायुध धर निसिचर धाए। गढ़ ते पर्बत सिखर ढहाए ॥ लं० ४८/१०
बिबुध बिनय सुनि देबि सयानी। बोली सुर स्वारथ जड़ जानी ॥ अ० २९४/३
बिबुध बिपिन जहँ लगि जग माहीं। देखि राम बनु सकल सिहाहीं ॥ अ० १३७/३

बिबुध बिप्र बुध ग्रह चरन बंदि कहउँ कर जोरि।
होइ प्रसन्न पुरवहु सकल मंजु मनोरथ मोरि ॥ बा० १४/० (छं०)

बिबुध बिलोकि दसा रघुबर की। बरषि सुमन कहि गति घर घर की ॥ अ० ३२०/७
बिभव भेद कछु कोउ न जाना। सकल जनक कर करहिं बखाना ॥ बा० ३०६/२
बिमल कथा कर कीन्ह अरंभा। सुनत नसाहिं काम मद दंभा ॥ बा० ३४/६
बिमल कथा हरि पद दायनी। भगति होइ सुनि अनपायनी ॥ उ० ५१/५
बिमल ग्यान जल जब सो नहाई। तब रह राम भगति उर छाई ॥ उ० १२१/११
बिमल बिबेक धरम नय साली। भरत भारती मंजु मराली ॥ अ० २९६/८
बिमल बंस यहु अनुचित एकू। बंधु बिहाइ बड़ेहि अभिषेकू ॥ अ० ९/७
बिमल सलिलु सरसिज बहुरंगा। जलखग कूजत गुंजत भृंगा ॥ बा० २२६/८

बिरचेउ मग महुँ नगर तेहिं सत जोजन बिस्तार।
श्रीनिवासपुर तें अधिक रचना बिबिध प्रकार ॥ बा० १२९/०

बिरति ग्यान बिग्यान दृढ़ राम चरन अति नेह।
बायस तन रघुपति भगति मोहि परम संदेह ॥ उ० ५३/०

बिरति चर्म असि ग्यान मद लोभ मोह रिपु मारि।
जय पाइअ सो हरि भगति देखु खगेस बिचारि ॥ उ० १२०/० (ख)
बिरति बिबेक बिनय बिग्याना । बोध जथारथ बेद पुराना ॥ अर० ४५/५
बिरति बिबेक भगति दृढ़ करनी । मोह नदी कहँ सुंदर तरनी ॥ उ० १४/७
बिरह अगिनि तनु तूल समीरा । स्वास जरइ छन माहिं सरीरा ॥ सुं० ३०/७
बिरह बिकल नर इव रघुराई । खोजत बिपिन फिरत दोउ भाई ॥ बा० ४८/७
बिरह बिकल बलहीन मोहि जानेसि निपट अकेल।
सहित बिपिन मधुकर खग मदन कीन्ह बगमेल ॥ अर० ३७/० (क)
बिरहवंत भगवंतहि देखी । नारद मन भा सोच बिसेषी ॥ अर० ४०/५
बिरही इव प्रभु करत बिषादा । कहत कथा अनेक संबादा ॥ अर० ३६/२
बिरिद बाँधि बर बीरु कहाई । चलेउ समर जनु सुभट पराई ॥ अ० १४३/८
बिलपत नृपहि भयउ भिनुसारा । बीना बेनु संख धुनि द्वारा ॥ अ० ३६/५
बिलपत राउ बिकल बहु भाँती । भइ जुग सरिस सिराति न राती ॥ अ० १५४/३
बिलपहिं बिकल दास अरु दासी । घर घर रुदनु करहिं पुरबासी ॥ अ० १५५/५
बिलपहिं बिकल भरत दोउ भाई । कौसल्याँ लिए हृदयँ लगाई ॥ अ० १६६/१
बिषइन्ह कहँ पुनि हरि गुन ग्रामा । श्रवन सुखद अरु मन अभिरामा ॥ उ० ५२/४
बिषई जीव पाइ प्रभुताई । मूढ़ मोह बस होहिं जनाई ॥ अ० २२७/१
बिषई साधक सिद्ध सयाने । त्रिबिध जीव जग बेद बखाने ॥ अ० २७६/३
बिष बारुनी बंधु प्रिय जेही । कहिअ रमासम किमि बैदेही ॥ बा० २४६/६
बिषम बियोगु न जाइ बखाना । अवधि आस सब राखहिं प्राना ॥ अ० ८५/८
बिषम बिषाद तोरावति धारा । भय भ्रम भवँर अबर्त अपारा ॥ अ० २७५/३
बिषय अलंपट सील गुनाकर । पर दुख दुख सुख सुख देखे पर ॥ उ० ३७/१
बिषय करन सुर जीव समेता । सकल एक तें एक सचेता ॥ बा० ११६/५
बिषय कुपथ्य पाइ अंकुरे । मुनिहु हृदयँ का नर बापुरे ॥ उ० १२१/४
बिषय बस्य सुर नर मुनि स्वामी । मैं पावँर पसु कपि अति कामी ॥ कि० २०/३
बिषय मनोरथ दुर्गम नाना । ते सब सूल नाम को जाना ॥ उ० १२०/३२
बिषय मनोरथ पुंज कंज बन । प्रबल तुषार उदार पार मन ॥ लं० ११४/५ छं०
बिषय समीर बुद्धि कृत भोरी । तेहि बिधि दीप को बार बहोरी ॥ उ० ११७/१६
बिष संजुत कर निकर पसारी । जारत बिरहवंत नर नारी ॥ लं० ११/१०
बिष्नु कहा अस बिहसि तब बोलि सकल दिसिराज।
बिलग बिलग होइ चलहु सब निज निज सहित समाज ॥ बा० ९२/०
बिष्नु कोटि सम पालन कर्ता । रुद्र कोटि सत सम संहर्ता ॥ उ० ९१/६
बिष्नु चारि भुज बिधि मुख चारी । बिकट बेष मुख पंच पुरारी ॥ बा० २१९/७
बिष्नु जो सुर हित नरतनु धारी । सोउ सर्बग्य जथा त्रिपुरारी ॥ बा० ५०/१

बिष्नु बचन सुनि सुर मुसुकाने । निज निज सेन सहित बिलगाने ॥ बा० ९२/२
बिष्नु बिरंचि आदि सुरब्राता । चढ़ि चढ़ि बाहन चले बराता ॥ बा० ९१/७
बिष्नु बिरंचि महेसु बिहाई । चले सकल सुर जान बनाई ॥ बा० ६०/२
बिसमयवंत देखि महतारी । भए बहुरि सिसुरूप खरारी ॥ बा० २०१/६
बिसमय हरष रहित रघुराऊ । तुम्ह जानहु सब राम प्रभाऊ ॥ अ० ११/३
बिसरे गृह सपनेहुँ सुधि नाहीं । जिमि परद्रोह संत मन माहीं ॥ उ० १५/१
बिसिख निकर निसिचर मुख भरेऊ । तदपि महाबल भूमि न परेऊ ॥ लं० ७०/२
बिस्व द्रोह रत यह खल कामी । निज अघ गयउ कुमारगगामी ॥ लं० १०९/४
बिस्वनाथ मम नाथ पुरारी । त्रिभुवन महिमा बिदित तुम्हारी ॥ बा० १०६/७
बिस्व बिजय जसु जानकि पाई । आए भवन ब्याहि सब भाई ॥ बा० ३५६/५
बिस्व बिदित एक कैकय देसू । सत्यकेतु तहँ बसइ नरेसू ॥ बा० १५२/२
बिस्व भरन पोषन कर जोई । ताकर नाम भरत अस होई ॥ बा० १९६/७
बिस्वमोहनी तासु कुमारी । श्री बिमोह जिसु रूपु निहारी ॥ बा० १२९/४
बिस्वरूप रघुबंस मनि करहु बचन बिस्वासु ।
लोक कल्पना बेद कर अंग अंग प्रति जासु ॥ लं० १४/०
बिस्वामित्रु चलन नित चहहीं । राम सप्रेम बिनय बस रहहीं ॥ बा० ३५९/३
बिस्वामित्र बिनय बड़ि देखी । उपजा उर संतोषु बिसेषी ॥ बा० ३०६/६
बिस्वामित्र महामुनि आए । समाचार मिथिलापति पाए ॥ बा० २१३/८
बिस्वामित्र महामुनि ग्यानी । बसहिं बिपिन सुभ आश्रम जानी ॥ बा० २०५/२
बिस्वामित्रु मिले पुनि आई । पद सरोज मेले दोउ भाई ॥ बा० २६८/६
बिस्वामित्र समय सुभ जानी । बोले अति सनेहमय बानी ॥ बा० २५३/५
बिहरहिं बन चहु ओर प्रतिदिन प्रमुदित लोग सब ।
जल ज्यों दादुर मोर भए पीन पावस प्रथम ॥ अ० २५१/० सो०
बिहँसा नारि बचन सुनि काना । अहो मोह महिमा बलवाना ॥ लं० १५/१
बिहसि दसानन पूँछी बाता । कहसि न सुक आपनि कुसलाता ॥ सुं० ५२/३
बिहसि बाम कर लीन्ही रावन । सचिव बोलि सठ लाग बचावन ॥ सुं० ५५/१०
बिहसि मागु मनभावति बाता । भूषन सजहि मनोहर गाता ॥ अ० २५/७
बिहसि लखनु बोले मृदु बानी । अहो मुनीसु महा भटमानी ॥ बा० २७२/१
बिहसे अपर भूप सुनि बानी । जे अबिबेक अंध अभिमानी ॥ बा० २४४/५
बिहसे लखनु कहा मन माहीं । मूदें आँखि कतहुँ कोउ नाहीं ॥ बा० २७९/८
बीच बास करि जमुनहिं आए । निरखि नीरु लोचन जल छाए ॥ अ० २१९/८
बीच बीच बर बास करि मग लोगन्ह सुख देत ।
अवध समीप पुनीत दिन पहुँची आइ जनेत ॥ बा० ३४३/०
बीच बीच बर बास बनाए । सुरपुर सरिस संपदा छाए ॥ बा० ३०३/६

बीचहिं पंथ मिले दनुजारी । संग रमा सोइ राजकुमारी ॥ बा० १३५/४

बीतें अवधि जाउँ जौं जिअत न पावउँ बीर ।
सुमिरत अनुज प्रीति प्रभु पुनि पुनि पुलक सरीर ॥ लं० ११६/० (ग)

बीतें अवधि रहहिं जौं प्राना । अधम कवन जग मोहि समाना ॥ उ० ०/८
बीतें संबत सहस सतासी । तजी समाधि संभु अबिनासी ॥ बा० ५९/२
बीथीं सकल सुगंध सिंचाईं । गजमनि रचि बहु चौक पुराईं ॥ उ० ८/३
बीरघातिनी छाड़िसि साँगी । तेज पुंज लछिमन उर लागी ॥ लं० ५३/७

बीर परहिं जनु तीर तरु मज्जा बहु बह फेन ।
कादर देखि डरहिं तहँ सुभटन्ह के मन चेन ॥ लं० ८७/०

बीर बलीमुख जुद्ध बिरुद्धे । देखिअत बिपुल काल जनु क्रुद्धे ॥ लं० ८०/८
बीर बिनीत धरम ब्रत धारी । गुन सागर बर बालक चारी ॥ बा० २९३/७
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा । गारी देत न पावहु सोभा ॥ बा० २७३/८
बीर सुधीर धुरंधर देवा । साधु समाजु सदा तुम्ह सेवा ॥ अ० १४९/४
बीस पयोधि अगाध अपारा । को अस बीर जो पाइहि पारा ॥ लं० २७/४
बुध जुग धर्म जानि मन माहीं । तजि अधर्म रति धर्म कराहीं ॥ उ० १०३/६
बुध पुरान श्रुति संमत बानी । कही बिभीषन नीति बखानी ॥ सुं० ४०/१
बुध बरनहिं हरि जस अस जानी । करहिं पुनीत सुफल निज बानी ॥ बा० १२/८
बुध बिश्राम सकल जन रंजनि । रामकथा कलि कलुष बिभंजनि ॥ बा० ३०/५
बुधि बल निसिचर परइ न पार्‍यो । तब मारुत सुत प्रभु संभार्‍यो ॥ लं० ९४/८
बुधिं बल सील सत्य सब मीना । बनसी सम त्रिय कहहिं प्रबीना ॥ अर० ४३/८
बूझउँ तिन्हहि राम गुन गाहा । कहहिं सुनउँ हरषित खगनाहा ॥ उ० १०९/११

बूझत कृपानिधि कुसल भरतहि बचन बेगि न आवई ।
सुनु सिवा सो सुख बचन मन ते भिन्न जान जो पावई ॥
अब कुसल कौसलनाथ आरत जानि जन दरसन दियो ।
बूड़त बिरह बारीस कृपानिधान मोहि कर गहि लियो ॥ उ० ४/२ छं०

बूझब राउर सादर साईं । कुसल हेतु सो भयउ गोसाईं ॥ अ० २६९/८
बूझहिं बैठि राम गुन गाहा । कह हनुमान सुमति अवगाहा ॥ उ० २५/५
बूझि भरत सति भाउ कुभाऊ । आएहु बेगि न होइ लखाऊ ॥ अ० २७०/८

बूझिअ मोहि उपाय अब सो सब मोर अभागु ।
सुनि सनेहमय बचन गुर उर उमगा अनुरागु ॥ अ० २५५/०

बूझेसि सचिव उचित मत कहहू । ते सब हँसे मष्ट करि रहहू ॥ सुं० ३६/८
बूड़त बिरह जलधि हनुमाना । भयहु तात मो कहुँ जलजाना ॥ सुं० १३/२
बूड़हिं आनहि बोरहिं जेई । भए उपल बोहित सम तेई ॥ लं० २/८
बूढ़ एकु कह सगुन बिचारी । भरतहि मिलिअ न होइहि रारी ॥ अ० १९१/५

बूढ़ जानि सठ छाँड़ेउँ तोही । लागेसि अधम पचारै मोही ॥ लं० ७३/५
बूढ़ भएसि न त मरतेउँ तोही । अब जनि नयन देखावसि मोही ॥ लं० ४८/३
बेगहु भाइहु सजहु सँजोऊ । सुनि रजाइ कदराइ न कोऊ ॥ अ० १९०/१
बेगि आनु जल पाय पखारू । होत बिलंबु उतारहि पारू ॥ अ० १००/२
बेगि करहु किन आँखिन्ह ओटा । देखत छोट खोट नृप ढोटा ॥ बा० २७९/७
बेगि कुअँरि अब आनहु जाई । चले मुदित मुनि आयसु पाई ॥ बा० ३२१/२
बेगि चलहु सुनि सचिव जोहारे । तुरत तुरग रथ नाग सँवारे ॥ अ० १८६/४
बेगि देखाउ मूढ़ न त आजू । उलटउँ महि जहँ लहि तव राजू ॥ बा० २६९/४
बेगि पाउ धारिअ थलहि कह सनेहँ सतिभाय ।
हमरें तौ अब ईस गति कै मिथिलेस सहाय ॥ अ० २८४/०
बेगि प्रजा दुख मेटब आई । जननी निठुर बिसरि जनि जाई ॥ अ० ६७/६
बेगि बिभीषन तिन्हहि सिखायो । तिन्ह बहु बिधि मज्जन करवायो ॥ लं० १०७/६
बेगि बिलंबु न करिअ नृप साजिअ सबुइ समाजु ।
सुदिन सुमंगलु तबहिं जब रामु होहिं जुबराजु ॥ अ० ४/०
बेगि सो मैं डारिहउँ उखारी । पन हमार सेवक हितकारी ॥ बा० १२८/५
बेगि हतहु खल कहि मुनि गए । राम समर महि सोभत भए ॥ लं० ७०/१२
बेचहिं बेदु धरमु दुहि लेहीं । पिसुन पराय पाप कहि देहीं ॥ अ० १६७/१
बेतपानि रच्छक चहुँ पासा । चले सकल मन परम हुलासा ॥ लं० १०७/९
बेद पुरान जासु जसु गायो । राम बिमुख काहुँ न सुख पायो ॥ लं० ४७/८
बेद पुरान बसिष्ट बखानहिं । सुनहिं राम जद्यपि सब जानहिं ॥ उ० २५/२
बेद पुरान संत मत एहू । सकल सुकृत फल राम सनेहू ॥ बा० २६/२
बेद पुरान सुनहिं मन लाई । आपु कहहिं अनुजन्ह समुझाई ॥ बा० २०४/६
बेद बचन मुनि मन अगम ते प्रभु करुना ऐन ।
बचन किरातन्ह के सुनत जिमि पितु बालक बैन ॥ अ० १३६/०
बेद बिदित कहि सकल बिधाना । कहेउ रचहु पुर बिबिध बिताना ॥ अ० ५/५
बेद बिदित संमत सबही का । जेहि पितु देइ सो पावइ टीका ॥ अ० १७४/३
बेद मंत्र तब द्विजन्ह उचारे । नभ सुर मुनि जय जयति पुकारे ॥ उ० ११/४
बेदमंत्र मुनिबर उच्चरहीं । जय जय जय संकर सुर करहीं ॥ बा० १००/४
बेद बिहित अरु कुल आचारू । कीन्ह भली बिधि सब ब्यवहारू ॥ बा० ३१८/२
बेदसिरा मुनि आइ तब सबहि कहा समुझाइ ।
पारबती महिमा सुनत रहे प्रबोधहि पाइ ॥ बा० ७३/०
बेदी पर मुनि साधु समाजू । सीय सहित राजत रघुराजू ॥ अ० २३८/६
बेदी बेद बिधान सँवारी । सुभग सुमंगल गावहिं नारी ॥ बा० ९९/२
बेनु हरित मनिमय सब कीन्हे । सरल सपरब परहिं नहिं चीन्हे ॥ बा० २८७/१

बेल पाती महि परइ सुखाई । तीनि सहस संबत सोइ खाई ॥ बा० ७३/६
बेलि बिटप तृन सफल सफूला । सब समाजु मुद मंगल मूला ॥ अ० २३५/८
बेलि बिटब सब सफल सफूला । बोलत खग मृग अति अनुकूला ॥ अ० २७८/३
बेषु न सो सखि सीय न संगा । आगें अनी चली चतुरंगा ॥ अ० २२१/३
बेषु बिलोकि क्रोध अति बाढ़ा । तिन्हहि सराप दीन्ह अति गाढ़ा ॥ बा० १३४/८
बेसर ऊँट बृषभ बहु जाती । चले बस्तु भरि अगनित भाँती ॥ बा० २९९/६
बैखानस सोइ सौचे जोगू । तपु बिहाइ जेहि भावइ भोगू ॥ अ० १७२/१
बैठ जाइ तेहिं मंदिर रावन । लागे किंनर गुन गन गावन ॥ लं० ९/८
बैठ जांइ सिंघासन फूली । अति अभिमान त्रास सब भूली ॥ लं० ३७/२
बैठ रहेसि अजगर इव पापी । सर्प होहि खल मल मति ब्यापी ॥ उ० १०६/७

बैठारि आसन आरती करि निरखि बरु सुखु पावहीं ।
मनि बसन भूषन भूरि वारहिं नारि मंगल गावहीं ॥
ब्रह्मादि सुरबर बिप्र बेष बनाई कौतुक देखहीं ।
अवलोकि रघुकुल कमल रबि छबि सुफल जीवन लेखहीं ॥ बा० ३१८/१ छं०

बैठि नमितमुख सोचति सीता । रूप रासि पति प्रेम पुनीता ॥ अ० ५७/२

बैठे बरासन रामु जानकि मुदित मन दसरथु भए ।
तनु पुलक पुनि पुनि देखि अपनें सुकृत सुरतरु फल नए ॥
भरि भुवन रहा उछाहु राम बिबाहु भा सबहीं कहा ।
केहि भाँति बरनि सिरात रसना एक यहु मंगलु महा ॥ बा० ३२४/१ छं०

बैठि बिटप तर दिवसु गवाँवा । साँझ समय तब अवसरु पावा ॥ अ० १४६/४
बैठीं सिव समीप हरषाई । पूरुब जन्म कथा चित आई ॥ बा० १०६/४
बैठेउ सभाँ खबरि असि पाई । सिंधु पार सेना सब आई ॥ सुं० ३६/७
बैठे गुर मुनि अरु द्विज सज्जन । बोले बचन भगत भव भंजन ॥ उ० ४२/२

बैठे देखि कुसासन जटा मुकुट कृस गात ।
राम राम रघुपति जपत स्रवत नयन जलजात ॥ उ० १/० (ख)

बैठे परम प्रसन्न कृपाला । कहत अनुज सन कथा रसाला ॥ अर० ४०/४
बैठे राजसभाँ सब जाई । पठए बोलि भरत दोउ भाई ॥ अ० १७०/३
बैठे सिव बिप्रन्ह सिरु नाई । हृदयँ सुमिरि निज प्रभु रघुराई ॥ बा० ९९/४
बैठे सुर सब करहिं बिचारा । कहँ पाइअ प्रभु करिअ पुकारा ॥ बा० १८४/१
बैठे सोह कामरिपु कैसें । धरें सरीरु सांतरसु जैसें ॥ बा० १०६/१

बैदेहि अनुज समेत । मम हृदयँ करहु निकेत ॥
मोहि जानिए निज दास । दे भक्ति रमानिवास ॥ लं० ११२/८ छं०

बैदेही मुख पटतर दीन्हे । होइ दोषु बड़ अनुचित कीन्हे ॥ बा० २३७/३
बैनतेय खग अहि सहसानन । चिंतामनि पुनि उपल दसानन ॥ लं० २५/७

बोले लखन मधुर मृदु बानी । ग्यान बिराग भगति रस सानी ।। अ० ९१/३

बोले बंदी बचन बर सुनहु सकल महिपाल ।
पन बिदेह कर कहहिं हम भुजा उठाइ बिसाल ।। बा० २४९/०

बोले उचित बचन रघुनंदू । दिनकर कुल कैरव बन चंदू ।। अ० २६२/४

बोले बचन नीति प्रतिपालक । कारन मनुज दनुज कुल घालक ।। सुं० ४९/४

बोले बचन बानि सरबसु से । हित परिनाम सुनत ससि रसु से ।। अ० ३०३/७

बोले बचन बिगत सब दूषन । मृदु मंजुल जनु बाग बिभूषन ।। अ० ४०/६

बोले बचनु राम नय नागर । सील सनेह सरल सुख सागर ।। अ० ६९/७

बोले बामदेउ सब साँची । कीरति कलित लोक तिहुँ माची ।। बा० ३५८/७

बोले बिप्र सकोप तब नहिं कछु कीन्ह बिचार ।
जाइ निसाचर होहु नृप मूढ़ सहित परिवार ।। बा० १७३/०

बोले बिहसि चराचर राया । बहुते दिनन कीन्हि मुनि दाया ।। बा० १२७/६

बोले बिहसि महेस तब ग्यानी मूढ़ न कोइ ।
जेहि जस रघुपति करहिं जब सो तस तेहि छन होइ ।। बा० १२४/० (क)

बोल्लहिं जो जय जय मुंड रुंड प्रचंड सिर बिनु धावहीं ।
खप्परिन्ह खग्ग अलुज्झि जुज्झहिं सुभट भटन्ह ढहावहीं ।।
बानर निसाचर निकर मर्दहिं राम बल दर्पित भए ।
संग्राम अंगन सुभट सोवहिं राम सर निकरन्हि हए ।। लं० ८७/१ छं०

बंचक भगत कहाइ राम के । किंकर कंचन कोह काम के ।। बा० ११/३

बंचेहु मोहि जवनि धरि देहा । सोइ तनु धरहु श्राप मम एहा ।। बा० १३६/६

बंदउँ अवध पुरी अति पावनि । सरजू सरि कलि कलुष नसावनि ।। बा० १५/१

बंदउँ अवध भुआल सत्य प्रेम जेहि राम पद ।
बिछुरत दीनदयाल प्रिय तनु तृन इव परिहरेउ ।। बा० १६/० सो०

बंदउँ कौसल्या दिसि प्राची । कीरति जासु सकल जग माची ।। बा० १५/४

बंदउँ खल जस सेष सरोषा । सहस बदन बरनइ पर दोषा ।। बा० ३/८

बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि ।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर ।। बा० ०/५ सो०

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा । सुरुचि सुबास सरस अनुरागा ।। बा० ०/१

बंदउँ चारिउ बेद भव बारिधि बोहित सरिस ।
जिन्हहि न सपनेहुँ खेद बरनत रघुबर बिसद जसु ।। बा० १४/० (ङ) सो०

बंदउँ नाम राम रघुबर को । हेतु कृसानु भानु हिमकर को ।। बा० १८/१

बंदउँ पद धरि धरनि सिरु बिनय करउँ कर जोरि ।
बरनहु रघुबर बिसद जसु श्रुति सिद्धांत निचोरि ।। बा० १०९/०

बंदउँ पद सरोज सब केरे । जे बिनु काम राम के चेरे ।। बा० १७/४

बंदउँ प्रथम महीसुर चरना । मोह जनित संसय सब हरना ॥ बा० १/३
बंदउँ बालरूप सोइ रामू । सब सिधि सुलभ जपत जिसु नामू ॥ बा० १११/३
बंदउँ बिधि पद रेनु भव सागर जेहिं कीन्ह जहँ ।
संत सुधा ससि धेनु प्रगटे खल बिष बारुनी ॥ बा० १४/० (च) सो०
बंदउँ मुनि पद कंजु रामायन जेहिं निरमयउ ।
सखर सुकोमल मंजु दोष रहित दूषन सहित ॥ बा० १४/० (घ) सो०
बंदउँ लछिमन पद जलजाता । सीतल सुभग भगत सुख दाता ॥ बा० १६/५
बंदउँ सब के चरन सुहाए । अधम सरीर राम जिन्ह पाए ॥ बा० १७/२
बंदउँ संत असज्जन चरना । दुखप्रद उभय बीच कछु बरना ॥ बा० ४/३
बंदउँ संत समान चित हित अनहित नहिं कोइ ।
अंजलि गत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोइ ॥ बा० ३/० (क)
बंदत चरन करत प्रभु सेवा । बिबिध बेष देखे सब देवा ॥ बा० ५३/८
बंदनवार पताका केतू । सबन्हि बनाए मंगल हेतू ॥ उ० ८/२
बंदि चरन उर धरि प्रभुताई । अंगद चलेउ सबहि सिरु नाई ॥ लं० १७/१
बंदि चरन मनु कहेउ बहोरी । अवर एक बिनती प्रभु मोरी ॥ बा० १५०/४
बंदि पितर सुर सुकृत संभारे । जौं कछु पुन्य प्रभाउ हमारे ॥ बा० २५४/७
बंदि बिप्र सुर गुर पितु माता । पाइ असीस मुदित सब भ्राता ॥ बा० ३५७/७
बंदि बंदि पग सिय सबही के । आसिरबचन लहे प्रिय जी के ॥ अ० २४५/३
बंदि मागधन्हि गुनगन गाए । पुरजन द्वार जोहारन आए ॥ बा० ३५७/६
बंदि राम पद बारहिं बारा । मुनि निज आश्रम कहुँ पगु धारा ॥ सुं० ५६/१२
बंदि राम सिय चरन सुहाए । चले संग नृपमंदिर आए ॥ अ० ७५/२
बंदी मागध सूतगन बिरुद बदहिं मतिधीर ।
करहिं निछावरि लोग सब हय गय धन मनि चीर ॥ बा० २६२/०
बंधन काटि गयो उरगादा । उपजा हृदयँ प्रचंड बिषादा ॥ उ० ५७/५
बंधु कहइ कटु संमत तोरें । तू छल बिनय करसि कर जोरें ॥ बा० २८०/१
बंधु दसा बिलोकि दुख कीन्हा । तब प्रभु अनुजहि आयसु दीन्हा ॥ लं० १०४/५
बंधु प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती । बिनु अधार मन तोषु न साँती ॥ अ० ३१५/२
बंधु बचन सुनि चला बिभीषन । आयउ जहँ त्रैलोक बिभूषन ॥ लं० ६४/१
बंधु बचन सुनि प्रभु मुसुकाने । होइ सुचि सहज पुनीत नहाने ॥ बा० २३८/७
बंधु बंस तैं कीन्ह उजागर । भजेहु राम सोभा सुख सागर ॥ लं० ६३/९
बंधु मनोहर सोहहिं संगा । जात नचावत चपल तुरंगा ॥ बा० ३१५/५
बंधु सखा सँग लेहिं बोलाई । बन मृगया नित खेलहिं जाई ॥ बा० २०४/१
बंधु सनेह सरस एहि ओरा । उत साहिब सेवा बस जोरा ॥ अ० २३९/४
बंधु समेत जनकु तब आए । प्रेम उमगि लोचन जल छाए ॥ बा० ३३७/४

बंस कि रह द्विज अनहित कीन्हें। कर्म कि होहिं स्वरूपहिं चीन्हें ॥ उ० १११/३
बाँधा सेतु नील नल नागर। राम कृपाँ जसु भयउ उजागर ॥ लं० २/७
बाँधि जटा सिर कसि कटि भाथा। साजि सरासनु सायकु हाथा ॥ अ० २२९/२
बाँधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा। देखि कृपानिधि के मन भावा ॥ लं० ३/१
बाँधें बिरद बीर रन गाढ़े। निकसि भए पुर बाहेर ठाढ़े ॥ बा० २९८/१
बाँध्यो बननिधि नीरनिधि जलधि सिंधु बारीस ।
सत्य तोयनिधि कंपति उदधि पयोधि नदीस ॥ लं० ५/०
बिंध्याचल गभीर बन गयऊ। मृग पुनीत बहु मारत भयऊ ॥ बा० १५५/४
बिंधि मुदित मन सुखु न समाई। श्रम बिनु बिपुल बड़ाई पाई ॥ अ० १३७/८
बूँद अघात सहहिं गिरि कैसें। खल के बचन संत सह जैसें ॥ कि० १३/४
ब्यर्थ मरहु जनि गाल बजाई। मन मोदकन्हि कि भूख बुताई ॥ बा० २४५/१
ब्याकुल कटकु कीन्ह घननादा। पुनि भा प्रगट कहइ दुर्बादा ॥ लं० ७३/३
ब्याकुल कहहिं कहाँ बैदेही। सुनि धीरजु परिहरह न केही ॥ बा० ३३७/२
ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा। बिबिध जतन करि ताहि जगावा ॥ लं० ६१/६
ब्याकुल गयउ देवरिषि पाहीं। कहेसि जो संसय निज मन माहीं ॥ उ० ५८/३
ब्याकुल राउ सिथिल सब गाता। करिनि कलपतरु मनहुँ निपाता ॥ अ० ३४/१
ब्याधि असाधि जानि तिन्ह त्यागी। चलीं कहत मतिमंद अभागी ॥ अ० ५०/२
ब्यापक अकल अनीह अज निर्गुन नाम न रूप ।
भगत हेतु नाना बिधि करत चरित्र अनूप ॥ बा० २०५/०
ब्यापकु एकु ब्रह्म अबिनासी। सत चेतन घन आनँद रासी ॥ बा० २२/६
ब्यापक बिस्वरूप भगवाना। तेहिं धरि देह चरित कृत नाना ॥ बा० १२/४
ब्यापक ब्रह्म अजित भुवनेश्वर। लछिमन कहाँ बूझ करुनाकर ॥ लं० ५४/५
ब्यापकु ब्रह्मु अलखु अबिनासी। चिदानंदु निरगुन गुनरासी ॥ बा० ३४०/६
ब्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुन बिगत बिनोद ।
सो अज प्रेम भगति बस कौसल्या कें गोद ॥ बा० १९८/०
ब्यापक ब्रह्म बिरज बागीसा। माया मोह पार परमीसा ॥ उ० ५७/७
ब्यापक ब्याप्य अखंड अनंता। अखिल अमोघसक्ति भगवंता ॥ उ० ७१/४
ब्यापहिं मानस रोग न भारी। जिन्ह के बस सब जीव दुखारी ॥ उ० ११९/८
ब्यापि रहेउ संसार महुँ माया कटक प्रचंड ।
सेनापति कामादि भट दंभ कपट पाषंड ॥ उ० ७१/० (क)
ब्याल कराल बिहग बन घोरा। निसिचर निकर नारि नर चोरा ॥ अ० ६२/३
ब्याल पास बस भए खरारी। स्वबस अनंत एक अबिकारी ॥ लं० ७२/११
ब्यास आदि कबि पुंगव नाना। जिन्ह सादर हरि सुजस बखाना ॥ बा० १३/२
ब्याह बिभूषन बिबिध बनाए। मंगल सब सब भाँति सुहाए ॥ बा० ३१५/२

ब्रतु निरंबु तेहि दिन प्रभु कीन्हा। मुनिहु कहें जलु काहुँ न लीन्हा ॥ अ० २४६/८
ब्रह्म अनामय अज भगवंता। ब्यापक अजित अनादि अनंता ॥ सुं० ३८/२
ब्रह्म अस्त्र तेहिं साँधा कपि मन कीन्ह बिचार।
जौं न ब्रह्मसर मानउँ महिमा मिटइ अपार ॥ सुं० १९/०
ब्रह्म ग्यान बिनु नारि नर कहहिं न दूसरि बात।
कौड़ी लागि लोभ बस करहिं बिप्र गुर घात ॥ उ० ९९/० (क)
ब्रह्मग्यान रत मुनि बिग्यानी। मोहि परम अधिकारी जानी ॥ उ० ११०/२
ब्रह्मचरज ब्रत रत मतिधीरा। तुम्हहि कि करइ मनोभव पीरा ॥ बा० १२८/२
ब्रह्मचर्ज ब्रत संजम नाना। धीरज धरम ग्यान बिग्याना ॥ बा० ८३/७
ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा। उभय बेष धरि की सोइ आवा ॥ बा० २१५/२
ब्रह्म जो ब्यापक बिरज अज अकल अनीह अभेद।
सो कि देह धरि होइ नर जाहि न जानत बेद ॥ बा० ५०/०
ब्रह्मधाम सिवपुर सब लोका। फिरा श्रमित ब्याकुल भय सोका ॥ अर० १/४
ब्रह्म निरूपन धरम बिधि बरनहिं तत्त्व बिभाग।
कहहिं भगति भगवंत कै संजुत ग्यान बिराग ॥ बा० ४४/०
ब्रह्म पयोनिधि मंदर ग्यान संत सुर आहिं।
कथा सुधा मथि काढ़हिं भगति मधुरता जाहिं ॥ उ० १२०/० (क)
ब्रह्मबान कपि कहुँ तेहिं मारा। परतिहुँ बार कटकु संघारा ॥ सुं० १९/१
ब्रह्म राम तें नामु बड़ बर दायक बर दानि।
रामचरित सत कोटि महँ लिय महेस जियँ जानि ॥ बा० २५/०
ब्रह्मलोक लगि गयउँ मैं चितयउँ पाछ उड़ात।
जुग अंगुल कर बीच सब राम भुजहि मोहि तात ॥ उ० ७९/० (क)
ब्रह्मसभाँ हम सन दुखु माना। तेहि तें अजहुँ करहिं अपमाना ॥ बा० ६१/३
ब्रह्मसुखहि अनुभवहिं अनूपा। अकथ अनामय नाम न रूपा ॥ बा० २१/२
ब्रह्मसृष्टि जहँ लगि तनुधारी। दसमुख बसबर्ती नर नारी ॥ बा० १८१/१२
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ॥
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ॥ बा० १९१/३ छं०
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीसा। प्रभुहि प्रसंसहिं देहिं असीसा ॥ बा० २६१/५
ब्रह्मानंद मगन कपि सब कें प्रभु पद प्रीति।
जात न जाने दिवस तिन्ह गए मास षट बीति ॥ उ० १५/०
ब्रह्मानंदु लोग सब लहहीं। बढ़हुँ दिवस निसि बिधि सन कहहीं ॥ बा० ३०८/८
ब्रह्मानंद सदा लयलीना। देखत बालक बहुकालीना ॥ उ० ३१/४

ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं
श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा।
संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं।
धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ॥ कि० श्लोक २
बृद्ध बृद्ध बिहंग तहँ आए। सुनै राम के चरित सुहाए ॥ उ० ६२/४
बृद्ध रोगबस जड़ धनहीना। अंध बधिर क्रोधी अति दीना ॥ अर० ४/८
बृषभ कंध उर बाहु बिसाला। चारु जनेउ माल मृगछाला ॥ बा० २६७/७
बृंद बृंद मिलि चलीं लोगाईं। सहज सिंगार किएँ उठि धाईं ॥ बा० १९३/३
बृंदारका गन सुमन बरिसहिं राउ जनवासेहि चले।
दुंदुभी जय धुनि बेद धुनि नभ नगर कौतूहल भले॥
तब सखीं मंगल गान करत मुनीस आयसु पाइ कै।
दूलह दूलहिनिन्ह सहित सुंदरि चलीं कोहबर ल्याइ कै ॥ बा० ३२५/४ छं०

भ

भइ दिनकर कुल बिटप कुठारी। कुमति कीन्ह सब बिस्व दुखारी ॥ अ० ९१/१
भइ बड़ि भीर भूप दरबारा। बरनि न जाइ बिषादु अपारा ॥ अ० ७५/६
भइ मम कीट भृंग की नाई। जहँ तहँ मैं देखउँ दोउ भाई ॥ अर० २४/७
भइ रघुपति पद प्रीति प्रतीती। दारुन असंभावना बीती ॥ बा० ११८/८
भईं मुदित सब ग्रामबधूटीं। रंकन्ह राय रासि जनु लूटीं ॥ अ० ११६/८
भईं बिकल अबला सकल दुखित देखि गिरिनारि।
करि बिलापु रोदति बदति सुता सनेहु सँभारि ॥ बा० ९६/०
भए अजस अघ भाजन प्राना। कवन हेतु नहिं करत पयाना ॥ अ० १४३/५
भए कामबस जोगीस तापस पावँरन्हि की को कहै।
देखहिं चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखत रहे॥
अबला बिलोकहिं पुरुषमय जगु पुरुष सब अबलामयं।
दुइ दंड भरि ब्रह्मांड भीतर कामकृत कौतुक अयं ॥ बा० ८४/१ छं०
भए कालबस जब पितु माता। मैं बन गयउँ भजन जनत्राता ॥ उ० १०९/९
भए कुमार जबहिं सब भ्राता। दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता ॥ बा० २०३/३
भए क्रुद्ध जुद्ध बिरुद्ध रघुपति त्रोन सायक कसमसे।
कोदंड धुनि अति चंड सुनि मनुजाद सब मारुत ग्रसे॥
मंदोदरी उर कंप कंपति कमठ भू भूधर त्रसे।
चिक्करहिं दिग्गज दसन गहि महि देखि कौतुक सुर हँसे ॥ लं० ९०/१ छं०
भए क्रुद्ध तीनिउ भाइ। जो भागि रन ते जाइ ॥ अर० १९/४ छं०
भए जे अहहिं जे होइहहिं आगें। प्रनवउँ सबहि कपट सब त्यागें ॥ बा० १३/६

भए तुरत सब जीव सुखारे। जिमि मद उतरि गएँ मतवारे ॥ बा० ८५/३
भए निसाचर जाइ तेइ महाबीर बलवान।
कुंभकरन रावन सुभट सुर बिजई जग जान ॥ बा० १२२/०
भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी ॥
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी ॥ बा० १९१/१ छं०
भए बरन संकर कलि भिन्नसेतु सब लोग।
करहिं पाप पावहिं दुख भय रुज सोक बियोग ॥ उ० १००/० (क)
भए बहुत दिन अति अवसेरी। सगुन प्रतीति भेंट प्रिय केरी ॥ अ० ६/६
भए बिकल खग मृग एहि भाँती। मनुज दसा कैसें कहि जाती ॥ बा० ३३७/३
भए बिगतश्रम रामु सुखारे। भरद्वाज मृदु बचन उचारे ॥ अ० १०६/४
भए बिलोचन चारु अचंचल। मनहुँ सकुचि निमि तजे दिगंचल ॥ बा० २२९/४
भए बिसुद्ध दिए सब दाना। धेनु बाजि गज बाहन नाना ॥ अ० १६९/८
भए बिसोक कोक मुनि देवा। बरिसहिं सुमन जनावहिं सेवा ॥ बा० २५४/३
भए मगन छबि तासु बिलोकी। अजहुँ प्रीति उर रहति न रोकी ॥ बा० ४९/८
भए मगन देखत मुख सोभा। जनु चकोर पूरन ससि लोभा ॥ बा० २०६/६
भए मगन सब देखनिहारे। जनक समान अपान बिसारे ॥ बा० ३२४/६
भए मगन सिव सुनत सनेहा। हरषि सप्तरिषि गवने गेहा ॥ बा० ८९/३
भए लोग सब मोहबस लोभ ग्रसे सुभ कर्म।
सुनु हरिजान ग्यान निधि कहउँ कछुक कलिधर्म ॥ उ० ९७/० (ख)
भए सब सुखी देखि दोउ भ्राता। बारि बिलोचन पुलकित गाता ॥ बा० २१४/७
भएँ ग्यानु बरु मिटै न मोहू। तुम्ह रामहि प्रतिकूल न होहू ॥ अ० १६८/३
भक्त कल्पपादप आरामः। तर्जन क्रोध लोभ मद कामः ॥ अर० १०/१३
भक्ति सुतंत्र सकल सुख खानी। बिनु सतसंग न पावहिं प्रानी ॥ उ० ४४/५
भगत कल्पतरु प्रनत हित कृपा सिंधु सुख धाम।
सोइ निज भगति मोहि प्रभु देहु दया करि राम ॥ उ० ८४/० (ख)
भगत बछलता प्रभु कै देखी। उपजी मम उर प्रीति बिसेषी ॥ उ० ८२/७
भगत बछल प्रभु कृपानिधाना। बिस्वबास प्रगटे भगवाना ॥ बा० १४५/८
भगत हेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तनु भूप।
किए चरित पावन परम प्राकृत नर अनुरूप ॥ उ० ७२/० (क)
भगति करत बिनु जतन प्रयासा। संसृति मूल अबिद्या नासा ॥ उ० ११८/८
भगति कि साधन कहउँ बखानी। सुगम पंथ मोहि पावहिं प्रानी ॥ अर० १५/५
भगति ग्यान बिग्यान बिरागा। जोग चरित्र रहस्य बिभागा ॥ उ० ८४/७

भगति ग्यान बिग्यान बिरागा। पुनि सब बरनहु सहित बिभागा॥ बा० ११०/२
भगति जोग सुनि अति सुख पावा। लछिमन प्रभु चरनन्हि सिरु नावा॥ अर० १६/१
भगति तात अनुपम सुखमूला। मिलइ जो संत होइँ अनुकूला॥ अर० १५/४
भगति निरूपन बिबिध बिधाना। छमा दया दम लता बिताना॥ बा० ३६/१३
भगति पच्छ हठ करि रहेउँ दीन्हि महारिषि साप।
मुनि दुर्लभ बर पायउँ देखहु भजन प्रताप॥ उ० ११४/० (ख)
भगति पच्छ हठ नहिं सठताई। दुष्ट तर्क सब दूरि बहाई॥ उ० ४५/८
भगतिवंत अति नीचउ प्रानी। मोहि प्रानप्रिय असि मम बानी॥ उ० ८५/१०
भगत भूमि भूसुर सुरभि सुर हित लागि कृपाल।
करत चरित धरि मनुज तनु सुनत मिटहिं जग जाल॥ अ० ९३/०
भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें। प्रगटे अगिनि चरू कर लीन्हें॥ बा० १८८/६
भगति सुतिय कल करन बिभूषन। जग हित हेतु बिमल बिधु पूषन॥ बा० १९/६
भगतिहि ग्यानहि नहिं कछु भेदा। उभय हरहिं भव संभव खेदा॥ उ० ११४/१३
भगतिहि सानुकूल रघुराया। ताते तेहि डरपति अति माया॥ उ० ११५/५
भगति हीन गुन सब सुख ऐसे। लवन बिना बहु बिंजन जैसे॥ उ० ८३/५
भगति हीन नर सोहइ कैसा। बिनु जल बारिद देखिअ जैसा॥ अर० ३४/६
भगति हीन बिरंचि किन होई। सब जीवहु सम प्रिय मोहि सोई॥ उ० ८५/९
भगति हेतु बहु कथा पुराना। कहे बिप्र जद्यपि प्रभु जाना॥ बा० २०९/८
भगति हेतु बिधि भवन बिहाई। सुमिरत सारद आवति धाई॥ बा० १०/४
भगति हेतु सोइ दीनदयाला। चितवत चकित धनुष मखसाला॥ बा० २२४/५
भजन हीन सुख कवने काजा। अस बिचारि बोलेउँ खगराजा॥ उ० ८३/६
भजहु प्रनत प्रतिपालक रामहि। सोभा सील रूप गुन धामहि॥ उ० २९/२
भजामि ते पदाबुजं। अकामिनां स्वधामदं॥ अर० ३/२ छं०
भजामि भाव वल्लभं। कुयोगिनां सुदुर्लभं॥ अर० ३/१९ छं०
भजि रघुपति करु हित आपना। छाँड़हु नाथ मृषा जल्पना॥ लं० ५५/५
भजे सशक्ति सानुजं। शची पति प्रियानुजं॥ अर० ३/१२ छं०
भट कटत तन सत खंड। पुनि उठत करि पाषंड॥ अर० १९/११ छं०
भट कपाल करताल बजावहिं। चामुंडा नाना बिधि गावहिं॥ लं० ८७/८
भट जम नियम सैल रजधानी। सांति सुमति सुचि सुंदर रानी॥ अ० २३४/७
भनिति बिचित्र सुकबि कृत जोऊ। राम नाम बिनु सोह न सोऊ॥ बा० ९/३
भनिति भदेस बस्तु भलि बरनी। राम कथा जग मंगल करनी॥ बा० ९/१०
भनिति मोरि सब गुन रहित बिस्व बिदित गुन एक।
सो बिचारि सुनिहहिं सुमति जिन्ह कें बिमल बिबेक॥ बा० ९/०
भनिति मोरि सिव कृपाँ बिभाती। ससि समाज मिलि मनहुँ सुराती॥ बा० १४/९
भय अरु प्रीति नीति देखराई। चले सकल चरनन्हि सिर नाई॥ कि० १८/७

भरत आइ आगें भइ लीन्हे। अवसर सरिस सुआसन दीन्हे ॥ अ० २९१/७
भरत आगमनु सकल मनावहिं। आवहुँ बेगि नयन फलु पावहिं ॥ अ० १०/२
भरत कहेउ सुरसरि तव रेनू। सकल सुखद सेवक सुरधेनू ॥ अ० १९६/७
भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ। रिपु रिन रंच न राखब काऊ ॥ अ० २२८/२
भरतकूप अब कहिहहिं लोगा। अति पावन तीरथ जल जोगा ॥ अ० ३०९/७
भरत चरन सिरु नाइ तुरित गयउ कपि राम पहिं।
कही कुसल सब जाइ हरषि चलेउ प्रभु जान चढ़ि ॥ उ० २/० (ख) सो०
भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं।
सीय राम पद पेमु अवसि होइ भव रस बिरति ॥ अ० ३२६/० सो०
भरत चरित कीरति करतूती। धरम सील गुन बिमल बिभूती ॥ अ० २८७/७
भरत जाइ घर कीन्ह बिचारू। नगरू बाजि गज भवन भँडारू ॥ अ० १८५/२
भरत तीसरे पहर कहँ कीन्ह प्रबेसु प्रयाग।
कहत राम सिय राम सिय उमगि उमगि अनुराग ॥ अ० २०३/०
भरत दयानिधि दीन्हि छड़ाई। कौसल्या पहिं गे दोउ भाई ॥ अ० १६२/८
भरत दरसु देखत खुलेउ मग लोगन्ह कर भागु।
जनु सिंघलबासिन्ह भयउ बिधि बस सुलभ प्रयागु ॥ अ० २२३/०
भरत दसा तेहि अवसर कैसी। जल प्रबाहँ जल अलि गति जैसी ॥ अ० २३३/७
भरत दीख प्रभु आश्रमु पावन। सकल सुमंगल सदनु सुहावन ॥ अ० २३८/२
भरत दीख बन सैल समाजू। मुदित छुधित जनु पाइ सुनाजू ॥ अ० २३४/२
भरत दीन्ह निज बसन डसाई। बैठे प्रभु सेवहिं सब भाई ॥ उ० ४९/६
भरत दुखित परिवारु निहारा। मानहुँ तुहिन बनज बनु मारा ॥ अ० १५८/४
भरत धन्य तुम्ह जसु जग जयऊ। कहि अस पेम मगन मुनि भयऊ ॥ अ० २०९/६
भरत नयन भुज दच्छिन फरकत बारहिं बार।
जानि सगुन मन हरष अति लागे करन बिचार ॥ उ० ०/४
भरत न राजनीति उर आनी। तब कलंकु अब जीवन हानी ॥ अ० १८८/६
भरत पयादेहिं आए आजू। भयउ दुखित सुनि सकल समाजू ॥ अ० २०३/२
भरत प्रीति नति बिनय बड़ाई। सुनत सुखद बरनत कठिनाई ॥ अ० ३०२/४
भरत प्रेमु तेहि समय जस तस कहि सकइ न सेषु।
कबिहि अगम जिमि ब्रह्मसुखु अह मम मलिन जनेषु ॥ अ० २२५/०
भरत बचन मुनिबर मन भाए। सुचि सेवक सिष निकट बोलाए ॥ अ० २१२/४
भरत बचन सब कहँ प्रिय लागे। राम सनेह सुधाँ जनु पागे ॥ अ० १८३/१
भरत बचन सुचि सुनि सुर हरषे। साधु सराहि सुमन सुर बरषे ॥ अ० २६९/१
भरत बचन सुनि देखि सनेहू। सभा सहित मुनि भए बिदेहू ॥ अ० २५६/१
भरत बचन सुनि देखि सुभाऊ। सहित समाज सराहत राऊ ॥ अ० २९३/१

भरत सत्रुहन दूनउ भाई । प्रभु सेवक जसि प्रीति बड़ाई ॥ बा० १९७/४
भरत सत्रुहन दोनउ भाई । सहित पवनसुत उपबन जाई ॥ उ० २५/४
भरत सील गुन बिनय बड़ाई । भायप भगति भरोस भलाई ॥ अ० २८२/३
भरत सील गुन सचिव समाजू । सकुच सनेह बिबस रघुराजू ॥ अ० ३१५/३
भरत सुजान राम रुख देखी । उठि सप्रेम धरि धीर बिसेषी ॥ अ० ३१२/५
भरत सुभाउ न सुगम निगमहूँ । लघु मति चापलता कबि छमहूँ ॥ अ० ३०३/१
भरत सुभाउ समुझि मन माहीं । प्रभु चित हित थिति पावत नाहीं ॥ अ० २२६/४
भरत सुभाउ सीलु बिनु बूझें । बड़ि हित हानि जानि बिनु जूझें ॥ अ० १९१/८
भरत सुभाउ सुसीतलताई । सदा एकरस बरनि न जाई ॥ बा० ४१/८
भरत हृदयँ सिय राम निवासू । तहँ कि तिमिर जहँ तरनि प्रकासू ॥ अ० २९४/७
भरतहि अवसि देहु जुबराजू । कानन काह राम कर काजू ॥ अ० ४९/२
भरतहि कहहिं सराहि सराही । राम प्रेम मूरति तनु आही ॥ अ० १८३/४
भरतहि कुसल हमारि सुनाएहु । समाचार लै तुम्ह चलि आएहु ॥ लं० १२०/२
भरतहि देखि मातु उठि धाई । मुरुछित अवनि परी झइँ आई ॥ अ० १६३/१
भरतहि दोसु देइ को जाएँ । जग बौराइ राज पदु पाएँ ॥ अ० २२७/८
भरतहि धरम धुरंधर जानी । निज सेवक तन मानस बानी ॥ अ० २५८/२
भरतहि बहुरि सराहन लागी । सील सनेह सुभाय सुभागी ॥ अ० २२१/८
भरतहि बिसरेउ पितु मरन सुनत राम बन गौनु ।
हेतु अपनपउ जानि जियँ थकित रहे धरि मौनु ॥ अ० १६०/०
भरतहि भयउ परम संतोषू । सनमुख स्वामि बिमुख दुख दोषू ॥ अ० ३०६/३
भरतहि सहित समाज उछाहू । मिलिहहिं रामु मिटिहि दुख दाहू ॥ अ० २२४/२
भरतहि होइ न राजमदु बिधि हरि हर पद पाइ ।
कबहुँ कि काँजी सीकरनि छीरसिंधु बिनसाइ ॥ अ० २३१/०
भरतहुँ मातु सकल समुझाई । कहि पुरान श्रुति कथा सुहाई ॥ अ० १६६/३
भरतानुज लछिमन पुनि भेंटे । दुसह बिरह संभव दुख मेटे ॥ उ० ५/१
भरतु अवधि सनेह ममता की । जद्यपि रामु सीम समता की ॥ अ० २८८/६
भरतु कमल कर जोरि धीर धुरंधर धीर धरि ।
बचन अमिअँ जनु बोरि देत उचित उत्तर सबहि ॥ अ० १७६/० सो०
भरतु कहहिं सोइ किएँ भलाई । अस कहि राम रहे अरगाई ॥ अ० २५८/८
भरतु कि राउर पूत न होंही । आनेहु मोल बेसाहि कि मोही ॥ अ० २९/२
भरतु जनकु मुनिजन सचिव साधु सचेत बिहाइ ।
लागि देवमाया सबहि जथाजोगु जनु पाइ ॥ अ० ३०२/०
भरतु न मोहि प्रिय राम समाना । सदा कहहु यहु सबु जगु जाना ॥ अ० ४८/५
भरतु नीति रत साधु सुजाना । प्रभु पद प्रेमु सकल जगु जाना ॥ अ० २२७/२

भरतु प्रानप्रिय पावहिं राजू। बिधि सब बिधि मोहि सनमुख आजू ॥ अ० ४१/१
भरतु बसष्ठि निकट बैठारे। नीति धरममय बचन उचारे ॥ अ० १७०/४
भरतु मुनिहि मन भीतर भाए। सहित समाज राम पहिं आए ॥ अ० २५६/५
भरतु राम प्रिय पुनि लघु भ्राता। कस न होइ मगु मंगलदाता ॥ अ० २१६/५
भरतु रामही की अनुहारी। सहसा लखि न सकहिं नर नारी ॥ बा० ३१०/६
भरतु हंस रबिबंस तड़ागा। जनमि कीन्ह गुन दोष बिभागा ॥ अ० २३१/६
भरद्वाज आश्रम अति पावन। परम रम्य मुनिबर मन भावन ॥ बा० ४३/६
भरद्वाज आश्रम सब आए। देखन दसरथ सुअन सुहाए ॥ अ० १०७/६
भरद्वाज मुनि बसहिं प्रयागा। तिन्हहि राम पद अति अनुरागा ॥ बा० ४३/१
भरद्वाज सुनि संकर बानी। सकुचि सप्रेम उमा मुसुकानी ॥ बा० १४०/७

भरद्वाज सुनु जाहि जब होइ बिधाता बाम।
धूरि मेरुसम जनक जम ताहि ब्यालसम दाम ॥ बा० १७५/०

भरहिं निरंतर होहिं न पूरे। तिन्ह के हिय तुम्ह कहुँ गृह रूरे ॥ अ० १२७/५
भरि भरि परन पुटीं रचि रूरी। कंद मूल फल अंकुर जूरी ॥ अ० २४९/२
भरि भरि बसहँ अपार कहारा। पठई जनक अनेक सुसारा ॥ बा० ३३२/५
भरि भरि बारि बिलोचन लेहीं। बाम बिधातहि दूषन देहीं ॥ अ० २०१/४
भरि भरि हेम थार भामिनी। गावत चलिं सिंधुरगामिनी ॥ उ० २/६
भरि लोचन छबिसिंधु निहारी। कुसमय जानि न कीन्हि चिन्हारी ॥ बा० ४९/२
भरि लोचन बिलोकि अवधेसा। तब सुनिहउँ निर्गुन उपदेसा ॥ उ० ११०/११
भरि लोचन रघुपतिहि निहारी। प्रेम मगन सब भए सुखारी ॥ लं० १०४/३
भरेउ सुमानस सुथल थिराना। सुखद सीत रुचि चारु चिराना ॥ बा० ३५/९

भरे भुवन घोर कठोर रव रबि बाजि तजि मारगु चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरम कलमले ॥
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हें सकल बिकल बिचारहीं।
कोदंड खंडेउ राम तुलसी- जयति बचन उचारहीं ॥ बा० २६०/१ छं०

भरे सुधासम सब पकवाने। नाना भाँति न जाहिं बखाने ॥ बा० ३०४/२
भल अनभल निज निज करतूती। लहत सुजस अपलोक बिभूती ॥ बा० ४/७
भल न कीन्ह तैं निसिचर नाहा। अब मोहि आइ जगाएहि काहा ॥ लं० ६२/१
भल दिन आजु जानि मन माहीं। रामु कृपाल कहत सकुचाहीं ॥ अ० ३१२/२
भलि रचना मुनि नृप सन कहेऊ। राजाँ मुदित महासुख लहेऊ ॥ बा० २४३/८
भलेउ पोच सब बिधि उपजाए। गनि गुन दोष बेद बिलगाए ॥ बा० ५/३
भले भवन अब बायन दीन्हा। पावहुगे फल आपन कीन्हा ॥ बा० १३६/५
भलेहिं नाथ आयसु धरि सीसा। बाँधि तुरग तरु बैठ महीसा ॥ बा० १५९/१
भलेहिं नाथ कहि कृपानिकेता। उतरे तहँ मुनिबृंद समेता ॥ बा० २१३/७

भलेहिं नाथ कहि तिन्ह सिर नाए । प्रमुदित निज निज काज सिधाए ॥ अ० २१२/६
भलेहिं नाथ कहि सचिव बोलाए । कहि जय जीव सीस तिन्ह नाए ॥ बा० ३३१/६
भलेहिं नाथ सब कहहिं सहरषा । एकहिं एक बढ़ावइ करषा ॥ अ० १९०/२
भलेहि मंद मंदेहि भल करहू । बिसमय हरष न हियँ कछु धरहू ॥ बा० १३६/२
भलो भलाइहि पै लहइ लहइ निचाइहि नीचु ।
सुधा सराहिअ अमरताँ गरल सराहिअ मीचु ॥ बा० ५/०
भव कि परहिं परमात्मा बिंदक । सुखी कि होहिं कबहुँ हरिनिंदक ॥ उ० १११/५
भव तारन कारन काज परं । मन संभव दारुन दोष हरं ॥ लं० ११०/१२ छं०
भवन एक पुनि दीख सुहावा । हरि मंदिर तहँ भिन्न बनावा ॥ सुं० ४/८
भवन गयउ दसकंधर इहाँ पिसाचिनि बृंद ।
सीतहि त्रास देखावहिं धरहिं रूप बहु मंद ॥ सुं० १०/०
भवन बेदधुनि अति मृदु बानी । जनु खग मुखर समयँ जनु सानी ॥ बा० १९४/७
भवन भरतु रिपुसूदनु नाहीं । राउ बृद्ध मम दुखु मन माहीं ॥ अ० ७०/२
भव प्रबाहँ संतत हम परे । अब प्रभु पाहि सरन अनुसरे ॥ लं० १०९/१२
भव बारन दारन सिंह प्रभो । गुन सागर नागर नाथ बिभो ॥ लं० ११०/२ छं०
भव बारिधि कुंभज रघुनायक । सेवत सुलभ सकल सुख दायक ॥ उ० ३४/३
भव बारिधि मंदर परमं दर । बारय तारय संसृति दुस्तर ॥ लं० ११४/६ छं०
भव बंधन ते छूटहिं नर जपि जा कर नाम ।
खर्ब निसाचर बाँधेउ नागपास सोइ राम ॥ उ० ५८/०
भव भव बिभव पराभव कारिनि । बिस्व बिमोहनि स्वबस बिहारिनि ॥ बा० २३४/८
भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं जे नर अरु नारि ।
तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिसिरारि ॥ कि० ३०/० (क)
भव भंजन गंजन संदेहा । जन रंजन सज्जन प्रिय एहा ॥ उ० १२९/२
भव भंजन रंजन सुर यूथः । त्रातु सदा नो कृपा वरूथः ॥ अर० १०/१०
भव सागर चह पार जो पावा । राम कथा ता कहँ दृढ़ नावा ॥ उ० ५२/३
भव सिंधु अगाध परे नर ते । पद पंकज प्रेम न जे करते ॥ उ० १३/१० छं०
भव श्रम सोषक तोषक तोषा । समन दुरित दुख दारिद दोषा ॥ बा० ४२/४
भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम् ॥ बा० श्लोक २
भा अति क्रुद्ध महाबल बीरा । कियो मृगनायक नाद गँभीरा ॥ लं० ६८/२
भाइन्ह सहित उबटि अन्हवाए । छरस असन अति हेतु जेवाँए ॥ बा० ३३५/३
भाइन्ह सहित रामु मिलि राजहि । चले लवाइ समेत समाजहि ॥ अ० २७४/८
भाइ सचिव गुर पुरजन साथा । आगें गवनु कीन्ह रघुनाथा ॥ अ० २७४/१
भाइहि भाइहि परम समीती । सकल दोष छल बरजित प्रीती ॥ बा० १५२/७

भाइहि सौंपि मातु सेवकाई। आपु निषादहि लीन्ह बोलाई ॥ अ० १९७/४

भाइहु लावहु धोख जनि आजु काज बड़ मोहि।
सुनि सरोष बोले सुभट बीर अधीर न होहि ॥ अ० १९१/०

भाग छोट अभिलाषु बड़ करउँ एक बिस्वास।
पैहहिं सुख सुनि सुजन सब खल करिहहिं उपहास ॥ बा० ८/०

भागत भट पटकहिं धरि धरनी। करहिं भालु कपि अद्भुत करनी ॥ लं० ४६/७

भागि भवन पैठीं अति त्रासा। गए महेसु जहाँ जनवासा ॥ बा० ९५/५

भागेउ बिबेकु सहाय सहित सो सुभट संजुग महि मुरे।
सद्ग्रंथ पर्बत कंदरन्हि महुँ जाइ तेहि अवसर दुरे ॥
होनिहार का करतार को रखवार जग खरभरु परा।
दुइ माथ केहि रतिनाथ जेहि कहुँ कोपि कर धनु सरु धरा ॥ बा० ८३/१ छं०

भागे बानर धरहिं न धीरा। त्राहि त्राहि लछिमन रघुबीरा ॥ लं० ९५/४

भागे भालु बलीमुख जूथा। बृकु बिलोकि जिमि मेष बरूथा ॥ लं० ६९/१

भाग्य बिभव अवधेस कर देखि देव ब्रह्मादि।
लगे सराहन सहस मुख जानि जनम निज बादि ॥ बा० ३१३/०

भा निरास उपजी मन त्रासा। जथा चक्र भय रिषि दुर्बासा ॥ अर० १/३

भानु कमल कुल पोषनिहारा। बिनु जल जारि करइ सोइ छारा ॥ अ० १६/७

भानु कृसानु सर्ब रस खाहीं। तिन्ह कहँ मंद कहत कोउ नाहीं ॥ बा० ६८/६

भानु पीठि सेइअ उर आगी। स्वामिहि सर्ब भाव छल त्यागी ॥ कि० २२/४

भानुप्रतापहि बाजि समेता। पहुँचाएसि छन माझ निकेता ॥ बा० १७०/७

भानुबंस भए भूप घनेरे। अधिक एक तें एक बड़ेरे ॥ अ० २५४/५

भानु बंस राकेस कलंकू। निपट निरंकुस अबुध असंकू ॥ बा० २७३/२

भामिनि करहु त कहौं उपाऊ। है तुम्हरीं सेवा बस राऊ ॥ अ० २०/८

भामिनि भयउ तोर मनभावा। घर घर नगर अनंद बधावा ॥ अ० २६/२

भायप भगति भरत आचरनू। कहत सुनत दुख दूषन हरनू ॥ अ० २२२/१

भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ। नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ ॥ बा० २७/१

भार धरन सत कोटि अहीसा। निरवधि निरुपम प्रभु जगदीसा ॥ उ० ९१/८

भाल तिलक श्रमबिंदु सुहाए। श्रवन सुभग भूषन छबि छाए ॥ बा० २३२/३

भाल बिसाल तिलक झलकाहीं। कच बिलोकि अलि अवलि लजाहीं ॥ बा० २४२/६

भालु कपिन्ह पट भूषन पाए। पहिरि पहिरि रघुपति पहिं आए ॥ लं० ११७/१

भालु बलीमुख पाइ प्रकासा। धाए हरष बिगत श्रम त्रासा ॥ लं० ४६/५

भालु बाघ बृक केहरि नागा। करहिं नाद सुनि धीरजु भागा ॥ अ० ६१/८

भाव बस्य भगवान सुख निधान करुना भवन।
तजि ममता मद मान भजिअ सदा सीता रवन ॥ उ० ९२/० (ख) सो०

भाव भेद रस भेद अपारा। कबित दोष गुन बिबिध प्रकारा ॥ बा० ८/१०
भाव सहित खोजइ जो प्रानी। पाव भगति मनि सब सुख खानी ॥ उ० ११९/१५
भावी बस प्रतीति उर आई। पूँछ रानि पुनि सपथ देवाई ॥ अ० १८/१
भाषाबद्ध करबि मैं सोई। मोरें मन प्रबोध जेहिं होई ॥ बा० ३०/२
भाषा भनिति भोरि मति मोरी। हँसिबे जोग हँसे नहिं खोरी ॥ बा० ८/४
भा सब कें मन मोदु न थोरा। जनु घन धुनि सुनि चातक मोरा ॥ अ० १८४/१

भिन्न भिन्न अस्तुति करि गए सुर निज निज धाम।
बंदी बेष बेद तब आए जहँ श्रीराम ॥ उ० १२/० (ख)

भिन्न भिन्न मैं दीख सबु अति बिचित्र हरिजान।
अगनित भुवन फिरेउँ प्रभु राम न देखेउँ आन ॥ उ० ८१/० (क)

भिरे उभौ बाली अति तर्जा। मुठिका मारि महाधुनि गर्जा ॥ कि० ७/२
भिरे सकल जोरिहि सन जोरी। इत उत जय इच्छा नहिं थोरी ॥ लं० ५२/४
भीतर भवन दीन्ह बर बासू। मन जोगवत रह नृपु रनिवासू ॥ बा० ३५१/७
भुअन अनेक रोम प्रति जासू। यह प्रभुता कछु बहुत न तासू ॥ उ० २१/२
भुज उठाइ रघुपति कपि फेरे। फिरे एक एकन्ह तब टेरे ॥ लं० ९६/३
भुजग भूति भूषन त्रिपुरारी। आननु सरद चंद छबि हारी ॥ बा० १०५/८
भुजदंड प्रचंड प्रताप बलं। खल बृंद निकंद महा कुसलं ॥ लं० ११०/१० छं०
भुज प्रलंब कंजारुन लोचन। स्यामल गात प्रनत भय मोचन ॥ सुं० ४४/४
भुजबल जितेहु काल जम साईं। आजु परेहु अनाथ की नाईं ॥ लं० १०३/८
भुज बल बिपुल भार महि खंडित। खर दूषन बिराध बध पंडित ॥ उ० ५०/५
भुजबल बिस्व जितब तुम्ह जहिआ। धरिहहिं बिष्नु मनुज तनु तहिआ ॥ बा० १३८/६

भुजबल बिस्व बस्य करि राखेसि कोउ न सुतंत्र।
मंडलीक मनि रावन राज करइ निज मंत्र ॥ बा० १८२/० (क)

भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही ॥ बा० २७१/७

भुज बल रिपु दल दलमलि देखि दिवस कर अंत।
कूदे जुगल बिगत श्रम आए जहँ भगवंत ॥ लं० ४५/०

भुज बिक्रम जानहिं दिगपाला। सठ अजहूँ जिन्ह कें उर साला ॥ लं० २४/४
भुज बिसाल गहि लिए उठाई। परम प्रीति राखे उर लाई ॥ अर० ९/२२
भुज बिसाल भूषन जुत भूरी। हियँ हरि नख अति सोभा रूरी ॥ बा० १९८/५
भुजा बिटप सिर सृंग समाना। रोमावली लता जनु नाना ॥ लं० १८/५
भुवन चारि दस भरा उछाहू। जनकसुता रघुबीर बिआहू ॥ बा० २९५/३
भुवन चारिदस भूधर भारी। सुकृत मेघ बरषहिं सुख बारी ॥ अ० ०/२
भूर्ज तरू सम संत कृपाला। परहित निति सह बिपति बिसाला ॥ उ० १२०/१६
भूत दया द्विज गुर सेवकाई। बिद्या बिनय बिबेक बड़ाई ॥ उ० १२५/६

भूधर नख बिटपायुध धारी। धाए कपि जय राम पुकारी ॥ लं० ५२/३
भूप अनुज अरिमर्दन नामा। भयउ सो कुंभकरन बलधामा ॥ बा० १७५/३
भूपति जिअब मरब उर आनी। सोचिअ सखिं लखि निज हित हानी ॥ अ० २८१/७
भूपति तृषित बिलोकि तेहिं सरबरु दीन्ह देखाइ।
मज्जन पान समेत हय कीन्ह नृपति हरषाइ ॥ बा० १५८/०
भूपति बोलि बराती लीन्हे। जान बसन मनि भूषन दीन्हे ॥ बा० ३५०/४
भूपति भवन कोलाहलु होई। जाइ न बरनि समउ सुखु सोई ॥ बा० ३४४/७
भूपति भवन सुभायँ सुहावा। सुरपति सदनु न पटतर पावा ॥ अ० ८९/७
भूपति भावी मिटइ नहिं जदपि न दूषन तोर।
किएँ अन्यथा होइ नहिं बिप्रश्राप अति घोर ॥ बा० १७४/०
भूपति मरन पेम पनु राखी। जननी कुमति जगतु सबु साखी ॥ अ० २६१/१
भूपति राम सपथ जब करई। तब मागेहु जेहिं बचनु न टरई ॥ अ० २१/७
भूप द्वार तिन्ह खबरि जनाई। दसरथ नृप सुनि लिए बोलाई ॥ बा० २८९/२
भूप धरम जे बेद बखाने। सकल करइ सादर सुख माने ॥ बा० १५४/५
भूप धरमब्रतु सत्य सराहा। जेहिं तनु परिहरि प्रेमु निबाहा ॥ अ० १७०/६
भूप प्रतापभानु बल पाई। कामधेनु भै भूमि सुहाई ॥ बा० १५४/१
भूपँ प्रतीति तोरि किमि कीन्ही। मरन काल बिधि मति हरि लीन्ही ॥ अ० १६१/३
भूप प्रीति कैकइ कठिनाई। उभय अवधि बिधि रची बनाई ॥ अ० ३६/४
भूप बचन सुनि इत उत तकहीं। लखनु राम डर बोलि न सकहीं ॥ बा० २६६/८
भूप बचन सुनि सहज सुहाए। जरित कनक मनि पलँग डसाए ॥ बा० ३५५/१
भूप बाग बर देखेउ जाई। जहँ बसंत रितु रही लोभाई ॥ बा० २२६/३
भूप बिकल मति मोहँ भुलानी। भावी बस न आव मुख बानी ॥ बा० १७२/८
भूप बिलोकि लिए उर लाई। बैठे हरषि रजायसु पाई ॥ बा० ३५८/१
भूप बिलोके जबहिं मुनि आवत सुतन्ह समेत।
उठे हरषि सुखसिंधु महुँ चले थाह सी लेत ॥ बा० ३०७/०
भूप भगीरथ सुरसरि आनी। सुमिरत सकल सुमंगल खानी ॥ अ० २०८/७
भूप भरत पुनि लिए बोलाई। हय गय स्यंदन साजहु जाई ॥ बा० २९७/१
भूप भरत मुनि सहित समाजू। गे जहँ बिबुध कुमुद द्विजराजू ॥ अ० २९३/४
भूप भवन किमि जाइ बखाना। बिस्व बिमोहन रचेउ बिताना ॥ बा० २९६/४
भूप भवनु तेहि अवसर सोहा। रचना देखि मदन मनु मोहा ॥ बा० ३४४/१
भूप मनोरथ सुभग बनु सुख सुबिहंग समाजु।
भिल्लिनि जिमि छाड़न चहति बचनु भयंकरु बाजु ॥ अ० २८/०
भूप मौलि मन मंडन धरनी। देहि भगति संसृति सरि तरनी ॥ उ० ३४/६
भूप रूप गुन सील सराही। रोवहिं सोक सिंधु अवगाही ॥ अ० २७५/८

भाव भेद रस भेद अपारा। कबित दोष गुन बिबिध प्रकारा ॥ बा० ८/१०
भाव सहित खोजइ जो प्रानी। पाव भगति मनि सब सुख खानी ॥ उ० ११९/१५
भावी बस प्रतीति उर आई। पूँछ रानि पुनि सपथ देवाई ॥ अ० १८/१
भाषाबद्ध करबि मैं सोई। मोरें मन प्रबोध जेहिं होई ॥ बा० ३०/२
भाषा भनिति भोरि मति मोरी। हँसिबे जोग हँसे नहिं खोरी ॥ बा० ८/४
भा सब कें मन मोदु न थोरा। जनु घन धुनि सुनि चातक मोरा ॥ अ० १८४/१
भिन्न भिन्न अस्तुति करि गए सुर निज निज धाम।
बंदी बेष बेद तब आए जहँ श्रीराम ॥ उ० १२/० (ख)
भिन्न भिन्न मैं दीख सबु अति बिचित्र हरिजान।
अगनित भुवन फिरेउँ प्रभु राम न देखेउँ आन ॥ उ० ८१/० (क)
भिरे उभौ बाली अति तर्जा। मुठिका मारि महाधुनि गर्जा ॥ कि० ७/२
भिरे सकल जोरिहि सन जोरी। इत उत जय इच्छा नहिं थोरी ॥ लं० ५२/४
भीतर भवन दीन्ह बर बासू। मन जोगवत रह नृपु रनिवासू ॥ बा० ३५१/७
भुअन अनेक रोम प्रति जासू। यह प्रभुता कछु बहुत न तासू ॥ उ० २१/२
भुज उठाइ रघुपति कपि फेरे। फिरे एक एकन्ह तब टेरे ॥ लं० ९६/३
भुजग भूति भूषन त्रिपुरारी। आननु सरद चंद छबि हारी ॥ बा० १०५/८
भुजदंड प्रचंड प्रताप बलं। खल बृंद निकंद महा कुसलं ॥ लं० ११०/१० छं०
भुज प्रलंब कंजारुन लोचन। स्यामल गात प्रनत भय मोचन ॥ सुं० ४४/४
भुजबल जितेहु काल जम साईं। आजु परेहु अनाथ की नाईं ॥ लं० १०३/८
भुज बल बिपुल भार महि खंडित। खर दूषन बिराध बध पंडित ॥ उ० ५०/५
भुजबल बिस्व जितब तुम्ह जहिआ। धरिहहिं बिष्नु मनुज तनु तहिआ ॥ बा० १३८/६
भुजबल बिस्व बस्य करि राखेसि कोउ न सुतंत्र।
मंडलीक मनि रावन राज करइ निज मंत्र ॥ बा० १८२/० (क)
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही ॥ बा० २७१/७
भुज बल रिपु दल दलमलि देखि दिवस कर अंत।
कूदे जुगल बिगत श्रम आए जहँ भगवंत ॥ लं० ४५/०
भुज बिक्रम जानहिं दिगपाला। सठ अजहूँ जिन्ह कें उर साला ॥ लं० २४/४
भुज बिसाल गहि लिए उठाई। परम प्रीति राखे उर लाई ॥ अर० ९/२२
भुज बिसाल भूषन जुत भूरी। हियँ हरि नख अति सोभा रूरी ॥ बा० १९८/५
भुजा बिटप सिर सृंग समाना। रोमावली लता जनु नाना ॥ लं० १८/५
भुवन चारि दस भरा उछाहू। जनकसुता रघुबीर बिआहू ॥ बा० २९५/३
भुवन चारिदस भूधर भारी। सुकृत मेघ बरषहिं सुख बारी ॥ अ० ०/२
भूर्ज तरू सम संत कृपाला। परहित निति सह बिपति बिसाला ॥ उ० १२०/१६
भूत दया द्विज गुर सेवकाई। बिद्या बिनय बिबेक बड़ाई ॥ उ० १२५/६

भूधर नख बिटपायुध धारी। धाए कपि जय राम पुकारी ॥ लं० ५२/३
भूप अनुज अरिमर्दन नामा। भयउ सो कुंभकरन बलधामा ॥ बा० १७५/३
भूपति जिअब मरब उर आनी। सोचिअ सखि लखि निज हित हानी ॥ अ० २८१/७
भूपति तृषित बिलोकि तेहिं सरबरु दीन्ह देखाइ।
मज्जन पान समेत हय कीन्ह नृपति हरषाइ ॥ बा० १५८/०
भूपति बोलि बराती लीन्हे। जान बसन मनि भूषन दीन्हे ॥ बा० ३५०/४
भूपति भवन कोलाहलु होई। जाइ न बरनि समउ सुखु सोई ॥ बा० ३४४/७
भूपति भवन सुभायँ सुहावा। सुरपति सदनु न पटतर पावा ॥ अ० ८९/७
भूपति भावी मिटइ नहिं जदपि न दूषन तोर।
किएँ अन्यथा होइ नहिं बिप्रश्राप अति घोर ॥ बा० १७४/०
भूपति मरन पेम पनु राखी। जननी कुमति जगतु सबु साखी ॥ अ० २६१/१
भूपति राम सपथ जब करई। तब मागेहु जेहिं बचनु न टरई ॥ अ० २१/७
भूप द्वार तिन्ह खबरि जनाई। दसरथ नृप सुनि लिए बोलाई ॥ बा० २८९/२
भूप धरम जे बेद बखाने। सकल करइ सादर सुख माने ॥ बा० १५४/५
भूप धरमब्रतु सत्य सराहा। जेहिं तनु परिहरि प्रेमु निबाहा ॥ अ० १७०/६
भूप प्रतापभानु बल पाई। कामधेनु भै भूमि सुहाई ॥ बा० १५४/१
भूपँ प्रतीति तोरि किमि कीन्ही। मरन काल बिधि मति हरि लीन्ही ॥ अ० १६१/३
भूप प्रीति कैकइ कठिनाई। उभय अवधि बिधि रची बनाई ॥ अ० ३६/४
भूप बचन सुनि इत उत तकहीं। लखनु राम डर बोलि न सकहीं ॥ बा० २६६/८
भूप बचन सुनि सहज सुहाए। जरित कनक मनि पलँग डसाए ॥ बा० ३५५/१
भूप बाग बर देखेउ जाई। जहँ बसंत रितु रही लोभाई ॥ बा० २२६/३
भूप बिकल मति मोहँ भुलानी। भावी बस न आव मुख बानी ॥ बा० १७२/८
भूप बिलोकि लिए उर लाई। बैठे हरषि रजायसु पाई ॥ बा० ३५८/१
भूप बिलोके जबहिं मुनि आवत सुतन्ह समेत।
उठे हरषि सुखसिंधु महुँ चले थाह सी लेत ॥ बा० ३०७/०
भूप भगीरथ सुरसरि आनी। सुमिरत सकल सुमंगल खानी ॥ अ० २०८/७
भूप भरत पुनि लिए बोलाई। हय गय स्यंदन साजहु जाई ॥ बा० २९७/१
भूप भरत मुनि सहित समाजू। गे जहँ बिबुध कुमुद द्विजराजू ॥ अ० २९३/४
भूप भवन किमि जाइ बखाना। बिस्व बिमोहन रचेउ बिताना ॥ बा० २९६/४
भूप भवनु तेहि अवसर सोहा। रचना देखि मदन मनु मोहा ॥ बा० ३४४/१
भूप मनोरथ सुभग बनु सुख सुबिहंग समाजु।
भिल्लिनि जिमि छाड़न चहति बचनु भयंकरु बाजु ॥ अ० २८/०
भूप मौलि मन मंडन धरनी। देहि भगति संसृति सरि तरनी ॥ उ० ३४/६
भूप रूप गुन सील सराही। रोवहिं सोक सिंधु अवगाही ॥ अ० २७५/८

भूप रूप तब राम दुरावा। हृदय चतुर्भुज रूप दिखावा॥ अर० ९/१८
भूप सजेउ अभिषेक समाजू। चाहत देन तुम्हहि जुबराजू॥ अ० ९/२
भूप सयानप सकल सिरानी। सखि बिधि गति कछु जाति न जानी॥ बा० २५५/५
भूप सहस दस एकहि बारा। लगे उठावन टरइ न टारा॥ बा० २५०/१
भूप सुमंत्रु लीन्ह उर लाई। बूड़त कछु अधार जनु पाई॥ अ० १४८/१
भूपहि बचन बानसम लागे। करहिं न प्रान पयान अभागे॥ अ० ७८/६
भूमि जीव संकुल रहे गए सरद रितु पाइ।
सदगुर मिले जाहिं जिमि संसय भ्रम समुदाय॥ कि० १७/०
भूमि न छाँड़त कपि चरन देखत रिपु मद भाग।
कोटि बिघ्न ते संत कर मन जिमि नीति न त्याग॥ लं० ३४/० (ख)
भूमि परत भा ढाबर पानी। जनु जीवहि माया लपटानी॥ कि० १३/६
भूमि परा कर गहत अकासा। लघु तापस कर बाग बिलासा॥ सुं० ५६/२
भूमि सप्त सागर मेखला। एक भूप रघुपति कोसला॥ उ० २१/१
भूमि सयन पटु मोट पुराना। दिए डारि तन भूषन नाना॥ अ० २४/६
भूमि सयन बलकल बसन असनु कंद फल मूल।
ते कि सदा स दिन मलिहिं सबुइ समय अनुकूल॥ अ० ६२/०
भूरि भाग भाजनु भयहु मोहि समेत बलि जाउँ।
जौं तुम्हरें मन छाड़ि छलु कीन्ह राम पद ठाउँ॥ अ० ७४/०
भूषन बसन बाजि गज दीन्हे। प्रेम पोषि ठाढ़े सब कीन्हे॥ बा० ३३९/२
भूषन बसन भोग सुख भूरी। मन तन बचन तजे तिन तूरी॥ अ० ३२३/५
भूषन बसन महामनि नाना। खग मृग हय गय बहुबिधि जाना॥ बा० ३०४/४
भूषन मनि पट नाना जाती। करहिं निछावरि अगनित भाँती॥ बा० ३४८/२
भूषन सकल सुदेस सुहाए। अंग अंग रचि सखिन्ह बनाए॥ बा० २४७/३
भूसुर बोलि भरत कर जोरे। करि प्रनाम बय बिनय निहोरे॥ अ० ३२२/३
भूसुर भीर देखि सब रानी। सादर उठीं भाग्य बड़ जानी॥ बा० ३५१/१२
भूसुर सचिव समेत समाजा। संग चले पहुँचावन राजा॥ बा० ३३८/४
भूसुर ससि नव बृंद बलाहक। असरन सरन दीन जन गाहक॥ उ० ५०/४
भे अति अहित रामु तेउ तोही। को तू अहसि सत्य कहु मोही॥ अ० १६१/७
भेटीं रघुबर मातु सब करि प्रबोधु परितोषु।
अंब ईस आधीन जगु काहु न देइअ दोषु॥ अ० २४४/०
भेटेउ तनय सुमित्राँ राम चरन रति जानि।
रामहि मिलत कैकई हृदयँ बहुत सकुचानि॥ उ० ६/० (क)
भेद लेन पठवा दससीसा। तबहुँ न कछु भय हानि कपीसा॥ सुं० ४३/६
भेद हमार लेन सठ आवा। राखिअ बाँधि मोहि अस भावा॥ सुं० ४२/७

भेंरि नफीरि बाज सहनाई । मारू राग सुभट सुखदाई ॥ लं० ७८/९
भै अति प्रेम बिकल महतारी । धीरजु कीन्ह कुसमय बिचारी ॥ बा० १०१/६
भैया कहहु कुसल दोउ बारे । तुम्ह नीकें निज नयन निहारे ॥ बा० २९०/४
भै जगबिदित दच्छ गति सोई । जसि कछु संभु बिमुख कै होई ॥ बा० ६४/३
भोग बिभूति भूरि भरि राखे । देखत जिन्हहि अमर अभिलाषे ॥ अ० २१३/५
भोग रोगसम भूषन भारू । जम जातना सरिस संसारू ॥ अ० ६४/५
भोगावति जसि अहिकुल बासा । अमरावति जसि सक्रनिवासा ॥ बा० १७७/७
भोजन करत चपल चित इत उत अवसरु पाइ ।
भाजि चले किलकत मुख दधि ओदन लपटाइ ॥ बा० २०३/०
भोजन करत बोल जब राजा । नहिं आवत तजि बाल समाजा ॥ बा० २०२/६
भोजन करिअ तृपिति हित लागी । जिमि सो असन पचवै जठरागी ॥ उ० ११८/९
भोजन कहुँ सब बिप्र बोलाए । पद पखारि सादर बैठाए ॥ बा० १७२/४
भोर न्हाइ सबु जुरा समाजू । भरत भूमिसुर तेरहुति राजू ॥ अ० ३१२/१
भोरु भएँ रघुनंदनहि जो मुनि आयसु दीन्ह ।
श्रद्धा भगति समेत प्रभु सो सबु सादरु कीन्ह ॥ अ० २४७/०
भोरहिं आजु नहाइ प्रयागा । चले जमुन उतरन सबु लागा ॥ अ० २७१/६
भोरेहुँ भरत न पेलिहहिं मनसहुँ राम रजाइ ।
करिअ न सोचु सनेह बस कहेउ भूप बिलखाइ ॥ अ० २८९/०
भंजि धनुष जानकी बिआही । तब संग्राम जितेहु किन ताही ॥ लं० ३५/११
भंजेउ चापु दापु बड़ बाढ़ा । अहमिति मनहुँ जीति जगु ठाढ़ा ॥ बा० २८२/६
भंजेउ रथ सारथी निपाता । ताहि हृदय महुँ मारेसि लाता ॥ लं० ४२/७
भंजेउ राम आपु भव चापू । भव भय भंजन नाम प्रतापू ॥ बा० २३/६
भाँति अनेक परे पकवाने । सुधा सरिस नहिं जाहिं बखाने ॥ बा० ३२८/२
भाँति अनेक भई जेवनारा । सूपसास्त्र जस कछु ब्यवहारा ॥ बा० ९८/४
भाँति अनेक भरतु समुझाए । कहि बिबेकमय बचन सुनाए ॥ अ० १६६/२
भाँति अनेक संभु समुझावा । भावी बस न ग्यानु उर आवा ॥ बा० ६१/७
भेंटत भरतु ताहि अति प्रीती । लोग सिहाहिं प्रेम कै रीती ॥ अ० १९३/१
भेंटत भुज भरि भाई भरत सो । राम प्रेम रसु कहि न परत सो ॥ अ० ३१६/४
भेंटि कुसल बूझी मुनिराया । हमरें कुसल तुम्हारिहिं दाया ॥ उ० ४/४
भेंटि भरतु रघुबर समुझाए । पुनि रिपुदवनु हरषि हियँ लाए ॥ अ० ३१७/४
भेंटेउ बहुरि लखन लघु भाई । सोकु सनेहु न हृदयँ समाई ॥ अ० १६४/२
भेंटेउ लखन ललकि लघु भाई । बहुरि निषादु लीन्ह उर लाई ॥ अ० २४१/१
भृकुटि भंग जो कालहि खाई । ताहि कि सोहइ ऐसि लराई ॥ लं० ६५/२
भृकुटि बिलास जासु जग होई । राम बाम दिसि सीता सोई ॥ बा० १४७/४

भृकुटि बिलास नचावइ ताही । अस प्रभु छांडि भजिअ कहु काही ॥ बा० १९९/५
भृकुटि बिलास भयंकर काला । नयन दिवाकर कच घन माला ॥ लं० १४/२
भृकुटि बिलास सृष्टि लय होई । सपनेहूँ संकट परइ कि सोई ॥ अर० २७/४
भृकुटि मनोज चाप छबि हारी । तिलक ललाट पटल दुतिकारी ॥ बा० १४६/४
भृकुटी कुटिल नयन रिस राते । सहजहुँ चितवत मनहुँ रिसाते ॥ बा० २६७/६
भृगुपति कर सुभाउ सुनि सीता । अरध निमेष कलप सम बीता ॥ बा० २६९/५
भृगुपति केरि गरब गरुआई । सुर मुनिबरन्ह केरि कदराई ॥ बा० २५९/५
भृगुपति बकहिं कुठार उठाएँ । मन मुसुकाहिं रामु सिर नाएँ ॥ बा० २८०/४
भृगुपति सुनि सुनि निरभय बानी । रिस तन जरइ होइ बल हानी ॥ बा० २७७/६
भृगुबर परसु देखावहु मोही । बिप्र बिचारि बचउँ नृपद्रोही ॥ बा० २७५/६
भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी । जो कछु कहहु सहउँ रिस रोकी ॥ बा० २७२/५
भ्रम ते चकित राम मोहि देखा । बिहँसे सो सुनु चरित बिसेषा ॥ उ० ७८/४
भ्रमत मोहि ब्रह्मांड अनेका । बीते मनहुँ कल्प सत एका ॥ उ० ८१/१
भ्रातन्ह सहित रामु एक बारा । संग परम प्रिय पवनकुमारा ॥ उ० ३१/१
भ्राता पिता पुत्र उरगारी । पुरुष मनोहर निरखत नारी ॥ अर० १६/५

म

मइकें ससुरें सकल सुख जबहिं जहाँ मनु मान ।
तहँ तब रहिहि सुखेन सिय जब लगि बिपति बिहान ॥ अ० ९६/०
मकर उरग झष गन अकुलाने । जरत जंतु जलनिधि जब जाने ॥ सुं० ५७/७
मकर नक्र नाना झष ब्याला । सत जोजन तन परम बिसाला ॥ लं० ३/५
मर्कट बदन भयंकर देही । देखत हृदयँ क्रोध भा तेही ॥ बा० १३३/८
मर्कटहीन करहु महि जाई । जिअत धरहु तापस द्वौ भाई ॥ लं० ३२/२
मख रखवारी करि दुहुँ भाई । गुरु प्रसाद सब बिद्या पाई ॥ बा० ३५६/२
मच्छर काहि कलंक न लावा । काहि न सोक समीर डोलावा ॥ उ० ७०/३
मगन ध्यानरस दंड जुग पुनि मन बाहेर कीन्ह ।
रघुपति चरित महेस तब हरषित बरनै लीन्ह ॥ बा० १११/०
मगबासी नर नारि सुनि धाम काम तजि धाइ ।
देखि सरूप सनेह सब मुदित जनम फलु पाइ ॥ अ० २२१/०
मज्जन पान पाप हर एका । कहत सुनत एक हर अबिबेका ॥ बा० १४/२
मज्जन फल पेखिअ ततकाला । काक होहिं पिक बकउ मराला ॥ बा० २/१
मज्जनु करि सर सखिन्ह समेता । गई मुदित मन गौरि निकेता ॥ बा० २२७/५
मज्जनु कीन्ह पंथ श्रम गयऊ । सुचि जलु पिअत मुदित मन भयऊ ॥ अ० ८६/७
मज्जनु कीन्ह मधुर फल खाए । तासु निकट पुनि सब चलि आए ॥ कि० २४/३
मज्जहिं प्रात समेत उछाहा । कहहिं परसपर हरि गुन गाहा ॥ बा० ४३/८

मज्जहिं भूत पिसाच बेताला। प्रमथ महा झोटिंग कराला॥ लं० ८७/१
मज्जहिं सज्जन बृंद बहु पावन सरजू नीर।
जपहिं राम धरि ध्यान उर सुंदर स्याम सरीर॥ बा० ३४/०
मति अति नीच उँचि रुचि आछी। चहिअ अमिअ जग जुरइ न छाछी॥ बा० ७/७
मति अनुरूप कथा मैं भाषी। जद्यपि प्रथम गुप्त करि राखी॥ उ० १२७/१
मति अनुसार सराहन लागे। सचिव सभासद सब अनुरागे॥ अ० ३०८/५
मति अनुहारि सुबारि गुन गन गनि मन अन्हवाइ।
सुमिरि भवानी संकरहि कह कबि कथा सुहाइ॥ बा० ४३/० (क)
मति कीरति गति भूति भलाई। जब जेहिं जतन जहाँ जेहिं पाई॥ बा० २/५
मत तुम्हार यहु जो जग कहहीं। सो सपनेहुँ सुख सुगति न लहहीं॥ अ० १६८/४
मत्त नाग तम कुंभ बिदारी। ससि केसरी गगन बन चारी॥ लं० ११/२
मत्त सहस दस सिंधुर साजे। जिन्हहि देखि दिसिकुंजर लाजे॥ बा० ३३२/७
मत्सर मान मोह मद चोरा। इन्ह कर हुनर न कवनिहुँ ओरा॥ उ० ३०/६
मथत सिंधु रुद्रहि बौरायहु। सुरन्ह प्रेरि बिष पान करायहु॥ बा० १३५/८
मदन अंध ब्याकुल सब लोका। निसि दिनु नहिं अवलोकहिं कोका॥ बा० ८४/५
मद मोह महा ममता रजनी। तम पुंज दिवाकर तेज अनी॥ उ० १३/६छं०
मर्दि गर्द मिलवहिं दससीसा। ऐसेइ बचन कहहिं सब कीसा॥ सुं० ५४/७
मधुकर खग मृग तनु धरि देवा। करहिं सिद्ध मुनि प्रभु कै सेवा॥ कि० १२/४
मधुकर मुखर भेरि सहनाई। त्रिबिध बयारि बसीठीं आई॥ अर० ३७/९
मधुर बचन कहि कहि परितोषीं। जनु कुमुदिनीं कौमुदीं पोषीं॥ अ० ११७/४
मधुर मधुर गरजइ घन घोरा। होइ बृष्टि जनु उपल कठोरा॥ लं० १२/२
मध्यदिवस अति सीत न घामा। पावन काल लोक बिश्रामा॥ बा० १९०/२
मध्य बाग सरु सोह सुहावा। मनि सोपान बिचित्र बनावा॥ बा० २२६/७
मध्यम परपति देखइ कैसें। भ्राता पिता पुत्र निज जैसें॥ अर० ४/१३
मन अति हरष जनाव न तेही। आजु देखिहउँ परम सनेही॥ अर० २५/८
मन कपटी तन सज्जन चीन्हा। आपु सरिस सबही चह कीन्हा॥ बा० ७८/४
मन करि बिषय अनल बन जरई। होइ सुखी जौं एहिं सर परई॥ बा० ३४/८
मन कामना सिद्धि नर पावा। जे यह कथा कपट तजि गावा॥ उ० १२८/५
मन क्रम बचन अगोचर जोई। दसरथ अजिर बिचर प्रभु सोई॥ बा० २०२/५
मन क्रम बचन कपट तजि जो कर भूसुर सेव।
मोहि समेत बिरंचि सिव बस ताकें सब देव॥ अर० ३३/०
मन क्रम बचन चरन अनुरागी। केहिं अपराध नाथ हौं त्यागी॥ सुं० ३०/४
मन क्रम बचन चरन रत होई। कृपासिंधु परिहरिअ कि सोई॥ अ० ७१/८
मन क्रम बचन छाड़ि चतुराई। भजत कृपा करिहहिं रघुराई॥ बा० १९९/६

मन क्रम बचन जनित अघ जाई। सुनहिं जे कथा श्रवन मन लाई॥ उ० १२५/३
मन क्रम बचन राम पद सेवक। सपनेहु आन भरोस न देवक॥ अर० ९/२
मन क्रम बचन सो जतन बिचारेहु। रामचंद्र कर काजु सँवारेहु॥ कि० २२/३
मन गोतीत अमल अबिनासी। निर्बिकार निरवधि सुख रासी॥ उ० ११०/५
मनजात किरात निपात किए। मृग लोग कुभोग सरेन हिए॥ उ० १३/७छं०
मन तहँ जहँ रघुबर बैदेही। बिनु मन तन दुख सुख सुधि केही॥ अ० २७४/४
मन ते सकल बासना भागी। केवल राम चरन लय लागी॥ उ० १०९/६
मन थिर करहु देव डरु नाहीं। भरतहि जानि राम परिछाहीं॥ अ० २६५/४
मन पछिताति सीय महतारी। बिधि अब सँवरी बात बिगारी॥ बा० २६९/७
मन प्रसन्न तन तेज बिराजा। जनु जिय राउ रामु भए राजा॥ अ० २५५/५
मन बच क्रम मोहि निज जन जाना। मुनि मति पुनि फेरी भगवाना॥ उ० ११२/३
मन भावत बर मागउँ स्वामी। तुम्ह उदार उर अंतरजामी॥ उ० ८३/८
मन भावहिं मुख बरनि न जाहीं। उपमा कहुँ त्रिभुवन कोउ नाहीं॥ बा० ३१०/८
मन महुँ बहुत भाँति सुख मानी। बोलेउ श्रवन सुधा सम बानी॥ उ० १/२
मन महुँ करइ बिचार बिधाता। माया बस कबि कोबिद ग्याता॥ उ० ५९/३
मन महुँ तरक करैं कपि लागा। तेहीं समय बिभीषनु जागा॥ सुं० ५/२
मन महुँ बिप्र चरन सिरु नायो। उत्तर दिसिहि बिमान चलायो॥ लं० ११८/२
मन महुँ समुझि बचन प्रभु केरे। सहेउँ कठोर बचन सठ तेरे॥ लं० २९/४
मन मुसुकाइ भानुकुल भानू। रामु सहज आनंद निधानू॥ अ० ४०/५
मन समेत जेहि जान न बानी। तरकि न सकहिं सकल अनुमानी॥ बा० ३४०/७
मन संतोष सुनत कपि बानी। भगति प्रताप तेज बल सानी॥ सुं० १६/१
मन संतोषे सबन्हि के जहँ तहँ देहिं असीस।
सकल तनय चिर जीवहुँ तुलसिदास के ईस॥ बा० १९६/०
मन संभव दारुन दुख दारय। दीनबंधु समता बिस्तारय॥ उ० ३४/४
मन हनुमान कीन्ह अनुमाना। मरन चहत सब बिनु जल पाना॥ कि० २३/४
मनहीं मन मनाव अकुलानी। होहु प्रसन्न महेस भवानी॥ बा० २५६/५
मनहीं मन महेसु मुसुकाहीं। हरि के बिंग्य बचन नहिं जाहीं॥ बा० ९२/३
मनहीं मन मागहिं बरु एहू। सीय राम पद पदुम सनेहू॥ अ० २२३/३
मनहुँ न आनिअ अमरपति रघुबर भगत अकाजु।
अजसु लोक परलोक दुख दिन दिन सोक समाजु॥ अ० २१८/०
मनहुँ प्रेमु परमारथु दोऊ। मिलत धरें तन कह सबु कोऊ॥ अ० ११०/२
मनहुँ प्रेम बस बिनती करहीं। हमहि सीय पद जनि परिहरहीं॥ अ० ५७/६
मनहुँ बारिनिधि बूड़ जहाजू। भयउ बिकल बड़ बनिक समाजू॥ अ० ८५/३
मनहुँ मदन रति धरि बहु रूपा। देखत राम बिआहु अनूपा॥ बा० ३२४/४

मनिगन मंगल बस्तु अनेका । जो जग जोगु भूप अभिषेका ।। अ० ५/४
मनिगन पुर नर नारि सुजाती । सुचि अमोल सुंदर सब भाँती ।। अ० ०/४
मनि दीप राजहिं भवन भ्राजहिं देहरीं बिद्रुम रची ।
मनि खंभ भीति बिरंचि बिरची कनक मनि मरकत खची ।।
सुंदर मनोहर मंदिरायत अजिर रुचिर फटिक रचे ।
प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट बनाइ बहु बज्रन्हि खचे ।। उ० २६/१ छं०
मनि बिनु फनि जिमि जल बिनु मीना । मम जीवन तिमि तुम्हहि अधीना ।। बा० १५०/६
मनिमय रचित चारु चौबारे । जनु रतिपति निज हाथ सँवारे ।। अ० ८९/८
मनि मानिक मुकुता छबि जैसी । अहि गिरि गज सिर सोह न तैसी ।। बा० १०/१
मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो ।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो ।।
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली ।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ।। बा० २३५/१छं०
मनु थिर करि तब संभु सुजाना । लगे करन रघुनायक ध्याना ।। बा० ८१/४
मनु प्रसन्न करि सकुच तजि कहहु करौं सोइ आजु ।
सत्यसंध रघुबर बचन सुनि भा सुखी समाजु ।। अ० २६४/०
मनु मलीन तनु सुंदर कैसें । बिष रस भरा कनक घटु जैसें ।। बा० २७७/८
मनु हठ परा न सुनइ सिखावा । चहत बारि पर भीति उठावा ।। बा० ७७/५
मनोज वैरि वंदितं । अजादि देव सेवितं ।। अर० ३/९ छं०
मम अनुचरन्ह कीन्ह मख भंगा । जानहु तुम्ह सो सकल प्रसंगा ।। उ० ५५/४
मम अनुरूप पुरुष जग माहीं । देखेउँ खोजि लोक तिहु नाहीं ।। अर० १६/९
मम अपकार कीन्ह तुम्ह भारी । नारि बिरहँ तुम्ह होब दुखारी ।। बा० १३६/८
मम आधीन जुगुति नृप सोई । मोर जाब तव नगर न होई ।। बा० १६६/३
मम कृत सेतु जो दरसनु करिही । सो बिनु श्रम भवसागर तरिही ।। लं० २/४
मम गुन गावत पुलक सरीरा । गदगद गिरा नयन बह नीरा ।। अर० १५/११
मम गुन ग्राम नाम रत गत ममता मद मोह ।
ता कर सुख सोइ जानइ परानंद संदोह ।। उ० ४६/०
मम जनकहि तोहि रही मिताई । तव हित कारन आयउँ भाई ।। लं० १९/२
ममता तरुन तमी अँधिआरी । राग द्वेष उलूक सुखकारी ।। सुं० ४६/३
ममता दादु कंडु इरषाई । हरष बिषाद गरह बहुताई ।। उ० १२०/३३
ममता रत सन ग्यान कहानी । अति लोभी सन बिरति बखानी ।। सुं० ५७/३
मम दरसन फल परम अनूपा । जीव पाव निज सहज सरूपा ।। अर० ३५/९
मम परितोष बिबिधि बिधि कीन्हा । हरषित राममंत्र तब दीन्हा ।। उ० ११२/६
मम पाछें धर धावत धरें सरासन बान ।

फिरि फिरि प्रभुहि बिलोकिहउँ धन्य न मो सम आन ॥ अर० २६/०
मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती। सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती ॥ सुं० ४०/५
मम भुज बल आश्रित तेहि जानी। मारा चहसि अधम अभिमानी॥ कि० ८/१०
मम भुज सागर बल जल पूरा। जहँ बूड़े बहु सुर नर सूरा॥ लं० २७/३
मम माया संभव संसारा। जीव चराचर बिबिधि प्रकारा॥ उ० ८५/३
मम लोचन गोचर सोइ आवा। बहुरि कि प्रभु अस बनिहि बनावा॥ कि० ९/५
मम हित लागि तजे इन्ह प्राना। सकल जिआउ सुरेस सुजाना ॥ लं० ११३/२
मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता ॥ लं० ६०/४
मम हित लागि जन्म इन्ह हारे। भरतहु ते मोहि अधिक पिआरे ॥ उ० ७/८
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी। ग्यान बिराग नयन उरगारी ॥ उ० ११९/१४
मय तनुजा मंदोदरि नामा। परम सुंदरी नारि ललामा ॥ बा० १७७/२
मयना सत्य सुनहु मम बानी। जगदंबा तब सुता भवानी ॥ बा० ९७/२
मय सुत मायावी तेहि नाऊँ। आवा सो प्रभु हमरें गाऊँ ॥ कि० ५/२
मरइ न रिपु श्रम भयउ बिसेषा। राम बिभीषन तन तब देखा॥ लं० १०१/२
मरकत कनक बरन बर जोरी। देखि सुरन्ह भै प्रीति न थोरी ॥ बा० ३१४/७
मरकत मृदुल कलेवर स्यामा। अंग अंग प्रति छबि बहु कामा॥ उ० ७५/५
मरत न मूढ़ कटेहुँ भुज सीसा। धाए कोपि भालु भट कीसा ॥ लं० ९७/२
मरती बेर नाथ मोहि बाली। गयउ तुम्हारेहिं कोछें घाली ॥ उ० १७/२
मरनसीलु जिमि पाव पिऊषा। सुरतरु लहै जनम कर भूखा ॥ बा० ३३४/५
मरन हेतु निज नेहु बिचारी। भे अति बिकल धीर धुर धारी॥ अ० २४६/४
मरम बचन जब सीता बोला। हरि प्रेरित लछिमन मन डोला ॥ अर० २७/५
मरम बचन सुनि राउ कह कहु कछु दोषु न तोर।
लागेउ तोहि पिसाच जिमि कालु कहावत मोर ॥ अ० ३५/०
मरु गर काटि निलज कुलघाती। बल बिलोकि बिहरति नहिं छाती॥ लं० ३२/४
मरुत उड़ाव प्रथम तेहि भरई। पुनि नृप नयन किरीटन्हि परई॥ उ० १०५/१२
मरुत कोटि सत बिपुल बल रबि सत कोटि प्रकास।
ससि सत कोटि सुसीतल समन सकल भव त्रास ॥ उ० ९१/० (क)
मलिन बसन बिबरन बिकल कृस सरीर दुख भार।
कनक कलप बर बेलि बन मानहुँ हनी तुसार ॥ अ०१६३/०
मसक दंस बीते हिम त्रासा। जिमि द्विज द्रोह किएँ कुल नासा॥ कि० १६/८
मसक फूँक मकु मेरु उड़ाई। होइ न नृपमदु भरतहि भाई ॥ अ० २३१/३
मसक समान रूप कपि धरी। लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी॥ सुं० ३/१
मसकहि करइ बिरंचि प्रभु अजहि मसक ते हीन।
अस बिचारि तजि संसय रामहि भजहिं प्रबीन ॥ उ० १२२/० (ख)

महा अजय संसार रिपु जीति सकइ सो बीर।
जाकें अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर ॥ लं० ८०/०(क)
महादेव अवगुन भवन बिष्नु सकल गुन धाम।
जेहि कर मनु रम जाहि सन तेहि तेही सन काम ॥ बा० ८०/०
महानाद करि गर्जा कोटि कोटि गहि कीस।
महि पटकइ गजराज इव सपथ करइ दससीस ॥ लं० ६९/०
महा बिटप कोटर महुँ जाई। रहु अधमाधम अधगति पाई ॥ उ० १०६/८
महाबीर निसिचर सब कारे। नाना बरन बलीमुख भारे ॥ लं० ४५/७
महाबीर बिनवउँ हनुमाना। राम जासु जस आप बखाना ॥ बा० १६/१०
महावृष्टि चलि फूटि किआरीं। जिमि सुतंत्र भएँ बिगरहिं नारीं ॥ कि० १४/७
महा भीर भूपति के द्वारें। रज होइ जाइ पषान पबारें ॥ बा० ३००/३
महा महा मुखिआ जे पावहिं। ते पद गहि प्रभु पास चलावहिं ॥ लं० ४४/१
महामोह उपजा उर तोरें। मिटिहि न बेगि कहें खग मोरें ॥ उ० ५८/७
महामोहु महिषेसु बिसाला। रामकथा कालिका कराला ॥ बा० ४६/६
महामंत्र जोइ जपत महेसू। कासीं मुकुति हेतु उपदेसू ॥ बा० १८/३
महाराज अब कीजिअ सोई। सब कर धरम सहित हित होई ॥ अ० २९०/८
महाराज कर सुभ अभिषेका। सुनत लहहिं नर बिरति बिबेका ॥ उ० १४/२
महासैल एक तुरत उपारा। अति रिस मेघनाद पर डारा ॥ लं० ५०/२
महि परत उठि भट भिरत मरत न करत माया अति घनी।
सुर डरत चौदह सहस प्रेत बिलोकि एक अवध धनी ॥
सुर मुनि सभय प्रभु देखि मायानाथ् अति कौतुक कर्‌यो।
देखहिं परसपर राम करि संग्राम रिपुदल लरि मर्‌यो ॥ अर० १९/१७छं०
महि पाताल नाक जसु ब्यापा। राम बरी सिय भंजेउ चापा ॥ बा० २६४/५
महि बहु रंग रचित गच काँचा। जो बिलोकि मुनिबर मन नाचा ॥ उ० २६/६
महिमा अमित बेद नहिं जाना। मैं केहि भाँति कहउँ भगवाना ॥ उ० ४७/५
महिमा अमित मोरि मति थोरी। रबि सन्मुख खद्योत अँजोरी ॥ अर० १०/२
महिमा कहिअ कवनि बिधि तासू। सुखसागर जहँ कीन्ह निवासू ॥ अ० १३८/४
महिमा जासु जान गनराऊ। प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ ॥ बा० १८/४
महिमा तासु कहै किमि तुलसी। भगति सुभायँ सुमति हियँ हुलसी ॥ अ० ३०२/६
महिमा नाम रूप गुन गाथा। सकल अमित अनंत रघुनाथा ॥ उ० ९०/३
महिमा निगम नेति करि गाई। अतुलित बल प्रताप प्रभुताई ॥ उ० १२३/२
महिमा निगम नेति कहि कहई। जो तिहुँ काल एकरस रहई ॥ बा० ३४०/८
महिमा यह न जलधि कइ बरनी। पाहन गुन न कपिन्ह कइ करनी ॥ लं० २/९
महि मंजुल मृदु मारग कीन्हे। बहत समीर त्रिबिध सुख लीन्हे ॥ अ० ३१०/६

महि मंडल मंडन चारुतरं । धृत सायक चाप निषंग बरं ॥ उ० १३/५ छं०
महिष खाइ करि मदिरा पाना । गर्जा बज्राघात समाना ॥ लं० ६३/१
महि सरि सागर सर गिरि नाना । सब प्रपंच तहँ आनइ आना ॥ उ० ८०/४
महिसुर मंत्री मातु गुर गने लोग लिए साथ ।
पावन आश्रम गवनु किय भरत लखन रघुनाथ ॥ अ० २४५/०
महीं सकल अनरथ कर मूला । सो सुनि समुझि सहिउँ सब सूला ॥ अ० २६१/३
महूँ सनेह सकोच बस सनमुख कही न बैन ।
दरसन तृपित न आजु लगि पेम पिआसे नैन ॥ अ० २६०/०
माखे लखनु कुटिल भइँ भौंहें । रदपट फरकत नयन रिसौंहें ॥ बा० २५१/८
मागउँ दूसर बर कर जोरी । पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी ॥ अ० २८/२
मागउँ भीख त्यागि निज धरमू । आरत काह न करइ कुकरमू ॥ अ० २०३/७
मागत बिदा राउ अनुरागे । सुतन्ह समेत ठाढ़ भे आगे ॥ बा० ३५९/५
मागत बिदा सभय सकुचाहीं । जाइ संग बिधि कहिहि कि नाहीं ॥ अ० ७२/८
मागध सूत बंदिगन गायक । पावन गुन गावहिं रघुनायक ॥ बा० १९३/६
मागध सुत बंदि गुनगायक । चले जान चढ़ि जो जेहि लायक ॥ बा० २९९/५
मागध सूत बंदि नट नागर । गावहिं जसु तिहु लोक उजागर ॥ बा० ३४७/१
मागहिं हृदयँ महेस मनाई । कुसल मातु पितु परिजन भाई ॥ अ० १५६/८
मागहु बर बहु भाँति लोभाए । परम धीर नहिं चलहिं चलाए ॥ बा० १४४/३
मागहु बिदा मातु सन जाई । आवहु बेगि चलहु बन भाई ॥ अ० ७२/१
मागहु भूमि धेनु धन कोसा । सर्बस देउँ आजु सहरोसा ॥ बा० २०७/३
मागा जल तेहिं दीन्ह कमंडल । कह कपि नहिं अघाउँ थोरें जल ॥ लं० ५६/७
मागा राम तुरत तेहिं दीन्हा । पट उर लाइ सोच अति कीन्हा ॥ कि० ४/६
मागी नाव न केवटु आना । कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना ॥ अ० ९९/३
मागु मागु बरु भै नभ बानी । परम गभीर कृपामृत सानी ॥ बा० १४४/६
मागु मागु पै कहहु पिय कबहुँ न देहु न लेहु ।
देन कहेहु बरदान दुइ तेउ पावत संदेहु ॥ अ० २७/०
मागु माथ अबहीं देउँ तोही । राम बिरहँ जनि मारसि मोही ॥ अ० ३३/७
मागेउ बिदा प्रनामु करि राम लिए उर लाइ ।
लोग उचाटे अमरपति कुटिल कुअवसरु पाइ ॥ अ० ३१६/०
माघ मकरगत रबि जब होई । तीरथपतिहिं आव सब कोई ॥ बा० ४३/३
माता पितहि उरिन भए नीकें । गुर रिनु रहा सोचु बड़ जीकें ॥ बा० २७५/२
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा ॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा ।

यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा ॥ बा० १९१/४छं०
मातुँ भरतु गोद बैठारे । आँसु पोंछि मृदु बचन उचारे ॥ अ० १६४/४
मातु उचित धरि आयसु दीन्हा । अवसि सीस धरि चाहउँ कीन्हा ॥ अ० १७६/२
मातु कहेहुँ बहुरहिं रघुराऊ । राम जननि हठ करबि कि काऊ ॥ अ० २५२/४
मातु कुमत बढ़ई अघ मूला । तेहिं हमार हित कीन्ह बँसूला ॥ अ० २११/३
मातु कुसल प्रभु अनुज समेता । तव दुख दुखी सुकृपा निकेता ॥ सु० १३/९
मातु चरन सिरु नाइ चले तुरत संकित हृदयँ ।
बागुर बिषम तोराइ मनहुँ भाग मृगु भाग बस ॥ अ० ७५/०सो०
मातु तात कहँ देहि देखाई । कहँ सिय रामु लखनु दोउ भाई ॥ अ० १६३/३
मातु पितहि जनि सोचबस करसि महिसकिसोर ।
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर ॥ बा० २७२/०
मातु पितहि पुनि यह मत भावा । तपु सुखप्रद दुख दोष नसावा ॥ बा० ७२/२
मातु पितहि बहुबिधि समुझाई । चलीं उमा तप हित हरषाई ॥ बा० ७२/७
मातु पिता गुर प्रभु कै बानी । बिनहिं बिचार करिअ सुभ जानी ॥ बा० ७६/३
मातु पिता गुर बिप्र न मानहिं । आपु गए अरु घालहिं आनहिं ॥ उ० ३९/५
मातु पिता गुर स्वामि निदेसू । सकल धरम धरनीधर सेसू ॥ अ० ३०५/२
मातु पिता गुरु स्वामि सिख सिर धरि करहिं सुभायँ ।
लहेउ लाभु तिन्ह जनम कर नतरु जनमु जग जायँ ॥ अ० ७०/०
मातु पिता परिजन पुरबासी । सखा सुसील दास अरु दासी ॥ अ० ९०/४
मातु पिता बालकन्हि बोलावहिं । उदर भरै सोइ धर्म सिखावहिं ॥ उ० ९८/८
मातु पिता भगिनी प्रिय भाई । प्रिय परिवारु सुहृद समुदाई ॥ अ० ६४/१
मातु पिता भ्राता हितकारी । मितप्रद सब सुनु राजकुमारी ॥ अर० ४/५
मातु बचन सुनि अति अनुकूला । जनु सनेह सुरतरु के फूला ॥ अ० ५२/३
मातु बिबेक अलौकिक तोरें । कबहुँ न मिटिहि अनुग्रह मोरें ॥ बा० १५०/३
मातु भरत के बचन मृदु सुनि पुनि उठी सँभारि ।
लिए उठाइ लगाइ उर लोचन मोचति बारि ॥ अ० १६४/०
मातु भरत के बचन सुनि साँचे सरल सुभायँ ।
कहति राम प्रिय तात तुम्ह सदा बचन मन कायँ ॥ अ० १६८/०
मातु मंदि मैं साधु सुचाली । उर अस आनत कोटि कुचाली ॥ अ० २६०/३
मातु मते महुँ मानि मोहि जो कछु करहिं सो थोर ।
अघ अवगुन छमि आदरहिं समुझि आपनी ओर ॥ अ० २३३/०
मातु मुदित मन आयसु देहू । बालक जानि करब नित नेहू ॥ बा० ३३५/६
मातु मृत्यु पितु समन समाना । सुधा होइ बिष सुनु हरिजाना ॥ अर० १/६
मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा । जैसें रघुनायक मोहि दीन्हा ॥ सुं० २६/१

मातु सकल मोरे बिरहँ जेहिं न होहिं दुख दीन ।
सोइ उपाय तुम्ह करेहु सब पुर जन परम प्रबीन ॥ अ० ८०/०
मातु सचिव गुर पुर नर नारी। सकल सनेहँ बिकल भए भारी ॥ अ० १८३/३
मातु समीप कहत सकुचाहीं । बोले समउ समुझि मन माहीं ॥ अ० ६०/१
माथे पर गुर मुनि मिथिलेसू । हमहि तुम्हहि सपनेहुँ न कलेसू ॥ अ० ३१४/२
माथें हाथ मूदि दोउ लोचन । तनु धरि सोचु लाग जनु सोचन ॥ अ० २८/७
मानत सुखु सेवक सेवकाई । सेवक बैर बैरु अधिकाई ॥ अ० २१८/२
मानस मूल मिली सुरसरिही । सुनत सुजन मन पावन करिही ॥ बा० ३९/५
मानस रोग कछुक मैं गाए । हहिं सब कें लखि बिरलेन्ह पाए ॥ उ० १२१/२
मानम रोग कहहु समुझाई । तुम्ह सर्बग्य कृपा अधिकाई ॥ उ० १२०/७
मानस सलिल सुधाँ प्रतिपाली । जिअइ कि लवन पयोधि मराली ॥ अ० ६२/६
मानहिं मातु पिता नहिं देवा। साधुन्ह सन करवावहिं सेवा ॥ बा० १८३/२
मानहुँ तिमिर अरुनमय रासी । बिरची बिधि सँकेलि सुषमा सी ॥ अ० २३६/५
मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही । मनसा बिस्व बिजय कहँ कीन्ही ॥ बा० २२९/२
मानिक मरकत कुलिस पिरोजा। चीरि कोरि पचि रचे सरोजा ॥ बा० २८७/४
मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती । गुर कर द्रोह करउँ दिनु राती ॥ उ० १०५/७
मानी महिप कुमुद सकुचाने । कपटी भूप उलूक लुकाने ॥ बा० २५४/२
मामभिरक्षय रघुकुल नायक । धृत बर चाप रुचिर कर सायक ॥ लं० ११४/१छं०
मामवलोकय पंकज लोचन । कृपा बिलोकनि सोच बिमोचन ॥ उ० ५०/१
माया ईस न आपु कहुँ जान कहिअ सो जीव ।
बंध मोच्छ प्रद सर्ब पर माया प्रेरक सीव ॥ अर० १५/०
माया कृत गुन दोष अनेका। मोह मनोज आदि अबिबेका ॥ उ० ५६/२
मायापति सेवक सन माया । करइ त उलटि परइ सुरराया ॥ अ० २१७/२
मायाबस मतिमंद अभागी । हृदयँ जमनिका बहुबिधि लागी ॥ उ० ७२/८
माया बस्य जीव अभिमानी । ईस बस्य माया गुनखानी ॥ उ० ७७/६
माया बिगत कपि भालु हरषे बिटप गिरि गहि सब फिरे ।
सर निकर छाड़े राम रावन बाहु सिर पुनि महि गिरे ॥
श्रीराम रावन समर चरित अनेक कल्प जो गावहीं ।
सत सेष सारद निगम कबि तेउ तदपि पार न पावहीं ॥ लं० १००/२ छं०
माया बिबस भए मुनि मूढ़ा । समुझी नहिं हरि गिरा निगूढ़ा ॥ बा० १३२/३
माया ब्रह्म जीव जगदीसा । लच्छि अलच्छि रंक अवनीसा ॥ बा० ५/७
माया भगति सुनहु तुम्ह दोऊ। नारि बर्ग जानइ सब कोऊ ॥ उ० ११५/३
मायामय तेहिं कीन्ह रसोई । बिंजन बहु गनि सकइ न कोई ॥ बा० १७२/२
माया संभव भ्रम सब अब न ब्यापिहहिं तोहि ।

मिलत प्रेम नहिं हृदयँ समाता । नयन स्रवत जल पुलकित गाता ॥ उ० १/१०
मिलत महा दोउ राज बिराजे । उपमा खोजि खोजि कबि लाजे ॥ बा० ३१९/२
मिलन साजु सजि मिलन सिधाए । मंगल मूल सगुन सुभ पाए ॥ अ० १९२/४
मिलनि प्रीति किमि जाइ बखानी । कबिकुल अगम करम मन बानी ॥ अ० २४०/१
मिलनि बिलोकि भरत रघुबर की । सुरगन सभय धकधकी धरकी ॥ अ० २४०/७
मिलहिं किरात कोल बनबासी । बैखानस बटु जती उदासी ॥ अ० २२३/४
मिलहिं तुम्हहि जब सप्त रिषीसा । जानेहु तब प्रमान बागीसा ॥ बा० ७४/४
मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा । किएँ जोग तप ग्यान बिरागा ॥ उ० ६१/१
मिला असुर बिराध मग जाता । आवतहीं रघुबीर निपाता ॥ अर० ६/६
मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा । जातहिं राम तिलक तेहि सारा ॥ सुं० ५३/२
मिला बिभीषन जेहि बिधि आई । सागर निग्रह कथा सुनाई ॥ उ० ६६/८
मिलि केवटहि उमगि अनुरागा । पुरजन सकल सराहहिं भागा ॥ अ० २४३/५
मिलि जननिहि सानुज रघुराऊ । गुर सन कहेउ कि धारिअ पाऊ ॥ अ० २४४/७
मिलि न जाइ नहिं गुदरत बनई । सुकबि लखन मन की गति भनई ॥ अ० २३९/५
मिलि सप्रेम रिपुसूदनहि केवटु भेंटेउ राम ।
भूरि भायँ भेंटे भरत लछिमन करत प्रनाम ॥ अ० २४१/०
मिली सकल सासुन्ह सिय जाई । तेहि अवसर करुना महि छाई ॥ अ० २४५/८
मिले जनकु दसरथु अति प्रीतीं । करि बैदिक लौकिक सब रीतीं ॥ बा० ३१९/१
मिले न कबहुँ सुभट रन गाढ़े । द्विज देवता घरहि के बाढ़े ॥ बा० २७५/७
मिले लखन रिपुसूदनहि दीन्हि असीस महीस ।
भए परसपर प्रेमबस फिरि फिरि नावहिं सीस ॥ बा० ३४२/०
मिले सकल अति भए सुखारी । तलफत मीन पाव जिमि बारी ॥ सुं० २७/५
मिलेहि माझ बिधि बात बेगारी । जहँ तहँ देहिं कैकइहि गारी ॥ अ० ४६/१
मिलेहु गरुड़ मारग महँ मोही । कवन भाँति समुझावौं तोही ॥ उ० ६०/३
मित्र करइ सत रिपु कै करनी । ता कहँ बिबुधनदी बैतरनी ॥ अर० १/७
मित्रहि कहि सब कथा सुनाई । जातुधान बोला सुख पाई ॥ बा० १७०/२
मीजि हाथ सिरु धुनि पछिताई । मनहुँ कृपन धन रासि गवाँई ॥ अ० १४३/७
मीन कमठ सूकर नरहरी । बामन परसुराम बपु धरी ॥ लं० १०९/७
मीन पीन पाठीन पुराने । भरि भरि भार कहारन्ह आने ॥ अ० १९२/३
मुकुत न भए हते भगवाना । तीनि जनम द्विज बचन प्रवाना ॥ बा० १२२/१
मुकुर मलिन अरु नयन बिहीना । राम रूप देखहिं किमि दीना ॥ बा० ११४/४
मुक्ति जन्म महि जानि ग्यान खानि अघ हानि कर ।
जहँ बस संभु भवानि सो कासी सेइअ कस न ॥ कि० ०/१ सो०
मुखछबि कहि न जाइ मोहि पाहीं । जो बिलोकि बहु काम लजाहीं ॥ बा० २३२/६

मुख नासा श्रवनन्हि कीं बाटा । निसरि पराहिं भालु कपि ठाटा ॥ लं० ६६/४
मुख नासिका नयन अरु काना । गिरि कंदरा खोह अनुमाना ॥ लं० १८/६
मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा । कीन्हेसि रामचन्द्र कर काजा ॥ सुं० २७/४
मुख प्रसन्न मन मिटा बिषादू । भा जनु गूँगेहि गिरा प्रसादू ॥ अ० ३०६/४
मुख प्रसन्न मन रंग न रोषू । सब कर सब बिधि कर परितोसू ॥ अ० १६५/१
मुख प्रसन्न चित चौगुन चाऊ । मिटा सोचु जनि राखै राऊ ॥ अ० ५०/८
मुख मलीन उपजी मन चिंता । त्रिजटा सन बोली तब सीता ॥ लं० ९८/३
मुख मलीन मन भए दुखारी । कहत बचन भरि लोचन बारी ॥ लं० ५८/४
मुख सुखाहिं लोचन स्रवहिं सोकु न हृदयँ समाइ ।
मनहुँ करुन रस कटकई उतरी अवध बजाइ ॥ अ० ४६/०
मुखिया मुखु सो चाहिऐ खान पान कहुँ एक ।
पालइ पोषइ सकल अँग तुलसी सहित बिबेक ॥ अ० ३१५/०
मुठिकन्ह लातन्ह दातन्ह काटहिं । कपि जयसील मारि पुनि डाटहिं ॥ लं० ५२/५
मुठिका एक ताहि कपि मारा । परेउ सैल जनु बज्र प्रहारा ॥ लं० ८३/२
मुठिका एक महा कपि हनी । रुधिर बमत धरनीं ढनमनी ॥ सुं० ३/४
मुठिका मारि चढ़ा तरु जाई । ताहि एक छन मुरुछा आई ॥ सुं० १८/८
मुद मंगलमय संत समाजू । जो जग जंगम तीरथराजू ॥ बा० १/७
मुदित अवधपति सकल सुत बधुन्ह समेत निहारि ।
जनु पाए महिपाल मनि क्रियन्ह सहित फल चारि ॥ बा० ३२५/०
मुदित असीस देहिं गुर नारीं । अति आनंद मगन महतारीं ॥ बा० २९४/४
मुदित कहहिं जहँ तहँ नर नारी । भंजेउ राम संभुधनु भारी ॥ बा० २६१/८
मुदित देवगन रामहि देखी । नृपसमाज दुहुँ हरषु बिसेषी ॥ बा० ३१६/८
मुदित नहाइ कीन्हि सिव सेवा । पूजि जथाबिधि तीरथ देवा ॥ अ० १०५/६
मुदित नारि नर देखहिं सोभा । रूप अनूप नयन मनु लोभा ॥ अ० ११४/४
मुदित भए सुनि रघुबर बानी । भयउ लाभ बड़ गइ बड़ि हानी ॥ अ० ७२/२
मुदित महीपति मंदिर आए । सेवक सचिव सुमंत्रु बोलाए ॥ अ० ४/१
मुदित मातु सब सखीं सहेली । फलित बिलोकि मनोरथ बेली ॥ अ० ०/७
मुदित राउ कहि भलेहिं कृपाला । पठए दूत बोलि तेहि काला ॥ बा० २८६/२
मुदिताँ मथै बिचार मथानी । दम अधार रजु सत्य सुबानी ॥ उ० ११६/१५
मुधा बचन नहिं ईस्वर कहई । सोउ मोरें मन संसय अहई ॥ उ० ९३/६
मुधा भेद जद्यपि कृत माया । बिनु हरि जाइ न कोटि उपाया ॥ उ० ७७/८
मुनि अकुलाइ उठा तब कैसें । बिकल हीन मनि फनि बर जैसें ॥ अर० ९/१९
मुनि अगस्ति कर सिष्य सुजाना । नाम सुतीछन रति भगवाना ॥ अर० ९/१
मुनि अति बिकल मोहँ मति नाठी । मनि गिरि गई छूटि जनु गाँठी ॥ बा० १३४/५

मुनि अनुसासन गनपतिहि पूजेउ संभु भवानि ।
कोउ सुनि संसय करै जनि सुर अनादि जियँ जानि ॥ बा० १००/०
मुनि आगमन सुना जब राजा । मिलन गयउ लै बिप्र समाजा ॥ बा० २०६/१
मुनि एक नाम चंद्रमा ओही । लागी दया देखि करि मोही ॥ कि० २७/५
मुनि कइ गिरा सत्य भइ आजू । सुनि मम बचन करहु प्रभु काजू ॥ कि० २७/१०
मुनि कर हित मम कौतुक होई । अवसि उपाय करबि मैं सोई ॥ बा० १२८/६
मुनि कह उचित कहत रघुराई । गयउ बीति दिन पहर अढ़ाई ॥ अ० २७७/६
मुनि कह मैं बर कबहुँ न जाचा । समुझि न परइ झूठ का साचा ॥ अर० १०/२४
मुनि कहुँ राम दंडवत कीन्हा । आसिरबादु बिप्रबर दीन्हा ॥ अ० १२४/१
मुनि कौतुकी नगर तेहिं गयऊ । पुरबासिन्ह सब पूछत भयऊ ॥ बा० १२९/७
मुनि कौसिक मख के रखवारे । जिन्ह रन अजिर निसाचर मारे ॥ बा० २२०/४
मुनि गति देखि सुरेस डेराना । कामहि बोलि कीन्ह सनमाना ॥ बा० १२४/५
मुनिगन गुर धुर धीर जनक से । ग्यान अनल मन कसें कनक से ॥ अ० ३१६/७
मुनि गन निकट बिहग मृग जाहीं । बाधक बधिक बिलोकि पराहीं ॥ अ० २६३/३
मुनिगन मिलनु बिसेषि बन सबहि भाँति हित मोर ।
तेहि महँ पितु आयसु बहुरि समंत जननी तोर ॥ अ० ४१/०
मुनि जेहि ध्यान न पावहिं नेति नेति कह बेद ।
कृपासिंधु सोई कपिन्ह सन करत अनेक बिनोद ॥ लं० ११७/०(क)
मुनि तव चरन देखि कह राऊ । कहि न सकउँ निज पुन्य प्रभाऊ ॥ बा० २१६/१
मुनि तापस जिन्ह तें दुखु लहहीं । ते नरेस बिनु पावक दहहीं ॥ अ० १२५/३
मुनि तापस बनदेव निहोरी । सब सनमानि बहोरि बहोरी ॥ अ० ३१७/८
मुनितिय तरी लगत पग धूरी । कीरति रही भुवन भरि पूरी ॥ बा० ३५६/३
मुनि दुर्लभ हरि भगति नर पावहिं बिनहिं प्रयास ।
जे यह कथा निरंतर सुनहिं मानि बिस्वास ॥ उ० १२६/०
मुनि धन जन सरबस सिव प्राना । बाल केलि रस तेहिं सुख माना ॥ बा० १९७/२
मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत बिमल मन जेहि ध्यावहीं ।
कहि नेति निगम पुरान आगम जासु कीरति गावहीं ॥
सोइ राम ब्यापक ब्रह्म भुवन निकाय पति माया धनी ।
अवतरेउ अपने भगत हित निजतंत्र नित रघुकुलमनी ॥ बा० ५०/१ छं०
मुनि न होइ यह निसिचर घोरा । मानहु सत्य बचन कपि मोरा ॥ लं० ५७/२
मुनिन्ह प्रथम हरि कीरति गाई । तेहिं मग चलत सुगम मोहि भाई ॥ बा० १३/१०
मुनिपट कटिन्ह कसें तूनीरा । सोहहिं कर कमलनि धनु तीरा ॥ अ० ११४/८
मुनि पट भूषन भाजन आनी । आगें धरि बोली मृदु बानी ॥ अ० ७८/२
मुनि पद कमल नाइ करि सीसा । चले बनहिं सुर नर मुनि ईसा ॥ अर० ६/१

मुनि पद कमल परे द्वौ भाई । रिषि अति प्रीति लिए उर लाई ॥ अर० ११/१०
मुनि पद कमल बंदि दोउ भ्राता । चले लोक लोचन सुख दाता ॥ बा० २१८/१
मुनि पद बंदि करिअ सोइ आजू । होइ सुखी सब राज समाजू ॥ अ० २१३/३
मुनि पद बंदि जुगल कर जोरी । चढ़ि बिमान प्रभु चले बहोरी ॥ लं० १२०/५
मुनि पुनि कहि हरिकथा अनूपा । खंडि सगुन मन अगुन निरूपा ॥ उ० ११०/१२

मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन कहि पठई यह बात ।
तुरत सो मैं प्रभु सन कही पाइ सुअवसरु तात ॥ सुं० ३९/०(ख)

मुनि पूँछब कछु यह बड़ सोचू । बोले रिषि लखि सीलु सँकोचू ॥ अ० २०५/७
मुनि प्रभाउ जब भरत बिलोका । सब लघु लगे लोकपति लोका ॥ अ० २१४/१
मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेहू । कहेउ नरेस रजायसु देहू ॥ अ० २/८
मुनि प्रसाद बनु मंगल दाता । पावन परम सुहावन भ्राता ॥ अ० ३०७/६
मुनि प्रसाद बलि तात तुम्हारी । ईस अनेक करवरें टारी ॥ बा० ३५६/१
मुनि प्रसादु कहि द्वार सिधाए । रानिन्ह तब महिदेव बोलाए ॥ बा० २९४/७
मुनि बटु चारि संग तब दीन्हे । जिन्ह बहु जनम सुकृत सब कीन्हे ॥ अ० १०८/५
मुनिबर अतिथि प्रानप्रिय पाए । कंद मूल फल मधुर मगाए ॥ अ० १२४/३
मुनिबर जतनु करहिं जेहि लागी । भूप राजु तजि होहिं बिरागी ॥ लं० ६/६
मुनिबर धाइ लिए उर लाई । प्रेम उमगि भेंटे दोउ भाई ॥ अ० २४२/४
मुनिबर बहुरि राम समुझाए । सहित समाज सुसरित नहाए ॥ अ० २४६/७
मुनिबर सयन कीन्हि तब जाई । लगे चरन चापन दोउ भाई ॥ बा० २२५/३
मुनि बसिष्ट के बचन सुहाए । सुनत सकल बिप्रन्ह अति भाए ॥ उ० ९/६
मुनि बहुबिधि बिदेहु समुझाए । रामघाट सब लोग नहाए ॥ अ० २७६/६
मुनि बहु भाँति भरत उपदेसे । कहि परमारथ बचन सुदेसे ॥ अ० १६८/८
मुनि मख राखन गयउ कुमारा । बिनु फर सर रघुपति मोहि मारा ॥ अर० २४/५
मुनि मग माझ अचल होइ बैसा । पुलक सरीर पनस फल जैसा ॥ अर० ९/१५
मुनि मन अगम गाधिसुत करनी । मुदित बसिष्ट बिपुल बिधि बरनी ॥ बा० ३५८/६
मुनि मन मानस हंस निरंतर । चरन कमल बंदित अज संकर ॥ उ० ३४/७
मुनि मन बिहसि राम सन कहहीं । सुगम सकल मग तुम्ह कहुँ अहहीं ॥ अ० १०८/२
मुनि मन मोद न कछु कहि जाई । ब्रह्मानंद रासि जनु पाई ॥ अ० १०५/८
मुनि मन हरष रूप अति मोरें । मोहि तजि आनहि बरिहि न भोरें ॥ बा० १३२/६
मुनि महिदेव साधु सनमाने । बिदा किए हरि हर सम जाने ॥ अ० ३१८/४
मुनि महिमा मन महुँ अनुमानी । उठेउ गवँहिं जेहिं जान न रानी ॥ बा० १७१/३
मुनि महिसुर गुर भरत भुआलू । राम बिरहँ सबु साजु बिहालू ॥ अ० ३२१/१
मुनि मानस पंकज भृंग भजे । रघुबीर महा रनधीर अजे ॥ उ० १३/१७ छं०
मुनि मिथिलेस सभाँ सब काहू । भरत बचन सुनि भयउ उछाहू ॥ अ० ३०८/२

मुनि मुसुकाने सुनि प्रभु बानी । पूछेहु नाथ मोहि का जानी ॥ अर० १२/४
मुनि मोहि कछुक काल तहँ राखा । रामचरितमानस तब भाषा ॥ उ० ११२/९
मुनि मोहि बिबिधि भाँति समुझावा । मैं सप्रेम मुनि पद सिरु नावा ॥ उ० ११२/१४
मुनि मंडलिहि जनक सिरु नावा । आसिरबादु सबहि -सन पावा ॥ बा० ३४०/१
मुनि रघुपति छबि अतुल बिलोकी। भए मगन मन सके न रोकी ॥ उ० ३२/२
मुनि रघुबरहि लाइ उर लेहीं । सुफल होन हित आसिष देहीं ॥ अ० १३३/७
मुनि रघुबीर परसपर नवहीं । बचन अगोचर सुखु अनुभवहीं ॥ अ० १०७/४
मुनि रंजन भंजन महि भारहि । तुलसिदास के प्रभुहि उदारहि ॥ उ० २९/१०
मुनि रंजन महि मंडल मंडन । तुलसिदास प्रभु त्रास बिखंडन ॥ लं० ११४/९ छं०
मुनि सन बिदा मागि त्रिपुरारी । चले भवन सँग दच्छकुमारी ॥ बा० ४७/६
मुनि समाजु अरु तीरथराजू । साँचिहुँ सपथ अघाइ अकाजू ॥ अ० २१०/१
मुनि समीप देखे दोउ भाई । लगे ललकि लोचन निधि पाई ॥ बा० २४७/८
मुनि समूह महँ बैठे सन्मुख सब की ओर ।
सरद इंदु तन चितवत मानहुँ निकर चकोर ॥ अर० १२/०
मुनि सुनु साधुन्ह के गुन जेते । कहि न सकहिं सारद श्रुति तेते ॥ अर० ४५/८
मुनि सुसीलता आपनि करनी । सुरपति सभाँ जाइ सब बरनी ॥ बा० १२६/३
मुनि श्राप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना ।
देखेउँ भरि लोचनं हरि भवमोचन इहइ लाभ संकर जाना ॥
बिनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथ न मागउँ बर आना ।
पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना ॥ बा० २१०/३ छं०
मुनि हित कारन कृपानिधाना । दीन्ह कुरूप न जाइ बखाना ॥ बा० १३२/७
मुनिहि दंडवत कीन्ह महीसा । बार बार पद रज धरि सीसा ॥ बा० ३०७/१
मुनिहि प्रसंसि नाइ पद सीसू । चलेउ लवाइ नगर अवनीसू ॥ बा० २१६/६
मुनिहि बंदि भरतहिं सिरु नाई । चले सकल घर बिदा कराई ॥ अ० १८४/३
मुनिहि मिलत अस सोह कृपाला । कनक तरुहि जनु भेंट तमाला ॥ अर० ९/२३
मुनिहि मोह मन हाथ पराएँ । हँसहि संभु गन अति सचु पाएँ ॥ बा० १३३/५
मुनिहि राम बहु भाँति जगावा । जाग न ध्यानजनित सुख पावा ॥ अर० ९/१७
मुनिहि सोच पाहुन बड़ नेवता । तसि पूजा चाहिअ जस देवता ॥ अ० २१२/७
मुनींद्र संत रंजनं । सुरारि वृंद भंजनं ॥ अर० ३/८ छं०
मुर्‌यो न मनु तनु टर्‌यो न टार्‌यो । जिमि गज अर्क फलनि को मार्‌यो ॥ लं० ६४/६
मुरुछा गइ मारुतसुत जागा । सुग्रीवहि तब खोजन लागा ॥ लं० ६५/४
मुरुछा गै बहोरि सो जागा । कपि बल बिपुल सराहन लागा ॥ लं० ८३/३
मुरुछा बिगत भालु कपि सब आए प्रभु पास ।
निसिचर सकल रावनहि घेरि रहे अति त्रास ॥ लं० ९८/०

मुरुछा भई सक्ति के लागें । तब चलि गयउ निकट भय त्यागें ॥ लं० ५३/८
मुरुछित देखि सकल कपि बीरा । जामवंत धायउ रनधीरा ॥ लं० ९७/१२
मुरे सुभट सब फिरहिं न फेरे । सूझ न नयन सुनहिं नहिं टेरें ॥ लं० ६६/६
मूक बदन जनु सारद छाई । मानहुँ समर सूर जय पाई ॥ बा० ३४९/८
मूक होइ बाचाल पंगु चढ़इ गिरिबर गहन ।
जासु कृपाँ सो दयाल द्रवउ सकल कलि मल दहन ॥ बा० ०/२ सो०
मूठि कुबुद्धि धार निठुराई । धरी कूबरीं सान बनाई ॥ अ० ३०/२
मूढ़ तोहि अतिसय अभिमाना । नारि सिखावन करसि न काना ॥ कि० ८/९
मूढ़ परम सिख देउँ न मानसि । उत्तर प्रतिउत्तर बहु आनसि ॥ उ० १११/१३
मूढ़ बृथा जनि मारसि गाला । राम बयर अस होइहि हाला ॥ लं० २६/३
मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई । रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई ॥ सुं० ५५/६
मूदहु नयन बिबर तजि जाहु । पैहहु सीतहि जनि पछिताहू ॥ कि० २४/५
मूदेउँ नयन त्रसित जब भयऊँ । पुनि चितवत कोसलपुर गयउँ ॥ उ० ७९/१
मूदे सजल नयन पुलके तन । सुजसु सराहन लगे मुदित मन ॥ अ० २८७/२
मूरति मधुर मनोहर देखी । भयउ बिदेहु बिदेहु बिसेषी ॥ बा० २१४/८
मूलं धर्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददं
वैराग्याम्बुजभास्करं ह्यघघनध्वान्तापहं तापहम् ।
मोहाम्भोधरपूगपाटनविधौ स्वःसम्भवं शंकरं
वन्दे ब्रह्मकुलं कलंकशमनं श्रीरामभूपप्रियम् ॥ अर० श्लोक १
मेघनाद कहुँ पुनि हँकरावा । दीन्ही सिख बलु बयरु बढ़ावा ॥ बा० १८१/१
मेघनाद कै मुरुछा जागी । पितहि बिलोकि लाज अति लागी ॥ लं० ७४/१
मेघनाद तहँ करइ लराई । टूट न द्वार परम कठिनाई ॥ लं० ४२/४
मेघनाद तेहि अवसर आयउ । कहि बहु कथा पिता समुझायउ ॥ लं० ७१/६
मेघनाद मख करइ अपावन । खल मायावी देव सतावन ॥ लं० ७४/४
मेघनाद मायामय रथ चढ़ि गयउ अकास ।
गर्जेउ अट्टहास करि भइ कपि कटकहि त्रास ॥ लं० ७२/०
मेघनाद सम कोटि सत जोधा रहे उठाइ ।
जगदाधार सेष किमि उठै चले खिसिआइ ॥ लं० ५४/०
मेघनाद सुनि श्रवन अस गढु पुनि छेंका आइ ।
उतर्‍यो बीर दुर्ग तें सन्मुख चल्यो बजाइ ॥ लं० ४९/०
मेटि जाइ नहिं राम रजाई । कठिन करम गति कछु न बसाई ॥ अ० ९८/७
मेधा महि गत सो जल पावन । सकिलि श्रवन मग चलेउ सुहावन ॥ बा० ३५/८
मेरु सिखर बट छायाँ मुनि लोमस आसीन ।
देखि चरन सिरु नायउँ बचन कहेउँ अति दीन ॥ उ० ११०/० (ख)

मेरे प्रान नाथ सुत दोऊ । तुम्ह मुनि पिता आन नहिं कोऊ ॥ बा० २०७/१०
मेली कंठ सुमन कै माला । पठवा पुनि बल देइ बिसाला ॥ कि० ७/७
मैं अनुमानि दीख मन माहीं । आन उपायँ मोर हित नाहीं ॥ अ० १७७/२
मैं अपनी दिसि कीन्ह निहोरा । तिन्ह निज ओर न लाउब भोरा ॥ बा० ४/१
मैं अरु मोर तोर तैं माया । जेहिं बस कीन्हे जीव निकाया ॥ अर० १४/२
मैं आउब सोइ बेषु धरि पहिचानेहु तब मोहि ।
जब एकांत बोलाइ सब कथा सुनावौं तोहि ॥ बा० १६९/०
मैं आपन किमि कहौं कलेसू । जिअत फिरेउँ लेइ राम सँदेसू ॥ अ० १५२/३
मैं एहिं परसु काटि बलि दीन्हे । समर जग्य जप कोटिन्ह कीन्हे ॥ बा० २८२/४
मैं कछु कहउँ एक बल मोरें । तुम्ह रीझहु सनेह सुठि थोरें ॥ बा० ३४१/४
मैं कृतकृत्य भइउँ अब तव प्रसाद बिस्वेस ।
उपजी राम भगति दृढ़ बीते सकल कलेस ॥ उ० १२९/०
मैं कृतकृत्य भयउँ तव बानी । सुनि रघुबीर भगति रस सानी ॥ उ० १२४/१
मैं खल मल संकुल मति नीच जाति बस मोह ।
हरि जन द्विज देखें जरउँ करउँ बिष्नु कर द्रोह ॥ उ० १०५/० (क)
मैं खल हृदयँ कपट कुटिलाई । गुर हित कहइ न मोहि सोहाई ॥ उ० १०५/१६
मैं गुन गाहक परम सुजाना । तव कटु रटनि करउँ नहिं काना ॥ लं० २३/४
मैं जब तेहि सब कहा बुझाई । चलेउ हरषि मम पद सिरु नाई ॥ उ० ६१/६
मैं जानउँ तुम्हारि सब रीती । अति नय निपुन न भाव अनीती ॥ सुं० ४५/६
मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ । अपराधिहु पर कोह न काऊ ॥ अ० २५९/५
मैं जाना तुम्हार गुन सीला । कहउँ सुनहु अब रघुपति लीला ॥ बा० १०४/१
मैं जिमि कथा सुनी भव मोचनि । सो प्रसंग सुनु सुमुखि सुलोचनि ॥ उ० ५५/१
मैं जो कहा रघुबीर कृपाला । बंधु न होइ मोर यह काला ॥ कि० ७/४
मैं जो कीन्ह रघुपति अपमाना । पुनि पतिबचनु मृषा करि जाना ॥ बा० ५८/२
मैं तपबल तोहि तुरग समेता । पहुँचैहउँ सोवतहि निकेता ॥ बा० १६८/८
मैं तव दसन तोरिबे लायक । आयसु मोहि न दीन्ह रघुनायक ॥ लं० ३३/१
मैं तुम्हार अनुचर मुनिराया । परिहरि कोपु करिअ अब दाया ॥ बा० २७७/१
मैं तैं मोर मूढ़ता त्यागू । महा मोह निसि सूतत जागू ॥ लं० ५५/७
मैं दुर्बचन कहे बहुतेरे । कह मुनि पाप मिटिहिं किमि मेरे ॥ बा० १३७/४
मैं देखउँ तुम्ह नाहीं गीधहि दृष्टि अपार ।
बूढ़ भयउँ न त करतेउँ कछुक सहाय तुम्हार ॥ कि० २८/०
मैं धरि तासु बेषु सुनु राजा । सब बिधि तोर सँवारब काजा ॥ बा० १६८/६
मैं धिग धिग अघ उदधि अभागी । सबु उतपातु भयउ जेहि लागी ॥ अ० २००/५
मैनाँ सुभ आरती सँवारी । संग सुमंगल गावहिं नारी ॥ बा० ९५/२

मैना हृदयँ भयउ दुखु भारी । लीन्ही बोलि गिरीसकुमारी ॥ बा० ९५/६
मैं निसिचर अति अधम सुभाऊ । सुभ आचरनु कीन्ह नहिं काऊ ॥ सु० ४६/७
मैं पा परउँ कहइ जगदंबा । तुम्ह गृह गवनहु भयउ बिलंबा ॥ बा० ८०/७
मैं पुनि अवध रहेउँ कछु काला । देखेउँ बालबिनोद रसाला ॥ उ० ८८/१
मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई । करिहउँ बल अनुमान सहाई ॥ सुं० ५९/३
मैं पुनि करि प्रवान पितु बानी । बेगि फिरब सुनु सुमुखि सयानी ॥ अ० ६१/१
मैं पुनि निज गुर सन सुनी कथा सो सूकरखेत ।
समुझी नहिं तसि बालपन तब अति रहेउँ अचेत ॥ बा० ३०/० (क)
मैं पुनि पुत्रबधू प्रिय पाई । रूप रासि गुन सील सुहाई ॥ अ० ५८/१
मैं पुनि समुझि दीखि मन माहीं । पिय बियोग सम दुखु जग नाहीं ॥ अ० ६३/७
मैं प्रभु कृपा रीति जियँ जोही । हारेहुँ खेल जितावहिं मोही ॥ अ० २५९/८
मैं बन जाउँ तुम्हहि लेइ साथा । होइ सबहि बिधि अवध अनाथा ॥ अ० ७०/३
मैं बन दीखि राम प्रभुताई । अति भय बिकल न तुम्हहि सुनाई ॥ बा० १०८/३
मैं बानर फल खात न बारा । आयसु दीन्ह न राम उदारा ॥ लं० ३३/४
मैं बैरी सुग्रीव पिआरा । अवगुन कवन नाथ मोहि मारा ॥ कि० ८/६
मैं सठु सब अनरथ कर हेतू । बैठ बात सब सुनउँ सचेतू ॥ अ० १७८/५
मैं सबु कीन्ह तोहि बिनु पूँछें । तेहि तें परेउ मनोरथु छूँछें ॥ अ० ३१/२
मैं सिसु प्रभु सनेहँ प्रतिपाला । मंदरु मेरु कि लेहिं मराला ॥ अ० ७१/३
मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू । तुम्हहि उचित तप मो कहुँ भोगू ॥ अ० ६६/८
मैं सोइ धरमु सुलभ करि पावा । तजें तिहूँ पुर अपजसु छावा ॥ अ० ९४/६
मैं संकर कर कहा न माना । निज अग्यानु राम पर आना ॥ बा० ५३/१
मो कहँ तिलक साज सज सोऊ । भएँ बिधि बिमुख बिमुख सबु कोऊ ॥ अ० १८१/२
मो कहुँ काह कहब रघुनाथा । रखिहहिं भवन कि लेहहिं साथा ॥ अ० ६९/५
मोद प्रमोद बिबस सब माता । चलहिं न चरन सिथिल भए गाता ॥ बा० ३४५/१
मो पर करहिं संनेहु बिसेषी । मैं करि प्रीति परीछा देखी ॥ अ० १४/६
मो पर कृपा सनेहु बिसेषी । खेलत खुनिस न कबहूँ देखी ॥ अ० २५९/६
मो पहिं होइ न प्रति उपकारा । बंदउँ तव पद बारहिं बारा ॥ उ० १२४/४
मो बिनु को सचराचर माहीं । जेहि सिय रामु प्रानप्रिय नाहीं ॥ अ० १८०/६
मोर अभागु मातु कुटिलाई । बिधि गति बिषम काल कठिनाई ॥ अ० २६६/४
मोर अभाग्य जिआवत ओही । जेहिं हौं हरिपद कमल बिछोही ॥ लं० ९८/६
मोर कहा तुम्ह ताहि सुनावहु । तासु बचन सुनि आतुर आवहु ॥ अर० १८/७
मोर कहा सुनि करहु उपाई । होइहि ईस्वर करिहि सहाई ॥ बा० ८२/१
मोर चकोर कीर बर बाजी । पारावत मराल सब ताजी ॥ अर० ३७/६
मोर जनम रघुबर बन लागी । झूठ काह पछिताउँ अभागी ॥ अ० १८१/८

मोर तुम्हार परम पुरुषारथु । स्वारथु सुजसु धरमु परमारथु ॥ अ० ३१४/३
मोर दास कहाइ नर आसा । करइ तौ कहहु कहा बिस्वासा ॥ उ० ४५/३
मोर न्याउ मैं पूछा साईं । तुम्ह पूछहु कस नर की नाईं ॥ कि० १/८
मोरपंख सिर सोहत नीके । गुच्छ बीच बिच कुसुम कली के ॥ बा० २३२/२
मोर प्रभाउ बिदित नहिं तोरें । बोलसि निदरि बिप्र के भोरें ॥ बा० २८२/५
मोर बचन सब के मन माना । साधु साधु करि ब्रह्म बखाना ॥ बा० १८४/८
मोर भाग्य राउर गुन गाथा । कहि न सिराहिं सुनहु रघुनाथा ॥ बा० ३४१/३
मोर मनोरथु जानहु नीकें । बसहु सदा उर पुर सबही कें ॥ बा० २३५/३
मोर मनोरथु सुरतरु फूला । फरत करिनि जिमि हतेउ समूला ॥ अ० २८/८
मोर साप करि अंगीकारा । सहत राम नाना दुख भारा ॥ अर० ४०/६
मोर श्राप द्विज ब्यर्थ न जाइहि । जन्म सहस अवस्य यह पाइहि ॥ उ० १०८/६
मोर हंस सारस पारावत । भवननि पर सोभा अति पावत ॥ उ० २७/५
मोरि बात सब बिधिहिं बनाई । प्रजा पाँच कत करहु सहाई ॥ अ० १७९/८
मोरि सुधारिहि सो सब भाँती । जासु कृपा नहिं कृपाँ अघाती ॥ बा० २७/३
मोरे जियँ भरोस दृढ़ नाहीं । भगति बिरति न ग्यान मन माहीं ॥ अर० ९/६
मोरे जियँ भरोस दृढ़ सोई । मिलिहहिं राम सगुन सुभ होई ॥ उ० ०/७
मोरे प्रौढ़ तनय सम ग्यानी । बालक सुत सम दास अमानी ॥ अर० ४२/८
मोरेहु कहें न संसय जाहीं । बिधि बिपरीत भलाई नाहीं ॥ बा० ५१/६
मोरें जान भरत रुचि राखी । जो कीजिअ सो सुभ सिव साखी ॥ अ० २५७/८
मोरें तुम्ह प्रभु गुर पितु माता । जाउँ कहाँ तजि पद जल जाता ॥ उ० १७/४
मोरें भरतु रामु दुइ आँखी । सत्य कहउँ करि संकरु साखी ॥ अ० ३०/६
मोरें मन बड़ नामु दुहू तें । किए जेहिं जुग निज बस निज बूतें ॥ बा० २२/२
मोरें मन प्रभु अस बिस्वासा । राम ते अधिक राम कर दासा ॥ उ० ११९/१६
मोरें सबइ एक तुम्ह स्वामी । दीनबंधु उर अंतरजामी ॥ अ० ७१/६
मोरें सरन रामहि की पनही । राम सुस्वामि दोसु सब जनही ॥ अ० २३३/२
मोरें हित हरि सम नहिं कोऊ । एहि अवसर सहाय सोइ होऊ ॥ बा० १३१/२
मोरें हृदय परम संदेहा । सुनि कपि प्रगट कीन्हि निज देहा ॥ सुं० १५/७
मो सन कहहु भरत मति फेरू । लोचन सहस न सूझ सुमेरू ॥ अ० २९४/४
मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुबीर ।
अस बिचारि रघुबंस मनि हरहु बिषम भव भीर ॥ उ० १३०/०(क)
मोह जलधि बोहित तुम्ह भए । मो कहँ नाथ बिबिध सुख दए ॥ उ० १२४/३
मोह दरिद्र निकट नहिं आवा । लोभ बात नहिं ताहि बुझावा ॥ उ० ११९/४
मोह न अंध कीन्ह केहि केही । को जग काम नचाव न जेही ॥ उ० ६९/७
मोह न नारि नारि कें रूपा । पन्नगारि यह रीति अनूपा ॥ उ० ११५/२

मोह निसाँ सबु सोवनिहारा। देखिअ सपन अनेक प्रकारा॥ अ० ९२/२
मोह मगन मति नहिं बिदेह की। महिमा सिय रघुबर सनेह की॥ अ० २८५/८
मोह महा घन पटल प्रभजंन। संसय बिपिन अनल सुर रंजन॥ लं० ११४/२ छं०
मोहमूल बहु सूल प्रद त्यागहु तम अभिमान।
भजहु राम रघुनायक कृपा सिंधु भगवान॥ सुं० २३/०
मोह बिपिन घन दहन कृसानुः। संत सरोरुह कानन भानुः॥ अर० १०/५
मोह सकल ब्याधिन्ह कर मूला। तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला॥ उ० १२०/२९
मोहि अछत यहु होइ उछाहू। लहहिं लोग सब लोचन लाहू॥ अ० ३/३
मोहि अतिसय प्रतीति मन केरी। जेहिं सपनेहुँ परनारि न हेरी॥ बा० २३०/६
मोहि अनुचर कर केतिक बाता। तेहि महँ कुसमउ बाम बिधाता॥ अ० २५२/५
मोहि उपदेसु दीन्ह गुर नीका। प्रजा सचिव संमत सबही का॥ अ० १७६/१
मोहि कहु मातु तात दुख कारन। करिअ जतन जेहिं होइ निवारन॥ अ० ३९/५
मोहि कुमातु समेत बिहाई। कहहु कहिहि के कीन्ह भलाई॥ अ० १८०/५
मोहि कृतकृत्य कीन्ह दुहुँ भाईं। अब जो उचित सो कहिअ गोसाईं॥ बा० २८५/६
मोहि दीन्ह सुखु सुजसु सुराजू। कीन्ह कैकई सब कर काजू॥ अ० १७९/५
मोहि न कुछ बाँधे कइ लाजा। कीन्ह चहउँ निज प्रभु कर काजा॥ सुं० २१/६
मोहि न मातु करतब कर सोचू। नहिं दुखु जियँ जगु जानिहि पोचू॥ अ० २१०/४
मोहि न लाज निज नेहु निहारी। राम सरिस सुत मैं महतारी॥ अ० १६५/७
मोहि नृप करि भल आपन चहहू। सोउ सनेह जड़ता बस कहहू॥ अ० १७७/८
मोहि बिलोकि धरहु मन धीरा। राम कृपाँ कस भयउ सरीरा॥ कि० २८/२
मोहि बिलोकि राम मुसुकाहीं। बिहँसत तुरत गयउँ मुख माहीं॥ उ० ७९/२
मोहि भगत प्रिय संतत अस बिचारि सुनु काग।
कायँ बचन मन मम पद करेसु अचल अनुराग॥ उ० ८५/० (ख)
मोहि भयउ अति मोह प्रभु बंधन रन महुँ निरखि।
चिदानंद संदोह राम बिकल कारन कवन॥ उ० ६८/०(ख)सो०
मोहि मग चलत न होइहि हारी। छिनु छिनु चरन सरोज निहारी॥ अ० ६६/१
मोहि मुनीस सुत सेवक जानी। नाथ नाम निज कहहु बखानी॥ बा० १५९/४
मोहि रहा अति अभिमान। नहिं कोउ मोहि समान।
अब देखि प्रभु पद कंज। गत मान प्रद दुख पुंज॥ लं० ११२/६ छं०
मोहि राजु हठि देइहहु जबहीं। रसा रसातल जाइहि तबहीं॥ अ० १७८/२
मोहि लगि यहु कुठाटु तेहिं ठाटा। घालेसि सब जगु बारहबाटा॥ अ० २११/५
मोहि लगि सहेउ सबहिं संतापू। बहुत भाँति दुखु पावा आपू॥ अ० ३१२/७
मोहि लै जाहु सिंधुतट देउँ तिलांजलि ताहि।
बचन सहाइ करबि मैं पैहहु खोजहु जाहि॥ कि० २७/०

मोहि सन करहिं बिबिधि बिधि क्रीड़ा। बरनत मोहि होति अति ब्रीड़ा॥ उ० ७६/९
मोहि सब भाँति भरोस तुम्हारा। तदपि कहउँ अवसर अनुसारा॥ अ० ३०४/४
मोहि सम यहु अनुभयउ न दूजें। सबु पायउँ रज पावनि पूजें॥ अ० २/६
मोहि समान को पाप निवासु। जेहि लगि सीय राम बनबासु॥ अ० १७८/३
मोहि समुझाइ कहहु सोइ देवा। सब तजि करौं चरन रज सेवा॥ अर० १३/७
मोहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा। बुधि बल मरमु तोर मैं पावा॥ सुं० १/१२
मंगन बहु प्रकार पहिराए। द्विजन्ह दान नाना बिधि पाए॥ उ० १४/१०
मंगन लहहिं न जिन्ह कै नाहीं। ते नरबर थोरे जग माहीं॥ बा० २३०/८

मंगल करनि कलि मल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की।
गति कूर कबिता सरित की ज्यों सरित पावन पाथ की॥
प्रभु सुजस संगति भनिति भलि होइहि सुजन मन भावनी।
भव अंग भूति मसान की सुमिरत सुहावनि पावनी॥ बा० ९/१ छं०

मंगल कलस अनेक बनाए। ध्वज पताक पट चमर सुहाए॥ बा० २८८/२
मंगलगान करहिं बर भामिनि। भै सुखमूल मनोहर जामिनि॥ बा० ३५४/१
मंगल द्रब्य मनोहर नाना। राजत बाजत बिपुल निसाना॥ बा० २९६/५
मंगल भवन अमंगल हारी। उमा सहित जेहि जपत पुरारी॥ बा० ९/२
मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवउ सो दसरथ अजिर बिहारी॥ बा० १११/४

मंगलमय कल्यानमय अभिमत फल दातार।
जनु सब साचे होन हित भए सगुन एक बार॥ बा० ३०३/०

मंगलमय निज निज भवन लोगन्ह रचे बनाइ।
बीथीं सींचीं चतुरसम चौकें चारु पुराइ॥ बा २९६/०

मंगलमय मंदिर सब केरें। चित्रित जनु रतिनाथ चितेरें॥ बा० २१२/५
मंगलमूरति लोचन भरि भरि। निरखहिं हरषि दंडवत करि करि॥ अ० २४८/४
मंगल मूल बिप्र परितोषू। दहइ कोटि कुल भूसुर रोषु॥ अ० १२५/४
मंगलरूप भयउ बन तब ते। कीन्ह निवास रमापति जब ते॥ कि० १२/५
मंगलमूल रामु सुत जासू। जो कछु कहिअ थोर सबु तासू॥ अ० १/५
मंगल मूल लगन दिनु आवा। हिम रितु अगहनु मासु सुहावा॥ बा० ३११/५

मंगल मोद उछाह नित जाहिं दिवस एहि भाँति।
उमगी अवध अनंद भरि अधिक अधिक अधिकाति॥ बा० ३५९/०

मंगल सकल सोहाहिं न कैसें। सहगामिनिहि बिभूषन जैसें॥ अ० ३६/७
मंगल सगुन मनोहरताई। रिधि सिधि सुख संपदा सुहाई॥ बा० ३४४/२
मंगल सगुन सुगम सब ताकें। सगुन ब्रह्म सुंदर सुत जाकें॥ बा० ३०३/१
मंगल सगुन सुगंध सुहाए। बहुत भाँति महिपाल पठाए॥ बा० ३०४/५
मंगल सगुन होहिं सब काहू। फरकहिं सुखद बिलोचन बाहू॥ अ० २२४/१

मंत्रिन्ह पुर देखा बिनु साईं। दीन्हेउ मोहि राज बरिआईं॥ कि० ५/९
मंत्रिन्ह सहित इहाँ एक बारा। बैठ रहेउँ मैं करत बिचारा॥ कि० ४/३
मंत्री बिकल बिलोकि निषादू। कहि न जाइ जस भयउ बिषादू॥ अ० १४१/६
मंत्री मुदित सुनत प्रिय बानी। अभिमत बिरवँ परेउ जनु पानी॥ अ० ४/४
मृग बधि बंधु सहित हरि आए। आश्रमु देखि नयन जल छाए॥ बा० ४८/६
मृग बिलोकि कटि परिकर बाँधा। करतल चाप रुचिर सर साँधा॥ अर० २६/७
मृग बिलोकि खग बोलि सुबानी। सेवहिं सकल राम प्रिय जानी॥ अ० ३१०/८
मृगमद चंदन कुंकुम कीचा। मची सकल बीथिन्ह बिच बीचा॥ बा० १९३/८
मृगमाला फिरि दाहिनि आई। मंगल गन जनु दीन्हि देखाई॥ बा० ३०२/६
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं। प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि॥ उ० १०७/८
मृतक जिआवनि गिरा सुहाई। श्रवन रंध्र होइ उर जब आई॥ बा० १४४/७
मृत्यु निकट आई खल तोही। लागेसि अधम सिखावन मोही॥ सुं० २३/३
मृदु पद कमल कठिन मगु जानी। गहबरि हृदयँ कहहिं बर बानी॥ अ० १२०/२
मृदु मूरति सुकुमार सुभाऊ। तात बाउ तन लाग न काऊ॥ अ० १९९/३
मृदुल मनोहर सुंदर गाता। सहत दुसह बन आतप बाता॥ कि० ०/९
मृषा होउ मम श्राप कृपाला। मम इच्छा कह दीनदयाला॥ बा० १३७/३

य

यत्पूर्वं प्रभुणा कृतं सुकविना श्रीशम्भुना दुर्गमं
श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्त्यै तु रामायणम्।
मत्वा तद्रघुनाथनामनिरतं स्वान्तस्तमःशान्तये
भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसम्॥ उ०१३०/१ श्लोक
यन्मायावशवर्त्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा
यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम्॥ बा० श्लोक ६
यस्याङ्के च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट्।
सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा
शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशंकरः पातु माम्॥ अ० श्लोक १
यह इतिहास पुनीत अति उमहि कही बृषकेतु।
भरद्वाज सुनु अपर पुनि राम जनम कर हेतु॥ बा० १५२/०
यह इतिहास सकल जग जानी। ताते मैं संछेप बखानी॥ बा० ६४/४
यहउ कहत भल कहिहि न कोऊ। लोकु बेदु बुध संमत दोऊ॥ अ० २०६/१
यहउ कहत मोहि आजु न सोभा। अपनी समुझि साधु सुचि को भा॥ अ० २६०/२

यह उत्सव देखिअ भरि लोचन । सोइ कछु करहु मदन मद मोचन ॥ बा० ८८/१
यह कछु नहिं प्रभु कइ अधिकाई । बिस्वरूप ब्यापक रघुराई ॥ कि० २१/४
यह कलिकाल मलायतन मन करि देखु बिचार ।
श्रीरघुनाथ नाम तजि नाहिन आन अधार ॥ लं० १२१/०(ख)
यह कहि नाइ सबन्हि कहुँ माथा । चलेउ हरषि हियँ धरि रघुनाथा ॥ सुं० ०/४
यह कुल उचित राम कहुँ टीका । सबहि सोहाइ मोहि सुठि नीका ॥ अ० १७/७
यह कौतूहल जानइ सोई । जा पर कृपा राम कै होई ॥ लं० ५४/३
यह खल मलिन सदा सुरद्रोही । काम लोभ मद रत अति कोही ॥ लं० १०९/९
यह गुन साधन तें नहिं होई । तुम्हरी कृपाँ पाव कोइ कोई ॥ कि० २०/६
यह जियँ जानि सँकोचु तजि करिअ छोहु लखि नेहु ।
हमहि कृतारथ करन लगि फल तृन अंकुर लेहु ॥ अ० २५०/०
यह तुम्हार आचरजु न ताता । दसरथ सुअन राम प्रिय भ्राता ॥ अ० २०७/२
यह तौ राम लाइ उर लीन्हा । कुल समेत जगु पावन कीन्हा ॥ अ० १९३/६
यह न अधिक रघुबीर बड़ाई । प्रनत कुटुंब पाल रघुराई ॥ अ० २०७/७
यह नइ रीति न राउरि होई । लोकहुँ बेद बिदित नहिं गोई ॥ अ० २६६/६
यह न कहिअ सठही हठसीलहि । जो मन लाइ न सुन हरि लीलहि । उ० १२७/३
यह निसिचर दुकाल सम अहई । कपिकुल देस परन अब चहई ॥ लं० ६९/३
यह प्रगटें अथवा द्विजश्रापा । नास तोर सुनु भानुप्रतापा ॥ बा० १६५/३
यह प्रताप रबि जाकें उर जब करइ प्रकास ।
पछिले बाढ़हिं प्रथम जे कहे ते पावहिं नास ॥ उ० ३१/०
यह प्रभु चरित पवित्र सुहावा । कहहु कृपाल काग कहँ पावा ॥ उ० ५४/१
यह प्रसंग मैं कहा भवानी । हरिमायाँ मोहहिं मुनि ग्यानी ॥ बा० १३९/७
यह प्रसंग मोहि कहहु पुरारी । मुनि मन मोह आचरज भारी ॥ बा० १२३/८
यह प्राकृत महिपाल सुभाऊ । जान सिरोमनि कोसलराऊ ॥ बा० २७/१०
यह बड़ दोषु दूरि करि स्वामी । तजि सकोच सिखइअ अनुगामी ॥ अ० ३१३/७
यह बड़ि बात भरत कइ नाहीं । सुमिरत जिनहि रामु मन माहीं ॥ अ० २१६/३
यह बड़ि बात राम कै नाहीं । जिमि घट कोटि एक रबि छाहीं ॥ अ० २४३/४
यह बर मागउँ कृपानिकेता । बसहु हृदयँ श्री अनुज समेता ॥ अर० १२/१०
यह बिचारि नहिं करउँ हठ झूठ सनेहु बढ़ाइ ।
मानि मातु कर नात बलि सुरति बिसरि जनि जाइ ॥ अ० ५६/०
यह बिचारि नारद कर बीना । गए जहाँ प्रभु सुख आसीना ॥ अर० ४०/८
यह बिचारि पंडित मोहि भजहीं । पाएहुँ ग्यान भगति नहिं तजहीं ॥ अर० ४२/१०
यह बिचारु उर आनि नृप सुदिनु सुअवसरु पाइ ।
प्रेम पुलकि तन मुदित मन गुरहि सुनायउ जाइ ॥ अ० २/०

यह बृत्तांत दसानन सुनेऊ। अति बिषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ ॥ लं० ६१/५
यह मत जौं मानहु प्रभु मोरा। उभय प्रकार सुजसु जग तोरा ॥ लं० ९/१
यह मुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्हि राम तुम्ह कहँ सहिदानी ॥ सुं० १२/१०
यह रहस्य काहूँ नहिं जाना। दिनमनि चले करत गुनगाना ॥ बा० १९५/१
यह रहस्य रघुनाथ कर बेगि न जानइ कोइ।
जो जानइ रघुपति कृपाँ सपनेहुँ मोह न होइ ॥ उ० ११६/० (क)
यह लघु जलधि तरत कति बारा। अस सुनि पुनि कह पवनकुमारा ॥ लं० ०/१
यह सपना मैं कहउँ पुकारी। होइहि सत्य गएँ दिन चारी ॥ सुं० १०/७
यह सब गुप्त चरित मैं गावा। हरि मायाँ जिमि मोहि नचावा ॥ उ० ८८/४
यह सब चरित कहा मैं गाई। आगिलि कथा सुनहु मन लाई ॥ बा० २०५/१
यह सब जागबलिक कहि राखा। देबि न होइ मुधा मुनि भाषा ॥ अ० २८४/८
यह सब माया कर परिवारा। प्रबल अमिति को बरनै पारा ॥ उ० ७०/७
यह सब रुचिर चरित मैं भाषा। अब सो सुनहु जो बीचहिं राखा ॥ बा० १८७/६
यहु सबु भा इन्ह आँखिन्ह आगें। तउ न तजा तनु जीव अभागें ॥ अ० १६५/६
यह सुधि कोल किरातन्ह पाई। हरषे जनु नव निधि घर आई ॥ अ० १३४/१
यह सुधि गुहँ निषाद जब पाई। मुदित लिए प्रिय बंधु बोलाई ॥ अ० ८७/१
यह सुधि पाइ नगर नर नारी। चले बिलोकन आरत भारी ॥ अ० २०१/२
यह सुधि पाइ प्रयाग निवासी। बटु तापस मुनि सिद्ध उदासी ॥ अ० १०७/५
यह सुधि सकल कपिन्ह जब पाई। धाए करि रघुबीर दोहाई ॥ लं० ७८/१३
यह सुभ चरित जान पै सोई। कृपा राम कै जापर होई ॥ बा० १९५/६
यह सुभ संभु उमा संबादा। सुख संपादन समन बिषादा ॥ उ० १२९/१
यह सुनि अवर महिप मुसुकाने। धरमसील हरिभगत सयाने ॥ बा० २४४/८
यह सुनि मन गुनि सपथ बड़ि बिहसि उठी मतिमंद।
भूषन सजति बिलोकि मृगु मनहुँ किरातिनि फंद ॥ अ० २६/०
यहु सुनि समुझि सोचु परिहरहू। सिर धरि राज रजायसु करहू ॥ अ० १७३/२
यह संबाद जासु उर आवा। रघुपति चरन भगति सोइ पावा ॥ सुं० ३३/४
यहु संसउ सब के उर माहीं। राम गवनु बिधि अवध कि नाहीं ॥ अ० २५१/८
यह स्वारथ परमारथ सारू। सकल सुकृत फल सुगति सिंगारू ॥ अ० २६७/६
यह हबि बाँटि देहु नृप जाई। जथा जोग जेहि भाग बनाई ॥ बा० १८८/८
यह हमारि अति बड़ि सेवकाई। लेहिं न बासन बसन चोराई ॥ अ० २५०/३
याको फल पावहिगो आगें। बानर भालु चपेटन्हि लागें ॥ लं० ३२/७
यो ददाति सतां शम्भुः कैवल्यमपि दुर्लभम्।
खलानां दण्डकृद्योऽसौ शंकरः शं तनोतु मे ॥ लं० श्लोक ३
यों सुधारि सनमानि जन किए साधु सिरमोर।

को कृपाल बिनु पालिहै बिरदावलि बरजोर ॥ अ० २९९/०

र

रउरे अंग जोगु जग को है । दीप सहाय कि दिनकर सोहै ॥ अ० २८४/५
रखवारे जब बरजन लागे । मुष्टि प्रहार हनत सब भागे ॥ सुं० २७/८
रखवारे हति बिपिन उजारा । देखत तोहि अच्छ तेहिं मारा ॥ लं० ३५/५
रखिअहिं लखनु भरतु गवनहिं बन । जौं यह मत मानै महीप मन ॥ अ० २८३/२
रघुकुल केतु सेतु श्रुति रच्छक । काल करम सुभाउ गुन भच्छक ॥ उ० ३४/८
रघुकुलतिलक चले एहि भाँती । देखउँ ठाढ़ कुलिस धरि छाती ॥ अ० १५२/२
रघुकुलतिलक जोरि दोउ हाथा । मुदित मातु पद नायउ माथा ॥ अ० ५१/१
रघुकुल तिलक सुजन सुखदाता । आयउ कुसल देव मुनि त्राता ॥ उ० १/४
रघुकुल मनि दसरथ के जाए । मम हित लागि नरेस पठाए ॥ बा० २१५/८
रघुकुल रीति सदा चलि आई । प्रान जाहुँ बरु बचनु न जाई ॥ अ० २७/४
रघुनंद निकंदय द्वंद्वघनं । महिपाल बिलोकय दीन जनं ॥ उ० १३/२० छं०
रघुपति अनुजहि आवत देखी । बाहिज चिंता कीन्हि बिसेषी ॥ अर० २९/१
रघुपति कटक भालु कपि जेते । जहँ तहँ प्रगट दसानन तेते ॥ लं० ९५/२
रघुपति कर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर ।
अस कहि कपि गदगद भयउ भरे बिलोचन नीर ॥ सुं० १४/०
रघुपति कीरति बिमल पताका । दंड समान भयउ जस जाका ॥ बा० १६/६
रघुपति कोपि बान झरि लाई । घायल भै निसिचर समुदाई ॥ लं० ८६/८
रघुपति कृपाँ जथामति गावा । मैं यह पावन चरित सुहावा ॥ उ० १२९/४
रघुपति चरन कमल सिरु नाई । गयउ गगन आपनि गति पाई ॥ अर० ३३/४
रघुपति चरन उपासक जेते । खग मृग सुर नर असुर समेते ॥ बा० १७/३
रघुपति चरन नाइ करि माथा । चले सकल प्रेरित रघुनाथा ॥ कि० १०/१०
रघुपति चरन नाइ सिरु चलेउ तुरंत अनंत ।
अंगद नील मयंद नल संग सुभट हनुमंत ॥ लं० ७५/०
रघुपति चरित देखि पुरबासी । पुनि पुनि कहहिं धन्य सुखरासी ॥ उ० १९/६
रघुपति चित्रकूट बसि नाना । चरित किए श्रुति सुधा समाना ॥ अर० २/१
रघुपति निकट गयउ घननादा । नाना भाँति करेसि दुर्बादा ॥ लं० ५०/५
रघुपति पटु पालकीं मगाईं । करि प्रबोधु सब मातु चढ़ाईं ॥ अ० ३१९/४
रघुपति पितहि प्रेमबस जानी । पुनि कछु कहिहि मातु अनुमानी ॥ अ० ४४/४
रघुपति पुरीं जन्म तव भयऊ । पुनि तैं मम सेवाँ मन दयऊ ॥ उ० १०८/९
रघुपति प्रजा प्रेमबस देखी । सदय हृदयँ दुखु भयउ बिसेषी ॥ अ० ८४/१
रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना । चितइ पितहि दीन्हेउ दृढ़ ग्याना ॥ लं० ११२/५
रघुबर बरन बिलोकि बर बारि समेत समाज ।

होत मगन बारिधि बिरध चढ़े बिबेक जहाज ॥ अ० २२०/०
रघुपति बिमुख जतन कर कोरी । कवन सकइ भव बंधन छोरी ॥ बा० १९९/३
रघुपति बिरह सबिष सर भारी । तकि तकि मार बार बहु मारी ॥ लं० ९८/९
रघुपति भगति सुमंगल मूला । नभ सराहि सुर बरिसहिं फूला ॥ उ० १२१/७
रघुपति भगति सजीवन मूरी । अनूपान श्रद्धा मति पूरी ॥ अ० २४२/७
रघुपति महिमा अगुन अबाधा । बरनब सोइ बर बारि अगाधा ॥ बा० ३६/२
रघुपति सर सिर कटेहुँ न मरई । बिधि बिपरीत चरित सब करई ॥ लं० ९८/५
रघुबर उर जयमाल देखि देव बरिसहिं सुमन ।
सकुचे सकल भुआल जनु बिलोकि रबि कुमुदगन ॥ बा०२६४/० सो०
रघुबर कहेउ लखन भल घाटू । करहु कतहुँ अब ठाहर ठाटू ॥ अ० १३२/१
रघुबर जनम अनंद बधाई । भवँर तरंग मनोहरताई ॥ बा० ३९/८
रघुबंस बिभूषन दूषन हा । कृत भूप बिभीषन दीन रहा ॥ लं०११०/८ छं०
रघुबंस भूषन चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं ।
कलि मल मनोमल धोइ बिनु श्रम राम धाम सिधावहीं ॥
सत पंच चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरै ।
दारुन अबिद्या पंच जनित बिकार श्रीरघुबर हरै ॥ उ० १२९/२ छं०
रघुबंसिन्ह कर सहज सुभाऊ । मनु कुपंथ पगु धरइ न काऊ ॥ बा० २३०/५
रघुबंसिन्ह महुँ जहँ कोउ होई । तेहिं समाज अस कहइ न कोई ॥ बा० २५२/१
रघुराउ सिथिल सनेहँ साधु समाज मुनि मिथिला धनी ।
मन महुँ सराहत भरत भायप भगति की महिमा घनी ॥
भरतहि प्रसंसत बिबुध बरषत सुमन मानस मलिन से ।
तुलसीं बिकल सब लोग सुनि सकुचे निसागम नलिन से ॥ अ० ३००/१ छं०
रचहु बिचित्र बितान बनाई । सिर धरि बचन चले सचु पाई ॥ बा० २८६/६
रचहु मंजु मनि चौकें चारू । कहहु बनावन बेगि बजारू ॥ अ० ५/७
रचि पचि कोटिक कुटिलपन कीन्हेसि कपट प्रबोधु ।
कहिसि कथा सत सवति कै जेहि बिधि बाढ़ बिरोधु ॥ अ० १८/०
रचि प्रपंचु भूपहि अपनाई । राम तिलक हित लगन धराई ॥ अ० १७/६
रचि महेस निज मानस राखा । पाइ सुसमउ सिवा सन भाषा ॥ बा० ३४/११
रचि रुचि जीन तुरग तिन्ह साजे । बरन बरन बर बाजि बिराजे ॥ बा० २९७/४
रचीं आरती बहुत बिधाना । मुदित करहिं कल मंगल गाना ॥ बा० ३४५/८
रचे रुचिर बर बंदनिवारे । मनहुँ मनोभवँ फंद सँवारे ॥ बा० २८८/१
रजत सीप महु भास जिमि जथा भानु कर बारि ।
जदपि मृषा तिहुँ काल सोइ भ्रम न सकइ कोउ टारि ॥ बा० ११७/०
रजनीचर बृंद पतंग रहे । सर पावक तेज प्रचंड दहे ॥ उ० १३/४ छं०

रज सिर धरि हियँ नयनन्हि लावहिं। रघुबर मिलन सरिस सुख पावहिं॥ अ० २३७/४
रज मग परी निरादर रहई। सब कर पद प्रहार नित सहई॥ उ० १०५/११
रतनदीप सुठि चारु चँदोवा। कहत न बनइ जान जेहिं जोवा॥ बा० ३५५/४
रति गवनी सुनि संकर बानी। कथा अपर अब कहउँ बखानी॥ बा० ८७/३
रथ कर खोज कतहुँ नहिं पावहिं। राम राम कहि चहु दिसि धावहिं॥ अ० ८५/२
रथ गिरि सिला दुंदुभीं झरना। चातक बंदी गुन गन बरना॥ अर० ३७/८
रथ तुरंग सारथी निपाता। हृदय माझ तेहि मारेसि लाता॥ लं० ९४/२
रथु पहिचानि बिकल लखि घोरे। गरहिं गात जिमि आतप ओरे॥ अ० १४६/७
रथ बिभंजि हति केतु पताका। गर्जा अति अंतर बल थाका॥ लं० ९१/२
रथ सारथिन्ह बिचित्र बनाए। ध्वज पताक मनि भूषन लाए॥ बा० २९८/३
रथु हाँकेउ हय राम तन हेरि हेरि हिहिनाहिं।
देखि निषाद बिषादबस धुनहिं सीस पछिताहिं॥ अ० ९९/०
रथारूढ़ रघुनाथहि देखी। धाए कपि बलु पाइ बिसेषी॥ लं० ८८/५
रन चढ़ि करिअ कपट चतुराई। रिपु पर कृपा परम कदराई॥ अर० १८/१३
रन ते निलज भाजि गृह आवा। इहाँ आइ बक ध्यान लगावा॥ लं० ८४/७
रन मद मत्त निसाचर दर्पा। बिस्व ग्रसिहि जनु एहि बिधि अर्पा॥ लं० ६६/५
रन मद मत्त फिरइ जग धावा। प्रतिभट खोजत कतहुँ न पावा॥ बा० १८१/९
रन सोभा लगि प्रभुहिं बँधायो। नागपास देवन्ह भय पायो॥ लं० ७२/१३
रबि निज उदय ब्याज रघुराया। प्रभु प्रतापु सब नृपन्ह दिखाया॥ बा० २३८/५
रबि मंडल देखत लघु लागा। उदयँ तासु तिभुवन तम भागा॥ बा० २५५/८
रबि सम तेज सो बरनि न जाई। बैठे राम द्विजन्ह सिरु नाई॥ उ० ११/२
रबि ससि पवन बरुन धनधारी। अगिनि काल जम सब अधिकारी॥ बा० १८१/१०
रमानाथ जहँ राजा सो पुर बरनि कि जाइ।
अनिमादिक सुख संपदा रहीं अवध सब छाइ॥ उ० २९/०
रमा बिलासु राम अनुरागी। तजत बमन जिमि जन बड़भागी॥ अ० ३२३/८
रमा रमन पद बंदि बहोरी। बिनवहिं अंजुलि अंचल जोरी॥ अ० २७२/५
रमेउ राम मनु देवन्ह जाना। चले सहित सुर थपति प्रधाना॥ अ० १३२/६
रस रस सूख सरित सर पानी। ममता त्याग करहिं जिमि ग्यानी॥ कि० १५/५
रहउ चढ़ाउब तोरब भाई। तिलु भरि भूमि न सके छड़ाई॥ बा० २५१/२
रहति न प्रभु चित चूक किए की। करत सुरति सय बार हिए की॥ बा० २८/५
रहसि जोरि कर पति पग लागी। बोली बचन नीति रस पागी॥ सुं० ३५/५
रहसी रानि राम रुख पाई। बोली कपट सनेहु जनाई॥ अ० ४२/१
रहहु करहु सब कर परितोषू। नतरु तात होइहि बड़ दोषू॥ अ० ७०/५
रहहु तात असि नीति बिचारी। सुनत लखनु भए ब्याकुल भारी॥ अ० ७०/७

रहहु भवन अस हृदयँ बिचारी । चंदबदनि दुखु कानन भारी ।। अ० ६२/८
रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग ।
जहँ तहँ सोचहिं नारि नर कृस तन राम बियोग ।। उ० ०/१
रहा न नगर बसन घृत तेला । बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला ।। सुं० २४/५
रहा प्रथमं अब ते दिन बीते । समउ फिरें रिपु होहिं पिरीते ।। अ० १६/६
रहिहि न अंतहु अधम सरीरू । जसु न लहेउ बिछुरत रघुबीरू ।। अ० १४३/४
रही न लाज प्रीति उर छाई । सहज सनेहु बरनि किमि जाई ।। बा० ३३५/२
रही भुवन भरि जय जय बानी । धनुषभंग धुनि जात न जानी ।। बा० २६१/७
रहे असुर छल छोनिप बेषा । तिन्ह प्रभु प्रकट काल सम देखा ।। बा० २४०/७
रहेउ एक दिन अवधि अधारा । समुझत मन दुख भयउ अपारा ।। उ० ०/१
रहेहु सजग सुनि प्रभु कै बानी । चले सहित श्री सर धनु पानी ।। अर० १७/१२
रहे छाइ नभ सिर अरु बाहू । मानहुँ अमित केतु अरु राहू ।। लं० ९१/१४
रहे जे सुत सेवक नृप केरे । भए निसाचर घोर घनेरे ।। बा० १७५/६
रहे तहाँ दुइ रुद्र गन ते जानहिं सब भेउ ।
बिप्रबेष देखत फिरहिं परम कौतुकी तेउ ।। बा० १३३/०
रहे तहाँ निसिचर भट भारे । ते सब सुरन्ह समर संघारे ।। बा० १७८/१
रहे तहाँ बहु भट रखवारे । कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे ।। सुं० १७/२
रहे बिरंचि संभु मुनि ग्यानी । जिन्ह जिन्ह प्रभु महिमा कछु जानी ।। लं० ९५/८
रहे ब्यापि समस्त जग माहीं । तेहि गिरि निकट कबहुँ नहिं जाहीं ।। उ० ५६/३
रहे महाभट ताके संगा । गहि गहि कपि मर्दइ निज अंगा ।। सुं० १८/६
रहे राखि सेवा पर भारू । चढ़ी चंग जनु खैंच खेलारू ।। अ० २३९/६
रहै करम बस परिहरि नाहू । सचिव हृदयँ तिमि दारुन दाहू ।। अ० १४४/२
राउ अवधपुर चहत सिधाए । बिदा होन हम इहाँ पठाए ।। बा० ३३५/५
राउर आयसु सिर सबही कें । बिदित कृपालहि गति सब नीकें ।। अ० २९७/४
राउ तृषित नहिं सो पहिचाना । देखि सुबेष महामुनि जाना ।। बा० १५७/७
राउ धीर गुन उदधि अगाधू । भा मोहि तें कछु बड़ अपराधू ।। अ० ४१/७
राउ बहोरि उतरि भए ठाढ़े । प्रेम प्रबाह बिलोचन बाढ़े ।। बा० ३३९/६
राउर जा पर अस अनुरागू । को कहि सकइ भरत कर भागू ।। अ० २५८/६
राउर नगर कोलाहलु होई । यह कुचालि कछु जान न कोई ।। अ० २२/८
राउर बदि भल भव दुख दाहू । प्रभु बिनु बादि परम पद लाहू ।। अ० ३१३/२
राउर राय रजायसु होई । राउरि सपंथ सही सिर सोई ।। अ० २९५/८
राउरि रीति सुबानि बड़ाई । जगत बिदित निगमागम गाई ।। अ० २९८/१
राउ सत्यब्रत तुम्हहि बोलाई । देत राजु सुखु धरमु बड़ाई ।। अ० २०६/४
राउ सुनाइ दीन्ह बनबासू । सुनि मन भयउ न हरषु हराँसू ।। अ० १४८/७

राकापति षोड़स उअहिं तारागन समुदाइ ।
सकल गिरिन्ह दव लाइअ बिनु रबि राति न जाइ ॥ उ० ७८/० (ख)

राका रजनी भगति तव राम नाम सोइ सोम ।
अपर नाम उडगन बिमल बसहुँ भगत उर ब्योम ॥ अर०४२/० (क)

राका ससि रघुपति पुर सिंधु देखि हरषान ।
बढ्यो कोलाहल करत जनु नारि तरंग समान ॥ उ० ३/० (ग)

राखइ गुर जौं कोप बिधाता । गुर बिरोध नहिं कोउ जग त्राता ॥ बा० १६५/६

राखउँ सुतहि करउँ अनुरोधू । धरमु जाइ अरु बंधु बिरोधू ॥ अ० ५४/४

राखा मोर दुलार गोसाईं । अपनें सील सुभायँ भलाईं ॥ अ० २९९/६

राखिअ अवध जो अवधि लगि रहत न जनिअहिं प्रान ।
दीनबंधु सुंदर सुखद सील सनेह निधान ॥ अ० ६६/०

राखिअ नारि जदपि उर माहीं । जुबती सास्त्र नृपति बस नाहीं ॥ अर० ३६/९

राखि न सकइ न कहि सक जाहू । दुहूँ भाँति उर दारुन दाहू ॥ अ० ५४/१

राखि राम रुख धरमु ब्रतु पराधीन मोहि जानि ।
सब कें संमत सर्ब हित करिअ पेमु पहिचानि ॥ अ० २९३/०

राखु राम कहुँ जेहि तेहि भाँती । नाहिं त जरिहि जनम भरि छाती ॥ अ० ३३/८

राखेउ रायँ सत्य मोहि त्यागी । तनु परिहरेउ पेम पन लागी ॥ अ० २६३/६

राखें राम रजाइ रुख हम सब कर हित होइ ।
समुझि सयाने करहु अब सब मिलि संमत सोइ ॥ अ० २५४/०

रागु रोषु इरिषा मदु मोहू । जनि सपनेहुँ इन्ह के बस होहू ॥ अ० ७४/५

राच्छस कपट बेष तहँ सोहा । मायापति दूतहि चह मोहा ॥ लं० ५६/३

राज काज सब लाज पति धरम धरनि धन धाम ।
गुर प्रभाउ पालिहि सबहि भल होइहि परिनाम ॥ अ० ३०५/०

राजकुँअर तेहि अवसर आए । मनहुँ मनोहरता तन छाए ॥ बा० २४०/१

राजकुँअर दोउ सहज सलोने । इन्ह तें लही दुति मरकत सोने ॥ अ० ११५/८

राजकुँअर बर बाजि देखावहिं । बंस प्रसंसक बिरिद सुनावहिं ॥ बा० ३१५/६

राजकुमारि बिनय हम करहीं । तिय सुभायँ कछु पूँछत डरहीं ॥ अ० ११५/६

राजकुमारि सिखावनु सुनहू । आन भाँति जियँ जनि कछु गुनहू ॥ अ० ६०/२

राजघाट सब बिधि सुंदर बर । मज्जहिं तहाँ बरन चारिउ नर ॥ उ० २८/३

राजत राज समाज महुँ कोसलराज किसोर ।
सुंदर स्यामल गौर तन बिस्व बिलोचन चोर ॥ बा० २४२/०

राजत रामु सहित भामिनी । मेरु सृंग जनु घन दामिनी ॥ लं० ११८/५

राज दुआर सकल बिधि चारू । बीथीं चौहट रुचिर बजारू ॥ उ० २७/८

राज धनी जो जेठ सुत आही । नाम प्रतापभानु अस ताही ॥ बा० १५२/५

राजधरम सरबसु एतनोई । जिमि मन माहँ मनोरथ गोई ॥ अ० ३१५/१

राजन राउर नामु जसु सब अभिमत दातार ।
फल अनुगामी महिप मनि मन अभिलाषु तुम्हार ॥ अ० ३/०

राजन रामु अतुलबल जैसें । तेज निधान लखनु पुनि तैसें ॥ बा० २९२/३
राज नीति बिनु धन बिनु धर्मा । हरिहि समर्पे बिनु सतकर्मा ॥ अर० २०/८
राज बैठि कीन्हीं बहु लीला । सकल कहहु संकर सुखसीला ॥ बा० १०९/८
राज लखन सब अंग तुम्हारें । देखि सोचु अति, हृदय हमारें ॥ अ० १११/४
राज समाजु एक रथ साजा । दूसर तेज पुंज अति भ्राजा ॥ बा० ३००/८
राज समाज प्रात जुग जागे । न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे ॥ अ० २८९/२
राज समाज बिराजत रूरे । उडगन महुँ जनु जुग बिधु पूरे ॥ बा० २४०/३
राजहि तुम्ह पर प्रेमु बिसेषी । सवति सुभाउ सकइ नहिं देखी ॥ अ० १७/५

राजा के उपरोहितहि हरि लै गयउ बहोरि ।
लै राखेसि गिरि खोह महुँ मायाँ करि मति भोरि ॥ बा० १७१/०

राजा राम अवध रजधानी । गावत गुन सुर मुनि बर बानी ॥ बा० २४/६
राजा रामु जानकी रानी । आनँद अवधि अवध रजधानी ॥ अ० २७२/६
राजा सबु रनिवास बोलाई । जनक पत्रिका बाचि सुनाई ॥ बा० २९४/१
राजिवनयन धरें धनु सायक । भगत बिपति भंजन सुख दायक ॥ बा० १७/१०

राजीव लोचन स्रवत जल तन ललित पुलकावलि बनी ।
अति प्रेमं हृदयँ लगाइ अनुजहि मिले प्रभु त्रिभुअन धनी ॥
प्रभु मिलत अनुजहि सोह मो पहिं जात नहिं उपमा कही ।
जनु प्रेम अरु सिंगार तनु धरि मिले बर सुषमा लही ॥ उ० ४/१ छं०

राजु करत यह दैअँ बिगोई । कीन्हेसि अस जस करइ न कोई ॥ अ० ५०/३
राजु कि रहइ नीति बिनु जानें । अघ कि रहहिं हरिचरित बखानें ॥ उ० १११/६

राजु देन कहि दीन्ह बनु मोहि न सो दुख लेसु ।
तुम्ह बिनु भरतहि भूपतिहि प्रजहि प्रचंड कलेसु ॥ अ० ५५/०

राजु देन कहुँ सुभ दिन साधा । कहेउ जान बन केहिं अपराधा ॥ अ० ५३/७
रानि कुचालि सुनत नरपालहि । सूझ न कछु जस मनि बिनु ब्यालहि ॥ अ० २७०/३
रानिन्ह सहित सोचबस सीया । अब धौं बिधिहि काह करनीया ॥ बा० २६६/७
रानि राय सन अवसरु पाई । अपनी भाँति कहब समुझाई ॥ अ० २८३/१
रानि सुनि उपरोहित बानी । प्रमुदित सखिन्ह समेत सयानी ॥ बा० ३२१/३
रातिहिं घाट घाट की तरनी । आईं अगनित जाहिं न बरनी ॥ अ० २२०/२
राम अतर्क्य बुद्धि मन बानी । मत हमार अस सुनहि सयानी ॥ बा० १२०/३
राम अनुज मन की गति जानी । भगत बछलता हियँ हुलसानी ॥ बा० २१७/३
राम अनुज समेत बैदेही । निसि दिनु देव जपत हहु जेही ॥ अर० ११/८

राम अनंत अनंत गुन अमित कथा बिस्तार ।
सुनि आचरजु न मानिहहिं जिन्ह कें बिमल बिचार ॥ बा० ३३/०
राम अनंत अनंत गुनानी । जन्म कर्म अनंत नामानी ॥ उ० ५१/३
राम उठाइ मातु उर लाई । कहि मृदु बचन बहुरि समुझाई ॥ अ० ५६/८
राम उदर देखेउँ जग नाना । देखत बनइ न जाइ बखाना ॥ उ० ८१/५
राम उपासक जे जग माहीं । एहि सम प्रिय तिन्ह कें कछु नाहीं ॥ उ० १२९/३
राम एक तापस तिय तारी । नाम कोटि खल कुमति सुधारी ॥ बा० २३/३
रामकथा कलि कामद गाई । सुजन संजीवनि मूरि सुहाई ॥ बा० ३०/७
रामकथा कलि बिटप कुठारी । सादर सुनु गिरिराजकुमारी ॥ बा० ११३/२
रामकथा कलि पंनग भरनी । पुनि बिबेक पावक कहुँ अरनी ॥ बा० ३०/६
रामकथा के तेइ अधिकारी । जिन्ह कें सतसंगति अति प्यारी ॥ उ० १२७/६
रामकथा कै मिति जग नाहीं । असि प्रतीति तिन्ह के मन माहीं ॥ बा० ३२/५
राम कथा गिरिजा मैं बरनी । कलि मल समनि मनोमल हरनी ॥ उ० १२८/१
राम कथा मुनिबर बहु बरनी । ग्यान जोनि पावक जिमि अरनी ॥ उ० ३१/८
रामकथा मुनिबर्ज बखानी । सुनी महेस परम सुखु मानी ॥ बा० ४७/३
रामकथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु ।
तुलसी सुभग सनेह बन सिय रघुबीर बिहारु ॥ बा० ३१/०
रामकथा ससि किरन समाना । संत चकोर करहिं जेहि पाना ॥ बा० ४६/७
रामकथा सुंदर कर तारी । संसय बिहग उड़ावनिहारी ॥ बा० ११३/१
रामकथा सुरधेनु सम सेवत सब सुख दानि ।
सतसमाज सुरलोक सब को न सुनै अस जानि ॥ बा० ११३/०
राम कथा सो कहइ निरंतर । सादर सुनहिं बिबिध बिहंगबर ॥ उ० ६१/४
राम कपिन्ह जब आवत देखा । किएँ काजु मन हरष बिसेषा ॥ सुं० २८/७
राम करहु सब संजम आजू । जौं बिधि कुसल निबाहै काजू ॥ अ० ९/३
राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती । नाना भाँति सिखावहिं नीती ॥ उ० २४/३
राम करौं केहि भाँति प्रसंसा । मुनि महेस मन मानस हंसा ॥ बा० ३४०/४
राम कहा अनुजहि समुझाई । राज देहु सुग्रीवहि जाई ॥ कि० १०/९
राम कहा तनु राखहु ताता । मुख मुसुकाइ कही तेहिं बाता ॥ अर० ३०/५
राम कहा मुनि कहहु बिचारी । रिस अति बड़ि लघु चूक हमारी ॥ बा० २८२/७
राम कहा सबु कौसिक पाहीं । सरल सुभाउ छुअत छल नाहीं ॥ बा० २३६/२
राम कहा सेवकन्ह बुलाई । प्रथम सखन्ह अन्हवावहु जाई ॥ उ० १०/२
राम कहेउ रिस तजिअ मुनीसा । कर कुठारु आगें यह सीसा ॥ बा० २८०/७
राम काज कारन तनु त्यागी । हरि पुर गयउ परम बड़ भागी ॥ कि० २६/८
राम काज लगि तव अवतारा । सुनतहिं भयउ पर्बताकारा ॥ कि० २९/६

राम काजु अरु मोर निहोरा। बानर जूथ जाहू चहुँ ओरा ॥ कि० २१/६
राम काजु करि फिरि मैं आवौं। सीता कइ सुधि प्रभुहिं सुनावौं ॥ सुं० १/४
राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान।
आसिष देइ गई सो हरषि चलेउ हनुमान ॥ सुं० २/०
राम कीन्ह आपन जबही तें। भयउँ भुवन भूषन तबही तें ॥ अ० १९५/२
राम कीन्ह चाहहिं सोइ होई। करै अन्यथा अस नहिं कोई ॥ बा० १२७/१
राम कीन्ह बिश्राम निसि प्रात प्रयाग नहाइ।
चले सहित सिय लखन जन मुदित मुनिहि सिरु नाइ ॥ अ० १०८/०
राम कुसल कहु सखा सनेही। कहँ रघुनाथु लखनु बैदेही ॥ अ० १४८/३
राम कृपाँ अतुलित बल तिन्हहीं। तृन समान त्रैलोकहि गनहीं ॥ सुं० ५४/२
रामकृपाँ अवरेब सुधारी। बिबुध धारि भइ गुनद गोहारी ॥ अ० ३१६/३
राम कृपा आपनि जड़ताई। कहउँ खगेस सुनहु मन लाई ॥ उ० ७४/१
राम कृपाँ कपि दल बल बाढ़ा। जिमि तृन पाइ लाग अति डाढ़ा ॥ लं० ७१/२
राम कृपा करि चितवा सबही। भए बिगतश्रम बानर तबही ॥ लं० ४७/२
राम कृपा करि जुगल निहारे। भए बिगतश्रम परम सुखारे ॥ लं० ४५/२
राम कृपा करि सूत उठावा। तब प्रभु परम क्रोध कहुँ पावा ॥ लं० ९०/८
राम कृपाँ तव दरसन भयऊ। तव प्रसाद सब संसय गयऊ ॥ उ० ६८/८
राम कृपा तें पारबति सपनेहुँ तव मन माहिं।
सोक मोह संदेह भ्रम मम बिचार कछु नाहिं ॥ बा० ११२/०
राम कृपाँ नासहिं सब रोगा। जौं एहि भाँति बनै संयोगा ॥ उ० १२१/५
राम कृपा बल पाइ कपिंदा। भए पच्छजुत मनहुँ गिरिंदा ॥ सुं० ३४/३
राम कृपा बिनु सुनु खगराई। जानि न जाइ राम प्रभुताई ॥ उ० ८८/६
राम कृपा भाजन तुम्ह ताता। हरि गुन प्रीति मोहि सुखदाता ॥ उ० ७३/३
राम कृपाल निषाद नेवाजा। परिजन प्रजउ चहिअ जस राजा ॥ अ० २४९/८
राम गवनु बन अनरथ मूला। जो सुनि सकल बिस्व भइ सूला ॥ अ० २०६/५
रामघाट कहँ कीन्ह प्रनामू। भा मनु मगनु मिले जनु रामू ॥ अ० १९६/४
राम चरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग।
सुमन माल जिमि कंठ ते गिरत न जानइ नाग ॥ कि० १०/०
राम चरन नूतन रति भई। माया जनित बिपति सब गई ॥ उ० १२४/२
राम चरन पंकज उर धरहू। कौतुक एक भालु कपि करहू ॥ लं० ०/८
राम चरन पंकज उर धरहू। लंका अचल राजु तुम्ह करहू ॥ सुं० २२/१
राम चरन पंकज प्रिय जिन्हही। बिषय भोग बस करहिं कि तिन्हही ॥ अ० ८३/८
राम चरन पंकज मन जासू। लुबुध मधुप इव तजइ न पासू ॥ बा० १६/४
राम चरन बारिज जब देखौं। तब निज जन्म सफल करि लेखौं ॥ उ० १०९/१४

तजि तजि भूषन भोग सुख जिअत अवधि कीं आस ॥ अ० ३२२/०
राम दरस लालसा उछाहू । पथ श्रम लेसु कलेसु न काहू ॥ अ० २७४/३
राम दरस हित अति अनुरागीं । परिछनि साजु सजन सब लागीं ॥ बा० ३४५/२
राम दरस हित नेम ब्रत लगे करन नर नारि ।
मनहुँ कोक कोकी कमल दीन बिहीन तमारि ॥ अ० ८६/०
राम देखावहिं अनुजहि रचना । कहि मृदु मधुर मनोहर बचना ॥ बा० २२४/३
राम दीख मुनि बासु सुहावन । सुंदर गिरि काननु जलु पावन ॥ अ० १२३/६
राम दूत मैं मातु जानकी । सत्य सपथ करुनानिधान की ॥ सुं० १२/९
राम देखि सुनि चरित तुम्हारे । जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे ॥ अ० १२६/७
राम धामदा पुरी सुहावनि । लोक समस्त बिदित अति पावनि ॥ बा० ३४/३
राम धाम पथ पाइहि सोई । जो पथ पाव कबहुँ मुनि कोई ॥ अ० १२३/२
राम नाम कर अमित प्रभावा । संत पुरान उपनिषद गावा ॥ बा० ४५/२
राम नाम कलि अभिमत दाता । हित परलोक लोक पितु माता ॥ बा० २६/६
राम नाम गुन चरित सुहाए । जनम करम अगनित श्रुति गाए ॥ बा० ११३/३
राम नाम नरकेसरी कनककसिपु कलिकाल ।
जापक जन प्रहलाद जिमि पालिहि दलि सुरसाल ॥ बा० २७/०
राम नाम बिनु गिरा न सोहा । देखु बिचारि त्यागि मद मोहा ॥ सुं० २२/३
राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरीं द्वार ।
तुलसी भीतर बाहेरहुँ जो चाहसि उजिआर ॥ बा० २१/०
राम नाम महिमा सुर कहहीं । सुनि सुनि अवधलोग सुखु लहहीं ॥ अ० १९४/२
राम नाम सिव सुमिरन लागे । जानेउ सतीं जगतपति जागे ॥ बा० ५९/३
राम निकाईं रावरी है सबही को नीक ।
जौं यह साँची है सदा तो नीको तुलसीक ॥ बा० २९/० (ख)
राम निरादर कर फलु पाई । सोवहुँ समर सेज दोउ भाई ॥ अ० २२९/४
राम पदारबिंद सिर नायउ आइ सुषेन ।
कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवनसुत लेन ॥ लं० ५५/०
राम परायन ग्यान रत गुनागार मति धीर ।
नाथ कहहु केहि कारन पायउ काक सरीर ॥ उ० ५४/०
राम पुनीत बिषय रस रूखे । लोलुप भूमि भोग के भूखे ॥ अ० १७८/७
राम पेम बिधु अचल अदोषा । सहित समाज सोह नित चोखा ॥ अ० ३२४/६
राम पेम भाजन भरतु बड़े न एहिं करतूति ।
चातक हंस सराहिअत टेंक बिबेक बिभूति ॥ अ० ३२४/०
राम प्रताप नाथ बल तोरे । करहिं कटकु बिनु भट बिनु घोरे ॥ अ० १९१/१
राम प्रताप सुमिरि मन माहीं । करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं ॥ लं० ०/६

राम प्रताप प्रबल कपिजूथा। मर्दहिं निसिचर सुभट बरूथा॥ लं० ४१/१

राम प्रतोषीं मातु सब कहि बिनीत बर बैन।
सुमिरि संभु गुर बिप्र पद किए नीदबस नैन॥ बा० ३५७/०

राम प्रनाम कीन्ह सब काहू। मुदित भए लहि लोयन लाहू॥ अ० १०७/७

राम प्रनामु कीन्ह सब काहू। मुदित देव लहि लोचन लाहू॥ अ० १३३/२

राम प्रबोधु कीन्ह बिधि नाना। समउ सनेहु न जाइ बखाना॥ अ० ६८/२

राम प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती। तदपि होति नहिं सीतलि छाती॥ अ० ९८/५

राम प्रभाव बिचारि बहोरि। बंदि चरन कह कपि कर जोरी॥ लं० ५९/८

राम प्रसाद भगति बर पायउँ। प्रभु पद बंदि निजाश्रम आयउँ॥ उ० ८८/२

राम प्रान प्रिय नाथ तुम्ह सत्य बचन मम तात।
पुनि पुनि मिलत भरत सुनि हरष न हृदयँ समात॥ उ० २/० (क)

राम प्रानहु तें प्रान तुम्हारे। तुम्ह रघुपतिहि प्रानहु तें प्यारे॥ अ० १६८/१

राम बचन गुरु नृपहि सुनाए। सील सनेह सुभायँ सुहाए॥ अ० २९०/७

राम बचन मृदु गूढ़ सुनि उपजा अति संकोचु।
सती सभीत महेस पहिं चलीं हृदयँ बड़ सोचु॥ बा० ५३/०

राम बचन सब के जिय भाए। मुनिबर निज निज आश्रम आए॥ लं० २/५

राम बचन सुनि कछुक जुड़ाने। कहि कछु लखनु बहुरि मुसुकाने॥ बा० २७६/५

राम बचन सुनि बानर जूथा। सकल कहहिं जय कृपा बरूथा॥ सुं० ४८/२

राम बचन सुनि बिहँसा मोहि सिखावत ग्यान।
बयरु करत नहिं तब डरे अब लागे प्रिय प्रान॥ लं० ९०/०

राम बचन सुनि सभय समाजू। जनु जलनिधि महुँ बिकल जहाजू॥ अ० २४८/१

राम बदनु बिलोकि मुनि ठाढ़ा। मानहुँ चित्र माझ लिखि काढ़ा॥ अर० ९/२४

राम बान अहि गन सरिस निकर निसाचर भेक।
जब लगि ग्रसत न तब लगि जतनु करहु तजि टेक॥ सुं० ३६/०

राम बान रबि उएँ जानकी। तम बरूथ कहँ जातुधान की॥ सुं० १५/२

राम बाम दिसि सोभति रमा रूप गुन खानि।
देखि मातु सब हरषीं जन्म सुफल निज जानि॥ उ० ११/० (ख)

राम बालि निज धाम पठावा। नगर लोग सब ब्याकुल धावा॥ कि० १०/१

राम बास थल बिटप बिलोकें। उर अनुराग रहत नहिं रोकें॥ अ० २१५/७

राम बास बन संपति भ्राजा। सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा॥ अ० २३४/५

राम बाहुबल सिंधु अपारू। चहत पारु नहिं कोउ कड़हारू॥ बा० २५९/८

राम बिदा मागत कर जोरी। कीन्ह प्रनामु बहोरि बहोरी॥ बा० ३३६/३

राम बिमुख अस हाल तुम्हारा। रहा न कोउ कुल रोवनिहारा॥ लं० १०३/१०

राम बिमुख लहि बिधि सम देही। कबि कोबिद न प्रसंसहि तेही॥ उ० ९५/३

राम बिमुख सठ चहसि संपदा । अस कहि हनेसि माझ उर गदा ॥ लं० ९३/८
राम बिमुख संपति प्रभुताई । जाइ रही पाई बिनु पाई ॥ सुं० २२/५
राम बियोग बिकल सब ठाढ़े । जहँ तहँ मनहुँ चित्र लिखि काढ़े ॥ अ० ८३/१
राम बिरहँ तजि तनु छनभंगू । भूप सोच कर कवन प्रसंगू ॥ अ० २१०/७
राम बिरह ब्याकुल भरतु सानुज सहित समाज ।
पहुनाई करि हरहु श्रम कहा मुदित मुनिराज ॥ अ० २१३/०
राम बिरह सागर महँ भरत मगन मन होत ।
बिप्र रूप धरि पवन सुत आइ गयउ जनु पोत ॥ उ० १/० (क)
राम बिरोध कुसल जसि होई । सो सब तोहि सुनाइहि सोई ॥ लं० २०/९
राम बिरोधी हृदय तें प्रगट कीन्ह बिधि मोहि ।
मो समान को पातकी बादि कहउँ कछु तोहि ॥ अ० १६२/०
राम बिलोकनि बोलनि चलनी । सुमिरि सुमिरि सोचत हँसि मिलनी ॥ उ० १८/४
राम बिलोकि बंधु कर जोरें । देह गेह सब सन तृनु तोरें ॥ अ० ६९/६
राम बिलोके लोग सब चित्र लिखे से देखि ।
चितई सीय कृपायतन जानी बिकल बिसेषि ॥ बा० २६०/०
राम ब्रह्म चिनमय अबिनासी । सर्ब रहित सब उर पुर बासी ॥ बा० ११९/६
राम ब्रह्म परमारथ रूपा । अबिगत अलख अनादि अनूपा ॥ अ० ९२/७
राम ब्रह्म ब्यापक जग जाना । परमानंद परेस पुराना ॥ बा० ११५/८
राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा । सरसइ ब्रह्म बिचार प्रचारा ॥ बा० १/८
राम भगत अब अमिअँ अघाहूँ । कीन्हेहु सुलभ सुधा बसुधाहूँ ॥ अ० २०८/६
राम भगत जग चारि प्रकारा । सुकृती चारिउ अनघ उदारा ॥ बा० २१/६
रामभगत तुम्ह मन क्रम बानी । चतुराई तुम्हारि मैं जानी ॥ बा० ४६/३
राम भगत परहित निरत पर दुख दुखी दयाल ।
भगत सिरोमनि भरत तें जनि डरपहु सुरपाल ॥ अ० २१९/०
राम भगत प्रिय लागहिं जेही । तेहि उर बसहु सहित बैदेही ॥ अ० १३०/४
राम भगत हित नर तनु धारी । सहि संकट किए साधु सुखारी ॥ बा० २३/१
राम भगति अबिरल उर तोरें । बसिहि सदा प्रसाद अब मोरें ॥ उ० ११२/१६
राम भगति चिंतामनि सुंदर । बसइ गरुड़ जाके उर अंतर ॥ उ० ११९/२
राम भगति एहिं तन उर जामी । ताते मोहि परम प्रिय स्वामी ॥ उ० ९५/४
राम भगति जल मम मन मीना । किमि बिलगाइ मुनीस प्रबीना ॥ उ० ११०/९
राम भगति जिन्ह कें उर नाहीं । कबहुँ न तात कहिअ तिन्ह पाहीं ॥ उ० ११२/१३
राम भगति निरुपम निरुपाधी । बसइ जासु उर सदा अबाधी ॥ उ० ११५/६
राम भगति पथ परम प्रबीना । ग्यानी गुन गृह बहु कालीना ॥ उ० ६१/३
राम भगति भूषित जियँ जानी । सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी ॥ बा० ८/७

राम भगति मनि उर बस जाकें। दुख लवलेस न सपनेहुँ ताकें॥ उ० ११९/९
राम भगतिमय भरतु निहारे। सुर स्वारथी हहरि हियँ हारे॥ अ० २९३/७
राम भगति रत नर अरु नारी। सकल परम गति के अधिकारी॥ उ० २०/४
राम भगति सुरसरितहि जाई। मिली सुकीरति सरजु सुहाई॥ बा० ३९/१
राम भजत सोइ मुकुति गोसाई। अनइच्छित आवइ बरिआई॥ उ० ११८/४
राम भजन बिनु मिटहिं कि कामा। थल बिहीन तरु कबहुँ कि जामा॥ उ० ८९/२
राम भरत गुन गनत सप्रीती। निसि दंपतिहि पलक सम बीती॥ अ० २८९/१
राम भालु कपि कटकु बटोरा। सेतु हेतु श्रमु कीन्ह न थोरा॥ बा० २४/३
राम मनुज कस रे सठ बंगा। धन्वी कामु नदी पुनि गंगा॥ लं० २५/५
राम मातु गुर पद सिरु नाई। प्रभु पद पीठ रजायसु पाई॥ अ० ३२३/१
राम मातु दुखु सुखु सम जानी। कहि गुन राम प्रबोधीं रानी॥ अ० ३०८/७
राम मातु सुठि सरलचित मो पर प्रेमु बिसेषि।
कहइ सुभाय सनेह बस मोरि दीनता देखि॥ अ० १८१/०
राम मात्र लघु नाम हमारा। परसु सहित बड़ नाम तोहारा॥ बा० २८१/६
राम रजाइ मेट मन माहीं। देखा सुना कतहुँ कोउ नाहीं॥ अ० २९७/७
राम रमापति कर धनु लेहू। खैंचहु मिटै मोर संदेहू॥ बा० २८३/७
राम रहस्य ललित बिधि नाना। गुप्त प्रगट इतिहास पुराना॥ उ० ११३/२
राम रहित रथ देखिहि जोई। सकुचिहि मोहि बिलोकत सोई॥ अ० १४४/८
राम राज अभिषेकु सुनि हियँ हरषे नर नारि।
लगे सुमंगल सजन सब बिधि अनुकूल बिचारि॥ अ० ८/०
राम राज कर सुख संपदा। बरनि न सकइ फनीस सारदा॥ उ० २१/६
राम राज कर नभगेस सुनु सचराचर जग माहिं।
काल कर्म सुभाव गुन कृत दुखु काहुहि नाहिं॥ उ० २१/०
राम राजे बैठे त्रैलोका। हरषित भए गए सब सोका॥ उ० १९/७
राम राज सुख बिनय बड़ाई। बिसद सुखद सोइ सरद सुहाई॥ बा० ४१/६
राम राम कह राम सनेही। पुनि कह राम लखन बैदेही॥ अ० १४७/८
राम राम कहि छाडेसि प्राना। सुनि मन हरषि चलेउ हनुमाना॥ लं० ५७/६
राम राम कहि जे जमुहाहीं। तिन्हहि न पाप पुंज समुहाहीं॥ अ० १९३/५
राम राम कहि तनु तजहिं पावहिं पद निर्बान।
करि उपाय रिपु मारे छन महुँ कृपानिधान॥ अर० २०/० (क)
राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा। हृदयँ हरष कपि सज्जन चीन्हा॥ सुं० ५/३
राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम।
तनु परिहरि रघुबर बिरहँ राउ गयउ सुरधाम॥ अ० १५५/०
राम राम रट बिकल भुआलू। जनु बिनु पंख बिहंग बेहालू॥ अ० ३६/१

राम राम सिय लखन पुकारी । परेउ धरनितल ब्याकुल भारी ॥ अ० १४१/७
राम राम हा राम पुकारी । हमहि देखि दीन्हेउ पट डारी ॥ कि० ४/५
राम रूप गुन सील सुभाऊ । सुमिरि सुमिरि उर सोचत राऊ ॥ अ० १४८/६
राम रूप गुन सुमिरत मगन भयउ छन एक ।
रावन मागेउ कोटि घट मद अरु महिष अनेक ॥ लं० ६३/०
रामरूप राकेसु निहारी । बढ़त बीचि पुलकावलि भारी ॥ बा० २६१/३
राम रूपु अरु सिय छबि देखें । नर नारिन्ह परिहरीं निमेषें ॥ बा० २४८/१
राम रूपु गुन सीलु सुभाऊ । प्रमुदित होइ देखि सुनि राऊ ॥ अ० ०/८
राम रूपु नख सिख सुभग बारहिं बार निहारि ।
पुलक गात लोचन सजल उमा समेत पुरारि ॥ बा० ३१५/०
राम रूपु भूपति भगति ब्याहु उछाहु अनंदु ।
जात सराहत मनहिं मन मुदित गाधिकुलचंदु ॥ बा० ३६०/०
राम रोष पावक अति घोरा । होइहि सकल सलभ कुल तोरा ॥ अर० २८/१७
राम लखन कै कीरति करनी । बारहिं बार भूपबर बरनी ॥ बा० २९४/६
राम लखन पथि कथा सुहाई । रही सकल मग कानन छाई ॥ अ० १२१/८
राम लखन सिय जान चढ़ि संभु चरन सिरु नाइ ।
सचिवँ चलायउ तुरत रथु इत उत खोज दुराइ ॥ अ० ८५/०
राम लखन सिय पद सिरु नाई । फिरेउ बनिक जिमि मूरि गवाँई ॥ अ० ९८/८
राम लखन सिय प्रीति सुहाई । बचन अगोचर किमि कहि जाई ॥ अ० १२२/७
राम लखन सिय बिनु पग पनहीं । करि मुनि बेष फिरहिं बन बनहीं ॥ अ० २१०/८
राम लखन सिय रूप निहारी । कहहिं सप्रेम ग्राम नर नारी ॥ अ० ८८/१
राम लखन सिय रूप निहारी । पाइ नयनफलु होहिं सुखारी ॥ अ० ११३/३
राम लखन सिय रूप निहारी । होहिं सनेह बिकल नर नारी ॥ अ० ११०/८
राम लखन सिय सुंदरताई । सब चितवहिं चित मन मति लाई ॥ अ० ११५/२
राम सकल नामन्ह ते अधिका । होउ नाथ अघ खग गन बधिका ॥ अर० ४१/८
राम सकल बनचर तब तोषे । कहिं मृदु बचन प्रेम परिपोषे ॥ अ० १३६/२
राम सकुल रन रावनु मारा । सीय सहित निज पुर पगु धारा ॥ बा० २४/५
रामसखहि मिलि भरत सप्रेमा । पूँछी कुसल सुमंगल खेमा ॥ अ० १९४/३
रामसखा कर दीन्हें लागू । चलत देह धरि जनु अनुरागू ॥ अ० २१५/४
राम सखाँ तब नाव मगाई । प्रिया चढ़ाइ चढ़े रघुराई ॥ अ० १५०/३
रामसखाँ तेहि समय देखावा । सैल सिरोमनि सहज सुहावा ॥ अ० २२४/५
राम सखा रिषि बरबस भेंटा । जनु महि लुठत सनेह समेटा ॥ अ० २४२/६
राम सखा सुनि संदनु त्यागा । चले उतरि उमगत अनुरागा ॥ अ० १९२/७
राम सच्चिदानंद दिनेसा । नहिं तहँ मोह निसा लवलेसा ॥ बा० ११५/५

राम सत्यब्रत धरम रत सब कर सीलु सनेहु।
संकट सहत सकोच बस कहिअ जो आयसु देहु ॥ अ० २९२/०
राम सत्य सबु जो कछु कहहू। तुम्ह पितु मातु बचन रत अहहू ॥ अ० ४२/४
राम सदा सेवक रुचि राखी। बेद पुरान साधु सुर साखी ॥ अ० २१८/७
राम सनेह मगन सब जाने। कहि प्रिय बचन सकल सनमाने ॥ अ० १३४/७
राम सनेह सरस मन जासू। साधु सभाँ बड़ आदर तासू ॥ अ० २७६/४
राम सपथ मैं कीन्हि न काऊ। सो करि कहउँ सखी सति भाऊ ॥ अ० २८२/२
राम सपथ सत कहउँ सुभाऊ। राममातु कछु कहेउ न काऊ ॥ अ० ३१/१
राम सपथ सुनि मुनि जनकु सकुचे सभा समेत।
सकल बिलोकत भरत मुखु बनइ न ऊतरु देत ॥ अ० २९६/०
राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीं। नाथ कहिअ हम केहि मग जाहीं ॥ अ० १०८/१
राम सप्रेम पुलकि उर लावा। परम रंक जनु पारसु पावा ॥ अ० ११०/१
राम सरिस को दीन हितकारी। कीन्हे मुकुत निसाचर झारी ॥ लं० ११३/९
राम सरिस बरु दुलहिनि सीता। समधी दसरथु जनकु पुनीता ॥ बा० ३०३/२
राम सरिस सुत कानन जोगू। काह कहिहि सुनि तुम्ह कहुँ लोगू ॥ अ० ४९/७
राम सरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धिपर।
अबिगत अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह ॥ अ० १२६/० सो०
रामु साधु तुम्ह साधु सयाने। राममातु भलि सब पहिचाने ॥ अ० ३२/७
राम सिंधु घन सज्जन धीरा। चंदन तरु हरि संत समीरा ॥ उ० ११९/१७
राम सीय जस सलिल सुधासम। उपमा बीचि बिलास मनोरम ॥ बा० ३६/३
राम सीय तन सगुन जनाए। फरकहिं मंगल अंग सुहाए ॥ अ० ६/४
राम सीय सिर सेंदुर देहीं। सोभा कहि न जाति बिधि केहीं ॥ बा० ३२४/८
रामु सीय सोभा अवधि सुकृत अवधि दोउ राज।
जहँ तहँ पुरजन कहहिं अस मिलि नर नारि समाज ॥ बा० ३०९/०
राम सीय सुंदर प्रतिछाहीं। जगमगात मनि खंभन माहीं ॥ बा० ३२४/३
राम सुकीरति भनिति भदेसा। असमंजस अस मोहि अँदेसा ॥ बा० १३/१०
राम सुकंठ बिभीषन दोऊ। राखे सरन जान सबु कोऊ ॥ बा० २४/१
राम सुनहु मुनि कह कर जोरी। कृपासिंधु बिनती कछु मोरी ॥ उ० ४७/३
राम सुना दुखु कान न काऊ। जीवनतरु जिमि जोगवइ राऊ ॥ अ० २००/१
राम सुप्रेमहि पोषत पानी। हरत सकल कलि कलुष गलानी ॥ बा० ४२/३
राम सुभाउ सुमिरि बैदेही। उपजी बिरह बिथा अति तेही ॥ लं० ९९/२
रामु सुभायँ चले गुरु पाहीं। सिय सनेहु बरनत मन माहीं ॥ बा० २६६/६
राम सुमंत्रहि आवत देखा। आदरु कीन्ह पिता सम लेखा ॥ अ० ३८/६
राम सुस्वामि कुसेवकु मोसो। निज दिसि देखि दयानिधि पोसो ॥ बा० २७/४

राम सेन निज पाछें घाली । चले सकोप महा बलसाली ॥ लं० ६९/६
राम सैल बन देखन जाहीं । जहँ सुख सकल सकल दुख नाहीं ॥ अ० २४८/५
राम सैल सोभा निरखि भरत हृदयँ अति पेमु ।
तापस तप फलु पाइ जिमि सुखी सिरानें नेमु ॥ अ० २३६/०
रामु सो अवध नृपति सुत सोई । की अज अगुन अलखगति कोई ॥ बा० १०७/८
राम सो परमातमा भवानी । तहँ भ्रम अति अबिहित तव बानी ॥ बा० ११८/५
राम संग सिय रहति सुखारी । पुर परिजन गृह सुरति बिसारी ॥ अ० १३९/१
रामहि केवल प्रेमु पिआरा । जानि लेउ जो जाननिहारा ॥ अ० १३६/१
रामहि चितइ रहेउ नरनाहू । चला बिलोचन बारि प्रबाहू ॥ अ० ४३/४
रामहि चितइ रहे थकि लोचन । रूप अपार मार मद मोचन ॥ बा० २६८/८
रामहि चितव भायँ जेहि सीया । सो सनेहु सुखु नहिं कथनीया ॥ बा० २४१/६
रामहि चितवत चित्र लिखे से । सकुचत बोलत बचन सिखे से ॥ अ० ३०२/३
रामहि चितव सुरेस सुजाना । गौतम श्रापु परम हित माना ॥ बा० ३१६/६
रामहि छाड़ि कुसल केहि आजू । जेहि जनेसु देह जुबराजू ॥ अ० १३/२
रामहि तिलक कालि जौं भयऊ । तुम्ह कहुँ बिपति बीजु बिधि बयऊ ॥ अ० १८/६
रामहि देउँ कालि जुबराजू । सजहि सुलोचनि मंगल साजू ॥ अ० २६/३
रामहि देखि एक अनुरागे । चितवत चले जाहिं सँग लागे ॥ अ० ११३/७
रामहि देखि बरात जुड़ानी । प्रीति कि रीति न जाति बखानी ॥ बा० ३०८/१
रामहि देखि रजायसु पाई । निज निज भवन चले सिर नाई ॥ बा० ३५४/३
रामहि निरखि ग्राम नर नारी । पाइ नयन फलु होहिं सुखारी ॥ बा० ३४२/८
रामहि प्रिय पावनि तुलसी सी । तुलसिदास हित हियँ हुलसी सी ॥ बा० ३०/१२
रामहि प्रेम समेत लखि सखिन्ह समीप बोलाइ ।
सीता मातु सनेह बस बचन कहइ बिलखाइ ॥ बा० २५५/०
रामहि बंधु सोच दिन राती । अंडन्हि कमठ हृदउ जेहि भाँती ॥ अ० ६/८
रामहि भजहिं तात सिव धाता । नर पावँर कै केतिक बाता ॥ उ० १०५/३
रामहि भरतु मनावन जाहीं । सगुन कहइ अस बिग्रहु नाहीं ॥ अ० १९१/६
रामहि मातु बचन सब भाए । जिमि सुरसरि गत सलिल सुहाए ॥ अ० ४२/८
रामहि रायँ कहेउ बन जाना । कीन्ह आपु प्रिय प्रेम प्रवाना ॥ अ० २९१/३
रामहि लखनु बिलोकत कैसें । ससिहि चकोर किसोरकु जैसें ॥ बा० २६२/७
रामहि सुमिरिअ गाइअ रामहि । संतत सुनिअ राम गुन ग्रामहि ॥ उ० १२९/६
रामहि सौंपि जानकी नाइ कमल पद माथ ।
सुत कहुँ राज समर्पि बन जाइ भजिअ रघुनाथ ॥ लं० ६/०
रामाकार भए तिन्ह के मन । मुक्त भए छूटे भव बंधन ॥ लं० ११३/७
रामानुज कहँ रामु कहँ अस कहि छाँड़ेसि प्रान ।

धन्य धन्य तव जननी कह अंगद हनुमान ॥ लं० ७६/०
रामानुज दीन्ही यह पाती । नाथ बचाइ जुड़ावहु छाती ॥ सुं० ५५/९
रामानुज लघु रेख खचाई । सोउ नहिं नांघेहु असि मनुसाई ॥ लं० ३५/२
रामायुध अंकित गृह सोभा बरनि न जाइ ।
नव तुलसिका बृंद तहँ देखि हरष कपिराइ ॥ सुं० ५/०
रामु अमित गुन सागर थाह कि पावइ कोइ ।
संतन्ह सन जस किछु सुनेउँ तुम्हहि सुनायउँ सोइ ॥ उ० ९२/० (क)
रामु कवन प्रभु पूछउँ तोही । कहिह बुझाइ कृपानिधि मोही ॥ बा० ४५/६
रामु काम सत कोटि सुभग तन । दुर्गा कोटि अमित अरि मर्दन ॥ उ० ९०/७
रामु कुभाँति सचिव सँग जाहीं । देखि लोग जहँ तहँ बिलखाहीं ॥ अ० ३८/८
रामु चले बन प्रान न जाहीं । केहि सुख लागि रहत तन माहीं ॥ अ० ८०/६
रामु जाइ बनु करि सुर काजू । अचल अवधपुर करिहहिं राजू ॥ अ० २८४/६
रामु तुरत मुनि बेषु बनाई । चले जनक जननिहि सिरु नाई ॥ अ० ७८/८
रामु पयादेहि पायँ सिधाए । हम कहँ रथ गज बाजि बनाए ॥ अ० २०२/६
रामु प्रानप्रिय जीवन जी के । स्वारथ रहित सखा सबही के ॥ अ० ७३/६
रामु मनुज बोलत असि बानी । गिरहिं न तव रसना अभिमानी ॥ लं० ३२/८
रामु लखनु उर कर बर चीठी । रहि गए कहत न खाटी मीठी ॥ बा० २८९/५
रामु लखनु दसरथ के ढोटा । दीन्हि असीस देखि भल जोटा ॥ बा० २६८/७
रामु लखनु दोउ बंधुबर रूप सील बल धाम ।
मख राखेउ सबु साखि जगु जिते असुर संग्राम ॥ बा० २१६/०
रामु लखन सीता सहित राजत परन निकेत ।
जिमि बासव बस अमरपुर सची जयंत समेत ॥ अ० १४१/०
रामु लखनु सिय बनहि सिधाए । गइउँ न संग न प्रान पठाए ॥ अ० १६५/५
रामु लखनु सिय सुनि मम नाऊँ । उठि जनि अनत जाहिं तजि ठाऊँ ॥ अ० २३२/८
रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि ।
मैं रघुबीर सरन अब जाउँ देहु जनि खोरि ॥ सुं० ४१/०
रामु सनेह सकोच बस कह ससोच सुरराजु ।
रचहु प्रपंचहि पंच मिलि नाहिं त भयउ अकाजु ॥ अ० २९४/०
रामु सप्रेम संग सब भाई । आयसु पाइ फिरे पहुँचाई ॥ बा० ३५९/१०
रामु सँकोची पेम बस भरत सप्रेम पयोधि ।
बनी बात बेगरन चहति करिअ जतनु छलु सोधि ॥ अ० २१७/०
रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं
योगीन्द्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारम् ।
मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृन्दैकदेवं

वन्दे कन्दावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वीशरूपम् ॥ लं० श्लोक १
रायँ राजपदु तुम्ह कहुँ दीन्हा । पिता बचनु फुर चाहिअ कीन्हा ॥ अ० १७३/३
रायँ राम कहुँ काननु दीन्हा । बिछुरत गमनु अमरपुर कीन्हा ॥ अ० १७८/४
रायँ राम राखन हित लागी । बहुत उपाय किए छलु त्यागी ॥ अ० ७७/१
रायँ सुभायँ मुकुरु कर लीन्हा । बदनु बिलोकि मुकुटु सम कीन्हा ॥ अ० १/६
रावन आवत सुनेउ सकोहा । देवन्ह तके मेरु गिरि खोहा ॥ बा० १८१/६
रावनु एकु देखि सुर हरषे । फिरे सुमन बहु प्रभु पर बरषे ॥ लं० ९६/२
रावन कर दीजहु यह पाती । लछिमन बचन बाचु कुलघाती ॥ सुं० ५१/८
रावन क्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचंड ।
जरत बिभीषनु राखेउ दीन्हेउ राजु अखंड ॥ सुं० ४९/० (क)
रावन जबहिं बिभीषन त्यागा । भयउ बिभव बिनु तबहिं अभागा ॥ सुं० ४१/३
रावन दूत हमहि सुनि काना । कपिन्ह बाँधि दीन्हे दुख नाना ॥ सुं० ५३/३
रावन नगर अल्प कपि दहई । सुनि अस बचन सत्य को कहई ॥ लं० २२/८
रावन नाम जगत जस जाना । लोकप जाकें बंदीखाना ॥ लं० ८९/४
रावन बध मंदोदरि सोका । राज बिभीषन देव असोका ॥ उ० ६७/२
रावन बान छुआ नहिं चापा । हारे सकल भूप करि दापा ॥ बा० २५५/३
रावन भवन चढ़े द्वौ धाई । करहिं कोसलाधीस दोहाई ॥ लं० ४३/२
रावन मरन मनुज कर जाचा । प्रभु बिधि बचनु कीन्ह चह साचा ॥ बा० ४८/१
रावन सिर सरोज बनचारी । चलि रघुबीर सिलीमुख धारी ॥ लं० ९१/७
रावन सुत निज मग अनुमाना । संकठ भयउ हरिहि मम प्राना ॥ लं० ५३/६
रावन हृदयँ बिचारा भा निसिचर संघार ।
मैं अकेल कपि भालु बहु माया करौं अपार ॥ लं० ८८/०
रावनारि जसु पावन गावहिं सुनहिं जे लोग ।
राम भगति दृढ़ पावहिं बिनु बिराग जप जोग ॥ अर० ४६/०(क)
रावनारि सुखरूप भूपबर । जय दसरथ कुल कुमुद सुधाकर ॥ उ० ५०/६
रावनु जातुधान कुल टीका । भुज बल अतुल जासु जग लीका ॥ लं० ३७/६
रावनु बानु महाभट भारे । देखि सरासन गवँहिं सिधारे ॥ बा० २४९/२
रावनु रथी बिरथ रघुबीरा । देखि बिभीषन भयउ अधीरा ॥ लं० ७९/१
रितु बसंत बह त्रिबिध बयारी । सब कहँ सुलभ पदारथ चारी ॥ अ० २१४/७
रिद्धि सिद्धि प्रेरइ बहु भाई । बुद्धिहि लोभ दिखावहिं आई ॥ उ० ११७/७
रिधि सिधि सिर धरि मुनिबर बानी । बड़भागिनि आपुहि अनुमानी ॥ अ० २१३/१
रिधि सिधि संपति नदीं सुहाई । उमगि अवध अंबुधि कहुँ आई ॥ अ० ०/३
रिपु उतकरष कहत सठ दोऊ । दूरि न करहु इहाँ हइ कोऊ ॥ सुं० ३९/३
रिपु कर रूप सकल तैं गावा । अति बिसाल भय मोहि सुनावा ॥ लं० १५/४

रिपु के दूत कपिन्ह तब जाने । सकल बाँधि कपीस पहिं आने ॥ सुं० ५१/२
रिपु के समाचार जब पाए । राम सचिव सब निकट बोलाए ॥ लं० ३८/१
रिपु जिति सब नृप नगर बसाई । निज पुर गवने जय जसु पाई ॥ बा० १७४/८
रिपु तेजसी अकेल अपि लघु करि गनिअ न ताहु ।
अजहुँ देत दुख रबि ससिहि सिर अवसेषित राहु ॥ बा० १७०/०
रिपु परम कोपे जानि । प्रभु धनुष सर संधानि ॥ अर० १९/७ छं०
रिपु बल धरषि हरषि कपि बालितनय बल पुंज ।
पुलक सरीर नयन जल गहे राम पद कंज ॥ लं० ३५/० (क)
रिपु बलवंत देखि नहिं डरहीं । एक बार कालहु सन लरहीं ॥ अर० १८/१०
रिपु मद मथि प्रभु सुजसु सुनायो । यह कहि चल्यो बालि नृप जायो ॥ लं० ३४/१०
रिपु रन जीति सुजस सुर गावत । सीता सहित अनुज प्रभु आवत ॥ उ० १/५
रिपु रुज पावक पाप प्रभु अहि गनिअ न छोट करि ।
अस कहि बिबिध बिलाप करि लागी रोदन करन ॥ अर०२१/०(क) सो०
रिपु सम मोहि मारेसि अति भारी । हरि लीन्हेसि सर्बसु अरु नारी ॥ कि० ५/११
रिपुसूदन पद कमल नमामी । सूर सुसील भरत अनुगामी ॥ बा० १६/९
रिषय संग रघुबंस मनि करि भोजनु बिश्रामु ।
बैठे प्रभु भ्राता सहित दिवसु रहा भरि जामु ॥ बा० २१७/०
रिषि अगस्ति कीं साप भवानी । राछस भयउ रहा मुनि ग्यानी ॥ सुं० ५६/११
रिषि आयसु असीस सिर राखी । करि दंडवत बिनय बहु भाषी ॥ अ० २१५/२
रिषिनायकु जहँ आयसु देहीं । राखेहु तीरथ जलु थल तेहीं ॥ अ० ३०७/७
रिषि निकाय मुनिबर गति देखी । सुखी भए निज हृदयँ बिसेषी ॥ अर० ८/३
रिषिन्ह गौरि देखी तहँ कैसी । मूरतिमंत तपस्या जैसी ॥ बा० ७७/१
रिषिपतिनी मन सुख अधिकाई । आसिष देइ निकट बैठाई ॥ अर० ४/२
रिषि पुलस्ति जसु बिमल मयंका । तेहि ससि महुँ जनि होहु कलंका ॥ सुं० २२/२
रिषि पूछी हरिभगति सुहाई । कहीं संभु अधिकारी पाई ॥ बा० ४७/४
रिषि मम महत सीलता देखी । राम चरन बिस्वास बिसेषी ॥ उ० ११२/४
रिषि रुख लखि कह तेरहुतिराजू । इहाँ उचित नहिं असन अनाजू ॥ अ० २७७/७
रिषि हित राम सुकेतुसुता की । सहित सेन सुत कीन्हि बिबाकी ॥ बा० २३/४
रिस उर मारि रंक जिमि राजा । बिपिन बसइ तापस कें साजा ॥ बा० १५७/५
रिस परिहरु अब मंगल साजू । कछु दिन गएँ भरत जुबराजू ॥ अ० ३१/३
रीझत राम सनेह निसोतें । को जग मंद मलिनमति मोतें ॥ बा० २७/११
रीझिहि राजकुअँरि छबि देखी । इन्हहि बरिहि हरि जानि बिसेषी ॥ बा० १३३/४
रीझेउँ देखि तोरि चतुराई । मागेहु भगति मोहि अति भाई ॥ उ० ८४/५
रुचिर चौतनीं सुभग सिर मेचक कुंचित केस ।

नख सिख सुंदर बंधु दोउ सोभा सकल सुदेस ।। बा० २१९/०
रुचिर बिमान चलेउ अति आतुर । कीन्ही सुमन बृष्टि हरषे सुर ।। लं० ११८/६
रुचिर रूप धरि प्रभु पहिं जाई । बोली बचन बहुत मुसुकाई ।। अर० १६/७
रुदन करत देखीं सब नारी । गयउ बिभीषनु मन दुख भारी ।। लं० १०४/४
रुद्रहि देखि मदन भय माना । दुराधरष दुर्गम भगवाना ।। बा० ८५/४
रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्तया तेषां शम्भुः प्रसीदति ।। उ० १०७/९ श्लोक
रुधिर गाड़ भरि भरि जम्यो ऊपर धूरि उड़ाइ ।
जनु अँगार रासिन्ह पर मृतक धूम रह्यो छाइ ।। लं० ५३/०
रुधिर देखि बिषाद उर भारी । तिन्हहि धरन कहुँ भुजा पसारी ।। लं० ९७/७
रूख कलपतरु सागर खारा । तेहिं पठए बन राजकुमारा ।। अ० ११८/४
रूख बदन करि बचन मृदु बोले श्रीभगवान ।
तुम्हरे सुमिरन तें मिटहिं मोह मार मद मान ।। बा० १२८/०
रूप धरें जनु चारिउ बेदा । समदरसी मुनि बिगत बिभेदा ।। उ० ३१/५
रूप बिसेष नाम बिनु जानें । करतल गत न परहिं पहिचानें ।। बा० २०/५
रूप रासि नृप अजिर बिहारी । नाचहिं निज प्रतिबिंब निहारी ।। उ० ७६/८
रूप रासि बिधि नारि सँवारी । रति सत कोटि तासु बलिहारी ।। अर० २१/९
रूप सकहिं नहिं कहि श्रुति सेषा । सो जानइ सपनेहुँ जेहिं देखा ।। बा० १९८/१२
रूप सिंधु सब बंधु लखि हरषि उठा रनिवासु ।
करहिं निछावरि आरती महा मुदित मन सासु ।। बा० ३३५/०
रे कपि अधम मरन अब चहसी । छोटे बदन बात बड़ि कहसी ।। लं० ३०/७
रे कपिपोत बोलु संभारी । मूढ़ न जानेहि मोहि सुरारी ।। लं० २०/१
रे कुभाग्य सठ मंद कुबुद्धे । तैं सुर नर मुनि नाग बिरुद्धे ।। लं० ९३/५
रेख कुलिस ध्वज अंकुस सोहे । नूपुर धुनि सुनि मुनि मन मोहे ।। बा० १९८/३
रे खल का मारसि कपि भालू । मोहि बिलोकु तोर मैं कालू ।। लं० ८२/१
रेख खँचाइ कहउँ बलु भाषी । भामिनि भइहु दूध कइ माखी ।। अ० १८/७
रेखा त्रय सुंदर उदर नाभी रुचिर गँभीर ।
उर आयत भ्राजत बिबिधि बाल बिभूषन चीर ।। उ० ७६/०
रेखें रुचिर कंबु कल गीवाँ । जनु त्रिभुवन सुषमा की सीवाँ ।। बा० २४२/८
रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार ।
धनुही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसार ।। बा० २७१/०
रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होही । निर्भय चलेसि न जानेहि मोही ।। अर० २८/११
रे त्रिय चोर कुमारग गामी । खल मल रासि मंदमति कामी ।। लं० ३२/५
रोम राजि अष्टादस भारा । अस्थि सैल सरिता नस जारा ।। लं० १४/७

रोवहिं नारि हृदय हति पानी। तासु तेज .बल बिपुल बखानी॥ लं० ७१/५
रंगभूमि आए दोउ भाई। असि सुधि सब पुरबासिन्ह पाई॥ बा० २३९/५
रंगभूमि जब सिय पगु धारी। देखि रूप मोहे नर नारी॥ बा० २४७/४
रंतिदेव बलि भूप सुजाना। धरमु धरेउ सहि संकट नाना॥ अ० ९४/४
रंभादिक सुरनारि नबीना। सकल असमसर कला प्रबीना॥ बा० १२५/४
रुडं प्रचंड मुंड बिनु धावहिं। धरु धरु मारु मारु धुनि गावहिं॥ लं० ६७/८

ल

लखइ न रानि निकट दुखु कैसें। चरइ हरित तिन बलिपसु जैसें॥ अ० २१/२
लखन उतर आहुति सरिस भृगबर कोप कृसानु।
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु॥ बा० २७६/०
लखन कहा जस भाजनु सोई। नाथ कृपा तव जापर होई॥ बा० २३९/२
लखन कहा हँसि हमरें जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना॥ बा० २७१/१
लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा। तुम्हहि अछत को बरनै पारा॥ बा० २७३/५
लखन कहेउ हँसि सुनहु मुनि क्रोधु पाप कर मूल।
जेहि बस जन अनुचित करहिं चरहिं बिस्व प्रतिकूल॥ बा० २७७/०
लखन कहे कछु बचन कठोरा। बरजि राम पुनि मोहि निहोरा॥ अ० १५१/७
लखन जानकी सहित तब गवनु कीन्ह रघुनाथ।
फेरे सब प्रिय बचन कहि लिए लाइ मन साथ॥ अ० ११८/०
लखन जानकी सहित प्रभु राजत रुचिर निकेत।
सोह मदनु मुनि बेष जनु रति रितुराज समेत॥ अ० १३३/०
लखन तुम्हार सपथ पितु आना। सुचि सुबंधु नहिं भरत समाना॥ अ० २३१/४
लखन दीख पय उतर करारा। चहुँदिसि फिरेउ धनुष जिमि नारा॥ अ० १३२/२
लखन बान धनु धरे बनाई। आपु चढ़े प्रभु आयसु पाई॥ अ० १५०/४
लखन राम सिय कहुँ बनु दीन्हा। पठइ अमरपुर पति हित कीन्हा॥ अ० १७९/३
लखन राम सिय कानन बसहीं। भरतु भवन बसि तप तनु कसहीं॥ अ० ३२५/२
लखन राम सिय पंथ कहानी। पूँछत सखहि कहत मृदु बानी॥ अ० २१५/६
लखन राम सिय सुंदरताई। देखि करहिं निज भाग्य बड़ाई॥ अ० १०९/२
लखन राम सीतहि अति प्रीती। निसि सब तुम्हहि सराहत बीती॥ अ० २०७/४
लखन राम सियँ सुनि सुर बानी। अति सुखु लहेउ न जाइ बखानी॥ अ० २३२/३
लखन लखेउ प्रभु हृदयँ खभारू। कहत समय सम नीति बिचारू॥ अ० २२६/६
लखन लखेउ भा अनरथ आजू। एहिं सनेह बस करब अकाजू॥ अ० ७२/७
लखन लखेउ रघुबंसमनि ताकेउ हर कोदंडु।
पुलकि गात बोले बचन चरन चापि ब्रह्मांडु॥ बा० २५९/०
लखन सकोप बचन जे बोले। डगमगानि महि दिग्गज डोले॥ बा० २५३/१

लखन सचिवँ सियँ किए प्रनामा। सबहि सहित सुखु पायउ रामा ॥ अ० ८६/३
लखन सपन यह नीक न होई। कठिन कुचाह सुनाइहि कोई ॥ अ० २२५/७
लखनहि भेंटि प्रनामु करि सिर धरि सिय पद धूरि।
चले सप्रेम असीस सुनि सकल सुमंगल मूरि ॥ अ० ३१८/०
लखन हृदयँ लालसा बिसेषी। जाइ जनकपुर आइअ देखी ॥ बा० २१७/१
लखनु रामु सिय आनेहु फेरी। संसय सकल सँकोच निबेरी ॥ अ० ९३/८
लखनु रामु सिय जाहुँ बन भल परिनाम न पोचु।
गहबरि हियँ कह कौसिला मोहि भरत कर सोचु ॥ अ० २८२/०
लखनु सत्रुसूदनु एकरूपा। नख सिख ते सब अंग अनूपा ॥ बा० ३१०/७
लखब सनेहु सुभायँ सुहाएँ। बैरु प्रीति नहिं दुरइँ दुराएँ ॥ अ० १९२/१
लखहिं न भूप कपट चतुराई। कोटि कुटिल मनि गुरू पढ़ाई ॥ अ० २६/६
लखा न मरमु राम बिनु काहूँ। माया सब सिय माया माहूँ ॥ अ० २५१/३
लखि अपनें सिर सबु छरु भारू। कहि न सकहिं कछु करहिं बिचारू ॥ अ० २५९/२
लखि रिस भरेउ लखन लघु भाई। बरत अनल घृत आहुति पाई ॥ अ० १६२/३
लखि रुख रानि जनायउ राऊ। हृदयँ सराहत सीलु सुभाऊ ॥ अ० २८६/८
लखि लघु बंधु बुद्धि सकुचाई। करत बदन पर भरत बड़ाई ॥ अ० २५८/७
लखि बिधि बाम कालु कठिनाई। धीरजु धरहु मातु बलि जाई ॥ अ० १७५/५
लखि सब बिधि गुर स्वामि सनेहू। मिटेउ छोभु नहिं मन संदेहू ॥ अ० २६७/१
लखि सनेह कातरि महतारी। बचनु न आव बिकल भइ भारी ॥ अ० ६८/१
लखि सनेह सुनि बचन बिनीता। जनकप्रिया गह पाय पुनीता ॥ अ० २८४/१
लखि सिय लखनु बिकल होइ जाहीं। जिमि पुरुषहि अनुसर परिछाहीं ॥ अ० १४०/६
लखि सिय सहित सरल दोउ भाई। कुटिल रानि पछितानि अघाई ॥ अ० २५१/५
लखि सुबेष जग बंचक जेऊ। बेष प्रताप पूजिअहिं तेऊ ॥ बा० ६/५
लखि सुभाउ सुनि सरल सुबानी। सब भइ मगन करुन रस रानी ॥ अ० २८३/५
लखि हियँ हँसि कह कृपानिधानू। सरसि स्वान मघवान जुबानू ॥ अ० ३०१/८
लखी नरेस बात फुरि साँची। तिय मिस मीचु सीस पर नाची ॥ अ० ३३/५
लखी महीप कराल कठोरा। सत्य कि जीवनु लेइहि मोरा ॥ अ० ३०/३
लखी राम रुख रहत न जाने। धरम धुरंधर धीर सयाने ॥ अ० ७७/२
लगन बाचि अज सबहि सुनाई। हरषे मुनि सब सुर समुदाई ॥ बा० ९०/७
लगि लगि कान कहहिं धुनि माथा। अब सुर काज भरत के हाथा ॥ अ० २६४/६
लगीं देन सिख सीलु सराही। बचन बानसम लागहिं ताही ॥ अ० ४८/४
लगे कहन उपदेस अनेका। सहित धरम जय बिरति बिबेका ॥ अ० २७७/३
लगे कहन कछु कथा पुनीता। सुनि सुखु लहहिं लखनु अरु सीता ॥ अ० १४०/८
लगे कहन हरिकथा रसाला। दच्छ प्रजेस भए तेहि काला ॥ बा० ५९/५

लगे जनक मुनिजन पद बंदन। रिषिन्ह प्रनामु कीन्ह रघुनंदन ॥ अ० २७४/७
लगे बहुरि बरनै बृषकेतू। सो अवतार भयउ जेहि हेतू ॥ बा० १४०/८
लगे सुभग तरु परसत धरनी। मनिमय आलबाल कल करनी ॥ बा० ३४३/८
लगे सँवारन सकल सुर बाहन बिबिध बिमान।
होहिं सगुन मंगल सुभद करहिं अपछरा गान ॥ बा० ९१/०
लगे होन पुर मंगलगाना। सजे सबहिं हाटक घट नाना ॥ बा० ९८/३
लगे होन मंगल सगुन सुनि गुनि कहत निषादु।
मिटिहि सोचु होइहि हरषु पुनि परिनाम बिषादु ॥ अ० २३४/०
लघु जीवन संबतु पंच दसा। कलपांत न नास गुमानु असा ॥ उ० १०१/४ छं०
लघु बायस बपु धरि हरि संगा। देखउँ बालचरित बहु रंगा ॥ उ० ७४/७
लघु लाग बिधि की निपुनता अवलोकि पुर सोभा सही।
बन बाग कूप तड़ाग सरिता सुभग सब सक को कही ॥
मंगल बिपुल तोरन पताका केतु गृह गृह सोहहीं।
बनिता पुरुष सुंदर चतुर छबि देखि मुनि मन मोहहीं ॥ बा० ९३/१ छं०
लघु सुत नाम प्रियब्रत ताही। बेद पुरान प्रसंसहिं जाही ॥ बा० १४१/४
लच्छन तासु बिलोकि भुलाने। हृदयँ हरष नहिं प्रकट बखाने ॥ बा० १३०/२
लच्छन धाम राम प्रिय सकल जगत आधार।
गुरु बसिष्ट तेहि राखा लछिमन नाम उदार ॥ बा० १९७/०
लच्छन सब बिचारि उर राखे। कछुक बनाइ भूप सन भाषे ॥ बा० १३०/५
लछिमन अति लाघवँ सो नाम कान बिनु कीन्हि।
ताके कर रावन कहँ मनौ चुनौती दीन्हि ॥ अर० १७/०
लछिमन अरु सीता सहित प्रभुहि बिलोकति मातु।
परमानंद मगन मन पुनि पुनि पुलकित गातु ॥ उ० ७/०
लछिमन कर प्रथमहिं लै नामा। पाछें सुमिरेसि मन महुँ रामा ॥ अर० २६/१५
लछिमन कहा तोहि सो बरई। जो तृन तोरि लाज परिहरई ॥ अर० १६/१८
लछिमन क्रोधवंत प्रभु जाना। धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना ॥ कि० १७/८
लछिमन गए बनहिं जब लेन मूल फल कंद।
जनकसुता सन बोले बिहसि कृपा सुख बृंद ॥ अर० २३/०
लछिमन तुरत बोलाए पुरजन बिप्र समाज।
राजु दीन्ह सुग्रीव कहँ अंगद कहँ जुबराज ॥ कि० ११/०
लछिमन तेहि बहु बिधि समुझायो। बहुरि बिभीषन प्रभु पहिं आयो ॥ लं० १०४/६
लछिमन दीख उमाकृत बेषा। चकित भए भ्रम हृदयँ बिसेषा ॥ बा० ५२/१
लछिमन देखत काम अनीका। रहहिं धीर तिन्ह कै जग लीका ॥ अर० ३७/११
लछिमन देखु बिपिन कइ सोभा। देखत केहि कर मन नहिं छोभा ॥ अर० ३६/३

लछिमन देखु मोर गन नाचत बारिद पेखि ।
गृही बिरति रत हरष जस बिष्नु भगत कहुँ देखि ॥ कि० १३/०
लछिमनु नामु राम लघु भ्राता । सुनु सखि तासु सुमित्रा माता ॥ बा० २२०/८
लछिमन बान सरासन आनू । सोषौं बारिधि बिसिख कृसानू ॥ सुं० ५७/१
लछिमन मन अस मंत्र दृढ़ावा । एहि पापिहि मैं बहुत खेलावा ॥ लं० ७५/१४
लछिमन मेघनाद द्वौ जोधा । भिरहिं परसपर करि अति क्रोधा ॥ लं० ५३/२
लछिमन सब मातन्ह मिलि हरषे आसिष पाइ ।
कैकइ कहँ पुनि पुनि मिले मन कर छोभु न जाइ ॥ उ० ६/० (ख)
लछिमन समुझाए बहु भाँती । पूछत चले लता तरु पाँती ॥ अर० २९/८
लछिमन संग जाहु सब भाई । करहु बिधंस जग्य कर जाई ॥ लं० ७४/७
लछिमनहूँ यह मरमु न जाना । जो कछु चरित रचा भगवाना ॥ अर० २३/५
लछिमन होहु धरम के नेगी । पावक प्रगट करहु तुम्ह बेगी ॥ लं० १०८/२
लता ओट तब सखिन्ह लखाए । स्यामल गौर किसोर सुहाए ॥ बा० २३१/३
लताभवन तें प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ ।
निकसे जनु जुग बिमल बिधु जलद पटल बिलगाइ ॥ बा० २३२/०
लता ललित बहु जाति सुहाईं । फूलहिं सदा बसंत कि नाईं ॥ उ० २७/२
लता बिटप मागें मधु चवहीं । मनभावतो धेनु पय स्रवहीं ॥ उ० २२/५
लरत अकास जुगल सम जोधा । एकहि एकु हनत करि क्रोधा ॥ लं० ९४/६
लरिकाइहि तें रघुबर बानी । पालत नीति प्रीति पहिचानी ॥ अ० २७३/५
लरिकाईं जहँ जहँ फिरहिं तहँ तहँ संग उड़ाउँ ।
जूठनि परइ अजिर महँ सो उठाइ करि खाउँ ॥ उ० ७५/० (क)
लरिका श्रमित उनीद बस सयन करावहु जाइ ।
अस कहि गे बिश्रामगृहँ राम चरन चितु लाइ ॥ बा० ३५५/०
लरहिं सुभट निज निज जय हेतू । बरनि न जाइ समर खगकेतू ॥ लं० ७१/११
ललित अंग कुलिसादिक चारी । नूपुर चारु मधुर रवकारी ॥ उ० ७५/७
ललित कपोल मनोहर नासा । सकल सुखद ससि कर सम हासा ॥ उ० ७६/४
लव निमेष परमानु जुग बरष कलप सर चंड ।
भजसि न मन तेहि राम को कालु जासु कोदंड ॥ लं० ०/१
लव निमेष महुँ भुवन निकाया । रचइ जासु अनुसासन माया ॥ बा० २२४/४
लसत मंजु मुनि मंडली मध्य सीय रघुचंदु ।
ग्यान सभाँ जनु तनु धरें भगति सच्चिदानंदु ॥ अ० २३९/०
लही न कतहुँ हारि हियँ मानी । इन्ह सम एइ उपमा उर आनी ॥ बा० ३१९/३
लागइ अति पहार कर पानी । बिपिन बिपति नहिं जाइ बखानी ॥ अ० ६२/२
लागत बान जलद जिमि गाजहिं । बहुतक देखि कठिन सर भाजहिं ॥ लं० ६७/७

लागत बान बीर चिक्करहीं । घूर्मि घूर्मि जहँ तहँ महि परहीं ॥ लं० ८६/९
लागत सर धावा रिस भरा । कुधर डगमगत डोलति धरा ॥ लं० ६९/८
लागति अवध भयावनि भारी । मानहुँ कालराति अँधिआरी ॥ अ० ८२/५
लाग न उर उपदेसु जदपि कहेउ सिवँ बार बहु ।
बोले बिहसि महेसु हरिमाया बलु जानि जियँ ॥ बा० ५१/० सो०
लागहिं कुमुख बचन सुभ कैसे । मगहँ गयादिक तीरथ जैसे ॥ अ० ४२/७
लागहिं सैल बज्र तन तासू । खंड खंड होइ फूटहिं आसू ॥ लं० ८१/३
लागि सक्ति मुरुछा कछु भई । प्रभु कृत खेल सुरन्ह बिकलई ॥ लं० ९३/३
लागि सासु पग कह कर जोरी । छमबि देबि बड़ि अबिनय मोरी ॥ अ० ६३/५
लागि तृषा अतिसय अकुलाने । मिलइ न जल घन गहन भुलाने ॥ कि० २३/३
लागि लागि पग सबनि सिय भेंटति अति अनुराग ।
हृदयँ असीसहिं पेम बस रहिअहु भरी सोहाग ॥ अ० २४६/०
लागीं सुनैं श्रवन मन लाई । आदिहु तें सब कथा सुनाई ॥ सुं० १२/६
लागे करन ब्रह्म उपदेसा । अज अद्वैत अगुन हृदयेसा ॥ उ० ११०/३
लागे पखारन पाय पंकज प्रेम तन पुलकावली ।
नभ नगर गान निसान जय धुनि उमगि जनु चहुँ दिसि चली ॥
जे पद सरोज मनोज अरि उर सर सदैव बिराजहीं ।
जे सकृत सुमिरत बिमलता मन सकल कलि मल भाजहीं ॥ बा० ३२३/१ छं०
लागे बिटप मनोहर नाना । बरन बरन बर बेलि बिताना ॥ बा० २२६/४
लागे सराहन भाग सब अनुराग बचन सुनावहीं ।
बोलनि मिलनि सिय राम चरन सनेहु लखि सुखु पावहीं ॥
नर नारि निदरहिं नेहू निज सुनि कोल भिल्लनि की गिरा ।
तुलसी कृपा रघुबंसमनि की लोह लै लौका तिरा ॥ अ० २५०/१ छं०
लाजवंत तव सहज सुभाऊ । निज मुख निज गुन कहसि न काऊ ॥ लं० २८/६
लाभ अवधि सुख अवधि न दूजी । तुम्हरें दरस आस सब पूजी ॥ अ० १०६/७
लाभु कि किछु हरि भगति समाना । जेहि गावहिं श्रुति संत पुराना ॥ उ० १११/८
लालन जोगु लखन लघु लोने । भे न भाइ अस अहहिं न होने ॥ अ० १९९/१
लिए उठाइ बिटप अरु भूधर । कटकटाइ डारहिं ता ऊपर ॥ लं० ६४/४
लिए गोद करि मोद समेता । को कहि सकइ भयउ सुखु जेता ॥ बा० ३५३/३
लिए फल मूल भेंट भरि भारा । मिलन चलेउ हियँ हरषु अपारा ॥ अ० ८७/२
लिए सनेह बिकल उर लाई । गै मनि मनहुँ फनिक फिरि पाई ॥ अ० ४३/३
लिखत सुधाकर गा लिखि राहू । बिधि गति बाम सदा सब काहू ॥ अ० ५४/२
लियो हृदयँ लाइ कृपा निधान सुजान रायँ रमापती ।
बैठारि परम समीप बूझी कुसल सो कर बीनती ॥

अब कुसल पद पंकज बिलोकि बिरंचि संकर सेब्य जे ।
सुख धाम पूरनकाम राम नमामि राम नमामि ते ।। लं० १२०/१ छं०
लीन्ह एक तेहिं सैल उपाटी । रघुकुल तिलक भुजा सोइ काटी ।। लं० ६९/९
लीन्ह कपिहि उर लाइ पुलकित तनु लोचन सजल ।
प्रीति न हृदयँ समाइ सुमिरि राम रघुकुल तिलक ।। लं० ५९/० सो०
लीन्ह नीच मारीचहि संगा । भयउ तुरत सोइ कपट कुरंगा ।। बा० ४८/४
लीन्ह बिधवपन अपजसु आपू । दीन्हेउ प्रजहि सोकु संतापू ।। अ० १७९/४
लीन्ह श्राप मैं सीस चढ़ाई । नहिं कछु भय न दीनता आई ।। उ० १११/१६
लीन्हि रायँ उर लाइ जानकी। मिटी महामरजाद ग्यान की ।। बा० ३३७/६
लीन्हि लाइ उर जनक जानकी । पाहुनि पावन पेम प्रान की।। अ० २८५/४
लीला कीन्हि जो तेहिं अवतारा। सो सब कहिहउँ मति अनुसारा ।। बा० १४०/६
लीला सगुन जो कहहिं बखानी। सोइ स्वच्छता करइ मल हानी ।। बा० ३५/५
लेइ उसासु सोच एहि भाँती । सुरपुर तें जनु खँसेउ जजाती ।। अ० १४७/६
लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़ें । काहुँ न लखा देख सबु ठाढ़ें ।। बा० २६०/७
लेत सोच भरि छिनु छिनु छाती। जनु जरि पंख परेउ संपाती ।। अ० १४७/७
लेन चले सादर एहि भाँती । गए जहाँ जनवास बराती ।। बा० ३१२/५
लेहिं परस्पर अति प्रिय पाती । हृदयँ लगाइ जुड़ावहिं छाती ।। बा० २९४/५
लेहु छड़ाइ सीय कह कोऊ । धरि बाँधहु नृप बालक दोऊ ।। बा० २६५/३
लेहु नयन भरि रूप निहारी । प्रिय पाहुने भूप सुत चारी ।। बा० ३३४/३
लै अगवान बरातहि आए । दिए सबहि जनवास सुहाए ।। बा० ९५/१
लै उछंग कबहुँक हलरावै । कबहुँ पालनें घालि झुलावै ।। बा० १९९/८
लै जानकिहि जाहु गिरि कंदर। आवा निसिचर कटकु भयंकर ।। अर० १७/११
लै दच्छिन दिसि गयउ गोसाईं । बिलपति अति कुररी की नाईं ।। अर० ३०/३
लै पुष्पक प्रभु आगें राखा । हँसि करि कृपासिंधु तब भाषा ।। लं० ११६/४
लै रघुनाथहि ठाउँ देखावा । कहेउ राम सब भाँति सुहावा ।। अ० ८८/५
लै सिर बाहु चले नाराचा । सिर भुज हीन रुंड महि नाचा ।। लं० १०२/२
लै सुग्रीव संग रघुनाथा । चले चाप सायक गहि हाथा ।। कि० ६/२५
लै त्रिसूल धावा कपि भागे । आए जहँ रामानुज आगे ।। लं० ७५/४
लोकप होहिं बिलोकत जासू । तेहि कि मोहि सक बिषय बिलासू ।। अ० १३९/८
लोकप होहिं बिलोकत तोरें । तोहि सेवहिं सब सिधि कर जोरें ।। अ० १०२/६
लोकपाल अवलोकि सिहाने । लीन्ह अवधपति सबु सुखु माने ।। बा० ३२५/६
लोक बेद सब भाँतिहि नीचा। जासु छाँह छुइ लेइअ सींचा ।। अ० १९३/३
लोक बेद संमत सबु कहई । जेहि पितु देइ राजु सो लहई ।। अ० २०६/३
लोक रीति जननीं करहिं बर दुलहिनि सकुचाहिं ।

मोदु बिनोदु बिलोकि बड़ रामु मनहिं मुसुकाहिं ॥ बा० ३५०/० (ख)
लोक लोक प्रति भिन्न बिधाता। भिन्न बिष्णु सिव मनु दिसित्राता ॥ उ० ८०/१
लोकहुँ बेद बिदित कबि कहहीं। राम बिमुख थलु नरक न लहहीं ॥ अ० २५१/७
लोकहुँ बेद बिदित इतिहासा। यह महिमा जानहिं दुरबासा ॥ अ० २१७/६
लोकहुँ बेद सुसाहिब रीती। बिनय सुनत पहिचानत प्रीती ॥ बा० २७/५
लोग बिकल मुरुछित नरनाहू। काह करिअ कछु सूझ न काहू ॥ अ० ७८/७
लोग बियोग बिषम बिष दागे। मंत्र सबीज सुनत जनु जागे ॥ अ० १८३/२
लोग सोग श्रम बस गए सोई। कछुक देवमायाँ मति मोई ॥ अ० ८४/६
लोचन चातक जिन्ह करि राखे। रहहिं दरस जलधर अभिलाषे ॥ अ० १२७/६
लोचन जलु रह लोचन कोना। जैसें परम कृपन कर सोना ॥ बा० २५८/२
लोचन मग रामहि उर आनी। दीन्हे पलक कपाट सयानी ॥ बा० २३१/७
लोचन सजल जोरि कर दोऊ। प्रभु सन कछु कहि सकत न ओऊ ॥ लं० १०८/४
लोचन सजल डीठि भइ थोरी। सुनइ न श्रवन बिकल मति भोरी ॥ अ० १४४/३
लोभइ ओढ़न लोभइ डासन। सिस्नोदर पर जमपुर त्रास न ॥ उ० ३९/१
लोभ कें इच्छा दंभ बल काम कें केवल नारि।
क्रोध कें परुष बचन बल मुनिबर कहहिं बिचारि ॥ अर० ३८/०(ख)
लोभ पाँस जेहिं गर न बँधाया। सो नर तुम्ह समान रघुराया ॥ कि० २०/५
लोभ मोह मृगजूथ किराततहि। मनसिज करि हरि जन सुखदातहि ॥ उ० २९/६
लोभी जसु चह चार गुमानी। नभ दुहि दूध चहत ए प्रानी ॥ अर० १६/१६
लोभी लोलुप कल कीरति चहई। अकलंकता कि कामी लहई ॥ बा० २६६/३
लोभी लंपट लोलुपचारा। जे ताकहिं परधनु परदारा ॥ अ० १६७/३
लोभु न रामहि राजु कर बहुत भरत पर प्रीति।
मैं बड़ छोट बिचारि जियँ करत रहेउँ नृपनीति ॥ अ० ३१/०
लोवा फिरि फिरि दरसु देखावा। सुरभी सनमुख सिसुहि पिआवा ॥ बा० ३०२/५
लंकाँ कपि प्रबेस जिमि कीन्हा। पुनि सीतहि धीरजु जिमि दीन्हा ॥ उ० ६६/४
लंकाँ द्वौ कपि सोहहिं कैसें। मथहिं सिंधु दुइ मंदर जैसें ॥ लं० ४४/८
लंका निसिचर निकर निवासा। इहाँ कहाँ सज्जन कर बासा ॥ सुं० ५/१
लंकापति कपीस नल नीला। जामवंत अंगद सुभसीला ॥ उ० ७/१
लंका बाँके चारि दुआरा। केहि बिधि लागिअ करहु बिचारा ॥ लं० ३८/२
लंकाँ भयउ कोलाहल भारी। सुना दसानन अति अहँकारी ॥ लं० ३९/१
लंका सिखर उपर आगारा। अति बिचित्र तहँ होइ अखारा ॥ लं० ९/७
लंका सिखर उपर आगारा। तहँ दसकंधर देख अखारा ॥ लं० १२/४
लंकेस अति बल गर्ब। किए बस्य सुर गंधर्ब।
मुनि सिद्ध नर खग नाग। हठि पंथ सब कें लाग ॥ लं० ११२/४ छं०

लंपट कपटी कुटिल बिसेषी । सपनेहुँ संतसभा नहिं देखी ।। बा० ११४/२
लिंग थापि बिधिवत करि पूजा । सिव समान प्रिय मोहि न दूजा ।। लं० १/६

व

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि ।
मंगलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ।। बा० श्लोक १
वह सुख संपति समय समाजा । कहि न सकइ सारद अहिराजा ।। बा० १९४/२
वह सोभा समाज सुख कहत न बनइ खगेस ।
बरनहिं सारद सेष श्रुति सो रस जान महेस ।। उ० १२/० (क)
विनिश्चितं वदामि ते न अन्यथा वचांसि मे ।
हरिं नरा भजन्ति येऽतिदुस्तरं तरन्ति ते ।। उ० १२२/०(ग) श्लोक
विविक्त वासिनः सदा । भजंति मुक्तये मुदा ।। अर० ३/१५ छं०
विशुद्ध बोध विग्रहं । समस्त दूषणापहं ।। अर० ३/१० छं०
वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणम् ।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ।। बा० श्लोक ३
व्रजंति नात्र संशयं । त्वदीय भक्ति संयुताः ।। अर० ३/२४ छं०

श

शङ्खेन्द्वाभमतीवसुन्दरतनुं शार्दूलचर्माम्बरं
कालव्यालकरालभूषणधरं गङ्गाशशांकप्रियम् ।
काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं
नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं कन्दर्पहं शंकरम् ।। लं० श्लोक २
शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् ।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ।। सुं० श्लोक १
श्याम तामरस दाम शरीरं । जटा मुकुट परिधन मुनिचीरं ।। अर० १०/३

ष

षट बिकार जित अनघ अकामा । अचल अकिंचन सुचि सुखधामा ।। अर० ४४/७

स

सई उतरि गोमतीं नहाए । चौथें दिवस अवधपुर आए ।। अ० ३२१/५
सई तीर बसि चले बिहाने । सृंगबेरपुर सब निअराने ।। अ० १८८/१
सकइ उठाइ सरासुर मेरू । सोउ हियँ हारि गयउ करि फेरू ।। बा० २९१/७
सकइ न बोलि बिकल नरनाहू । सोक जनित उर दारुन दाहू ।। अ० ७६/१
सकउँ तोर अरि अमरउ मारी । काह कीट बपुरे नर नारी ।। अ० २५/३
सकरुन बचन सुनत भगवाना । चले सुधारि सरासन बाना ।। लं० ६९/५

सकल अमानुष करम तुम्हारे। केवल कौसिक कृपाँ सुधारे ॥ बा० ३५६/६
सकल अलौकिक सुंदरताई। कहि न जाइ मनहीं मन भाई ॥ बा० ३१५/४
सकल अवनि मंडल तेहि काला। एक प्रतापभानु महिपाला ॥ बा० १५३/८
सकल अंग संपन्न सुराऊ। राम चरन आश्रित चित चाऊ ॥ अ० २३४/८
सकल कथा तिन्ह सबहि सुनाई। बनहि चले पितु आयसु पाई ॥ अ० १०९/५
सकल कला करि कोटि बिधि हारेउ सेन समेत।
चली न अचल समाधि सिव कोपेउ हृदयनिकेत ॥ बा० ८६/०
सकल कहहिं कब होइहि काली। बिघन मनावहिं देव कुचाली ॥ अ० १०/६
सकल कामना हीन जे राम भगति रस लीन।
नाम सुप्रेम पियूष ह्रद तिन्हहुँ किए मन मीन ॥ बा० २२/०
सकल काम प्रद तीरथराऊ। बेद बिदित जग प्रगट प्रभाऊ ॥ अ० २०३/६
सकल कुसल कहि भरत सुनाई। पूँछी निज कुल कुसल भलाई ॥ अ० १५८/७
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा। चरन बंदि पाथोधि सिधावा ॥ सुं० ५९/८
सकल चरित तिन्ह देखे धरें कपट कपि देह।
प्रभु गुन हृदयँ सराहहिं सरनागत पर नेह ॥ सुं० ५१/०
सकल द्विजन्ह मिलि नायउ माथा। धर्म धुरंधर रघुकुलनाथा ॥ उ० ४/५
सकल धर्म देखइ बिपरीता। कहि न सकइ रावन भय भीता ॥ बा० १८३/६
सकल प्रकार बिकार बिहाई। मन क्रम बचन करेहु सेवकाई ॥ अ० ७४/६
सकल बरात जनक सनमानी। दान मान बिनती बर बानी ॥ बा० ३२०/५
सकल बिकार रहित गतभेदा। कहि नित नेति निरूपहिं बेदा ॥ अ० ९२/८
सकल बिघ्न ब्यापहिं नहिं तेही। राम सुकृपाँ बिलोकहिं जेही ॥ बा० ३८/५
सकल भाँति सम साजु समाजू। सम समधी देखे हम आजू ॥ बा० ३१९/६
सकल मरमु रघुनायक जाना। लिए बोलि अंगद हनुमाना ॥ लं० ४६/१
सकल मलिन मन दीन दुखारी। देखीं सासु आन अनुहारी ॥ अ० २२५/५
सकल मुनिन्ह सन बिदा कराई। सीता सहित चले द्वौ भाई ॥ अर० २/३
सकल रिषिन्ह सन पाइ असीसा। चित्रकूट आए जगदीसा ॥ लं० ११९/३
सकल लोग सब भूप डेराने। सिय हियँ हरषु जनकु सकुचाने ॥ बा० २५३/२
सकल सखीं गिरिजा गिरि मैना। पुलक सरीर भरे जल नैना ॥ बा० ६७/३
सकल सनेह सिथिल रघुबर कें। गए कोस दुइ दिनकर ढरकें ॥ अ० २२५/१
सकल सभा कै मति भै भोरी। अब मोहि संभुचाप गति तोरी ॥ बा० २५७/६
सकल सुकृत कर बड़ फल एहू। राम सीय पद सहज सनेहू ॥ अ० ७४/४
सकल सुकृत फलु भूरि भोग से। जग हित निरुपधि साधु लोग से ॥ बा० ३१/१३
सकल सुकृत मूरति नरनाहू। राम सुजसु सुनि अतिहि उछाहू ॥ अ० १/२
सकल सुभट मिलि दच्छिन जाहू। सीता सुधि पूँछेहु सब काहू ॥ कि० २२/२

सकल सुमंगल अंग बनाएँ। करहिं गान कलकंठि लजाएँ ॥ बा० ३१७/३
सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जल जान ॥ सुं० ६०/०
सकल सुमंगल सजें आरती। गावहिं जनु बहु बेष भारती ॥ बा० ३४४/६
सकल सुरन्ह के हृदयँ अस संकर परम उछाहु।
निज नयनन्हि देखा चहहिं नाथ तुम्हार बिबाहु ॥ बा० ८८/०
सकल सुरासुर जुरहिं जुझारा। रामहि समर न जीतनिहारा ॥ अ० १८८/७
सकल सोक संकुल नर नारी। सो बासरु बीतेउ बिनु बारी ॥ अ० २७६/७
सकल सौच करि जाइ नहाए। नित्य निबाहि मुनिहि सिर नाए ॥ बा० २२६/१
सकल सौच करि राम नहावा। सुचि सुजान बट छीर मगावा ॥ अ० ९३/३
सक सर एक सोषि सत सागर। तव भ्रातहि पूँछेउ नय नागर ॥ सुं० ५५/२
सक संग्राम जीति को ताही। सेवहिं सुर नर अग जग जाही ॥ लं० ५४/२
सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ ॥ लं० ६०/३
सकुचन्ह कहि न सकत गुरु पाहीं। पितु दरसन लालचु मन माहीं ॥ बा० ३०६/५
सकुच बिहाइ मागु नृप मोही। मोरें नहिं अदेय कछु तोही ॥ बा० १४८/८
सकुच सनेहु मोदु मन बाढ़ा। भरतहि चितवत एकटक ठाढ़ा ॥ अ० १९४/५
सकुचउँ तात कहत एक बाता। अरध तजहिं बुध सरबस जाता ॥ अ० २५५/२
सकुचि राम निज सपथ देवाई। लखन सँदेसु कहिअ जनि जाई ॥ अ० ९५/५
सकुचि सप्रेम बाल मृग नयनी। बोली मधुर बचन पिकबयनी ॥ अ० ११६/४
सकुचि सीयँ तब नयन उघारे। सनमुख दोउ रघुसिंघ निहारे ॥ बा० २३३/३
सकुची ब्याकुलता बड़ि जानी। धरि धीरजु प्रतीति उर आनी ॥ बा० २५८/३
सकुनाधम सब भाँति अपावन। प्रभु मोहि कीन्ह बिदित जग पावन ॥ उ० १२२/८
सकुल सदल प्रभु रावन मार्‍यो। पावन जस त्रिभुवन बिस्तार्‍यो ॥ लं० ११५/३
सक्ति सूल तरवारि कृपाना। अस्त्र सस्त्र कुलिसायुध नाना ॥ लं० ७२/१
सक्र कोटि सत सरिस बिलासा। नभ सत कोटि अमित अवकासा ॥ उ० ९०/८
सखहि सनेह बिबस मग भूला। कहि सुपंथ सुर बरषहिं फूला ॥ अ० २३७/६
सखा कही तुम्ह नीकि उपाई। करिअ दैव जौं होइ सहाई ॥ सुं० ५०/१
सखा धर्ममय अस रथ जाकें। जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताकें ॥ लं० ७९/११
सखा नीति तुम्ह नीकि बिचारी। मम पन सरनागत भयहारी ॥ सुं० ४२/८
सखा परम परमारथु एहू। मन क्रम बचन राम पद नेहू ॥ अ० ९२/६
सखा बचन सुनि उर धरि धीरा। बास चले सुमिरत रघुबीरा ॥ अ० २०१/१
सखा बचन सुनि बिटप निहारी। उमगे भरत बिलोचन बारी ॥ अ० २३७/१
सखा बचन सुनि हरषे कृपासिंधु बलसींव।
कारन कवन बसहु बन मोहि कहहु सुग्रीव ॥ कि० ५/०

सखा रामु सिय लखनु जहँ तहाँ मोहि पहुँचाउ ।
नाहिं त चाहत चलन अब प्रान कहउँ सतिभाउ ॥ अ० १४९/०
सखा समुझि अस परिहरि मोहू । सिय रघुबीर चरन रत होहू ॥ अ० ९३/१
सखा समेत मनोहर जोटा । लखेउ न लखन सघन बन ओटा ॥ अ० २३८/१
सखा सोच त्यागहु बल मोरें । सब बिधि घटब काज मैं तोरें ॥ कि० ६/१०
सखि इन्ह कहँ कोउ कोउ अस कहहीं । बड़ प्रभाउ देखत लघु अहहीं ॥ बा० २२२/४
सखि जस राम लखन कर जोटा । तैसेइ भूप संग दुइ ढोटा ॥ बा० ३१०/३
सखिन्ह मध्य सिय सोहति कैसें । छबिगन मध्य महाछबि जैसें ॥ बा० २६३/१
सखिन्ह सहित हरषी अति रानी । सूखत धान परा जनु पानी ॥ बा० २६२/३
सखिन्ह सिखावनु दीन्ह सुनत मधुर परिनाम हित ।
तेइँ कछु कान न कीन्ह कुटिल प्रबोधी कूबरी ॥ अ० ५०/० सो०
सखि परंतु पनु राउ न तजई । बिधि बस हठि अबिबेकहि भजई ॥ बा० २२१/४
सखि सब कौतुक देखनिहारे । जेउ कहावत हितू हमारे ॥ बा० २५५/१
सखि हमरें आरति अति तातें । कबहुँक ए आवहिं एहि नातें ॥ बा० २२१/८
सखीं कहहिं प्रभुपद गहु सीता । करति न चरन परस अति भीता ॥ बा० २६४/८
सखी बचन सुनि भै परतीती । मिटा बिषादु बढ़ी अति प्रीती ॥ बा० २५६/३
सखीं सीय मुख पुनि पुनि चाही । गान करहिं निज सुकृत सराही ॥ बा० ३४८/५
सखीं संग लै कुअँरि तब चलि जनु राजमराल ।
देखत फिरइ महीप सब कर सरोज जयमाल ॥ बा० १३४/०
सगुन उपासक परहित निरत नीति दृढ़ नेम ।
ते नर प्रान समान मम जिन्ह कें द्विज पद प्रेम ॥ सुं० ४८/०
सगुनु खीरु अवगुन जलु ताता । मिलइ रचइ परपंचु बिधाता ॥ अ० २३१/५
सगुन बिचारि धरी मन धीरा । अब मिलिहहिं कृपाल रघुबीरा ॥ लं० ९९/६
सगुन सुगंध न जाहिं बखानी । मंगल सकल सजहिं सब रानी ॥ बा० ३४५/७
सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा । गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा ॥ बा० ११५/१
सगुन होहिं सुंदर चहुँ पासा । मन प्रसन्न निर्मल नभ आसा ॥ लं० ११८/८
सगुन होहिं सुंदर सकल मन प्रसन्न सब केर ।
प्रभु आगवन जनाव जनु नगर रम्य चहुँ फेर ॥ उ० ०/२
सगुनोपासक मोच्छ न लेहीं । तिन्ह कहुँ राम भगति निज देहीं ॥ लं० १११/७
सचिउ सभीत सकइ नहिं पूछी । बोली असुभ भरी सुभ छूछी ॥ अ० ३७/८
सचिव आगमनु सुनत सबु बिकल भयउ रनिवासु ।
भवनु भयंकरु लाग तेहि मानहुँ प्रेत निवासु ॥ अ० १४७/०
सचिवँ उठाइ राउ बैठारे । कहि प्रिय बचन रामु पगु धारे ॥ अ० ७५/७
सचिव जो रहा धरमरुचि जासू । भयउ बिमात्र बंधु लघु तासू ॥ बा० १७५/४

सचिव धरमरुचि हरि पद प्रीती। नृप हित हेतु सिखव नित नीती॥ बा० १५४/३
सचिव धीर धरि कह मृदु बानी। महाराज तुम्ह पंडित ग्यानी॥ अ० १४९/३
सचिव नारि गुर नारि सयानी। सहित सनेह कहहिं मृदु बानी॥ अ० ७७/७
सचिव बिरागु बिबेकु नरेसू। बिपिन सुहावन पावन देसू॥ अ० २३४/६
सचिव बैद गुर तीनि जौं प्रिय बोलहिं भय आस।
राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगिहीं नास॥ सुं० ३७/०
सचिव बोलि बोले खर दूषन। यह कोउ नृपबालक नर भूषन॥ अर० १८/२
सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी। माधव सरिस मीतु हितकारी॥ अ० १०४/३
सचिव सभय सिख देइ न कोई। बुध समाज बड़ अनुचित होई॥ बा० २५७/३
सचिव सभीत बिभीषन जाकें। बिजय बिभूति कहाँ जग ताकें॥ सुं० ५५/७
सचिव सयान बंधु बलबीरा। आपु प्रतापपुंज रनधीरा॥ बा० १५३/२
सचिव सुभट भूपति बिचार के। कुंभज लोभ उदधि अपार के॥ बा० ३१/६
सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे। निज निज काज पाइ सिख ओधे॥ अ० ३२२/१
सचिवँ सँभारि राउ बैठारे। चरन परत नृप रामु निहारे॥ अ० ४३/२
सचिव संग लै नभ पथ गयऊ। सबहि सुनाइ कहत अस भयऊ॥ सुं० ४०/९
सचिवहि अनुजहि प्रियहि सुनाई। बिबुध नदी महिमा अधिकाई॥ अ० ८६/६
सचिवागमन नगर नृप मरना। भरतागवन प्रेम बहु बरना॥ उ० ६४/५
सची सारदा रमा भवानी। जे सुरतिय सुचि सहज सयानी॥ बा० ३१७/६
सजल नयन कछु मुख करि रूखा। चितइ मातु लागी अति भूखा॥ उ० ८७/६
सजल नयन कह जुग कर जोरी। सुनहु प्रानपति बिनती मोरी॥ लं० १३/७
सजल नयन तन पुलकि निज इष्टदेउ पहिचानि।
परेउ दंड जिमि धरनितल दसा न जाइ बखानि॥ अ० ११०/०
सजल नयन पुलकित कर जोरी। कीन्हिउँ बहु बिधि बिनय बहोरी॥ उ० ८२/८
सजल बिलोचन पुलक सरीरा। सब भए मगन देखि दोउ बीरा॥ अ० ११३/४
सजल बिलोचन हृदयँ गलानी। कहत सखा सन बचन सुबानी॥ अ० १९८/४
सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं। बरषि गएँ पुनि तबहिं सुखाहीं॥ सुं० २२/६
सजि आरती अनेक बिधि मंगल सकल सँवारि।
चलीं मुदित परिछनि करन गजगामिनि बर नारि॥ बा० ३१७/०
सजि आरती मुदित उठि धाई। द्वारेहि भेंटि भवन लेइ आई॥ अ० १५८/३
सजि प्रतीति बहुबिधि गढ़ि छोली। अवध साढ़साती तब बोली॥ अ० १६/४
सजि बन साजु समाजु सबु बनिता बंधु समेत।
बंदि बिप्र गुर चरन प्रभु चले करि सबहि अचेत॥ अ० ७९/०
सज्जन सकृत सिंधु सम कोई। देखि पूर बिधू बाढ़इ जोई॥ बा० ७/१४
सठ रनभूमि छड़ाइसि मोही। धिग धिग अधम मंदमति तोही॥ लं० ९९/८

सती मरनु सुनि संभु गन लगे करन मख खीस।
जग्य बिधंस बिलोकि भृगु रच्छा कीन्हि मुनीस ॥ बा० ६४/०
सतीं समुझि रघुबीर प्रभाऊ। भय बस सिव सन कीन्ह दुराऊ ॥ बा० ५५/१
सती सिरोमनि सिय गुनगाथा। सोइ गुन अमल अनूपम पाथा ॥ बा० ४१/७
सतीं सो दसा संभु कै देखी। उर उपजा संदेहु बिसेषी ॥ बा० ४९/५
सतीं हृदयँ अनुमान किय सबु जानेउ सर्बग्य।
कीन्ह कपट मैं संभु सन नारि सहज जड़ अग्य ॥ बा० ५७/० (क)
सत्य करहि मम प्रीति सयानी। सुनै को श्रवन सूल सम बानी ॥ सुं० ११/४
सत्य कहहि दसकंठ सब मोहि न सुनि कछु कोह।
कोउ न हमारें कटक अस तो सन लरत जो सोह ॥ लं० २३/० (ख)
सत्य कहहिं कबि नारि सुभाऊ। सब बिधि अगहु अगाध दुराऊ ॥ अ० ४६/७
सत्य कहउँ खग तोहि सुचि सेवक मम प्रानप्रिय।
अस बिचारि भजु मोहि परिहरि आस भरोस सब ॥ उ० ८७/० (ख) सो०
सत्य कहउँ भूपति सुनु तोही। जग नाहिन दुर्लभ कछु मोही ॥ बा० १६७/२
सत्य कहेहु गिरिभव तनु एहा। हठ न छूट छूटै बरु देहा ॥ बा० ७९/५
सत्यकेतु कुल कोउ नहि बाँचा। बिप्रश्राप किमि होइ असाँचा ॥ बा० १७४/७
सत्य गवनु सुनि सब बिलखाने। मनहुँ साँझ सरसिज सकुचाने ॥ बा० ३३२/२
सत्य नगरु कपि जारेउ बिनु प्रभु आयसु पाइ।
फिरि न गयउ सुग्रीव पहिं तेहिं भय रहा लुकाइ ॥ लं० २३/० (क)
सत्य नाथ पद गहि नृप भाषा। द्विज गुर कोप कहहु को राखा ॥ बा० १६५/५
सत्य बचन कहु निसिचर नाहा। साँचेहु कीस कीन्ह पुर दाहा ॥ लं० २२/७
सत्य बचन बिस्वास न करही। बायस इव सबही ते डरही ॥ उ० १११/१४
सत्यमूल सब सुकृत सुहाए। बेद पुरान बिदित मनु गाए ॥ अ० २७/६
सत्य सत्य सब तव प्रभुताई। जल्पसि जनि देखाउ मनुसाई ॥ लं० ८९/१०
सत्य सराहि कहेहु बरु देना। जानेहु लेइहि मागि चबेना ॥ अ० २९/६
सत्यसंध छाँड़े सर लच्छा। कालसर्प जनु चले सपच्छा ॥ लं० ६७/३
सत्यसंध पालक श्रुति सेतू। राम जनमु जग मंगल हेतू ॥ अ० २५३/२
सत्यसंध प्रभु बधि करि एही। आनहु चर्म कहति बैदेही ॥ अर० २६/५
सत्यसंध प्रभु सुर हितकारी। भरत राम आयस अनुसारी ॥ अ० २१९/१
सत्व बहुत रज कछु रति कर्मा। सब बिधि सुख त्रेता कर धर्मा ॥ उ० १०३/३
सदगुन सुरगन अंब अदिति सी। रघुबर भगति प्रेम परमिति सी ॥ बा० ३०/१४
सदगुर ग्यान बिराग जोग के। बिबुध बैद भव भीम रोग के ॥ बा० ३१/३
सदगुर बैद बचन बिस्वासा। संजम यह न बिषय कै आसा ॥ उ० १२१/६
सदा अचल एहि कर अहिवाता। एहि तें जसु पैहहिं पितु माता ॥ बा० ६६/४

सदा कृतारथ रूप तुम्ह कह मृदु बचन खगेस।
जेहि कै अस्तुति सादर निज मुख कीन्हि महेस ॥ उ० ६३/० (ख)
सदाचार जप जोग बिरागा। सभय बिबेक कटकु सबु भागा ॥ बा० ८३/८
सदा रहहिं अपनपौ दुराएँ। सब बिधि कुसल कुबेष बनाएँ ॥ बा० १६०/२
सदा रामु एहि प्रान समाना। कारन कवन कुटिलपनु ठाना ॥ अ० ४६/६
सदा राम प्रिय होहु तुम्ह सुभ गुन भवन अमान।
कामरूप इच्छामरन ग्यान बिराग निधान ॥ उ० ११३/० (क)
सदा रोगबस संतत क्रोधी। बिष्नु बिमुख श्रुति संत बिरोधी ॥ लं० ३०/३
सदा सुनहिं सादर नर नारी। तेइ सुरबर मानस अधिकारी ॥ बा० ३७/२
सदा सुमन फल सहित सब द्रुम नव नाना जाति।
प्रगटीं सुंदर सैल पर मनि आकर बहु भाँति ॥ बा० ६५/०
सदा सो सानुकूल रह मो पर। कृपासिंधु सौमित्रि गुनाकर ॥ बा० १६/८
सन इव खल पर बंधन करई। खाल कढ़ाइ बिपति सहि मरई ॥ उ० १२०/१७
सनकादिक नारदहि सराहहिं। जद्यपि ब्रह्म निरत मुनि आहहिं ॥ उ० ४१/७
सनकादिक बिधि लोक सिधाए। भ्रातन्ह राम चरन सिरु नाए ॥ उ० ३५/१
सनकारे सेवक सकल चले स्वामि रुख पाइ।
घर तरु तर सर बाग बन बास बनाएन्हि जाइ ॥ अ० १९६/०
सनमानि सकल बरात आदर दान बिनय बड़ाइ कै।
प्रमुदित महा मुनि बृंद बंदे पूजि प्रेम लड़ाइ कै ॥
सिरु नाइ देव मनाइ सब सन कहत कर संपुट किएँ।
सुर साधु चाहत भाउ सिंधु कि तोष जल अंजलि दिएँ ॥ बा० ३२५/१ छं०
सनमानि सुर मुनि बंदि बैठे उतर दिसि देखत भए।
नभ धूरि खग मृग भूरि भागे बिकल प्रभु आश्रम गए ॥
तुलसी उठे अवलोकि कारनु काह चित सचकित रहे।
सब समाचार किरात कोलन्हि आइ तेहि अवसर कहे ॥ अ० २२५/१ छं०
सनमुख आयउ दधि अरु मीना। कर पुस्तक दुइ बिप्र प्रबीना ॥ बा० ३०२/८
सन्मुख मरन बीर कै सोभा। तब तिन्ह तजा प्रान कर लोभा ॥ लं० ४१/१०
सनमुख लोह भरत सन लेऊँ। जिअत न सुरसरि उतरन देऊँ ॥ अ० १८९/२
सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं। जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं ॥ सुं० ४३/२
सन्यपात जल्पसि दुर्बादा। भएसि कालबस खल मनुजादा ॥ लं० ३२/६
सपथ तुम्हार भरत कै आना। हेतु न दूसर मैं कछु जाना ॥ अ० ४२/२
सपनें जेहि सन होइ लराई। जागें समुझत मन सकुचाई ॥ कि० ६/२०
सपनें बानर लंका जारी। जातुधान सेना सब मारी ॥ सुं० १०/३
सपनेहुँ दोसक लेसु न काहू। मोर अभाग उदधि अवगाहू ॥ अ० २६०/५

सपनेहुँ धरम बुद्धि कस काऊ । यह रघुनंदन दरस प्रभाऊ ॥ अ० २५०/६
सपनेहुँ साचेहुँ मोहि पर जौं हर गौरि पसाउ ।
तौ फुर होउ जो कहेउँ सब भाषा भनिति प्रभाउ ॥ बा० १५/०
सपनें होइ भिखारि नृपु रंकु नाकपति होइ ।
जागें लाभु न हानि कछु तिमि प्रपंच जियँ जोइ ॥ अ० ९२/०
सप्त दीप भुजबल बस कीन्हे । लै लै दंड छाड़ि नृप दीन्हे ॥ बा० १५३/७
सप्त प्रबंध सुभग सोपाना । ग्यान नयन निरखत मन माना ॥ बा० ३६/१
सप्तावरन भेद करि जहाँ लगें गति मोरि ।
गयउँ तहाँ प्रभु भुज निरखि ब्याकुल भयउँ बहोरि ॥ उ० ७९/० (ख)
सफल पूगफल कदलि रसाला । रोपे बकुल कदंब तमाला ॥ बा० ३४३/७
सफल रसाल पूगफल केरा । रोपहु बीथिन्ह पुर चहुँ फेरा ॥ अ० ५/६
सफल सकल सुभ साधन साजू । राम तुम्हहि अवलोकत आजू ॥ अ० १०६/६
सब उदार सब पर उपकारी । बिप्र चरन सेवक नर नारी ॥ उ० २१/७
सब उपमा कबि रहे जुठारी । केहिं पटतरौं बिदेहकुमारी ॥ बा० २२९/८
सब कर आजु सुकृत फल बीता । भयउ कराल कालु बिपरीता ॥ अ० ५६/५
सब कर परम प्रकासक जोई । राम अनादि अवधपति सोई ॥ बा० ११६/६
सब कर फल रघुपति पद प्रेमा । तेहि बिनु कोउ न पावइ छेमा ॥ उ० ९४/६
सब कर फल हरि भगति सुहाई । सो बिनु संत न काहूँ पाई ॥ उ० ११९/१८
सब कर मत खगनायक एहा । करिअ राम पद पंकज नेहा ॥ उ० १२१/१३
सब कर संसउ अरु अग्यानू । मंद महीपन्ह कर अभिमानू ॥ बा० २५९/४
सब कर हित रुख राउरि राखें । आयसु किएँ मुदित फुर भाषें ॥ अ० २५७/३
सब कहुँ सुखद राम अभिषेकू । मंगल मोद मूल मग एकू ॥ अ० २५४/१
सब कें उर अभिलाषु अस कहहिं मनाइ महेसु ।
आप अछत जुबराज पद रामहि देउ नरेसु ॥ अ० १/०
सब के उर अंतर बसहु जानहु भाउ कुभाउ ।
पुरजन जननी भरत हित होइ सो कहिअ उपाउ ॥ अ० २५७/०
सब कें उर निर्भर हरषु पूरित पुलक सरीर ।
कबहिं देखिबे नयन भरि रामु लखनु दोउ बीर ॥ बा० ३००/०
सब कें गृह गृह होहिं पुराना । रामचरित पावन बिधि नाना ॥ उ० २५/७
सब के देखत बेदन्ह बिनती कीन्हि उदार ।
अंतर्धान भए पुनि गए ब्रह्म आगार ॥ उ० १३/० (क)
सब कें देह परम प्रिय स्वामी । मारहिं मोहि कुमारग गामी ॥ सुं० २१/४
सब के प्रिय सब के हितकारी । दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी ॥ अ० १२९/३
सब कें प्रिय सेवक यह नीती । मोरें अधिक दास पर प्रीती ॥ उ० १५/८

सब के बचन प्रेम रस साने। सुनि रघुनाथ हृदयँ हरषाने ॥ उ० ४६/७

सब के बचन श्रवन सुनि कह प्रहस्त कर जोरि।
नीति बिरोध न करिअ प्रभु मंत्रिन्ह मति अति थोरि ॥ लं० ८/०

सब के हृदयँ मदन अभिलाषा। लता निहारि नवहिं तरु साखा॥ बा० ८४/१
सब कै निंदा जे जड़ करहीं। ते चमगादुर होइ अवतरहीं ॥ उ० १२०/२७
सब कै ममता ताग बटोरी। मम पद मनहि बाँध बरि डोरी ॥ सुं० ४७/५
सब कै सार सँभार गोसाईं। करबि जनक जननी की नाईं ॥ अ० ७९/६
सब कोउ राम पेममय पेखा। भए अलेख सोच बस लेखा ॥ अ० २९३/८
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी। सब कृतग्य नहिं कपट सयानी ॥ उ० २०/८
सब गुन रहित कुकबि कृत बानी। राम नाम जस अंकित जानी ॥ बा० ९/५
सब जगु ताहि अनलहु ते ताता। जो रघुबीर बिमुख सुनु भ्राता ॥ अर० १/८
सब जानत प्रभु प्रभुता सोई। तदपि कहें बिनु रहा न कोई ॥ बा० १२/१
सब तजि तुम्हहि रहइ उर लाई। तेहि के हृदयँ रहहु रघुराई ॥ अ० १३०/६
सब तरु फरे राम हित लागी। रितु अरु कुरितु काल गति त्यागी ॥ लं० ४/५
सब ते सो दुर्लभ सुरराया। राम भगति रत गत मद माया ॥ उ० ५३/७
सब दुख दुसह सहावहु मोही। लोचन ओट रामु जनि होंही ॥ अ० ४४/२
सब दुख बरजित प्रजा सुखारी। धरमसील .. सुंदर नर नारी ॥ बा० १५४/२
सब द्विज देहु हरषि अनुसासन। रामचंद्र बैठहिं सिंघासन ॥ उ० ९/५
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती ॥ उ० २०/२
सब नर कल्पित करहिं अचारा। जाइ न बरनि अनीति अपारा ॥ उ० ९९/१०
सब नर काम लोभ रत क्रोधी। देव बिप्र श्रुति संत बिरोधी ॥ उ० ९८/३
सब नारिन्ह मिलि भेटि भवानी। जाइ जननि उर पुनि लपटानी ॥ बा० १०१/८
सब निज कथा कहउँ मैं गाई। तात सुनहु सादर मन लाई ॥ उ० ९४/४
सब निर्दंभ धर्मरत पुनी। नर अरु नारि चतुर सब गुनी ॥ उ० २०/७
सब नृप भए जोगु उपहासी। जैसें . बिनु बिराग संन्यासी ॥ बा० २५०/३
सबन्हि राम पर प्रेम अपारा। सकल कहहिं मगु दीख हमारा ॥ अ० १०८/४
सबन्हौ बोलि सुनाएसि सपना। सीतहि सेइ करहु हित अपना ॥ सुं० १०/२
सब प्रकार करिहउँ सेवकाई। जेहि बिधि मिलिहि जानकी आई ॥ कि० ४/८
सब प्रकार भूपति बड़भागी। बादि बिषादु करिअ तेहि लागी ॥ अ० १७३/१
सब प्रकार राजहि अपनाई। बोलेउ अधिक सनेह जनाई ॥ बा० १६०/७
सब प्रकार हम तुम्ह सन हारे। छमहु बिप्र अपराध हमारे ॥ बा० २८१/८
सब प्रसंग महिसुरन्ह सुनाई। त्रसित परेउ अवनीं अकुलाई ॥ बा० १७३/८
सबु प्रसंग रघुपतिहि सुनाई। बैठि मनहुँ तनु धरि निठुराई ॥ अ० ४०/४
सब बिधि कुसल कोसलाधीसा। मातु समर जीत्यो दससीसा ॥ लं० १०६/७

सब बिधि गुरु प्रसन्न जियँ जानी । बोलेउ राउ रहँसि मृदु बानी ॥ अ० ३/१
सब बिधि नाथ पूज्य तुम्ह मेरे । कृपापात्र रघुनायक केरे ॥ उ० ६९/२
सब बिधि नाथ मोहि अपनाइअ । पुनि मोहि सहित अवधपुर जाइअ ॥ लं० ११५/७
सब बिधि पुरी मनोहर जानी । सकल सिद्धिप्रद मंगल खानी ॥ बा० ३४/५
सब बिधि सकल अलंकृत कीन्हीं । मुदित महिप महिदेवन्ह दीन्हीं ॥ बा० ३३०/३
सब बिधि सब पुर लोग सुखारी । रामचंद मुख चंदु निहारी ॥ अ० ०/६
सब बिधि सबहि समदि नरनाहू । रहा हृदयँ भरि पूरि उछाहू ॥ बा० ३५३/१
सब बिधि सानुकूल लखि सीता । भे निसोच उर अपडर बीता ॥ अ० २४१/६
सब बिधि सोइ करतब्य तुम्हारें । दुख न पाव पितु सोच हमारें ॥ अ० ९५/२
सब बिधि सोचिअ पर अपकारी । निजु तनु पोषक निरदय भारी ॥ अ० १७२/३
सब भरोस तजि जो भज रामहि । प्रेम समेत गाव गुन ग्रामहि ॥ उ० १०२/६

सब भाँति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यों उर लाइयो ।
मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोह बस बिसराइयो ॥
यह रावनारि चरित्र पावन राम पद रतिप्रद सदा ।
कामादिहर बिग्यानकर सुर सिद्ध मुनि गावहिं मुदा ॥ लं० १२०/२ छं०

सब मम प्रिय नहिं तुम्हहि समाना । मृषा न कहउँ मोर यह बाना ॥ उ० १५/७
सब मम प्रिय सब मम उपजाए । सब ते अधिक मनुज मोहि भाए ॥ उ० ८५/४
सब मिलि कहहिं परस्पर बाता । बिनु सुधि लएँ करब का भ्राता ॥ कि० २५/२
सब मिलि जाहु बिभीषन साथा । सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा ॥ लं० १०५/३
सब मिलि देहिं रावनहिं गारी । राज करत एहिं मृत्यु हँकारी ॥ लं० ४१/५

सब मंचन्ह तें मंचु एक सुंदर बिसद बिसाल ।
मुनि समेत दोउ बंधु तहँ बैठारे महिपाल ॥ बा० २४४/०

सब रघुपति मुख कमल बिलोकहिं । मंगल जानि नयन जल रोकहिं ॥ उ० ६/३
सब रजनीचर कपि संघारे । गए पुकारत कछु अधमारे ॥ सुं० १७/६

सबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्हि रघुनाथ ।
नाम उधारे अमित खल बेद बिदित गुन गाथ ॥ बा० २४/०

सबरी देखि राम गृहँ आए । मुनि के बचन समुझि जियँ भाए ॥ अर० ३३/६
सब लच्छन संपन्न कुमारी । होइहि संतत पियहि पिआरी ॥ बा० ६६/३
सब लोग बियोग बिसोक हए । बरनाश्रम धर्म अचार गए ॥ उ० १०१/८
सबल जुगल दल समबल जोधा । कौतुक करत लरत करि क्रोधा ॥ लं० ४५/८

सब सन कहा बुझाइ बिधि दनुज निधन तब होइ ।
संभु सुक्र संभूत सुत एहि जीतइ रन सोइ ॥ बा० ८२/०

सब समाजु सजि सिधि पल माहीं । जे सुख सुरपुर सपनेहुँ नाहीं ॥ अ० २१३/७
सब समेत पुर धारिज पाऊ । आपु इहाँ अमरावति राऊ ॥ अ० २४७/७

सभय रानि कह कहसि किन कुसल रामु महिपालु ।
लखनु भरतु रिपुदमनु सुनि भा कुबरी उर सालु ॥ अ० १३/०
सभय सप्रेम बिनीत अति सकुच सहित दोउ भाइ ।
गुर पद पंकज नाइ सिर बैठे आयसु पाइ ॥ बा० २२५/०
सभय सुभाउ नारि कर साचा । मंगल महुँ भय मन अति काचा ॥ सुं० ३६/२
सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे । छमहु नाथ सब अवगुन मेरे ॥ सुं० ५८/१
सभाँ आइ मंत्रिन्ह तेहिं बूझा । करब कवन बिधि रिपु सैं जूझा ॥ लं० ७/७
सभा माझ जेहिं तव बल मथा । करि बरूथ महुँ मृगपति जथा ॥ लं० ३६/३
सभा माझ परि ब्याकुल बहु प्रकार कह रोइ ।
तोहि जिअत दसकंधर मोरि कि असि गति होइ ॥ अर० २१/० (ख)
सभा राउ गुर महिसुर मंत्री । भरत भगति सब कै मति जंत्री ॥ अ० ३०२/२
सभा सकल सुनि रघुबर बानी । प्रेम पयोधि अमिअँ जनु सानी ॥ अ० ३०६/१
सभा सकुच बस भरत निहारी । रामबंधु धरि धीरजु भारी ॥ अ० २९६/१
सभा समेत राउ अनुरागे । दूतन्ह देन निछावरि लागे ॥ बा० २९२/७
सम अभूतरिपु बिमद बिरागी । लोभामरष हरष भय त्यागी ॥ उ० ३७/२
समउ जानि गुर आयसु दीन्हा । पुर प्रबेसु रघुकुलमनि कीन्हा ॥ बा० ३४६/७
समउ जानि मुनिबरन्ह बोलाईं । सुनत सुआसिनि सादर ल्याईं ॥ बा० ३२३/३
समउ बिलोकि बसिष्ठ बोलाए । सादर सतानंदु सुनि आए ॥ बा० ३२१/१
समउ समाजु लाज गुरजन की । उदासीन हित अनहित मन की ॥ अ० ३०४/२
समउ समुझि धरि धीरजु राजा । चले भरत पहिं सहित समाजा ॥ अ० २९१/६
सम जम नियम फूल फल ग्याना । हरि पद रति रस बेद बखाना ॥ बा० ३६/१४
सम दम नियम नीति नहि डोलहिं । परुष बचन कबहूँ नहिं बोलहिं ॥ उ० ३७/८
सम दम संजम नियम उपासा । नखत भरत हिय बिमल अकासा ॥ अ० ३२४/४
समदरसी इच्छा कछु नाहीं । हरष सोक भय नहिं मन माहीं ॥ सुं० ४७/६
समदरसी मोहि कह सब कोऊ । सेवक प्रिय अनन्यगति सोऊ ॥ कि० २/८
समन अमित उतपात सब भरतचरित जपजाग ।
कलि अघ खल अवगुन कथन ते जलमल बग काग ॥ बा० ४१/०
समन पाप संताप सोक के । प्रिय पालक परलोक लोक के ॥ बा० ३१/५
सम प्रकास तम पाख दुहुँ नाम भेद बिधि कीन्ह ।
ससि सोषक पोषक समुझि जग जस अपजस दीन्ह ॥ बा० ७/० (ख)
सम महि तृन तरुपल्लव डासी । पाय पलोटिहि सब निसि दासी ॥ अ० ६६/५
सम मानि निरादर आदरही । सब संत सुखी बिचरंत मही ॥ उ० १३/१६
समय जानि उपरोहित आवा । नृपहि मते सब कहि समुझावा ॥ बा० १७१/८
समय जानि गुर आयसु पाई । लेन प्रसून चले दोउ भाई ॥ बा० २२६/२

समय पाइ तनु तजि अनयासा। जाइ कीन्ह अमरावति बासा ॥ बा० १५१/८
समय प्रतापभानु कर जानी। आपन अति असमय अनुमानी ॥ बा० १५७/३
समय बिलोकि बाजने बाजे। रथ गज बाजि बरातिन्ह साजे ॥ बा० ३३८/५
समय समाज धरम अबिरोधा। बोले तब रघुबंस पुरोधा ॥ अ० २९५/३
समय सुहावनि गारि बिराजा। हँसत राउ सुनि सहित समाजा ॥ बा० ३२८/७
समयँ समयँ सुर बरषहिं फूला। सांति पढ़हिं महिसुर अनुकूला ॥ बा० ३१८/६
समरथ कहुँ नहिं दोषु गोसाईं। रबि पावक सुरसरि की नाईं ॥ बा० ६८/८
समरथ धाइ बिलोकहिं जाई। प्रमुदित फिरहिं जनमफलु पाई ॥ अ० १२०/८
समरथ सरनागत हितकारी। गुनगाहकु अवगुन अघ हारी ॥ अ० २९७/३
समर धीर नहिं जाइ बखाना। तेहि सम अमित बीर बलवाना ॥ बा० १७९/६
समर बालि सन करि जसु पावा। सुनि कपि बचन बिहसि बिहरावा ॥ सुं० २१/२
समर विजय रघुबीर के चरित जे सुनहिं सुजान।
बिजय बिबेक बिभूति नित तिन्हहि देहिं भगवान ॥ लं० १२१/० (क)
समर भूमि दसकंधर कोप्यो। बरषि बान रघुपति रथ तोप्यो ॥ लं० ९२/३
समर मरनु पुनि सुरसरि तीरा। राम काजु छनभंगु सरीरा ॥ अ० १८९/३
समर मरन हरि हाथ तुम्हारा। होइहहु मुकुत न पुनि संसारा ॥ बा० १३८/७
सम सीतल नहिं त्यागहिं नीती। सरल सुभाउ सबहि सन प्रीती ॥ अर० ४५/२
समाचार कहि जनक सुनाए। जेहि कारन महीप सब आए ॥ बा० २६९/१
समाचार जब लछिमन पाए। ब्याकुल बिलख बदन उठि धाए ॥ अ० ६९/१
समाचार जानकिहि सुनावहु। तासु कुसल लै तुम्ह चलि आवहु ॥ लं० १०६/२
समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाइ।
जाइ सासु पद कमल जुग बंदि बैठि सिरु नाइ ॥ अ० ५७/०
समाचार पुरबासिन्ह पाए। नर अरु नारि हरषि सब धाए ॥ उ० २/४
समाचार सब कहि समुझाए। सुनत कोपि कपिकुंजर धाए ॥ लं० ४६/२
समाचार सब लोगन्ह पाए। लागे घर घर होन बधाए ॥ बा० २९५/२
समाचार सब सुने निषादा। हृदयँ बिचार करइ सबिषादा ॥ अ० १८८/२
समाचार सब संकर पाए। बीरभद्रु करि कोप पठाए ॥ बा० ६४/१
समाधान तब भा यह जाने। भरतु कहे महुँ साधु सयाने ॥ अ० २२६/५
समाधानु करि सो सबही का। गयउ जहाँ दिनकर कुल टीका ॥ अ० ३८/५
समिटि समिटि जल भरहिं तलावा। जिमि सदगुन सज्जन पहिं आवा ॥ कि० १३/७
समिधि सेन चतुरंग सुहाई। महा महीप भए पसु आई ॥ बा० २८२/३
समुझत अमित राम प्रभुताई। करत कथा मन अति कदराई ॥ बा० ११/१२
समुझत जासु दूत कइ करनी। स्रवहिं गर्भ रजनीचर घरनी ॥ सुं० ३५/७
समुझत सरिस नाम अरु नामी। प्रीति परसपर प्रभु अनुगामी ॥ बा० २०/१

समुझत सुनत सुखद सब काहू। सुचि सुरसरि रुचि निदर सुधाहू॥ अ० २८७/८
समुझब कहब करब तुम्ह जोई। धरम सारु जग होइहि सोई॥ अ० ३२२/८
समुझाए सुरगुरु जड़ जागे। बरषि प्रसून प्रसंसन लागे॥ अ० २४०/८
समुझावत सब सचिव सयाने। कीन्ह बिचारु न अवसर जाने॥ बा० ३३७/७
समुझि अवध असमंजस दोऊ। चलिअ कि रहिअ न कह कछु कोऊ॥ अ० २७०/६
समुझि करम गति धीरजु कीन्हा। सोधि सुगम मगु तिन्ह कहि दीन्हा॥ अ० ११७/८
समुझि कामसुखु सोचहिं भोगी। भए अकंटक साधक जोगी॥ बा० ८६/८
समुझि देखु जियँ प्रिया प्रबीना। जीवनु राम दरस आधीना॥ अ० ३२/३
समुझि परिहि सोउ आजु बिसेषी। समर सरोष राम मुखु पेखी॥ अ० २२८/४
समुझि परी मोहि उन्ह कै करनी। रहित निसाचर करिहहिं धरनी॥ अर० २१/४
समुझि बिबिधि बिधि बिनती मोरी। कोउ न कथा सुनि देइहि खोरी॥ बा० ११/७
समुझि महेस समाज सब जननि जनक मुसुकाहिं।
बाल बुझाए बिबिध बिधि निडर होहु डर नाहिं॥ बा० ९५/०
समुझि मातु करतब सकुचाहीं। करत कुतरक कोटि मन माहीं॥ अ० २३२/७
समुझि मोरि करतूति कुलु प्रभु महिमा जियँ जोइ।
जो न भजइ रघुबीर पद जग बिधि बंचित सोइ॥ अ० १९५/०
समुझि राजसुख दुखित अराती। अवाँ अनल इव सुलगइ छाती॥ बा० १५९/७
समुझि राम प्रताप कपि कोपा। सभा माझ पन करि पद रोपा॥ लं० ३३/८
समुझि सहम मोहि अपडर अपनें। सो सुधि राम कीन्हि नहिं सपनें॥ बा० २८/२
समुझि सुमित्राँ राम सिय रूपु सुसीलु सुभाउ।
नृप सनेहु लखि धुनेउ सिरु पापिनि दीन्ह कुदाउ॥ अ० ७३/०
समुझि सो सतिहि भयउ अति क्रोधा। बहु बिधि जननीं कीन्ह प्रबोधा॥ बा० ६२/८
सयन करहु निज निज गृह जाई। गवने भवन सकल सिर नाई॥ लं० १३/५
सयन किएँ देखा कपि तेही। मंदिर महुँ न दीखि बैदेही॥ सुं० ४/७
सयन कीन्ह नृप आयसु मानी। आसन जाइ बैठ छलग्यानी॥ बा० १६९/१
सयनहिं रघुपति लखनु नेवारे। प्रेम समेत निकट बैठारे॥ बा० २५३/४
सरग नरक अनुराग बिरागा। निगमागम गुन दोष बिभागा॥ बा० ५/९
सरगु नरकु अपबरगु समाना। जहँ तहँ देख धरें धनु बाना॥ अ० १३०/७
सर चाप मनोहर त्रोन धरं। जलजारुन लोचन भूपबरं॥ लं० ११०/१२ छं०
सरजु तीर रचि चिंता बनाई। जनु सुरपुर सोपान सुहाई॥ अ० १६९/४
सरजू नाम सुमंगल मूला। लोक बेद मत मंजुल कूला॥ बा० ३८/१२
सरद चंद निंदक मुख नीके। नीरज नयन भावते जी के॥ बा० २४२/२
सरद बिमल बिधु बदनु सुहावन। नयन नवल राजीव लजावन॥ बा० ३१५/३
सरद मयंक बदन छबि सींवा। चारु कपोल चिबुक दर ग्रीवा॥ बा० १४६/१

सरदातप निसि ससि अपहरई । संत दरस जिमि पातक टरई ॥ कि० १६/६
सरन गएँ मो से अघ रासी । होहिं सुद्ध नमामि अबिनासी ॥ उ० १२३/८
सरन गएँ प्रभु ताहु न त्यागा । बिस्व द्रोह कृत अघ जेहि लागा ॥ सुं० ३८/७
सरनागत कहुँ जे तजहिं निज अनहित अनुमानि ।
ते नर पावँर पापमय तिन्हहि बिलोकत हानि ॥ सुं० ४३/०
सर निवारि रिपु के सिर काटे । ते दिसि बिदिसि गगन महि पाटे ॥ लं० ९२/६
सरनि सरोज बिटप बन फूले । गुंजत मंजु मधुप रस भूले ॥ अ० १२३/७
सरनि सरोरुह जल बिहग कूजत गुंजत भृंग ।
बैर बिगत बिहरत बिपिन मृग बिहंग बहुरंग ॥ अ० २४९/०
सरन्हि भरा मुख सन्मुख धावा । काल त्रोन सजीव जनु आवा ॥ लं० ७०/३
सर पैठत कपि पद गहा मकरीं तब अकुलान ।
मारी सो धरि दिब्य तनु चली गगन चढ़ि जान ॥ लं० ५७/०
सर मज्जन करि आतुर आवहु । दिच्छा देउँ ग्यान जेहिं पावहु ॥ लं० ५६/८
सरल कबित कीरति बिमल सोइ आदरहिं सुजान ।
सहज बयर बिसराइ रिपु जो सुनि करहिं बखान ॥ बा० १४/० (क)
सरल बचन नृप के सुनि काना । बयर सँभारि हृदयँ हरषाना ॥ बा० १५९/८
सरल सुभाउ राम महतारी । बोली बचन धीर धरि भारी ॥ अ० ५४/७
सरल सुभाय मायँ हियँ लाए । अति हित मनहुँ राम फिरि आए ॥ अ० १६४/१
सरल सुभाव न मन कुटिलाई । जथा लाभ संतोष सदाई ॥ उ० ४५/२
सरल सुसाहिबु सील निधानू । प्रनतपाल सर्बग्य सुजानू ॥ अ० २९७/२
सरल सुसील धरम रत राऊ । सो किमि जानै तीय सुभाऊ ॥ अ० १६१/५
सर सक्ति तोमर परसु सूल कृपान एकहि बारहीं ।
करि कोप श्रीरघुबीर पर अगनित निसाचर डारहीं ॥
प्रभु निमिष महुँ रिपु सर निवारि पचारि डारे सायका ।
दस दस बिसिख उर माझ मारे सकल निसिचर नायका ॥ अर० १९/३ छं०
सर समीप गिरिजा गृह सोहा । बरनि न जाइ देखि मनु मोहा ॥ बा० २२७/४
सर समूह सो छाड़ै लागा । जनु सपच्छ धावहिं बहु नागा ॥ लं० ४९/५
सर सरिता बन भूमि बिभागा । जनु उमगत आनँद अनुरागा ॥ अ० २७८/२
सरसिज लोचन बाहु बिसाला । जटा मुकुट सिर उर बनमाला ॥ अर० ३३/७
सरसिज संकुल सकल तड़ागा । अति प्रसन्न दस दिसा बिभागा ॥ उ० २२/१०
सरित समीप राखि सब लोगा । मागि मातु गुर सचिव नियोगा ॥ अ० २३२/५
सरिता जल जलनिधि महुँ जाई । होइ अचल जिमि जिव हरि पाई ॥ कि० १३/८
सरिता बन गिरि अवघट घाटा । पति पहिचानि देहिं बर बाटा ॥ अर० ६/४
सरिता सकल बहहिं बर बारी । सीतल अमल स्वाद सुखकारी ॥ उ० २२/८

सरिता सब पुनीत जलु बहहीं । खग मृग मधुप सुखी सब रहहीं ॥ बा० ६५/१
सरिता सर निर्मल जल सोहा । संत हृदय जस गत मद मोहा ॥ कि० १५/४
सरुज सरीर बादि बहु भोगा । बिनु हरिभगति जायँ जप जोगा ॥ अ० १७७/५
सरुष समीप दीखि कैकेई । मानहुँ मीचु घरीं गनि लेई ॥ अ० ३९/२
ससि कर सम सुनि गिरा तुम्हारी । मिटा मोह सरदातप भारी ॥ बा० ११९/१
ससि गुर तिय गामी नघुषु चढ़ेउ भूमिसुर जान ।
लोक बेद तें बिमुख भा अधम न बेन समान ॥ अ० २२८/०
ससिभूषन अस हृदयँ बिचारी । हरहु नाथ मम मति भ्रम भारी ॥ बा० १०७/४
ससि ललाट सुंदर सिर गंगा । नयन तीनि उपबीत भुजंगा ॥ बा० ९१/३
ससि संपन्न सदा रह धरनी । त्रेताँ भइ कृतजुग कै करनी ॥ उ० २२/६
ससि संपन्न मोह महि कैसी । उपकारी कै संपति जैसी ॥ कि० १४/५
ससुर चक्कवइ कोसलराऊ । भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ ॥ अ० ९७/३
ससुर भानूकुल भानु भुआलू । जेहि सिहात अमरावतिपालू ॥ अ० १९८/७
ससुरारि पिआरि लगी जब तें । रिपुरूप कुटुंब भए तब तें ॥ उ० १००/५
ससुर एतादृस अवध निवासू । प्रिय परिवारु मातु सम सासू ॥ अ० ९७/५
सस्त्री मर्मी प्रभु सठ धनी । बैद बंदि कबि भानस गुनी ॥ अर० २५/४
सहज अपावन नारि पति सेवत सुभ गति लहइ ।
जसु गावत श्रुति चारि अजहुँ तुलसिका हरिहि प्रिय ॥ अर०५/०(क) सो०
सहज टेढ़ अनुहरइ न तोही । नीचु मीचु सम देख न मोही ॥ बा० २७६/८
सहज पापप्रिय तामस देहा । जथा उलूकहि तम पर नेहा ॥ सुं० ४४/८
सहज प्रकासरूप भगवाना । नहिं तहँ पुनि बिग्यान बिहाना ॥ बा० ११५/६
सहज प्रीति भूपति कै देखी । आपु बिषय बिस्वास बिसेषी ॥ बा० १६०/६
सहज बयरु सब जीवन्ह त्यागा । गिरि पर सकल करहिं अनुरागा ॥ बा० ६५/२
सहज बानि सेवक सुख दायक । कबहुँक सुरति करत रघुनायक ॥ सुं० १३/५
सहज बिरागरूप मनु मोरा । थकित होत जिमि चंद चकोरा ॥ बा० २१५/३
सहज भीम पुनि बिनु श्रुति नासा । देखत कपि दल उपजी त्रासा ॥ लं० ६५/१०
सहज भीरु कर बचन दृढ़ाई । सागर सन ठानी मचलाई ॥ सुं० ५५/५
सहज मनोहर मूरति दोऊ । कोटि काम उपमा लघु सोऊ ॥ बा० २४२/१
सहज सनेह बिबस रघुराई । पूँछी कुसल निकट बैठाई ॥ अ० ८७/४
सहज सनेह राम लखि तासू । संग लीन्ह गुह हृदयँ हुलासु ॥ अ० १०३/७
सहज सनेहँ स्वामि सेवकाई । स्वारथ छल फल चारि बिहाई ॥ अ० ३००/३
सहज सरल रघुबर बचन कुमति कुटिल करि जान ।
चलइ जोंक जल बक्रगति जद्यपि सलिलु समान ॥ अ० ४२/०
सहज सरल सुनि रघुबर बानी । साधु साधु बोले मुनि ग्यानी ॥ अ० १२५/७

सहज सुभाय सुभग तन गोरे । नामु लखनु लघु देवर मोरे ॥ अ० ११६/५

सहज सुहृद गुर स्वामि सिख जो न करइ सिर मानि ।
सो पछिताइ अघाइ उर अवसि होइ हित हानि ॥ अ० ६३/०

सहज सूर कपि भालु सब पुनि सिर पर प्रभु राम ।
रावन काल कोटि कहुँ जीति सकहिं संग्राम ॥ सुं० ५५/०

सहजहिं चले सकल जग स्वामी । मत्त मंजु बर कुंजर गामी ॥ बा० २५४/५

सहमि सूखि सुनि सीतलि बानी । जिमि जवास परें पावस पानी ॥ अ० ५३/२

सहस नाम सम सुनि सिव बानी । जपि जेईं पिय संग भवानी ॥ बा० १८/६

सहसबाहु भुज गहन अपारा । दहन अनल सम जासु कुठारा ॥ लं० २५/२

सहसबाहु भुज छेदनिहारा । परसु बिलोकु महीपकुमारा ॥ बा० २७१/८

सहसबाहु सुरनाथु त्रिसंकु । केहि न राजमद दीन्ह कलंकू ॥ अ० २२८/१

सहसा करि पाछें पछिताहीं । कहहिं बेद बुध ते बुध नाहीं ॥ अ० २३०/४

सहित अनुज मोह राम गोसाईं । मिलिहहिं निज सेवक की नाईं ॥ अर० ९/५

सहित दोष दुख दास दुरासा । दलइ नामु जिमि रबि निसि नासा ॥ बा० २३/५

सहित बधूटिन्ह कुअँर सब तब आए पितु पास ।
सोभा मंगल मोद भरि उमगेउ जनु जनवास ॥ बा० ३२७/०

सहित बरात राउ सनमाना । आयसु मागि फिरे अगवाना ॥ बा० ३०८/६

सहित बसिष्ठ सोह नृप कैसें । सुर गुर संग पुरंदर जैसें ॥ बा० ३०१/१

सहित बिदेह बिलोकहिं रानी । सिसु सम प्रीति न जाति बखानी ॥ बा० २४१/३

सहित बिषाद परसपर कहहीं । बिधि करतब उलटे सब अहहीं ॥ अ० ११८/२

सहित सनेह निकट बैठारी । पूँछत राउ नयन भरि बारी ॥ अ० १४८/२

सहित समाज तुम्हार हमारा । घर बन गुर प्रसाद रखवारा ॥ अ० ३०५/१

सहित समाज भरत जनु आए । नाथ बियोग ताप तन ताए ॥ अ० २२५/४

सहित समाज राउ मिथिलेसू । बहुत दिवस भए सहत कलेसू ॥ अ० २८९/५

सहित समाज साज सब सादें । चले राम बन अटन पयादें ॥ अ० ३१०/३

सहित सहाय जाहु मम हेतू । चलेउ हरषि हियँ जलचरकेतू ॥ बा० १२४/६

सहित सहाय रावनहि मारी । आनउँ इहाँ त्रिकूट उपारी ॥ कि० २९/९

सहित सहाय सभीत अति मानि हारि मन मैन ।
गहेसि जाइ, मुनि चरन तब कहि सुठि आरत बैन ॥ बा० १२६/०

सहि न सके रघुबर बिरहागी । चले लोग सब ब्याकुल भागी ॥ अ० ८३/४

सहि सक न भार उदार अहिपति बार बारहिं मोहई ।
गह दसन पुनि पुनि कमठ पृष्ट कठोर सो किमि सोहई ॥
रघुबीर रुचिर प्रयान प्रस्थिति जानि परम सुहावनी ।
जनु कमठ खर्पर सर्पराज सो लिखत अबिचल पावनी ॥ सुं० ३४/२ छं०

सही न जाइ कपिन्ह कै मारी । तब रावन माया बिस्तारी ॥ लं० ८८/६
सहे सुरन्ह बहु काल बिषादा । नरहरि किए प्रगट प्रहलादा ॥ अ० २६४/५
सत्रु मित्र सुख दुख जग माहीं । माया कृत परमारथ नाहीं ॥ कि० ६/१८
साखामृग कै बड़ि मनुसाई । साखा तें साखा पर जाई ॥ सुं० ३२/७
सागर निज मरजादाँ रहहीं । डारहिं रत्न तटन्हि नर लहहीं ॥ उ० २२/९
सागर सरि सर बिपिन अपारा । नाना भाँति सृष्टि बिस्तारा ॥ उ० ७९/७
साचेहुँ उन्ह कें मोह न माया । उदासीन धनु धामु न जाया ॥ बा० ९६/३
साजि बाजि गज बाहन नाना । भरत भूप दल कीन्ह पयाना ॥ अ० ३१९/६
सातवँ सम मोहि मय जग देखा । मोतें संत अधिक करि लेखा ॥ अर० ३५/३
सात्त्विक श्रद्धा धेनु सुहाई । जौं हरि कृपाँ हृदयँ बस आई ॥ उ० ११६/९
साथ किरात छ सातक दीन्हे । मुनिबर तुरत बिदा चर कीन्हे ॥ अ० २७१/८
साथ बोलाइ भाइ लघु दीन्हा । बिप्रन्ह सहित गवनु गुर कीन्हा ॥ अ० २०२/२
साथ लागि मुनि सिष्य बोलाए । सुनि मन मुदित पचासक आए ॥ अ० १०८/३
सादर अरघ देइ घर आने । सोरह भाँति पूजि सनमाने ॥ अ० ८/३
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही । मधुकर सरित संत गुनग्राही ॥ बा० ९/६
सादर कुसल पूछि मुनि ग्यानी । आसन बर बैठारे आनी ॥ अर० ११/११
सादर चरन सरोज पखारे । अति पुनीत आसन बैठारे ॥ बा० ४४/५
सादर जनकसुता करि आगें । एहि बिधि चलहु सकल भय त्यागें ॥ लं० १९/८
सादर जल लै चरन पखारे । पुनि सुंदर आसन बैठारे ॥ अर० ३३/१०
सादर तात सुनावहु मोही । बार बार बिनवउँ प्रभु तोही ॥ उ० ६३/४
सादर तेहि आगें करि बानर । चले जहाँ रघुपति करुनाकर ॥ सु० ४४/१
सादर पुनि पुनि पूँछति ओही । सबरी गान मृगी जनु मोही ॥ अ० १६/१
सादर पुनि भेंटे जामाता । रूप सील गुन निधि सब भ्राता ॥ बा० ३४०/२
सादर बोले सकल बराती । बिष्नु बिरंचि देव सब जाती ॥ बा० ९८/६
सादर भलेहिं मिलि एक माता । भगिनीं मिलीं बहुत मुसुकाता ॥ बा० ६२/२
सादर मज्जन पान किए तें । मिटहिं पाप परिताप हिये तें ॥ बा० ४२/६
सादर मिलेउ नाइ पद माथा । भेंटेउ अनुज सहित रघुनाथा ॥ कि० ३/७
सादर मोहि यह कथा सुनाई । पुनि बोले मुनि गिरा सुहाई ॥ उ० ११२/१०
सादर लगे परन पनवारे । कनक कील मनि परन सँवारे ॥ बा० ३२७/८
सादर सकल कुअँरि समुझाई । रानिन्ह बार बार उर लाई ॥ बा० ३३३/७
सादर सब कहँ रामगुर पठए भरि भरि भार ।
पूजि पितर सुर अतिथि गुर लगे करन फरहार ॥ अ० २७९/०
सादर सब के पाय पखारे । जथाजोगु पीढ़न्ह बैठारे ॥ बा० ३२७/३
सादर सियँ प्रसादु सिर धरेऊ । बोली गौरि हरषु हियँ भरेऊ ॥ बा० २३५/६

सानुज भरत उमगि अनुरागा । धरि सिर सिय पद पदुम परागा ॥ अ० २४१/३
सानुज भरत सचिव सब माता । देखि मोहि पल जिमि जुग जाता ॥ अ० २४७/६
सानुज मिलि पल महुँ सब काहू । कीन्ह दूरि दुखु दारुन दाहू ॥ अ० २४३/३
सानुज राम नृपहि सिर नाई । कीन्हि बहुत बिधि बिनय बड़ाई ॥ अ० ३१८/१
सानुज राम बिबाह उछाहू । सो सुभ उमग सुखद सब काहू ॥ बा० ४०/५
सानुज राम समर जसु पावन । मिलेउ महानदु सोन सुहावन ॥ बा० ३९/२
सानुज सखा समेत मगन मन । बिसरे हरष सोक सुख दुख गन ॥ अ० २३९/१

सानुज सीय समेत प्रभु राजत परन कुटीर ।
भगति ग्यानु बैराग्य जनु सोहत धरें सरीर ॥ अ० ३२१/०

सापत ताड़त परुष कहंता । बिप्र पूज्य अस गावहिं संता ॥ अ० ३३/१
साम दाम अरु दंड बिभेदा । नृप उर बसहिं नाथ कह बेदा ॥ लं० ३७/९
सामध देखि देव अनुरागे । सुमन बरषि जसु गावन लागे ॥ बा० ३१९/४
सायक एक नाभि सर सोषा । अपर लगे भुज सिर करि रोषा ॥ लं० १०२/१
सारद कोटि अमित चतुराई । बिधि सत कोटि सृष्टि निपुनाई ॥ उ० ९१/५
सारद कोटि कोटि सत सेषा । करि न सकहिं प्रभु गुन गन लेखा ॥ अ० १९९/८
सारद दारुनारि सम स्वामी । रामु सूत्रधर अंतरजामी ॥ बा० १०४/५
सारद प्रेरि तासु मति फेरी । मागेसि नीद मास षट केरी ॥ बा० १७६/८
सारद बोलि बिनय सुर करहीं । बारहिं बार पाय लै परहीं ॥ अ० १०/८

सारद सेस महेस बिधि आगम निगम पुरान ।
नेति नेति कहि जासु गुन करहिं निरंतर गान ॥ बा० १२/०

सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहुँ कोउ नहिं जाना ।
जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे द्रवउ सो श्रीभगवाना ॥
भव बारिधि मंदर सब बिधि सुंदर गुनमंदिर सुखपुंजा ।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा ॥ बा० १८५/४ छं०

सारंग कर सुंदर निषंग सिलीमुखाकर कटि कस्यो ।
भुजदंड पीन मनोहरायत उर धरासुर पद लस्यो ॥
कह दास तुलसी जबहिं प्रभु सर चाप कर फेरन लगे ।
ब्रह्मांड दिग्गज कमठ अहि महि सिंधु भूधर डगमगे ॥ लं० ८५/१ छं०

सालु तुम्हार कौसिलहि माई । कपट चतुर नहिं होइ जनाई ॥ अ० १७/४
सावकास सुनि सब सिय सासू । आयउ जनकराज रनिवासू ॥ अ० २८०/३
सावधान मन करि पुनि संकर । लागे कहन कथा अति सुंदर ॥ सुं० ३२/३
सावधान मानद मदहीना । धीर धर्म गति परम प्रबीना ॥ अर० ४४/९
सावधान सबही सनमानहिं । सकल सराहत कृपानिधानहिं ॥ अ० २७३/४
सावधान सुनु सुमुखि सुलोचनि । भरत कथा भव बंध बिमोचनि ॥ अ० २८७/३

सावधान होइ धाए जानि सबल आराति।
लागे बरसन राम पर अस्त्र सस्त्र बहु भाँति ॥ अर० १९/०(क)
सासति करि पुनि करहिं पसाऊ। नाथ प्रभुन्ह कर सहज सुभाऊ॥ बा० ८८/३
सासु ससुर अस कहेउ सँदेसू। पुत्रि फिरिअ बन बहुत कलेसू ॥ अ० ८१/४
सासु ससुर गुर प्रिय परिवारू। फिरहु त सब कर मिटै खभारू॥ अ० ९६/३
सासु ससुर सन मोरि हुँति बिनय करबि परि पायँ।
मोर सोचु जनि करिअ कछु मैं बन सुखी सुभायँ॥ अ० ९८/०
सासु ससुर सम मुनितिय मुनिबर। असनु अमिअ सम कंद मूल फर॥ अ० १३९/६
सासु सकल जब सीयँ निहारीं। मूदे नयन सहमि सुकुमारीं॥ अ० २४५/४
सासु समीप गए दोउ भाई। फिरे बंदि पग आसिष पाई॥ अ० ३१८/५
सासु ससुर गुर सेवा करेहू। पति रुख लखि आयसु अनुसरेहू॥ बा० ३३३/५
सासु ससुर गुर सजन सहाई। सुत सुंदर सुसील सुखदाई॥ अं० ६४/२
सासुन्ह सबनि मिली बैदेही। चरनन्हि लागि हरषु अति तेही॥ उ० ६/१
सासुन्ह सादर जानकिहि मज्जन तुरत कराइ।
दिब्य बसन बर भूषन अँग अँग सजे बनाइ॥ उ० ११/० (क)
सास्त्र सुचिंतित पुनि पुनि देखिअ। भूप सुसेवित बस नहिं लेखिअ॥ अर० ३६/८
साहस अनृत चपलता माया। भय अबिबेक असौच अदाया॥ लं० १५/३
सिअरें बचन सूखि गए कैसें। परसत तुहिन तामरसु जैसें॥ अ० ७०/८
सिखर एक उतंग अति देखी। परम रम्य सम सुभ्र बिसेषी॥ लं० १०/२
सिख सीतलि हित मधुर मृदु सुनि सीतहि न सोहानि।
सरद चंद चँदिनि लगत जनु चकई अकुलानि॥ अ० ७८/०
सिख हमारि सुनि परम पुनीता। जगदंबा जानहु जियँ सीता॥ बा० २४५/२
सिथिल अंग पग मग डगि डोलहिं। बिहबल बचन पेम बस बोलहिं॥ अ० २२४/४
सिथिल सनेहँ गुनत मन माहीं। आए इहाँ कीन्ह भल नाहीं॥ अ० २९१/२
सिथिल समाज सनेह समाधी। देखि दसा चुप सारद साधी॥ अ० ३०६/२
सिद्ध तपोधन जोगिजन सुर किंनर मुनिबृंद।
बसहिं तहाँ सुकृती सकल सेवहिं सिव सुखकंद॥ बा० १०५/०
सिद्ध बिरक्त महामुनि जोगी। तेपि कामबस भए बियोगी॥ बा० ८४/८
सिद्ध साधु मुनिबर अस कहहीं। भरतहि निरखि हरषु हियँ लहहीं॥ अ० २१६/६
सिधि सब सिय आयसु अकनि गईं जहाँ जनवास।
लिएँ संपदा सकल सुख सुरपुर भोग बिलास॥ बा० ३०६/०
सिबिका सुभग ओहार उघारी। देखि दुलहिनिन्ह होहिं सुखारी॥ बा० ३४७/८
सिबिका सुभग न जाहिं बखानी। चढ़ि चढ़ि चलत भईं सब रानी॥ अ० १८६/८
सिबि दधीचि बलि जो कछु भाषा। तनु धनु तजेउ बचन पनु राखा॥ अ० २९/७

सिबि दधीचि हरिचंद कहानी। एक एक सन कहहिं बखानी ॥ अ० ४७/५
सिबि दधीचि हरिचंद नरेसा। सहे धरम हित कोटि कलेसा॥ अ० ९४/३
सिय कर सोचु जनक पछितावा। रानिन्ह कर दारुन दुख दावा॥ बा० २५९/६
सिय निंदक अघ ओघ नसाए। लोक बिसोक बनाइ बसाए॥ बा० १५/३
सिय पितु मातु सनेह बस बिकल न सकी सँभारि।
धरनिसुताँ धीरजु धरेउ समउ सुधरमु बिचारि॥ अ० २८६/०
सिय बन बसिहि तात केहि भाँती। चित्रलिखित कपि देखि डेराती॥ अ० ५९/४
सिय बरनिअ तेइ उपमा देई। कुकबि कहाइ अजसु को लेई॥ बा० २४६/३
सिय बेषु सतीं जो कीन्ह तेहिं अपराध संकर परिहरीं।
हर बिरहँ जाइ बहोरि पितु कें जग्य जोगानल जरीं॥
अब जनमि तुम्हरे भवन निज पति लागि दारुन तपु किया।
अस जानि संसय तजहु गिरिजा सर्बदा संकर प्रिया॥ बा० ९७/१ छं०
सिय मनु राम चरन अनुरागा। अवध सहस सम बनु प्रिय लागा॥ अ० १३९/४
सिय मनु राम चरन अनुरागा। घरु न सुगमु बनु बिषमु न लागा॥ अ० ७७/५
सिय महिमा रघुनायक जानी। हरषे हृदयँ हेतु पहिचानी॥ बा० ३०६/३
सिय मुख छबि बिधु ब्याज बखानी। गुर पहिं चले निसा बड़ि जानी॥ बा० २३७/४
सिय रघुबीर कि कानन जोगू। करम प्रधान सत्य कह लोगू॥ अ० ९०/८
सिय रघुबीर बिबाहु जे सप्रेम गावहिं सुनहिं।
तिन्ह कहुँ सदा उछाहु मंगलायतन राम जसु॥ बा० ३६१/०सो०
सिय राम प्रेम पियूष पूरन होत जनमु न भरत को।
मुनि मन अगम जम नियम सम दम बिषम ब्रत आचरत को॥
दुख दाह दारिद दंभ दूषन सुजस मिस अपहरत को।
कलिकाल तुलसी से सठन्हि हठि राम सनमुख करत को॥ अ० ३२५/१ छं०
सिय सनेह बटु बाढ़त जोहा। ता पर राम पेम सिसु सोहा॥ अ० २८५/६
सिय समेत दोउ तनय निहारी। ब्याकुल भयउ भूमिपति भारी॥ अ० ७५/८
सिय सुंदरता बरनि न जाई। लघु मति बहुत मनोहरताई॥ बा० ३२२/१
सिय सुमंत्र भ्राता सहित कदं मूल फल खाइ।
सयन कीन्ह रघुबंसमनि पाय पलोटत भाइ॥ अ० ८९/०
सियँ सुरसरिहि कहेउ कर जोरी। मातु मनोरथ पुरउबि मोरी॥ अ० १०२/२
सिय सोभा नहिं जाइ बखानी। जगदंबिका रूप गुन खानी॥ बा० २४६/१
सिय सोभा हियँ बरनि प्रभु आपनि दसा बिचारि।
बोले सुचि मन अनुज सन बचन समय अनुहारि॥ बा० २३०/८
सिय सौमित्रि राम छबि देखहिं। साधन सकल सफल करि लेखहिं॥ अ० १३३/८
सिय सौमित्रि राम फल खाए। तब मुनि आश्रम दिए सुहाए॥ अ० १२४/४

सियहि बिलोकि तकेउ धनु कैसें। चितव गरुरु लघु ब्यालहि जैसें॥ बा० २५८/८
सिर अरु सैल कथा चित रही। ताते बार बीस तैं कही॥ लं० २८/७
सिरउ गिरे संतत सुभ जाही। मुकुट परे कस असगुन ताही॥ लं० १३/४
सिर जटा मुकुट प्रसून बिच बिच अति मनोहर राजहीं।
जनु नीलगिरि पर तड़ित पटल समेत उडुगन भ्राजहीं॥
भुजदंड सर कोदंड फेरत रुधिर कन तन अति बने।
जनु रायमुनीं तमाल पर बैठीं बिपुल सुख आपने॥ लं० १०२/२ छं०
सिर धरि आयसु करिअ तुम्हारा। परम धरम यह नाथ हमारा॥ बा० ७६/२
सिर धरि आयसु करिअ तुम्हारा। परम धरमु यहु नाथ हमारा॥ अ० २१२/३
सिर धरि गुर आयसु अनुसरहू। प्रजा पालि परिजन दुखु हरहू॥ अ० १७५/६
सिर धरि बचन चरन सिरु नाई। रथ चढ़ि चलत भए दोउ भाई॥ अ० १८७/७
सिर परसे प्रभु निज कर कंजा। तुरत उठाए करुनापुंजा॥ बा० १४७/८
सिर भर जाउँ उचित अस मोरा। सब तें सेवक धरमु कठोरा॥ अ० २०२/७
सिर भुज बाढ़ि देखि रिपु केरी। भालु कपिन्ह रिस भई घनेरी॥ लं० ९७/१
सिर भुज बाढ़ि सुनत रिपु केरी। सीता उर भइ त्रास घनेरी॥ लं० ९८/२
सिर लंगूर लपेटि पछारा। निज तनु प्रगटेसि मरती बारा॥ लं० ५७/५
सिर सरोज निज करन्हि उतारी। पूजेउँ अमित बार त्रिपुरारी॥ लं० २४/३
सिल्पि कर्म जानहिं नल नीला। है कपि एक महा बलसीला॥ लं० २२/५
सिव अज पूज्य चरन रघुराई। मो पर कृपा परम मृदुलाई॥ उ० १२३/३
सिव अज सुक सनकादिक नारद। जे मुनि ब्रह्म बिचार बिसारद॥ उ० १२१/१२
सिव अनुसासन सुनि सब आए। प्रभु पद जलज सीस तिन्ह नाए॥ बा० ९२/५
सिव अपमानु न जाइ सहि हृदयँ न होइ प्रबोध।
सकल सभहि हठि हटकि तब बोलीं बचन सक्रोध॥ बा० ६३/०
सिव चतुरानन जाहि डेराहीं। अपर जीव केहि लेखे माहीं॥ उ० ७०/८
सिव द्रोही मम भगत कहावा। सो नर सपनेहुँ मोहि न पावा॥ लं० १/७
सिव पद कमल जिन्हहिं रति नाहीं। रामहि ते सपनेहुँ न सोहाहीं॥ बा० १०३/५
सिवप्रिय मेकल सैल सुता सी। सकल सिद्धि सुख संपति रासी॥ बा० ३०/१३
सिव बिरंचि कहुँ मोहइ को है बपुरा आन।
अस जियँ जानि भजहिं मुनि माया पति भगवान॥ उ० ६२/० (ख)
सिव बिरंचि सुर मुनि समुदाई। चाहत जासु चरन सेवकाई॥ लं० २१/१
सिव ब्रह्मादिक बिबुध बरूथा। चढ़े बिमानन्हि नाना जूथा॥ बा० ३१३/२
सिवँ राखी श्रुति नीति अरु मैं नहिं पावा क्लेस।
एहि बिधि धरेउँ बिबिधि तनु ग्यान न गयउ खगेस॥ उ० १०९/० (घ)
सिव सम को रघुपति ब्रतधारी। बिनु अघ तजी सती असि नारी॥ बा० १०३/७

सिव समाज जब देखन लागे। बिडरि चले बाहन सब भागे ॥ बा० ९४/४

सिवँ समुझाए देव सब जनि आचरज भुलाहु।
हृदयँ बिचारहु धीर धरि सिय रघुबीर बिआहु ॥ बा० ३१४/०

सिव सेवक मन क्रम अरु बानी। आन देव निंदक अभिमानी ॥ उ० ९६/२

सिव सेवा कर फल सुत सोई। अबिरल भगति राम पद होई ॥ उ० १०५/२

सिवहि बिलोकि ससंकेउ मारू। भयउ जथाथिति सबु संसारू ॥ बा० ८५/२

सिवहि संभु गन करहिं सिंगारा। जटा मुकुट अहि मौरु सँवारा ॥ बा० ९१/१

सिसुपन तें परिहरेउँ न संगू। कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू ॥ अ० २५९/७

सिसु सब राम प्रेमबस जाने। प्रीति समेत निकेत बखाने ॥ बा० २२४/१

सिसु सेवकु आयसु अनुगामी। जानि मोहि सिख देइअ स्वामी ॥ अ० २९२/४

सीतल अमल मधुर जल जलज बिपुल बहुरंग।
कूजत कल रव हंस गन गुंजत मंजुल भृंग ॥ उ० ५६/०

सीतलता सरलता मयत्री। द्विज पद प्रीति धर्म जनयत्री ॥ उ० ३७/६

सीतल निसित बहसि बर धारा। कह सीता हरु मम दुख भारा ॥ सुं० ९/६

सीतल मंद सुगंध सुभाऊ। संतत बहइ मनोहर बाऊ ॥ अर० ३९/८

सीतल मंद सुरभि बह बाऊ। हरषित सुर संतन मन चाऊ ॥ बा० १९०/३

सीतल सिख दाहक भइ कैसें। चकइहि सरद चंद निसि जैसें ॥ अ० ६३/२

सीतल सुरभि पवन बह मंदा। गुंजत अलि लै चलि मकरंदा ॥ उ० २२/४

सीतहि चितइ कही प्रभु बाता। अहइ कुआर मोर लघु भ्राता ॥ अर० १६/११

सीतहि जान चढ़ाइ बहोरी। चला उताइल त्रास न थोरी ॥ अर० २८/२३

सीतहि पहिराए प्रभु सादर। बैठे फटिक सिला पर सुंदर ॥ अर० ०/४

सीतहि सभय देखि रघुराई। कहा अनुज सन सयन बुझाई ॥ अर० १६/२०

सीतहि सासु असीस सिख दीन्हि अनेक प्रकार।
चली नाइ पद पदुम सिरु अति हित बारहिं बार ॥ अ० ६९/०

सीता अनुज समेत प्रभु नील जलद तनु स्याम।
मम हियँ बसहु निरंतर सगुनरूप श्रीराम ॥ अर० ८/०

सीता केरि करेहु रखवारी। बुधि बिबेक बल समय बिचारी ॥ अर० २६/९

सीता कै अति बिपति बिसाला। बिनहिं कहें भलि दीनदयाला ॥ सुं० ३०/९

सीता कै बिलाप सुनि भारी। भए चराचर जीव दुखारी ॥ अर० २८/६

सीता चरन चोंच हति भागा। मूढ़ मंदमति कारन कागा ॥ अर० ०/७

सीता चरन भरत सिरु नावा। अनुज समेत परम सुख पावा ॥ उ० ५/२

सीता चितव स्याम मृदु गाता। परम प्रेम लोचन न अघाता ॥ अर० २०/३

सीता तैं मम कृत अपमाना। कटिहउँ तव सिर कठिन कृपाना ॥ सुं० ९/१

सीतापति सेवक सेवकाई। कामधेनु सय सरिस सुहाई ॥ अ० २६५/१

सीता परम रुचिर मृग देखा। अंग अंग सुमनोहर बेषा॥ अर० २६/३
सीता प्रथम अनल महुँ राखी। प्रगट कीन्हि चह अंतर साखी॥ लं० १०७/१४
सीता मन बिचार कर नाना। मधुर बचन बोलेउ हनुमाना॥ सुं० १२/४
सीता मन भरोस तब भयऊ। पुनि लघु रूप पवनसुत लयऊ॥ सुं० १५/९
सीता रघुपति मिलन बहोरी। सुरन्ह कीन्हि अस्तुति कर जोरी॥ उ० ६७/३
सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ।
वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ॥ बा० श्लोक ४
सीता राम चरन रति मोरें। अनुदिन बढ़उ अनुग्रह तोरें॥ अ० २०४/२
सीता राम संग बनबासू। कोटि अमरपुर सरिस सुपासू॥ अ० २७९/३
सीता लखन सहित रघुराई। गाँव निकट जब निकसहिं जाई॥ अ० ११३/१
सीता सचिव सहित दोउ भाई। सृंगबेरपुर पहुँचे जाई॥ अ० ८६/१
सीता सहित अवध कहुँ कीन्ह कृपाल प्रनाम।
सजल नयन तन पुलकित पुनि पुनि हरषित राम॥ लं० १२०/० (क)
सीता हरन तात जनि कहहु पिता सन जाइ।
जौं मैं राम त कुल सहित कहिहि दसानन आइ॥ अर० ३१/०
सीते पुत्रि करसि जनि त्रासा। करिहउँ जातुधान कर नासा॥ अर० २८/९
सीम कि चाँपि सकइ कोउ तासू। बड़ रखवार रमापति जासू॥ बा० १२५/८
सीयँ असीस दीन्हि मन माहीं। मगन सनेहँ देह सुधि नाहीं॥ अ० २४१/५
सीय आइ मुनिबर पग लागी। उचित असीस लही मन मागी॥ अ० २४५/१
सीय कि पिय सँगु परिहरिहि लखनु कि रहिहहिं धाम।
राजु कि भूँजब भरत पुर नृपु कि जिइहि बिनु राम॥ अ० ४९/०
सीय चकित चित रामहि चाहा। भए मोहबस सब नरनाहा॥ बा० २४७/७
सीय चलत ब्याकुल पुरबासी। होहिं सगुन सुभ मंगल रासी॥ बा० ३३८/३
सीय बिआहबि राम गरब दूरि करि नृपन्ह के।
जीति को सक संग्राम दसरथ के रन बाँकुरे॥ बा० २४५/० सो०
सीय बिलोकि धीरता भागी। रहे कहावत परम बिरागी॥ बा० ३३७/५
सीय मातु कह बिधि बुधि बाँकी। जो पय फेनु फोर पबि टाँकी॥ अ० २८०/८
सीय मातु कह सत्य सुबानी। सुकृती अवधि अवधपति रानी॥ अ० २८१/८
सीय मातु तेहि समय पठाईं। दासीं देखि सुअवसरु आईं॥ अ० २८०/२
सीय राम पद अंक बराएँ। लखन चलहिं मगु दाहिन लाएँ॥ अ० १२२/६
सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी॥ बा० ७/२
सीय लखन जन सहित सुहाए। अति रुचि राम मूल फल खाए॥ अ० १०६/३
सीय लखन जेहि बिधि सुखु लहहीं। सोइ रघुनाथ करहिं सोइ कहहीं॥ अ० १४०/१
सीय सकुच बस उतरु न देई। सो सुनि तमकि उठि कैकेई॥ अ० ७८/१

सीय समीप ग्रामतिय जाहीं । पूँछत अति सनेहँ सकुचाहीं ॥ अ० ११५/४
सीय सहित सुत सुभग दोउ देखि देखि अकुलाइ ।
बारहिं बार सनेह बस राउ लेइ उर लाइ ॥ अ० ७६/०
सीय सासु प्रति बेष बनाई । सादर करइ सरिस सेवकाई ॥ अ० २५१/२
सीय सासु सेवा बस कीन्हीं । तिन्ह लहि सुख सिख आसिष दीन्हीं ॥ अ० २५१/४
सीय सुखहि बरनिअ केहि भाँती । जनु चातकी पाइ जल स्वाती ॥ बा० २६२/६
सीय सँवारि समाजु बनाई । मुदित मंडपहिं चलीं लवाई ॥ बा० ३२१/८
सीय स्वयंबर कथा सुहाई । सरित सुहावनि सो छबि छाई ॥ बा० ४०/१
सीय स्वयंबर भूप अनेका । समिटे सुभट एक तें एका ॥ बा० २९१/४
सीय स्वयंबरु देखिअ जाई । ईसु काहि धौं देइ बड़ाई ॥ बा० २३९/१
सील कि मिल बिनु बुध सेवकाई । जिमि बिनु तेज न रूप गोसाँई ॥ उ० ८९/६
सील सकुच सुठि सरल सुभाऊ । कृपा सनेह सदन रघुराऊ ॥ अ० १८२/५
सील संकोच सिंधु रघुराऊ । सुमुख सुलोचन सरल सुभाऊ ॥ अ० २७३/६
सील सराहि सभा सब सोची । कहुँ न राम सम स्वामि सँकोची ॥ अ० ३१२/४
सीलसिंधु सुनि गुर आगवनू । सिय समीप राखे रिपुदवनू ॥ अ० २४२/१
सीलु सनेहु छाड़ि नहिं जाई । असमंजस वस भे रघुराई ॥ अ० ८४/५
सीलु सनेहु सकल दुहु ओरा । द्रवहिं देखि सुनि कुलिस कठोरा ॥ अ० २८०/५
सीस जटा कटि मुनि पट बाँधें । तून कसें कर सरु धनु काँधें ॥ अ० २३८/५
सीस जटा ससिबदनु सुहावा । रिसबस कछुक अरुन होइ आवा ॥ बा० २६७/५
सीस नवहिं सुर गुर द्विज देखी । प्रीति सहित करि बिनय बिसेषी ॥ अ० १२८/३
सुकबि कुकबि निज मति अनुहारी । नृपहि सराहत सब नर नारी ॥ बा० २७/७
सुकबि सरद नभ मन उडगन से । रामभगत जन जीवन धन से ॥ बा० ३१/१२
सुक सनकादि भगत मुनि नारद । जे मुनिबर बिग्यान बिसारद ॥ बा० १७/५
सुक सनकादि सिद्ध मुनि जोगी । नाम प्रसाद ब्रह्मसुख भोगी ॥ बा० २५/२
सुक सारिका जानकी ज्याए । कनक पिंजरन्हि राखि पढ़ाए ॥ बा० ३३७/१
सुक सारिका पढ़ावहिं बालक । कहहु राम रघुपति जनपालक ॥ उ० २७/७
सुकृतु जाइ जौं पनु परिहरऊँ । कुअँरि कुआरि रहउ का करऊँ ॥ बा० २५१/५
सुकृत जाहिं अस कहत तुम्हारे । रामु भरत कहुँ प्रानपिआरे ॥ अ० ४७/८
सुकृत पुंज मंजुल अलि माला । ग्यान बिराग बिचार मराला ॥ बा० ३६/७
सुकृत सील सुख सीवँ सुहाई । जनम लाभ कइ अवधि अघाई ॥ अ० ५१/८
सुकृत सुजस भरि भुअन सुहाए । लछिमन राम सरिस सुत पाए ॥ अ० २१०/६
सुकृतु सुजसु परलोकु नसाऊ । तुम्हहि जान बन कहिहि न काऊ ॥ अ० ७८/४
सुकृति संभु तन बिमल बिभूती । मंजुल मंगल मोद प्रसूती ॥ बा० ०/३
सुकृती तुम्ह समान जग माहीं । भयउ न है कोउ होनेउ नाहीं ॥ बा० २९३/५

सुकृती साधु नाम गुन गाना । ते बिचित्र जल बिहग समाना ॥ बा० ३६/११
सुख चाहहिं मूढ़ न धर्म रता । मति थोरि कठोरि न कोमलता ॥ उ० १०१/२ छं०
सुख जुत कछुक काल चलि गयऊ । जेहिं प्रभु प्रगट सो अवसर भयऊ ॥ बा० १८९/८
सुखनिधान अस पितु गृह मोरें । पिय बिहीन मन भाव न भोरें ॥ अ० ९७/२
सुख मकरंद भरे श्रियमूला । निरखि राम मनु भवँरु न भूला ॥ अ० ५२/४
सुख मंदिर सुंदर श्रीरमनं । मद मार मुधा ममता समनं ॥ लं० ११०/१४ छं०
सुख समाजु नहिं जाइ बखानी । देखत बिरति बिसारहिं ग्यानी ॥ अ० २१४/२
सुख समेत संबत दुइ साता । पल सम होहिं न जनिअहिं जाता ॥ अ० २७९/८
सुख संतोष बिराग बिबेका । बिगत सोक ए कोक अनेका ॥ उ० ३०/८

सुख संदोह मोहपर ग्यान गिरा गोतीत ।
दंपति परम प्रेम बस कर सिसुचरित पुनीत ॥ बा० १९९/०

सुख संपति परिवार बड़ाई । सब परिहरि करिहउँ सेवकाई ॥ कि० ६/१६
सुख संपति सुत सेन सहाई । जय प्रताप बल बुद्धि बड़ाई ॥ बा० १७९/१

सुखस्वरूप रघुबंसमनि मंगल मोद निधान ।
ते सोवत कुस डासि महि बिधि गति अति बलवान ॥ अ० २००/०

सुख हरषहिं जड़ दुख बिलखाहीं । दोउ सम धीर धरहिं मन माहीं ॥ अ० १४९/७
सुखी मीन जे नीर अगाधा । जिमि हरि सरन न एकउ बाधा ॥ कि० १६/१

सुखी मीन सब एकरस अति अगाध जल माहिं ।
जथा धर्मसीलन्ह के दिन सुख संजुत जाहिं ॥ अ० ३९/० (ख)

सुखु पायउ बिरंचि रचि तेही । ए जेहि के सब भाँति सनेही ॥ अ० १२१/७
सुखु बिदेह कर बरनि न जाई । जन्मदरिद्र मनहुँ निधि पाई ॥ बा० २८५/३
सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे । अरथु अमित अति आखर थोरे ॥ अ० २९३/२
सुगम उपाय पाइबे केरे । नर हतभाग्य देहिं भटभेरे ॥ उ० ११९/१२
सुग्रीवहि प्रथमहिं पहिराए । बसन भरत निज हाथ बनाए ॥ उ० १६/६
सुग्रीवहु कै मुरुछा बीती । निबुकि गयउ तेहि मृतक प्रतीती ॥ लं० ६५/५
सुग्रीवहुँ सुधि मोरि बिसारी । पावा राज कोस पुर नारी ॥ कि० १७/४
सुचि फल मूल मधुर मृदु जानी । दोना भरि भरि राखेसि पानी ॥ अ० ८८/८

सुचि सुबिचित्र सुभोगमय सुमन सुगंध सुबास ।
पलँग मंजु मनिदीप जहँ सब बिधि सकल सुपास ॥ अ० ९०/०

सुचि सुसील सेवक सुमति प्रिय कहु काहि न लाग ।
श्रुति पुरान कह नीति असि सावधान सुनु काग ॥ उ० ८६/०

सुचि सुंदर आश्रमु निरखि हरषे राजिवनेन ।
सुनि रघुबर आगमनु मुनि आगें आयउ लेन ॥ अ० १२४/०

सुजन समाज सकल गुन खानी । करउँ प्रनाम सप्रेम सुबानी ॥ बा० १/४

सुजस पुरान बिदित निगमागम । गावत सुर मुनि संत समागम ॥ उ० ५०/७
सुजसु सुकृत सुख सुंदरताई । सब समेटि बिधि रची बनाई ॥ बा० ३२३/२
सुठि सुकुमार कुमार दोउ जनकसुता सुकुमारि ।
रथ चढ़ाइ देखराइ बनु फिरेहु गएँ दिन चारि ॥ अ० ८१/०
सुठि सुंदर संबाद बर बिरचे बुद्धि बिचारि ।
तेइ एहि पावन सुभग सर घाट मनोहर चारि ॥ बा० ३६/०
सुतन्ह समेत दसरथहि देखी । मुदित नगर नर नारि बिसेषी ॥ बा० ३०८/३
सुतन्ह समेत नहाइ नृप बोलि बिप्र गुर ग्याति ।
भोज कीन्ह अनेक बिधि घरी पंच गइ राति ॥ बा० ३५४/०
सुतन्ह समेत पूजि पद लागे । निरखि रामु दोउ गुर अनुरागे ॥ बा० ३५८/४
सुत बध सुना दसानन जबहीं । मुरुछित भयउ परेउ महि तबहीं ॥ लं० ७६/६
सुत बित नारि भवन परिवारा । होहिं जाहिं जग बारहिं बारा ॥ लं० ६०/७
सुत बित लोक ईषना तीनी । केहि कै मति इन्ह कृत न मलीनी ॥ उ० ७०/६
सुत बिलोकि हरषीं महतारी । बार बार आरती उतारी ॥ उ० ११/६
सुत बिषइक तव पद रति होऊ । मोहि बड़ मूढ़ कहै किन कोऊ ॥ बा० १५०/५
सुत मानहिं मातु पिता तब लौं । अवलानन दीख नहीं जब लौं ॥ उ० १००/४ छं०
सुत सन कह दसकंठ रिसाई । असि मति सठ केहिं तोहि सिखाई ॥ लं० ९/२
सुत सनेहु इत बचनु उत संकट परेउ नरेसु ।
सकहु त आयसु धरहु सिर मेटहु कठिन कलेसु ॥ अ० ४०/०
सुत समूह जन परिजन नाती । गनै को पार निसाचर जाती ॥ बा० १८०/३
सुत हियँ लाइ दुसह दुख मेटे । मृतक सरीर प्रान जनु भेंटे ॥ बा० ३०७/४
सुतहि राजु रामहि बनबासू । देहु लेहु सब सवति हुलासू ॥ अ० २१/६
सुतहि ससोच देखि मनु मारें । पूँछति नैहर कुसल हमारें ॥ अ० १५८/६
सुता सुलच्छन कहि नृप पाहीं । नारद चले सोच मन माहीं ॥ बा० १३०/६
सुदिन सुघरी तात कब होइहि । जननी जिअत बदन बिधु जोइहि ॥ अ० ६७/८
सुदिन सोधि कल कंकन छोरे । मंगल मोद बिनोद न थोरे ॥ बा० ३५९/१
सुदिन सोधि सबु साजु सजाई । देउँ भरत कहुँ राजु बजाई ॥ अ० ३०/८
सुदिनु सुनखतु सुघरी सोचाई । बेगि बेदबिधि लगन धराई ॥ बा० ९०/४
सुदिनु सुमंगल दायकु सोई । तोर कहा फुर जेहि दिन होई ॥ अ० १४/२
सुदिनु सोधि मुनिबर तब आए । सचिव महाजन सकल बोलाए ॥ अ० १७०/२
सुद्ध भएँ दुइ बासर बीते । बोले गुर सन राम पिरीते ॥ अ० २४७/४
सुद्ध सच्चिदानंदमय कंद भानुकुल केतु ।
चरित करत नर अनुहरत संसृति सागर सेतु ॥ अ० ८७/०
सुद्ध सत्व समता बिग्याना । कृत प्रभाव प्रसन्न मन जाना ॥ उ० १०३/२

सुनत बचन बिसमित महतारी । सपन सुनायउ गिरिहि हँकारी ।। बा० ७२/६
सुनत बचन बिहसा दससीसा । जौं असि मति सहाय कृत कीसा ।। सुं० ५५/४
सुनत बचन बिहसे रिषय गिरिसंभव तव देह ।
नारद कर उपदेसु सुनि कहहु बसेउ किसु गेह ।। बा० ७८/०
सुनत बचन फिरि अनत निहारे। देखे चापखंड महि डारे ।। बा० २६९/२
सुनत बचन मृदु दीनदयाला। सजल भए द्वौ नयन बिसाला ।। लं० ११५/८
सुनत बचन रावन परजरा । जरत महानल जनु घृत परा ।। लं० २६/८
सुनत बात मृदु अंत कठोरी । देति मनहुँ मधु माहुर घोरी ।। अ० २१/३
सुनत बालि क्रोधातुर धावा । गहि कर चरन नारि समुझावा ।। कि० ६/२७
सुनत बिनीत बचन अति कह कृपाल मुसुकाइ ।
जेहि बिधि उतरै कपि कटकु तात सो कहहु उपाइ ।। सुं० ५९/०
सुनत बिनीत बचन सुख पावा । लछिमन तेहि बहु बिधि समुझावा ।। कि० १९/८
सुनत बिभीषनु प्रभु कै बानी। नहिं अघात श्रवनामृत जानी ।। सुं० ४८/१
सुनत बिभीषन बचन कृपाला । हरषि गहे कर बान कराला ।। लं० १०१/६
सुनत बिभीषन बचन राम के । हरषि गहे पद कृपाधाम के ।। लं० ११६/१
सुनत बिमल गुन अति सुख पावहिं । बहुरि बहुरि करि बिनय कहावहिं ।। उ० २५/६
सुनत बिहसि बोला दसकंधर। अंग भंग करि पठइअ बंदर ।। सुं० २३/९
सुनत बिहँसि बोला दससीसा। आनहु बोलि कहाँ कर कीसा ।। लं० १८/२
सुनत बिहसि बोले रघुबीरा। ऐसेहिं करब धरहु मन धीरा ।। सुं० ५०/५
सुनत भरतु भए बिबस बिषादा। जनु सहमेउ करि केहरि नादा ।। अ० १५९/२
सुनत राम अति कोमल बानी। बालि सीस परसेउ निज पानी ।। कि० ९/१
सुनत राम अभिषेक सुहावा । बाज गहागह अवध बधावा ।। अ० ६/३
सुनत राम गुन ग्राम सुहाए । भरद्वाज मुनिबर पहिं आए ।। अ० २०५/३
सुनत लखन के बचन कठोरा । परसु सुधारि धरेउ कर घोरा ।। बा० २७४/२
सुनत लखन सिय राम सँदेसू । तृन जिमि तनु परिहरिहि नरेसू ।। अ० १४५/८
सुनत सकल जननीं उठि धाईं। कहि प्रभु कुसल भरत समुझाईं ।। उ० २/२
सुनत सभय मन मुख मुसुकाई। कहत दसानन सबहि सुनाई ।। सुं० ५६/१
सुनत सभासद उठे अकुलाई । समुझाई गहि बाँह उठाई ।। अर० २१/१
सुनत सुधासम बचन राम के । गहे सबनि पद कृपाधाम के ।। उ० ४६/१
सुनत सुमंगल बैन मन प्रमोद तन पुलक भर ।
सरद सरोरुह नैन तुलसी भरे सनेह जल ।। अ० २२६/० सो०
सुनत श्रवन बारिधि बंधाना । दस मुख बोलि उठा अकुलाना ।। लं० ४/१०
सुनतहिं लखनु चले उठि साथा । रहहिं न जतन किए रघुनाथा ।। अ० १६५/२
सुनतेउँ किमि हरि कथा सुहाई। अति बिचित्र बहु बिधि तुम्ह गाई ।। उ० ६८/५

सुनहि बिनय मम बिटप असोका । सत्य नाम करु हरु मम सोका ॥ सुं० ११/१०
सुनहिं बिमुक्त बिरत अरु बिषई । लहहिं भगति गति संपति नई ॥ उ० १४/५
सुनहि मातु मैं दीख अस सपन सुनावउँ तोहि ।
सुंदर गौर सुबिप्रबर अस उपदेसेउ मोहि ॥ बा० ७२/०
सुनहिं सकल मति बिमल मराला । बसहिं निरंतर जे तेहिं काला ॥ उ० ५६/९
सुनहि सती तव नारि सुभाऊ । संसय अस न धरिअ उर काऊ ॥ बा० ५०/६
सुनहु असंतन्ह केर सुभाऊ । भूलेहुँ संगति करिअ न काऊ ॥ उ० ३८/१
सुनहु उदार सहज रघुनायक । सुंदर अगम सुगम बर दायक ॥ अर० ४१/१
सुनहु उमा ते लोग अभागी । हरि तजि होहिं बिषय अनुरागी ॥ अर० ३२/३
सुनहु तात अब मानस रोगा । जिन्ह ते दुख पावहिं सब लोगा ॥ उ० १२०/२८
सुनहु तात जेहि कारन आयउँ । सो सब भयउ दरस तव पायउँ ॥ उ० ६३/१
सुनहु तात तुम्ह कहुँ मुनि कहहीं । रामु चराचर नायक अहहीं ॥ अ० ७६/६
सुनहु तात माया कृत गुन अरु दोष अनेक ।
गुन यह उभय न देखिअहिं देखिअ सो अबिबेक ॥ उ० ४१/०
सुनहु तात यह अकथ कहानी । समुझत बनइ न जाइ बखानी ॥ उ० ११६/१
सुनहु देव रघुबीर कृपाला । एहि मृग कर अति सुंदर छाला ॥ अर० २६/४
सुनहु देव सचराचर स्वामी । प्रनतपाल उर अंतरजामी ॥ सुं० ४८/५
सुनहु नाथ कह मुदित बिदेहू । ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू ॥ बा० २१६/४
सुनहु नाथ तुम्ह सहज सुजाना । बालक बचनु करिअ नहिं काना ॥ बा० २७८/२
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें । हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें ॥ सुं० ३५/१०
सुनहु नील अंगद हनुमाना । जामवंत मतिधीर सुजाना ॥ कि० २२/१
सुनहु परम पुनीत इतिहासा । जो सुनि सकल लोक भ्रम नासा ॥ उ० ५४/८
सुनहु पवनसुत रहनि हमारी । जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी ॥ सुं० ६/१
सुनहु प्रानप्रिय भावत जी का । देहु एक बर भरतहि टीका ॥ अ० २८/१
सुनहु प्रिया ब्रत रुचिर सुसीला । मैं कछु करबि ललित नरलीला ॥ अर० २३/१
सुनहु बचन मम परिहरि क्रोधा । नाथ राम सन तजहु बिरोधा ॥ सुं० ५६/४
सुनहु बिभीषन प्रभु कै रीती । करहिं सदा सेवक पर प्रीती ॥ सुं० ६/६
सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ ।
हानि लाभु जीवनु मरनु जसु अपजसु बिधि हाथ ॥ अ० १७१/०
सुनहु भरत रघुबर मन माहीं । पेम पात्रु तुम्ह सम कोउ नाहीं ॥ अ० २०७/३
सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं । उदासीन तापस बन रहहीं ॥ अ० २०९/३
सुनहु भरत हम सब सुधि पाई । बिधि करतब पर किछु न बसाई ॥ अ० २०५/८
सुनहु भानुकुल केतु जामवंत कर जोरि कह ।
नाथ नाम तव सेतु नर चढ़ि भव सागर तरहिं ॥ लं० ०/३ (ग) सो०

सुनहु भानुकुल पंकज भानू । कहउँ सुभाउ न कछु अभिमानू ॥ बा० २५२/३
सुनहु महीपति मुकुट मनि तुम्ह सम धन्य न कोउ ।
रामु लखनु जिन्ह के तनय बिस्व बिभूषन दोउ ॥ बा० २९१/०
सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा । लागि देखि सुंदर फल रूखा ॥ सुं० १६/७
सुनहु राम अब कहउँ निकेता । जहाँ बसहु सिय लखन समेता ॥ अ० १२७/३
सुनहु राम कर सहज सुभाऊ । जन अभिमान न राखहिं काऊ ॥ उ० ७३/५
सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा । सहसबाहु सम सो रिपु मोरा ॥ बा० २७०/४
सुनहु राम सबु कारन एहू । राजहि तुम्ह पर बहुत सनेहू ॥ अ० ३९/६
सुनहु राम सरबग्य सुजाना । धरम नीति गुन ग्यान निधाना ॥ अ० २५६/८
सुनहु राम स्वामी सन चल न चातुरी मोरि ।
प्रभु अजहुँ मैं पापी अंतकाल गति तोरि ॥ कि० ९/०
सुनहु लखन भल भरत सरीसा । बिधि प्रपंच महँ सुना न दीसा ॥ अ० २३०/८
सुनहु सकल पुरजन मम बानी । कहउँ न कछु ममता उर आनी ॥ उ० ४२/३
सुनहु सकल रजनीचर जूथा । हमरे बैरी बिबुध बरूथा ॥ बा० १८०/५
सुनहु सखा कह कृपानिधाना । जेहिं जय होई सो स्यंदन आना ॥ लं० ७९/४
सुनहु सखा निज कहउँ सुभाऊ । जान भुसुंडि संभु गिरिजाऊ ॥ सुं० ४७/१
सुनहु सभासद सकल मुनिंदा । कही सुनी जिन्ह संकर निंदा ॥ बा० ६३/१
सुनहु सुभट सब कह दससीसा । पद गहि धरनि पछारहु कीसा ॥ लं० ३३/१०
सुना चहउँ प्रभु तिन्ह कर लच्छन । कृपासिंधु गुन ग्यान बिचच्छन ॥ उ० ३६/४
सुनासीर मन महुँ असि त्रासा । चहत देवरिषि मम पुर बासा ॥ बा० १२४/७
सुनासीर सत सरिस सो संतत करइ बिलास ।
परम प्रबल रिपु सीस पर तद्यपि सोच न त्रास ॥ लं० १०/०
सुनिअ तहाँ हरि कथा सुहाई । नाना भाँति मुनिन्ह जो गाई ॥ उ० ६०/५
सुनि अति बिकल भरत बर बानी । आरति प्रीति बिनय नय सानी ॥ अ० २६२/१
सुनि अनुकथन परस्पर होई । पथिक समाज सोह सरि सोई ॥ बा० ४०/३
सुनि अवलोकि सुचित चख चाही । भगति मोरि मति स्वामि सराही ॥ बा० २८/३
सुनि अस उकुति पवनसुत केरी । हरषे कपि रघुपति तन हेरी ॥ लं० ०/४
सुनि अस ब्याहु सगुन सब नाचे । अब कीन्हे बिरंचि हम साँचे ॥ बा० ३०३/३
सुनिअ सुधा देखिअहिं गरल सब करतूति कराल ।
जहँ तहँ काक उलूक बक मानस सकृत मराल ॥ अ० २८१/०
सुनि आगवनु दसानन केरा । कपिदल खरभर भयउ घनेरा ॥ लं० ९९/१०
सुनि आचरज करै जनि कोई । सतसंगति महिमा नहिं गोई ॥ बा० २/२
सुनि आनंदु भयउ सब काहू । राम लखन उर अधिक उछाहू ॥ बा० ३५८/८
सुनि उरगारि बचन सुख माना । सादर बोलेउ काग सुजाना ॥ उ० ११४/१२

सुनि अंगद सकोप कह बानी । बोलु सँभारि अधम अभिमानी ॥ लं० २५/१
सुनि कटु बचन कुठार सुधारा । हाय हाय सब सभा पुकारा ॥ बा० २७५/५
सुनि कठोर बानी कपि केरी । कहत दसानन नयन तरेरी ॥ लं० २१/३
सुनि कपि बचन बहुत खिसिआना । बेगि न हरहु मूढ़ कर प्राना ॥ सुं० २३/५
सुनि कपि भालु चले करि हूहा । जय रघुबीर प्रताप समूहा ॥ लं० ०/१०
सुनि कपि मन उपजा अभिमाना । मोरें भार चलिहि किमि बाना ॥ लं० ५९/७
सुनि कपीस बहु दूत पठाए । मुनिबर सकल बोलि लै आए ॥ लं० १/५
सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे ।
बिहसे करुनाऐन चितइ जानकी लखन तन ॥ अ० १००/० सो०
सुनि कृपाल अति आरत बानी । एकनयन करि तजा भवानी ॥ अर० १/१४
सुनि कृपाल सागर मन पीरा । तुरतहिं हरी राम रनधीरा ॥ सुं० ५९/६
सुनि खग हरष सोक जुत बानी । आवा निकट कपिन्ह भय मानी ॥ कि० २६/९
सुनि खल बचन दूत रिस बाढ़ी । समय बिचारि पत्रिका काढ़ी ॥ सुं० ५५/८
सुनि गुन गान समाधि बिसारी । सादर सुनहिं परम अधिकारी ॥ उ० ४१/८
सुनि गुन देखि दसा पछिताहीं । कैकइ जननि जोगु सुतु नाहीं ॥ अ० २२२/४
सुनि गुर करि महिपाल बड़ाई । पुनि पठए मुनि बृंद बोलाई ॥ बा० ३२९/८
सुनि गुह कहइ नीक कह बूढ़ा । सहसा करि पछिताहिं बिमूढ़ा ॥ अ० १९१/७
सुनि गुर गिरा सुमंगल मूला । भयउ मनहुँ मारुत अनुकूला ॥ अ० २४८/२
सुनि गुर परिजन सचिव महीपति । भे सब सोच सनेहँ बिकल अति ॥ अ० २७१/२
सुनि गुरु बचन चरन सिरु नावा । हरषु बिषादु न कछु उर आवा ॥ बा० २५३/७
सुनि जानकीं परम सुखु पावा । सादर तासु चरन सिरु नावा ॥ अर० ५/१
सुनि तन पुलकि नयन भरि बारी । बोले भरतु धीर धरि भारी ॥ अ० २९२/१
सुनि तव प्रस्न सप्रेम सुहाई । बहुत जनम कै सुधि मोहि आई ॥ उ० ९४/३
सुनि ता करि बिनती मृदु बानी । प्रेम सहित मैं कहेउँ भवानी ॥ उ० ६०/२
सुनि दसकंठ रिसान अति तेहिं मन कीन्ह बिचार ।
राम दूत कर मरौं बरु यह खल रत मल भार ॥ लं० ५६/०
सुनि दसकंधर बचन तब कुंभकरन बिलखान ।
जगदंबा हरि आनि अब सठ चाहत कल्यान ॥ लं० ६२/०
सुनि दारुन दुखु दुहूँ समाजा । लगे चलन के साजन साजा ॥ अ० ३१७/६
सुनि दुर्बचन कालबस जाना । बिहँसि बचन कह कृपानिधाना ॥ लं० ८९/९
सुनि नभगिरा सती उर सोचा । पूछा सिवहि समेत सकोचा ॥ बा० ५६/६
सुनि नभगिरा हरष मोहि भयऊ । प्रेम मगन सब संसय गयऊ ॥ उ० ११३/७
सुनि नारद के बचन तब सब कर मिटा बिषाद ।
छन महुँ ब्यापेउ सकल पुर घर घर यह संबाद ॥ बा० ९८/०

सुनि नारदहि लागि अति दाया। सुनु खग प्रबल राम कै माया॥ उ० ५८/४
सुनि निषादु निज भाग बड़ाई। प्रमुदित मन लइ चलेउ लेवाई॥ अ० १९५/८
सुनि नृप गिरा प्रेम रस सानी। हृदयँ हरष माना मुनि ग्यानी॥ बा० २०७/७
सुनि पति बचन कहति बैदेही। सुनहु प्रानपति परम सनेही॥ अ० ९६/४
सुनि पति बचन हरषि मन माहीं। गई तुरत उठि गिरिजा पाहीं॥ बा० ७१/५
सुनि पन सकल भूप अभिलाषे। भटमानी अतिसय मन माखे॥ बा० २४९/५
सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता। अधिक सनेहु समात न गाता॥ बा० २९०/१
सुनि पितु गिरा परुष अति घोरा। चला भवन कहि बचन कठोरा॥ लं० ९/४
सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी। एवमस्तु तब कहेउ भवानी॥ सुं० ३३/२
सुनि प्रभु बचन अधिक अनुरागेउँ। मन अनुमान करन तब लागेउँ॥ उ० ८३/३
सुनि प्रभु बचन कहहिं कपिबृंदा। जय जय जय कृपाल सुखकंदा॥ सुं० ३३/५
सुनि प्रभु बचन जोरि जुग पानी। धरि धीरजु बोली मृदु बानी॥ बा० १४८/१
सुनि प्रभु बचन बिभीषन हरषि गहे पद कंज।
एहि मिस मोहि उपदेसेहु राम कृपा सुख पुंज॥ लं० ८०/० (ख)
सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुख गात हरषि हनुमंत।
चरन परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवंत॥ सुं० ३२/०
सुनि प्रभु बचन भरत गहे चरना। सुनहु नांथ प्रनतारति हरना॥ उ० ३५/८
सुनि प्रभु बचन भरत सुखु पावा। मुनि पद कमल मुदित सिरु नावा॥ अ० ३०७/८
सुनि प्रभु बचन भालु कपि हरषे। नभ ते सुरन्ह सुमन बहु बरषे॥ लं० १०७/१३
सुनि प्रभु बचन मगन सब भए। को हम कहाँ बिसरि तन गए॥ उ० १६/१
सुनि प्रभु बचन मगन सब भए। निमिष निमिष उपजत सुख नए॥ उ० ७/९
सुनि प्रभु बचन लाज हम मरहीं। मसक कहूँ खगपति हित करहीं॥ लं० ११७/९
सुनि प्रभु बचन हरष हनुमाना। सरनागत बच्छल भगवाना॥ सुं० ४२/९
सुनि प्रभु बचन हरषि मुनि चारी। पुलकित तन अस्तुति अनुसारी॥ उ० ३३/१
सुनि प्रिय बचन प्रीति अति देखी। राम कृपाल सुसील बिसेषी॥ अ० ११४/२
सुनि प्रिय बचन भरत तब धाए। कपि समीप अति आतुर आए॥ लं० ५८/२
सुनि प्रिय बचन मलिन मनु जानी। झुकी रानि अब रहु अरगानी॥ अ० १३/७
सुनि बन गवनु कीन्ह रघुनाथा। करि मुनि बेष लखन सिय साथा॥ अ० २६१/४
सुनि बर बचन प्रेम जनु पोषे। पूरनकाम रामु परितोषे॥ बा० ३४१/६
सुनि बिधि बिनय समुझि प्रभु बानी। ऐसेइ होउ कहा सुखु मानी॥ बा० ८८/५
सुनि बिनती सर्बग्य सिव देखि बिप्र अनुरागु।
पुनि मंदिर नभबानी भइ द्विजबर बर मागु॥ उ० १०८/० (क)
सुनि बिराग संजुत कपि बानी। बोले बिहँसि रामु धनुपानी॥ कि० ६/२२
सुनि बिलाप दुखहू दुखु लागा। धीरजहू कर धीरजु भागा॥ अं० १५२/८

सुनि बिरंचि अतिसय सुख मानहिं । पुनि पुनि तात करहु गुन गानहिं ॥ उ० ४१/६

सुनि बिरंचि मन हरष तन पुलकि नयन बह नीर ।
अस्तुति करत जोरि कर सावधान मतिधीर ॥ बा० १८५/०

सुनि बिरंचि रामहि सिरु नावा । समुझि प्रताप प्रेम अति छावा ॥ उ० ५९/२

सुनि बिहंगपति बानी सहित बिनय अनुराग ।
पुलक गात लोचन सजल मन हरषेउ अति काग ॥ उ० ६९/० (क)

सुनि बोलीं मुसुकाइ भवानी । उचित कहेहु मुनिबर बिग्यानी ॥ बा० ८९/१

सुनि बोले गुर अति सुखु पाई । पुन्य पुरुष कहुँ महि सुख छाई ॥ बा० २९३/१

सुनि ब्रत नेम साधु सकुचाहीं । देखि दसा मुनिराज लजाहीं ॥ अ० ३२५/४

सुनि भए बिकल सकल नर नारी । बेलि बिटप जिमि देखि दवारी ॥ अ० ४५/७

सुनि भुसुंडि के बचन भवानी । बोलेउ गरुड़ हरषि मृदु बानी ॥ उ० ११४/५

सुनि भुसुंडि के बचन सुभ देखि राम पद नेह ।
बोलेउ प्रेम सहित गिरा गरुड़ बिगत संदेह ॥ उ० १२४/० (ख)

सुनि भुसुंडि के बचन सुहाए । हरषित खगपति पंख फुलाए ॥ उ० ९२/१

सुनि भूपाल भरत ब्यवहारू । सोन सुगंध सुधा ससि सारू ॥ अ० २८७/१

सुनि मन मुदित कहत रिषिराऊ । हेतु नाम गुन पुन्य प्रभाऊ ॥ अ० ३११/४

सुनि मम बचन बिनीत मृदु मुनि कृपाल खगराज ।
मोहि सादर पूँछत भए द्विज आयहु केहि काज ॥ उ० ११०/० (ग)

सुनि महीप तापस बस भयऊ । आपन नाम कहन तब लयऊ ॥ बा० १६२/७

सुनि महीस बोलेउ मृदु बानी । नाथ निगम असि नीति बखानी ॥ बा० १६६/६

सुनि मारीच निसाचर क्रोही । लै सहाय धावा मुनिद्रोही ॥ बा० २०९/३

सुनि मुनि आयसु धावन धाए । चले बेग बर बाजि लजाए ॥ अ० १५६/४

सुनि मुनि आसिष सुनु मतिधीरा । ब्रह्मगिरा भइ गगन गँभीरा ॥ उ० ११३/५

सुनि मुनि गिरा सत्य जियँ जानी । दुख दंपतिहि उमा हरषानी ॥ बा० ६७/१

सुनि मुनि दसरथ बचन सुहाए । मंगल मोद मूल मन भाए ॥ अ० ३/६

सुनि मुनि बचन कहत रघुराऊ । नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ ॥ अ० २५७/२

सुनि मुनि बचन जनक अनुरागे । लखि गति ग्यानु बिरागु बिरागे ॥ अ० २९१/१

सुनि मुनि बचन प्रेम रस साने । सकुचि राम मन महुँ मुसुकाने ॥ अ० १२७/१

सुनि मुनि बचन भरत हियँ सोचू । भयउ कुअवसर कठिन सँकोचू ॥ अ० २१२/१

सुनि मुनि बचन राम मन भाए । बहुरि हरषि मुनिबर उर लाए ॥ अर० १०/२२

सुनि मुनि बचन राम रुख पाई । गुरु साहिब अनुकूल अघाई ॥ अ० २५९/१

सुनि मुनि बचन रामु सकुचाने । भाव भगति आनंद अघाने ॥ अ० १०७/१

सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने । बोले परसुधरहि अपमाने ॥ बा० २७०/६

सुनि मुनि बचन सभासद हरषे । साधु सराहि सुमन सुर बरषे ॥ अ० २०९/७

सुनि मुनि सुजसु मनहिं मन राऊ। बरनत आपन पुन्य प्रभाऊ ॥ बा० ३६०/२
सुनि मुनीसु कह बचन सप्रीती। कस न राम तुम्ह राखहु नीती ॥ बा० २१७/७
सुनि मृदु गूढ़ ब्रचन रघुपति के। उघरे पटल परसुधर मति के ॥ बा० २८३/६
सुनि मृदु गूढ़ रुचिर बर रचना। कृपासिंधु बोले मृदु बचना ॥ बा० १५०/१
सुनि मृदु बचन कुमति अति जरई। मनहु अनल आहुति घृत परई ॥ अ० ३२/४
सुनि मृदु बचन भूप हियँ सोकू। ससि कर छुअत बिकल जिमि कोकू ॥ अ० २८/४
सुनि मृदु बचन मनोहर पिय के। लोचन ललित भरे जल सिय के ॥ अ० ६३/१
सुनि रघुनाथ जोरि जुग पानी। बोले सत्य सरल मृदु बानी ॥ अ० २९५/६
सुनि रघुनाथ सचिव संबादू। भयउ सपरिजन बिकल निषादू ॥ अ० ९५/३
सुनि रघुपति अतिसय सुख माना। बोले अंगदादि कपि नाना ॥ लं० ७४/६
सुनि रघुपति के बचन सुहाए। मुनि तन पुलक नयन भरि आए ॥ अर० ४४/१
सुनि रघुबर बानी बिबुध देखि भरत पर हेतु।
सकल सराहत राम सो प्रभु को कृपानिकेतु ॥ अ० २३२/०
सुनि रघुबीर मातु प्रिय बानी। सील सनेह सुधाँ जनु सानी ॥ अ० ५९/८
सुनि राजा अति अप्रिय बानी। हृदय कंप मुख दुति कुमुलानी ॥ बा० २०७/१
सुनि रावन पठए भट नाना। तिन्हहि देखि गर्जेउ हनुमाना ॥ सुं० १७/५
सुनि रिधि सिधि अनिमादिक आईं। आयसु होइ सो करहिं गोसाईं ॥ अ० २१२/८
सुनि रिपुहन लखि नख सिख खोटी। लगे घसीटन धरि धरि झोंटी ॥ अ० १६२/७
सुनि लछिमन बिहसे बहुरि नयन तरेरे राम।
गुर समीप गवने सकुचि परिहरि बानी बाम ॥ बा० २७८/०
सुनि लछिमन सब निकट बोलाए। दया लागि हँसि तुरत छोड़ाए ॥ सुं० ५१/७
सुनि लछिमन सीता कै बानी। बिरह बिबेक धरम निति सानी ॥ लं० १०८/३
सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा। बोले चर बर जोरें हाथा ॥ अ० २६९/७
सुनि सकोप कह निसिचर नाथा। अधर दसन दसि मीजत हाथा ॥ लं० ३०/६
सुनि सनमानहिं सबहि सुबानी। भनिति भगति नति गति पहिचानी ॥ बा० २७/९
सुनि सनेह बस उठि नरनाहाँ। बैठारे रघुपति गहि बाहाँ ॥ अ० ७६/५
सुनि सनेहमय पुरजन बानी। निंदहि जोग बिरति मुनि ग्यानी ॥ अ० २७३/१
सुनि सनेहमय मंजुल बानी। सकुची सिय मन महुँ मुसुकानी ॥ अ० ११६/२
सुनि सनेहसानी बर बानी। बहुबिधि राम सासु सनमानी ॥ बा० ३३६/२
सुनि सनेह साने बचन मुनि रघुबरहि प्रसंस।
राम कस न तुम्ह कहहु अस हंस बंस अवतंस ॥ अ० ९/०
सुनि सप्रेम मम बानी देखि दीन निज दास।
बचन सुखद गंभीर मृदु बोले रमानिवास ॥ उ० ८३/० (क)
सुनि सप्रेम समुझाव निषादू। नाथ करिअ कत बादि बिषादू ॥ अ० २००/७

सुनि सब कथा समीरकुमारा । नाघत भयउ पयोधि अपारा ॥ उ० ६६/३
सुनि सब कथा हृदय अति भाई । गिरिजा बोली गिरा सुहाई ॥ उ० १२८/७
सुनि सब कें मन अचरजु आवा । मुनिहि प्रसंसि हरिहि सिरु नावा ॥ बा० १२६/४
सुनि सब चरित भूपगृहँ आए । करि पूजा नृप मुनि बैठाए ॥ बा० १२९/८
सुन सब राम कथा खगनाहा । कहत बचन मन परम उछाहा ॥ उ० ६७/८
सुनि सब बाल बृद्ध नर नारी । चलहिं तुरत गृहकाजु बिसारी ॥ अ० ११३/२
सुनि सबिषाद सकल पछिताहीं । रानी रायँ कीन्ह भल नाहीं ॥ अ० १०९/६
सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग ।
लहहिं चारि फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग ॥ बा० २/०
सुनि सरोष भृगुनायकु आए । बहुत भाँति तिन्ह आँखि देखाए ॥ बा २९२/१
सुनि ससोच कह देबि सुमित्रा । बिधि गति बड़ि बिपरीत बिचित्रा ॥ अ० २८१/१
सुनि सत्रुघुन मातु कुटिलाई । जरहिं गात रिस कछु न बसाई ॥ अ० १६२/१
सुनि सिख अभिमत आसिष पाई । रही सीय दुहु प्रीति समाई ॥ अ० ३१९/३
सुनि सिख पाइ असीस बड़ि गनक बोलि दिनु साधि ।
सिंघासन प्रभु पादुका बैठारे निरुपाधि ॥ अ० ३२३/०
सुनि सिय बचन सासु अकुलानी । दसा कवनि बिधि कहौं बखानी ॥ अ० ६८/६
सुनि सिय बिनय प्रेम रस सानी । भइ तब बिमल बारि बर बानी ॥ अ० १०२/४
सुनि सिय सपन भरे जल लोचन । भए सोचबस सोच बिमोचन ॥ अ० २२५/६
सुनि सिव के भ्रम भंजन बचना । मिटि गै सब कुतरक कै रचना ॥ बा० ११८/७
सुनि सिव बचन हरषि गुर एवमस्तु इति भाषि ।
मोहि प्रबोधि गयउ गृह संभु चरन उर राखि ॥ उ० १०९/० (क)
सुनि सिसु रुदन परम प्रिय बानी । संभ्रम चलि आईं सब रानी ॥ बा० १९२/१
सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना । भरि आए जल राजिव नयना ॥ सुं० ३१/१
सुनि सुखु लहब राम बैदेहीं । अनुचित कहब न पंडित केहीं ॥ अ० १७४/५
सुनि सुग्रीवँ परम भय माना । बिषयँ मोर हरि लीन्हेउ ग्याना ॥ कि० १८/३
सुनि सुग्रीव बचन कपि धाए । बाँधि कटक चहु पास फिराए ॥ सुं० ५१/४
सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ । कपिन्ह सहित रघुपति पहिं चलेऊ ॥ सुं० २८/६
सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारू । पाकें छत जनु लाग अँगारू ॥ अ० १६०/५
सुनि सुत बचन कहति कैकेई । मरमु पाँछि जनु माहुर देई ॥ अ० १५९/७
सुनि सुत बचन प्रीति अति बाढ़ी । नयन सलिल रोमावलि ठाढ़ी ॥ लं० १११/४
सुनि सुत बचन भरोसा आवा । प्रीति समेत अंक बैठावा ॥ लं० ४८/७
सुनि सुत बचन सनेहमय कपट नीर भरि नैन ।
भरत श्रवन मन सूल सम पापिनि बोली बैन ॥ अ० १५९/०
सुनि सुत बध लंकेस रिसाना । पठएसि मेघनाद बलबाना ॥ सुं० १८/१

सुनि सुधि सोच बिकल सब लोगा । मनहुँ मीनगन नव जल जोगा ॥ अ० २९३/५
सुनि सुनि राम भरत संबादू । दुहु समाज हियँ हरषु बिषादू ॥ अ० ३०८/६
सुनि सुबचन भूपति हरषाना । गहि पद बिनय कीन्हि बिधि नाना ॥ बा० १६३/६
सुनि सुबचन हरषे दोउ भ्राता । भे प्रमोद परिपूरन गाता ॥ अ० २५५/४
सुनि सुभ कथा उमा हरषानी । बोली अति बिनीत मृदु बानी ॥ उ० ५१/८
सुनि सुभ कथा लोग अनुरागे । मग गृह गलीं सँवारन लागे ॥ बा० २९५/४
सुनि सुमंत्रु सिय सीतलि बानी । भयउ बिकल जनु फनि मनि हानी ॥ अ० ९८/३
सुनि सुरगुर सुर संमत सोचू । अंतरजामी प्रभुहि सकोचू ॥ अ० २६५/५
सुनि सुर बचन लखन सकुचाने । राम सीयँ सादर सनमाने ॥ अ० २३०/५
सुनि सुरबर सुरगुर बर बानी । भा प्रमोदु मन मिटी गलानी ॥ अ० २१९/३
सुनि सुर बिनय ठाढ़ि पछिताती । भइउँ सरोज बिपिन हिमराती ॥ अ० ११/१
सुनि सुर मत सुरगुर कहेउ भल तुम्हार बड़ भागु ।
सकल सुमंगल मूल जग भरत चरन अनुरागु ॥ अ० २६५/०
सुनि सुरसरि सम पावनि बानी । भईं सनेह बिकल सब रानी ॥ अ० २८२/८
सुनि सुरूपु बूझहिं अकुलाई । अब लगि गए कहाँ लगि भाई ॥ अ० १२०/७
सुनि सेवक दुख दीनदयाला । फरकि उठीं द्वै भुजा बिसाला ॥ कि० ५/१४
सुनि संदेसु भानुकुलभूषन । बोलि लिए जुबराज बिभीषन ॥ लं० १०७/३
सुनि संदेसु सकल हरषानीं । अपर कथा सब भूप बखानीं ॥ बा० २९४/२
सुनि संपाति बंधु कै करनी । रघुपति महिमा बहुबिधि बरनी ॥ कि० २६/११
सुनि हरषीं सब सखीं सयानी । सिय हियँ अति उतकंठा जानी ॥ बा० २२८/३
सुनि चहहिं प्रभु मुख कै बानी । जो सुनि होइ सकल भ्रम हानी ॥ उ० ३५/३
सुनी बहोरि मातु मृदु बानी । सील सनेह सरल रस सानी ॥ अ० १७५/८
सुनी सकल लोगन्ह यह बाता । कहहिं जोतिषी आहिं बिधाता ॥ बा० ३११/८
सुनु कपि जियँ मानसि जनि ऊना । तैं मम प्रिय लछिमन ते दूना ॥ कि० २/७
सुनु कपि तोहि समान उपकारी । नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी ॥ सुं० ३१/५
सुनु कपीस अंगद लंकेसा । पावन पुरी रुचिर यह देसा ॥ उ० ३/२
सुनु कपीस लंकापति बीरा । केहि बिधि तरिअ जलधि गंभीरा ॥ सुं० ४९/५
सुनु खगपति अस समुझि प्रसंगा । बुध नहिं करहिं अधम कर संगा ॥ उ० १०५/१३
सुनु खगपति यह कथा पावनी । त्रिबिध ताप भव भय दावनी ॥ उ० १४/१
सुनु खगेस कलि कपट हठ दंभ द्वेष पाषंड ।
मान मोह मारादि मद ब्यापि रहे ब्रह्मंड ॥ उ० १०१/० (क)
सुनु खगेस तेहि अवसर ब्रह्मा सिव मुनि बृंद ।
चढ़ि बिमान आए सब सुर देखन सुखकंद ॥ उ० ११/० (ग)
सुनु खगेस नहिं कछु रिषि दूषन । उर प्रेरक रघुबंस बिभूषन ॥ उ० ११२/१

सुनु खगेस प्रभु कै यह बानी । अति अगाध जानहिं मुनि ग्यानी ॥ लं० ११३/३
सुनु खगेस रघुपति प्रभुताई । कहउँ जथामति कथा सुहाई ॥ उ० ७३/१
सुनु खगेस हरि भगति बिहाई । जे सुख चाहहिं आन उपाई ॥ उ० ११४/३
सुनु गिरिजा क्रोधानल जासू । जारइ भुवन चारिदस आसू ॥ लं० ५४/१
सुनु गिरिजा हरिचरित सुहाए । बिपुल बिसद निगमागम गाए ॥ बा० १२०/१
सुनु गंधर्ब कहउँ मैं तोही । मोहि न सोहाइ ब्रह्मकुल द्रोही ॥ अर० ३२/८
सुनु जननी सोइ सुतु बड़भागी । जो पितु मातु बचन अनुरागी ॥ अ० ४०/७
सुनु जानकी तोहि बिनु आजू । हरषे सकल पाइ जनु राजू ॥ अर० २९/१४
सुनु तैं प्रिया बृथा भय माना । जग जोधा को मोहि समाना ॥ लं० ७/२
सुनु दसकंठ कहउँ पन रोपी । बिमुख राम त्राता नहिं कोपी ॥ सुं० २२/७
सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा । कबहुँ कि नलिनी करइ बिकासा ॥ सुं० ८/७
सुनु नृप जासु बिमुख पछिताहीं । जासु भजन बिनु जरनि न जाहीं ॥ अ० ३/७
सुनु नृप बिबिध जतन जग माहीं । कष्टसाध्य पुनि होहिं कि नाहीं ॥ बा० १६६/१
सुनु पति जिन्हहि मिलेउ सुग्रीवा । ते द्वौ बंधु तेज बल सींवा ॥ कि० ६/२८
सुनु प्रभु बहुत अवग्या किएँ । उपज क्रोध ग्यानिन्ह के हिएँ ॥ उ० ११०/१५
सुनु बायस तैं सहज सयाना । काहे न मागसि अस बरदाना ॥ उ० ८४/२
सुनु बिहंग प्रसाद अब मोरें । सब सुभ गुन बसिहहिं उर तोरें ॥ उ० ८४/६
सुनु ब्यालारि काल कलि मल अवगुन आगार ।
गुनउँ बहुत कलिजुग कर बिनु प्रयास निस्तार ॥ उ० १०२/० (क)
सुनु मतिमंद देहि अब पूरा । काटें सीस कि होइअ सूरा ॥ लं० २८/९
सुनु मतिमंद लोक बैकुंठा । लाभ कि रघुपति भगति अकुंठा ॥ लं० २५/८
सुनु मम बचन सत्य अब भाई । हरितोषन ब्रत द्विज सेवकाई ॥ उ० १०८/११
सुनु महीस असि नीति जहँ तहँ नाम न कहहिं नृप ।
मोहि तोहि पर अति प्रीति सोइ चतुरता बिचारि तव ॥ बा० १६३/० सो०
सुनु माता साखामृग नहिं बल बुद्धि बिसाल ।
प्रभु प्रताप तें गरुड़हि खाइ परम लघु ब्याल ॥ सुं० १६/०
सुनु मुनि आजु समागम तोरें । कहि न जाइ जस सुखु मन मोरें ॥ बा० १०४/२
सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी । जो गिरिजा प्रति संभु बखानी ॥ बा० १५२/१
सुनु मुनि कह पुरान श्रुति संता । मोह बिपिन कहुँ नारि बसंता ॥ अर० ४३/१
सुनु मुनि तोहि कहउँ सहरोसा । भजहिं जे मोहि तजि सकल भरोसा ॥ अर० ४२/४
सुनु मुनि मोह होइ मन ताकें । ग्यान बिराग हृदय नहिं जाकें ॥ बा० १२८/१
सुनु मुनि संतन्ह के गुन कहऊँ । जिन्ह ते मैं उन्ह कें बस रहऊँ ॥ अर० ४४/६
सुनु मुनीस बर दरसन तोरें । अगमु न कछु प्रतीति मन मोरें ॥ बा० ३४२/३
सुनु मंथरा बात फुरि तोरी । दहिनि आँखि नित फरकइ मोरी ॥ अ० १९/५

सुनु रघुबीर प्रिया बैदेही । तव प्रभाउ जग बिदित न केही ॥ अ० १०२/५
सुनु रावन परिहरि चतुराई । भजसि न कृपासिंधु रघुराई ॥ लं० २६/१
सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया । पाइ जासु बल बिरचति माया ॥ सुं० २०/४
सुनु लंकेस सकल गुन तोरें । तातें तुम्ह अतिसय प्रिय मोरें ॥ सुं० ४८/१
सुनु सठ भेद होइ मन ताकें । श्रीरघुबीर हृदय नहिं जाकें ॥ लं० २०/१०
सुनु सठ सोइ रावन बलसीला । हरगिरि जान जासु भुज लीला ॥ लं० २४/१
सुनु सतिभाउ कहउँ महिपाला । इहाँ बसत बीते बहु काला ॥ बा० १६०/८
सुनु सरबग्य चराचर नायक । प्रनतपाल सुर मुनि सुखदायक ॥ लं० १०१/४
सुनु सर्बग्य कृपा सुख सिंधो । दीन दयाकर आरत बंधो ॥ उ० १७/१
सुनु सर्बग्य प्रनत सुखकारी । मुकुट न होहिं भूप गुन चारी ॥ लं० ३७/८
सुनु सर्बग्य सकल उर बासी । बुधि बल तेज धर्म गुन रासी ॥ लं० १६/३
सुनु सिय सत्य असीस हमारी । पूजिहि मन कामना तुम्हारी ॥ बा० २३५/७

सुनु सीता तव नाम सुमिरि नारि पतिब्रत करहिं ।
तोहि प्रानप्रिय राम कहिउँ कथा संसार हित ॥ अर० ५/० (ख) सो०

सुनु सुग्रीव बिभीषन अनुज सँभारेहु सैन ।
मैं देखउँ खल बल दलहि बोले राजिवनैन ॥ लं० ६७/०

सुनु सुग्रीव मारिहउँ बालिहि एकहिं बान ।
ब्रह्म रुद्र सरनागत गएँ न उबरिहिं प्रान ॥ कि० ६/०

सुनु सुत करहिं बिपिन रखवारी । परम सुभट रजनीचर भारी ॥ सुं० १६/८
सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं । देखेउँ करि बिचार मन माहीं ॥ सुं० ३१/७
सुनु सुत भयउ कालबस रावन । सो कि मान अब परम सिखावन ॥ लं० ६३/७

सुनु सुत सदगुन सकल तव हृदयँ बसहुँ हनुमंत ।
सानुकूल कोसलपति रहहुँ समेत अनंत ॥ लं० १०७/०

सुनु सुभ कथा भवानि रामचरितमानस बिमल ।
कहा भुसुंडि बखानि सुना बिहग नायक गरुड़ ॥ बा० १२०/० (ख) सो०

सुनु सुरपति कपि भालु हमारे । परे भूमि निसचरन्हि जे मारे ॥ लं० ११३/१
सुनु सुरेस उपदेसु हमारा । रामहि सेवकु परम पिआरा ॥ अ० २१८/१
सुनु सुरेस रघुनाथ सुभाऊ । निज अपराध रिसाहिं न काऊ ॥ अ० २१७/४
सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनू । बिधि हरि हर बंदित पद रेनू ॥ बा० १४५/१
सुनु हनुमंत संग लै तारा । करि बिनती समुझाउ कुमारा ॥ कि० १९/३
सुनेउँ पुनीत राम गुन ग्रामा । तुम्हरी कृपाँ लहेउँ बिश्रामा ॥ उ० ११४/७
सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे । रामु लखनु सुनि भए सुखारे ॥ बा० २३६/४
सुबस बसउ फिरि सहित समाजा । भरतहि रामु करहुँ जुबराजा ॥ अ० २७२/७
सुबस बसिहि फिरि अवध सुहाई । सब गुन धाम राम प्रभुताई ॥ अ० ३५/३

सुभ अरु असुभ करम अनुहारी । ईसु देइ फलु हृदयँ बिचारी ॥ अ० ७६/७
सुभ अरु असुभ सलिल सब बहई । सुरसरि कोउ अपुनीत न कहई ॥ बा० ६८/७
सुभ आचरन कतहुँ नहिं होई । देव बिप्र गुरु मान न कोई ॥ बा० १८२/७
सुभग द्वार सब कुलिस कपाटा । भूप भीर नट मागध भाटा ॥ बा० २१३/१
सुभग सकल सुठि चंचल करनी । अय इव जरत धरत पग धरनी ॥ बा० २९७/५
सुभग सुआसिनि गावहिं गीता । करहिं बेद धुनि बिप्र पुनीता ॥ बा० ३१२/४
सुभग सुरभि पय फेन समाना । कोमल कलित सुपेतीं नाना ॥ बा० ३५५/२
सुभग सोन सरसीरुह लोचन । बदन मयंक तापत्रय मोचन ॥ बा० २१८/६
सुभट बोलाइ दसानन बोला । रन सन्मुख जा कर मन डोला ॥ लं० ७७/४
सुभट सकल चारिहुँ दिसि जाहू । धरि धरि भालु कीस सब खाहू ॥ लं० ३९/५
सुभट समर रस दुहु दिसि माते । कपि जयसील राम बल ताते ॥ लं० ८०/३
सुमति कुमति सब कें उर रहहीं । नाथ पुरान निगम अस कहहीं ॥ सुं० ३९/५
सुमति छुधा बाढ़इ नित नई । बिषय आस दुर्बलता गई ॥ उ० १२१/१०
सुमति भूमि थल हृदय अगाधू । बेद पुरान उदधि घन साधू ॥ बा० ३५/३
सुमन चाप निज सर संधाने । अति रिस ताकि श्रवन लगि ताने ॥ बा० ८६/२
सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही । पुनि असीस दुहु भाइन्ह दीन्ही ॥ बा० २३६/३
सुमन बरषि सब सुर चले चढ़ि चढ़ि रुचिर बिमान ।
देखि सुअवसर प्रभु पहिं आयउ संभु सुजान ॥ लं० ११४/० (क)
सुमन बरषि सुर घन करि छाहीं । बिटप फूलि फलि तृन मृदुताहीं ॥ अ० ३१०/७
सुमन बरिसि सुर हनहिं निसाना । नाकनटीं नाचहिं करि गाना ॥ बा० ३०८/४
सुमन बाटिका बाग बन बिपुल बिहंग निवास ।
फूलत फलत सुपल्लवत सोहत पुर चहुँ पास ॥ बा० २१२/०
सुमन बाटिका सबहिं लगाईं । बिबिध भाँति करि जतन बनाईं ॥ उ० २७/१
सुमनबृष्टि अकास तें होई । ब्रह्मानंद मगन सब लोई ॥ बा० १९३/२
सुमन बृष्टि नभ बाजन बाजे । मंगल कलस दसहुँ दिसि साजे ॥ बा० ९०/८
सुमन बृष्टि नभ संकुल भवन चले सुखकंद ।
चढ़ी अटारिन्ह देखहिं नगर नारि नर बृंद ॥ उ० ८/० (ख)
सुमन समेत बाम कर दोना । साँवर कुअँर सखी सुठि लोना ॥ बा० २३२/८
सुमिरत जाहि मिटइ अग्याना । सोइ सरबग्य रामु भगवाना ॥ बा० ५२/४
सुमिरत जाहि मिटइ श्रम भारू । तेहि श्रम यह लौकिक ब्यवहारू ॥ अ० ८६/८
सुमिरत भरतहि प्रेमु राम को । जेहि न सुलभ तेहि सरिस बाम को ॥ अ० ३०३/३
सुमिरत रामहि तजहिं जन तृन सम बिषय बिलासु ।
रामप्रिया जग जननि सिय कछु न आचरजु तासु ॥ अ० १४०/०
सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू । लोक लाहु परलोक निबाहू ॥ बा० १९/२

सुमिरत हरिहि श्राप गति बाधी। सहज बिमल मन लागि समाधी॥ बा० १२४/४
सुमिरिअ नाम रूप बिनु देखें। आवत हृदयँ सनेह बिसेषें॥ बा० २०/६
सुमिरि कोसलाधीस प्रतापा। सर संधान कीन्ह करि दापा॥ लं० ७५/१५
सुमिरि गजाननु कीन्ह पयाना। मंगलमूल सगुन भए नाना॥ बा० ३३८/८
सुमिरि पवनसुत पावन नामू। अपने बस करि राखे रामू॥ बा० २५/६
सुमिरि महेसहि कहइ निहोरी। बिनती सुनहु सदासिव मोरी॥ अ० ४३/७
सुमिरि मातु पितु परिजन भाई। भरत सनेहु सीलु सेवकाई॥ अ० १४०/४
सुमिरि राम के गुन गन नाना। पुनि पुनि हरष भुसुंडि सुजाना॥ उ० १२३/१
सुमिरि रामु गुर आयसु पाई। चले महीपति संख बजाई॥ बा० ३०१/३
सुमिरि राम पद पंकज पनहीं। भाथीं बाँधि चढ़ाइन्हि धनहीं॥ अ० १९०/४
सुमिरि सिवा सिव पाइ पसाऊ। बरनउँ रामचरित चित चाऊ॥ बा० १४/८
सुमिरि सीय नारद बचन उपजी प्रीति पुनीत।
चकित बिलोकति सकल दिसि जनु सिसु मृगी सभीत॥ बा० २२९/०
सुमिरि सो नाम राम गुन गाथा। करउँ नाइ रघुनाथहि माथा॥ बा० २७/२
सुमिरि संभु गिरिजा गनराजा। मुदित महीपति सहित समाजा॥ बा० ३४६/८
सुर अंसिक सब कपि अरु रीछा। जिए सकल रघुपति कीं ईछा॥ लं० ११३/८
सुर किंनर नर नाग मुनीसा। जय जय जय कहि देहिं असीसा॥ बा० २६४/२
सुर गन सहित सभय सुरराजू। सोचहिं चाहत होन अकाजू॥ अ० २६४/१
सुरतरु सरिस सुभायँ सुहाए। मनहुँ बिबुध बन परिहरि आए॥ अ० १३६/७
सुरतरु सुमन माल सुर बरषहिं। मनहुँ बलाक अवलि मनु करषहिं॥ बा० ३४६/२
सुर दुर्लभ सुख करि जग माहीं। अंतकाल रघुपति पुर जाहीं॥ उ० १४/४
सुर दुंदुभीं बजावहिं हरषहिं। अस्तुति करहिं सुमन बहु बरषहिं॥ लं० ७०/९
सुर नर असुर नाग खग माहीं। मोरे अनुचर कहँ कोउ नाहीं॥ अर० २२/१
सुर नर असुर नाग मुनि माहीं। सोभा असि कहुँ सुनिअति नाहीं॥ बा० २१९/६
सुर नर नारि सुमंगल गाई। सरस राग बाजहिं सहनाई॥ बा० ३०१/६
सुर नर मुनि कोउ नाहिं जेहि न मोह माया प्रबल।
अस बिचारि मन माहिं भजिअ महामाया पतिहि॥ बा० १४०/० सो०
सुर नर मुनि सचराचर साईं। मैं पूछउँ निज प्रभु की नाईं॥ अर० १३/६
सुर नर मुनि सब कै यह रीती। स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती॥ कि० ११/२
सुरन्ह कही निज बिपति सब सुनि मन कीन्ह बिचार।
संभु बिरोध न कुसल मोहि बिहसि कहेउ अस मार॥ बा० ८३/०
सुरन्ह सुमिरि सारदा सराही। देबि देव सरनागत पाही॥ अ० २९४/१
सुरन्ह सुमंगल अवसरु जाना। बरषहिं सुमन बजाइ निसाना॥ बा० ३१३/१
सुरपति निज रथ तुरत पठावा। हरष सहित मातलि लै आवा॥ लं० ८८/२

सुरपति बसइ बाहँबल जाकें। नरपति सकल रहहिं रुख ताकें ॥ अ० २४/२
सुरपति सुत जानइ बल थोरा। राखा जिअत आँखि गहि फोरा ॥ लं० ३५/१२
सुरपति सुत धरि बायस बेषा। सठ चाहत्त रघुपति बल देखा ॥ अर० ०/५
सुरपुर नृपु पाइहि परितोषू। तुम्ह कहुँ सुकृतु सुजसु नहिं दोषू ॥ अ० १७४/२
सुर प्रतिमा खंभन गढ़ि काढ़ीं। मंगल द्रब्य लिएँ सब ठाढ़ीं ॥ बा० २८७/६
सुर प्रनामु करि बरिसहिं फूला। मुनि असीस धुनि मंगल मूला ॥ बा० ३२२/५
सुर प्रसून बरषहिं हरषि करहिं अपछरा गान।
चले अवधपति अवधपुर मुदित बजाइ निसान ॥ बा० ३३९/०
सुर बानर देखे बिकल हँस्यो कोसलाधीस।
सजि सारंग एक सर हते सकल दससीस ॥ लं० ९६/०
सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना। देखत रन नभ चढ़े बिमाना ॥ लं० ८०/१
सुरभि फूल फल अमिअ समाना। बिमल जलासय बिबिध बिधाना ॥ अ० २१४/४
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरें कुल इन्ह पर न सुराई ॥ बा० २७२/६
सुरमायाँ सब लोग बिमोहे। राम प्रेम अतिसय न बिछोहे ॥ अ० ३०१/४
सुर मुनि गंधर्बा मिलि करि सर्बा गे बिरंचि के लोका।
सँग गोतनुधारी भूमि बिचारी परम बिकल भय सोका ॥
ब्रह्माँ सब जाना मन अनुमाना मोर कछू न बसाई।
जा करि तैं दासी सो अबिनासी हमरेउ तोर सहाई ॥ बा० १८३/१ छं०
सुर मुनि नाग नगर नर नारी। सोचहिं सकल त्रास उर भारी ॥ बा० २६९/६
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किंनर। चारि प्रकार जीव सचराचर ॥ उ० ७९/८
सुर रंजन भंजन महि भारा। जौं भगवंत लीन्ह अवतारा ॥ अर० २२/३
सुर समाज सब भाँति अनूपा। नहिं बरात दूलह अनुरूपा ॥ बा० ९१/८
सुर समूह बिनती करि पहुँचे निज निज धाम।
जगनिवास प्रभु प्रगटे अखिल लोक बिश्राम ॥ बा० १९१/०
सुरसर सुभग बनज बन चारी। डाबर जोगु कि हंसकुमारी ॥ अ० ५९/५
सुरसरि जल कृत बारुनि जाना। कबहुँ न संत करहिं तेहि पाना ॥ बा० ६९/१
सुरसरि धार नाउँ मंदाकिनि। जो सब पातक पोतक डाकिनि ॥ अ० १३१/६
सुरसरि नाघि जान तब आयो। उतरेउ तट प्रभु आयसु पायो ॥ लं० १२०/७
सुरसरि मिलें सो पावन जैसें। ईस अनीसहि अंतरु तैसें ॥ बा० ६९/२
सुरसरि सरसइ दिनकर कन्या। मेकलसुता गोदावरि धन्या ॥ अ० १३७/४
सुरसा नाम अहिन्ह कै माता। पठइन्हि आइ कही तेहिं बाता ॥ सुं० १/२
सुर सुगंध सुचि बरषहिं बारी। सुखी सकल ससि पुर नर नारी ॥ बा० ३४६/६
सुर सुरभी सुरतरु सबही कें। लखि अभिलाषु सुरेस सची कें ॥ अ० २१४/६
सुर सेनप उर बहुत उछाहू। बिधि ते डेवढ लोचन लाहू ॥ बा० ३१६/५

सुर सेवा करि आयसु पाई। राम मातु पहिं गे दोउ भाई ॥ अ० १९७/२
सुर सुंदरी करहिं कल गाना। सुनत श्रवन छूटहिं मुनि ध्याना ॥ बा० ६०/४
सुर स्वारथी मलीन मन कीन्ह कुमंत्र कुठाटु।
रचि प्रपंच माया प्रबल भय भ्रम अरति उचाटु ॥ अ० २९५/०
सुर श्रुति निंदक जे अभिमानी। रौरव नरक परहिं ते प्रानी ॥ उ० १२०/२५
सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु राम कहत जमुहात।
राम प्रान प्रिय भरत कहुँ यह न होइ बड़ि बात ॥ अ० ३११/०
सुलभ सुखद मारग यह भाई। भगति मोरि पुरान श्रुति गाई ॥ उ० ४४/२
सुहृद सुजान सुसाहिबहि बहुत कहब बड़ि खोरि।
आयसु देइअ देव अब सबइ सुधारी मोरि ॥ अ० ३००/०
सूख हाड़ लै भाग सठ स्वान निरखि मृगराज।
छीनि लेइ जनि जान जड़ तिमि सुरपतिहि न लाज ॥ बा० १२५/०
सूखहिं अधर जरइ सबु अंगू। मनहुँ दीन मनिहीन भुअँगू ॥ अ० ३९/१
सूखहिं अधर लागि मुँह लाटी। जिउ न जाइ उर अवधि कपाटी ॥ अ० १४४/४
सूझ न एकउ अंग उपाऊ। मन मति रंक मनोरथ राऊ ॥ बा० ७/६
सूझहिं राम चरित मनि मानिक। गुपुत प्रगट जहँ जो जेहि खानिक ॥ बा० ०/८
सूत बचन सुनतहिं नरनाहू। परेउ धरनि उर दारुन दाहू ॥ अ० १५२/५
सूद्र करहिं जप तप ब्रत नाना। बैठि बरासन कहहिं पुराना ॥ उ० ९९/९
सूद्र द्विजन्ह उपदेसहिं ग्याना। मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना ॥ उ० ९८/२
सून बीच दसकंधर देखा। आवा निकट जती कें बेषा ॥ अर० २७/७
सूपनखहि समुझाइ करि बल बोलेसि बहु भाँति।
गयउ भवन अति सोचबस नीद परइ नहिं राति ॥ अर० २२/०
सूपनखा आगें करि लीनी। असुभ रूप श्रुति नासा हीनी ॥ अर० १७/६
सूपनखा कै गति तुम्ह देखी। तदपि हृदयँ नहिं लाज बिसेषी ॥ लं० ३५/१३
सूपनखा रावन कै बहिनी। दुष्ट हृदय दारुन जस अहिनी ॥ अर० १६/३
सूपोदन सुरभी सरपि सुंदर स्वादु पुनीत।
छन महुँ सब कें परुसि गे चतुर सुआर बिनीत ॥ बा० ३२८/०
सूर कवन रावन सरिस स्वकर काटि जेहिं सीस।
हुने अनल अति हरष बहु बार साखि गौरीस ॥ लं० २८/०
सुर सचिव सेनव बहुतेरे। नृपगृह सरिस सदन सब केरे ॥ बा० २१३/३
सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहि आपु।
बिद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु ॥ बा० २७४/०
सूल कुलिस असि अँगवनिहारे। ते रतिनाथ सुमन सर मारे ॥ अ० २४/४
सेज रुचिर रचि रामु उठाए। प्रेम समेत पलँग पौढ़ाए ॥ बा० ३५५/५

सेतुबंध ढिग चढ़ि रघुराई। चितव कृपाल सिंधु बहुताई ॥ लं० ३/३
सेतुबंध भइ भीर अति कपि नभ पंथ उड़ाहिं।
अपर जलचरन्हि ऊपर चढ़ि चढ़ि पारहि जाहिं ॥ लं० ४/०
सेतु बाँधि कपि सेन जिमि उतरी सागर पार।
गयउ बसीठी बीरबर जेहि बिधि बालिकुमार ॥ उ० ६७/० (क)
सेन बिलोकि राउ हरषाना। अरु बाजे गहगहे निसाना ॥ बा० १५३/४
सेन बिलोकि सहज अभिमानी। बोला बचन क्रोध मद सानी ॥ बा० १८०/४
सेन सकल तीरथ बर बीरा। कलुष अनीक दलन रनधीरा ॥ अ० १०४/६
सेन समेति जथा रघुबीरा। उतरे जाइ बारिनिधि तीरा ॥ उ० ६६/७
सेन सहित उतरे रघुबीरा। कहि न जाइ कपि जूथप भीरा ॥ लं० ४/२
सेन सहित तव मान मथि बन उजारि पुर जारि।
कस रे सठ हनुमान कपि गयउ जो तव सुत मारि ॥ लं० २६/०
सेन संग चतुरंग अपारा। अमित सुभट सब समर जुझारा ॥ बा० १५३/३
सेवक, कर पद नयन से मुख सो साहिबु होइ।
तुलसी प्रीति कि रीति सुनि सुकबि सराहहिं सोइ ॥ अ० ३०६/०
सेवक बचन सत्य सब जाने। आश्रम निकट जाइ निअराने ॥ अ० २३४/१
सेवक मन मानस मराल से। पावन गंग तरंग माल से ॥ बा० ३१/१४
सेवकु राउ करम मन बानी। सदा सहाय महेसु भवानी ॥ अ० २८४/४
सेवक सकल बजनिया नाना। पूरन किए दान सनमाना ॥ बा० ३५०/८
सेवक सचिव भरत रुख पाई। निज निज काज लगे सब जाई ॥ अ० ३१७/५
सेवक सचिव सकल पुरबासी। जे हमारे अरि मित्र उदासी ॥ अ० २/२
सेवक सठ नृप कृपन कुनारी। कपटी मित्र सूल सम चारी ॥ कि० ६/९
सेवक सदन स्वामि आगमनू। मंगल मूल अमंगल दमनू ॥ अ० ८/५
सेवक सुख चह मान भिखारी। ब्यसनी धन सुभ गति बिभिचारी ॥ अर० १६/१५
सेवक सुखद सुभग सब अंगा। जय सरीर छबि कोटि अनंगा ॥ बा० २८४/४
सेवक सुत पति मातु भरोसें। रहइ असोच बनइ प्रभु पोसें ॥ कि० २/४
सेवक सुमिरत नामु सप्रीती। बिनु श्रम प्रबल मोह दलु जीती ॥ बा० २४/७
सेवक सुहृद सचिवसुत साथा। सुमिरत लखनु सीय रघुनाथा ॥ अ० २२०/७
सेवक सेब्य भाव बिनु भव न तरिअ उरगारि।
भजहु राम पद पंकज अस सिद्धांत बिचारि ॥ उ० ११९/० (क)
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई ॥ बा० २७०/३
सेवक स्वामि सखा सिय पी के। हित निरुपधि सब बिधि तुलसी के ॥ बा० १४/४
सेवक स्वामि सुभाउ सुहावन। नेमु पेमु अति पावन पावन ॥ अ० ३०८/४
सेवक हम स्वामी सियनाहू। होउ नात यह ओर निबाहू ॥ अ० २३/६

सेवक हित साहिब सेवकाई। करै सकल सुख लोभ बिहाई॥ अ० २६७/४
सेवत तोहि सुलभ फल चारी। बरदायनी पुरारि पिआरी॥ बा० २३५/१
सेवत सुलभ सकल सुख दायक। प्रनतपाल सचराचर नायक॥ बा० १४५/२
सेवहिं अरँडु कलपतरु त्यागी। परिहरि अमृत लेहिं बिषु मागी॥ अ० ४१/३
सेवहिं लखनु करम मन बानी। जाइ न सीलु सनेहु बखानी॥ अ० १३८/८
सेवहिं लखनु सीय रघुबीरहि। जिमि अबिबेकी पुरुष सरीरहि॥ अ० १४१/२
सेवहिं सकल चराचर ताही। बरइ सीलनिधि कन्या जाही॥ बा० १३०/४
सेवहिं सकल सवति मोहि नीकें। गरबित भरत मातु बल पी कें॥ अ० १७/३
सेवहिं सानकूल सब भाई। रामचरन रति अति अधिकाई॥ उ० २४/१

सेवहिं सुकृती साधु सुचि पावहिं सब मनकाम।
बंदी बेद पुरान गन कहहिं बिमल गुन ग्राम॥ अ० १०५/०

सेवा समय दैअँ बनु दीन्हा। मोर मनोरथु सफल न कीन्हा॥ अ० ६८/४
सेष कमठ सहि सकहिं न भारा। सो तनु भूमि परेउ भरि छारा॥ लं० १०३/६
सेष सहस्त्रसीस जग कारन। जो अवतरेउ भूमि भय टारन॥ बा० १६/७
सेस सारदा बेद पुराना। सकल करहिं रघुपति गुन गाना॥ बा० १०७/६
सैल बिसाल आनि कपि देहीं। कंदुक इव नल नील ते लेहीं॥ लं० १/.
सैल बिसाल देखि एक आगें। ता पर धाइ चढ़ेउ भय त्यागें॥ सुं० २/८
सैलराज बड़ आदर कीन्हा। पद पखारि बर आसनु दीन्हा॥ बा० ६५/६
सैल सकल जहँ लगि जग माहीं। लघु बिसाल नहिं बरनि सिराहीं॥ बा० ९३/३
सैल सुलच्छन सुता तुम्हारी। सुनहु जे अब अवगुन दुइ चारी॥ बा० ६६/७
सैलु सुहावन कानन चारू। करि केहरि मृग बिहग बिहारू॥ अ० १३१/४
सैल हिमाचल आदिक जेते। चित्रकूट जसु गावहिं तेते॥ अ० १३७/७
सैलोपरि सर सुंदर सोहा। मनि सोपान देखि मन मोहा॥ उ० ५५/१०

सो अनन्य जाकें असि मति न टरइ हनुमंत।
मैं सेवक सचराचर रूप स्वामि भगवंत॥ कि० ३/०

सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि मम बच बिकलाई॥ लं० ६०/५
सो अबहीं बरु जाउ पराई। संजुग बिमुख भएँ न भलाई॥ लं० ७७/५
सो अवतार सुनेउँ जग माहीं। देखेउँ सो प्रभाव कछु नाहीं॥ उ० ५७/८
सो अवलंब देव मोहि देई। अवधि पारु पावौं जेहि सेई॥ अ० ३०६/८
सो अवसर बिरंचि जब जाना। चले सकल सुर साजि बिमाना॥ बा० १९०/५
सो आदरिअ करिअ हित मानी। तजिअ बिषादु काल गति जानी॥ अ० १७५/२
सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरें। सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरें॥ अर० ३५/७
सोइ उपदेस कहहु करि दाया। निज नयनन्हि देखौं रघुराया॥ उ० ११०/१०
सोइ करतूति बिभीषन केरी। सपनेहुँ सो न राम हियँ हेरी॥ बा० २८/७

सोइ कबि कोबिद सोइ रनधीरा । जो छल छाड़ि भजइ रघुबीरा ॥ उ० १२६/४
सोइ कृपालु केवटहि निहोरा । जेहिं जगु किय तिहु पगहु ते थोरा ॥ अ० १००/४
सोइ कोसलाधीस रघुराया । आयउ करन तोहि पर दाया ॥ लं० ६/७
सोइ गुनग्य सोई बड़भागी । जो रघुबीर चरन अनुरागी ॥ कि० २२/७
सोइ छल हनूमान कहँ कीन्हा । तासु कपटु कपि तुरतहिं चीन्हा ॥ सुं० २/४
सोइ जल अनल अनिल संघाता । होइ जलद जग जीवन दाता ॥ बा० ६/१२
सोइ जस गाइ भगत भव तरहीं । कृपासिंधु जन हित तनु धरहीं ॥ बा० १२१/१
सोइ जानइ जेहि देहु जनाई । जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई ॥ अ० १२६/३
सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी । रघुबर सब उर अंतरजामी ॥ बा० ११८/२
सोइ प्रभु भ्रू बिलास खगराजा । नाच नटी इव सहित समाजा ॥ उ० ७१/२
सोइ पावन सोइ सुभग सरीरा । जो तनु पाइ भजिअ रघुबीरा ॥ उ० ९५/२
सोइ पुरारि कोदंडु कठोरा । राज समाज आजु जोइ तोरा ॥ बा० २४९/३
सोइ बसुधातल सुधा तरंगिनि । भय भंजनि भ्रम भेक भुअंगिनि ॥ बा० ३०/८
सोइ बिचारि तव प्रकृति सुहाई । दसकंधर मैं कीन्हि ढिठाई ॥ लं० २३/७
सोइ बिचारि पति करेहु बिबाहू । जेहिं न बहोरि होइ उर दाहू ॥ बा० ७०/६
सोइ बिजई बिनई गुन सागर । तासु सुजसु त्रैलोक उजागर ॥ सुं० २९/३
सोइ भरोस मोरें मन आवा । केहिं न सुसंग बड़प्पनु पावा ॥ बा० ९/८
सोइ भव तर कछु संसय नाहीं । नाम प्रताप प्रगट कलि माहीं ॥ उ० १०२/७
सोइ भ्रम अब हित करि मैं माना । कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना ॥ उ० ६८/२
सोइ मम इष्टदेव रघुबीरा । सेवत जाहि सदा मुनि धीरा ॥ बा० ५०/८
सोइ मय दानवँ बहुरि सँवारा । कनक रचित मनिभवन अपारा ॥ बा० १७७/६
सोई मयँ दीन्हि रावनहि आनी । होइहि जातुधानपति जानी ॥ बा० १७७/३
सोइ मुनि तुम्ह सन कहेउ गोसाईं । नहिं आदरेहु भगति की नाईं ॥ उ० ११४/१०
सोइ रघुबर सोइ लछिमनु सीता । देखि सतीं अति भई सभीता ॥ बा० ५४/५
सोइ रघुबीर प्रनत अनुरागी । भजहु नाथ ममता सब त्यागी ॥ लं० ६/५
सोइ रावन कहुँ बनी सहाई । अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई ॥ सुं० ३७/१
सोइ रावन जग बिदित प्रतापी । सुनेहि न श्रवन अलीक प्रलापी ॥ लं० २४/८

सोइ लरिकाई मो सन करन लगे पुनि राम ।
कोटि भाँति समुझावउँ मनु न लहइ बिश्राम ॥ उ० ८२/० (ख)

सोइ सच्चिदानंद घन रामा । अज बिग्यान रूप बल धामा ॥ उ० ७१/३
सोइ सब भाँति मोर हितकारी । जातें रह नरनाहु सुखारी ॥ अ० १५१/२
सोइ सब भाँति मोर हितकारी । जेहिं तें रहै भुआल सुखारी ॥ अ० ७९/८
सोइ सयान जो परधन हारी । जो कर दंभ सो बड़ आचारी ॥ उ० ९७/५
सोइ सर्बग्य गुनी सोइ ग्याता । सोइ महि मंडित पंडित दाता ॥ उ० १२६/१

सोइ सर्बग्य तग्य सोइ पंडित। सोइ गुन गृह बिग्यान अखंडित ॥ उ० ४८/७
सोइ सादर सर मज्जनु करई। महा घोर त्रयताप न जरई ॥ बा० ३८/६
सोइ सिय चलन चहति बन साथा। आयसु काह होइ रघुनाथा ॥ अ० ५८/७
सोइ सिव कागभुसुंडिहि दीन्हा। राम भगत अधिकारी चीन्हा ॥ बा० २९/४
सोइ सिसुपन सोइ सोभा सोइ कृपाल रघुबीर।
भुवन भुवन देखत फिरउँ प्रेरित मोह समीर ॥ उ० ८१/० (ख)
सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति सोइ निज चरन सनेहु।
सोइ बिबेक सोइ रहनि प्रभु हमहि कृपा करि देहु ॥ बा० १५०/०
सोइ सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ। अति कृपाल रघुबीर सुभाऊ ॥ कि० ११/४
सोइ सूरता कि अब कहुँ पाई। असि बुधि तौ बिधि मुहँ मसि लाई ॥ बा० २६५/८
सोइ सेवक प्रियतम मम सोई। मम अनुसासन मानै जोई ॥ उ० ४२/५
सोइ हरिमाया सब गुन खानी। सोभा तासु कि जाइ बखानी ॥ बा० १२९/५
सोई सुख लवलेस जिन्ह बारक सपनेहुँ लहेउ।
ते नहि गनहिं खगेस ब्रह्मसुखहि सज्जन सुमति ॥ उ० ८८/० (ख) सो०
सोउ जाने कर फल यह लीला। कहहिं महा मुनिबर दमसीला ॥ उ० २१/५
सो उठि गयउ कहत दुर्बादा। तब सकोप बोलेउ घननादा ॥ लं० ४८/५
सोउ मन समुझि त्रास नहिं मोरें। लिखा बिरंचि जरठ मति भोरें ॥ लं० २८/३
सोउ महिमा खगेस जिन्ह जानी। फिरि एहिं चरित तिन्हहुँ रति मानी ॥ उ० २१/४
सोउ मुनि ग्याननिधान मृगनयनी बिधु मुख निरखि।
बिबस होइ हरिजान नारि बिष्नु माया प्रगट ॥ उ० ११५/० (ख) सो०
सो उमेस मोहि पर अनुकूला। करिहिं कथा मुद मंगल मूला ॥ बा० १४/७
सोक कनकलोचन मति छोनी। हरी बिमल गुन गन जगजोनी ॥ अ० २९६/३
सो कछु देव न मोहि निहोरा। निज पन राखेउ जन मन चोरा ॥ अर० ७/५
सो कपि भालु न रन महँ देखा। कीन्हेसि जेहि न प्रान अवसेषा ॥ लं० ४९/८
सोक बिकल अति सकल समाजू। मानहुँ राजु अकाजेउ आजू ॥ अ० २४६/६
सोक बिकल दोउ राज समाजा। रहा न ग्यानु न धीरजु लाजा ॥ अ० २७५/७
सोक बिकल पुनि पूँछ नरेसू। कहु सिय राम लखन संदेसू ॥ अ० १४८/५
सोक बिकल सब रोवहिं रानी। रूपु सीलु बलु तेजु बखानी ॥ अ० १५५/३
सोक बिबस कछु कहै न पारा। हृदयँ लगावत बारहिं बारा ॥ अ० ४३/५
सोक मगन सब सभाँ खभारू। मनहुँ कमल बन परेउ तुसारू ॥ अ० २६२/२
सो करि कहउँ हिए अपने की। रुचि जागत सोवत सपने की ॥ अ० ३००/२
सो कलिकाल कठिल उरगारी। पाप परायन सब नर नारी ॥ उ० ९६/८
सोक सनेहँ कि बाल सुभाएँ। आयउँ लाइ रजायसु बाएँ ॥ अ० २९९/१
सोक समाजु राजु केहि लेखें। लखन राम सिय बिनु पद देखें ॥ अ० १७७/३

सोक सिथिल रथ सकइ न हाँकी। रघुबर बिरह पीर उर बाँकी॥ अ० १४२/४
सो कि रहिहि बिनु सिवधनु तोरें। यह प्रतीति परिहरिअ न भोरें॥ बा० २२३/६
सो कुचालि सब कहँ भइ नीकी। अवधि आस सम जीवनि जी की॥ अ० ३१६/१
सो कुल धन्य उमा सुनु जगत पूज्य सुपुनीत।
श्रीरघुबीर परायन जेहिं नर उपज बिनीत॥ उ० १२७/०
सो केवल भगतन हित लागी। परम कृपाल प्रनत अनुरागी॥ बा० १२/५
सो गोसाइँ नहिं दूसर कोपी। भुजा उठाइ कहउँ पन रोपी॥ अ० २९८/७
सो गोसाइँ बिधि गति जेहिं छेंकी। सकइ को टारि टेक जो टेकी॥ अ० २५४/८
सोच उसास समीर तरंगा। धीरज तट तरुबर कर भंगा॥ अ० २७५/२
सोचनीय नहिं कोसलराऊ। भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ॥ अ० १७२/५
सोचनीय सबहीं बिधि सोई। जो न छाड़ि छलु हरि जन होई॥ अ० १७२/४
सो चरित्र लखि काहुँ न पावा। नारद जानि सबहिं सिर नावा॥ बा० १३२/८
सोच बिकल मग परइ न पाऊ। रामहि बोलि कहिहि का राऊ॥ अ० ३८/३
सोच बिकल बिबरन महि परेऊ। मानहुँ कमल मूल परिहरेऊ॥ अ० ३७/७
सोच सुमंत्र बिकल दुख दीना। धिग जीवन रघुबीर बिहीना॥ अ० १४३/३
सोचहिं दूषन दैवहि देही। बिरचत हंस काग किय जेहीं॥ बा० १७४/२
सोचहिं सकल कहत सकुचाहीं। बिधि सन बिनय करहिं मन माहीं॥ बा० २४८/२
सोचहिं सब निज हृदय मझारी। असगुन भयउ भयंकर भारी॥ लं० १३/२
सोचिअ गृही जो मोह बस करइ करम पथ त्याग।
सोचिअ जती प्रपंच रत बिगत बिबेक बिराग॥ अ० १७२/०
सोचिअ नृपति जो नीति न जाना। जेहि न प्रजा प्रिय प्रान समाना॥ अ० १७१/४
सोचिअ पिसुन अकारन क्रोधी। जननि जनक गुर बंधु बिरोधी॥ अ० १७२/२
सोचिअ पुनि पति बंचक नारी। कुटिल कलहप्रिय इच्छाचारी॥ अ० १७१/७
सोचिअ बटु निज ब्रतु परिहरई। जो नहिं गुर आयसु अनुसरई॥ अ० १७१/८
सोचिअ बयसु कृपन धनवानू। जो न अतिथि सिव भगति सुजानू॥ अ० १७१/५
सोचिअ बिप्र जो बेद बिहीना। तजि निज धरमु बिषय लयलीना॥ अ० १७१/३
सोचिअ सूद्रु बिप्र अवमानी। मुखर मानप्रिय ग्यान गुमानी॥ अ० १७१/६
सोचु हृदयँ बिधि का होनिहारा। सब सुखु सुकृतु सिरान हमारा॥ अ० ६१/४
सो जनु हमरेहि माथे काढ़ा। दिन चलि गए ब्याज बड़ बाढ़ा॥ बा० २७५/३
सो जल सुकृत सालि हित होई। राम भगत जन जीवन सोई॥ बा० ३५/७
सो जानब सतसंग प्रभाऊ। लोकहुँ बेद न आन उपाऊ॥ बा० २/६
सो जेवनार कि जाइ बखानी। बसहिं भवन जेहिं मातु भवानी॥ बा० ९८/५
सो तनु धरि हरि भजहिं न जे नर। होहिं बिषय रत मंद मंद तर॥ उ० १२०/११
सो तनु राखि करब मैं काहा। जेहिं न प्रेम पनु मोर निबाहा॥ अ० १५४/६

सो तुम्ह करहु करावहु मोहू। तात तरनिकुल पालक होहू ॥ अ० ३०५/३
सो तुम्ह जानहु अंतरजामी। पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी ॥ बा० १४८/७
सो तुम्हार धनु जीवनु प्राना। भूरिभाग को तुम्हहि समाना ॥ अ० २०७/१
सो तैं ताहि तोहि नहिं भेदा। बारि बीचि इव गावहिं बेदा ॥ उ० ११०/६

सो दयाल नहिं कहेउ कछु उर न रोष लवलेस।
अति अघ गुर अपमानता सहि नहिं सके महेस ॥ उ० १०६/० (ख)

सो दससीस स्वान की नाईं। इत उत चितइ चला भड़िहाईं ॥ अर० २७/९

सो दासी रघुबीर कै समुझें मिथ्या सोपि।
छूट न राम कृपा बिनु नाथ कहउँ पद रोपि ॥ उ० ७१/० (ख)

सो धन धन्य प्रथम गति जाकी। धन्य पुन्य रत मति सोइ पाकी ॥ उ० १२६/७
सो धनु राजकुअँर कर देहीं। बाल मराल कि मंदर लेहीं ॥ बा० २५५/४
सोधि सुमृति सब बेद पुराना। कीन्ह भरत दसगात बिधाना ॥ अ० १६९/६

सो नयन गोचर जासु गुन नित नेति कहि श्रुति गावहीं।
जिति पवन मन गो निरस करि मुनि ध्यान कबहुँक पावहीं ॥
मोहि जानि अति अभिमान बस प्रभु कहेउ राखु सरीरही।
अस कवन सठ हठि काटि सुरतरु बारि करिहि बबूरही ॥ कि० ९/१ छं०

सो नर इंद्रजाल नहिं भूला। जा पर होइ सो नट अंनुकूला ॥ अर० ३८/४

सो नर क्यों दसकंध बालि बध्यो जेहिं एक सर।
बीसहुँ लोचन अंध धिग तव जन्म कुजाति जड़ ॥ लं० ३३/० (क) सो०

सो न होई बिनु बिमल मति मोहि मति बल अति थोर।
करहु कृपा हरि जस कहउँ पुनि पुनि करउँ निहोर ॥ बा० १४/० (ख)

सोनित स्रवत सोह तन कारे। जनु कज्जल गिरि गेरु पनारे ॥ लं० ६८/७
सो परनारि लिलार गोसाईं। तजउँ चउथि के चंद कि नाईं ॥ सुं० ३७/६

सो परत्र दुख पावइ सिर धुनि धुनि पछिताइ।
कालहि कर्महि ईस्वरहि मिथ्या दोष लगाइ ॥ उ० ४३/०

सोपि राम महिमा मुनिराया। सिव उपदेसु करत करि दाया ॥ बा० ४५/५
सो पुनि गई जहाँ रघुनाथा। जाइ कमल पद नाएसि माथा ॥ कि० २४/७
सो फलु तुरत लहब सब काहूँ। भली भाँति पछिताब पिताहूँ ॥ बा० ६३/२
सो फलु मोहि बिधाताँ दीन्हा। जो कछु उचित रहा सोइ कीन्हा ॥ बा० ५८/३
सो बड़ -सो सब गुन गन गेहू। जेहि मुनीस तुम्ह आदर देहू ॥ अ० १०७/३
सो बन बरनि न सक अहिराजा। जहाँ प्रगट रघुबीर बिराजा ॥ अर० १३/४
सो बनु सैलु सुभायँ सुहावन। मंगलमय अति पावन पावन ॥ अ० १३८/३

सो ब्रह्म दत्त प्रचंड सक्ति अनंत उर लागी सही।
पर्‌यो बीर बिकल उठाव दसमुख अतुल बल महिमा रही ॥

ब्रह्मांड भवन बिराज जाकें एक सिर जिमि रज कनी।
तेहि चह उठावन मूढ़ रावन जान नहिं त्रिभुवन धनी ॥ लं० ८२/१ छं०
सो बिचारि सहि संकटु भारी। करहु प्रजा परिवारु सुखारी॥ अ० ३०५/५
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा॥ बा० २७०/५
सो भनु मनुज खाब हम भाई। बचन कहहिं सब गाल फुलाई॥ लं० ८/६
सोभा दसरथ भवन कइ को कबि बरनै पार।
जहाँ सकल सुर सीस मनि राम लीन्ह अवतार ॥ बा० २९७/०
सोभा देखि हरषि सुर बरषहिं सुमन अपार।
जय जय जय करुनानिधि छबि बल गुन आगार ॥ लं० ८६/
सोभा धाम राम अस नामा। तिन्ह के संग नारि एक स्यामा॥ अर० २१/८
सो भावी बस रानि अयानी। करि कुचालि अंतहुँ पछितानी॥ अ० २०६/६
सोभा रजु मंदरु सिंगारू। मथै पानि पंकज निज मारू॥ बा० २४६/८
सोभा सीवँ सुभग दोउ बीरा। नील पीत जलजाभ सरीरा॥ बा० २३२/१
सो भुज कंठ कि तव असि घोरा। सुनु सठ अस प्रवान पन मोरा॥ सुं० ९/४
सो भुजबल राखेहु उर घाली। जीतेहु सहसबाहु बलि बाली॥ लं० २८/८
सो मति मोरि भरत महिमाही। कहै काह छलि छुअति न छाँही॥ अ० २८७/५
सो मति मोहि कहत करु भोरी। चंदिनि कर कि चंडकर चोरी॥ अ० २९४/६
सो मनि जदपि प्रगट जग अहई। राम कृपा बिनु नहिं कोउ लहई॥ उ० ११९/११
सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं। जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं॥ सुं० १४/७
सो मम लोचन गोचर आगें। राखौं देह नाथ केहि खाँगें॥ अर० ३०/७
सो महिमा समुझत प्रभु केरी। यह बरनत हीनता घनेरी॥ उ० २१/३
सो माया न दुखद मोहि काहीं। आन जीव इव संसृत नाहीं॥ उ० ७७/२
सो माया रघुबीरहि बाँची। लछिमन कपिन्ह सो मानी साँची॥ लं० ८८/७
सो मायाबस भयउ गोसाईं। बँध्यो कीर मरकट की नाईं॥ उ० ११६/३
सो मैं कहौं कवन बिधि बरनी। भूमिनागु सिर धरइ कि धरनी॥ बा० ३५४/६
सो मैं कुमति कहौं केहि भाँती। बाज सुराग कि गाँडर ताँती॥ अ० २४०/६
सो मैं तुम्ह सन कहउँ सबु सुनु मुनीस मन लाइ।
राम कथा कलि मल हरनि मंगल करनि सुहाइ ॥ बा० १४१/०
सो मैं बरनि कहौं बिधि केहीं। डाबर कमठ कि मंदर लेहीं॥ अ० १३८/७
सो मो सन कहि जात न कैसें। साक बनिक मनि गुन गन जैसें॥ बा० २/१२
सो मैं सब बिधि कीन्हि ढिठाई। प्रभु मानी सनेह सेवकाई॥ अ० २९७/८
सो मैं सुनब सहब सुखु मानी। अंतहुँ कीच तहाँ जहँ पानी॥ अ० १८१/४
सो रघुनाथ भगति श्रुति गाई। राम कृपाँ काहूँ एक पाई॥ उ० १२५/८
सोरह जोजन मुख तेहिं ठयऊ। तुरत पवनसुत बत्तिस भयऊ॥ सुं० १/८

सोवत प्रभुहि निहारि निषादू। भयउ प्रेम बस हृदयँ बिषादू ॥ अ० ८९/५
सोषहिं सिंधु सहित झष ब्याला। पूरहिं न त भरि कुधर बिसाला ॥ सुं० ५४/६
सो सकोच रसु अकथ सुबानी। समउ सनेहु सुमिरि सकुचानी ॥ अ० ३१७/३
सो सठु कोटिक पुरुष समेता। बसिहि कलप सत नरक निकेता ॥ अ० १८३/७
सो सब कहिहि देव रघुबीरा। जानतहूँ पूछहु मतिधीरा ॥ अर० ३५/१२
सो सब तव प्रताप रघुराई। नाथ न कछू मोरि प्रभुताई ॥ सुं० ३२/९
सो सब प्रिया सहज बस मोरें। समुझि परा प्रसाद अब तोरें ॥ लं० १५/५
सो सब हेतु कहब मैं गाई। कथाप्रबंध बिचित्र बनाई ॥ बा० ३२/२
सो सबु कारन जान बिधाता। फरकहिं सुभद अंग सुनु भ्राता ॥ बा० २३०/४
सो सबु मोर पाप परिनामू। भयउ कुठाहर जेहिं बिधि बामू ॥ अ० ३५/२
सो सिर परेउ दसानन आगें। बिकल भयउ जिमि फनि मनि त्यागें ॥ लं० ७०/५
सो सीता कर खोज कराइहि। जहँ तहँ मरकट कोटि पठाइहि ॥ कि० ३/४
सो सुख जानइ मन अरु काना। नहिं रसना पहिं जाइ बखाना ॥ उ० ८७/३
सो सुख धाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक बिश्रामा ॥ बा० १९६/६
सो सुखु करमु धरमु जरि जाऊ। जहँ न राम पद पंकज भाऊ ॥ अ० २९०/१
सो सुखु सुजसु सुलभ मोहि स्वामी। सब बिधि तव दरसन अनुगामी ॥ बा० ३४२/५
सो सुत प्रिय पितु प्रान समाना। जद्यपि सो सब भाँति अयाना ॥ उ० ८६/५
सो सुत बिछुरत गए न प्राना। को पापी बड़ मोहि समाना ॥ अ० १४८/८
सो सुतंत्र अवलंब न आना। तेहि आधीन ग्यान बिग्याना ॥ अर० १५/३
सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं। दलि दुख दोष बिमल जसु देहीं ॥ बा० ६/३
सो सुनि तिय रिस गयउ सुखाई। देखहु काम प्रताप बड़ाई ॥ अ० २४/३
सो सुनि रामहि भा अति सोचू। इत पितु बच इत बंधु सकोचू ॥ अ० २२६/३
सो सुनि भयउ भूप उर सोचू। छाड़ि न सकहिं तुम्हार सँकोचू ॥ अ० ३९/८
सो संबाद उदार जेहि बिधि भा आगें कहब ।
सुनहु राम अवतार चरित परम सुंदर अनघ ॥ बा० १२०/० (ग) सो०
सोहत जनु जुग जलज सनाला। ससिहि सभीत देत जयमाला ॥ बा० २६३/७
सोहत दिएँ निषादहि लागू। जनु तनु धरें बिनय अनुरागू ॥ अ० १९६/२
सोहत ब्याह साज सब साजे। उर आयत उरभूषन राजे ॥ बा० ३२६/६
सोहत मौरु मनोहर माथे। मंगलमय मुकुता मनि गाथे ॥ बा० ३२६/१०
सोहत साथ सुभग सुत चारी। जनु अपबरग सकल तनुधारी ॥ बा० ३१४/६
सोहति बनिता बृंद महुँ सहज सुहावनि सीय।
छबि ललना गन मध्य जनु सुषमा तिय कमनीय ॥ बा० ३२२/०
सोहति सीय राम कै जोरी। छबि सिंगारु मनहुँ एक ठोरी ॥ बा० २६४/७
सोह न राम पेम बिनु ग्यानू। करनधार बिनु जिमि जलजानू ॥ अ० २७६/५

सोह नवल तनु सुंदर सारी। जगत जननि अतुलित छबि भारी॥ बा० २४७/२
सोहमस्मि इति बृत्ति अखंडा। दीप सिखा सोइ परम प्रचंडा॥ उ० ११७/१
सो हरिभगति काग किमि पाई। बिस्वनाथ मोहि कहहु बुझाई॥ उ० ५३/८
सोह सैल गिरिजा गृह आएँ। जिमि जनु रामभगति के पाएँ॥ बा० ६५/३
सोहहिं नभ छल बल बहु करहीं। कज्जल गिरि सुमेरु जनु लरहीं॥ लं० ९४/७
सौभागिनीं बिभूषन हीना। बिधवन्ह के सिंगार नबीना॥ उ० ९८/५
सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका॥ लं० ७९/५
सौरभ पल्लव मदनु बिलोका। भयउ कोपु कंपेउ त्रैलोका॥ बा० ८६/५
सौरभ पल्लव सुभग सुठि किए नीलमनि कोरि।
हेम बौर मरकत घवरि लसत पाटमय डोरि॥ बा० २८८/०
संकर उर अति छोभु सती न जानहिं मरमु सोइ।
तुलसी दरसन लोभु मन डरु लोचन लालची॥ बा० ४८/० (ख) सो०
संकर चापु जहाजु सागरु रघुबर बाहुबलु।
बूड़ सो सकल समाजु चढ़ा जो प्रथमहिं मोह बस॥ बा० २६१/० सो०
संकर दीनदयाल अब एहि पर होहु कृपाल।
साप अनुग्रह होइ जेहिं नाथ थोरेहीं काल॥ उ० १०८/० (घ)
संकरप्रिय मम द्रोही सिव द्रोही मम दास।
ते नर करहिं कलप भरि घोर नरक महुँ बास॥ लं० २/०
संकर बिमुख भगति चह मोरी। सो नारकी मूढ़ मति थोरी॥ लं० १/८
संकर रुख अवलोकि भवानी। प्रभु मोहि तजेउ हृदयँ अकुलानी॥ बा० ५७/३
संकर सहज सरूपु सम्हारा। लागि समाधि अखंड अपारा॥ बा० ५७/८
संकर सहस बिष्नु अज तोही। सकहिं न राखि राम कर द्रोही॥ सुं० २२/८
संकरु जगतबंद्य जगदीसा। सुर नर मुनि सब नावत सीसा॥ बा० ४९/६
संकरु राम रूप अनुरागे। नयन पंचदस अति प्रिय लागे॥ बा० ३१६/२
संकुल मकर उरग झष जाती। अति अगाध दुस्तर सब भाँती॥ सुं० ४९/६
संकुल लता बिटप घन कानन। बहु खग मृग तहँ गज पंचानन॥ अर० ३२/५
संख निसान पनव बहु बाजे। मंगल कलस सगुन सुभ साजे॥ बा० ३१२/३
संग ते जती कुमंत्र ते राजा। मान ते ग्यान पान तें लाजा॥ अर० २०/१०
संग भालु भूधर तरु धारी। मारन लगे पचारि पचारी॥ लं० ९७/१३
संगमु सिंहासनु सुठि सोहा। छत्रु अखयबटु मुनि मनु मोहा॥ अ० १०४/७
संग लाइ करिनीं करि लेहीं। मानहुँ मोहि सिखावनु देहीं॥ अर० ३६/७
संग सखीं सब सुभग सयानीं। गावहिं गीत मनोहर बानीं॥ बा० २२७/३
संग सखीं सुंदर चतुर गावहिं मंगलचार।
गवनी बाल मराल गति सुषमा अंग अपार॥ बा० २६३/०

संग सचिव सुचि भूरि भट भूसुर बर गुर ग्याति ।
चले मिलन मुनिनायकहि मुदित राउ एहि भाँति ॥ बा० २१४/०
संत सती जगजननि भवानी । पूजे रिषि अखिलेस्वर जानी ॥ बा० ४७/२
संग्राम भूमि बिराज रघुपति अतुल बल कोसल धनी ।
श्रम बिंदु मुख राजीव लोचन अरुन तन सोनित कनी ॥
भुज जुगल फेरत सर सरासन भालु कपि चहु दिसि बने ।
कह दास तुलसी कहि सक न छबि सेष जेहि आनन घने ॥ लं० ७०/१ छं०
संत असंतन्ह के गुन भाषे । ते न परहिं भव जिन्ह लखि राखे ॥ उ० ४०/८
संत असंतन्हि कै असि करनी । जिमि कुठार चंदन आचरनी ॥ उ० ३६/७
संत असंत भेद बिलगाई । प्रनतपाल मोहि कहहु बुझाई ॥ उ० ३६/५
संत असंत मरम तुम्ह जानहु । तिन्ह कर सहज सुभाव बखानहु ॥ उ० १२०/५
संत उदय संतत सुखकारी । बिस्व सुखद जिमि इंदु तमारी ॥ उ० १२०/२१
संत कहहिं असि नीति दसानन । चौथेंपन जाइहि नृप कानन ॥ लं० ६/३
संत कहहिं असि नीति प्रभु श्रुति पुरान मुनि गाव ।
होइ न बिमल बिबेक उर गुर सन किएँ दुराव ॥ बा० ४५/०
संत चरन पंकज अति प्रेमा । मन क्रम बचन भजन दृढ़ नेमा ॥ अर० १५/९
संतत जपत संभु अबिनासी । सिव भगवान ग्यान गुन रासी ॥ बा० ४५/३
संतत दासन्ह देहु बड़ाई । तातें मोहि पुँछेहु रघुराई ॥ अर० १२/१४
संतत मो पर कृपा करेहू । सेवक जानि तजेहु जनि नेहू ॥ अर० ५/३
संतन्ह के लच्छन रघुबीरा । कहहु नाथ भव भंजन भीरा ॥ अर० ४४/५
संतन्ह के लच्छन सुनु भ्राता । अगनित श्रुति पुरान बिख्याता ॥ उ० ३६/६
संतन्ह कै महिमा रघुराई । बहु बिधि बेद पुरानन्ह गाई ॥ उ० ३६/२
संत बिटप सरिता गिरि धरनी । पर हित हेतु सबन्ह कै करनी ॥ उ० १२४/६
संत बिसुद्ध मिलहिं परि तेही । चितवहिं राम कृपा करि जेही ॥ उ० ६८/७
संतसभा चहुँ दिसि अवँराई । श्रद्धा रितु बसंत सम गाई ॥ बा० ३६/१२
संत समाज पयोधि रमा सी । बिस्व भार भर अचल छमा सी ॥ बा० ३०/१०
संत सरल चित जगत हित जानि सुभाउ सनेहु ।
बालबिनय सुनि करि कृपा रामचरन रति देहु ॥ बा० ३/० (ख)
संत सहहिं दुख परहित लागी । परदुख हेतु असंत अभागी ॥ उ० १२०/१५
संत संग अपबर्ग कर कामी भव कर पंथ ।
कहहिं संत कबि कोबिद श्रुति पुरान सदग्रंथ ॥ उ० ३३/०
संत संभु श्रीपति अपबादा । सुनिअ जहाँ तहँ असि मरजादा ॥ बा० ६३/२
संत हृदय जस निर्मल बारी । बाँधे घाट मनोहर चारी ॥ अर० ३८/७
संत हृदय नवनीत समाना । कहा कबिन्ह परि कहै न जाना ॥ उ० १२४/७

संधानि धनु सर निकर छाड़ेसि उरग जिमि उड़ि लागहीं।
रहे पूरि सर धरनी गगन दिसि बिदिसि कहँ कपि भागहीं॥
भयो अति कोलाहल बिकल कपि दल भालु बोलहिं आतुरे।
रघुबीर करुना सिंधु आरत बंधु जन रच्छक हरे॥ लं० ८१/१ छं०
संधानेउ प्रभु बिसिख कराला। उठी उदधि उर अंतर ज्वाला॥ सुं० ५७/६
संध्या भइ फिरि द्वौ बाहनी। लगे सँभारन निज निज अनी॥ लं० ५४/४
संध्या समय जानि दससीसा। भवन चलेउ निरखत भुज बीसा॥ लं० ९/६
संपति चकई भरतु चक मुनि आयस खेलवार।
तेहि निसि आश्रम पिंजराँ राखे भा भिनुसार॥ अ० २१५/०
संपति सब रघुपति कै आही। जौं बिनु जतन चलौं तजि ताही॥ अ० १८५/३
संपुट भरत सनेह रतन के। आखर जुग जनु जीव जतन के॥ अ० ३१५/६
संबत मध्य नास तव होऊ। जलदाता न रहिहि कुल कोऊ॥ बा० १७३/३
संबत सहस मूल फल खाए। सागु खाइ सत बरष गवाँए॥ बा० ७३/४
संबत सोरह सै एकतीसा। करउँ कथा हरि पद धरि सीसा॥ बा० ३३/४
संबुक भेक सेवार समाना। इहाँ न बिषय कथा रस नाना॥ बा० ३७/४
संभारि श्रीरघुबीर धरी पचारि कपि रावनु हन्यो।
महि परत पुनि उठि लरत देवन्ह जुगल कहुँ जय जय भन्यो॥
हनुमंत संकट देखि मर्कट भालु क्रोधातुर चले।
रन मत्त रावन सकल सुभट प्रचंड भुज बल दलमले॥ लं० ९४/१ छं०
संभावित कहुँ अपजस लाहू। मरन कोटि सम दारुन दाहू॥ अ० ९४/७
संभु कीन्ह यह चरित सुहावा। बहुरि कृपा करि उमहि सुनावा॥ बा० २९/३
संभु कीन्ह संग्राम अपारा। दनुज महाबल मरइ न मारा॥ बा० १२२/६
संभुगिरा पुनि मृषा न होई। सिव सर्बग्य जान सबु कोई॥ बा० ५०/३
संभु चरित सुनि सरस सुहावा। भरद्वाज मुनि अति सुखु पावा॥ बा० १०३/१
संभुचाप बड़ बोहितु पाई। चढ़े जाइ सब संगु बनाई॥ बा० २५९/७
संभु दीन्ह उपदेस हित नहिं नारदहि सोहान।
भरद्वाज कौतुक सुनहु हरि इच्छा बलवान॥ बा० १२७/०
संभु प्रसाद सुमति हियँ हुलसी। रामचरितमानस कबि तुलसी॥ बा० ३५/१
संभु बचन मुनि मन नहिं भाए। तब बिरंचि के लोक सिधाए॥ बा० १२७/२
संभु बिरंचि बिष्नु भगवाना। उपजहिं जासु अंस तें नाना॥ बा० १४३/६
संभु समय तेहि रामहि देखा। उपजा हियँ अति हरषु बिसेषा॥ बा० ४९/१
संभु मंत्र मोहि द्विजबर दीन्हा। सुभ उपदेस बिबिध बिधि कीन्हा॥ उ० १०४/७
संभु सरासनु काहुँ न टारा। हारे सकल बीर बरिआरा॥ बा० २९१/५
संभु सहज समरथ भगवाना। एहि बिबाहँ सब बिधि कल्याना॥ बा० ६९/३

संसय सील प्रेम बस अहहू। सबुइ उचित सब जो कछु कहहु ॥ अ० १८०/८
संसय सोक निबिड़ तम भानुहि। दनुज गहन घन दहन कृसानुहि ॥ उ० २९/७
संशय सर्प ग्रसन उरगाद:। शमन सुकर्कश तर्क विषाद: ॥ अर० १०/९
संसय सर्प ग्रसेउ मोहि ताता। दुखद लहरि कुतर्क बहु ब्राता ॥ उ० ९२/६
संसृत मूल सूलप्रद नाना। सकल सोक दायक अभिमाना ॥ उ० ७३/६
संसृति रोग संजीवन मूरी। राम कथा गावहिं श्रुति सूरी ॥ उ० १२८/२
सांख्य सास्त्र जिन्ह प्रगट बखाना। तत्त्व बिचार निपुन भगवाना ॥ बा० १४१/७
साँचेहुँ मैं लबार भुज बीहा। जौं न उपारिउँ तव दस जीहा ॥ लं० ३३/७
साँझ जानि दसकंधर भवन गयउ बिलखाइ।
मंदोदरीं रावनहिं बहुरि कहा समुझाइ ॥ लं० ३५/० (ख)
साँझ समय सानंद नृपु गयउ कैकई गेहँ।
गवनु निठुरता निकट किय जनु धरि देह सनेहँ ॥ अ० २४/०
सांत बेषु करनी कठिन बरनि न जाइ सरूप।
धरि मुनितनु जनु बीर रसु आयउ जहँ सब भूप ॥ बा० २६८/०
सावँकरन अगनित हय होते। ते तिन्ह रथन्ह सारथिन्ह जोते ॥ बा० २९८/५
सिंघ कंध आयत उर सोहा। आनन अमित मदन मन मोहा ॥ सुं० ४४/५
सिंघासनु अति दिब्य सुहावा। जाइ न बरनि बिरंचि बनावा ॥ बा० ९९/३
सिंघासन पर त्रिभुअन साईं। देखि सुरन्ह दुंदुभीं बजाईं ॥ उ० ११/८
सिंघासन बैठेउ सिर नाईं। मानहुँ संपति सकल गँवाईं ॥ लं० ३४/५
सिंघासन भूषन बसन अन्न धरनि धन धाम।
दिए भरत लहि भूमिसुर भे परिपूरन काम ॥ अ० १७०/०
सिंधु तीर एक भूधर सुंदर। कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर ॥ सुं० ०/५
सिंधु पार प्रभु डेरा कीन्हा। सकल कपिन्ह कहुँ आयसु दीन्हा ॥ लं० ४/३
सिंधु बचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ।
अब बिलंबु केहि काम करहु सेतु उतरै कटकु ॥ लं० ०/२ सो०
सिंहनाद करि बारहिं बारा। लीलहिं नाघउँ जलनिधि खारा ॥ कि० २९/८
सिंहासन अति उच्च मनोहर। श्री समेत प्रभु बैठे ता पर ॥ लं० ११८/४
सुंदर उपबन देखन गए। सब तरु कुसुमित पल्लव नए ॥ उ० ३१/२
सुंदर खग गन गिरा सुहाई। जात पथिक जनु लेत बोलाई ॥ अर० ३९/४
सुंदरता कहुँ सुंदर करई। छबिगृहँ दीपसिखा जनु बरई ॥ बा० २२९/७
सुंदरता मरजाद भवानी। जाइ न कोटिहुँ बदन बखानी ॥ बा० ९९/८
सुंदर बधुन्ह सासु लै सोईं। फनिकन्ह जनु सिरमनि उर गोईं ॥ बा० ३५७/४
सुंदर बन कुसुमित अति सोभा। गुंजत मधुप निकर मधु लोभा ॥ कि० १२/१
सुंदर बन गिरि सरित तड़ागा। कौतुक देखत फिरउँ बेरागा ॥ उ० ५५/६

सुंदर भृकुटि मनोहर नासा । भाल तिलकु रुचिरता निवासा ॥ बा० ३२६/९
सुंदर सकल अलंकृत सोहे । जिन्हहि बिलोकत मुनि मन मोहे ॥ बा० २९८/६
सुंदर सदनु सुखद सब काला । तहाँ बासु लै दीन्ह भुआला ॥ बा० २१६/७
सुंदर सहज अगम अनुमानी । कीन्हि तहाँ रावन रजधानी ॥ बा० १७८/६
सुंदर सहज सुसील सयानी । नाम उमा अंबिका भवानी ॥ बा० ६२/२
सुंदर सिला सुखद तरु छाहीं । जाइ बरनि बन छबि केहि पाहीं ॥ अ० २४८/८
सुंदर सुखद मोहि अति भावा । सो प्रथमहिं मैं तुम्हहि सुनावा ॥ उ० ११२/८
सुंदर सुखद सकल गुन रासी । ए दोउ बंधु संभु उर बासी ॥ बा० २४५/४

सुंदर सुजान कृपा निधान अनाथ पर कर प्रीति जो ।
सो एक राम अकाम हित निर्बानप्रद सम आन को ॥
जाकी कृपा लवलेस ते मतिमंद तुलसीदासहुँ ।
पायो परम बिश्रामु राम समान प्रभु नाहीं कहूँ ॥ उ० १२९/३ छं०

सुंदर स्याम गौर दोउ भ्राता । आनँदहू के आनँद दाता ॥ बा० २१६/२
सुंदर श्रवन सुचारु कपोला । अति प्रिय मधुर तोतरे बोला ॥ बा० १९८/९
सुंदरि सुनु मैं उन्ह कर दासा । पराधीन नहिं तोर सुपासा ॥ अर० १६/१३

सौंपि नगर सुचि सेवकनि सादर सकल चलाइ ।
सुमिरि राम सिय चरन तब चले भरत दोउ भाइ ॥ अ० १८७/०

सौंपि सचिव गुर भरतहि राजू । तेरहुति चले साजि सबु साजू ॥ अ० ३२१/७

सौंपे भूप रिषिहि सुत बहुबिधि देइ असीस ।
जननी भवन गए प्रभु चले नाइ पद सीस ॥ बा० २०८/० (क)

सौंपेसि मोहि तुम्हहि गहि पानी । सब बिधि सुखद परम हित जानी ॥ लं० ६०/१५
सौंपेहु राजु राम के आएँ । सेवा करेहु सनेह सुहाएँ ॥ अ० १७४/८
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा । लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा ॥ उ० १०७/६
स्याम गात कल कंज बिलोचन । जो मारीच सुभुज मदु मोचन ॥ बा० २२०/५
स्याम गात बिसाल भुज चारी । अस्तुति करत नयन भरि बारी ॥ अर० ३१/२
स्याम गात राजीव बिलोचन । दीन बंधु प्रनतारति मोचन ॥ लं० ११४/७ छं०
स्याम गात सरसीरुह लोचन । देखौं जाइ ताप त्रय मोचन ॥ लं० ६२/८
स्याम गात सिर जटा बनाएँ । अरुन नयन सर चाप चढ़ाएँ ॥ कि० ८/२
स्याम गौर किमि कहौं बखानी । गिरा अनयन नयन बिनु बानी ॥ बा० २२८/२
स्याम गौर मृदु बयस किसोरा । लोचन सुखद बिस्व चित चोरा ॥ बा० २१४/५
स्याम गौर सब अंग सुहाए । ते सब कहहिं देखि जे आए ॥ बा० ३१०/४
स्याम गौर सुंदर दोउ जोरी । निरखहिं छबि जननीं तृन तोरी ॥ बा० १९७/५
स्याम गौर सुंदर दोउ भाई । बिस्वामित्र महानिधि पाई ॥ बा० २०८/३
स्याम गौर सुंदर दोउ भाई । सबरी परी चरन लपटाई ॥ अर० ३३/८

स्यामल गात रोम भए ठाढ़े । नव राजीव नयन जल बाढ़े ॥ उ० ४/८
स्यामल गात सरोरुह लोचन । सुंदरता मंदिर भव मोचन ॥ उ० ३२/३
स्यामल गौर किसोर बर सुंदर सुषमा ऐन ।
सरद सर्बरीनाथ मुखु सरद सरोरुह नैन ॥ अ० ११६/०
स्यामल गौर धरें धनु भाथा । बय किसोर कौसिक मुनि साथा ॥ बा० २१०/५
स्याम सरीरु सुभायँ सुहावन । सोभा कोटि मनोज लजावन ॥ बा० ३२६/१
स्याम सरोज दाम सम सुंदर । प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर ॥ सुं० ९/३
स्याम सुरभि पय बिसद अति गुनद करहिं सब पान ।
गिरा ग्राम्य सिय राम जस गावहिं सुनहिं सुजान ॥ बा० १०/० (ख)
स्रक चंदन बनितादिक भोगा । देखि हरष बिसमय बस लोगा ॥ अ० २१४/८
स्रवत रुधिर धायउ बलवाना । प्रभु पुनि कृत धनु सर संधाना ॥ लं० ९१/९
स्रवहिं सैल जनु निर्झर भारी । सोनित सरि कादर भयकारी ॥ लं० ८६/१०
सृंगबेरपुर भरत दीख जब । भे सनेहँ सब अंग सिथिल तब ॥ अ० १९६/१
सृंगी रिषिहि बसिष्ठ बोलावा । पुत्रकाम सुभ जग्य करावा ॥ बा० १८८/५
स्वपच सबर खस जमन जड़ पावँर कोल किरात ।
रामु कहत पावन परम होत भुवन बिख्यात ॥ अ० १९४/०
स्वबस बिस्व करि बाहुबल निज पुर कीन्ह प्रबेसु ।
अरथ धरम कामादि सुख सेवइ समयँ नरेसु ॥ बा० १५४/०
स्वभक्त कल्प पादपं । समं सुसेव्यमन्वहं ॥ अर० ३/२० छं०
स्वयं सिद्ध सब काज नाथ मोहि आदरु दियउ ।
अस बिचारि जुबराज तन पुलकित हरषित हियउ ॥ लं० १७/० (ख) सो०
स्वागत पूँछि निकट बैठारे । लछिमन सादर चरन पखारे ॥ अर० ४०/११
स्वाद तोष सम सुगति सुधा के । कमठ सेष सम धर बसुधा के ॥ बा० १९/७
स्वामि काज करिहउँ रन रारी । जस धवलिहउँ भुवन दस चारी ॥ अ० १८९/५
स्वामि गोसाँइहि सरिस गोसाईं । मोहि समान मैं साइँ दोहाईं ॥ अ० २९७/४
स्वामि धरम स्वारथहि बिरोधू । बैरु अंध प्रेमहि न प्रबोधू ॥ अ० २९२/८
स्वामिनि अबिनय छमबि हमारी । बिलगु न मानब जानि गवाँरी ॥ अ० ११५/७
स्वामि सखा पितु मातु गुर जिन्ह के सब तुम्ह तात ।
मन मंदिर तिन्ह कें बसहु सीय सहित दोउ भ्रात ॥ अ० १३०/०
स्वामि सुजानु जानि सब ही की । रुचि लालसा रहनि जन जी की ॥ अ० ३१३/३
स्वायंभू मनु अरु सतरूपा । जिन्ह तें भै नरसृष्टि अनूपा ॥ बा० १४१/१
स्वारथ बिबस बिकल तुम्ह होहू । भरत दोसु नहिं राउर मोहू ॥ अ० २१९/२
स्वारथ मीत सकल जग माहीं । सपनेहुँ प्रभु परमारथ नाहीं ॥ उ० ४६/६
स्वारथ रत परिवार बिरोधी । लंपट काम लोभ अति क्रोधी ॥ उ० ३९/४

स्वारथ साँच जीव कहुँ एहा। मन क्रम बचन राम पद नेहा ॥ उ० ९५/१
स्वारथु नाथ फिरें सबही का। किएँ रजाइ कोटि बिधि नीका ॥ अ० २६७/५

श्र

श्रद्धा छमा मयत्री दाया। मुदिता मम पद प्रीति अमाया ॥ अर० ४५/४
श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई। बिनु महि गंध कि पावइ कोई ॥ उ० ८९/४
श्रम कन सहित स्याम तनु देखें। कहँ दुख समउ प्रानपति पेखें ॥ अ० ६६/४
श्रमित भूप निद्रा अति आई। सो किमि सोव सोच अधिकाई ॥ बा० १६९/२
श्रवन दिसा दस बेद बखानी। मारुत स्वास निगम निज बानी ॥ लं० १४/४
श्रवन नासिका काटैं लागे। राम सपथ दीन्हें हम त्यागे ॥ सुं० ५३/४
श्रवनवंत अस को जग माहीं। जाहि न रघुपति चरित सोहाहीं ॥ उ० ५२/५
श्रवन समीप भए सित केसा। मनहुँ जरठपनु अस उपदेसा ॥ अ० १/७

श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर।
त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुबीर ॥ सुं० ४५/०

श्रवन सुधा सम बचन सुनि पुलक प्रफुल्लित गात।
बोले मनु करि दंडवत प्रेम न हृदयँ समात ॥ बा० १४५/०

श्रवन सुनी सठ ता करि बानी। बिहसा जगत बिदित अभिमानी ॥ सुं० ३६/१
श्रवनादिक नव भक्ति दृढ़ाहीं। मम लीला रति अति मन माहीं ॥ अर० १५/८
श्रवनामृत जेहिं कथा सुहाई। कही सो प्रगट होति किन भाई ॥ सुं० १२/७
श्राप अनुग्रह करहु कृपाला। बोले नारद दीनदयाला ॥ बा० १३८/४

श्राप सीस धरि हरषि हियँ प्रभु बहु बिनती कीन्हि।
निज माया कै प्रबलता करषि कृपानिधि लीन्हि ॥ बा० १३७/०

श्रीखंड सम पावक प्रबेस · कियो सुमिरि प्रभु मैथिली।
जय कोसलेस महेस बंदित चरन रति अति निर्मली ॥
प्रतिबिंब अरु लौकिक कलंक प्रचंड पावक महुँ जरे।
प्रभु चरित काहुँ न लखे नभ सुर सिद्ध मुनि देखहिं खरे ॥ लं० १०८/१ छं०

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥ अ० ०/१

श्रीगुर पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती ॥ बा० ०/५
श्रीपति निज माया तब प्रेरी। सुनहु कठिन करनी तेहि केरी ॥ बा० १२८/८
श्रीफल कनक कदलि हरषाहीं। नेकु न संक सकुच मन माहीं ॥ अर० २९/१३

श्री मद बक्र न कीन्ह केहि प्रभुता बधिर न काहि।
मृगलोचनि के नैन सर को अस लाग न जाहि ॥ उ० ७०/० (ख)

श्रीमुख तुम्ह पुनि कीन्हि बड़ाई। तिन्ह पर प्रभुहि प्रीति अधिकाई ॥ उ० ३६/३
श्रीमुख बचन सुनत सब भाई। हरषे प्रेम न हृदयँ समाई ॥ उ० ४१/१

श्रीरघुनाथ रूप उर आवा। परमानंद अमित सुख पावा॥ बा० ११०/८

श्री रघुबीर प्रताप ते सिंधु तरे पाषान।
ते मतिमंद जे राम तजि भजहिं जाइ प्रभु आन॥ लं० ३/०

श्री सहित दिनकर बंस भूषन काम बहु छबि सोहई।
नव अंबुधर बर गात अंबर पीत सुर मन मोहई॥
मुकुटांगदादि बिचित्र भूषन अंग अंगन्हि प्रति सजे।
अंभोज नयन बिसाल उर भुज धन्य नर निरखंति जे॥ उ० ११/२ छं०

श्रीहत भए भूप धनु टूटे। जैसें दिवस दीप छबि छूटे॥ बा० २६२/५

श्रीहत भए हारि हियँ राजा। बैठे निज निज जाइ समाजा॥ बा० २५०/५

श्रीहत सर सरिता बन बागा। नगरु बिसेषि भयावनु लागा॥ अ० १५७/६

श्रीहत सीय बिरहँ दुतिहीना। जथा अवध नर नारि बिलीना॥ अ० १९८/५

श्रुति पथ पालक धर्म धुरंधर। गुनातीत अरु भोग पुरंदर॥ उ० २३/२

श्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई। छूट न अधिक अधिक अरुझाई॥ उ० ११६/६

श्रुति पुरान सब ग्रंथ कहाहीं। रघुपति भगति बिना सुख नाहीं॥ उ० १२१/१४

श्रुति संमत हरि भक्ति पथ संजुत बिरति बिबेक।
तेहिं न चलहिं नर मोह बस कल्पहिं पंथ अनेक॥ उ० १००/० (ख)

श्रुति सिद्धांत इहइ उरगारी। राम भजिअ सब काज बिसारी॥ उ० १२२/२

श्रुति सेतु पालक राम तुम्ह जगदीस माया जानकी।
जो सृजति जगु पालति हरति रुख पाइ कृपानिधान की॥
जो सहससीसु अहीसु महिधरु लखनु सचराचर धनी।
सुर काज धरि नरराज तनु चले दलन खल निसिचर अनी॥ अ० १२५/१ छं०

श्रोता बकता ग्याननिधि कथा राम कै गूढ़।
किमि समुझौं मैं जीव जड़ कलि मल ग्रसित बिमूढ़॥ बा० ३०/० (ख)

श्रोता सुमति सुसील सुचि कथा रसिक हरि दास।
पाइ उमा अति गोप्यमपि सज्जन करहिं प्रकास॥ उ० ६९/० (ख)

श्रोता त्रिबिध समाज पुर ग्राम नगर दुहुँ कूल।
संतसभा अनुपम अवध सकल सुमंगल मूल॥ बा० ३९/०

ह

हति नाथ अनाथनि पाहि हरे। बिषया बन पावँर भूलि परे॥ उ० १३/८ छं०

हतौं न खेत खेलाइ खेलाई। तोहि अबहिं का करौं बड़ाई॥ लं० ३४/११

हनुमत जन्म सुफल करि माना। चलेउ हृदयँ धरि कृपानिधाना॥ कि० २२/१२

हनुमदादि मुरुछित करि बंदर। पाइ प्रदोष हरष दसकंधर॥ लं० ९७/११

हनुमदादि सब बानर बीरा। धरे मनोहर मनुज सरीरा॥ उ० ७/२

हनूमान अंगद के मारे। रन महि परे निसाचर भारे॥ लं० ११८/१०

हनूमान अंगद रन गाजे। हाँक सुनत रजनीचर भाजे॥ लं० ४६/६
हनूमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम।
राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम॥ सुं० १/०
हनूमान भरतादिक भ्राता। संग लिए सेवक सुखदाता॥ उ० ४९/२
हनूमान सम नहिं बड़भागी। नहिं कोउ राम चरन अनुरागी॥ उ० ४९/८
हने निसान पनव बर बाजे। भेरि संख धुनि हय गय गाजे॥ बा० ३४३/१
हम अब बन तें बनहि पठाई। प्रमुदित फिरब बिबेक बड़ाई॥ अ० २९१/४
हम कहँ दुर्लभ दरस तुम्हारा। जानत हौं कछु भल होनिहारा॥ बा० १५८/७
हम काहू के मरहिं न मारें। बानर मनुज जाति दुइ बारें॥ बा० १७६/४
हम कुल घालक सत्य तुम्ह कुल पालक दससीस।
अधंउ बधिर न अस कहहिं नयन कान तव बीस॥ लं० २१/०
हम छत्री मृगया बन करहीं। तुम्ह से खल मृग खोजत फिरहीं॥ अर० १८/९
हम जो कहा यह कपि नहिं होई। बानर रूप धरें सुर कोई॥ सुं० २५/४
हम देवता परम अधिकारी। स्वारथ रत प्रभु भगति बिसारी॥ लं० १०९/११
हम द्वौ बंधु प्रथम तरुनाई। गगन गए रबि निकट उड़ाई॥ कि० २७/२
हम जड़ जीव जीव गन घाती। कुटिल कुचाली कुमति कुजाती॥ अ० २५०/४
हम भरि जन्म सुनहु सब भाई। देखी नहिं असि सुंदरताई॥ अर० १८/४
हमरें जान सदा सिव जोगी। अज अनवद्य अकाम अभोगी॥ बा० ८९/३
हम सब धन्य सहित परिवारा। दीख दरसु भरि नयन तुम्हारा॥ अ० १३५/३
हम सब भाँति करब सेवकाई। करि केहरि अहि बाघ बराई॥ अ० १३५/५
हम सम पुन्य पुंज जग थोरे। जिन्हहि रामु जानत करि मोरे॥ अ० २७३/८
हम सब सकल सुकृत कै रासी। भए जग जनमि जनकपुर बासी॥ बा० ३०९/४
हम सब सानुज भरतहि देखें। भइन्ह धन्य जुबती जन लेखें॥ अ० २२२/३
हम सब सेवक अति बड़भागी। संतत सगुन ब्रह्म अनुरागी॥ कि० २५/१३
हम सेवक परिवार समेता। नाथ न सकुचब आयसु देता॥ अ० १३५/८
हम सीता कै सुधि लीन्हें बिना। नहिं जैहैं जुबराज प्रबीना॥ कि० २५/९
हमहि अगम अति दरसु तुम्हारा। जस मरु धरनि देवधुनि धारा॥ अ० २४९/७
हमहि तुम्हहि सरिबरि कसि नाथा। कहहु न कहाँ चरन कहँ माथा॥ बा० २८१/५
हमहि देखि मृग निकर पराहीं। मृगीं कहहिं तुम्ह कहँ भय नाहीं॥ अर० ३६/५
हमहुँ कहबि अब ठकुरसोहाती। नाहिं त मौन रहब दिनु राती॥ अ० १५/४
हमहू उमा रहे तेहिं संगा। देखत राम चरित रन रंगा॥ लं० ८०/२
हय गय कोटिन्ह केलिमृग पुरपसु चातक मोर।
पिक रथांग सुक सारिका सारस हंस चकोर॥ अ० ८३/०
हरइ सिष्य धन सोक न हरई। सो गुर घोर नरक महुँ परई॥ उ० ९८/७

हर उर सर सरोज पद जेई। अहोभाग्य मैं देखिहउँ तेई ॥ सुं० ४१/८
हरि कहुँ हरि सेवक गुर कहेऊ। सुनि खगनाथ हृदय मम दहेऊ ॥ उ० १०५/५
हर कोदंड कठिन जेहिं भंजा। तेहि समेत नृप दल मद गंजा ॥ सुं० २०/८
हर गन मुनिहि जात पथ देखी। बिगतमोह मन हरष बिसेषी ॥ बा० १३८/१
हर गन हम न बिप्र मुनिराया। बड़ अपराध कीन्ह फल पाया ॥ बा० १३८/३
हर गिरिजा कर भयउ बिबाहू। सकल भुवन भरि रहा उछाहू ॥ बा० १००/६
हर गिरिजा बिहार नित नयऊ। एहि बिधि बिपुल काल चलि गयऊ ॥ बा० १०२/६
हरगिरि मथन निरखु मम बाहू। पुनि सठ कपि निज प्रभुहि सराहू ॥ लं० २७/८
हर गुर निंदक दादुर होई। जन्म सहस्र पाव तन सोई ॥ उ० १२०/२३
हरद दूब दधि पल्लव फूला। पान पूगफल मंगल मूला ॥ बा० ३४५/४
हरन कठिन कलि कलुष कलेसू। महामोह निसि दलन दिनेसू ॥ अ० ३२५/६
हरन मोह तम दिनकर कर से। सेवक सालि पाल जलधर से ॥ बा० ३१/१०
हरन सकल श्रम प्रभु श्रम पाई। गए जहाँ सीतल अवँराई ॥ उ० ४९/५
हरष बिबस तन दसा भुलानी। परे दंड इव गहि पद पानी ॥ बा० १४७/७
हरष बिषाद ग्यान अग्याना। जीव धर्म अहमिति अभिमाना ॥ बा० ११५/७
हरष सहित एहिं आश्रम आयउँ। प्रभु प्रसाद दुर्लभ बर पायउँ ॥ उ० ११३/९
हरषहिं निरखि राम पद अंका। मानहुँ पारसु पायउ रंका ॥ अ० २३७/३
हरषि चले निज निज गृह आए। पुनि परिचारक बोलि पठाए ॥ बा० २८६/५
हरषि चले मुनि बृंद सहाया। बेगि बिदेह नगर निअराया ॥ बा० २११/४
हरषि चले सुग्रीव तब अंगदादि कपि साथ।
रामानुज आगें करि आए जहँ रघुनाथ ॥ कि० २०/०
हरषित गुर परिजन अनुज भूसुर बृंद समेत।
चले भरत मन प्रेम अति सन्मुख कृपानिकेत ॥ उ० ३/० (क)
हरषित जहँ तहँ धाईं दासी। आनँद मगन सकल पुरबासी ॥ बा० १९२/२
हरषित बरसहिं सुमन सुर बाजहिं गगन निसान।
अस्तुति करि करि सब चले सोभित बिबिध बिमान ॥ अर० २०/० (ख)
हरषित भयउ नारि भलि पाई। पुनि दोउ बंधु बिआहेसि जाई ॥ बा० १७७/४
हरषित रहहिं नगर के लोगा। करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा ॥ उ० २४/४
हरषित राम चरन सिर नावहिं। गहि गिरि सिखर बीर सब धावहिं ॥ लं० ३८/७
हरषित हृदयँ मातु पहिं आए। मनहुँ अंध फिरि लोचन पाए ॥ अ० ७२/३
हरषि परसपर मिलन हित कछुक चले बगमेल।
जनु आनंद समुद्र दुइ मिलत बिहाइ सुबेल ॥ बा० ३०५/०
हरषि बंधु दोउ हृदयँ लगाए। पुलक अंग अंबक जल छाए ॥ बा० ३०६/७
हरषि भरत कोसलपुर आए। समाचार सब गुरहि सुनाए ॥ उ० २/१

हरषि मिले उठि रमानिकेता । बैठे आसन रिषिहि समेता ॥ बा० १२७/५
हरषि मुनीस कहेउ मृदु बानी । आनहु सकल सुतीरथ पानी ॥ अ० ५/१
हरषि राम तब कीन्ह पयाना । सगुन भए सुंदर सुभ नाना ॥ सुं० ३४/४
हरषि राम भेंटेउ हनुमाना । अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना ॥ लं० ६१/१
हरषि सुरन्ह दुंदुभीं बजाई । बरषि प्रसून अपछरा गाई ॥ बा० २४७/५
हरषि हृदयँ दसरथ पुर आई । जनु ग्रह दसा दुसह दुखदाई ॥ अ० ११/८
हरषेउ राउ बचन सुनि तासू । नाथ न होइ मोर अब नासू ॥ बा० १६४/७
हरषे जनकु देखि दोउ भाई । मुनि पद कमल गहे तब जाई ॥ बा० २४३/४
हरषे दसरथ सुतन्ह समेता । कहि न जाइ उर आनँदु जेता ॥ बा० ३२२/४
हरषे बिबुध बिलोकि बराता । बरषहिं सुमन सुमंगल दाता ॥ बा० ३०१/४
हरषे मुनि सब सुनि बर बानी । दीन्हि असीस सबहिं सुखु मानी ॥ बा० २३९/३
हरषे लखन देखि दोउ भ्राता । मिले प्रेम परिपूरित गाता ॥ बा० ३०७/८
हरषे सब कपि सुनि प्रभु बानी । धन्य अवध जो राम बखानी ॥ उ० ३/८
हरषे सब बिलोकि हनुमाना । नूतन जन्म कपिन्ह तब जाना ॥ सुं० २७/३
हरषे हेतु हेरि हर ही को । किय भूषन तिय भूषन जी को ॥ बा० १८/७
हर हियँ रामचरित सब आए । प्रेम पुलक लोचन जल छाए ॥ बा० ११०/७
हर हृदि मानस बाल मरालं । नौमि राम उर बाहु विशालं ॥ अर० १०/८
हरि अनंत हरिकथा अनंता । कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता ॥ बा० १३९/५
हरि अवतार हेतु जेहि होई । इदमित्थं कहि जाइ न सोई ॥ बा० १२०/२
हरि इच्छा भावी बलवाना । हृदयँ बिचारत संभु सुजाना ॥ बा० ५५/६
हरि गुन नाम अपार कथा रूप अगनित अमित ।
मैं निज मति अनुसार कहउँ उमा सादर सुनहु ॥ बा० १२०/० (घ) सो०
हरिचरित्र मानस तुम्ह गावा । सुनि मैं नाथ अमिति सुख पावा ॥ उ० ५२/७
हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी । सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी ॥ सुं० १३/१
हरि जननी बहुबिधि समुझाई । यह जनि कतहुँ कहसि सुनु माई ॥ बा० २०१/८
हरित भूमि तृन संकुल समुझि परहिं नहिं पंथ ।
जिमि पाखंड बाद तें गुप्त होहिं सदग्रंथ ॥ कि० १४/०
हरित मनिन्ह के पत्र फल पदुमराग के फूल ।
रचना देखि बिचित्र अति मनु बिरंचि कर भूल ॥ बा० २८७/०
हरि पद बिमुख परम गति चाहा । तस तुम्हार लालचु नरनाहा ॥ बा० २६६/४
हरि प्रेरित जेहिं कलप जोइ जातुधानपति होइ ।
सूर प्रतापी अतुलबल दल समेत बस सोइ ॥ बा० १७८/० (ख)
हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरुत उनचास ।
अट्टहास करि गर्जा कपि बढ़ि लाग अकास ॥ सुं० २५/०

हरि ब्यापक सर्बत्र समाना। प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना ॥ बा० १८४/५
हरिभगतन्ह देखे दोउ भ्राता। इष्टदेव इव सब सुख दाता ॥ बा० २४१/५
हरि माया कर अमिति प्रभावा। बिपुल बार जेहिं मोहि नचावा ॥ उ० ५९/४
हरि माया कृत दोष गुन बिनु हरि भजन न जाहिं।
भजिअ राम तजि काम सब अस बिचारि मन माहिं ॥ उ० १०४/० (क)
हरिमाया बस जगत भ्रमाहीं। तिन्हहि कहत कछु अघटित नाहीं ॥ बा० ११४/६
हरि बिषइक अस मोह बिहंगा। सपनेहुँ नहिं अग्यान प्रसंगा ॥ उ० ७२/७
हरि सन मागौं सुंदरताई। होइहि जात गहरु अति भाई ॥ बा० १३१/१
हरि सेवकहि न ब्याप अबिद्या। प्रभु प्रेरित ब्यापइ तेहि बिद्या ॥ उ० ७८/२
हरिहउँ सकल भूमि गरुआई। निर्भय होहु देव समुदाई ॥ बा० १८६/७
हरि हर कथा बिराजति बेनी। सुनत सकल मुद मंगल देनी ॥ बा० १/१०
हरि हर जस राकेस राहु से। पर अकाज भट सहसबाहु से ॥ बा० ३/३
हरि हर निंदा सुनइ जो काना। होइ पाप गोघात समाना ॥ लं० ३१/२
हरि हर पद रति मति न कुतरकी। तिन्ह कहुँ मधुर कथा रघुबर की ॥ बा० ८/६
हरि हर बिमुख धर्म रति नाहीं। ते नर तहँ सपनेहुँ नहिं जाहीं ॥ बा० १०५/१
हरि हित सहित रामु जब जोहे। रमा समेत रमापति मोहे ॥ बा० ३१६/३
हरु बिधि बेगि जनक जड़ताई। मति हमारि असि देहि सुहाई ॥ बा० २४८/३
हा गुन खानि जानकी सीता। रूप सील ब्रत नेम पुनीता ॥ अर० २९/७
हा जग एक बीर रघुराया। केहिं अपराध बिसारेहु दाया ॥ अर० २८/१
हा जानकी लखन हा रघुबर। हा पितु हित चित चातक जलधर ॥ अ० १५४/८
हाट बाट घर गली अथाईं। कहहिं परसपर लोग लोगाईं ॥ अ० १०/३
हाट बाट नहिं जाइ निहारी। जनु पुर दहँ दिसि लागि दवारी ॥ अ० १५८/१
हाट बाट मंदिर सुरबासा। नगरु सँवारहु चारिहुँ पासा ॥ बा० २८६/४
हानि कि जग एहि सम किछु भाई। भजिअ न रामहि नर तनु पाई ॥ उ० १११/९
हानि कुसंग सुसंगति लाहू। लोकहुँ बेद बिदित सब काहू ॥ बा० ६/८
हानि गलानि बिपुल मन ब्यापी। जमपुर पंथ सोच जिमि पापी ॥ अ० १४४/६
हारि परा खल बहु बिधि भय अरु प्रीति देखाइ।
तब असोक पादप तर राखिसि जतन कराइ ॥ अर० २९/० (क)
हा रघुनंदन प्रान पिरीते। तुम्ह बिनु जिअत बहुत दिन बीते ॥ अ० १५४/७
हा राम हा रघुनाथ। कहि सुभट मीजहिं हाथ ॥
एहि बिधि सकल बल तोरि। तेहिं कीन्ह कपट बहोरि ॥ लं० १००/६ छं०
हा लछिमन तुम्हार नहिं दोसा। सो फलु पायउँ कीन्हेउँ रोसा ॥ अर० २८/३
हाहाकार करत सुर भागे। खलहु जाहु कहँ मोरें आगे ॥ लं० ९६/७
हाहाकार कीन्ह गुर दारुन सुनि सिव साप।

कंपित मोहि बिलोकि अति उर उपजा परिताप ॥ उ० १०७/० (क)
हाहाकार भयउ जग भारी। डरपे सुर भए असुर सुखारी ॥ बा० ८६/७
हाहाकार भयउ पुर भारी। रोवहिं बालक आतुर नारी ॥ लं० ४१/४
हाहाकार सुरन्ह जब कीन्हा। तब प्रभु कोपि कारमुक लीन्हा ॥ लं० ९२/५
हित अनहित पसु पच्छिउ जाना। मानुष तनु गुन ग्यान निधाना ॥ अ० २६३/४
हित मत तोहि न लागत कैसें। काल बिबस कहुँ भेषज जैसें ॥ लं० ९/५
हित हमार सियपति सेवकाईं। सो हरि लीन्ह मातु कुटिलाईं ॥ अ० १७७/१
हिमगिरि कोटि अचल रघुबीरा। सिंधु कोटि सत सम गंभीरा ॥ उ० ९१/३
हिमगिरि गुहा एक अति पावनि। बह समीप सुरसरी सुहावनि ॥ बा० १२४/१
हिम ते अनल प्रगट बरु होई। बिमुख राम सुख पाव न कोई ॥ उ० १२१/१९
हिमवंत जिमि गिरिजा महेसहि हरिहि श्री सागर दई।
तिमि जनक रामहि सिय समरपी बिस्व कल कीरति नई॥
क्यों करै बिनय बिदेहु कियो बिदेहु मूरति सावँरीं।
करि होमु बिधिवत गाँठि जोरी होन लागीं भावँरी ॥ बा० ३२३/४छं०
हिम हिमसैलसुता सिव ब्याहू। सिसिर सुखद प्रभु जनम उछाहू ॥ बा० ४१/२
हियँ सपेम सुमिरहु सब भरतहि। निज गुन सील राम बस करतहि ॥ अ० २६४/८
हियँ सुमिरी सारदा सुहाई। मानस तें मुख पंकज आई ॥ अ० २९६/७
हियँ हरषहिं बरसहिं सुमन सुमुखि सुलोचनि बृंद।
जाहिं जहाँ जहँ बंधु दोउ तहँ तहँ परमानंद ॥ बा० २२३/०
हियँ हरषे कामारि तब संकर सहज सुजान।
बहु बिधि उमहि प्रसंसि पुनि बोले कृपानिधान ॥ बा० १२०/० (क)
हियँ हरषे मुनि बचन सुनि देखि प्रीति बिस्वास।
चले भवानिहि नाइ सिर गए हिमाचल पास ॥ बा० ९०/०
हियँ हरषे सुर सेन निहारी। हरिहि देखि अति भए सुखारी ॥ बा० ९४/३
हिरन्याच्छ भ्राता सहित मधु कैटभ बलवान।
जेहिं मारे सोइ अवतरेउ कृपासिंधु भगवान ॥ लं० ४८/० (क)
हुमगि लात तकि कूबर मारा। परि मुह भर महि करत पुकारा ॥ अ० १६२/४
हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी। तुम्ह देखी सीता मृगनैनी ॥ अर० २९/९
हेतु रहित जग जुग उपकारी। तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी ॥ उ० ४६/५
हे बिधि दीनबंधु रघुराया। मो से सठ पर करिहहिं दाया ॥ अर० ९/४
है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ। पावन पंचबटी तेहि नाऊँ ॥ अर० १२/१५
होइ अकाजु आजु निसि बीतें। बचनु मोर प्रिय मानेहु जी तें ॥ अ० २१/८
होइ अकाम जो छल तजि सेइहि। भगति मोरि तेहि संकर देइहि ॥ लं० २/३
होइ न बिषय बिराग भवन बसत भा चौथपन।

हृदयँ बहुत दुख लाग जनम गयउ हरिभगति बिनु ॥ बा० १४२/०सो०
होइ न मृषा देवरिषि भाषा। उमा सो बचनु हृदयँ धरि राखा ॥ बा० ६७/४
होइ नरहरि दूसर पुनि मारा। जन प्रहलाद सुजस बिस्तारा ॥ बा० १२१/८
होइ बिकल सक मनहि न रोकी। जिमि रबिमनि द्रव रबिहि बिलोकी ॥ अर० १६/६
होइ बिबेकु मोह भ्रम भागा। तब रघुनाथ चरन अनुरागा ॥ अ० ९२/५
होइ बुद्धि जौं परम सयानी। तिन्ह तन चितव न अनहित जानी ॥ उ० ११७/९
होइहहिं राम चरन अनुरागी। कलि मल रहित सुमंगल भागी ॥ बा० १४/११
होइहि कहा कहसि किन माता। केहि बिधि मरिहि बिस्व दुखदाता ॥ लं० ९८/४
होइहि कीन्ह कबहुँ अभिमाना। सो खोवै चह कृपानिधाना ॥ उ० ६१/८
होइहि पूज्य सकल जग माहीं। एहि सेवत कछु दुर्लभ नाहीं ॥ बा० ६६/५
होइहि भजनु न तामस देहा। मन क्रम बचन मंत्र दृढ़ एहा ॥ अर० २२/५
होइहि सोइ जो राम रचि राखा। को करि तर्क बढ़ावै साखा ॥ बा० ५१/७
होइहैं सुफल आजु मम लोचन। देखि बदन पंकज भव मोचन ॥ अर० ९/९
होएहु संतत पियहि पिआरी। चिरु अहिबात असीस हमारी ॥ बा० ३३३/४
होत चकित चित कोट बिलोकी। सकल भुवन सोभा जनु रोकी ॥ बा० २१२/८
होत न भूतल भाउ भरत को। अचर सचर चर अचर करत को ॥ अ० २३७/८
होत प्रात बट छीरु मगावा। जटा मुकुट निज सीस बनावा ॥ अ० १५०/२
होत प्रातु मुनिबेष धरि जौं न रामु बन जाहिं।
मोर मरनु राउर अजस नृप समुझिअ मन माहिं ॥ अ० ३३/०
होत महा रन रावन रामहिं। जितिहहिं राम न संसय या महिं ॥ लं० ५६/५
होम करन लागे मुनि झारी। आपु रहे मख कीं रखवारी. ॥ बा० २०९/२
होम समय तनु धरि अनलु अति सुख आहुति लेहि।
बिप्र बेष धरि बेद सब कहि बिबाह बिधि देहिं ॥ बा० ३२३/०
होहिं उलूक संत निंदा रत। मोह निसा प्रिय ग्यान भानु गत ॥ उ० १२०/२६
होहिं कुठायँ सुबंधु सहाए। ओड़िअहिं हाथ असनिहु के घाए ॥ अ० ३०५/८
होहिं बिप्र बस कवन बिधि कहहु कृपा करि सोउ।
तुम्ह तजि दीनदयाल निज हितू न देखउँ कोउ ॥ बा० १६६/०
होहिं सगुन बरषहिं सुमन सुर दुंदुभी बजाइ।
बिबुध बधू नाचहिं मुदित मंजुल मंगल गाइ ॥ बा० ३४७/०
होहिं सगुन सुभ बिबिधि बिधि बाजहिं गगन निसान।
पुर नर नारि सनाथ करि भवन चले भगवान ॥ उ० ९/० (ख)
होहिं सनाथ जनम फलु पाई। फिरहिं दुखित मनु संग पठाई ॥ अ० १०८/८
होहिं सहस दस सारद सेषा। करहिं कलप कोटिक भरि लेखा ॥ बा० ३४१/२
होहु कपट मृग तुम्ह छलकारी। जेहि बिधि हरि आनौं नृपनारी ॥ अर० २४/२

होहु निसाचर जाइ तुम्ह कपटी पापी दोउ।
हँसेहु हमहि सो लेहु फल बहुरि हँसेहु मुनि कोउ ॥ बा० १३५/०
होहु प्रसन्न देहु बरदानू। साधु समाज भनिति सनमानू ॥ बा० १३/७
होहु सँजोइल रोकहु घाटा। ठाटहु सकल मरै के ठाटा ॥ अ० १८९/१
हंसगवनि तुम्ह नहिं बन जोगू। सुनि अपजसु मोहि देइहि लोगू ॥ अ० ६२/५
हँसत देखि नख सिख रिस ब्यापी। राम तोर भ्राता बड़ पापी ॥ बा० २७६/६
हंस बंस गुर जनक पुरोधा। जिन्ह जग मगु परमारथु सोधा ॥ अ० २७७/२
हंसबंसु दसरथु जनकु राम लखन से भाइ।
जननी तूँ जननी भई बिधि सन कछु न बसाइ ॥ अ० १६१/०
हंसहि बक दादुर चातकही। हँसहिं मलिन खल बिमल बतकही ॥ बा० ८/२
हँसि कह रानि गालु बड़ तोरें। दीन्ह लखन सिख अस मन मोरें ॥ अ० १२/७
हँसि बोलेउ दसमौलि तब कपि कर बड़ गुन एक।
जो प्रतिपालइ तासु हित करइ उपाय अनेक ॥ लं० २३/० (च)
हँसिहहिं कूर कुटिल कुबिचारी। जे पर दूषन भूषनधारी ॥ बा० ७/१०
हँसे रामु श्री अनुज समेता। परम कौतुकी कृपा निकेता ॥ लं० ११६/८
हैं दससीस मनुज रघुनायक। जाके हनूमान से पायक ॥ लं० ६२/३
हैं सुत कपि सब तुम्हहि समाना। जातुधान अति भट बलवाना ॥ सुं० १५/६
हौं मारिहउँ भूप द्वौ भाई। अस कहि सन्मुख फौज रेंगाई ॥ लं० ७८/१२
हौंहु कहावत सबु कहत राम सहत उपहास।
साहिब सीतानाथ सो सेवक तुलसीदास ॥ बा० २८/० (ख)
हृदउ न बिदरेउ पंक जिमि बिछुरत प्रीतमु नीरु।
जानत हौं मोहि दीन्ह बिधि यहु जातना सरीरु ॥ अ० १४६/०
हृदयँ अनुग्रह इंदु प्रकासा। सूचत किरन मनोहर हासा ॥ बा० १९७/७
हृदय कंप तन सुधि कछु नाहीं। नयन मूदि बैठीं मग माहीं ॥ बा० ५४/६
हृदयँ दाहु अति बदन मलीना। कह कर जोरि बचन अति दीना ॥ अ० ९३/५
हृदयँ न कछु फल अनुसंधाना। भूप बिबेकी परम सुजाना ॥ बा० १५५/१
हृदयँ बिचारत जात हर केहि बिधि दरसनु होइ।
गुप्त रूप अवतरेउ प्रभु गएँ जान सबु कोइ ॥ बा० ४८/० (क)
हृदयँ सोचु बड़ कछु न सोहाई। अस जानहिं जियँ जाउँ उड़ाई ॥ अ० १५७/२
हृदय सिंधु मति सीप समाना। स्वाति सारदा कहहिं सुजाना ॥ बा० १०/८
हृदयँ प्रीति मुख बचन कठोरा। बोला चितइ राम की ओरा ॥ कि० ८/४
हृदयँ बिचारति बारहिं बारा। कवन भाँति लंकापति मारा ॥ उ० ६/७
हृदयँ बिचारि संभु प्रभुताई। सादर मुनिबर लिए बोलाई ॥ बा० ९०/३
हृदयँ मनाव भोरु जनि होई। रामहि जाइ कहै जनि कोई ॥ अ० ३६/२

हृदयँ लगाई कुअँरि सब लीन्ही । पतिन्ह सौंपि बिनती अति कीन्ही ॥ बा० ३३५/८
हृदयँ लाइ प्रभु भेटेउ भ्राता । हरषे सकल भालु कपि ब्राता ॥ लं० ६१/३
हृदयँ रामु सिय लखन समेता । चले जाहिं सब लोग अचेता ॥ अ० ३१९/७
हृदयँ सराहत सीय लोनाई । गुर समीप गवने दोउ भाई ॥ बा० २३६/११
हृदयँ सुमिरि सब सिद्धि बोलाईं । भूप पहुनई करन पठाईं ॥ बा० ३०५/८
हृदयँ सोचु समुझत निज करनी । चिंता अमित जाइ नहिं बरनी ॥ बा० ५७/१
हृदयँ हेरि हारेउँ सब ओरा । एकहि भाँति भलेहिं भल मोरा ॥ अ० २६०/७
हृष्ट पुष्ट तन भए सुहाए । मानहुँ अबहिं भवन ते आए ॥ बा० १४४/८

त्र

त्रय:शूल निर्मूलनं शूलपाणिं । भजेऽहं भवानिपतिं भावगम्यं ॥ उ० १०७/१०
त्रिजग जोनि पुनि धरहिं सरीरा । अयुत जन्म भरि पावहिं पीरा ॥ उ० १०६/६
त्रिजग देव नर जोइ तनु धरऊँ । तहँ तहँ राम भजन अनुसरऊँ ॥ उ० १०९/१
त्रिजटा नाम राच्छसी एका । राम चरन रति निपुन बिबेका ॥ सुं० १०/१
त्रिजटा सन बोलीं कर जोरी । मातु बिपति संगिनि तैं मोरी ॥ सुं० ११/१
त्रिकालग्य सर्बग्य तुम्ह गति सर्बत्र तुम्हारि ।
कहहु सुता के दोष गुन मुनिबर हृदयँ बिचारि ॥ बा० ६६/०
त्रिबिध ताप त्रासक तिमुहानी । राम सरुप सिंधु समुहानी ॥ बा० ३९/४
त्रिबिध दोष दुख दारिद दावन । कलि कुचालि कुलि कलुष नसावन ॥ बा० ३४/१०
त्रिबिध समीर सुसीतलि छाया । सिव बिश्राम बिटप श्रुति गाया ॥ बा० १०५/३
त्रिभुवन जय समेत बैदेही । बिनहिं बिचार बरइ हठि तेही ॥ बा० २४९/४
त्रेताँ बिबिध जग्य नर करहीं । प्रभुहि समर्पि कर्म भव तरहीं ॥ उ० १०२/२
त्रेताँ ब्रह्म मनुज तनु धरिही । तासु नारि निसिचर पति हरिही ॥ कि० २७/७





इस ग्रन्थ के प्रकाशन में सहयोगी महानुभाव -

- श्री एम० सी० सोमानी, फरीदाबाद
- श्री योगेश नारायण सक्सेना, गाजियाबाद
- श्री अखिलेश कुमार जी, लखनऊ
- श्री आर.एस. अवस्थी, लखनऊ
- डॉ. जी.के. मुखर्जी, लखनऊ
- डॉ. अंजना पंकज, लखनऊ
- श्री मोहनलाल जी पाहवा, लखनऊ
- श्री शामदास जी गुलाटी, करनाल
- सुश्री रेखा सिंघल, ऊँचाहार
- श्री महेश कुमार माहेश्वरी, देवास
- श्री नवरतनमल बंसल, इन्दौर
- श्री हरवंश कुमार श्रीवास्तव, नोएड़ा
- श्री जगमाल जी गुप्ता, करनाल
- डॉ. बी.के. मेहरोत्रा, लखनऊ
- श्री अशोक कुमार जी मेहरोत्रा, लखनऊ
- श्रीमती राजरानी योगेश कुमार गुप्ता, दिल्ली



शुभ सन्देश

आज समस्त विश्व में निगमागम रामायण सम्मत श्रीरामचरितमानस का महत्व निर्विवाद है। व्यवहार-परमार्थ का ऐसा अद्भुत समन्वय अन्यत्र दुर्लभ है। इदानीं हिन्दू संस्कृति का संरक्षण इसी ग्रन्थ के द्वारा प्रमुख रूप से हो रहा है। किसी भी धर्म-संस्कृति-सम्प्रदाय के प्रमुख ग्रन्थ का पाठ एवं कण्ठस्थ करने की प्रणाली अनादिकाल से अपनी उपयोगिता रखती है। एतदर्थ विशिष्ट कथावाचकों एवं अन्त्याक्षरी के क्षेत्र में अतीव उपयोगी यह 'मानस-वर्णानुक्रमणिका' **आदरणीय माता मोहिनी श्रीवास्तव** के द्वारा संकलित की गई, जो सन् १९९३ में प्रकाशित हुई थी। जिसके कुशल सम्पादन एवं प्रकाशन का श्रेय हमारे प्रिय **स्वामी दिव्यानन्द जी** को है।

अतीव उपयोगी होने से इसकी सम्पूर्ण प्रतियां समाप्त हो गईं। अब पुन: धार्मिक जनता की विशेष आवश्यकता को देखते हुए नवीन संस्करण प्रकाशित करने का शुभ संकल्प **स्वामी दिव्यानन्द जी** में स्फुरित हुआ है। मैं इसके प्रकाशन के निर्विघ्न सम्पन्नता के साथ ही उस जगदात्मा प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि समस्त वैदिक-सनातन धर्मानुयायी धार्मिक जन इस ग्रन्थ के माध्यम से लाभ प्राप्त कर जीवन को धन्य बनायें।

महामण्डलेश्वर
स्वामी असङ्गानन्द सरस्वती
(साहित्य–वेदान्ताचार्य, एम.ए., साहित्यरत्न)
परमाध्यक्ष–श्री दैवी सम्पद् महामण्डल, परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश



सम्माननीय स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी!
सादर-सप्रेम ओ३म नमो नारायणाय।।

'मानस-वर्णानुक्रमणिका' के सम्पादन में आपने प्रशंसनीय श्रम किया है। अपने ढंग का यह प्रथम ग्रन्थ है। मानस का अवगाहन किसी भी प्रकार कल्याणकारी है।

मैं नये संस्करण के अधिकाधिक प्रसार हेतु भगवान श्रीराम से प्रार्थना करता हूँ। पुस्तक का मुद्रण सुरूचिपूर्ण है। प्रथम दर्शन से ही पाठक प्रभावित होता है।

महामण्डलेश्वर
स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि
निवृत्तजगद्गुरु शंकराचार्य–भानुपुरा पीठ
संस्थापक–परमाध्यक्ष–भारत माता मन्दिर, हरिद्वार



गोस्वामी तुलसीदास जी कृत श्रीरामचरितमानस बहुमूल्य-रत्नों की एक मंजुषा है। इसमें यत्र-तत्र-सर्वत्र सुन्दरतम चौपाइयां, दोहे, सोरठे, छन्द तथा श्लोक आदि दुर्लभ-मुक्ताओं की भाँति अपूर्व कौशल से जड़े हुए हैं। 'मानस' मात्र एक धर्म-ग्रन्थ ही नहीं है, प्रत्युत यह समस्त हिन्दू

संस्कृति एवं बौद्धिक चेतना का प्रतीक स्तम्भ है। ऐसे भी असंख्य मानस-प्रेमी हैं, जिन्होंने अक्षर ज्ञान न होने पर भी सम्पूर्ण मानस को कण्ठस्थ कर लिया है और अवसर के अनुसार बात-बात में मानस की पंक्तियों का सुभाषित के रूप में प्रयोग करते रहते हैं।

किन्तु यह अपूर्व ग्रन्थ एक महासागर की भाँति विशाल है। अत: कभी-कभी अचानक आवश्यकता पड़ने पर किसी पंक्ति विशेष का सन्दर्भ तुरन्त खोज पाना जटिल हो जाता है। यथेष्ट परिश्रम करने पर ही यह पता लग पाता है कि उक्त पंक्ति किस काण्ड में, किस प्रसंग में और कहाँ है। इस असुविधा से त्राण पाने का सर्वोत्तम उपाय यही है कि मानस की एक वर्णानुक्रमणिका उपलब्ध हो।

इस दिशा में भक्तिमयी **मोहिनी श्रीवास्तव** ने मानस की एक अनुक्रमणिका का संकलन एवं प्रकाशन लगभग ३० वर्ष पहले कराया था। परन्तु उसमें चौपाई की अंर्धाली मात्र ही होने तथा बहुत सी चौपाइयों के छूट जाने की वजह से मानस प्रेमियों में उसका विशेष स्वागत नहीं हुआ। कालान्तर में **श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी** ने बड़े परिश्रम से मानस की वर्णानुक्रमणिका का एक परिवर्द्धित संस्करण प्रकाशित कराया। इस ग्रन्थ का प्रकाशन प्रशंसनीय तथा सम्पादन सुरूचि पूर्ण हुआ है।अन्ताक्षरी-प्रेमियों के लिए यह कृति परम उपयोगी एवं रामचरितमानस के पाठकों के लिए संग्रहणीय है। मुद्रण स्वच्छ, सुपाठ्य तथा कलेवर मनोहारी है। **स्वामी दिव्यानन्द जी** द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित इस ग्रन्थ का मानस-प्रेमियों द्वारा विशेष स्वागत किया गया। अब वे इस ग्रन्थ का नवीन संस्करण पुन: प्रकाशित करने के स्तुत्य-प्रयास में संलग्न हैं। हमारी प्रभु से प्रार्थना है कि उन्हें इसमें आशातीत सफलता प्राप्त हो।

स्वामी श्यामस्वरूपानन्द सरस्वती
अध्यक्ष—हरिधाम आश्रम, बिठुर (कानपुर)



आदरणीय श्री स्वामी दिव्यानन्द जी !
सप्रेम हरि स्मरण।

'मानस-वर्णानुक्रमणिका' मानस के श्रद्धालु पाठकों एवं विद्या प्रेमियों के लिए एक बहुमूल्य सहायक ग्रन्थ है। इसकी रचना विशेष मनोयोग, अध्यवसाय एवं निष्ठा के साथ की गई है, जो इस बात का भी प्रमाण है कि मानव-मस्तिष्क में भी कम्प्यूटर जैसी यांत्रिक क्षमता विद्यमान है। वास्तव में यह अध्यात्म सिद्ध मन की मन्त्र-शक्ति का ही प्रमाण है।

इस कृति का दूसरा संस्करण इतने अल्प काल में ही प्रकाशित होने जा रहा है, यह इसकी उपादेयता का सूचक है। मेरा विश्वास है कि आपका यह प्रयास अधिकाधिक लोकप्रियता प्राप्त करेगा।

स्वामी चिदानन्द सरस्वती (मुनि जी)
संस्थापक—चेयरमेन—भारतीय संस्कृति शोध प्रतिष्ठान
अध्यक्ष—परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश



मैंने 'मानस-वर्णानुक्रमणिका' जो हमारे परमात्मीय **श्री स्वामी दिव्यानन्द जी** के द्वारा सम्पादित की गई है, का विशेष रूप से अवलोकन किया और मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि हमारे श्री स्वामी जी ने अथक परिश्रम करके मानस-प्रेमियों के लिए एक अमूल्य ग्रन्थ रत्न प्राप्त कराया।

प्राय: कोई चौपाई सुनने के बाद प्रश्न उठता था कि यह चौपाई मानस में किस स्थल की है, अब बड़ी सरलता के साथ इस ग्रन्थ के माध्यम से यह ज्ञात हो जायेगा कि यह चौपाई किस प्रसंग की है। श्री रामचरितमानस के जिज्ञासु पाठकों ओंर प्रेमियों के लिए इसे प्राप्त कर अत्यधिक हर्ष होना चाहिये कि एक बहुत बड़ी जटिल समस्या के समाधान के रूप में कितना श्रम करके यह पुस्तक हमारे सामने **स्वामी दिव्यानन्द जी** ने प्रस्तुत कर दी है।

मुझे तो इस ग्रन्थ को प्राप्त करके बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं इस सुन्दर कार्य के सम्पादन के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि हमारे स्वामी दिव्यानन्द जी चिरायू हों और सदैव इसी प्रकार आध्यात्मिक जगत की सेवा करते रहें तथा यह ग्रन्थ मानस-प्रेमियों के लिए श्री रामचरितमानस की भाँति ही उपादेय सिद्ध हो।

स्वामी सहजानन्द सरस्वती
अध्यक्ष–श्री दैवी सम्पद् मण्डल आश्रम, रायबरेली



इस ग्रन्थ के निर्माण में जो धन व परिश्रम लगा, हम उसे सफल व सार्थक मानते हैं। जब तक मानस रहेगा, इस ग्रन्थ की उपयोगिता बनी रहेगी। यद्यपि इसकी आवश्यकता पहले भी थी; परन्तु अत्यधिक परिश्रम के कारण किसी का ध्यान इस ओर नहीं गया। खुशी की बात है कि **आदरणीय श्री स्वामी दिव्यानन्द जी** ने इसका बीड़ा उठाया ओर भागीरथ प्रयत्न करके इसको सफल भी कर दिया। इसमें जितना परिश्रम लगा उतना ही यह उपयोगी भी है। सदैव के लिये मानस प्रेमी आपके ऋणी रहेंगे।

भविष्य में भी आपके द्वारा समाज की ऐसी सेवा होती रहेगी; ऐसी आशा है। **इति शुभम्**

स्वामी जगदीश मुनि



अनेक बार अनेक अवसरों पर किसी ऐसे ग्रन्थ की आवश्यकता अनुभव की गई, जिससे अकस्मात स्मृति में आने वाली श्री रामचरितमानस की किसी भी चौपाई, दोहे, छन्द, आदि को सहज देखा जा सके। 'मानस-वर्णानुक्रमणिका' के रूप में इसी आवश्यकता का प्रगट रूप देख कर अतीव प्रसन्नता हुई।

मां भगवती सरस्वती का नि:सन्देह साक्षात् अनुग्रह; मानस प्रेमी वक्ताओं, श्रोताओं, पाठकों एवं रसिकों के लिये अनुपम निधि है यह वर्णानुक्रमणिका। भक्तिमति माता मोहिनी श्रीवास्तव

जी का यह प्रभु प्रेरित अनूठा सत्प्रयास एवं **पूज्यपाद श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी महाराज** का कुशल सम्पादन अन्तस्तल से साधुवाद एवं धन्यवाद का पांत्र है।

स्वामी ज्ञानानन्द

संस्थापक—परमाध्यक्ष—श्रीकृष्ण कृपाधाम, वृन्दावन



प्रत्येक माता-पिता की इच्छा होती है कि हमारे बालकों में उत्तम संस्कार आवें। यह कार्य केवल मानस का पारायण कर लेने से नहीं होता, अपितु इसे स्वस्थ एवं सात्विक मनोरंजन के रूप में ढाल देने से सुगम हो जाता है। अत: बालकों के सात्विक संस्कार एवं स्वस्थ मनोरंजन अन्त्याक्षरी क्रीड़ा का प्रयोग करने में 'मानस-वर्णानुक्रमणिका' का एक महत्वपूर्ण योगदान सिद्ध होगा।

'मानस-वर्णानुक्रमणिका' के रूप में एक अद्वितीय ग्रन्थ-रत्न विश्व के समस्त मानस-प्रेमी वक्ताओं एवं पाठकों को प्राप्त हुआ है। इस कार्य के सम्पादन के लिये **श्री स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज** के हम सब आभारी हैं।

डॉ. विनय स्वरूप ब्रह्मचारी

संस्थापक—अध्यक्ष—रामानुग्रह आश्रम,

ईश्वरीगंज, कानपुर



स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती द्वारा सम्पादित एवं **श्रीमती मोहिनी श्रीवास्तव** द्वारा संकलित 'मानस-वर्णानुक्रमणिका' का मैंने अवलोकन किया। द्वितीय संस्करण के रूप में इस ग्रन्थ का पुनर्मुद्रण हो रहा है, यह जानकर अतीव प्रसन्नता की अनुभूति हुई।

भारतीय धर्म एवं संस्कृति का 'श्रीरामचरितमानस' पवित्र ग्रन्थ है। रामचरितमानस की चौपाईयां मूल रूप से भारतीय संस्कृति की धरोहर हैं। वस्तुत: यदि देखा जाये तो यह ग्रन्थ जहां एक ओर काव्य का दर्शन कराता है, वहीं दूसरी ओर यह धर्म का दर्शन कराता है। इसलिए इस ग्रन्थ की महत्ता और उपयोगिता दोनों ही बढ़ जाती है।

'मांनस-वर्णानुक्रमणिका' के द्वितीय संस्करण के प्रकाशन से इस ग्रन्थ की लोकप्रियता का अन्दाजा लगाया जा सकता है। वस्तुत: वर्णानुक्रम में इसका सम्पादन एक जटिल कार्य है। मानस-प्रेमियों को मानस के स्वाध्याय में इस ग्रन्थ का पूरा लाभ मिलेगा, ऐसा विश्वास है। मानस की यह वर्णानुक्रमणिका विविध वर्गों के पाठकों को लाभान्वित करेगी, साथ ही इसके प्रति श्रद्धा भी बढ़ेगी।

डॉ. मण्डल मिश्र

कुलपति—सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी



अनन्त श्री विभूषित **श्री स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज** द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित श्री सन्त तुलसीदास जी महाराज की रामचरित मानस की अनुक्रमणिका वस्तुतः परिश्रम साध्य तथा उपयोगी कृति है। यह वर्णानुक्रमणिका रामायण-प्रेमियों के लिए अत्यन्त आवश्यक प्रस्तुति है। कोई चौपाई, दोहा, सोरठा, छन्द आदि का सन्दर्भ यदि आपको तुरन्त खोजना है, तो इस ग्रन्थ के माध्यम से आपको उसकी अविलम्ब उपलब्धि हो जावेगी। सम्पूर्ण रामायण का वर्णमालानुसार ज्ञान कर लेने की यह ग्रन्थ बहुमूल्य कुंजी है।

प्रत्येक घर, प्रत्येक विद्यालय और प्रत्येक व्यक्ति को यह ग्रन्थ अपने पास रखना चाहिये। इस ग्रन्थ को हम रामायण सहायिका कह सकते हैं।

आचार्य प्रभाकर मिश्र
पूर्व कुलपति—दरभंगा संस्कृत महाविद्यालय.
अध्यक्ष—विश्व धर्म संसद, दिल्ली
(सार्वभौम सनातन धर्म महासभा)



तपोपूत **महात्मा स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती** द्वारा सम्पादित 'मानस वर्णानुक्रमणिका' को देखने का अवसर प्राप्त हुआ। एक सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में यह अत्यन्त उपादेय एवं संग्रहणीय है।

मेरे विचार में यह ग्रन्थ एक अत्यन्त उपयोगी सन्दर्भ ग्रन्थ है। यह न केवल तुलसी साहित्य के अध्येताओं एवं अनुसंधित्सुओं के लिए अपितु सामान्य चिन्तनशील पाठकों के लिए भी संग्रहणीय है। मानस के व्यापक प्रचार-प्रसार की दृष्टि से इसकी उपादेयता असंदिग्ध है।

तुलसी-साहित्य, विशेषतः रामचरितमानस पर अब तक पूरे संसार में जितना काम हुआ है, उतना सम्भवतः किसी दूसरे ग्रन्थ पर नहीं हुआ होगा। किन्तु जो कार्य पूज्य स्वामी जी ने किया है, वैसा मेरे देखने में अब तक नहीं आया है। इस कार्य की बड़ी आवश्यकता थी।

जैसा मैंने पूर्व में ही निवेदन किया है कि 'मानस-वर्णानुक्रमणिका' एक सन्दर्भ ग्रन्थ है, जिसकी आवश्यकता लिखने-पढ़ने व सोचने-विचारने वाले ऐसे लोग ही अनुभव कर सकते हैं, जिनके सामने यथावसर तत्काल समाधान की उत्कट आकुलता वाले विविध सन्दर्भ अनेक अवसरों पर अनायास उपस्थित हुआ करते हैं। उन क्षणों में शीघ्रतापूर्वक मानस के पन्ने उलटते हुए तत्काल सटीक सन्दर्भ जान लेने की जो आतुरता-आकुलता होती है, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता है। गम्भीरता पूर्वक सम्पूर्ण मानस का मंथन करके अभीष्ट पंक्तिरत्न प्राप्त कर लेने का समय तो कम ही मिल पाता है और प्रायः हडबड़ी में खर्च किया गया घन्टों का परिश्रम व्यर्थ ही जाता है।

यह 'मानस-वर्णानुक्रमणिका' ऐसे आकुल-आतुर क्षणों में मेरे लिए अनेक बार अचूक सहायक सिद्ध हुई है। अनेक लोगों ने मेरे पास आकर इस ग्रन्थ से तत्काल सहायता प्राप्त की है और इसकी उपयोगिता के विषय में सभी का अनुभव मेरे जैसा ही है।

कई और दृष्टियों से भी यह ग्रन्थ महत्वपूर्ण है। इसकी सहायता से मानस पर आधारित अन्त्याक्षरी प्रतियोगिताएं कराई जा सकती हैं, क्योंकि प्रत्येक वर्ण पर सैकड़ों पक्तियां एक साथ यहाँ सुलभ हैं। ऐसी पुस्तकों के अभाव के कारण ही इन प्रतियोगिताओं का क्रमशः लोप होता जा रहा है और अब तो सिने गीतों के आधार पर अन्त्याक्षरी का प्रचलन हो गया है। मानस के साथ ही तुलसी की दोहावली और कवितावली तथा अन्य बड़े रचनाकारों के उत्कृष्ट छन्दों के संग्रह अक्षरानुक्रम से सुलभ कराये जायं, तो सम्भव है कि पहले जैसी संस्कार जगाने वाली प्रतियोगिताएं पुनः जनप्रिय हो जायं।

इस श्रम साध्य एवं अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रकाशन के लिए हिन्दी जगत पूज्य स्वामी जी का आभारी रहेगा। इस ग्रन्थ का द्वितीय संस्करण छप रहा है, यह जानकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। इसका अधिकाधिक प्रचार-प्रसार हो, यही शुभकामना है।

डॉ. जितेन्द्र नाथ मिश्र
मन्त्री—साहित्यक संघ, वाराणसी
अध्यक्ष—हिन्दी विभाग—दयानन्द महाविद्यालय, वाराणसी



❀❀❀

'मानस-वर्णानुक्रमणिका' की द्वितीय आवृत्ति के प्रकाशन का शुभ समाचार विशेष उल्लासमय और उत्साहवर्धक है। यह कृति जितनी मूल्यवान और लोकप्रिय सिद्ध हुई है, उसका आधार मानस की लोकप्रियता के अतिरिक्त इसकी संकलनकर्त्री **मोहिनी श्रीवास्तव जी** एवं सम्पादक सन्तप्रवर **श्रद्धेय श्री स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज** की दृढ़ निष्ठा, अचल आस्था, अथक अध्यवसाय और अडिग संकल्प शक्ति भी है। यह ग्रन्थ पूज्य स्वामी जी के श्रम और तपस्या तथा **बहिन मोहिनी जी** की कल्पना एवं साधना का साकार रूप है। इसका बहिरंग सौन्दर्य, क्रम संयोजन और वैज्ञानिक पटुता इसके अंतरंग सौन्दर्य के साथ मन का मिलाप कर देती है।

इसके सम्पादन के समय मुझे श्री स्वामी जी महाराज की संलग्नता को देखने का अवसर भी मिला था और मुझे विश्वास था कि इस कृतित्व को लोकमान्यता का पुरस्कार प्राप्त होगा। आज कम्प्यूटर (संगणक) के युग में किसी भी सन्त, विद्वान और साहित्यानुरागी के द्वारा इसे निजी श्रम द्वारा तैयार किया जाना मानवीय मेधा का उज्जवल प्रमाण है, जो यन्त्र-शक्ति की तुलना में मन्त्र-शक्ति की श्रेष्ठता का सूचक है।

मानस-प्रेमी और अनुसंधाता होने के नाते यह कृति मेरे लिए विशेष सहायक सिद्ध हुई है। इसने घंटों के श्रम को मिनटों में और मिनटों के श्रम को क्षणों में परिणत कर दिया है। इसके माध्यम से मुझे आवश्यक सन्दर्भ अचूक रूप में प्राप्त हुए हैं।

सामान्य पाठकों के लिए यह अनुक्रमणिका जप की माला जैसा कार्य करती है, वक्ताओं के लिए सूक्तियों का उपहार प्रदान करती है और शोधकों-समीक्षकों के लिए मानस महाकाव्य की सार्वभौमिकता सिद्ध करने की प्रेरणा देती है।

आशा है इसकी द्वितीय आवृत्ति का और भी अधिक स्वागत होगा और शीघ्र ही तृतीय आवृत्ति की शुभ घड़ी प्राप्त होगी।

डॉ. रामप्रकाश अग्रवाल
एम.ए. (हिन्दी–संस्कृत–अंग्रेजी), पी.एच.डी.
पूर्व प्राचार्य – मेरठ कॉलेज, मेरठ



परमादरणीय **श्री स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज** ने प्रस्तुत ग्रन्थ 'मानस-वर्णानुक्रमणिका' को सम्पादित कर महानतम कार्य जनमानस के लिए करके मानस जगत् को उपकृत किया है। वास्तव में प्रस्तुत कार्य अत्यन्त दुरूह था। समस्त चौपाईयों, दोहों एवं छन्दों आदि को विस्तृत ग्रन्थ से अन्वेषण करने में कितना परिश्रम होता है, इसका मुझे पूर्ण अनुभव है। कोई चौपाई स्मरण रहते हुए भी उसे खोजने में कठिनाई होती है। प्रस्तुत दुरूह कार्य को अकारादि क्रम से सम्पादित करके महाराज श्री ने हम समस्त मानस पाठकों, अन्वेषण कर्ताओं एवं व्याख्याताओं का भार कम कर दिया है, जो स्तुत्य है। इस कार्य में कितना समय और कितनी तपस्या लगी होगी, इस महाविभूति की। अत: ऐसे महापुरूष के श्री चरणों में शतश: नमन करके मैं अपने को धन्य मानता हूँ।

श्रीरामचरितमानस साक्षात् ब्रह्माण्डनायक श्रीराम का दिव्य श्री विग्रह है। उसके किसी अंश को लेकर कार्य करने की प्रेरणा बिना भगवत्कृपा के सम्भव नहीं है। यद्यपि अनेकश: विद्वानों ने कुछ-न-कुछ कार्य श्रीरामचरितमानस पर अवश्य किया है, किन्तु सम्पूर्ण मानस का वर्णादिक्रम से सजाने का कठिन कार्य अपने आप में मानस की विशेष सेवा मानी जा सकती है।

चरितं रघुनाथस्य शतकोटि प्रविस्तरम्।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम्।।

डॉ. परमेश्वर दत्त शुक्ल (रामायणी)
(साहित्य–व्याकरण–आयुर्वेदाचार्य, एम.ए.,पी.एच.डी.)
साहित्य विभागाध्यक्ष – श्री रामानुज संस्कृत महाविद्यालय, वाराणसी



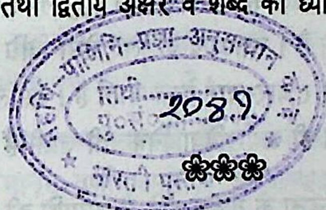
'मानस-वर्णानुक्रमणिका' शोध विद्यार्थियों के लिए ही नहीं, अपितु श्री राम कथा के वक्ता एवं सामान्य पाठक के लिए भी यह कल्पवृक्ष के समान है। कभी एक स्वप्न देखा था कि 'मानस'

पर ऐसा अधिकार हो जाय कि जब चाहे तब किसी भी विचार, शब्द या भाव की संगति पलक झपकते हो जाय। करते थे प्रयास और उसमें समय भी लगता था; किन्तु 'मानस-वर्णानुक्रमणिका' ने यह स्वप्न साकार ही कर दिया।

कभी-कभी तो किसी एक शब्द की चौपाई पर दृष्टि जाते ही आस-पास की चौपाई पुकार उठती है कि देखो अभी और अद्भुत भाव मोती भरे पड़े हैं हमारे हृदय में। इन्हें उठा लो और संसार में बांट दो।

मैं परमपूज्य **श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी** के प्रति श्रद्धा सहित आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर भक्तिमयी **मोहिनी माताजी** द्वारा संकलित इस ग्रन्थ का सम्पादन किया। मूलत: संकलन दुस्साध्य कार्य है; किन्तु सम्पादन अद्भुत एवं विलक्षण कार्य है। सम्पादन में जो प्रथम तथा द्वितीय अक्षर व शब्द का ध्यान रखा गया है, वह प्रशंसनीय है।

डॉ. राम वशिष्ठ
प्रवाचक-श्री रामचरितमानस,
हाथरस



❀❀❀

सद्गुरू पूज्य **स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी महाराज** द्वारा सम्पादित 'मानस-वर्णानुक्रमणिका' जिज्ञासु पाठकों तथा भक्तजनों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। महाराज श्री का सम्पूर्ण जीवन लोकहितकारी कार्यों के लिए समर्पित रहा है। यह पुस्तक उसी श्रृंखला की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कड़ी है।

गोस्वामी तुलसीदास जी कृत श्रीरामचरितमानस भारतीय वांग्मय में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व के साहित्य में सर्वाधिक लोकप्रिय एवं प्रतिष्ठत ग्रन्थ है। साधारण एवं बहुत कम पढ़े-लिखे पाठकों के लिए भी इस महान ग्रन्थ की उपयोगिता असंदिग्ध है। भारतवर्ष में ऐसे लोग ढूंढ़ने से मिलना कठिन हैं, जिन्हें मानस की कुछ चौपाईयां कण्ठस्थ न हों। विविध प्रसंगों में लोग अनायास इन चौपाईयों को उद्घृत करते हैं। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि कोई चौपाई आधी-अधूरी याद आती है और उसे पूरा करने के लिए हम अपनी स्मरण शक्ति पर जोर डालते हैं; किन्तु असफल रहते हैं। ठीक सन्दर्भ ज्ञात न हो तो मानस जैसे विशालाकार ग्रन्थ में से उस चौपाई का शेष अंश ढूंढ़ निकालना हमारे लिए असम्भव होता है।

महाराज श्री द्वारा सम्पूर्ण मानस की चौपाईयों और दोहों आदि का अक्षरानुक्रम से सम्पादन हो जाने पर अब यह कठिनाई समाप्त हो गई है और अब हम बिना परिश्रम के मनचाही चापाई ढूंढ़ सकते हैं।

मुझे विश्वास है कि इस ग्रन्थ को लोकप्रियता प्राप्त होगी तथा महाराज श्री की कृपा से हमें भविष्य में भी ऐसी उत्कृष्ट लोकोपयोगी पाठ्य सामग्री प्राप्त होती रहेगी।

दीनानाथ झुनझुनवाला.
झुनझुनवाला वनस्पति लि., झुनझुनवाला रिफाइनरी
झुनझुनवाला गैसेज प्रा. लि., झूला हर्बाफयर्स, वाराणसी



एक है भौगोलिक गंगा, जो हिमालय से निकल कर अपने आस-पास की भूमि का सिंचन करती हुई धरती को शस्य श्यामला बनाती हुई बंगाल की खाड़ी में जा गिरती है। दूसरी गंगा है- 'मानसी गंगा' जो तुलसी के मानस से निकल कर जग के पाप-ताप-कल्मष हरती हुई शेषशायी विष्णु के श्री चरणों में समा जाती हैं। राम अनन्त हैं, उनकी कथा अनन्त हैं। उनमें मज्जन की अनेक विधियां हो सकती हैं। स्वाध्याय के लिए ऐसी विधि अपनायी जाती है, जो सुगम हो। शास्त्र को सोच-विचार कर बार-बार देखा जाता है। इसलिए उसका जितनी बार पारायण-पाठ किया जाता है, उतनी ही अर्थछवियां निकलती जाती हैं।

ऐसे ग्रन्थ अनुभूत सत्य की व्यंजना के वाहक होते हैं, समाधि की अवस्था में सृजित होते हैं। उस अवस्था के पास पहुँचते जाइये, अर्थ प्रकट होता जायेगा। इसलिए मानस के ऐसे पाठ की आवश्यकता बनी हुई थी, जो मानस प्रेमियों को वांछित दोहा-चौपाई आदि का तत्काल ज्ञान करा सके। वैश्वानरों के लिए शोध-गवेषणा के नये गवाक्ष खोल सके, उनका मार्ग दर्शन कर सके और मानस-प्रेमियों को स्वाध्याय, सुचिंतन का अवसर प्रदान कर सके। इन दृष्टियों से 'मानस-वर्णानुक्रमणिका' की जितनी सराहना की जाए, कम है।

सुभाषितों को जुटाना हो या सूक्तियों को, सिद्धान्त कथन देखना हो या विषय-विशेष; यह ग्रन्थ सहायता के लिए तत्पर मिलता है। ग्रन्थ का मुद्रण सर्वातिशय शुद्ध है और साज-सज्जा नयनाभिराम। इस ग्रन्थ के प्रकाशन से जुड़े सभी श्रद्धेय महानुभाव साधुवाद के पात्र हैं।

डॉ. मृत्युञ्जय उपाध्याय
पी. एच. डी., डी. लिट्
हिन्दी विभागाध्यक्ष – आर. एस. पी. कॉलेज,
झरिया (बिहार)



ओजस्वी युवा सन्त श्रद्धेय श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा सम्पादित-प्रकाशित 'मानस-वर्णानुक्रमणिका' वास्तव में एक शोध ग्रन्थ है। यह मानस साहित्य में एक नवीन अध्याय

है। पूज्य स्वामी जी का यह अथक परिश्रम रामचरितमानस के शोध-छात्रों व वक्ताओं के श्रम को शान्त करेगा। मैं इसके प्रचार-प्रसार की आवश्यकता समझता हूँ।

प्रबुद्ध रसिकों के लिए इस विलक्षण ग्रन्थ के प्रकाशन के लिये मैं हृदय से **श्रद्धेय श्री स्वामी जी** का धन्यवाद करता हूँ तथा मंगलकामना करता हूँ कि यह ग्रन्थ शीघ्र ही मानस-मर्मज्ञों का हृदय हार बन सुशोभित हो।



डॉ. सुरेशाचार्य 'श्री चैतन्य'
एम.ए. (हिन्दी, संस्कृत), पी. एच डी.
सहारनपुर

❀❀❀

'गहरे पानी पैठने' हेतु दृढ़ इच्छाशक्ति एवं एकाग्र अध्यवसाय अपरिहार्य है, जो सामान्य साधक के लिए सम्भव नहीं हैं। अत: समर्पित सन्त स्वयं कठोर परिश्रम द्वारा गोरस मथ कर नवनीत श्रद्धालु जन को सुलभ करा देते हैं।

श्रद्धेय श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी ने दीर्घकाल तक अहर्निश श्रम के उपरान्त इस अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ 'मानस-वर्णानुक्रमणिका' का सम्पादन करके इसे जनता को समर्पित कर दिया है। श्रीरामचरिमानस की अगाध ज्ञान-गंगा की समस्त चौपाइयों, सोरठों तथा दोहों आदि के सन्दर्भ तथा प्रसंग को तुरन्त ढूँढ़ निकालना अब सर्वसाधारण के लिए अत्यन्त सुलभ हो गया है। यह अपूर्व प्रकाशन अध्यात्म तथा साहित्य दोनों ही क्षेत्रों के लिए समान रूप से लाभकारी सिद्ध होगा।

पूज्य स्वामी जी का यह कल्याणकारी योगदान नि:सन्देह स्तुत्य है।

डॉ. हरिश्चन्द्र सिंघल
सेवानिवृत्त प्राध्यापक – पंत विश्वविद्यालय,
पंतनगर



'मानस-वर्णानुक्रमणिका' प्राप्त कर अत्यधिक प्रसन्नता हुई। श्रीरामचरितमानस भारत के जन-जन के प्राणों का संगीत है। यह धर्म-प्राण लोगों का हृदय स्पंदन है। ऐसे ग्रन्थ की चौपाइयों को यथाप्रसंग स्मरण करने की इच्छा धर्मप्रेमियों में स्वाभाविक होती है।

'मानस-वर्णानुक्रमणिका' ने मानस प्रेमियों की इस भावना को सम्बल प्रदान करने के लिए जो अनुपम सहयोग किया है, उसे एक श्रेष्ठतम सेवा और उत्कृष्ट उपहार कहना ही युक्ति संगत है।

स्वामी धर्मप्रेमानन्द सरस्वती
सम्पादक – परमार्थ समाचार, ऋषिकेश

❀❀❀

'परमश्रद्धेय श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी महाराज ने 'मानस-वर्णानुक्रमणिका' का सम्पादन-प्रकाशन करके मानस प्रेमी अध्ययनकर्त्ताओं पर भारी उपकार किया है। स्वामी जी ने एक सन्यासी, संशोधक और मानस के वैज्ञानिक सम्पादन की भूमिका निभाकर मानों सरस्वती की वीणा के तार झंकृत कर दिये हैं।

हम जब 'तत्त्व-दर्शन' के सम्पादन कार्य में कार्यरत होते हैं, तब रामायण की चौपाईयों की श्रद्धेयता और अवतरण की आवश्यकता रोज-ब-रोज हमेशा होती थी। तब यह चौपाई मानस में कहां है, उसे तलाश करने में घंटों लग जाते थे। अब 'मानस-वर्णानुक्रमणिका' हमारे पास है, इससे मानों हमारी हथेली पर चांद आ गया हो।

हम श्रद्धेय श्री स्वामी जी और इस ग्रन्थ की संकलनकर्त्री **श्रीमती मोहिनी श्रीवास्तव** के चरणों में श्रद्धा-सुमन समर्पित करते हैं।

घनश्याम मेहता
सम्पादक – तत्त्व दर्शन
पोरबन्दर (गुजरात)





श्री रामायण जी की आरती

आरति श्रीरामायनजी की । कीरति कलित ललित सिय पी की।।
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद । बालमीकि बिग्यान बिसारद।
सुक सनकादि सेष अरु सारद । बरनि पवनसुत कीरति नीकी।।१।।

गावत बेद पुरान अष्टदस । छहो सास्त्र सब ग्रंथन को रस ।
मुनि जन धन संतन को सरबस । सार अंस संमत सबही की।।२।।

गावत संतत संभु भवानी । अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी ।
ब्यास आदि कबिबर्ज बखानी । कागभुसुंडि गरुड़ के ही की।।३।।

कलिमल हरनि बिषय रस फीकी। सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की।
दलन रोग भव मूरि अमी की । तात मात सब बिधि तुलसी की।।४।।











पूज्य महाराज श्री एक परिचय

परमपूज्य श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी महाराज आध्यात्मिक समाज की निधि हैं। आपका जन्म एक धार्मिक परिवार में हुआ। बचपन से आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होने के फलस्वरूप आपमें बाल्यावस्था से ही वैराग्य के लक्षण दिखायी देने लगे। अपने अध्ययन काल में आप अपने कॉलेज में सर्वसम्मति से छात्र संघ के अध्यक्ष रहे। अपने अध्यापकों एवं सहपाठियों में आप समान रूप से लोकप्रिय रहे। सन १९७४ में आपने सर्वप्रथम अपने सदगुरुदेव प्रात:स्मरणीय श्री स्वामी प्रकाशानन्द सरस्वती जी महाराज का शुभाशीष प्राप्त किया। बचपन से ही प्राप्त [illegible] संस्कारों के कारण भौतिक सुख आपको बांध न सके और सन् १९८० में आप गृह त्याग कर पूर्ण रूपेण अपने सद्गुरुदेव के श्री चरणों में समर्पित हो गये। सन् १९८२-८३ में आपने सृष्टि के आदि केन्द्र ब्रह्मावर्त (बिठूर) में गंगा तट पर १६ माह तक लगातार मौन व स्वपाकी रहते हुए गायत्री पुरश्चरण की कठोर साधाना की । मां भगवती गायत्री एवं सद्गुरुदेव की असीम कृपा के फलस्वरूप अध्यात्म-पथ में आपकी तीव्र प्रगति होती गयी। अपनी विशेष साधना के बाद से पूज्य स्वामी जी निरन्तर जन कल्याण हेतु ज्ञान रुपी प्रसाद वितरित करते आ रहे हैं। आपके श्रीमुख से सतत् प्रवाहित श्रीमद्भागवत कथा एवं प्रवचन सुनते हुए भक्तजन भक्ति रस में डूबे रहते हैं। आपकी स्पष्टवादिता, शब्दों व प्रसंगों को सरस बनाने की सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति, भाषागत सूत्रों की परख तथा सरल, सहज एवं शब्दों द्वारा शब्दातीत परमात्मा की प्रभावोत्पादक वाग्धारा द्वारा अभिव्यक्ति, जन-मानस को मन्त्र-मुग्ध कर देते हैं। निवृत्ति परायण मानसिकता होने पर भी भक्तों के विशेष अनुरोध पर आपने लोकहितार्थ हरियाणा प्रान्त की ऐतिहासिक एवं औद्योगिक नगरी पानीपत में 'दिव्य धाम आश्रम' की स्थापना की। यह आश्रम सत्संग, शिक्षा, चिकित्सा, गो सेवा आदि के रूप में जनता-जनार्दन की सेवार्थ समर्पित है। पूज्य स्वामी जी अपनी तप:पूत अनुभवसिद्ध वाणी के द्वारा आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार-प्रसार सम्पूर्ण भारत में करते हुए एक निष्काम कर्मयोगी, एक विरक्त सन्यासी का जीवन जीते हुए भक्तों को सत् प्रेरणा प्रदान कर रहे हैं।

डॉ. मनीष कुमार
एम.ए., पी.एच.डी.
कानपुर